Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112867

Reg. No. A.-629

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुखपत्रिका।

112867

भाग ७ | वैशाख, संवत् १९७७ | अङ्क ८

विषय-सूची

वा० मू० १)] [एक प्रति=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य

(१) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी-लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों के दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार जमींदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रंथकारों, लेखकों, पत्र-सम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसा-पत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहाँ आवश्यकता समझी जाय वहाँ पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिये हिन्दी की उच्च-परीक्षाएँ लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी-भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जाँय उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना और साहित्य-प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए० के प्रबन्ध से सुदर्शन प्रेस, प्रयाग में छपकर
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से पं० रामकृष्ण शर्म्मा द्वारा प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी स्थायी-समितिकी
ओरसे प्रतिमास प्रकाशित।

भाग ७ } वैसाख, संवत् १९७७ { अङ्क ८

दशम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति

[रा० ब० पं० विष्णुदत्त शुक्ल बी० ए० की संक्षिप्त जीवनी]

मध्यप्रदेश के अग्रगण्य नेता और अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के दशम वार्षिक अधिवेशन के सभापति रा० ब० पं० विष्णुदत्त शुक्ल बी० ए० की संक्षिप्त जीवनी शारदाके आधार पर नीचे दी जाती है। आपका निवास स्थान सिहोरा (मध्यप्रदेश) है। आपके पूर्व पुरुष गोरखपुर जिले से यहाँ आये थे। लोग आपके पितामह को उनकी दान शीलताके कारण कर्ण कहा करते थे। मराठे राजा की अमलदारी में आपके पितृव्य 'सूबा' थे। यह पद आजकल के डिप्टी कमिश्नर के पद से बड़ा है। आपके पिता जब्बलपुर के एक प्रतिष्ठित रईस होने के अतिरिक्त उदार, परोपकारी और सर्वप्रिय भी थे। आप किसी मनुष्य को विमुख न जाने देते थे, परिणाम यह हुआ कि उन पर डेढ़ लाख रूपये ऋण हो गया। अवस्था बढ़ने के साथ २ ऋण भी बढ़ता गया। और इस चिन्ताग्नि में संतान का अभाव लगभग ३२ वर्षों तक आहुति डालता गया। निदान आप संसार से विरक्त हो राधाकृष्ण का मन्दिर बनवाकर ईश्वर भक्ति में लवलीन होने लगे। उनकी धर्मपत्नी भी पतिदेव के मार्ग का अनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण करने लगी। अन्त में एक कन्या होने के बाद सन् १८७६ ई० में विष्णुदत्त नामक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ।

भगवच्चरणों में माता पिता का अधिक प्रेम रहने के कारण बालक के यथेष्ट निरीक्षण में बाधा पड़ने लगी, अतएव पं० बाबूराम द्विवेदी निरीक्षक नियुक्त किये गये। शुक्लजी के बाल्य काल की अनेक बातें उल्लेखनीय हैं। जब वे केवल ३॥ वर्ष के थे तो मध्यप्रदेश के चीफ-कमिश्नर सिहोरा आये हुये थे। चीफ साहब प्रेम से अपना हाथ बढ़ा कर उसकी ठुड्डी पकड़ कर हिलाने लगे। बालक ने भी चीफ साहब की डाढ़ी पकड़ ली और वैसे ही हिलाने लगा। पिताजी के बाबूराम को डाटने पर कि बालक के हाथ से डाढ़ी छुड़ा दो चीफ साहब बोले कि नहीं इसे खेलने दो। यह स्वाभिमानी होगा। जो इसके साथ जैसा व्यवहार करेगा उसके साथ यह भी वैसा ही व्यवहार करेगा। एक बार जब शुक्लजी के माता पिता कुम्भ संक्रांति के समय प्रयाग गये थे तो इनके पिता की हैज़े की बीमारी से वहाँ मृत्यु हो गई। सारे इलाके और जायदाद का कार्य भार कोर्ट आफवार्डस के हाथों में चला गया। इस समय शुक्ल जी की आयु ६ वर्ष की थी और कर्ज १॥ लाख रुपये। सन् १८८१ में आप राजकुमार कालिज जबलपुर में भरती किये गये। १८९२ में एन्ट्रेन्स और १८९४ में एफ० ए० की परीक्षाएँ पास की। बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के अवसर पर विश्वविद्यालय ने इन्हें एक स्वर्णपदक दिया इसके पश्चात् मि० डिग्रुटर के पास दो वर्ष तक क़ानून का अध्ययन किया। आपने जमींदारी का काम भी इस समय में सीख लिया।

सन् १८९८ में इनका इलाका इन्हें वापिस मिल गया और ये आनरेरीमजिस्ट्रेट बनाये गये। अपने पद का निर्वाह चतुरता से करने के कारण आप फर्स्टक्लास मजिस्ट्रेट बना दिये गये। इलाका हाथ में आने पर इन पर ३० हजार का ऋण था जो इन्होंने शीघ्र ही पटा दिया। स्टेट के समुचित प्रबन्ध के लिये कुछ स्थिरनियम बना लेने के कारण अब इलाके की आमदनी चौगुनी हो गई है। आपने सिहोरा में एक शिक्षा प्रचारक समिति स्थापित की जिस के अधीन (१) संस्कृत पाठशाला (२) कन्या हितकारिणी शाला (३) अंग्रेजी मिडिल स्कूल (४) धर्मादि सभाएँ चार संस्थाएँ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका सम्बन्ध सिहोरा की चुंगी से भी है। आप किसानोंके साथ सदा न्याय पूर्वक वर्त्ताव करते हैं। उनके गांवों के मुक़दमे व झगड़े सरकरी अदालतों तक नहीं जाने पाते। आपने आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार कृषि की उन्नति करने के लिये एक फार्म खोला है। स्वजातीय सरयूपारीण ब्राह्मणों के अभ्युत्थान के लिये भी आपने अनेक प्रयत्न किये हैं। आप अपनी माता के बड़े ही आज्ञाकारीपुत्र हैं। आप में सब से बड़ी विशेषता है कि अंग्रेजों से घनिष्ट सम्बन्ध रख कर भी आप नवीन और प्राचीन विचार वाले दोनों कोटि के पुरुषों के सम्मान भाजन बने हुए हैं।

आप प्रजा के वास्तविक हितैषी और सरकार के सच्चे सलाह कार हैं। उत्कट राजभक्ति के उपलक्ष में आपको सन् १९०३ में वाइ-सराय से एक सनद मिली थी और सन् १९१० में आप राय बहादुर की उपाधि से विभूषित किये गये। सन् १९११ में आपको एक स्वर्ण पदक मिला था और आप दिल्ली दरबार में निमंत्रित किये गये थे। रायल कमीशन के सामने पब्लिक सर्विस के सम्बन्ध में आपने निर्भीक सम्मति दी थी जिस की प्रशंसा आज तक मुक्त कंठ से हो रही है। आप मध्यप्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा के लिये ज़मीदारों के द्वारा सदस्य चुने गये थे। वायसराय की बड़ी सभा के भी सदस्य के पद को आपने सुशोभित किया था और मध्य प्रदेश तथा बरार की ओर से आप अ० भा० कांग्रेस के भी सदस्य हैं। अस्त्र आईन का विरोध करते हुए मध्य प्रान्तीय विश्वविद्यालय की स्थापना का समर्थन करते हुए, जमीदारों का हित करते हुए, मालगुजरी ऐक्ट बजट और इनकमटैक्स बिलों पर सम्मति देते हुए आपने जिस बुद्धि-मत्ता, निर्भीकता और ईमानदारी से कौंसिलों में जनता का पक्ष समर्थन किया है उसकी सच्ची कल्पना बुद्धिहीन रईसों को अत्युत्साही युवकों को और दायित्व रहित समालोचकों को नहीं हो सकती। राजनैतिक आंदोलनों में शुक्ल जी किसी भी दल के भक्त नहीं बनते अपनी आत्मा के आदेशानुसार काम किया करते हैं। इस बात का ज्वलन्त प्रमाण नागपुर की प्रान्तीय राजनैतिक कानफरेन्स में मिला था कि आप सर्वप्रिय नेता हैं। उस समय नरम और गरम दल दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर से सभापति निर्वाचित होने का सौभाग्य आपको ही प्राप्त हुआ था। युरोपीय महा संग्राम में तन, मन और धन से राजभक्ति पूर्ण सच्ची सहायता देते समय आपने अपने घनिष्ठ संबंधियों को भी रंगरुठ बनाकर सेना में भेजा था। जब घोर विरोध करने पर और अत्यन्त तीव्र आलोचना करने पर भी भारत सरकार ने रौलट-बिल को रद्द नहीं किया तब भारतीय व्यवस्थापिका सभा की मेम्बरी के महापद को अपमान पूर्ण समझ कर त्याग देना शुक्ल जी के लिये मामूली बात होगई। बाद में आप लोगों के प्रार्थना करने और प्रान्तीय नेताओं के आग्रह करने पर भी बड़ी कौंसिल में फिर न गये।

शुक्लजी सनातनधर्मावलम्बी हिन्दू हैं। प्रतिदिन पंचयज्ञ करने, शिवार्चन, और गीता पाठ करने, खान पान में सामाजिक बन्धनों का निर्वाह करने और किसी धर्म से द्वेष न करने में शुक्ल जी बड़े विख्यात हैं। आपने ईसाइयों के श्मशान के लिये सिहोरा में जमीन दी है। मुसलमान आपके दरवाजे पर ताजिया लाते हैं। इस समय आप बड़े चाव से मुसलमानों का सत्कार करते और उन्हें शरबत पिलाते हैं। ताजिया की इबादत स्वयं अपने हाथों करते हैं और शाह साहब आपको दुआ देते हैं। अखिल भारतवर्षीय जैनियों के रथ की वेदी की स्थापना सिहोरा में आपने ही की थी। अभी तक शुक्ल जी के कोई पुत्र नहीं हैं—केवल चार कन्यायें हैं, अतएव मित्र-गण द्वितीय विवाह के लिये सदैव आग्रह किया करते हैं। यह आग्रह इन्हें मान्य नहीं होता क्योंकि ये एक पत्नीव्रत के पक्षपाती हैं। ये मित्रों को यह कह कर टाल देते हैं कि "हमारी पाठशालाओं में जितने बालक और बालिकाएँ पढ़ती हैं वे ही हमारे पुत्र और पुत्रियां हैं।" जिस समय कौंसिल में मान० पटेल ने हिन्दू विवाह बिल उपस्थित किया था उस समय बहुत से मनुष्य केवल यह देखने गये कि सनातनधर्मावलम्बी शुक्ल जी आज क्या करते हैं। बिल का समर्थन करने के बदले उन्होंने उसका प्रतिवाद इस निर्भीकता, सत्य प्रियता, स्पष्टता और जोश के साथ किया कि इनकी ओर टकटकी लगा कर देखने वाले मनुष्य अवाक् रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक व्यवहारों और सार्वजिक कामों में शुक्लजी बचन के बड़े पक्के हैं। एक बार भारतीय कौंसिल के प्रतिनिधि चुने जाने के लिये डा० हरिसिंह गौड़ और राय० ब० पं० बासुदेव राव ये दो उम्मेदवार खड़े हुए। इनकी समझ में डा० गौड़ अधिक योग्य थे और इन्होंने उनको वोट देने की प्रतिज्ञा करली थी। ये जब नागपुर गये तब इनके घनिष्ठ मित्र पं० बासुदेवराव ने अपने यहाँ उतरने के लिये इनसे अनुरोध किया। वोट देने के लिये कभी आग्रह न करने का बचन लेकर शुक्लजी पं० बासुदेवराव के घर ठहरे परन्तु लोगों को शंका होने लगी कि कदाचित वे अपना वोट डा० गौड़ को न दें। समय पर शुक्लजी की सत्यप्रतिज्ञा की परीक्षा मिल गई और मित्रवर पं० बासुदेव राव वोट से वंचित रहे। सूरत की कांग्रेस के झगड़े के बाद मध्य प्रदेश ही पहला प्रांत था जहां नरम और गरम दल वालों ने मिल कर कान्फरेंस करना चाहा। सभापतिनिर्वाचन पर बड़ा मतभेद हुआ और अधिवेशन के लिये केवल २० दिन बच रहे। समय की कमी के कारण शुक्लजी सभापतित्व अस्वीकार करना चाहते थे परन्तु लोगों ने इस अत्यन्त गुरुतर कार्य्य को शुक्लजी पर लाद दिया। शुक्लजी ने जनता की आज्ञा को शिरोधार्य किया और सभापति बनना स्वीकार किया। इस समय अपनी लड़की के प्रयाग में बीमार होते और स्वयं बीमार होते हुए भी आपने किस शान्ति से गम्भीरदायित्व के कार्य्यों को सम्पन्न किया था उससे सर्व साधारण भली भांति परिचित हैं।

सहृदय शुक्लजी स्वभाव के सरल शान्त और मिलनसार हैं। वे दीन दरिद्री किसानों और धनी मानी नेताओं से एक ही समान प्रेम से वार्त्तालाप करते हैं। देहाती जीवन आपको अधिक पसन्द है। बड़े से बड़े अङ्गरेज से संबध होने पर भी इन्होंने देशी पोशाक और खान पान की मर्य्यादा का भंग नहीं किया है। आपको न्याय करते २० वर्ष हो चुके, परन्तु अपनी दयालुता के कारण आपने केवल ७ आदमिया को कारावास की सजा दी है। इनके शत्रु भी इन्हें मित्र समझने लगे हैं। सज्जनता और चरित्र बल का कवच पहिन कर वे अपनी शरीर रक्षा के लिये हथियार बन्द सिपाही साथ में कभी नहीं रखते। इनकी कर्त्तव्य शीलता के सम्बन्ध में यह कह देना पर्य्याप्त होगा कि प्यारी पुत्री को प्लेग हो जाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी ये मध्य प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापतित्व का त्याग नहीं करना चाहते थे। आप अपने बाल्यकालीन निरीक्षक पं० बाबूराम द्विवेदी की इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम नहीं करते। आप बड़े ही उदारहृदय हैं। आपने सार्वजनिक संस्थाओं और देशभक्तों को दान देकर और गुप्त सहायता प्रदान कर उत्साहित किया है। एक रईस के पास किसी प्रकार का व्यसन रहना आवश्यक है और हमारे शुक्ल जी ने पुस्तकावलोकन और विद्या प्रेम को ही अपने लिये उत्तम व्यसन समझ कर चुन लिया है। ये स्वतन्त्रता के बड़े भारी उपासक हैं। स्वाभिमान आप में यथेष्ट मात्रा में पाया जाता है। इनके स्वतन्त्र विचार, धैर्य, उत्साह, साहस, आत्मबल, समय सूचकता, दृढ़संकल्प, शक्ति, नियम शीलता आदि के सम्बन्ध में बहुत से उदाहरण दिये जा सकते हैं।

आपने मातृ-भाषा हिन्दी की जो सेवा की है उसे देख कर आपकी प्रसंशा किये बिना नहीं रहा जाता। आप संस्कृत, अङ्गरेजी और हिन्दी के अच्छे ज्ञाता और प्रभावशाली वक्ता हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा आपने कई प्रकार से की है। यह आपके ही प्रबल प्रयत्नों का फल था कि जबलपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन निर्विघ्न समाप्त हो सका। मध्य प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जन्मदाता आप ही हैं। सिहोरा में आपने एक हिन्दी पुस्तकालय स्थापित किया है। आपके लेख उच्च कोटि के अनुभव पूर्ण और भाषा की दृष्टि से आदरणीय हुआ करते हैं। आप लिखने और बोलने का सारा कार्य यथा सम्भव हिन्दी ही में करते हैं। यह आप ही के मातृभाषा प्रेम का फल है कि मध्यप्रदेश में राष्ट्र भाषा के उपासक 'कर्मवीर' सदृश पत्र का जन्म हुआ है। सार्वजनिक सेवा, देश सेवा और राष्ट्रभाषा सेवा के लिये शुक्लजी का तन, मन और धन सदैव अर्पित रहता है।

महात्मा और नेता के सभी लक्षण शुक्लजी में पूर्णतया पाये जाते हैं। वे भाग्यवान् हैं, विद्वान् हैं, शीलवान् हैं और कार्य्य करने में सदामग्न रहा करते हैं। ये उन वाग्वीरों में नहीं हैं जो समाचार पत्रों, सभाओं और कौंसिलों में दूसरों की टीकाएँ करने के आदी हैं। ये काम कर दिखला देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति, सम्प्रदाय, धर्म,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दल तथा आश्रम के लिये इनके पास सब का यथोचित आदर होता है। आप अछूत जातियों की शिक्षा का भी समर्थन करते हैं। आप जिस कार्य को हाथ में लेते हैं, उसीमें तल्लीन हो जाते हैं। कार्यों में विघ्न होने के भय से, प्रवास करते समय, ये गृह-समाचार कभी नहीं मँगाते। घरू कामों के लिये इनके पास समय का बड़ा भारी अभाव रहता है, और अनिवार्य आवश्यकता के बिना इन्हें किसी भी गृह-कार्य की सूचना नहीं दी जाती। घरू कामों का सारा बोझा इनकी सुशीला धर्म पत्नी पर है। व्यक्तियों और दलों की अपेक्षा शुक्लजी सिद्धान्तों, उच्च भावों, गुणों और अच्छे कार्यों के अनन्य उपासक हैं। मध्यप्रदेश को इस बात का अभिमान पूर्ण गौरव प्राप्त है, कि उसे ऐसे सर्वांगीन-योग्यता-मंडित नेता के सहयोग से उन्नति करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। दुर्दशादलित, दासत्व-पंक-मग्न-दीन-हीन भारतवर्ष को ऐसे ही निर्भीक, स्वार्थ-त्यागी और सच्चे कर्म वीर नेता की आवश्यकता है। परमात्मा अपने प्रसादस्वरूप इन्हें विष्णुदत्त शुक्ल को चिरंजीव रख कर मध्य प्रदेश को इस अनुपम प्रसाद से चिरकाल तक लाभ उठाने दे, यही विनम्र और हार्दिक प्रार्थना है। यदि मातृभूमि की गोद ऐसे ही पुरुष रत्नों से सुशोभित होती रही, तो इसमें सन्देह नहीं, कि भारतवर्ष अपने को शीघ्र ही स्वाभिमानी और जीवित राष्ट्रों की पंक्ति में बैठा देखेगा।

दशम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना

पहला दिन

चैत्र शुक्ल १४ संवत् १९७७ के मध्यान्ह में सम्मेलन का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। पंडाल की रचना बड़ी मनोहर थी। जहां तहां हिन्दी के महत्व-सूचक वाक्य लिखे हुए थे। पंडाल लगभग पांच सहस्र सज्जनों से खचाखच भरा हुआ था। सर्वसाधारण के मुख पर हिन्दी प्रेम झलकता था। लग भग डेढ़ बजे श्रीमान् सभापति रायबहादुर विष्णुदत्त जी शुक्ल, पं० माधव राव सप्रे, पं० माखनलाल चतुर्वेदी तथा श्री० सेठ गोविन्ददास जी के साथ सभा भवन में पधारे। 'शुक्ल जी की जय' 'भारत माता की जय' 'हिन्दी की जय'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि उच्च वाणियों से मंडप गूंज उठा। समागत सज्जनोंमें कतिपय हिन्दी हितैषियों के नाम ये थे, श्रीयुत बाबू श्यामसुन्दरदास जी, पं० रामचन्द्र शुक्ल, बाबू रामचन्द्र वर्मा, बाबू बालमुकुन्द वर्मा, पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी, बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, सरफ़राज हुसेन खां, डाक्टर लक्ष्मी नारायण वर्मा तथा पं० जीवानन्द शर्मा काव्यतीर्थ आदि।

पं० जीवानन्द शर्मा ने हारमोनियम के मधुर स्वर के साथ निम्नलिखित स्वागत-गान आरम्भ किया।

आओ पधारो स्वागत कृपा सिन्धु।
हिन्दी कुशल हेतु तुम मिलि विचारो, स्वागत० कृपासिन्धु।
आओ पधारो बैठो हृदय बीच,
आसन बिछे बन्धु पी प्रेम पीयूष॥
हिन्दू मुसल्मान भाषा करें एक
हिल मिल हृदय खोल माता उद्धारो।
संकट सहे तुम बिछुर खो चुके स्वत्व
अब एक स्वर एक पग भाग धारो॥

इस गान के बाद दो बालिकाओं का गान हुआ। अब स्वागत कारिणी समिति के सुयोग्य सभापति पं० बिजयानन्द जी त्रिपाठी 'काव्यतीर्थ' ने अपनी छपी हुई वक्तृता पढ़नी आरम्भ की। आप ने स्वागत करते हुए अपनी दीनता को पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया। विहार भूमि को अनेक महात्माओं, कवियों और आचार्यों की जन्म-भूमि बतलाई। चाणक्य की कुटिल नीति का दिग्दर्शन कराया। मेगास्थनीज लिखित पटना वर्णन का उल्लेख किया। आप ने कहा कि हिन्दी-गद्य के जन्म दाताओं में से पं० सदल मिश्र विहार में ही हुए हैं। कतिपय हिन्दी कवियों के नाम, जो यहाँ हुए, हैं आप ने गिनाये। विहार-प्रांतीय हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के विषय में आलोचना की। प्रकाशकों के निरुत्साह पर विशेष ध्यान दिया। आपने अंत में कहा कि सम्मेलन धर्मयज्ञ कहा जा सकता है। इसमें हिन्दी हितैषियों को मातृभाषा उद्धारणार्थ आत्मबलि करना होगा। अत्यन्त नम्र शब्दों से स्वागत करते हुए श्रीमान् त्रिपाठीजी ने श्रीमान् शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी को सभापति बनाने का प्रस्ताव उपस्थित किया। श्री० बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने अनुमोदन, और नवाब खांबहादुर सरफ़राज हुसेन खां ने समर्थन किया। नवाब साहब ने समर्थन करते हुए कहा कि मज़हबी बातों में हिन्दू मुसलमान पृथक हैं, पर देश-सेवा के लिये वे दोनों एक हैं, दोनों की भाषा एक है। ज़बानी झगड़े ठीक नहीं हैं। हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा Lingua franca हो सकती है। तदनन्तर पं० जगन्नाथप्रसाद पाण्डेय तथा बाबू मथुरानाथसिंह वकील ने भी समर्थन किया। सब के अनुमोदन तथा समर्थन करने पर सभापति जी ने आसन ग्रहण किया। हिन्दी का 'जय-घोष' गूँज उठा। श्रीसच्चिदानन्दसिंह ने हार पहनाया। सभापति जी ने अपना भाषण आरम्भ किया, सभापति महोदय का सार गर्भित भाषण जो अन्यत्र प्रकाशित होगा लग भग २ घंटे में समाप्त हुआ।

श्रीयुत बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी ने निम्नलिखित हिन्दी-हितैषियों के सहानुभूति-सूचक पत्र तथा तार पढ़ सुनाये—

श्रीयुत महात्मा गांधी	श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी
„ लाला लाजपतिराय	श्रीयुत बाबू मैथिली शरण गुप्त
„ राजा रामपालसिंह	„ पं० जगन्नाथदास अधिकारी
„ अमृतलाल चक्रवर्ती	„ पं० भुवनेश्वर मिश्र
„ रामभजदत्त चौधरी	„ संपूर्णानन्द जी
„ सैयद अमीर अली (मीर)	„ सेठ जमुनालाल बजाज
„ बाबू शिवप्रसाद गुप्त	„ पुरुषोत्तमदास वैष्णव
„ महेन्द्रनाथ बसु	„ दीवान बहादुर बलभद्रलालजी
„ पं० सुन्दरलाल	„ जगन्नाथप्रसाद शुक्ल
„ बालमुकुन्द त्रिपाठी	„ महाबीरप्रसाद श्रीवास्तव

एक सज्जन ने हिन्दी के महत्व पर कविता पाठ किया। इतने में बिहार प्रान्त के श्रीमान् लेफ़्टनेण्ट गवर्नर सभा मंडप में पधारे। सम्मेलन का यह प्रथम सौभाग्य-सूचक अवसर था जिसमें श्रीमान् लाट साहब ने पदार्पण किया। आप के आने पर पूर्वोक्त दो कन्याओं ने मधुरकण्ठ से गान आरम्भ किया। गान समाप्त होने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० सभापति महोदय ने श्रीमान् लाट साहब को सम्मेलन की ओर से हार्दिक धन्यवाद दिया।

तदनन्तर श्रीयुत प्रो० रामदास जी गौड़ ने साहित्य पर बड़ा ही मार्मिक और प्रभावोत्पादक व्याख्यान दिया। आप ने कहा—"आप आज से ८००, ६००, वर्ष पूर्व का भारतीय दृश्य सामने रखिये, जब कि पृथ्वीराज और जयचन्द राज्य करते थे। उस समय एक बड़ा कवि चंद हुआ है, जिसका लिखा हुआ 'रासो' आज भी एक विशदग्रन्थ माना जाता है। उसकी कविता Standard poetry मानी जाती है। यह हिन्दी का पहला कवि नहीं था। चासर chaucer के जन्म से २० वर्ष पूर्व चन्द कवि की कविता प्रौढ़ थी। उस समय की हिन्दी आज कल की हिन्दी से बहुत कुछ संबद्ध है। इन के बाद मैथिल कोकिल विद्यापति का नाम आता है इनकी भाषा भोजपुरी भाषा से मिलती जुलती है। जाइसी शायर तथा अमीर खुसरू ने भी हिन्दी में जिसे वे 'हिन्दवी' कहते थे, कविता लिखी है। इनके बाद कबीर का समय आता है, जो जाति के जुलाहे थे। वे पढ़े लिखे नहीं थे, किन्तु उनके भक्ति-सम्बन्धी पद प्रायः सारे भारत वर्ष में गाये जाते हैं। यद्यपि यह काशी निवासी थे, तो भी इन्होंने अपनी कविता में पंजाबी, मारवाड़ी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं का प्रयोग किया है। इनके बाद सुप्रसिद्ध मुसलमान कवि मलिक मुहम्मद जायसी हुए। इनकी भाषा बहुत कुछ परिष्कृत मानी जाती है। अब श्री गोस्वामी तुलसीदास जी का समय आता है। इन्होंने सिवा कृष्ण गीतावली के अपने अन्य ग्रन्थों में बैसवाड़ी भाषा का प्रयोग किया है। उसी समय महाकवि सूर ने शुद्ध बृज भाषा में अपनी कविता का सुधा-स्रोत बहाया। इनके बाद सुन्दर, केशव, भूषण तथा बिहारी हुए। इसी समय महाकवि वली हुआ। इसकी ज़बान आधुनिक उर्दू की तरह नहीं थी। इनके बाद पद्माकर का समय आता है जिनका समकालीन सौदा था। इन सब कवियों की भाषा को देख कर प्रगट होता है हिन्दी-साहित्य एक Parents है जिसकी शाखा उर्दू साहित्य है। कौन कहेगा कि हमारा साहित्य एम० ए० में रख देने के योग्य नहीं है? जब इटली और जापान सरीखे छोटे छोटे देशों में मातृभाषा द्वारा शिक्षा दी जाती है, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या ३१ करोड़ की जन-संख्या वाले भारत में हिन्दी भाषा द्वार शिक्षा का देना असंभव हो सकता है ? मेरा उद्देश्य यही है, कि जब हिन्दी का साहित्य इतना समुन्नत है, तो उसी के द्वारा शिक्षा दी जाय। इसके लिए आप लोगों को तन मन धन से प्रयत्न करना चाहिये।"

पहले दिवस का कार्य समाप्त किया गया। रात के ८ बजे से ११॥ बजे तक विषय-निर्वाचिनी-समिति की बैठक होती रही।

दूसरा दिन

प्रातःकाल ८ बजे से दस बजे तक

श्रीयुत रामदासजी गौड़ ने वैज्ञानिक परिभाषा पर भाषण दिया। आपने अनेक उपदेशप्रद बातें कहते हुए अंतमें यह कहा कि हमें वैज्ञानिक शब्दों के सीखने के लिए निरभिमान हो बढ़ई लुहार आदि मज़दूरों के पास जाना चाहिए और उन लोगों से उन शब्दों को सीखना चाहिए। माधवराव सप्रे ने गौड़ जीके कथन का अनुमोदन करते हुए कहा कि एक ऐसा नया कोष बनाना चाहिए, जिसमें नये नये शब्द गढ़े जायँ। वे शब्द संस्कृत शब्दों के अनुसार कृत्रिम रूप से न बनाये जायँ। इसका श्रीयुत कुलदेवसहाय वर्मा तथा पुत्तन लाल विद्यार्थी ने अनुमोदन किया। श्रीयुत बाबूश्यामसुन्दर दासजी ने नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित वैज्ञानिक कोषके विषयमें कहा कि सभा का विचार है कि उसके परिशिष्ट रूप में एक बृहत् कोष तयार किया जाय। सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि—

(१) जगत्व्यापी वैज्ञानिक शब्दों को यथासम्भव मूल रूप में रखा जाय।

(२) ऐसे वैज्ञानिक शब्द जिनका प्रयोग देश के वैज्ञानिक कार्यालयों में होता है, अधिक उसी सुधरे हुए रूप में रखे जायँ, जिस रूप में काम करने वाले उनका प्रयोग करते हैं, किन्तु ऐसे पारिभाषिक शब्दों के रूप जो भिन्न भिन्न भाषाओं की शैली के अनुसार बदलते हैं, व्याकरण के अनुरूप रखे जायँ, जिसमें वे हिन्दी भाषा-भाषियों को स्वीकृत हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) जो विदेशी वैज्ञानिक शब्द केवल विद्वज्जनों में अथवा प्रामाणिक ग्रन्थों में ही व्यवहृत होते हैं, उनके लिए ऐसे पर्याय चुने जायँ, जो बँगला, गुजराती आदि में भी व्यवहृत हों और यथासंभव अपने प्राचीन साहित्य से ही लिये जायँ।

यह सम्मेलन स्थायी समिति से अनुरोध करता है कि उसके सिद्धान्त के अनुसार वैज्ञानिक-कोष-निर्माण का कार्य करे।

मध्यान्हकाल १२ बजे

मंगलाचरण

पं० जीवानन्द शर्मा 'काव्यतीर्थ' ने मंगलाचरण किया। तदनन्तर पं० माधव शुक्ल ने निम्नलिखित गीत भैरवी में गाया।

जयति बाल रवि भाल तिलकधर, नौमि नवीन प्रभातम्।
ओज शक्ति जागृति संचारिणि राष्ट्रगंधमय वातम्॥
जय विकसित हृत्कमलविमल दल पूरित प्रेम परागं।
भारत कुंज निकूजित कलरव स्वर स्वतंत्र निनादम्॥
हे स्वशत्रु मद मान विमर्दन जय स्वदेश उत्थानं।
जयति स्वदेश स्वतन्त्र युवा कृत देश हेतु बलिदानं॥

गान समाप्त होने पर पं० सुखराम जी चौबे ने वीर-साहित्य पर बड़ी ही ओजस्विनी वक्तृता दी। आपने कहा, जो स्वयं वीर, ब्रह्मचारी एवं ओजस्वी न होगा, वह वीर-साहित्य लिख ही नहीं सकता। आपने कवि पद्माकर रचित एक कवित्त वीरनायक पर कहा। आपने यह भी कहा कि यह बड़ी ही लज्जा की बात है, जो हमारे देश के कवि लोग श्रृङ्गाररस में पगे हुए चले आ रहे हैं। अंत में आपने 'प्रेम' शब्द पर स्व-रचित एक बड़ी ही युक्तिपूर्ण कविता पढ़ी।

चौबेजी के भाषण के बाद दक्षिण अफ्रीका प्रवासी पं० भवानीदयालजी ने बड़े ही ज़ोर से कहा कि "सम्मेलन का यह सर्वप्रथम कर्तव्य है कि वह उपनिवेशों में भारतवासियों को हिन्दी सिखाने का प्रयत्न यथाशीघ्र करे, नहीं तो कुछ काल के अनन्तर वे लोग हिन्दी को बिलकुल ही भूल जायँगे। हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने में सम्मेलन का यह कार्य अधिक योग देगा"।

श्रीयुत राजेन्द्रप्रसादजी ने निम्नलिखित सज्जनों के सहानुभूतिसूचक तार और पत्र पढ़ सुनाये—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत माननीय पं० मदनमोहन मालवीय
श्रीयुत मुंशी देवी प्रसादजी
" पं० लोचनप्रसाद पाण्डेय
" पं० रविशंकर शुक्ल
" पं० लज्जाशंकर झा
" पं० गणेशदत्त प्रमाणिक
" पं० माधवलाल शर्मा

इसके बाद प्रस्ताव उपस्थित किये गये—

स्वीकृत प्रस्ताव

(१) सभापति द्वारा—यह सम्मेलन निम्नलिखित हिन्दी प्रेमियों और विद्वानों की मृत्यु पर हार्दिक शोक और उनके कुटुम्बियों के साथ समवेदना प्रकट करता है—वेद व्याख्याता पं० भीमसेन शर्मा, सम्पादकाचार्य पं० रुद्रदत्त शर्मा; चौधरी महावीर प्रसाद, पं० देवीशंकर जोशी और बाबू युगल किशोर अखौरी।

(२) सभापति द्वारा—यह सम्मेलन श्रीमान् भरतपुर नरेश को अपने राज्य में हिन्दी भाषा के प्रचार की घोषणा करने पर हार्दिक धन्यवाद देता है और आशा करता है कि अन्य नरेश भी श्रीमान् का अनुसरण करेंगे।

(३) सभापति द्वारा—यह सम्मेलन भारतसरकार से सानुरोध प्रार्थना करता है कि वह नोट, सिक्कों तथा स्टाम्पों पर शीघ्र ही नागरी अक्षरों को स्थान दे जैसा कि नवीन इकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी और अठन्नी पर रखा गया है।

(४) यह सम्मेलन भारत सरकार तथा पंजाब, युक्तप्रान्त, मध्यप्रदेश और विहार की सरकारों से सानुरोध निवेदन करता है कि नये सुधारों की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं के समस्त कार्य भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में तुरन्त करने की व्यवस्था की जाय, और प्रान्तीय सरकार से समस्त कागज़ पत्र इत्यादि जो जनता के लिये जाते हैं हिन्दी में प्रकाशित हुआ करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावक—पं० रामजीलाल शर्मा, अनुमोदक—पं० माखनलाल चतुर्वेदी और समर्थक—बाबू देवकी प्रसाद सिंह।

जब चौथा प्रस्ताव पास हो चुका तब स्थायी समिति के प्रबन्ध मन्त्री पं० रामजीलाल शर्मा ने सम्मेलन का वार्षिक-विवरण पढ़ कर सुनाया। तत्पश्चात् बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी ने स्थायी समिति के चन्दे के लिये बड़े ही प्रभावोत्पादक भाषण द्वारा अपील की। आपने कहा कि इस समय हिन्दी-प्रचार में ८००) के लगभग मासिक व्यय हो रहा है। क्या यह उनके लिये लज्जा की बात न होगी, जो हिन्दी का महत्व जानते हैं; कि वे सम्मेलन को समुचित सहायता न देकर चुपचाप बैठे रहें? अतएव आप लोगों को द्रव्य द्वारा सम्मेलन की वृद्धि करनी चाहिए।" आपकी अपील पर १२००) के लगभग चन्दा इकट्ठा हुआ। इसके बाद बाबू सुख राम सिंह की वक्तृता हुई। फिर पाँचवा प्रस्ताव उपस्थित किया गया। प्रस्ताव यह है—

(५) इस सम्मेलन के विचार में देश की उन्नति तथा शिक्षा प्रचार के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि भारतीय तथा प्रान्तिक सरकारें यह सिद्धान्त स्वीकृत करें कि प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च तीनों प्रकार की शिक्षा देशी भाषाओं में दी जाय और हिन्दी माध्यमिक कक्षाओं तक आवश्यक भाषा की रीति से पढ़ाई जाय तथा अंगरेजी भाषा की शिक्षा ऐच्छिक हो।

प्रस्तावक—बाबू रामदास गौड़; अनुमोदक—बाबू गोविन्ददास समर्थक—कुमार कल्याणलाल और पण्डित विनायकरावजी।

इस प्रकार सम्मेलन के दूसरे दिन की मूल कार्रवाई समाप्त हुई। संध्या को साढ़े पाँच बजे 'नबाब-मंजिल' स्थान पर, जहां श्रीमान् सभापति महोदय ठहरे हुए थे, प्रीति-भोज और कविपरिषद् हुई। कवि-परिषद् के सभापति पं० गोविन्दनारायण मिश्र हुए। समस्या 'बधाई है' पर दी गई। समस्या-पूर्त्ति साधारण हुई। अन्य कवियों के साथ महात्मा गान्धी के सुपुत्र श्रीयुत देवीदासजी गान्धी ने भी एक पूर्त्ति की थी। इसके बाद सम्मेलन के पंडाल में मैजिक लालटेन द्वारा श्री० बाबू कुलदेव वर्मा का आकाश-यात्रा पर व्याख्यान हुआ।

८ बजे रात्रि से फिर विषय-निर्वाचनी-समिति की बैठक हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा दिवस

प्रातः काल ८॥ बजे

स्थायी समितिका निर्वाचन इस प्रकार हुआ—

दशम हिन्दी साहित्य सम्मेलन (पटना) में निर्वाचित सम्मेलन के पदाधिकारियों और स्थायी समिति के सदस्यों की सूची

	(नाम पदाधिकारी)	(पता)	(पद)
१	रायबहादुर पं० विष्णुदत्तजी, रईस व ज़मींदार शुक्ल बी. ए. एम्. आर. ए. एस,	सिहोरा रोड—जबलपुर	सभापति
२	पं० विजयानन्द जी त्रिपाठी,	पटना	उपसभापति
३	बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन वकील, एम्. ए., एल. एल. बी.	जानसेनगंज—प्रयाग	"
४	प्रो० ब्रजराजजी एम्. ए. बी. एस. सी. एल. एल. बी.	प्रो० कायस्थ पाठशाला—प्रयाग	प्रधान मन्त्री
५	पं० रामजीलाल शर्मा, सम्पादक 'विद्यार्थी'	हिन्दी प्रेस—प्रयाग	प्रबन्ध मंत्री
६	लक्ष्मीनारायणजी नागर वकील, बी. ए. एल. एल. बी.	प्रयाग	अर्थ मंत्री
७	पं० रामनरेशजी त्रिपाठी	साहित्य भवन,—प्रयाग	प्रचार मन्त्री
८	प्रो० गोपालस्वरूपजी भार्गव, एम. एस.सी.	प्रो० कायस्थ पाठशाला—प्रयाग	परीक्षा मंत्री
९	रायबहादुर बाबू लालविहारीलाल जी वकील, बी. ए.	सतना	आय-व्यय परीक्षक
१०	पं० श्रीकृष्ण शुक्ल,	पानदरीबा—प्रयाग	सहायक मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[भिन्न भिन्न प्रान्तों के सदस्यगण]

(संयुक्त प्रान्त)

१ बा० गौरीशंकर प्रसादजी बी. ए., एल. एल. बी, वकील बुलानाला काशी।
२ लाला भगवानदीनजी अध्यापक, हिन्दी साहित्य विद्यालय, काशी
३ बा० हरिहरनाथ बी. ए. अध्यापक १३२ मध्यमेश्वर, काशी।
४ बाबू रामदासजी गौड़ एम. ए अध्यापक, बड़ी पियरी, काशी।
५ बाबू शिवप्रसादजी गुप्त रईस जमींदार, सेवा-उपवन, नगवा काशी
६ पं० चन्द्रशेखर शास्त्री साहित्याचार्य, आचार्य हिन्दी विद्यापीठ प्रयाग।
७ पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, वैद्यपञ्चानन, दारागंज, प्रयाग।
८ पं० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी, जमींदार सरायआकिल, बुद्धिपुरी, प्रयाग।
९ प्रो० शालिग्राम भार्गव एम्. एस. सी. म्योरसेन्ट्रल कालेज, प्रयाग।
१० पं० लक्ष्मीधर जी बाजपेयी अध्यक्ष तरुण-भारत ग्रन्थावली दारागञ्ज प्रयाग।
११ बाबू संगम लाल जी एम. ए. एल. एल. बी, वकील मुट्ठीगंज प्रयाग।
१२ पं० गौरीशंकर मिश्र बी. ए. एल. एल. बी, वकील मुट्ठीगंज प्रयाग।
१३ बा० पुत्तनलालजी विद्यार्थी 'विशारद', वानवाली गली, लखनऊ
१४ पं० राजमणि त्रिपाठी, नागरी प्रचारणी सभा, गोरखपुर।
१५ पं० अम्बिका प्रसादजी पाण्डेय, एम एस. सी. एल. एल. बी, वकील, गाज़ीपुर।
१६ कुंअर हरप्रसाद सिंह जी बांदा।
१७ पं० रामरत्नजी रत्नाश्रम आगरा।
१८ पं० गणेशशंकरजी विद्यार्थी, सम्पादक 'प्रताप' कानपुर।
१९ पं० वंशीधर शर्मा 'विशारद' भारतीय परिषद फर्रुखाबाद।
२० पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, सदर कानूनगो, आज़मगढ़।
२१ बाबू वृन्दावन लाल वर्मा अध्यापक गोपालनिखरा, झाँसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(बिहार और उड़ीसा)

१ पं० रामलोचन पाण्डेय भागलपुर।
२ पं० राधाकृष्ण झा एम्. ए प्रोफेसर पटना कालेज पटना।
३ श्रीकृष्णसिंह रईस व जमींदार मुंगेर।
४ बा० वैद्यनाथ प्रसाद सिंह रईस वा जमींदार मुज़फ्फ़रपुर।
५ पं० गिरीन्द्रमोहन मिश्र, लहेरियासराय, दरभंगा।
६ बा० पीर मुहम्मद (मूनिस) गंज नं० २ बेतलिया, चम्पारन।
७ बा० राजेन्द्र प्रसाद जी एम. ए. एम. एल, वकील हाईकोर्ट बांकीपुर पटना।
८ बा० सूर्य प्रसादजी महाजन, रईस मुरारपुर गया।
९ कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन आरा।
१० बा० बदरीनाथ वर्मा एम. ए., प्रोफेसर बी. एन. कालेज, पटना।

(मध्यप्रदेश)

१ रा० सा० पंडित रघुवरप्रसाद द्विवेदी बी. ए. हेडमास्टर हित-कारणी हाईस्कूल जबलपुर।
२ श्रीमान् बाबू गोविन्ददासजी, रईस जबलपुर।
३ श्रीयुत पं० नर्मदा प्रसाद मिश्र बी. ए. 'विशारद' साहित्य शास्त्री सम्पादक 'श्री शारदा' दीक्षितपुर जबलपु र।
४ रा० ब० सेठ जमुनालालजी बजाज वार्धा।
५ पं० प्यारेलाल मिश्र बारिस्टर एट-ला. छिन्दवाड़ा।
६ श्रीयुत दौलतसिंह चौधरी बी. ए. एल. एल. बी. नरसिंहपुर।
७ पण्डित माखनलालजी चतुर्वेदी 'सम्पादक कर्मवीर खंडवा।
८ पण्डित माधव राव सप्रे, तात्यापारा, रायपुर।

बंगाल

१ पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, ९० सीताराम घोषस्ट्रीट, कलकत्ता।
२ लक्ष्मणराव गर्दे भारतमित्र कार्यालय, कलकत्ता।
३ बाबु मूलचन्द अग्रवाल विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता।
४ रामदेव चोखानी मंत्री मारवाड़ी एसोशियसन, कलकत्ता।
५ पं० नित्यानंदजीमिश्र ६ लूकसलेन कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ पं० बैजनाथ जी चतुर्वेदी एजरा स्ट्रीट, कलकत्ता।
७ पं० अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी १६२ हरिसन रोड़ कलकत्ता।
८ पं० माधवप्रसद शुक्ल ८१ अपर चितपुररोड कलकत्ता।
९ बाबू महाबीरप्रसाद जी पोद्दार १२६ हरिसन रोड कलकत्ता।
१० पं० पुरुषोत्तमराय अपर इंडिया एसोशिएशन ६लूकसलेन कलकत्ता।

मध्यभारत, राजपूताना

१ डा० सरयूप्रसाद, मंत्री मध्य भारत-राजपूताना मध्य-भारत-हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर।
२ सरदार माधोराव विनायक—किबेसाहब, इन्दौर।
३ पं० गिरधर शर्म्मा, झालरापाटन।
४ बा० चांदकरण शारदा बी. एल. एल. बी. वकील मदार दरवाजा, अजमेर।
५ बाबु सम्पूर्णानंद जी बी. एस .सी. एल. टी. हेडमास्टर, डूंगर कालेज बीकानेर।
६ पं० तनसुख जी व्यास ब्यावर, राजपूताना।
७ श्रीनिवास जी पोद्दार, रामगढ़ दिल्ली

पंजाब

१ श्री० इन्द्र वेदालंकार सम्पादक 'विजय,' दिल्ली।
२ पं० जगन्नाथप्रसाद अमृतसर।
३ ला० लाजपतिराय, लाहौर।
४ ला० हंसराज जी, लाहौर।
५ श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानी, पटियाला

बम्बई

१ स्वामी सत्यदेव जी, सूरत बम्बई।
२ स्वामी शंकराचार्य जी करवीर मठ, कोल्हापुर।
३ राजा गोबिन्दलाल जी पित्ती मलाबार हिल, बम्बई।
४ मास्टर आत्मारामजी एजुकेशनल इन्सपेक्टर।

मद्रास

१ राजगोपालाचार्य बी० ए० बी० एल० मद्रास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यान्ह काल

१ बजे

श्रीयुत बाबू मनोरंजन प्रसादने मङ्गल गान गाया। इसके बाद श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानीने 'स्त्री-शिक्षा' पर बड़ा ही सारगर्भित व्याख्यान दिया। आपने कहा कि यदि आप लोग हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको अपनी माताओंको हिन्दी-भाषा की शिक्षा देनी चाहिए। बच्चों का सर्व प्रथम गुरु माता ही है। यदि माता हिन्दी का महत्व जान लेगी तो उसकी सन्तान स्वयं ही उस भाषा को बड़े चाव से देखेगी और अपनावेगी। मेरे पिता ने जो बंगाली थे, हिन्दी भाषा पर मनन किया और उसमें पुस्तकें लिखीं। यहीं पुस्तकें पीछे मेरी पैतृक सम्पत्ति हुई। मैंने भी उनका अनुकरण करते हुये अपनी ज्येष्ठ कन्या को हिन्दी-शिक्षा दी है। मेरा निश्चय है कि स्त्री-शिक्षा मातृभाषा द्वारा ही सफल कही जा सकती है। इस लिये मेरी विनय है कि सभापति महोदय गवर्नमेंट से अनुरोध करें कि स्त्रियों की ट्रेनिंग तथा अन्य शिक्षा हिन्दी में दी जाय न कि अँगरेज़ी में। मेरा निवेदन है कि जब तक माताओं की शिक्षा हिन्दी में न होगी, तब तक हिन्दी के प्रचार-कार्य में शिथिलता ही रहेगी।"

श्रीमती चौधरानी जी की वक्तृता समाप्त होने पर श्रीमान् पण्डित गोविन्दनारायण जी मिश्र ने हिन्दी साहित्य की वर्तमान दशा पर व्याख्यान दिया। आपने कई उपयोगी बातें कहीं, जिनका सारांश दिया जाता है। आपने कहा कि हमारे हिन्दी-साहित्य की व्याप्ति का बहुत कुछ परिवर्तन अँगरेजी भाषा की शिक्षा द्वारा हो चुका है। हमने साहित्य की मुख्य परिभाषा छोड़ ही दी है। साहित्य-दर्पण में 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' ऐसा काव्य का लक्षण लिखा है। हमने इस सिद्धान्त की नितान्त अवहेलना कर डाली है। हम रसादि का प्रयोग भूल चुके हैं। यही सब हमारे साहित्य के ह्रास का कारण हो रहा है। साहित्य का मुख्य अंग पद्यभाग है जिसकी व्याप्ति हमारे हिन्दीसाहित्य में सबसे अधिक है यदि संस्कृत भाषा के पद्य-साहित्य से कोई भाषा समता कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है तो वह हिन्दी ही है। इसके बाद आपने कहा कि वही कवि सजीव कविता लिख सकता है, जो उसमें तल्लीन हो जाता है साहित्य की उच्च शिक्षा ऐसे ही महज्जनों के पास मिल सकती है, कालिजों में नहीं। इसके पश्चात् आपने प्रकाशकों तथा सम्पादकों की असावधानी दिखलाई, जिससे प्रायः अर्थ का अनर्थ हो जाया करता है। आपने यह भी कहा कि लोग पुरानी कविता को भूल कर खड़ी बोली की नवीन कविता पर प्रेम करते हैं और इसीसे साहित्य का सर्वनाश हो रहा है! आपने कहा कविता करने योग्य बृजभाषा ही है। यही भाषा Standard language कहा जा सकती है साहित्य की भाषा खड़ी बोली कभी नहीं हो सकती! अंत में आपने व्याकरण-सुधार पर लोगों का ध्यान आकर्षित कराया, क्योंकि भाषा और व्याकरण का घनिष्ठ और नित्य सम्बन्ध है। आपका भाषण लगभग १ घंटे तक हुआ।

श्रीयुत मान्य मिश्र जी के भाषण के बाद श्रीयुत राजा राधिका-प्रसादसिंह ने प्रश्नोत्तर के रूप में 'स्त्री-शिक्षा' पर लेख पढ़ा। इस लेख की भाषा बड़ी ही प्रौढ़ और मुहाबरेदार थी। इसके बाद श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने निम्न-लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया—

(६) यह सम्मेलन भारतीय सरकार से सानुरोध प्रार्थना करता है कि, नये सुधारों की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि भारतीय राजसभा (Council of State) तथा व्यवस्थापिका सभा (Legislative Assembly) की कार्य्यवाही के सम्बन्ध में अङ्गरेज़ी के साथ साथ भारतीय राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी व्यवहार की व्यवस्था की जाय और यह उद्योग किया जाय, कि यथासम्भव शीघ्र उक्त सभाओं के समस्त कार्य्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में होने लगें।

उपर्युक्त प्रस्ताव उपस्थित करते हुए श्री० टंडन जी ने कहा कि हिन्दी साहित्य का प्रचार करना, हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाना, साहित्य-सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य है। कुछ लोग कहते हैं कि सम्मेलन राजनैतिक Political होता चला जा रहा है। हाँ, यह ठीक है वह राजनैतिक भाषा हिन्दी बनाना चाहता है। जब तक किसी भाषा का प्रचुर प्रचार नहीं हो गया है, तब तक उसका साहित्य,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे कितना ही अच्छा हो, मुर्दा ही है। भाषा और राष्ट्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है। भाषा के नष्ट कर देने से वह राष्ट्र भी नष्ट हो जाता है। जब भाषा का प्रचार ही नहीं तब उत्तमोत्तम सहित्यिक ग्रन्थों के लिखने से लाभ ही क्या? इसका यह अर्थ नहीं कि सम्मेलन साहित्य से बिलकुल निरपेक्ष ही हो गया है। किन्तु जब तक हिन्दी भाषा के ज्ञाता नहीं हो गये हैं तब तक उसे प्रधानरूपेण प्रचार की ओर ही ध्यान देना होगा। आपने इस विषय पर आंधी चलने के समय जहाज़ पर चढ़े हुए कप्तान की उपमा दी। वह उस समय अपने कंपास को छोड़ कर जहाज़ के कलपुर्ज़े सुधारने में लग जाता है। इसी तरह जब तक हमने अपनी भाषा के कलपुर्जे नहीं दुरुस्त कर लिये, अर्थात् जब तक उसका प्रचार नहीं कर लिया, तब तक हमें साहित्य रूपी कंपास छोड़ना होगा। आप ने भाषा को प्राणस्वरूपा सिद्ध करते हुए कहा कि किसी भी समुन्नतदेश का नाश करनेके पूर्व उसकी भाषाको कुचल डालना चाहिये। आगे आपने Council of State और Lagislative assemblyमें हिन्दी-प्रवेश पर ज़ोर दिया। सर्व साधारण की ओर से वहां जो प्रतिनिधि भेजे जायँ उन्हें जनताके सुख-दुःख हिन्दी द्वारा ही सुनाने होंगे। हमको आगे जो स्वराज्य मिलेगा, उसकी भाषा हिंदी ही होनी चाहिये, न कि अंग्रेजी। हमारा स्वराज्य Democracy के सिद्धांतों के आधार पर न होगा, वरन् हमारे स्वराज्य में हमारी पुरानी सभ्यता, भाषा तथा अन्य राष्ट्रीय अंगों की रक्षा होगी। यह बात सिद्ध ही है। हिन्दी को २३॥ करोड़ आदमी समझ लेते हैं। इसे प्रायः सभी प्रान्त-वासियोँने राष्ट्र-भाषा मानने में अपनी अपनी सम्मतियां प्रकाशित की हैं। आपने सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'राष्ट्रभाषा' नाम की पुस्तक से लोकमान्य तिलक तथा बंकिम चंद्र चटर्जी आदि की सम्मतियां पढ़ीं। अन्त में आपने कहा कि मेरा निवेदन है कि जो इस 'भाषा-मन्दिर' तक जाने को तयार हैं, वे चलें और जो तयार नहीं हैं, वे कम से कम इन लोगों की फूल माला को जो वहाँ जा रहे हैं, छू अवश्य लें। इससे उनको भी वही फल मिलेगा, जो जाने वालों को मिलता है।

इस प्रस्ताव का अनुमोदन श्रीयुत पं० माधवराव सप्रे ने किया। तथा पण्डित हरिहर शर्मा (मद्रास), बाबू हरिहर नाथ बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बाबू अरिदमण सिंह बी० एल० ने समर्थन किया। प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। इसके अनन्तर निम्नलिखित प्रस्ताव भी उपस्थित, अनुमोदित तथा स्वीकृत किये गये।

(७) यह सम्मेलन काशी विश्व-विद्यालय के प्रबन्ध-कर्त्ताओं से सानुरोध प्रार्थना करता है, कि (क) वे इन्टरमीडियट तथा बी० ए० की परीक्षाओं में हिन्दी साहित्य को भी वैकल्पिक विषयों में स्थान दें। (ख) एम० ए० की परीक्षा के लिए नियुक्त विषयों में हिन्दी साहित्य भी एक विषय रखा जावे। (ग) अङ्गरेज़ी साहित्य के सिवा समस्त विषयों की शिक्षा का माध्यम हिन्दी भाषा रखा जाय। (घ) एम० ए० के उपयुक्त हिन्दी साहित्य की ऊँची कक्षा की शिक्षा देने का प्रबन्ध किया जाय। (ङ) हिन्दी, संस्कृत आदि के प्रश्न-पत्र अङ्गरेजी भाषा में न दिये जांय, वरन हिन्दी में हुआ करें। (च) ऐडमिशन वा मैट्रिक की शिक्षा और परीक्षा का माध्यम तुरन्त ही हिन्दी भाषा कर दी जाय। (छ) प्राच्य विभाग वा संस्कृत की प्राचीन प्रथा के उपयुक्त शिक्षा और परीक्षा दोनों का माध्यम हिन्दी भाषा रखी जाय। और हिन्दी भाषा का साहित्य प्रत्येक परीक्षा के आवश्यक पाठ्य विषय में रक्खा जाय। (ज) विश्वविद्यालय के विधान, व्याख्यान, नियमावली आदि तथा कार्य विवरण और पञ्चाङ्ग सभी हिन्दी में अवश्य छपवाये जाया करें।— प्रः—राय ब० द्वारकानाथ। अ०—पं० विनायक राव जी। स०—पं० वंशीधर

(८) (क) यह सम्मेलन कलकत्ता, प्रयाग और पञ्जाब विश्व विद्यालयों से सानुरोध प्रार्थना करता है कि वे इंटरमीडि-येट और बी० ए० की परीक्षाओं में हिन्दी को भी स्थान दें। और पटना प्रयाग और पञ्जाब विश्वविद्यालयों से सानुरोध प्रार्थना करता है, कि एम० ए० की परीक्षा के लिए नियुक्त विषयों में हिन्दी-साहित्य भी एक विषय रखा जावे। (ख) यह सम्मेलन बम्बई विश्वविद्यालय से अनुरोध करता है कि वह अन्य देशी भाषाओं की भांति हिन्दी को भी अपने पाठ्यक्रम में स्थान दे। प्र० — पं० बलभद्र प्रसाद ज्योतिषी एम० ए०, बी० एल०। अ०—सङ्गम लालजी एम० ए०। स०—पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी, प्रयाग। बाबू वैद्यनाथ प्रसद सिंह, मुज़फ्फरपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(९) संयुक्त प्रांत में इस समय कचहरियों और नहर आदि सरकारी विभागों में सम्मन, जमाबन्दी, परचा, काग़ज़ पत्र नागरी और फ़ारसी अक्षरों में छपे होने पर भी उनकी ख़ानापूरी प्रायः फ़ारसी अक्षरोंमें ही की जाती हैं, जिस से हिन्दी जानने वाली अधिकांश जनता को असुविधा होती है। यह सम्मेलन अपनी संयुक्त प्रांतीय सम्बद्ध सभाओं का ध्यान इस त्रुटि की ओर दिलाता है और उन से अनुरोध करता है कि वे इस को दूर करने का अपने अपने स्थानों में उद्योग करें और जहाँ आवश्यकता हो, सम्मेलन कार्य्यालय से सहायता लें।—सभापति द्वारा उपस्थित।

(१०) इस सम्मेलन की सम्मति में इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी के साहित्य की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए देश में कम से कम एक ऐसी संस्था स्थापित की जाय जहाँ लेखक गण आजीवन साहित्य सेवा के लिए रखे जावें, जिन के द्वारा साहित्य के भिन्न २ अङ्गों पर उत्तमोत्तम ग्रन्थ निर्म्माण कराये जायँ।प०— प्रोफेसर रामदास गौड़, एम ए-। अ०— बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन, स०— पं० माधव राव सप्रे।

(११) यह सम्मेलन दक्षिण-अफ्रिका प्रवासी हिन्दी-भाषियों के हिन्दी प्रचार सम्बन्धी विविध कार्य्यों की प्रशंसा करता है और आशा करता है कि मोरिशस, ट्रिनिडाड, फिजी अन्याय उपनिवेशों-के हिन्दी-भाषाभाषी भी अपने उपनिवेशों मे मातृभाषा 'हिन्दी' के प्रचार के लिए विशेष यत्न करेंगे। सभापति द्वारा।

(१२) यह सम्मेलन पटना विश्वविद्यालय के अधिकारियों से सानुरोध निवेदन करता है कि वे मेट्रिक परीक्षार्थियों को इतिहास प्रश्न के उत्तर यथापूर्व हिन्दी में लिखने की आज्ञा प्रदान करें। सभापति द्वारा।

(१३) यह सम्मेलन हिन्दू विश्वविद्यालय के सञ्चालकों से अनुरोध करता हैं, कि उक्त विश्वविद्यालय में हिन्दी की पत्र- सम्पादन-कला के लिए भी एक निश्चित पाठ्यक्रम रखा जाय और इस कला की शिक्षा देकर इसमें उपाधियाँ दी जाँय। सभापति द्वारा।

(१४) यह सम्मेलन श्रीमती एनी बेसेंट के उस कथन का विरोध करता है, जो उन्हों ने कांग्रेस के सम्बन्ध में इस अभिप्राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का किया है, कि कांग्रेस की कार्यवाही हिन्दी-भाषा में होने से वह सार्वजनिक न रह कर एक प्रान्तीय संस्था कहे जाने योग्य हो जायगी। सभापति द्वारा।

(१५) यह सम्मेलन भारतवर्षीय राष्ट्रीय सभा (इंडियन नेशनल कांग्रेस) का अनुरोध करता है, कि वह अपने अधिवेशन की कार्यवाही में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग करे और स्वागत समिति तथा कांग्रेस के सभापति के भाषण, कांग्रेस के अन्यान्य भाषण, कांग्रेस सम्बन्धी समस्त काग़ज़पत्र और कार्यविवरणों को हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित किया करे। सभापति द्वारा।

(१६) यह सम्मेलन हिन्दी पत्र-सम्पादकों का ध्यान खेद के साथ इस बात की ओर आकर्षित करता है, कि सम्मेलन के सभापति-निर्वाचन-सम्बन्ध में समाचार-पत्रों में आन्दोलन कलह तथा व्यक्तिगत द्वेषों से भरा होता है, इसलिए सम्मेलन हिन्दी समाचार पत्रों के सम्पादकों तथा हिन्दी-हितैषियों से अनुरोध करता है, कि भविष्य में, सम्मेलन के सभापति-निर्वाचन करने के समय, अनादर सूचक शब्दों का प्रयोग अपने पत्रों में न होने दें। प्रस्तावक—श्रीयुत पुरुषोत्तमराय (कलकत्ता) अनुमोदक बाबू पुत्तनलाल विद्यार्थी, लखनऊ।

(१७) यह सम्मेलन इस बात की बड़ी भारी आवश्यकता समझता है, कि प्रति वर्ष दो चार उपदेशक और प्रचारक छोटा नागपुर प्रांत में भी इस उद्देश से भेजे जायाकरें-कि वे वहां जाकर ईसाइयों के रोमनलिपि- प्रचार के अविरल उद्योग से हिन्दी भाषा और देवनागरीलिपि की समुचित रक्षाकरें। प्रस्तावक—बाबू देवकी प्रसाद सिंह एम ए० अनुमोदक—श्री देवनारायण महता।

(१८) यह सम्मेलन विहार, युक्त प्रान्त, पञ्जाब और बङ्गाल आदि प्रान्तों की सरकारों से प्रर्थना करता है कि वह अन्य भाषाओं की तरह हिन्दी-साहित्य पढ़ाने का भी उचित प्रबन्ध करे।

प्रस्तावक—श्रीयुत बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी एम० ए०।

अनुमोदक—प्रो० रामदासजी गौड़ एम० ए०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वसम्मतिसे स्वीकृत हुआ।

(१९) यह सम्मेलन मुंशी देवी प्रसादजी और कुमार उम्मेदसिंह को काशीनागरी प्रचारिणी सभा को तथा सेठ बाबू गोबिन्द दास जी को शारदा-मन्दिर के लिये दान देनेके लिये सहर्ष धन्यवाद देता है।

यह प्रस्ताव श्रीयुत बाबू श्यामसुंदर दास जी ने उपस्थित करते हुये कहा कि देवनागर वर्णों की वैज्ञानिक रीति से जाँच करनेके लिये कुछ आर्थिक सहायता हिन्दी-हितैषियों द्वारा आवश्यक है। Phonograph की सहायता से इनका अनुसन्धान होना संभव है।

श्रीयुत बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने इसका अनुमोदन किया और आपने यह भी कहा कि यदि कोई सज्जन २००००) का दान कर दें तो हिन्दी का बड़ा उपकार हो। उस दानके सूदसे हम प्रतिवर्ष हिन्दी के सुलेखकों को १०००) का पुरस्कार देंगे। जो इस दान को देगा उसका बड़ा गौरव होगा और वह दान उसके नाम के लिये सदा स्मारक रहेगा।

प्रस्ताव बहु सम्मति से स्वीकृत हुआ।

इसके बाद श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी ने अपनी लच्छेदार भाषा द्वारा सम्मेलन को आगामी वर्ष के लिये कलकत्ता में आने को निमन्त्रण दिया। पं० वैद्यनाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने अनुमोदन तथा माधव शुक्लने समर्थन किया।

तत्पश्चात् स्वागतकारिणी समितिके मंत्री बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी ने सभाको धन्यवाद देते हुये कहा कि आप लोगों ने जिस कृपा से और स्नेह से मेरा तथा प्रतिनिधियोंका आदर किया है उसके लिये हमारे पास शब्द नहीं कि हम उनको धन्यवाद दे सकें। आप लोगों की कृपा से सम्मेलन सफल हो गया। हमें अब हिन्दी के प्रचार तथा साहित्य-क्षेत्र में उतरना चाहिये। मेरा नम्र निवेदन है कि आप लोग संतुष्ट होकर न बैठे रहिये, वरन् हिन्दी के प्रचार के लिये सदा तत्पर रहिये। जब तक हमने हिन्दी University और council में नहीं पहुँचा दी, तब तक हमें सतत उपयोग करते रहना चाहिये। कुछ असंभव नहीं है। परमात्मा की कृपा से हम हिंदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पूर्णोद्धार कर सकेंगे। इतना कह कर अब मैं श्रीमान् सभापति महोदय, प्रतिनिधिगण, हिन्दी-हितैषियों तथा स्वयं सेवकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

दो बालकों ने निम्नलिखित, करुणा पूर्ण गायन किया और सब लोग अपने अपने स्थान को चले गये।

"हमारे नगर से चले जाइयेगा।
हमें ह्यां से जाकर न बिसराइयेगा॥
बहुत की कृपा जो पधारे यहां पर।
हमें आसरा है कि फिर आइयेगा॥
न धन है न जन है न विद्या विभव है।
मगर एक सच्चा हृदय पाइयेगा॥
हैं तन मन से व्याकुल यहां के निवासी।
बहा कर के आंसू चले जाइयेगा॥

सभापति का भाषण

प्रभु ! भव्य भाषा भगवतीकी भक्ति उरमें हम भरें।
जीवन समस्यायें जटिल लख झंझटोंसे मत डरें॥
बरवीर बनकर विश्वविजयी विघ्न बाधायें हरें।
प्रिय हिन्द-हिन्दी के लिये सर्वस्व अर्पित हम करें॥

परमप्रिय हिन्दी-हितैषी स्वागतकारिणी समितिके सुयोग्य सभापति महोदय तथा समुपस्थित सज्जनो और बहनो !

आन्तरिक अनेकशः धन्यवाद है, उन परब्रह्म परमात्माको, जिनकी परमानुम्पा से आज हम लोग परम पूजनीय माता हिन्दी की यथाशक्ति सेवा और हार्दिक श्रद्धा-भक्ति सहित आराधना करने के हेतु यहां एकत्रित हुए हैं।

हिन्दी-भाषा-भाषियों में कोई विरला ही ऐसा मन्दभाग्य होगा, जो शक्ति और सामर्थ्य रहते हुए इस सम्मेलन में सम्मिलित होने को अपना परम सौभाग्य न समझे। वस्तुतः जिसने अपने आपको इस पवित्र प्रेम-प्रवाह में बहा दिया, वह धन्य है। मुझे इस सुविख्यात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा का सभापति मनोनीत कर आप लोगों ने विशेष सम्मानित किया है। एतदर्थ धन्यवाद है। निसन्देह मुझ में योग्यता कुछ भी नहीं है; किन्तु योग्यता है, आप सज्जनों में। महात्माओं का ऐसा सरल स्वभाव ही होता है, कि वह अपने सेवक को स्नेहविवश हो सर्वस्व समझ बैठते हैं। त्रैलोक्य-स्वामी भगवान् 'श्रीकृष्ण' ने निज भक्त अर्जुन की अनन्य भक्ति देख उन्हें गौरवान्वित आसन पर आसीन् कर स्वतः सारथी का कार्य हाथ में ले लिया था। ठीक ऐसी ही दशा आप सज्जनोंने अपने बस अकिञ्चिन किङ्कर तथा मातृ-भाषा के लघुभक्त पर की है।

सज्जनो! मैं अपने को भाग्यवान समझता हूं, कि गुण न रहने पर भी पाता हूं। साथ ही मुझे इस बात का सङ्कोच है, कि अनेक सुयोग्य विद्वानों के होते हुए भी मैं इस पद के लिये निर्वाचित किया गया। जिस आसन पर आसीन हुए माननीय पण्डित मदनमोहन मालवीय की मनमोहनी वाणी की वीणा की झनकार आप लोगों के हृदय को अह्लादित कर चुकी है, जिस आसन पर आरूढ़ हुए प्यारे श्यामसुन्दर की सुहावनी छटा से आप कृत कृत्य ही हो चुके हैं, उस आसन को ग्रहण करने का साहस करना धृष्टता नहीं तो क्या है? सच तो यह है, कि न तो मैं स्वामी श्रद्धानन्द जैसा आप लोगों का श्रद्धाभाजन हूं और न मेरी भाषा ही पण्डित बद्रीनारायण प्रेमघन जैसी पीयूष प्रवाहिनी है। मैंने कोई भी काव्यग्रन्थ लिख कर श्रीयुक्त श्रीधर के सदृश हिन्दी की श्रीवृद्धि भी नहीं की और न मुझमें महात्मा कर्मवीर गांधी जैसी हृदय पर कब्जा करने वाली कर्म्मण्यता की विद्युत ही विद्यमान है। अतएव अच्छा होता, यदि इस वर्ष भी आप किसी वैसे ही सुयोग्य सज्जन को सम्मेलन संसार का स्वामित्व समर्पित कर सम्मेलन की श्रीवृद्धि करते। आश्चर्य है, कि ऐसा न कर के आपने उस गुरुतम कार्य्यसम्पादन का भार मुझ असमर्थ को सौंप दिया। मैं इस समय किं कर्त्तव्य विमूढ़ सा हो रहा हूं। मेरी दशा ठीक ऐसी हो रही है, "सूझ न एकौ अङ्ग उपाऊ। मनमतिरंक मनोरथराऊ' साहस बांधता हूं, कुछ कहने का केवल आप लोगों का बुद्धिबल देख कर। विश्वास है, आपने जिस गुरुतम कार्य्य का भार मुझे सौंपा है, उसे वहन करने में आप मेरे सहायक होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जनो ! जिस समय मैं अपनी दृष्टि इस विकट सम्मेलन की ओर फेरता हूं उस समय इसी प्रान्त के सुप्रसिद्ध प्राचीन विश्व-विद्यालय 'नलिन्द' का भव्य और मनोरम चित्र मेरे सामने आता है। जिस प्रकार उक्त विश्वविद्यालय में ब्रह्मदेश, चीन, तिब्बत, तुर्किस्तान आदि देशों के जिज्ञासू श्रद्धा सहित सरस्वती देवी की आराधना करने के लिये आया करते थे, ठीक उसी प्रकार भिन्न भिन्न प्रान्तोंके निवासी आज आप सब सज्जन मातृ-भाषा प्रेम के वशीभूत होकर, परम पूजनीया प्रेममयी हिन्दी के पादाम्बुजों की पूजा करने के लिये यहां प्रस्तुत हुए हैं। यह सुसज्जित सभामण्डप मुझे उस मनोहर उपवन का स्मरण दिलाता है, जहां वह प्राचीन विश्वविद्यालय स्थापित था। इस पण्डित-मंडली में अनेक विषयोंके पारदर्शी विद्वानों को देख उक्त विश्वविद्यालय के उन धुरन्धर अध्यापकों का स्मरण आये बिना नहीं रहता, जो भव्यभारत के प्राचीन गौरव के आधारस्तम्भ थे। मुझे विश्वास है, जिस प्रकार वहां के निकले हुए विद्यार्थी अपने जीवन को संसार की सेवा में सहर्ष लगा देते थे और सद्धर्म प्रचार के हेतु प्राणपण से कार्य करने के लिये प्रस्तुत रहा करते थे, उसी प्रकार आप सब सज्जन भी स्वदेशसेवा और मातृभाषा के पवित्र प्रकाशको देश के कोने कोने तक पहुंचाने को अपना ध्रुवध्येय बना लेंगे। साथ ही यह भी निश्चय है, कि जिस प्रकार उक्त विश्वविद्यालय के वीरवरों के बुद्धिबल से बुद्ध-धर्म्म की विजय वैजयन्ती विश्वभर में फहरा गई थी, उसी प्रकार आप लोगों की सहायता से मातृ-भाषा हिन्दी की महिमा समस्त भूमण्डल में छा जायेगी। यह वही पाटलिपुत्र है, जहां से महामान्य महीप चन्द्रगुप्त ने जगतविजेता सिकन्दर के अनुयायियों को भारतीय विश्व-विजयिनी शक्ति का परिचय दिया था, वस्तुतः इस विमल भव्य-भूमि के दर्शन-मात्र से ही रोम रोम में कर्म्मण्यता की बिजली सञ्चारित होती है। अन्तरात्मा नवीन स्फूर्तिसे जागृति और स्वदेशाभिमान की भावनाओं से परिपल्लवित हो राष्ट्रभाषा हिन्दी को जन्मसिद्ध स्वत्व के सिंहासन पर आसन करने के लिये बार बार उत्तेजित कर रही है।

अपने ध्रुवध्येय के पवित्र पथ को कण्टकाकीर्ण देख कर्त्तव्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमुख न होने देने के लिये विजय-मोदक की मनमोहनी मूर्त्ति विद्यावृद्ध विजयानन्द जी सुयोग्य सचिव राजेन्द्र सहित बलप्रदान कर रहे हैं। अतएव निःशङ्क हो हिन्दी के उत्कर्ष की बेदी पर बलि होने के लिये, परतंत्रता से पृथ्वी धो देने के लिये कर्त्तव्यक्षेत्र पर आ जाइये। विश्वास रखिये, विजय श्री आपको अवश्य अपनावेगी और हिन्दी राष्ट्रभाषा के सिंहासन से संसार को भारतीय स्वाधीनता का सुखकर संदेश सुनावेगी।

प्रिय-सज्जनो! साहित्य-सम्मेलनके इतिहासमें यह प्रथम अवसर है, कि उसे स्वाधीनता का अभिवादन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अतएव अवश्य ही यह शुभ दिवस सम्मेलनके उज्ज्वल इतिहास में स्वर्णाक्षरों में सर्व्वदा के लिये अङ्कित रहेगा? कारण, आपको विदित ही है, कि जिस दिन से हिन्दी ने कवि-चन्द्र द्वारा अपनी चारु चन्द्रिका की छटा संसार भर में छहराना आरम्भ किया था, उसी दिन से अभाग्यवश उसके प्यारे पुत्रों के उत्कर्ष का आकाश पराधीनता के घनघोर घनों से आच्छादित हो गया था। हिन्दी-संसार उन महात्माओं का अत्यन्त आभारी है, जिन्होंने ऐसी प्रतिकूल परिस्थित में भी उसे प्रेमपूर्व्वक अपनाया, जिससे वह जगतीतल की आज भी जीती-जागती भाषा बनी है। उक्त दुरवस्था के दुर्ग में रहते हुए भी हिन्दी-साहित्य के सूर्य्य सूरने भक्ति-सुधा का स्रोत भक्तों के हृदयों में बहा दिया, कवि-कुल-कुमुद-कलाधर गोस्वामी तुलसीदास ने कविता कामिनी की कमनीय कान्ति छहरा दी, कवि-कुल-काननकोकिल केशवने काव्य क्लिष्टता में भी कोमल भावों को भरपूर भर दिया तथा भारतेन्दु की निर्म्मल प्रतिभा की ज्योति ने भूलेभटके पथिकों को गन्तव्य पथ पर प्रदर्शित करने का प्रगाढ़ प्रयत्न किया, फिर भी हमारी पराधीनता की बेड़ियों से जकड़े रहने के कारण हिन्दी का उन्नति-पथ कण्टकाकीर्ण ही रहा। उसे दूसरी भाषाओं के समक्ष शताब्दियों से मस्तक नत किये ही रहना पड़ा; पर 'रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कज श्री' अनुसार पराधीनता विभारी की निविड़ अन्धियारी और घनघोर घटा का अवसान हुआ स्वधीनता के बालसूर्य्य ने प्राचीन दृशा को सुशोभित किया तथा शोक सन्तापहारिणी सततसुधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारिणी माता हिन्दी की स्वाधीनता सुख समीरण का सानन्द स्वागत करते हुए अपने छोटी सुतों को प्रफुल्लित चित से यहां सम्मिलित देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस शुभ अवसर का संदेशा सुनने वाली महामान्य समाट् की परम पवित्र और हृदयोत्फुल्लकारी यह प्रार्थना है, भगवान हमें ऐसी सुबुद्धि दीजिये, और ऐसा मार्ग बताइये कि जिससे भारत में सुख सम्मृद्धि और सन्तोष की अधिकाधिक वृद्धि हो और पूर्ण राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त कराने के लिये सहृदय सम्राट् की इस उदारता के लिये सहर्ष धन्यवाद है। अब सन्देह नहीं, कि हिन्दी-साहित्य के उद्यान में विविध प्रकार के ग्रन्थप्रसूनों की कलियां सम्राट् की सुदृष्टि सुध सिञ्चन तथा श्रीयुत पुरुषोत्तम, श्याम सुन्दर, जगन्नाथ और भारतीय आत्मा प्रभृति हिन्दी प्रेमियों के प्रेम-पीयूष की वृष्टि से विकसित होकर अपने सद्ज्ञान सौरभ से समस्त देश को सुखमय बना देगी। जिस उपवन की मान-मर्य्यादा वर्धित करनेके लिये मनमोहक माली माननीय मदनमोहन मालवीय, कर्म्मवीर मोहनदास कर्म्मचद्र गांधी, लोकमान्य तिलक प्रभृति पुरुष पुङ्गव प्रस्तुत हैं, उसके फूलने फलने में सन्देह नहीं। शीघ्र ही इस वाटिका की विविध विषय हरयाली से हिन्दी-हितैषियों का हृदय क्षेत्र हरा-भरा हो जायेगा और इस हिन्दी कानन की कमनीय कविकोकिलाओं का काव्य-कलरव कायरों को भी कर्म्मनिष्ठ करेगा और यह सुझावेगा:—

"वीरोन्नति है ध्येय महान। वीरवरों का यह सम्मान॥
इस पर वारें तन-धन प्राण। जिससे हो भारत-कल्याण।"

सज्जनों!

मैं उन मनुष्यों में हूं, जिनका यह दृढ़ विश्वास है, कि अपने देश की वर्त्तमान व्यवस्थापक सभा को भारत वर्ष की अवश्यम्भावी विराट् पारलीमेण्ट का स्वरूप अचिर काल में ही प्राप्त होगा, जिसके हाथ में समस्त भारत वर्ष के शासन की बागडोर होगी। तब मेरा यही ध्येय होगा और मुझे विश्वास है, कि आप सब तथा सारे भारत वर्ष की यह महत्वाकांक्षा होगी, कि उक्त पारलीमेण्ट का सारा कार्य्य हमारी हिन्दी-भाषा में हो। कदापि शङ्का न कीजिये, कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न भाषाओं के रहते हिन्दी ही को उक्त पारली-मेण्ट में यह गौरवान्वित पद कैसे प्राप्त हो जायेगा ? यदि विलायती पारलिमेण्ट में आइरिश वैल्श और स्काच आदि भिन्न-भिन्न भाषाओं के रहते अंग्रेजी भाषा में ही पारलीमेण्ट का कार्य्य सुगमता पूर्वक होने में क्या अड़चन ? इस बात को प्रायः सभी अन्य भाषा-भषियों ने स्वीकृत कर लिया है, कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने की अधिकारिणी है। साक्षर सज्जन यह न भूले होंगे, कि पिछले मर-हाठी-साहित्य सम्मेलन में यह प्रस्ताव पास हो चुका है, कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने के योग्य है। गुजराती सम्मेलन ने भी इसका सहर्ष समर्थन किया है। बङ्गाली भाईयों का भी इस विषय में मत-भेद नहीं है। आप को स्मरण होगा, कि जष्टिस शारदा चरण मित्र ने जोरों के साथ कहा था, कि हिन्दी राष्ट्र-भाषा और देवनागरी-राष्ट्रलिपि हो। इसी लक्ष्य को आगे रख कांग्रेस ने अपनी कार्य्य वाही हिन्दी में करने का श्रीगणेश किया है। कांग्रेस के इतिहास में यह प्रथम अवसर है, कि स्वागतकारिणी समिति के सभापति का सम्पूर्ण भाषण हिन्दी में हुआ। आशा है, कि वह शुभ दिन भी शीघ्र आयेगा, कि जिस दिन कांग्रेस की अधिकांश कार्य्य-वाही राष्ट्रभाषा हिन्दी के द्वारा होगी और दोनों सभापतियों का भाषण हिन्दी में होने से सम्मेलन को उन्हें बधाई देने का सौभाग्य प्राप्त होगा। मुझे खेद है, कि श्रीमती बिसेण्ट ने ऐसा समझा है, कि कांग्रेस की कार्य्यवाही हिन्दी में होने से उसकी राष्ट्रीयता में बट्टा लगता है और वह अखिल भारत-वर्षीय न रह कर प्रान्त की बन रही है। वह जरा तकलीफ करें और पढ़ें, कि जिन मन्द्राजी भाइयों पर रहम करके उन्होंने यह बे सिर पैर की बात कह डाली है, वही मंद्राजी भाई मार्च महीने की जिला कनफरन्स में डाक्टर टी० ये० एन० ये० एस० राजन की अध्यक्षता में हुई थी, यह प्रस्ताव पास करते हैं:—

"इस कनफरन्स का मत है, कि इस जिले की जनता में हिन्दु-स्थानी हिन्दी का प्रचार करने के लिये प्रयत्न किया जाना चाहिये।" मैं अपने इन भाइयों को इसके लिये बधाई देता हूं और विश्वास करता हूं, कि सम्मेलन श्रीमती जी के उक्त कथन का प्रतिवाद करेगा। मेरा सिद्धान्त है, कि ऐक्य-भावका उत्पन्न एक प्रजा बनने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पारस्परिक सहानुभूति जाग्रत करने के लिये हिन्दी को सर्वमान्य भाषा बनाना नितान्त आवश्यक है। गुप्त जी ने भी यथार्थ ही कहा है:—

"ज्यों ज्यों यहां पर एक भाषा वृद्धि पाती जायेगी।
त्यों-त्यों मनोहर एकता सबमें समाती जायेगी॥
कट जायेगी जड़ भिन्नताकी एकता बढ़ जायेगी।
श्री भारती-जनजाति उन्नति-शिखर पर चढ़ जायेगी॥"

महानुभावो! हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने के योग्य सिद्ध कर देने तथा लक्ष्य स्थिर कर लेने मात्र से ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। देखना यह होगा, कि क्या वास्तव में हिन्दी के प्रत्येक साहित्य-अङ्ग की इतनी पुष्टि हो गई है, कि वह राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर निःस्सन्देह आसीन हो सके। इसके लिये आवश्यक है कि हम हिन्दी के अभावों को जान कर जीजान से उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें।

साहित्य का आरम्भ कविता से होता है। चाहे जिस जाति का साहित्य हो, उसमें आरम्भ में पद्य ही देखने में आते हैं। हमारे अतीत गौरवपूर्ण काल के दो ऐतिहासिक महाकाव्य रामायण और महाभारत उक्त कथन की पुष्टि कर रहे हैं। काव्यों का होना भाषा की प्रौढ़ उन्नति का द्योतक है। हमारे हिन्दी-साहित्य में पुराने चार छः महाकाव्यों को छोड़ और हैं ही नहीं, यह हम हिन्दी-भाषा-भाषियों के लिये बड़ी लज्जा की बात है। इसका मतलब यह नहीं कि हिन्दी के कवि इस ओर कुछ कर ही नहीं रहे हैं। बात दरअसल यह है, कि जितना होना चाहिये था, उतना नहीं हुआ; फिर भी श्रीयुत प्रेमघनजी, श्रीधरजी पाठक, बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त, विनायकरावजी और पंडित अयोध्यासिंहजी उपाध्याय प्रभृति जो हिन्दी-साहित्य की सेवा कर रहे हैं, उनके लिये हम उनके बड़े ऋणी हैं।

हमारे साहित्य में इतिहास ग्रन्थों की भी बेतरह कमी है। सन्तोष की बात है, कि इस अभाव की पूर्त्ति करने के लिये मुंशी देवीप्रसाद जी और पण्डित गौरीशङ्कर हीराचन्द जी ओझा दत्त-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्त हुए हैं। हिन्दीसेवियों को उनका हाथ बटाना चाहिये। पूर्वजों की पूर्व प्रतिष्ठा और संसार की समस्त जातियों के उत्थान पतन का ज्ञान प्राप्त किये बिना जीवन संग्राममें विजयी होना किसी भी राष्ट्र के लिये सम्भव नहीं।

तीसरी बात जो हिन्दी-साहित्य भण्डार में विशेष है, वह यह है, कि इस विज्ञानयुगमें भी उसमें विज्ञानग्रन्थों की कमी है। हिन्दी हितैषियों की दृष्टि इस कमी पर अवश्य है; पर अभी तक काम बहुत कम हो रहा है। इस दशा में प्रयाग का विज्ञान-परिषद् सराहनीय उद्योग कर रही है; पर इसकी गति बहुत मंदी है। खेद है, कि जिस विमल विज्ञान की ज्योति से सभ्य संसार जाज्वल्यमान हो उठा है, उसी विज्ञान की ज्योति जराप्राप्त भारत की भावी राष्ट्रभाषा के सपूतों के अज्ञान-अन्धकार को आज नष्ट करने में असमर्थ है।

अभावों की इतिश्री इतने ही से नहीं हो जाती। आधुनिक हिन्दी के जन्मदाता स्वर्गीय बाबू हरिश्चन्द्र के नाटकों को अलग करके यदि हिन्दी-साहित्यभण्डार में अन्य नाटक रत्नों को खोजने के लिये प्रस्तुत हों, तो वही दशा होगी, जो उस मनुष्य की अवश्यम्भावी है, जो मरुस्थल में सुन्दर स्वादिष्ट सलिल से सम्पूर्ण सरोवरको ढूंढ़ने के लिये सयत्न हो। यहां पर यह कहना अनुचित न होगा, कि किसी भी जाति, राष्ट्र की वास्तविक अतीत और आधुनिक स्थिति का सच्चा दृश्य जनता के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये नाटक अच्छे साधन हैं।

नाटकोंके सिवा उच्च कोटिके उपन्यासों की भी हिन्दी में न्यूनता है। आदर्श की दृष्टि से पण्डित बालकृष्ण भट्ट के सौ अजान एक सुजान, श्री निवासदासके परीक्षा गुरु सरीखे उच्च कोटिके उपन्यास अभी तक बिरले ही हैं, हमारे अधिकांश उपन्यास लेखकों का संसार भरमें भ्रष्ट चरित्र नायक और नायिका के अतिरिक्त आशिक और माशूक के सिवा कुछ दिखा ही नहीं पड़ता, कि जिसके चरित्र का वर्णन वह अपने ग्रन्थों में करते। अतएव उनके परिणाम तक पहुँचने के पहिले ही इतनी कुरुचि उत्पन्न हो जाती है, कि श्रीमती सुशिक्षा को हृदय में स्थान ही नहीं मिल पाता। उपन्यास लेखकों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना है, कि वे उच्च आदर्श का ध्यान रख कर उपन्यासों की रचना किया करें।

प्रिय महाशयो! हिन्दी साहित्य में अभी तक जिन बातों की कमी बताई गई है, उनमें अर्थशास्त्र की कमी भी विशेष चिन्तनीय है। द्विवेदी जी के सम्पति शास्त्र और प्रोफेसर बालकृष्ण के अर्थ शास्त्र लब्ध-चित्त को शान्ति देते हैं, पर भारत वर्ष जैसे दरिद्र देश की जनता को द्रव्योपार्जन के सञ्चय और व्यय का ज्ञान कराने के लिये और भी अनेक ऐसी पुस्तकों का होना अपेक्षित है, जैसी कि हाल में हिन्दी पुस्तक एजेन्सी हरीसन रोड कलकत्ता ने इसी पटनेके प्रोफेसर राधाकृष्ण झा० एम० ए० की बनाई हुई 'भारतकी साम्पत्तिक अवस्था' प्रकाशित की है।

इसके अतिरिक्त कृषि, कला कौशल, वाणिज्य, व्यवसाय, बाल-वनितोपयोगी, भवन-निर्माण, नौका नयन, भूगोल-खगोल, समर और शिल्प सम्बन्धी साहित्य की भी अधिक आवश्यकता है। साथ ही हिन्दी की दरिद्रता दूरकरने के लिये सर्वाङ्ग सुन्दर विश्वकोष और उच्चकोटि के व्याकरण की कुछ कम जरूरत नहीं। सर्वोपरि नवीन शासन सुधार की आयोजना ने ऐसे राजनैतिक साहित्यका निर्माण करना अनिवार्य्य कर दिया है, कि जिससे राज्य का प्रत्येक व्यक्ति राजनैतिक क्षेत्रमें अपना उत्तरदायित्व समझ कर प्राप्त हुए निज स्वत्वों का निर्वाह योग्यता पूर्वक कर सके।

सज्जनो, हिन्दी साहित्य की अभी तक जो ऐसी असन्तोषजनक स्थिति है, इसके कारण केवल हम ही नहीं, वरन् हमारे शासक भी हैं। उन्होंने हमें विदेशी भाषा की उलझनमें फँसाकर हिन्दी-साहित्य की अङ्गपुष्टि करने के लिये असमर्थ कर रखा है। जान बूझकर हमें ऐसी शिक्षा नहीं दी जिससे हम अपने आप को समझते, स्वाधीन नेता बनाते और अपने साहित्यसे प्रेम करना सीखते, उनकी शिक्षा पद्धतिका मुख्य उद्देश्य तो कुछ और ही था, जैसा, कि किसी यूरोपीय विद्वान् के इस कथन से प्रकट होता है :—

"शासक जातियां अपनी सत्ता को सुदृढ़ और चिरस्थायी बनाने के लिए शासित जातियों की अपनी (विदेशी) भाषा पढ़ने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाध्य किया करती हैं।" यह स्वयं सिद्ध है, कि विदेशी भाषा के प्रयोग से शाशित जातियों का दृष्टिकोण विदेशी हो जाता है, दृष्टिकोण के विदेशी हो जाने से उनका ध्येय भी विदेशी हो जाता है, ध्येय के विदेशी बन जाने से उनके सारे साधन विदेशी हो जाते हैं. साधनों के विदेशी हो जाने पर उनका सारा स्वरूप न केवल विदेशी सांचे में ढल जाता है; वरं परिणाम यह होता है, कि वह संसार में अपना अस्तित्व ही खो बैठता हैं। यही कारण है, संसार की कई शाशित जातियों का शासकों के इस स्वार्थ साधन की वेदी पर बलि देना पड़ा है। इसी सिद्धान्त पर वर्त्तमान युग में भी जर्म्मनी ने पालक निवासियों को जर्म्मन भाषा सीखने के लिए लाचार किया था। इसी सिद्धान्त पर बृटिश साम्राज्यान्तर्गत दक्षिण अफरिका में बृटिश जातिकी ओर से डच भाषा की उपेक्षा की जा रही हैं। इसी सिद्धान्त पर कनेडा में फ्रेंच भाषाको नेस्तनाबूद कर देने की तदबीर की जा रही है। सर जान उडरफ महाशय ने तो अपनी पुस्तक में यहाँ तक कहा है कि हाल ही के कनेडा के अङ्गरेजी प्रान्तों में फ्रेंचभाषा का प्रयोग करना गुनाह समझा गया है। यद्यपि भारतवर्षमें कोई ऐसा काम नहीं बना, तो भी यह मानना पड़ेगा, कि अङ्गरेजी भाषा सीखने की हम भारतवासियों के पीछे ऐसी कड़ी कैद लगा दी गई है, कि फिजी कनेडा के कानून की भी कान काटती है। यदि हमें शाला में शिक्षा समाप्त कर विश्वविद्यालय में प्रवेश करना है, यदि हमें जीविका के लिये सरकारी नौकरी की शरण ग्रहण करनी है, यदि हमें कृषी, कला कौशल बाणिज्य-व्यवसाय शिल्प आदि की उच्च शिक्षा प्राप्त करनी है तो हमारे लिये यह लाजिमी रखा गया है, कि हम पहले अङ्गरेजी भाषा का विशेष ज्ञान प्राप्त कर लें। गरज यह, कि बिना अङ्गरेजी सीखे हमारा संसार में कहीं गुजारा नहीं। कहना न होगा, कि हमारे शासकों की वर्त्तमान शिक्षनीतिका यही रहस्य है, कि सारे देश की भाषाओं पर अङ्गरेजी भाषा का साम्राज्य स्थापित हो जाये और देशी भाषायें उसी की अधीनता में पड़ कर अपने को सौभाग्यवती समझें। तभी हम अपने देश के विश्वविद्यालयों के राजप्रासादों में अंग्रेजी को सम्राज्ञी के आसन पर आसीन देखते हैं और अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीना हीना देश की भाषाओं को परिचारिका का काम करते पाते हैं।

सर जॉन वुडरफ महाशय अपनी पुस्तक में तो यहां तक लिखते हैं कि हाल ही में कनाडा के अंगरेजी प्रान्तों में फ्रेंच भाषा का प्रयोग करना गुनाह समझा गया है। यद्यपि भारतवर्ष में कोई ऐसा काम नहीं बना तो भी यह मानना पड़ेगा, कि अंगरेजी भाषा सीखने की हम भारतवासियों के पीछे ऐसी कड़ी कैद लगा दी गई है, कि फिजी कनाडा के कानून के भी कान काटती है। यदि हमें शाला की शिक्षा समाप्त कर विश्वविद्यालय में प्रवेश करना है, यदि हमें जीविका के लिये सरकारी नौकरी की शरण ग्रहण करनी है, यदि हमें कृषि कला कौशल्य, वाणिज्य व्यवसाय शिल्प आदि की उच्च शिक्षा प्राप्त करनी है तो हमारे लिये यह लाजिमी रखा गया है, कि हम पहले अंगरेजी भाषा का विशेष ज्ञान प्राप्त करलें। गरज यह, कि बिना अंगरेजी सीखे हमारा संसार में कहीं गुजारा नहीं। कहना न होगा, कि हमारे शासकों की वर्त्तमान शिक्षानीति का यही रहस्य है, कि सारे देश की भाषा में अंगरेजी भाषा का साम्राज्य स्थापित हो जाय और देशी भाषाएं उसी की अधीनता में रह कर अपने को सौभाग्यवती समझें तभी हम अपने देश के विश्वविद्यालयोंके राज-प्रासादों में अंग्रेज़ीको सम्राज्ञी के आसन पर आसीन देखते हैं और अपनी दीना हीना देश की भाषाओंको परिचारिक काम करते पाते हैं।

प्रिय सज्जनो, जिस समय वर्त्तमान विश्वविद्यालयों को मैं शिकायत करता हूं, उस समय कोई यह न समझे, कि मैं इन विश्वविद्यालयों के द्वारा हम भारतवासियों को जो उपकार हुआ है, उसे बिलकुल बहिष्कृत करने का पक्षपाती हूं। नहीं कदापि नहीं, जब मुझे स्मरण आता है, कि इन्हीं विश्वविद्यालयोंकी शालाओंमें शिक्षा पाकर निकले हुए वृद्ध पितामह दादाभाई नौरोजी और गोखले, श्रीयुत कर्मवीर गांधी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महर्षि पं० मदनमोहन मालवीय, विदेशमें भी देशकी लाज रखनेवाले पंजाब केसरी लाला लाजपतराय प्रभृति देशके प्रसिद्ध नेता, श्रीस्वामी रामतीर्थ तथा स्वामी विवेकानंद से विचक्षण वेदान्ती, डाक्टर बोस, पी० सी० राय, प्रोफेसर गज्जर सरीखे विज्ञानाचार्य; धनकुबेर ताता, सर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर. एन. मुकर जी सरीखे धुरन्धर व्यवसायी, मिस्टर आय्यंगर, डाक्टर रासबिहारी घोश, सर आशुतोष मुकर्जी प्रभृति कानूनके पारदर्शी विद्वान, डाकृर रवीन्द्रनाथ टेगोर, माइकेल मधुसूदन सरीखे कवि शिरोमणि, डाकृर सरोजनी नायडू और चौधरानी हेमन्त कुमारी देवी जैसी विदुषी महिलाओं ने सभ्य और सुशिक्षित संसार में देशका गौरव और मान बढ़ाया है तब यह मानना पड़ता है कि इन विश्वविद्यालयों से हमें अवश्य लाभ पहुंचा है। इतने पर भी यदि मुझे इन विश्वविद्यालयों से असन्तोष है तो मुख्य कारण यही है कि गत ५० वर्षों में ये वीर विश्वविद्यालय अभी तक पुरुषों में संयुक्त प्रान्त में केवल एक पं० मदनमोहन मालवीय, महाराष्ट्र प्रदेश में एक बाल गंगाधर तिलक, पंजाब में एक लाजपतराय, गुजरात में एक महात्मा गांधी बंगाल में एक अरविन्द, मदरास में एक सुब्रह्मण्य अय्यर और महिलाओं में एक डाकृर सरोजिनी नायडू तैयार कर सके हैं। क्या किसी को भी इस गति से सन्तोष हो सकता है। हमें चाहिये ऐसे विश्वविद्यालय जिनके द्वारा भारत की इकतीस करोड़ प्रजा में से ऐसे पुरुष पुंगव और स्त्री रत्न एक नहीं सैकड़ों और सहस्रों निकलें। तब कहीं इस दुर्दशादलित भारतवर्ष का अभ्युत्थान हो सकेगा। सच तो यह है कि अभी तक इन विश्वविद्यालयों से जो हमें लाभ हुआ है उसके बदले में हमें अपना सारा चरित्र और सारे स्वाभिमान का बलिदान कर देना पड़ा है। विश्वविद्यालयों की वर्तमान शिक्षा पद्धतिके दूषित परिणाम को कलकत्ता विश्वविद्यालय की कमीशन ने भी स्वीकृत किया है। उनका कहना है "यह स्पष्ट है कि जिस रीति से विश्वविद्यालय सरकारी नौकर तय्यार करने के काम में लाये गये हैं उसका परिणाम ह्रासजनक हुआ अधिकांश विद्यार्थियों के ऊपर न केवल कोर्स पूरा करने की भावना का भूत सवार रहता है, वरन् परीक्षोत्तीर्ण होने की अत्यधिक चिन्ता उनके हृदय को जलाया करती है जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि अनुत्तीर्ण होने पर उन्हें ग्लानि और नैराश्य घर दबाते हैं।" एक और विद्वान ने भी यथार्थ ही कहा है कि वर्त्तमान विश्वविद्यालय वे विदेशी पौधे हैं जो विदेशी भूमि पर ही फूल और फल सकते हैं। अतएव, यदि भविष्य में हमें वस्तुतः इन विश्वविद्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लयों से लाभ उठाना है तो यह परमावश्यक है कि हमारे विश्व विद्यालयों का ध्येय वर्त्तमान की तरह विदेशी न रहे ; प्रत्युत उनका उद्देश्य स्वदेशी हो और तदनुकूल उनके समस्त साधन प्रस्तुत किये जायं। यदि हमें उनका ध्येय स्वदेशी बनाने में सफल होना है तो यह नितांत आवश्यक होगा कि भारतीय शिक्षा नीति का दृष्टिकोण एक दम पलट दिया जाय और जो स्थान आज कल अंग्रेजी भाषा को प्राप्त है वह राष्ट्रभाषा हिन्दी को दे दिया जाय। तभी हम भारत-वासियों के हृदय में उन उच्च और पवित्र स्वदेशी भावोंका जागृत होना सम्भव होगा जिनकी सुदृढ़ और स्थायी नींव पर हम राष्ट्रीयता की उस विशाल अट्टालिका का निर्माण कर सकेंगे, कि जिसके आधार पर सारे भारतवर्ष में ऐक्य की विजय-दुंदुभी बजा, भारतीय आत्मा के सच्चे स्वरूप का परिचय संसार को दे सकेंगे। यह तब संभव होगा कि जब हमें अपनी शिक्षा नीति स्थिर करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो जायगी। ऐसा न होने का ही दुष्परिणाम है कि सम्मेलन की वर्षों की यह छोटी सी याचना, कि हमारी शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो, अरण्य-रोदनके समान निरर्थक हुई है। मेरा विश्वास है कि, जब तक भारतवासियों को अपनी शिक्षा नीति निश्चित करने के लिये पूर्णस्वराज्य प्राप्त न हो जायगा, तब तक पूर्ण स्वायत्तशासन प्राप्त करने में भी विलम्ब होगा !

आप को यह जान कर हर्ष होगा कि, कलकत्ता विश्वविद्यालय कमीशन ने यह सिद्धान्त स्थिर किया है कि, भविष्य में प्रान्तीय विश्वविद्यालयों के प्रधान शासकमंडल में जनता का जबरदस्त प्रातिनिध्य हो जिसके द्वारा जनता अपने प्रान्त और देशकी दृष्टि से शिक्षा पद्धति निर्धारित कर सके। साथ ही नवीन शासन सुधार की आयोजना होने पर शिक्षा विभाग हस्तान्तरित विषय होगा और उसका परिमित अधिकार प्रजा-मंत्री के अधीन होगा ; परन्तु स्मरण रहे कि, हमारा अभीष्ट तभी सिद्ध होगा कि जब हम प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय भाषाओंको विश्वविद्यालयों में समुचित स्थान दे सकेंगे और अपनी शिक्षा पद्धति स्वदेश-हितकी दृष्टि से स्वयं निश्चित कर सकेंगे। वस्तुतः हमारा अभीष्ट तभी सिद्ध होगा जब कि शिक्षा विभाग के नीचे से नीचे दरजे से लेकर ऊंचे से ऊंचे दरजे तक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा का माध्यम देशी भाषाएं हो जायंगी और राष्ट्रभाषा हिन्दी को यह स्थान उपलब्ध हो जायगा जो वर्त्तमान समय में अंग्रेजी भाषा को प्राप्त है।

सज्जनो, यहां मुझसे यह प्रगट किये बिना नहीं रहा जाता, कि जिस समय काशीस्थ हिन्दू विश्वविद्यालय का सूत्रपात हुआ था, उसी समय से हिन्दी संसार की यह आशा बलवती होने लगी थी कि उसके संचालक शिक्षा का माध्यम हिन्दी रख कर अन्य विश्व-विद्यालयों के समक्ष यह आदर्श उपस्थित कर देगें कि उच्च से उच्च कोटि की शिक्षा भी हमारी हिन्दी द्वारा ही दी जा सकती है। पर खेद है कि हमारी यह आशा अभी तक कार्यरूप में परिणत नहीं हुई। संभव है कि, पुस्तकों का अभाव हिन्दी-जनता की इस महत्वाकांक्षा की पूर्त्ति के पथ में बाधक हुआ हो। यदि बात ऐसी ही है, तो हिन्दू विश्वविद्यालय के संचालकों से सम्मेलन को सानुरोध प्रार्थना करना चाहिये कि वे कृपया एक अलग विभाग खोल दें जिससे आवश्यक पुस्तकें शीघ्र तय्यार हो जायं और विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो सके; जिससे विश्वविद्यालय का वह सच्चा और एक मात्र उद्देश्य सिद्ध हो, कि जिसे अमेरिका अपने सामने रखकर वर्त्तमान सभ्य और सुशिक्षित संसार में अचिरकाल ही में अग्रगण्य हुआ है। अमेरिका के प्रसिद्ध राजदूत मिस्टर पेज उस उद्देश्य का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि—

विश्वविद्यालय के ज्ञानाकाश की किरण राज्य भर में फैल जाने से प्रजा को यह निश्चय हो गया है कि विश्वविद्यालय वह स्थान नहीं है जहां पर इने गिने ही व्यक्ति जाकर, उच्च शिक्षा से लाभ उठावें, प्रत्युत वह मानसिक, औद्योगिक, और व्यापारिक शक्तियों को संगठित करने का एक सार्वजनिक केन्द्र है। वह सभी की वस्तु है। प्रत्येक स्त्री या पुरुष विश्वविद्यालय की शालाओं को अपनी शालायें मानता है। वह विश्वविद्यालय न केवल भाग्यवान, कुशाग्र-बुद्धि श्रीमान अथवा विशेष अधिकारवान के लिए ही है, वरन् वास्तव में वह जेल, पागलखाने अथवा अन्य ऐसी ही परिस्थिति में रहने वाले मनुष्यों को छोड़ सर्वसाधारण के हित के लिये है। यह अब कोई नहीं मानेगा कि शिक्षा पर किसी खास आदमी के अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार की मुहर लगी है या वह कुछ विशेष महज्जनों की उदारता से ही प्राप्त हो सकती है। वस्तुतः उस पर सब का एक सा ही हक है।

प्रिय सज्जनों, मैं आप ही से पूछता हूं, कि क्या यह उच्चतम और पवित्र उद्देश्य मातृ-भाषा के सिवा किसी भी अन्य विदेशी भाषा के द्वारा सिद्ध हो सकेगा ? इसी दूरदर्शी सिद्धान्त पर निर्भर कर निजाम के शिक्षा विभाग के डायरेक्टर सैयद मसऊद महोदय कहते हैं:—

"मकतबों और यूनीवर्सिटियों की तालीम का जरिया मुकामी जुबान ही होनी चाहिये। ऐसा न करने से हमारी जिन्दगी और हमारे ख़्यालात जरूरत से ज्यादह बनावटी और महदूद हो जाते हैं। हिन्दोस्तान का जिहानत व इल्मी लियाक़त में उरूज होना तब तक एक अम्रे मुहाल है जब तक कि हमें अपनी मादरी जुबानके जरिये हर तरहकी तालीम पाने की आजादी नहीं दे दी जाती। जिसका मिलना तब तक गैर-मुमकिन है जब तक कि सिर्फ अंगरेजी ही एक तालीम का जरिया हो।"

आपने इसी विचारसे निजाम हैदराबाद के उसमानियां-विश्व-विद्यालय की शिक्षा का माध्यम उर्दू रखा है और अंगरेजी दूसरी भाषा की तौर पर पढ़ाई जाना तय पाया है। इस पवित्र अनुष्ठान में शीघ्र कृतकार्य होने के लिये एक विशाल संस्था स्थापित की गई है, जिसमें भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों के विद्वान आवश्यक पुस्तकों के अनुवाद करने के लिये नियुक्त किये गये हैं। निजाम जैसी शक्ति शालिनी सरकार की सहायता पाकर भी क्या किसी को उक्त संस्था के उद्देश्य के सिद्ध होने में सन्देह हो सकता है ? हम निजाम हैदराबाद की सरकार को इस दूरन्देशी के लिये मुबारकबादी देते हैं। साथ ही विश्वविद्यालय में उर्दू को उचित स्थान उपलब्ध हो जाने से हार्दिक हर्ष प्रकट करते हैं।

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्यमाला

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित

सम्मेलनकी स्थायी समितिने सुलभ साहित्यमाला निकालनेका निश्चय किया है, जिसका उद्देश्य यह है कि हिन्दीके उत्तमोत्तम ग्रन्थ सुन्दर और सस्ते संस्करणमें प्रकाशित किये जायें, जिससे हिन्दी-हितैषिणी-जनतामें उन ग्रन्थ-रत्नोंका बड़ीही सुलभतासे प्रचार हो । अब तक निम्नलिखित चार पुस्तकें प्रकाशितहो चुकी हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण नीचेलिखा जाता है:—

१—भूषण ग्रन्थावली—महाकवि भूषणको कौन भारतीय हृदय न जानता होगा, कि जिनकी ओजमयी कविताने वीरवर शिवाजीको उत्तेजित कर भारतके मान, धर्म तथा जातीयताकी रक्षाकी थी । यह उन्हीं महाकविके ग्रन्थोंका संग्रह है । हिन्दीके सुलेखक पं० रामनरेश त्रिपाठी जीने इसपर बड़ीही उत्तमतासे टीका लिखी है, जिसके पढ़नेसे गूढ़ विषय सहजही समझमें आ सकते हैं । सुन्दर डबल क्राउनके आकारके २०० से अधिक पृष्ठ वाली पुस्तकका दाम केवल ॥) रक्खा गया है ।

२—हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास--इसका विषय नामहीसे मालूम हो सकता है । इसे "मिश्र बन्धु" ने लिखा है । पृष्ठ संख्या १८८ । मूल्य ।-)

३—भारत गीत—यह सुप्रसिद्ध कवि पं० श्रीधर पाठक रचित गीतोंका सुंदर संग्रह है। प्रत्येक गीत संगीत गत एवं बड़ाही मनोहर है । देश-भक्ति पंक्ति पंक्ति पर टपकती है । पृष्ठ संख्या ६४ मूल्य ≡)

४—भारतवर्षका इतिहास—लेखक, मिश्रबन्धु । हिन्दीमें यह पुस्तक पहलीही है क्योंकि ऐसा पूर्ण और सच्चा इतिहास अब तक हिन्दीमें लिखाही नहीं गया । इसमें समय-निरूपण वैदिक इतिहास, पौराणिक राजवंश, आर्यों की सभ्यता तथा ब्राह्मणकाल आदि विषयों पर बड़ाही तात्विक विवेचन किया है । यह पुस्तक तीन खंडोंमें समाप्त होगी । यह पहला खंड है—पृष्ठ संख्या लगभग ४५०। मूल्य केवल १।)

स्थायी ग्राहक होनेके लिये 'परीक्षा-मंत्री' को लिखना चाहिये, किन्तु साधारण मोल लेने वाले ग्राहकों को प्रयाग के साहित्य-भवनसे पत्र व्यवहार करना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-हितैषियों का साधु-कार्य

हिन्दीपुस्तक एजेन्सी तथा आरा-निवासी श्रीयुत बाबू शिव पूजन सहाय जी ने महिलाओं की सहायतार्थ पुस्तकों के दान की जो सूचियां, सम्मेलन में उपस्थित की थीं, उन्हें हम नीचे ज्यों का त्यों प्रकाशित करते हैं और उस दान के लिए, एजेन्सी तथा बाबू साहब को हार्दिक धन्यवाद देते हैं—

(१)

सभापति महाशय ने कल के व्याख्यान में कहा था कि श्रीमती मनोरमा बाई ने उनसे कहा था कि सम्मेलन परीक्षाओं के कोर्स की किताबों के दाम अधिक लगने के कारण स्त्रियोंमें सम्मेलन परीक्षा का प्रचार होने में अड़चन पड़ती है। सम्मेलन को स्त्रियों को पुस्तक बिना मूल्य दिलाने का प्रबन्ध करना चाहिये। इस लिये हिन्दी पुस्तक एजेन्सी इस वर्ष के लिये यह सूचना देती है कि जो स्त्रियां परीक्षा में बैठना चाहें, उनमें जो पुस्तकों का मूल्य देने में असमर्थ हों, उन्हें एजेन्सी सूचना पाने पर कोर्स की किताबें मुफ्त भेज देगी।

हिन्दीपुस्तक एजेन्सी
२२६ हरिसनरोड
कलकत्ता

(२)

अगले वर्ष मध्यमा परीक्षा में जो महिला प्रथम श्रेणी की उच्च संख्या में उत्तीर्ण होगी उसे आरा नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित सभी पुस्तकों की एक एक प्रति पुरस्कार रूप में दी जायंगी।

शिवपूजन सहाय
उपमंत्री
आरा नागरी प्रचारणी सभा

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. A. 629.

सम्मेलन पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन।

की

मुख पत्रिका।

भाग ७ | श्रावण संवत् १९७७ | अङ्क १२

विषय-सूची

वार्षिक मूल्य १)] [एक प्रति ≈)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के उद्देश्य ।

(१) हिन्दी-साहित्य के अङ्गों की उन्नति का प्रयत्न करना।

(२) देवनागरी-लिपि का देश भर में प्रचार करना और देश-व्यापी व्यवहारों तथा कार्यों के सुलभ करने के लिये हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाने का प्रयत्न करना।

(३) हिन्दी को सुगम, मनोरम और लाभदायक बनाने के लिए समय समय पर उसकी शैली के संशोधन तथा उसकी त्रुटियों और अभावों को दूर करने का प्रयत्न करना।

(४) सरकार, देशीराज्यों पाठशालाओं, कालेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार ज़मींदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, पत्र-सम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसा-पत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहाँ पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिये हिन्दी की उच्च परीक्षाएँ लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी-भाषा के साहित्य की वृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय, उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन-पत्रिका का उद्देश्य ।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना और साहित्य प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

केवल कवर के ४ पेज विश्व प्रेस, प्रयाग में छपे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहकों से निवेदन।

इसी अंक से पत्रिका का सातवाँ वर्ष समाप्त होता है। जो सज्जन नवीन वर्ष से ग्राहक होना चाहते हैं वे कृपया शीघ्र ही मनि-आर्डर द्वारा १) भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखा लेवें। डाकखाने के नये नियम के अनुसार वी० पी० द्वारा पत्रिका भेजने में १) के स्थान में आपका व्यर्थ ही १≡) खर्च हो जायगा। वी० पी० का रुपया प्रायः विलम्ब से मिलता है जिससे पत्रिका का अंक ठीक समय पर पहुँचने में भी असुविधा होती है।

अतः ग्राहक महोदय से मेरी प्रार्थना है कि वे अपनी तथा सम्मेलन कार्यालय की सुविधा का ध्यान रखते हुए इस अंक के पाते ही नवीन वर्ष की पत्रिका के मूल्य मध्ये १) मनिआर्डर द्वारा इस पते से भेजने की कृपा करें—

अर्थ मंत्री,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग।

इसी वक्र दृष्टि का निशाना बनकर कई बार कारावास भोगना पड़ा, हिन्दी-केशरी के सम्पादक पण्डित माधवराव सप्रे को हवालात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी स्थायी-समितिकी
ओरसे प्रतिमास प्रकाशित।

भाग ७ } श्रावण, संवत् १९७७ { अङ्क १२

दशम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति का भाषण

(गताङ्क से आगे)

साथ ही 'वेदान्त केसरी' जनताको निष्काम कार्य्य करने की चेतावनी दे रहा है, 'पाटलिपुत्र' अपने पुत्रों को उचित सन्देश सुना अपनी प्राचीन प्रभुता का परिचय देता है, 'प्रभा' अपनी प्रभा फैलाने के लिये पुनः प्रस्तुत है। 'स्त्रीदर्पण' 'गृहलक्ष्मी' 'स्त्री-धर्म शिक्षक' तथा महिला दर्पण आदि भारतीय महिलाओं का उन्नति-पथ प्रशस्त कर रहे हैं और बालसखा होनहार बालकों की सच्चे सखा के समान सन्मार्ग बता रहा है। प्रिय बन्धुओ! आपका कार्य्य जितने महत्व का है, उतना ही अधिक उसमें जोखिम भी है। आप देश के निस्वार्थ सेवक और उद्धारकर्त्ता हैं। प्रेस-एक्ट की पैनी तलवार की परवा न करते हुए आप एक पद भी अपने पवित्र कर्त्तव्यपथ से विचलित नहीं होते। आपको समय समय पर शासकों की वक्र-दृष्टि के तीक्ष्ण वाणों का निशाना बनना पड़ता है। कौन नहीं जानता, कि सम्पादक सम्राट् लोकमान्य तिलक को इसी वक्र दृष्टि का निशाना बनकर कई बार कारावास भोगना पड़ा, हिन्दी-केशरी के सम्पादक पण्डित माधवराव सप्रे को हवालात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की हवा खानी पड़ी। हाल ही में श्रीयुत कर्म्मवीर गांधी को जज की डाँट डपट सहनी पड़ी। ऐसे अनेक सम्पादक हैं, जिन्हें शासकों की कृपा-कटाक्षों के कवल बनकर अपना सारा जीवन दुःखमय व्यतीत करना पड़ा है। न जाने परमात्मा कब शासकों को सुबुद्धि देंगे, परमात्मा कब वह इस दमननीति का दमनकर सम्पादकों का मार्ग निष्कण्टक बना देंगे।

प्रिय बन्धुओ! आपका कार्य्य ऐसे ही महत्व का था; किन्तु नवीन शासन-सुधार की आयोजना के उपरान्त आपका उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है! एक देशीय अङ्गरेजी पत्र-सम्पादकों की अपेक्षा आपका कार्य्यक्षेत्र कहीं विस्तीर्ण होगा। आपको जीवित और ओजस्वी राष्ट्र का सन्देशा राज-प्रासादों से लेकर पर्ण कुटीरों तक पहुँचाना होगा; आपके पत्रों को यहाँ के अङ्गरेजी पत्रों की तरह केवल अमीरों के मिहमानों के मुस्ताक न होना पड़ेगा; वरं एक साधारण कृषक और खेत में काम करनेवाले मजदूर का भी साथ देना होगा। जो कुछ आप कहें, उसे उन शक्तियों को सुनना पड़ेगा, जो आपके कर्म्म-क्षेत्रों में गड़बड़ मचा रही है। यदि वह न सुनें, तो अन्य परिस्थितियों को ऐसा न्यायपूर्ण और पवित्र स्वरूप देने के लिये आप स्वतन्त्र हैं, जिससे कर्म्मक्षेत्र की शक्तियां आपकी बात सुनने के लिये विवश हो जायें। जो दिशा आप स्थिर करेंगे, उसी ओर उन्हें चलना होगा। आपको लोकमत की दिशा स्थिर करने का उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य्य भी बड़ी जवाबदारी के साथ करना होगा; क्योंकि अब शनैः शनैः भारत का शासन मूक जनता के हाथों आ रहा है; आप ही के बतलाये हुए मार्ग पर चलनेवाली जनता की नीति से देश को लाभ और हानि सहना पड़ेगी? जनता को इस गुरुतम कार्य्य के लिये प्रत्यक्ष तय्यार करना, जनता को उसके लिये सर्वथा योग्य बनाना आपका मुख्य कर्त्तव्य होगा। इसके लिये भविष्य में यही उचित होगा, कि पत्रों का भार ऐसे ही सम्पादक लें, जिन्होंने धार्मिक, औद्योगिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विषयों का पर्य्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। सम्पादकों को अन्य व्यवसायियों की अपेक्षा बहुत बड़ी योग्यता की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यवसायी को अपने ही व्यवसाय की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्ता होती है ; किन्तु सम्पादकों को सारे देश क्या सारे संसार की चिन्ता रहती है, अन्य विभागों में काम करनेवालों को केवल अपने ही विभाग के साहित्य की जानकारी रखनी पड़ती है ; किंतु सम्पादकों का समस्त विभागों के साहित्य की । सभी विभागों पर, सभी विषयों पर, सभी सिद्धान्तों पर तत्क्षण अपना मत प्रकट करने के लिये उन्हें सदा तय्यार रहना पड़ता है, ऐसी दशा में आप ही समझिये, कि सम्पादकों का ज्ञान-क्षेत्र कितना विस्तीर्ण और व्यापक होना चाहिये । इसके लिये अत्यन्त आवश्यक होगा, कि सम्पादकों की एक परिषद् स्थापित हो, जिसके द्वारा वह सब साधन प्रस्तुत किये जायें, जो भारत में योग्य सम्पादक तय्यार करने के लिये आवश्यक हों । आप जानते हैं, कि युरोप में ऐसा कोई देश नहीं, जहां सम्पादकों की शिक्षा पर उचित ध्यान न दिया जाता हो ।

और तो क्या, अमेरिका में इस विषय की शिक्षा विश्व-विद्यालयों द्वारा दी जाती है । जिस प्रकार हमारे देश में एफ० ए०, बी० ए०, एम० ए० आदि की परीक्षाओं का प्रबन्ध है और इन परीक्षाओं के देनेवालों को उपाधियां दी जाती हैं । उसी प्रकार अमेरिका के विश्वविद्यालयों में सम्पादकों की शिक्षा के लिये एक पाठ्यक्रम निश्चित है, जिसकी शिक्षा सम्पादक बननेवाले प्रत्येक विद्यार्थी को प्राप्त करनी होती है । हाल ही में युद्ध की समाप्ति के बाद इङ्गलैंड के कुछ विश्वविद्यालयों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और वहां भी सम्पादनकला की शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है । क्या हम यह आशा नहीं कर सकते, कि भारतवर्ष में भी सम्पादनकला की शिक्षा का प्रबन्ध करने में अब अधिक उपेक्षा से काम न लिया जायेगा । यदि आप इस बात को मानते हैं, कि युरोप में सम्पादकों का कुछ प्रभाव है और आप यदि यह चाहते हैं, कि हिन्दुस्थान में भी सम्पादकों का कुछ प्रभाव रहे, तो इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है, कि उनकी शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जाये । जब इस प्रकार परिषदों, विद्यालयों, पाठशालाओं, कालेजों द्वारा सम्पादनकला की शिक्षा का प्रबन्ध किया जायेगा, तभी संसार में वैसे ही वह नाम पायेंगे, जैसा आज कल अमेरिका और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलायत के सम्पादक पा रहे हैं। हमारे भी सम्पादकों द्वारा जनता में वह अदम्य शक्ति उत्पन्न होगी, जिसके सामने शासकों को अपना सिर झुकाना पड़ेगा।

प्रियबन्धु और प्यारी बहनो ! मैं अपना आसन ग्रहण करने से पूर्व अपने मुसलमान भाइयों के प्रति कृतज्ञता प्रगट किये बिना नहीं रह सकता ; जो आज कल अपने हिन्दू भाइयों के हृदय से हृदय मिलाकर मिल रहे हैं। अन्तरात्मा कहती है, कि वह दिन सन्निकट है, जिस दिन हमारी सर्व्वाङ्गसुन्दरी हिन्दी न केवल भारत की राष्ट्रभाषा के उच्च सिंहासनों पर आसीन हो जायेगी। वरं देश के सारे विश्वविद्यालयों में अपनी विजय वैजयन्ती फहरायेगी और भारत की अवश्यम्भावी पारलीमेंट में पूर्ण प्रभुता प्राप्त कर, अपनी कमनीय कीर्त्तिकौमुदी दिग्दिगान्तर में फहरायेगी। हिन्दी और उर्दू की लड़ाई अब उसके मार्ग में आड़े न आयेगी। क्या अब मुझे अपने हिन्दू भाइयों से यह आशा न करनी चाहिये, कि वह अपने मुसलमान भाइयों के लिये कुछ संस्कृत शब्दों का त्याग कर देंगे ? साथ ही क्या मुझे मुसलमान भाइयों से यह उम्मीद न होनी चाहिये, कि वह भी अपने हिन्दू भाइयों के लिये कुछ फारसी लफ़्ज़ों को कुर्बान करने के लिये तय्यार हो जायेंगे ? कोई यह शङ्का न करे, कि उर्दू-शब्दों के मिश्रण से हमारी पवित्र हिन्दी पर सङ्करता की कालिमा लग जायेगी। कहना न होगा, कि परमपूजनीया पवित्रतोया गङ्गा की महिमा तभी से बढ़ी है, जब सरस्वती को साथ लेते हुए, उन्होंने न केवल अपनी बहन यमुना को गर्भ में धारण किया, वरं उसे तत्रूप बना लिया। मुझे विश्वास है, कि हिन्दी का गौरव भी उस समय कहीं अधिक बढ़ जायेगा, जब सरस्वतीस्वरूपा संस्कृत को साथ लेते हुए अपनी बहन उर्दू को अपने गर्भ में धारण कर तत्रूप बना लेगी। यदि आप संसार में अपना यश अटल करना चाहते हैं, यदि आप अपना जीवन सार्थक बनाने के अभिलाषी हैं, यदि आपको परतन्त्रता पिशाचिनी का दमन करना अभीष्ट है और सबसे अधिक यदि आपको संसार में अपना अस्तित्व स्थापित रखना है, तो अवश्य ही विपदाओं की परवा न करते हुए राष्ट्र और राष्ट्रभाषा का पथ प्रशस्त करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये कर्त्तव्य-क्षेत्र में आइये और उन दोनों के उत्थान तथा उत्कर्ष की वेदी पर तन, मन, धन, तथा सर्व्वस्व बलि करने के लिये निरन्तर सन्नद्ध रहिये। तभी विजयश्री आपको जय-माला पहनायेगी।

धन्य होगा, वह दिन जिस दिन कविकुल चूड़ामणि कालीदास जैसे अनेक कवि अपने पीयूष-वर्षी काव्यों से हिन्दी साहित्य को सर्व्वप्रिय बनायेंगे; जिस दिन महर्षि वाल्मीकि और वेदव्यास जैसे विचक्षण विद्वान् हिन्दी-साहित्य का अतुल ऐश्वर्य्य बढ़ायेंगे, जिस दिन श्रीयुक्त शुक्र वृहस्पति और चाणक्य के समान अर्थ-शास्त्र के पारदर्शी विद्वान् सम्पति संग्रह का सन्देश सुना, रत्नगर्भा भारत भूमि को पुनरपि सर्व्वसम्पत्ति सम्पन्न बनायेंगे, जिस दिन मुनिश्रेष्ठ पातञ्जलि, कपिल कणाद जैसे मेधावी हिन्दी ग्रन्थों द्वारा सांख्य की शंख-ध्वनिकर योग की योग्यतापूर्व्वक मीमांसा करेंगे, विश्वप्रसिद्ध विश्वकर्म्मा की समता करनेवाले सहस्रों शिल्पी हिंदी ग्रन्थों द्वारा शिल्प शिक्षा प्राप्त कर, समस्त संसार को भारतीय शिल्प की शिक्षा देंगे, तथा जिस दिन चरक, सुश्रुत और भारत की विविध व्याधियों का सर्व्वनाश करेंगे। उसी समय भारत संसार में शिरोमणि बनेगा। अमेरिका आतुर हो उसे अपनायेगा, इङ्गलेंड इन्सानियत के साथ पेश आवेगा, जापान उसके सामने जरूरत से ज़यादा झुकेगा; और तभी :—

यह भव्य-भारत भूमि सुखमय स्वर्ग से बढ़ जायगी।
फिर ऋद्धियां क्या, सिद्धियां सब दासियां बन जायँगी॥
सर्व्वत्र ही स्वाधीनता इस देश में छा जायँगी।
प्रिय भारतीयों की जगत में जय-ध्वजा फहरायँगी॥
ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

लोकमान्य तिलक का स्वर्गारोहण

भारत के लोकमान्य नेता, विश्व विख्यात विद्वान, परम तपस्वी राष्ट्र सूत्रधार पंडित बाल गंगाधर तिलक का ३१ जुलाई १९२०, शनिवार की रात को स्वर्गवास हो गया। देश में सर्वत्र हाहाकार मच गया। देश की एक भयानक परिस्थिति में उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वीर सेनापति अलग कर लिया गया, देश की आशाओं पर वज्रपात हुआ, भारत का हृदय विदीर्ण हो गया।

लोकमान्य का जन्म सन् १८५६ का १३ जुलाई को बम्बई प्रांत के रत्नागिरी नगर में हुआ। आप के पिता गंगाधर रामचंद्र तिलक एक योग्य और सुशिक्षित व्यक्ति थे। तिलक महाराज ने सन् १८७६ में सम्मान के साथ बी. ए. पास की उपाधि प्राप्त की और सन् १८७६ में आप एल-एल. बी. हो गये। कालेज जीवन से छुट्टी पाते ही आप देश सेवा में लग गये। और जीवन के अंत समय तक देश के लिये लड़ते रहे। आप बड़े परिश्रमी और विद्या रसिक पुरुष थे।

यद्यपि आप राजनीतिक क्षेत्र में ही अगुआ बन कर जीवन भर काम करते रहे, किन्तु आप की साहित्य-सेवा उस से बहुमूल्य है। सन् १८९३ में आपने ओरियन "orion" नामक एक पुस्तक लिख कर प्रकाशित की, जिसमें आपने यह सिद्ध किया है कि ऋग्वेद की रचना ईसा से चार हजार वर्ष से पहले की नहीं हो सकती। दूसरी पुस्तक आपने "आर्कटिक होम इन दि वेदाज़" लिखी। यह पुस्तक उनके वैदिक साहित्य की मर्मज्ञता का विलक्षण प्रमाण है। १९०८ में आपको ६ वर्ष के लिये जेल जाना पड़ा। जेल में भी आप देश सेवा का काम करते रहे। वहीं आपने "गीता रहस्य" नामक एक बड़े ग्रंथ में भगवान् श्री कृष्ण का अभिप्राय प्रकट किया। यह ग्रंथ उनके अगाध पाण्डित्य का परिचय देता है। शंकराचार्य के बाद संस्कृत-साहित्य का इतना बड़ा विद्वान् इस देश में कोई नहीं हुआ।

लोकमान्य का सम्मान भारत के प्रत्येक प्रांत में अद्वितीय था। वे ज्योतिष और गणित शास्त्र के अद्भुत ज्ञाता थे। भारत के समकालीन नेताओं में वे सब से बढ़ कर विद्वान् थे।

तिलक महाराज हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्षपाती थे। कलकत्ते में उन्होंने हिन्दी में व्याख्यान देकर हिन्दी का सम्मान बढ़ाया था। हिन्दी के सम्बंध में उनकी यह सम्मति है:—

"राष्ट्रीय भाषा की आवश्यकता अब सर्वत्र समझी जाने लगी है। राष्ट्र के संगठन के लिये एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे सर्वत्र समझ सकें। लोगों में अपने विचारों का अच्छी तरह प्रचार करने के लिये भगवान बुद्ध ने भी एक भाषा को प्रधानता देकर कार्य किया था। हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा बन सकती है। राष्ट्रभाषा सर्वसाधारण के लिये ज़रूर होनी चाहिये। मनुष्य हृदय एक दूसरे से विचार परिवर्तन करना चाहता है इसलिये राष्ट्र-भाषा की बहुत ज़रूरत है। विद्यालयों में हिन्दी की पुस्तकों का प्रचार होना चाहिये। इस प्रकार यह कुछ ही वर्ष में राष्ट्रभाषा बन सकती है।"

आजकल भारत की अवस्था बड़ी संकट पूर्ण है, ऐसे समय में तिलक महाराज का परलोक वास भारत के प्रत्येक हृदय को अखर रहा है।

लोकमान्य की मृत्यु पर भारत भर में शोक सभायें हुईं, समाचार पत्रों में शोक प्रकट किया गया और हिन्दी के प्रायः सब सुप्रसिद्ध कवियों ने शोक की कविताएँ लिखीं। तिलक महाराज की मृत्यु का शोक सम्वाद जब प्रयाग पहुंचा, तब प्रयाग निवासियों ने शोक प्रदर्शनार्थ एक बड़ी सभा की। उस सभा में पंडित राम-नरेश त्रिपाठी ने एक कविता पढ़ी थी उसे हम नीचे प्रकाशित करते हैं:—

तिलक-स्वर्गारोहण

अतुकान्त सप्तपदी

पुस्तकालय 112867 गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

१

यह रात! यह अंधेरा! यह मौत सा सनाटा।
ठंढी हवा के झोंके हुंकार आफतों के॥
घेरे खड़े दरिन्दे सब ओर सूंघते हैं।
बादल उमड़ रहे हैं ओले बरसने वाले॥
उलझे हुये कटीले इन झाड़ झंखड़ों में।
हम हैं खड़े अकेले आगे न पीछे कोई॥
वह राह का दिखैया दीपक लिये कहाँ है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
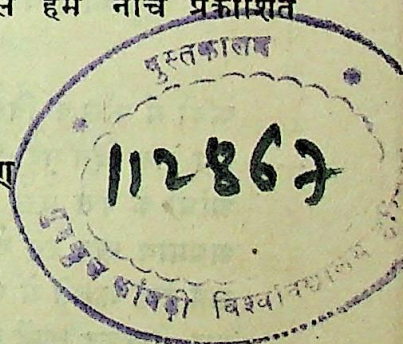
२

चलना बहुत नहीं है खतरा बहुत है लेकिन ।
पीछे पलट न सकते है राह तंग आगे ॥
चूके जहाँ ज़रा बस पंजों में मौत के हैं ।
लाखों मुसीबतों का सब ओर सामना है ॥
ऐसे समय हमारी आँखों का वह उजाला ।
क्या हो गया बताओ ऐ साथियो ! बताओ ॥
जायें कहाँ, किधर, हम कुछ भी न सूझता है !

३

हम डूबते हुओं का बस एक ही सहारा ।
आगे से हाय ! किसने छलकर हटा लिया है ॥
दामन में हम ग़रीबों के एक ही रतन था ।
धनियों सा हौसला था किस बेरहम ने लूटा ॥
दिल एक सह रहा था ज़ुल्मों की चोट लाखों ।
उसको अरे अचानक ! किसने कुचल दिया है !!
बुड्ढे को हाय लकड़ी किस निर्दयी ने छीनी ।

४

फंदों में फँस के बिलकुल बेकार बन चुके थे ।
हम रात दिन ग़रीबी की मार सह रह थे ॥
आंधी के पत्ते ऐसे थे दर बदर भटकते ।
अपमान सह रहे थे फटकार सह रहे थे ॥
सब कष्ट झेलते थे थामे हुये कलेजा ।
बस, देखकर तुम्हें हम हिम्मत न हारते थे ॥
प्यारे तिलक कहाँ हो ! प्यारे तिलक कहाँ हो !!

५

आँख खुली तुम्हारी ऐसी सुबह में होगी ।
जिसकी न शाम होगी सुख का न अंत होगा ॥
ऐसी है रात हम को चारों तरफ़ से घेरे ।
जिसके सुबह की कुछ भी दिखती नहीं सफ़ेदी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनसान इस अंधेरे में साथ सिर्फ़ दो हैं।
हरि नाम ओंठ पर है सिर पर खड़ी बला है॥
ऐ लोकमान्य! ऐसी हालत में तुम ने छोड़ा!

६

आर्यों की सभ्यता के आदर्श रूप तुम थे।
भारत में एक ही थे तुम लोकमान्य नेता॥
निर्भीक सत्यवादी धर्मिष्ठ संयमी थे।
ज्योतिष गणित के ज्ञानी वेदों के पूर्ण ज्ञाता॥
थे राजनीति के तुम वक्ता सतर्क मेधा।
शंकर के बाद जग को पंडित मिले तुम्ही थे॥
भारत की आँख के तिल माथे के तुम तिलक थे!

७

हरदम हमारे हित की तुम को लगी लगन थी।
सुख सोचते हमारा तुम जेल में गये थे॥
सहधर्मिणी की सहकर दुख से भरी जुदाई।
तुमने हमारे हित से क्षण भर भी मुँह न मोड़ा॥
भगवान के कथन का तुमने रहस्य खोला।
गीतारहस्य रचकर संदेह सब मिटाया॥
संसार में ग़ज़ब का था बुद्धि बल तुम्हारा!

८

मर्दानगी से हरदम हित के लिये हमारे।
तुमने मुसीबतों को निर्भय गले लगाया॥
धन का न लोभ तुमको तन का न लोभ तुमको।
मानापमान का भी कुछ भी न ख्याल तुमको॥
हर एक पल दिया था जीवन का तुम ने हमको।
सर्वस्व तुम ने हम पर था कर दिया निछावर॥
ऐ लाकमान्य! क्या क्या सुधि हम करें तुम्हारी॥

९

हमको स्वराज्य का हक़ इंग्लैंड से दिलाने।
तुम थे गये विलायत, जाते अमेरिका भी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाते अपार इज्जत पर छोड़ लालसा यह।
आये चले हमारा कल्याण सोचने को॥
निस्वार्थ लोक-सेवा, यह देश प्रेम सच्चा।
हा दैव! अब कहाँ पर देगा हमें दिखाई॥
रो रो पुकारते हैं, प्यारे तिलक कहाँ हो।

१०

रोते ही रोते कितनी सदियाँ गुज़ार डालीं।
तदबीर की हज़ारों रोना न हम से छूटा॥
तुम स्वर्ग से थे आये ढाढ़स हमें बँधाने।
यह कौन जानता था तुम भी रुला चलोगे॥
जो लोकमान्य! तुमको बदले में मौत देती।
ले लेते हम खुशी से देकर के जान लाखों॥
रोने से ऐसे मरना अपना हमें है प्यारा।

११

रोओ अभागे भारत ऐ बदनसीब रोओ।
टूटी भुजा तुम्हारी गाँधी जी आज रोओ॥
खाकर के सच्चा साथी रोओ ऐ मालवीजी।
ऐ लाजपत अकेले अब फूट फूट रोओ॥
रोओ! ऐ मुल्क रोओ! जी भरके आज रोओ।
हम मंद भाग्य सारे बह जायँ आंसुओं में॥
ऐसा रतन गँवा के चुप कौन रह सकेगा॥

स्वर्गीय सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास

यह समाचार हिन्दी संसार में बड़े ही दुःख से पढ़ा जायगा कि बम्बई के प्रसिद्ध श्रीवेंकटेश्वर समाचार पत्र और प्रेस के स्वामी सेठ खेमराज श्री कृष्णदास का ३० वीं जुलाई सन् १९२० शुक्रवार को प्रातःकाल ८॥ बजे देहान्त हो गया। सेठजी बड़े उद्योगी और सदाचारी पुरुष थे। बहुत ही दरिद्र स्थिति से बढ़ते बढ़ते आपने बीसों लाख की सम्पत्ति पैदा कर ली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ जी का जन्म बीकानेर राज्य के चूरू नामक नगर में सं० १९१३ में हुआ था। बालकपन में उन्हें किसी प्रकार की शिक्षा नहीं मिली। वे अपना हस्ताक्षर करना जानते थे और साधारण हिन्दी पढ़ लेते थे। किन्तु विद्वानों की संगति से उन्हें शास्त्रीय विषयों का अच्छा ज्ञान हो गया था। विद्वानों का वे बड़ा आदर करते थे। धर्म में उनकी बड़ी श्रद्धा थी। वे बड़े विनयी, बड़े उदार और बड़े मिलनसार थे।

सेठ जी ने अपने कार्यों से हिन्दी का बड़ा प्रचार किया है। कितनी ही पुरानी पुस्तकों का उन्होंने पुनरुद्धार किया, कितने ही नये लेखक उत्पन्न किये और सहायता देकर कितने ही पुस्तकालयों की स्थापना की।

भगवान् हिन्दी हितैषी सेठजी की आत्मा को सद्गति और उनके कुटुम्बियों को धैर्य प्रदान करें।

परीक्षा समिति का स्थगित अधिवेशन।

परीक्षा समिति का स्थगित अधिवेशन सोमवार मिति शुद्ध श्रा० कृ० ४ सं० १९७७ तारीख ५ जुलाई सन् १९२० को १२ बजे दिन से श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन के मकान में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में हुआ :—

१ श्री० प्रो० व्रजराज जी, कटरा प्रयाग।
२ श्री० " सालिग्राम जी भार्गव प्रयाग।
३ श्री० " गोपालस्वरूप जी भार्गव प्रयाग।
४ श्री० पं० रामनरेश त्रिपाठी प्रयाग।
५ श्री० " जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल प्रयाग।

कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :—

१ श्री० प्रो० शालिग्राम भार्गव ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ सं० १९७८ की विवरण पत्रिका के संशोधन के लिये प्रस्ताव उपस्थित किया गया, निश्चय हुआ कि इस प्रकार से सं० १९७८ की विवरण पत्रिका का संशोधन किया जाय।

नियम ६९ के आगे यह नोट दिया जाय।

नोट—जो परीक्षार्थी विवरण पत्रिका के नियम ६९ के अनुसार बिना प्रथमा के उत्तीर्ण हुए ही मध्यमा परीक्षा में सम्मिलित होने का अधिकार चाहते हैं वह आगामी ३१ मार्च तक इस आशय का प्रार्थना पत्र परीक्षा मंत्री के नाम भेज दें। उक्त तिथि के पश्चात् आए हुये इस आशय के पत्रों पर विचार नहीं किया जायगा।

३. प्रथमा परीक्षा के लिये निम्नलिखित नए केन्द्र बनाये गये- इकलहरा, उज्जैन, खुरजा, गढ़मुक्तेश्वर, गाडरवारा, गोंडा, छपरा, झालरा पाटन, पथरिया, प्रतापगढ़, फर्रुखाबाद, फतहपुर (जयपुर), बारां, योगापट्टी, होशंगाबाद।

४ मध्यमा परीक्षा के लिये निम्नलिखित नए केन्द्र बनाये गये। गोंडा, देहरादून और फर्रुखाबाद।

५ उपनियम अध्याय ७ धारा २ का परिवर्तित रूप इसप्रकारस रखा गया।

मैट्रिकुलेशन, स्कूल लिविंग सार्टिफिकेट, राजपुताना मिडिल और वर्नाक्यूलर फाइनल परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी यदि प्रथमा के साहित्य में या "ऐडवांस्ड एक्ज़ामीनेशन इन हिन्दी" में उत्तीर्ण हो जायँगे तो उन्हें मध्यमा परीक्षा देने का अधिकार होगा। परन्तु जिन्होंने हिन्दी लेकर मैट्रिक, स्कूल लीविंग तथा हिन्दी नार्मल पास किया है, उनके लिये साहित्य परीक्षा भी आवश्यक न होगी। जो सज्जन किसी भारतीय विश्वविद्यालय के उपाधि-धारी (ग्रेजुएट) होंगे, उन्हें बिना प्रथमा परीक्षा दिये ही मध्यमा परीक्षा देने का अधिकार होगा।

६ सं० १९७८ की परीक्षाओं के लिये पाठ्य ग्रन्थों में निम्न-लिखित सुधार किये गये।

प्रथमा परीक्षा के पाठ्य ग्रन्थों में :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-प्रश्न पत्र १ में कोई सुधार नहीं हुआ। गत वर्ष की विवरण पत्रिका के अनुसार ग्रन्थ रखे गये।

प्रश्न पत्र २ में प्रेमचन्द्रः सप्तसरोज, बढ़ाया गया। इतिहास और भूगोल के पाठ्य ग्रन्थ गत वर्ष के ही अनुसार रखे गये।

अंकगणित के विषय में घड़ी, स्टाक, बदला, तत्काल धन, और मिति काटा, दस्तूरी, दल्लाली, बीमा कराई, अनुपात और समानुपात का विषय छोड़कर शेष संपूर्ण अंकगणित।

विज्ञान और स्वाध्य रक्षा १ विज्ञान प्रवेशिका भाग १

२ ताप (पाठ ५, ७ और १० छोड़कर) तथा

३ स्वाध्य (सर्यू प्रसाद) रखे गये।

मध्यमा परीक्षा के लिये—

साहित्य १ में गत वर्ष के ही ग्रन्थ रखे गये। कोई परिवर्तन नहीं किया गया।

साहित्य २ सप्तसरोज के स्थान पर प्रेमचन्द्र का नवनिधि रखा गया।

इतिहास प्रश्न पत्र १ में बालकृष्ण—भारतवर्ष का इतिहास' प्रयाग प्रसाद। भारतवर्ष का इतिहास (मुसलमानों का शासन) रामनरेश–हिन्दी महाभारत, निकाल दिये गये और इनके स्थान पर मन्नन द्विवेदी बी. ए. का मुसलमानी राज्य का इतिहास दोनों भाग रक्खा गया। इतिहास प्रश्न पत्र २ में 'क' और 'ख' दो समूह बनाये गये और जिसमें १ समूह लेना आवश्यक रक्खा गया–समूह 'क' में १ सुपार्श्वदास गुप्तः पार्लमेन्ट, २. इंग्लैंड का इतिहास, ३ विनायक ओकः फ्रान्स की राज्य क्रान्ति का इतिहास, ४ प्राणनाथ विद्यालंकारः शासन पद्धति। समूह 'ख' में १ रोम का इतिहास, २ ग्रीस का इतिहास, ३ रामदास गौड़ : यूरोप का इतिहास, ४ प्राणनाथ—शासन पद्धति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शन में--१ रामावतार शर्माः यूरोपीय दर्शन, २ तिलकः गीता रहस्य मूल पृष्ठ ५६५ से अंत तक। ३ ईश, केन, कठ, प्रश्न और श्वेताश्वतरोपनिषदों का अनुवाद, ४ अन्नम भट्टीय तर्क संग्रह सानुवाद, ५ न्याय मुक्तावली, विज्ञान में--सम्पूर्णानन्दः भौतिक शास्त्रके स्थान पर 'ताप' रखा गया।

धर्मशास्त्र में:--१ मनुस्मृति, २ याज्ञवल्क्य स्मृति दायभाग और आचार प्रकरण। अथवा--महाभारत शान्तिपर्व जितना गत वर्ष था।

अर्थशास्त्र में:--१ महावीरप्रसाद द्विवेदी : सम्पत्ति शास्त्र २ प्रो० राधाकृष्ण झा : भारत की साम्पत्तिक अवस्था ३ पंजेल : भारी भ्रम १ ला खण्ड।

ज्योतिष शास्त्र में:--गंगाशंकर पचोलीः ग्रहलाघव बढ़ायागया।

वैद्यक में:--रामजीलाल शर्माः बालस्वास्थ्य रक्षा के स्थान पर गृह वस्तु चिकित्सा रखा गया।

उत्तमा परीक्षा—

हिन्दी साहित्य प्रश्नपत्र १ में:-१ विद्यापति की पदावली, २, कबीर की साखी, ३ सुजान रसखान, ४ लालका छत्र प्रकाश, ५ देवकवि की प्रेमचन्द्रिका। प्रश्न पत्र २ में पकेशवः रामचन्द्रिका सूरसागर १२ स्कन्ध, ३ पद्माकरः जगद्विनोद, ४ नागरी दासः वैराग्य सागर, ५ कविता कौमुदी। इसके आगे सं० १६७७ की विवरण पत्रिका के प्रश्न पत्र ३, ४, ५, ६, ७, को क्रम से पत्र ४, ५, ६, ७ और ८ समझा जाय।

शेष विषयों के पाठ्य ग्रन्थ गतवर्ष के ही अनुसार रहेगें।

७ सं० १६७७ की उत्तमा परीक्षा (विषय इतिहास) के लिये निम्नलिखित परीक्षकों का चुनाव हुआ।

प्रश्न पत्र १	प्रि० ताराचन्द्रजी
" २ और ५	प्रो० ईश्वरी प्रसाद
" ३	प्रो० बेनीप्रसाद
" ४	प्रो० रामप्रसाद त्रिपाठी
" ६	बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी लिखाइये

मनुष्य गणना का काम आरंभ हो गया है, भाषा के "ज़बान जो आमतौर से बोलता हो" वाले खाने में बहुत से लोग अपनी भाषा का उल्लेख कराना भूल जाते हैं। इससे लिखने वाले अपने मत के अनुसार उस खाने की पूर्ति कर देते हैं। और कभी कभी जान बूझ करके भी ठीक ठीक नहीं लिखते। ऐसी दशा में हिन्दी विरोधियों को हिन्दी भाषा बोलने वाले की संख्या कम करने का अवसर मिल जाता है। अतएव सब शिक्षित भाइयों से निवेदन है कि वे स्वयं तो सावधान हो जांय, और अपने अपढ़ हिन्दी भाषा बोलने वाले भाइयों को सावधान करदें कि वे अपनी भाषा हिन्दी लिखाने में लापरवाही न करें।

निवेदक,

रामनरेश त्रिपाठी

प्रचार-मंत्री

नागरी-प्रचारिणी सभा फर्रुखाबाद का आग्रह

नागरी-प्रचारिणी सभा फ़र्रुख़ाबाद की डाक्टर गिरधारीलाल द्विवेदी के सभापतित्व में जनसाधारण की एक महती सभा सरस्वती भवन में ता० २८ जौलाई सन् १९२० को सन्ध्या समय हुई और सर्व सम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया था।

संयुक्त प्रान्त में इस समय कचहरियों और नहर आदि सरकारी विभागों में सम्मन, जमाबन्दी, परचा, कागज़, पत्र; नागरी और फारसी अक्षरों में छपे होने पर भी उनकी खाना पूरी प्रायः फ़ारसी अक्षरों में ही की जाती है जिसमें हिन्दी जानने वाली अधिकांश जनता को असुविधा होती है यह सभा सरकारी कर्म्मचारियों की इस कार्य्यवाही का घोर प्रतिरोध करती है और प्रान्तीय सरकार से सानुरोध आग्रह करती है कि अपनी अधिकांश प्रजा की इस असुविधा को शीघ्र निवारण कर अपने कर्त्तव्य का पालन करैगी"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल-कौतुक।

१ सुमन विटप वल्ली काल की क्रूरता से।
झुलस जब रही थीं ग्रीष्म की उग्रता से॥
उस कुसमय में हा! भाग्य आकाश तेरा,
अयिनव लतिके! था घोर आपत्ति-घेरा॥

२ अब तब बुझता था जीवनालोक तेरा
यह लख उर होता दुःख से दग्ध मेरा।
निज सलिल-सुधा से नेत्र ने सींच आहा!
शुचितर तुझ से था प्रेम पूरा निबाहा॥

३ जगतपति दया के सिन्धु ने भी दया की
कुछ अयि लतिके! थी जिन्दगी और बाकी
अहह मिट गई त्यों सर्वथा आपदाएँ
सकल मम हुईं भी दूर चिन्ता-कथाएँ॥

४ सघन घन घटा आ व्योम के बीच छाई
मुदित चित पपीहा ने पुकारें मचाई।
शुचि रस बरसा आ, देव ने कर्म्म साधा
कुछ रह न गई थी, ग्रीष्म की भीष्म बाधा॥

५ यह हृदय कलापी शीश ऊंचा उठाके।
मुदित फिर लगा था नाचने गीत गाके॥
प्रिय जन यदि बाधामुक्त होवें किसी के।
द्विगुणित उसके हों क्या नहीं मोद जीके॥

६ पर यह मुद मेरा दैव को हा! न भाया।
दुख फिर इतने ही में नया एक आया।
रुज भय युत तेरी हो गई दिव्य काया॥
अलख अगम होती ईश की गूढ़ माया॥

७ नित हृदय लगा के कीट सारे निवारे
तव सुख हित मैंने सौख्य सारे बिसारे॥
विकलित चित तेरे पास मैं नित्य आता
तुझ पर निज सेवा की सुधा था बहाता॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ अयि नव लतिके, यों प्राण तेरे बचाये
श्रम फल निज मैंने सर्वथा सर्व पाये ॥
अब कुशल सदा है ईश की भी दया है।
दुख-समय व्यथा का बीत सारा गया है ॥

९ शरद ऋतु सलोनी आ गई आज आहा !
प्रकृति सज रही है और ही साज आहा !
कृश तनु अब तेरा, हो गया पुष्ट कैसा
मम मन इससे है बल्लरी ! तुष्ट कैसा ॥

१० मृदु किशलय शाखा पत्र बल्ली विभा में
तुझ सदृश न कोई आज है वाटिका में
नव कुसुम कली की मंजुता छा रही है
निकट विमल वेला सौख्य का आ रही है ॥

११ अयि नव लतिका, ए स्नेह सम्पत्ति मेरी
अब विकसित होगी मंजरी मंजु तेरी।
यह निरख न मेरे हर्ष का है ठिकाना,
नियति, समय ऐसा तू सभी को दिखाना ॥

१२ तव नव कलिका की, मुग्ध हो, चाहना से
अनुपम कितने ही नेत्र हैं आज प्यासे।
सरस छवि सुधा को बलिके ! वे खूब पी, पी,
अब मम, मुद मोती से भरें हीय-सापी ॥

१३ मधुप गण तुझे ये आज घेरे हुए हैं
शुभ चरित अभी से ख्यात तेरे हुए हैं।
वितरित करने को वायु आमोद तेरा,
चपल बन रहा है प्रेम-औत्सुक्य प्रेरा ॥

१४ मधु-सुरभि धरा में व्याप्त होगी ललामा
अनुचर तव होगी आ स्वयं कीर्ति बामा
तुझ सम कृती है कौन ए स्नेह शीले !
श्रम फल सबको दें ईश ऐसे रसीले ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ यह कह अब माली हर्ष से फूलता था।
शुचि मुद-मधु पी पी आप को भूलता था।
उपवन नव आशा कामना का लगाता
कनक—भवन ऊंचा, शून्य में था उठाता॥

१६ अघटित इतने में वायु का एक झोंका
जग-जटिल खिलाड़ी काल के कौतुकों का,
यम सम पहुंचा आ, हो गया सर्व स्वाहा।
किस पर विधिने है नेह न्यारा निबाहा॥

१७ पवन, विविध तूने पादपों को जिलाया
सुरभि-सनित फूलों को अनेकों खिलाया।
पर शठ! इस डाली को न तूने हिलाया,
इस कुसुम-कली को धूल में आ मिलाया॥

१८ अनुपम किसने यों खेल तेरा बिगाड़ा?
यह भवन बसा हा! क्यों गया है उजाड़ा?
सुख पर किसने आ शोक शूलास्त्र गाड़ा?
मुद-तरु किसने यों मूल से है उखाड़ा?

१९ नव नव अभिलाषा और आशा घनेरी
बहु विधि सुख इच्छा कामना हाय! तेरी।
बस, पल भर ही में क्या हुई मित्र! माली
उस विभुवर की है सर्व लीला निराली॥

२० सतत सुख-पलो जो आर्द्रचिन्ता बड़ी है
जिस पर यह पोड़ा वज्र सी आ पड़ी है।
सुहृद, अब उसे तू धैर्य कैसे धरावै
दिन उस गृहलक्ष्मी से, किसी के न आवै॥

२१ मलय-पवन झोंका ले रहा मत्तता से
मधुप फिर रहे हैं देख उन्मत्तता से।
तरु तरु विहगों का गान भी हो रहा है
अहह पर अकेला आज तू रो रहा है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ शुचि सुमन खिले हैं, कोकिला कूकती है
इस अवसर को क्या सारिका चूकती है।
प्रकृति हृदय हीना उत्सवों में लगी है
पर तव उरमें हा ! शोक ज्वाला जगी है।

२३ कमल-कुल छटा है लोचन-प्राण हारी
जिन पर करते हैं भृंग गुंजार प्यारी।
मधु-मय बहती है * माधव-प्रीति धारा
कब बन सकते हैं ये तुझे शान्ति द्वारा॥

२४ विधिवत चलता है देख संसार सारा
स्थकित कब हुई है लोक में कर्म्म-धारा॥
दुख रुज भय बाधा विश्व में हैं सदा से
कब जग रुकता है एक की आपदा से ?।

२५ अब मुदित कभी भी प्राण होंगे न तेरे
दुख-घन तुझको आ काल के तुल्य घेरे॥
अमित हृदयदाही शोक का घाव होता,
कवि अधिक कहे क्या, है वही आप रोता॥

२६ आशाएँ कामनाएँ विपुल हृदय की लालसाएँ ललामा
धूलों में जा मिली हैं तुझ पर विधि की दृष्टि है बन्धु ! बामा
इच्छाएँ भावनाएँ सकल रह गईं हाय ! तेरी अधूरी
कांक्षाएँ कल्पनाएँ नव तव उर की हो सकीं हा ! न पूरी॥

लोचनप्रसाद पाण्डेय

पुस्तक-परिचय

ज्ञानमण्डल कार्यालय, काशी की पुस्तकें—काशी

का ज्ञानमण्डल कार्यालय, जिसके संचालक सुप्रसिद्ध श्रीयुत शिवप्रसाद गुप्त हैं, आजकल हिन्दी में अच्छी अच्छी और समयोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित कर रहा है। हिन्दी में ऐसी पुस्तकें बहुत

* वैशाख मास के प्रीतिकर दृश्यों की शोभा सरिता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम थी, ऐसी दशा में ज्ञानमण्डल का यह कार्य विशेष महत्व का है। इस सदुद्योग के लिये ज्ञानमण्डल के संचालक हिन्दी भाषिये के धन्यवाद के पात्र हैं।

ज्ञानमण्डल कार्यालय से हमें दो पुस्तकें समालोचनार्थ मिली हैं। पहली पुस्तक का नाम है—"इटली के विधायक महात्मा गण"। अर्थात् जिन महापुरुषों ने अनेक संकट सहकर इटली देशों को आष्ट्रिया आदि बलवान राष्ट्रों के पंजे से मुक्त कर संगठित किया, उन्हीं के कुछ जीवन घटनाओं का वर्णन" प्रो० रामदास गौड़ एम० ए० ने पुस्तक का सम्पादन किया है। उनके किसी एक मित्र ने, जो अपना नाम प्रकट नहीं करना चाहते, बिल्डर्स आफ़ माडर्न इटली" के आधार पर इसे लिखा है। इसमें इटली के आठ महात्माओं की जीवन लीलाओं का वर्णन है। महात्माओं के नाम ये हैं--कवि एलफिरी, वाचस्पति मंजोनी, तत्ववेत्ता जियोबर्टी, डेनियल मेनिन, दैवज्ञ मत्ज़ीनी, राजपुरुष कावूर, देशभक्त गरीबाल्डी, और विकृर इमेनुअल। प्रारंभ में १८ पृष्ठों में छपी हुई सम्पादक की विचार पूर्ण प्रस्तावना है। प्रस्तावना में इटली के भूगोल और इतिहास का संक्षिप्त परिचय दे दिया गया है।

जिन आठ महात्माओं के चरित्र पुस्तक में वर्णित है, वे भिन्न भिन्न गुणों के अधिकारी थे। कोई कवि था, कोई वकील था, कोई व्याख्याता था और कोई तत्ववेता था। देश की सेवा में सब ने अपनी अपनी शक्तियाँ लगा दी, सब को विदेशी-शासन का मुकाबला करके कष्ट भोगना पड़ा। किन्तु किसी ने भी देश सेवा से मुँह न मोड़ा। परिणाम यह हुआ कि इटली को फिर स्वाधीनता मिली, उसके ऊपर से आष्ट्रिया की छाया हट गई और फिर वह उज्वल प्रकाश में आया।

कवि एलफिरी बड़ा भ्रमण-प्रिय था, और वास्तव में सुकवि होने के लिये भ्रमण एक आवश्यक कार्य है। पूर्वकाल में जब रेल नहीं थीं, लोग पैदल भ्रमण किया करते थे। स्थान स्थान के प्राकृतिक सौन्दर्य देख कर, भिन्न मनुष्यों और जातियों के स्वभावों का परिचय पाकर, सुख दुख की अनेक घटनायें देख कर, जब वे काव्य-रचना करते थे, तब उसमें केवल कल्पना नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि सच्चा, आँखों देखा उद्गार निकलता था। कैसा ही अच्छा कवि हो, किन्तु वह भी कल्पना को उतनी उत्तमता से नहीं वर्णन कर सकता, जितना अनुभव को। कवि एलफिरी ने स्वदेश और विदेशोंका भ्रमण करके अपने देश की दुरवस्था और विदेशों के सुख समृद्धि का अनुभव किया था। केवल कल्पना से उसने बहुत कम लिखी,इसका परिणाम यह हुआ कि उसका एक एक वाक्य उसके देश निवासियों के हृदयों में चुभ सा गया, सब की आँखें खुल गईं, सब चौकन्ने से होकर अपनी स्थिति पर विचार करने लगे। हमारे देश में भी ऐसे ही कवियों के आने की आवश्यकता है, जो देश का दुःख समेट कर अपने साथ ले जायँ।

आठों महात्माओं में से मैनिन एक वकील था। उसका चरित्र इस देश के वकीलों के मनन करने योग्य है। वह केवल व्याख्यान नहीं देता था बल्कि देश के लिये कष्ट भोगने में-मरने में सब से आगे रहता था। हम उसे पुस्तक में कई बार देखते हैं कि वह अवसर पड़ने पर कलम फेंक कर हाथ में तलवार लेकर शत्रुओं से लड़ने के लिये अपनी युवक सेना के आगे आगे चलता है। साथ में उसका नवयुवक पुत्र भी है। देश के लिये वह कारागार में जाता है। छूट कर आता है और फिर देश सेवा में लग जाता है। उसके देश वासी ही उसे मारने का षड्यंत्र रचते हैं, वह रात में उनके पास चला जाता है और कहता है, "यदि तुम मेरे प्राण लेना चाहते हो तो ले लो मैं सामने खड़ा हूँ।" काम करने में उसने रात को रात और दिन को दिन नहीं समझा, दिन भर वह जनता के साथ काम करता, रात को घर आता और अपने रोगी बच्चों की दवा करता। कितनीं ही रातें उसने बिना सोये ही बिता दीं। वह अपनी धुन का पक्का और लगन का सच्चा था। हमें मेनिन का चरित्र बड़ा ऊँचा समझ पड़ा। हमारे देश के प्रत्येक युवक को मेनिन का चरित्र पढ़ जाना चाहिये।

पुस्तक में वर्णित सब महात्माओं की जीवनियाँ शिक्षाप्रद और प्रभावोत्पादक हैं। भाषा को और भी सरल करने की आवश्यकता थी। जीवन चरित और इतिहास की भाषा बहुत सरल होनी चाहिये। इससे यही लाभ नहीं कि उसे साधारण पढ़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखे लोग भी समझ लें बल्कि इससे घटनाओं के वर्णन में स्वाभाविकता और रोचकता भी आती है। कहीं कहीं व्याकरण सम्बंधी अशुद्धियाँ भी हैं। फिर भी पुस्तक बहुत उपादेय है।

पृष्ठ सं० २४५, कपड़े की मज़बूत जिल्द, छपाई सफाई अच्छी। दाम २)। मूल्य कुछ कम होता तो अच्छा था।

दूसरी पुस्तक का नाम है–"यूरोप के प्रसिद्ध शिक्षण सुधारक"। विषय नाम ही से प्रकट है। इसमें कमीनियस, जानलाक, रूसो, पेस्टलाज़ी, हर्बार्ट, फ्रीबल और हर्बर्ट स्पेंसर की जीवनियाँ, उनकी शिक्षा पद्धतियाँ और उनकी विवेचनाएँ हैं। पुस्तक प्रत्येक शिक्षा प्रेमी के पढ़ने के काम की है। इसके लेखक पंडित चंद्रशेखर बाजपेयी एम० एस-सी० एल० टी० और सम्पादक बाबू श्रीप्रकाश बैरिष्टर हैं। पृष्ठ संख्या २०० के लगभग है। कपड़े की जिल्ददार पुस्तक का दाम १॥=) है। दोनों पुस्तकें प्रबंधकर्ता ज्ञानमण्डल कार्यालय, काशी को लिखने से मिल सकती है।

देशभक्त दामोदर—यह स्वर्गीय सेठ दामोदरदास राठी का जीवन चरित्र है। लेखक बाबू भगवानदास केला और प्रकाशक भी शायद वही हैं। पृष्ठ सं० १२०, मूल्य बारह आना, मिलने का पता - सम्पादक प्रेम, वृन्दाबन।

हमारी अवनत स्थिति और उससे बचने का उपाय—मूल लेखक पंडित जगन्नाथ प्रभाशंकर जी बड़ौदा और अनुवादक एक मारवाड़ी बालक। छोटी सांची की ७८ पृष्ठों की इस पुस्तिका का मूल्य ढाई आना। मिलने का पता—पंडित जगन्नाथ प्रभाशंकर, सम्पादक प्रातःकाल, भूतडी झापा, बड़ौदा।

इसमें भारत की पतित अवस्था का चित्र खींचा गया है। और अंत में उसके दुःख की निवृत्ति का मार्ग भी दिखाया गया है।

वैद्यक की तीन पुस्तकें—वैद्यकतत्व, जीवन रक्षक, वैद्य भास्करोदय; मूल्य क्रमशः ।), ≡), ।)। तीनों पुस्तकों में रोग और उनके निराकरण सम्बंधी बहुतसी अनुभवी बातें लिखी गई हैं। छपाई सफ़ाई मामूली, कागज बहुत साधारण, मिलने का पता—बाबू बालमुकुन्द वर्मा, वृन्दाबन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्शा*

इन्शा उर्दू के मशहूर कवि थे। इन्होंने अपने जीवन में सुख भी खूब देखा और दुःख भी। कवियों में बहुत ही कम कवियों का जीवन इन्शा की तरह बीता है। यहां हम इन्शा के जीवन को मुख्य मुख्य मुख्य घटनायें लिखते हैं:—

इन्शा का पूरा नाम था सैयद इन्शा अल्ला खाँ, इन्शा उपनाम था। इनके पूर्वज समरकंद से कश्मीर में आकर बसे थे और कश्मीर से दिल्ली में। इनके पूर्वज हकीमी का पेशा करते थे। इनके बाप का नाम हकीम मीरमांशा अल्ला खाँ था। लड़कपन में इन्हें शिक्षा देने में कोई बात उठा नहीं रक्खी गई। इनकी बुद्धि बहुत तीव्र थी कि थोड़े ही समय में उस समय की शिक्षा के सब आवश्यक विषयों के ये अच्छे जानकार हो गये किन्तु और किसी विषय की ओर न जाकर इनकी रुचि कविता की ओर बढ़ चली। इनके पिता मुर्शिदाबाद में रहते थे, इन्शा ने शिक्षा भी वहीं पाई थी। किन्तु शिक्षा समाप्त करने के बाद ये दिल्ली चले आये। उस समय दिल्ली में शाहआलम बादशाह का दरबार एक टूटी फूटी हालत में था। शाहआलम खुद भी कवि थे। उन्होंने इन्शा का आदर किया और उन्हें दरबार में रक्खा।

पहले मुशायरे बहुत हुआ करते थे, एक मुशायरे में इन्शा ने शेर पढ़े।

इक तिफ़्ल दबिस्तां है फ़लातूँ मेरे आगे।
क्या मुँह है अरस्तू जो करे चूँ मेरे आगे॥
क्या माल भला क़स्र फ़रीदूँ मेरे आगे।
काँपे है पड़ा गुम्बदे गरदूँ मेरे आगे॥
मुरग़ाने वली अजखये मानिन्द कबूतर।
करते हैं सदा अजिस से गूँगूँ मेरे आगे॥
मुँह देख तो नकारचीय पीले फ़लक भी।
नक्कारे बजाकर कहे दूँदूँ मेरे आगे॥

*आवे उपाय की सहायता से यह लेख लिखा गया। सम्पादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोले हैं यही खामे कि किस किसको मैं बाँधूँ ।
बादल से चले आते हैं मज़मूँ मेरे आगे ॥
मुजरे को मेरे खुसरू परवेज़ हो हाज़िर ।
शीरीं भी कहे आके बलालूं मेरे आगे ॥
वह मारे फ़लक काहकशाँ नाम है जिसका ।
क्या दख़ल जो बल खाके करे फूँ मेरे आगे ॥

शाहआलम की बादशाही केवल नाम की थी। बेचारे को हाथ की तंगी थी। फिर भी इन्शा किसी न किसी तरह अपना काम निकाल ही लेते थे। मगर ऐसे स्वतंत्र विचार के कवि को बार २ मांगना जाँचना कब पसन्द हो सकता था। इससे दिल्ली से इनका दिल उचट गया। उन दिनों लखनऊ में आसफुद्दौला के दान दाक्षिण्य की धूम मच रही थी। इन्शा ने भी वहीं की राह पकड़ी। वहां पहुंच कर इन्होंने अपने गुणों का ऐसा परिचय दिया कि तमाम मुशायरे गूंज उठे और चारों ओर इनकीही चर्चा होने लगी। वहां से ये मिर्ज़ा सुलेमान शिकोह की सरकार में पहुंचे। सुलेमान शिकोह शाहआलम के बेटे थे और कवि भी थे। पहले वे मसहफी नामक उर्दू कवि से अपनी कविता पर इसलाह लिया करते थे। इन्शा के पहुंचते हो वे मसहफी को छोड़ इनके भक्त हो गये और इनसे इसलाह लेने लगे। लेकिन वहां भी ये अधिक दिन न ठहरे और नवाब सआदत अली खाँ ने इन्हें अपने दरबार में बुला लिया। इन्शा ने अंत तक वहीं नेकनामी की दौलत कमाई। हज़ारों को ऊंचे २ ओहदों पर पहुंचा दिया। मगर खुद शायर ही बने रहे। समय के हेर फेर से एक दिन हंसी २ में वहां से भी दिल उचट गया और वह चहकता हुआ बुलबुल अपने घर के पिंजड़े में बंद हो गया। और फिर कभी बाहर न निकला। घर में ही सन् १२३३ हिजरी में इन्शा ने मानव लीला समाप्त की।

असमाप्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ साहित्य माला।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित।

सम्मेलन की स्थायी समिति ने सुलभ साहित्यमाला निकालने का निश्चय किया है, जिसका उद्देश्य यह है कि हिन्दी के उत्तमोत्तम ग्रन्थ सुन्दर और सस्ते संस्करण प्रकाशित किये जायें, जिस से हिन्दी हितैषिणी-जनता में उन ग्रन्थ रत्नों का बड़ी ही सुलभता से प्रचार हो। अब तक निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१—भूषण ग्रन्थावली (द्वितीय संस्करण शीघ्र ही प्रकाशित होगा) मूल्य ॥)

२—हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास "मिश्रबन्धु" कृत पृष्ठ संख्या १८८ मूल्य ।-)

३—भारत गीत (सुप्रसिद्ध कवि पं० श्रीधर पाठक रचित) मूल्य ≶)

४—भारतवर्ष का इतिहास-प्रथम खण्ड लेखक "मिश्रबन्धु" १।)

५—राष्ट्रभाषा—इस में महात्मा गांधीजी के राष्ट्र भाषा सम्बन्धी प्रश्न के उत्तरों का भी संग्रह है। लेखक "एक भारतीय हृदय" मूल्य ॥)

६—शिवा बावनी—टिप्पणी एवं भावार्थ सहित मू

स्थायी ग्राहक होने के लिये 'परीक्षा मंत्री' को लिखना किन्तु साधारणमोल लेने वाले ग्राहकों को प्रयाग के साहि लिमिटेड से पत्र व्यवहार करना चाहिये।

	पृष्ठ
प्रश्नपत्र संग्रह १९७१–७२	१
प्रश्नपत्र संग्रह १९७३	
प्रश्नपत्र संग्रह १९७४	।)
प्रश्नपत्र संग्रह १९७५	।)
इतिहास (मराठी भाषा के प्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय पण्डित विष्णुशास्त्री चिपलूणकर लिखित निबन्ध का अनुवाद)	≶)
सरल पिङ्गल	≶)
हिन्दी-भाषा-सार भाग १...(द्वितीय संस्करण)	॥≠)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य सिद्धान्त ... ... १)
द्वितीय सम्मेलन के सभापति का भाषण ... ... ।)
तृतीय सम्मेलन के सभापति का भाषण ... ... ।-)
प्रथमालङ्कार निरूपण (सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा के लिये स्वीकृत) ... ...
मद्रास प्रान्त में हिन्दी प्रचार का विवरण ... ...
हिन्दी-विद्यापीठ ... ... -)॥

प्रथम सम्मेलन की लेखमाला			॥।)	प्रथम वर्ष का कार्य विवरण			।)
द्वितीय	,,	,,	१)	द्वितीय	,,	,,	।)
तृतीय	,,	,,	॥।)	तृतीय	,,	,,	।-)
चतुर्थ	,,	,,	॥।)	चतुर्थ	,,	,,	।)
पञ्चम	,,	,,	॥)	पञ्चम	,,	,,	॥
षष्ठ	,,	,,	॥।)	षष्ठ	,,	,,	।
सप्तम	,,	,,	॥≈)	सप्तम	,,	,,	।-)
अष्टम	,,	,,	१)	अष्टम	,,	,,	।
नवम	,,	,,	१॥)	नवम	,,	,,	।-)

विवरण पत्रिका सं० १९७८ (छप रही है

...लन पत्रिका में विज्ञापन छपाई के निय...

...ट प्रतिमास १
,, ,, ... २

...वर्ष की छपाई एक बार अग्रिम देने वाले को दो आ... ...धा काट दिया जायगा।

विज्ञापन की छपाई अग्रिम ली जायगी। विज्ञापन भेजने वाले को पहले अपना विज्ञापन भेज कर स्वीकृति प्राप्त कर लेनी चाहिये। १ वर्ष से अधिक समय तक विज्ञापन छपाने वाले को निम्न लिखित पते से पत्र व्यवहार द्वारा निश्चित कर लेना चाहिये।

ऊपर लिखित विज्ञापन छपाई के नियम में कमी कराने लिये पत्र व्यवहार करना व्यर्थ है।

मन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

साहित्य सम्मेलनकी ... सम्मेलन

की

मुखपत्रिका ।

भाग ८ भाद्रपद, संवत् १९७७ अङ्क १

विषय सूची ।

वार्षिक मूल्य १)] [एक प्रति ≈

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) ...में हिन्दी प्रचार का विवरण ... ...बनाने के लिये समय समय ... ...की त्रुटियों और अभावों के दूर करने का ...।||) ...

(४) सरकार, देशीराज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्व-विद्यालयों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार ज़मीदारी और अदालतों के कार्य्यों में देवनागरी-लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(५) हिन्दी के ग्रंथकारों, लेखकों, पत्र-सम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय समय पर उत्साहित करने के लिये पारितोषिक, प्रशंसा-पत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(६) उच्च-शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(७) जहां आवश्यकता समझी जाय वहां पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्त्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(८) हिन्दी-साहित्य के विद्वानों को तैयार करने के लिये हिन्दी की उच्च-परीक्षाएँ लेने का प्रबन्ध करना।

(९) हिन्दी-भाषा के साहित्य की बृद्धि के लिये उपयोगी पुस्तकें तैयार कराना।

(१०) हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिए अन्य जो उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जांय, उन्हें काम में लाना।

सम्मेलन पत्रिका का उद्देश्य

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता करना और साहित्य प्रेमियों से इसी के लिये उपदेश लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्थायी समिति
की ओर से प्रतिमास प्रकाशित।

भाग ८ | भाद्रपद, संवत् १९७७ | अङ्क १

अयोध्या।

(लखनऊ में २८ जनवरी सन् १९२० को संयुक्त-प्रान्तीय इतिहास-सभा (U. P. Historical Society) में दिया हुआ व्याख्यान का अनुवाद।)

[व्याख्यानदाता—श्रीयुत लाला सीताराम बी०ए०]।

अयोध्या जिसे अवधपुरी, कोशलपुरी साकेत अथवा रघुपति-पुरी आदि भी कहते हैं सर्यू के दाहिने किनारे पर उत्तर कोशल की पुरानी राजधानी थी। वह सप्त तीर्थों में से प्रथम है और श्रद्धा के साथ सब से महत्तम और पवित्र मानी जाती है। अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवंतिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्ष दायिकाः अयोध्या, मथुरा माया, काशी, काञ्ची, (कांजीवरम) अवंतिका और द्वारावती (द्वारका) ये सातों मोक्षदायक हैं। इन में से कुछ की पवित्रता का कारण उनका कोशल देश के राजधानी से संबंध होने के कारण ही है। कृष्ण जन्म के बहुत पूर्व मथुरा को शत्रुघ्न ने बसाया था। उन्हें रामचन्द्र जी ने लवणासुर को जो जमुना के तट पर तपस्या करने वाले ऋषियों को कष्ट देता था मारने के लिये भेजा था। कहते हैं काशी अयोध्या की श्मशान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि थी। प्रयाग में अयोध्या के नृपति यज्ञ याग किया करते थे और इसी लिये उसे प्र+याग कहते हैं। संसार को पवित्र करने वाली गंगा को अयोध्या के ही भूपति भागीरथ पृथ्वी पर लाये थे। और जैसा कि सर जेम्स (अब लार्ड) मेस्टन ने संयुक्त प्रान्तीय इतिहास सभा के आरम्भिक भाषण में कहा था 'अयोध्या ही में सब अवतारों में श्रेष्ठ भगवान रामचन्द्र ने अपने पिता के प्रासाद में जन्म लिया था।'

जैसा मैं कह चुका हूँ अयोध्या उत्तर कोशल की राजधानी थी। उत्तर कोशल के नाम से ही और किसी दूसरे कोशल, दक्षिण कोशल, का अनुमान होता है। पाणिनि के एक सूत्र में (४-१-१७१) कोशल का नाम आया है 'वृद्धेत्कोसला आदाञ्ञ्यङ्'। डाक्टर भण्डारकर ने अपने 'दक्षिण के प्राचीन इतिहास' में (बाम्बे गज़े-टियर Bombay Gazeteer vol. I, p. 138) लिखा है कि विन्ध्या पर्वत के पास के देश का नाम कोशल है। वायु पुराण में लिखा है कि रामचन्द्र जी के पुत्र कुश कोशल देश में अपनी (कुसातशाली) कुशस्थली या कुशावती नामक राजधानी में जो विन्ध्या पर्वत में निर्मित हुई थी राज्य करते थे। यही कालिदास की भी कुशावती मालूम होती है क्योंकि कुश को अयोध्या को जाते समय विन्ध्या गिरि को पार करना पड़ता था 'व्यलंघयद् विन्ध्यमु पांयनानि पश्यन्पुलिन्दै रुपपादतानि (१६-३२) और गंगा को भी 'तीर्थे तदीये गजसेतु वयात प्रतीपगामुत्तरतोऽथगंगाम्'। रत्नावली में लिखा है कि कोशल देश के राजा विन्ध्यगिरि से घिरे हुये थे—विन्ध्यदुर्गा-वस्थितस्य कोसल नृपतेः—(५वें अंक में)। ह्यू न सांग भी कलिङ्ग से कोशल देश को गया था। इस से स्पष्ट है कि न केवल एक कोशल दक्षिण में भी है किन्तु पुलिकेशिन्, प्रथम, की शरण में भी एक कोशल देश का राजा गया था और उस का नाम केवल 'कोशल' लिखा है। अब अयोध्या के आस पास के देश की पहि-चान जहां तक हो सके वही करे।

उत्तर कोशल की भी वही दशा है। कालिदास ने उसे कई बार कोशल कहा है। रघुवंश के ५वें सर्ग में पितुरनन्तरमुत्तरकोशलान्; रघुवंश के दशवें और प्रथम सर्ग में भी 'श्लाध्यं दधत्युत्तर कोश-लेन्द्राः'। आनन्द रामायण और तुलसीदास को शायद दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशल का पता ही नहीं। भागवत पुराण में उसे ही कोशल और उत्तर कोशल लिखा है। पंचम स्कन्ध के १९वें अध्याय के ८वें श्लोक में तथा नवम स्कन्ध के दसवें अध्याय के ४२वें श्लोक में इस देश को उत्तर कोशल कहा है।

भजेत् रामं मनुजाकृतिं हरिं य उत्तराननयत् कोशलान्दिवम्।

धुन्वंत उत्तरासंगं पतिं वीक्ष्य चिरागतम्—

उत्तराः कोसला माल्यैः किरंतो ननृतुःमुदा॥

नवम स्कन्ध के दसवें अध्याय के २०वें श्लोक में राम को कोशलेश्वर कहा है।

और न इस देश की मिथिला के सदृश अतीत काल से आज तक के लिये कोई सीमा ही निश्चित है। साधारणतः यह माना जाता है कि उसका प्रसार घाघरा से गंगा तक था। कुछ विद्वानों का मत है कि इस नदी के उत्तर भाग को उत्तरकोशल कहते थे यद्यपि साकेत का प्रसार गंगा तक था। राम और उनके बाद अयोध्या के कुछ गुप्तवंशीय राजाओं ने बड़े बड़े साम्राज्य पर राज्य किया है। दिलीप के संबंध में भी कहा जाता है कि उसने पृथ्वी पर एक नगरी के समान जिसके चारों ओर समुद्र की खाई और उत्तुङ्ग पर्वत जिसके क़िलों की दीवारें थीं राज्य किया। श्रावस्ती कोशल देश की राजधानी थी और परतापगढ़ ज़िले के तुशारन बीहर (या बिहार) को भी जिसे कर्नल वास्ट ने साकेत कहा है कहते हैं कि वह भी कोशल देश में था।

वाल्मीकि ने अपने कोशल का रामायण के आरम्भ में इस प्रकार वर्णन किया है।

कोसलो नाम विदितः स्फीतो जनपदो महान्।

निविष्टः सरयू तीरे प्रभूत धन धान्यवान्॥

अर्थात कोशल सरयू के किनारे एक धन धान्यवान देश था। "निविष्ट" शब्द से मालूम होता है कि यह देश सरयू के दोनों किनारों पर था।

कनिंगहाम का कहना है कि ' अयोध्या या अवध का प्राचीन देश सरयू अथवा घाघरा द्वारा दो प्रान्तों में विभाजित था। उत्तरीय भाग को उत्तरकोशल और दक्षिणीय भाग को बनौध कहते थे। फिर इन दोनों के और दो दो भाग थे। बनौध में उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पच्छिम रात और पूरब रात और उत्तर कोशल में राप्ती के दक्षिण में गौड़ और राप्ती या जिसे अवध में रावती कहते हैं उसके उत्तर में कोशल कहते थे। इसमें से कुछ के नाम पुराणों में भी पाये जाते है जैसे वायु पुराणा में लिखा है कि रामचन्द्र जी के पुत्र लव कोशल में राज करते थे। और मत्स्य, लिङ्ग और कूर्म पुराणों में लिखा है कि श्रावस्ती गौड़ में थी। ये प्रतिकूल कथन उसी क्षण समुचित रीति से समझ में आजाते हैं जब हम जानते हैं कि गौड़ उत्तर कोशल का एक भाग था और श्रावस्ती के खंडहर भी गौड़ में जिसे अब गोंडा कहते हैं मिले हैं। इस प्रकार अयोध्या घाघरा के दक्षिण में बनौध या अवध की राजधानी थी और श्रवस्ती घाघरा के उत्तर में उत्तर कोशल की राजधानी थी (Cunningham's Ancient Geography of India p. 408.)। ह्यून सांग ने इस देश की परिधि ४००० ली ६६७ मील बताया है (Cunnigham's Ancient Geography of India p. 408)। कनिंघम के कथन की हम आगे चलकर आलोचना करेंगे। अभी हमारे लिए इतना ही कहना काफ़ी है कि कोशल राज्य की उत्तरीय सीमा स्पष्टतया हिमालय तक थी।

जब हम अयोध्याकाण्ड में आते हैं तभी हम अयोध्या के निर्माता मनु की इक्ष्वाकु को बताई हुई दक्षिणी सीमा का लंघन करते हैं। स्यन्दिका आजकल जिसे सई कहते हैं इस राज्य की दक्षिणी सीमा थी। यह आजकल परतावगढ़ में बहती है और इलाहाबाद, फ़ैजाबाद रेलवे लाइन को फ़ैजाबाद से ६१वें मील पर मिलती है। इस प्रकार राज्य की चौड़ाई आठ यजन हो जाती है। एक यजन कुछ कम ८ मील का होता है। मुझे कोई भी ऐसा प्रमाण नहीं मिला जिससे मैं कनिंगहम के कथन का अनुमोदन कर सकूं कि घाघरा के उत्तर का देश कोशल कहलाता था। सई और गंगा के बीच का प्रान्त बाद में मिलाया गया होगा क्योंकि वाल्मीकि ने साफ़साफ़ कहा है कि सई और गंगा के बीच के ग्राम अन्य राजाओं और निषाद-राज के राज्य में थे। यद्यपि गुह निषादराज एक स्वाधीन राजा थे क्योंकि उसने कहा है कि 'नहि रामात् प्रियतरो ममास्ति भुवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्चन' मेरा रामचन्द्र से बढ़कर और कोई अन्य प्रिय नहीं है।

इस पर भी पूर्व और पश्चिम की सीमा निर्धारण उतना सहल नहीं है। मालूम होता है कि मिथिला और कौशल के बीच में और कोई राज्य नहीं था। बौद्धों के दीघानिक्य और सुमंगल वासिनी आदि ग्रन्थों के द्वारा १९०६ के रायल एशियाटिक सुसायटी के जर्नल में साक्यों की उत्पत्ति का वर्णन इस प्रकार किया गया है। "ओकाकु (इक्ष्वाकुओं) के तीसरे नृप के वहिष्कृत पुत्रों ने जाकर हिमालय पर्वत पर कपिलवथु (कपिलवस्तु) नामक नगरी को बसाया, कपिल ऋषि ने जो बुद्ध देव के पूर्वावतार माने जाते हैं इन्हें यह भूमि (वथ्न—वस्तु) दिया था। कपिल मुनि इन्हें हिमालय की निचाई में साकसन्ध या साकवन सन्ध में सागौन के जंगल में एक पर्ण कुटी में दिखाई दिए थे। नगरी को बसा कर उन्होंने कपिल की पर्णकुटी के स्थान में एक महल भी बनाया और कपिल ऋषि के लिए उसी के पास एक दूसरे स्थान पर कुटी बना दी। ये इक्ष्वाकुओं के तीसरे नृप रामायण के विकुक्षि हो सकते हैं। किन्तु असल बात यही है कि सारे उत्तरीय भारतवर्ष में इक्ष्वाकु के वंशज ही जहां तहां राजा थे। एक पुत्र कोशल में, दूसरे कपिलवस्तु में, तीसरे विशाला में और चौथे मिथिला में राज्य करते थे। कपिलवस्तु का वर्णन रामायण में नहीं किया गया है। शायद वह उस समय रही ही न हो यदि रही भी हो तो कहीं हिमालय में। यदि वह और कहीं इधर उधर रही होती तो वाल्मीकि उसका वर्णन अवश्य करते। इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कोशल देश की पूर्वीय सीमा गण्डक नदी थी और देश का पूर्वीय भाग सरयू के किनारे किनारे सरयू और गंगा के संगम तक विस्तृत था। यहां पर यह कह देना उचित जान पड़ता है कि विश्वामित्र को बक्सर में सिद्धाश्रम को जाते समय रास्ते में कोई राज्य नहीं मिला था। बृहत्संहिता में मध्यदेश के राज्यों में केवल पांचाल, कोशल, विदेह, और मगध का ही उल्लेख है। विशाला मिथिला के दक्षिण-पश्चिम कोण में थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं इस देश की सीमा सई के किनारे २ गढ़ी राज्य को छोड़कर गोमती के संगम तक थी। यह राज्य यद्यपि कन्नौज में था तथापि इसके आधीन ग़ाज़ीपुर और बक्सर शहरों के आसपास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का देश भी था। यह सीमा की रेखा फिर एक विशाल वन में से होती हुई बलिया के समीप सरयू और गंगा के संगम तक जाती है और फिर वहां से मुड़कर उत्तर की ओर गण्डक से मिलती है। कोशल देश की पश्चिमी सीमा शायद पांचाल देश से बंधी हुई थी जो बाद में दो भागों में विभक्त हो गयी। उत्तरीय प्रान्त की राजधानी अहिछत्र थी और दक्षिणी भाग में कम्पिला मुख्य नगर था। कभी कभी यह विचार भी होता है कि कदाचित राम गंगा ही कोशला की पश्चिमी सीमा रही हो क्योंकि रामगंगा के नाम से ही उसका रामचन्द्र जी के साथ कोई संबंध होने का अनुमान होता है। तथापि हम अवध की ही आजकल की पश्चिमी सीमा से कोशला की भी पश्चिमी सीमा मिलाकर संतुष्ट हो जायँगे।

कनिंगहम का कहना है कि उत्तर कोशल घाघरा के ही उत्तरी प्रदेश को कहते थे। अवध गज़ेटियर ने उसे रापती के ही उत्तर भाग तक सीमित कर दिया है। किन्तु जब हमें स्पष्ट मालुम है कि कोशाला का राज्य श्रावस्ती से तुशारन बीहर तक विस्तृत था और विन्ध्यगिर में एक दक्षिण कोशल भी था तो यही विचार होता है कि उत्तर कोशल नदी के दोनों किनारों पर था और घाघरा के उत्तर का प्रदेश गौड़ कहलाता था। परगना रामगढ़ गौरा में अभी तक गोंडा, बस्ती और गोरखपुर के ज़िले थे। अयोध्या के उत्कर्ष के बाद प्रतीत होता है कि इस भाग का महत्व बढ़ गया था। कहा जाता है कि लव ने अपनी राजधानी श्रावस्ती में बनाई थी और उनके ज्येष्ठ भ्राता (कुश) ने अपनी राजधानी अयोध्या से दक्षिण में २० कोस दूर पर गोमती के किनारे बनाई थी।

बाद में कोशल देश बौद्धधर्म का जन्मस्थान होगया। भगवान बुद्धकी जन्मभूमि कपिलवस्तु, और उनके निर्वाणपद प्राप्तिका स्थान कुशीनगर (कसिया) दोनों ही उत्तरकोशल में हैं। उसकी राजधानी में ही भगवान बुद्धने सबसे पहिले सफलता पूर्वक परिश्रम किया था, यही उनका वर्षा के चतुर्मास निवास का इष्ट स्थान था, और यहींसे उन्हें प्रधान प्रधान शिष्य मिले थे (Oudh Gazetteer p. XXXII.)।

घाघरा के दक्षिण का प्रदेश पूर्वराष्ट्र और पश्चिम राष्ट्रों में विभक्त था। पच्छिम राज्य (राष्ट्र) आजकल भी फ़ैज़ाबाद ज़िले की बीकापुर तहसील में है। अन्त में वह नष्टप्राय हो गया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर विक्रमादित्य ने, जैसा कि आगे बताया जायगा, उसे अपनी पूर्व प्रतिष्ठा पर स्थापित कर दिया। उसे बनौध वन अवध (अयोध्या का बन) कहते रहे।

आजकल जो उत्तर कोशल में बहुत से ज़िले मिला लिये गये हैं उनमें से बहराइच पहिले गन्धर्ववन का एक भाग था। कोई कोई उसे ब्रह्मा का निवास स्थान मानते हैं और कोई कोई कहते हैं कि वह "भारों" का उपनिवेश था। मैंने यह भी कहते सुना है कि 'बहराइच' 'बहरे आशाइश' का विकृत रूप है। यह सूर्य-पूजा का केन्द्रस्थान था। यहां एक बालार्क (बाल अर्क, सूर्य) का मंदिर और उसी के साथ एक सरोवर था जैसा कि दरिया रियासत के बालाजी में है। यहीं सैयद सालार, गाजीमियां या बालेमियां दफ़नाये गये थे।

आजकल के गोंडा में जो गौड़ का अपभ्रन्श है "साहेत माहेत" प्राचीन श्रावस्ती के स्थान पर है। जो न केवल भगवान रामचन्द्र के द्वितीय पुत्र लव की राजधानी ही थी किन्तु अवध गज़ेटियर के शब्दों में जिसकी प्रसिद्धि संसार भर में थी क्योंकि वह एक आश्चर्य-मय धर्म का केन्द्रस्थान था जिसके शान्तिप्रिय धर्म प्रचारकों ने कास्पियन समुद्र (कश्यप समुद्र) से मेक्सिको तक नए आचार के बीज का वपन किया और जिसके भिक्षुसंघ का हमारे (इसाइयों के) धार्मिक आचार में बड़ा प्रभाव पड़ा है।

कुछ काल के बाद श्रावस्ती मरुस्थल और खण्डहरों का स्थान हो गयी। कालिदास ने लिखा है कि जब दिलीप अपने गुरु के आश्रम को गये थे तो राह में उन्हें ग्वालों या अहीरों के घोष (घर) मिले थे। और इन्होंने दिलीप को मक्खन भेंट किया था। यह आश्रम कहीं हिमालय में ही था। उसे आजकल ग्वारिच का परगना कहते हैं यद्यपि सर्वसाधारण का यह विश्वास है कि पाण्डवों ने वनवास में यहीं विराट की गौओं की रक्षा की थी (गोरक्षा-ग्वारिच)

सरयू और घाघरा के संगम पर वाराहक्षेत्र में ही कहा जाता है कि विष्णु का बाराह अवतार हुआ था। यद्यपि और दूसरे तीन स्थान भी यही श्रेय लेना चाहते हैं। तथापि यह अवश्य शूकरक्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जहां तुलसीदास जी ने अपने गुरू से रामायण की कथा सुनी थी।

कहा जाता है लखनऊ उसी स्थान पर बसा है जहां पर लक्ष्मण जी का नगर लक्ष्मणवती था। मछिभवन के किले के पास जो एक ऊँचा स्थान है उसे लक्ष्मण टीला कहते हैं।

सुलतानपुर—कहते हैं कि प्राचीन शहर राम के पुत्र कुश के द्वारा बसाया गया था और उसे कुशपुर या कुशभवनपुर भी कहते थे। कनिंगहम ने इस स्थान को ही ह्यून सांग का कुशपुर कहा है। ह्यून सांग ने कहा है कि उसके समय में वहां पर एक नष्टप्राय अशोक का स्तूप था और बुध ने वहां ६ मास तक उपदेश दिया था। आजकल भी सुलतानपुर के उत्तर-पश्चिम में ५ मील की दूरी पर महमूदपुर नामक ग्राम में बौद्धों के खंडहर मिलते हैं। उसे अलाउद्दीन खिलजी ने नष्ट कर दिया।

गोमती के किनारे पर सुलतानपुर के पास ही सिविल लाइन के बाद ही एक स्थान है जिसे सीताकुण्ड कहते हैं जहां सीता ने अपने पति के साथ वनवास में जाते समय स्नान किया था।

फ़ैज़ाबाद घाघरा के उत्तर ओर फैला हुआ है जो इस ज़िले की सबसे मुख्य नदी है और उसकी उत्तरीय सीमा है। बरसात के दिनों में नदी में बहुत बाढ़ आ जाती है। वह कभी इधर तो कभी उधर बहा करती, अपनी चाल सदा बदला करती है। जाड़े के दिनों में और गरमी के आरम्भ में नदी का पाट बहुत थोड़ा हो जाता है उसके दोनों तरफ़ बड़े बड़े टापू के मैदान हैं यद्यपि कहीं रेत और बड़े बड़े झाऊ के जंगल भी हैं। हिन्दू लोग इस नदी को पवित्र मानते हैं और फ़ैज़ाबाद कण्टूनमेंट के गुप्तारघाट और अयोध्या के नीचे के बिलहारघाट तक के भाग की विशेष पवित्रता है। यहां उसे सरजू कहते हैं। यही नाम उसकी सहायक नदी का उसके रामेश्वर के पास काली या सारदा के संगम से पूर्ण अलमोड़ा में है। और यही नाम खेरी में सुहेली का है जो कौरियाला या घाघरा में गिरती है।

अब ज़िले भर के और और रामायण संबंधी स्थानों के वर्णन करने की कुछ आवश्यकता नहीं। इस लिये अब हम अयोध्या, अवधपुर, साकेत या विशाखा का वर्णन करेंगे। मेजर (अब कर्नल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्ट का कथन है कि यद्यपि साकेत कोशल में था तथापि वह उसे परतापगढ़ के तुशारन बिहार से मिलाते हैं। पुरातत्ववेत्ताओं ने चीनी यात्री ह्यू न सांग के द्वारा भ्रमात्मक स्थानों के नाम और उनकी परस्पर दूरी जानकर अयोध्या को लखनऊ, कुरसी (बाराबंकी), सुजनकोट (उन्नाव), डौंडिया खेरा (उन्नाव) से मिलाया है। किन्तु हम कनिंगहम के साथ यही मानने को तैय्यार हैं कि अयोध्या, विशाखा, (पिसोकिया) साकेत (सांची) आदि पर्यायवाची हैं। हम ह्यू नसांग के आयुतो को भी अयोध्या ही मानते हैं। हम कर्नल वास्ट के तर्कों का उत्तर देने का प्रयत्न करेंगे।

सब से प्रथम कर्नल वास्ट ने कालिदास को उद्धृत किया है और यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि मल्ली नाथ की टीका रहते हुये भी साकेत का मतलब अयोध्या से नहीं था। इसके विपरीत हमें यही कहना है कि कालिदास के अनुसार साकेत और अयोध्या एक ही हैं।

पुरमबिशदयोध्यां मैथिली दर्शिनीनाम्,
(रघुवंश) दशमसर्ग ९९ श्लोक।
साकेत नार्योऽञ्जलिभिःप्रणेमुः, „ षष्टदशसर्ग १३ „ ।

अब यदि हम कर्नल सा० का कथन सत्य मानलें तो वह भी मानना पड़ेगा कि राम के विवाह के समय की राजधानी बदल कर तुशारन बीहर (साकेत) चली गई थी जब राम बन से लौटे। जैनों के प्रथम तीर्थङ्कर ऋषभदेव आदिनाथ साकेत के नृप निभि और मेरूदेवी के पुत्र थे। अब जैन लोग बड़ी श्रद्धा से विश्वास करते हैं कि आदिनाथ अयोध्या ही में उत्पन्न हुये थे। और उनकी स्मरणार्थ बनाये गये मन्दिर को शाहमुरा के टीले के पास बताते हैं जो मेरे घर से १ फर्लाङ्ग की दूरी पर है।

परन्तु इससे बढ़कर एक बात जो मेरी राय के पक्ष में है वह बुद्ध के दतून के पेड़ का स्थान है। बुद्ध ने जब वे साकेत (सांची या पिसोकिया) में थे एक दतून का पेड़ लगाया था जो ६ या ७ फुट ऊंचा बढ़ा और जिसे फाहियान और ह्यू नसांग दोनों ने देखा था।

सांची के संबंध में फहियान कहता है "नगर के दक्षिण द्वार से निकल कर हमें सड़क के पूर्व में एक स्थान है जहां बुद्धदेव ने Nettle

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृक्ष की एक शाखा तोड़कर भूमिमें लगा दिया था जहां वह ७ फुट तक बढ़ा और फिर न घटा न बढ़ा। यह कथा बिल्कुल उसी के अनुकूल है जो ह्यू नसांग ने विशाखा के संबन्ध में कही है कि राजधानी के दक्षिण में और मार्ग के बाईं ओर (अर्थात पूर्व में फाहियान ने कहा था) एक ६ या ७ फुट ऊंचा वृक्ष था जो पवित्र समझा जाता था जो न घटता था और न बढ़ता था यही बुद्ध का प्रख्यात दतून का वृक्ष था।

कहा जाता है बुद्ध देव ने साकेतपुर में १६ वर्ष तक निवास किया था। हनुमानगढ़ी के बाद जब हम अयोध्या से फ़ैज़ाबाद की ओर पक्की सड़क पर चलते हैं तो हमें मार्ग के बाईं ओर एक दतून कुण्ड मिलता है। यद्यपि सर्व साधारण का विश्वास है और आयोध्या माहात्म्य में भी लिखा है कि इस कुण्ड पर भगवान रामचन्द्र दतून किया करते थे तथापि विचार यही होता है कि कदाचित यही स्थान है जहां बुद्धदेव ने दतून का वृक्ष लगाया था या जहां पर पासही सरोवर खोदा गया था जिसमें भगवान बुद्धदेव मुंह धोया करते थे और जो आजकल भी वृक्ष के सूख जाने पर भगवान बुद्धदेव के आयोध्या निवास का स्मारक है। शायद दक्षिण द्वार हनुमान गढ़ी के पास था। हनुमान गढ़ी से सरजू तक की दूरी एक मील से कुछ अधिक है किन्तु नदी की गति बदलती रहती है और शायद यात्री (ह्यू नसांग) के समय में वह कुछ और उत्तर की ओर बहती रही हो। अभी मेरी याद में इस नदी ने वस्ती और गोंडा के ज़िलों के हज़ारों एकड़ भूमि को काट डाला है और वही भूमि अयोध्या में मिल गई है।

ह्यू नसांग ने कहा है कि विसोकिया की परिधि लग भग १६ ली थी। इतना स्थान एक शक्तिशाली राज्य की राजधानी के लिये कदापि काफ़ी नहीं था। मेरा विश्वास है कि शायद यह परिधि रामकोट की हो जिसका मैं आगे वर्णन करूंगा। डाक्टर फ़ुहरर कहते हैं कि गोंडा के आदमी कहते हैं कि यह दतून का वृक्ष शायद चिलबिल का पेड़ ही हो जो ६ या ७ फुट से आगे नहीं बढ़ता। शायद वह करसुन्डा हो जिसकी दतुनें आजकल भी अवध में और ख़ास कर लखनऊ में काम में आती हैं। यहां यह बताना अरुचिकर न होगा कि दतून के बढ़ने में कोई आश्चर्यजनक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात नहीं है। कानपुर जिले में घाटमपुर की तहसीली से १ मील की दूरी पर एक महंत कादुर्मंजिला पक्का मकान है जिसमें एक नीम का पेड़ एक दतून के पेड़ से निकला हुआ है जिसे एक साधु ने २०० वर्ष पूर्व लगाया था। इस सबसे मेरा कदापि यह मतलब नहीं कि मेरे कथन से किसी को दुख हो। एक साधु वैष्णव अब भी विश्वास कर सकता है कि बुद्धदेव भी विष्णु के अवतार थे।

कनिंगहम ने कहा है कि अयोध्या के प्राचीन नगरी जैसा कि रामायण में लिखा है सरयू या सरयू नदी के किनारे थी कहा गया है कि उसका घेर १२ योजन या लगभग १०० मील था किन्तु हमें इसके बदले १२ कोस या २४ मील हीं पढ़ना चाहिये जो शायद उस प्राचीन नगर का उपवनों के सहित घेर रहा हो। पश्चिम में गुप्तारघाट से लेकर पूर्व में रामघाट तक की दूरी सीधी ६ मील है और हम भी यही समझते हैं कि शायद उसका घेर १२ कोस ही रहा हो। आजकल भी वहां के निवासी कहते हैं कि नगरी की पश्चिमी सीमा तक और पूर्वी सीमा गुप्तारघाट तक और उसकी दक्षिणी सीमा भदरसा के पास भरतकुण्ड तक बताते हैं वह भी ६ कोस है।

आइने अकबरी में नगरी की लम्बाई १४८ कोस और चौड़ाई ३२ कोस थी दूसरे शब्दों में यही घाघरा के उत्तर का अवध प्रान्त है। ह्यूनसांग ने इस प्रदेश का घेर ४००० ली या ६६७ मील बताया है।

कनिंगहम के २४ मील के कथन में एक बात और कहना है कि अयोध्या की पैकरमा (परिक्रमा) जो कि प्राचीन धार्मिक नगर की सीमा मानी जा सकती है, १४ कोस अर्थात २८ मील या किसी २ के अनुसार २४ मील ही थी। इस परिक्रमा के भीतर फ़ैज़ाबाद का शहर और आसपास के गांव भी हैं जैसा कि आगे दिखाया जायगा। यह बसी हुई बस्ती की सीमा हो सकती है किन्तु यही कदापि वाल्मीकि की प्राचीन नगरी का घेर नहीं था।

कहा जाता है कि अयोध्या को मनु ने निर्मित किया था और वह १२ योजन लम्बी और ३ योजन चौड़ी थी। वह सरयू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से वेदश्रुति तक फैली हुई थी। अब यह वेदश्रुति अयोध्या से २४ मील की दूरी पर होना चाहिए। इसे आजकल बिसुई कहते और वह सुलतानपुर जिले से निकल कर आजकल भी फ़ैज़ाबाद जिले की दक्षिणी सीमा बनाते हुए अलाहाबाद-फ़ैज़ाबाद रेलवे लाइन को खजुराहट स्टेशन से २ मील की दूरी पर मिलकर अकबरपुर के पास मरहा से मिल जाती है और वहां से इसे टौंस कहते हैं।

अब पूर्वी और पश्चिमी सीमा के सम्बन्ध में यदि आप फ़ैज़ाबाद ज़िले के नक़्शे की ओर देखें तो मालुम होगा कि इसमें घाघरा के किनारे २ की भूमि है जो कभी २५ मील से अधिक चौड़ी नहीं है आजमगढ़ से बाराबंकी लगभग ८० मील तक फैली हुई है। कनिंगहम जिन्होंने शायद रामायण कभी नहीं देखी आइने अकबरी को उद्धृत करते हैं और फिर ब्राह्मणों के गर्व पर दो चार बातें कह कर मानलेते हैं कि नगरी आसपास के भागों को लेकर ४८ योजन लम्बी थी। इसमें तो आजकल का लखनऊ शहर भी आ जायगा और फिर सर्वसाधारण के विश्वास के अनुसार लक्ष्मणपुरी (लखनऊ) अयोध्या का पश्चिम द्वार हो जायगी। यह भी कहा जाता है कि इस नगर का पूर्व-द्वार फ़ैज़ाबाद ज़िले में आज़मगढ़ की सीमा पर बिरहर में था। किन्तु नगरी की पश्चिमी सीमा बड़ी कठिनाई से निश्चित समझी जा सकती है।

अब बाहरी आवरण को छोड़कर बस्ती का वर्णन करेंगे। मैं पैकरमा का उल्लेख करही चुका हूं। यह परिक्रमा कार्तिक सुदी नवमी से की जाती है और सरयू के किनारे पर स्वर्गद्वार से आरम्भ होती है यद्यपि परिक्रमा और कहीं से भी आरम्भ की जा सकती है किन्तु जहां से आरम्भ की जाय वहीं अन्त होना चाहिये। स्वर्गद्वार से चलकर नदी के किनारे २ यात्री ७ मील तक जाता है और वहां से मुड़कर शाह निवाज़पुर और मोती रामनगर में से होता हुआ दर्शनागार में सूरजकुंड पर ठहरता है। यह एक बाज़ार के पास राजा दर्शनसिंह का बनाया हुआ सूर्य भगवान का सुन्दर सरोवर है। दर्शनागार से वह पश्चिम की ओर कोराहा, मिर्ज़ापुर, और बीकापुर से होता हुआ जनौरा को जाता है। यह फ़ैज़ाबाद सुलतांपुर सड़क पर आबाद गांव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह गांव अयोध्या से दक्षिण—पश्चिम में ५ मील पर और फ़ैज़ाबाद से दक्षिण की ओर २ मील पर है। इस गांव में एक पक्का सुन्दर सरोवर है जिसे गिर्जाकुण्ड कहते हैं और वहां एक शिव का मन्दिर है। यह अयोध्या में एक पवित्र स्थान माना जाता है और बहुत से यात्री यहां प्रतिवर्ष कार्तिक में परिक्रमा करते हुए पूजा करने आते हैं।

इसे जनौरा, जनकौरा का अपभ्रंश, इसलिए कहते हैं कि जब महाराज जनक अयोध्या आते थे तो यहीं ठहरते थे क्योंकि बेटी के घर हिन्दूलोग पानी तक नहीं पीते। इस गांव में सुरजभान ठाकुर रहते हैं जो अपने को रामचन्द्र जी का वंशज समझते हैं। उनके पूर्वपुरुष कुल्लू पर्वत पंजाब से लाये गये थे। कहा जाता है कि जब राजा विक्रमादित्य ने अयोध्या को फिर से निर्माण कराना आरम्भ किया तो पण्डितों ने उसे रामचन्द्र जी के वंशजों को यज्ञ में भागलेने के लिए बुलाने की सलाह दी थी अन्यथा यज्ञ हो हीं नहीं सकता था।

जनौरा से यात्री खोजानपुर और सिविल लाइन के बीच से होते हुये घाघरा के तट पर निर्मलकुण्ड जाता है और वहां से गुप्तारघाट होता हुआ परिक्रमा को वहीं समाप्त कर देता है जहां से उसे आरम्भ करता है।

इस प्रकार अयोध्या की स्थिति का निश्चय करके अवध गज़े-टियर के शब्दों में यह उस सुखपूर्ण राज्य की राजधानी थी जहां हिन्दू जाति ने उस सब का अनुभव किया जिसका वह आदर करती है और जो उसके लिये इष्ट है। यह उस राजवंश का स्थान है जो सूर्य से आरम्भ होकर निर्दोष की साठवीं पीढ़ी में मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र के साथ समाप्त हुआ।

कहा जाता है कि भगवान् रामचन्द्र अयोध्या को अपने साथ स्वर्ग लेगये। जिससे स्पष्ट है कि वह विजन हो गई। आयोध्या की स्थिति बड़ी महत्व पूर्ण है। वह उस भूमि का केन्द्र स्थान है जिसे भारतवर्ष का उद्यान (Garden of India) कहते हैं। वह एक बड़ी नदी के किनारे पर है जिसमें बरसात के दिनों में जहाज़ चल सकते हैं और यह अभीतक एक बड़े जलमार्ग का केन्द्र थी और पेशावर चिटगांग और कन्याकुमारी से बराबर २ की दूरी पर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी कारण समुद्रगुप्त ने अपनी दिग्विजय के बाद पाटलिपुत्र से हटाकर अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया था। अयोध्या जो कि भगवान् रामचन्द्र की निवास—भूमि थी और जिसके खण्डहरों से फ़ैज़ाबाद का शहर बसाया गया है और जो अपनी अच्छी स्थिति के कारण समुद्रगुप्त की राजधानी थी जिसे उसके पुत्र ने भी अपनी राजधानी बनाया था और वहीं उसने तांबे के सिक्के ढालने के लिए एक मिन्ट खोली थी। पांचवीं सदी में वहां एक मिन्ट थी ऐसा मानने के लिए कारण है। गुप्त साम्राज्य का पाटिलपुत्र नहीं किन्तु आयोध्या मुख्य नगर था।

भगवान रामचन्द्र आदर्श हिन्दू थे और अपने पुत्रों और भतीजों दोनों को एक समान समझते थे। इस लिए अपने राज्य को उन्हें बँाट कर आयोध्या से सब राजकीय टीमटाम हटा लिया। उनके स्वर्गारोहण के बाद कुश को उसके भ्राताओं ने अपना सम्राट मानकर उनसे कुशावती छोड़ कर अयोध्या में अपने पूर्वपुरुषों की राजधानी में जाने का आग्रह किया। कुश ने आयोध्या को अपनी राजाधानी बना लिया और कालिदास ने रघुवंश के छटेसर्ग में जो कुश के द्वार अयोध्या को फिर बसाने का वर्णन किया है वह कदाचित विक्रमादित्य द्वार बसाये जाने का सच्चा वर्णन हो।

किन्तु सूर्य के वंशजों का भी उत्कर्ष परिवर्तन के चक्कर में पड़ कर अस्त होकर फिरसे उदय नहीं हुआ। महाभारत में हम पढ़ते हैं कि कुश के किसी वंशज बृहद्बल को अभिमन्यु ने युद्ध में मारा था। विष्णुपुराण के अनुसार इक्ष्वाकु का वंश कलियुग में सुमित्र के साथ समाप्त हुआ।

हम फिर ईसा के पूर्व ५ वीं शताब्दी में आयोध्या के महल के सम्बन्ध में कुछ सुनते हैं जब बुद्ध वहां जाकर छ वर्ष या किसी २ के अनुसार ही १६ वर्ष तक रहे थे। यही फिर बौद्ध धर्म का दृढ़ स्तम्भ होगया था यद्यपि उस समय कोशल की राजधानी श्रावस्ती ने उसके महत्व को कम कर दिया था। इसे उस समय विशाखा कहते थे क्योंकि उसी नाम की एक स्त्री ने वहां एक आराम बनवा दिया था।

उसका महत्व फिर घट गया या वह एक दम निर्जन होगई जब तक कि विक्रमादित्य ने फिर से उसे अपने स्थान पर स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया। भारतीय दन्त कथाओं के विक्रमादित्य होने का चन्द्रगुप्त द्वितीय को ही अधिक अधिकार है। पवित्रसलिला सरजू के द्वारा और महादेव जी के मन्दिर नागेश्वर नाथ और अन्य प्रतिमाओं के द्वाराही जिनका दर्शन करने सैकड़ों यात्री आते हैं और जिन का उल्लेख पुरानी हस्त लिखित पोथियों में था उसने प्राचीन नगर का पता लगा लिया।

समुद्र पाल वंश दन्त कथाओं के अनुसार राजा विक्रमादित्य ने आठ वर्ष तक राज्य किया और उसके अन्त समय में एक समुद्र पाल नामक योगी राजा के प्राणों को हटाकर स्वयं ही योगबल द्वारा उसके शरीर में प्रविष्ट होगया। उसने और उसके वंशजों ने १७ पीढ़ी तक ६४३ वर्ष राज्य किया—यद्यपि उसमें प्रत्येक राजा का राजसमय ठीक २ और उचित नहीं है।

श्रीवस्तम् वंश—समुद्रपाल वंश के बाद कहा जाता है कि सरजूपार के श्रीवस्तम वंश ने जिनमें त्रिलोकचन्द्र प्रधान था राज किया। शायद श्रीवस्तम वंश पर ही सैयदसालार ने अवध पर धावा किया था। जब कि मुसलमानों के सबसे पहिले धावों में वह और उसकी सेना बहराइच के जंगलों में अपनी हड्डियों के सूखने छोड़ आये थे।

ईसा की १२ वीं शताबदी में कदाचित अवध कन्नौज के राज्य में सम्मिलित था। कन्नौज के अन्तिम राठौर राजा जैचन्द का सन् ११२७ का एक तांबे का दानपत्र फ़ैज़ाबाद के पास जब कर्नल कालफ़ील्ड लखनऊ में रेज़िडेन्ट थे मिला था इस दानपत्र में भारद्वाज गोत्र के अलिङ्ग ब्राह्मण को जैचन्द ने कोमाली नामक गांव दान दिया था।

मुसलमानों के समय में अयोध्या के इतिहास में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। वह दिल्ली साम्राज्य के सूबेदार का निवासस्थान था। जब खांजहां अवध का सूबेदार था तब प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो वहां दो वर्ष तक रहा था। तुग़लकों को अयोध्या से विशेष रुचि थी और फ़ीरोज़ तुग़लक वहां बहुधा जाया करता था। इसके कुछ दिन बाद इब्राहीम शरक़ी ने चढ़ाई की और इसे जौनपुर राज्य में मिला लिया। फिर १५२८ ई० में बाबर ने यहां चढ़ाई की और रामचन्द्र जी के जन्म स्थान (एक मंदिर जो उनके जन्मस्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का स्मारक था) को तोड़ कर वहां उसने एक मस्जिद बनवाई जो आज तक वहां है। स्वर्गद्वार के दूसरे बड़े मन्दिर को औरङ्गज़ेब ने तोड़कर वहां एक मस्जिद बनवाई थी जो अब नष्टप्राय है। अकबर की यहां एक टकसाल थी जो फिर बहराइच को चली गई थी।

नवाब वज़ीरों के समय में फिर से अवध का महत्व बढ़ गया था। सादत ख़ां १७३१ में अवध का नवाब नियुक्त किया गया था। उसने लक्ष्मनघाट के पश्चिम की ओर एक 'क़िलामुबारिक' बनवाया तथापि फिर फ़ैज़ाबाद जो कि प्राचीन नगर का एक दूसरा भाग था क़िले से ४ मील पश्चिम चला गया। उसने दिल-खुश या अफ़ीम की गोदाम के सामने एक बंगला (या शिकार की सन्दूक़) बनवाया था। उसके पौत्र शुजाउद्दौला के समय में इस बंगले के आस पास एक शहर बसाया गया था जिसकी प्रशंसा यात्री किया करते थे। उसकी मृत्यु के बाद उसकी स्त्री बाहुबेगम अपनी मृत्यु पर्यन्त अर्थात् १८१६ तक रही और उसके पुत्र आसफुद्दौला ने राजधानी को लखनऊ हटा लिया।

यह भी प्रतीत होता है कि ईसा की १३ वीं शताब्दी में मुसलमानों के अत्याचार से पीड़ित होकर कुछ हिन्दू अयोध्या से स्याम को चले गये थे और वहां उन्होंने अयोध्यापुर (जुथिया या अजुथिया नामक नगर बसाया था जो १३५० से १७६७ तक एक शक्तिशाली राज्य की राजधानी रहा। "जरवा का माजापहेत साम्राज्य १७८० ई० के लगभग अपने उत्कर्ष की चरमसीमा पर था और उसमें स्परा द्वीप समुदाय और मलाका प्रायःद्वीप के दक्षिणी भाग के कुछ परतन्त्र राज्य थे। उसका सम्बन्ध इन्डोचाइनोज़' (हिन्दूस्थान और चीन) देश के कुछ स्थानों से भी था। इनमें से एक राज्य अयोध्यापुरी भी था' (J. R. A. S. 1905 p. 485)। इसका महत्व यहां तक बढ़ गया था कि ईसा की चौदहवीं शताब्दी में चीन के साम्राज्य मिंग ने इससे जावा के राजा को शेनफोशि (श्री भोज पलेमबेग) को शान्त रखने के लिये प्रार्थना की थी। क्योंकि शेनफ़ोशि जावा के अधीन था और चीन के विरोध में उसके लिये भयदायक था क्योंकि उसने चीन के राजदूत को मारडाला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस नगरी का इतिहास साकद्वीपी ताल्लुक़ेदारों के वर्णन के बिना अपूर्ण ही समझा जायगा। इन तालुक़ेदारों के कारण ही आज इस नगर की इतनी शोभा है। हम दर्शनसिंह के नाम का उल्लेख कर ही चुके हैं जिसने पैकरमा में दर्शनागार की बाज़ार बनवाया था। लगान के न मिलने के कारण और बेदख़ली से और २ भी अन्य चालों से जो नवाबी में प्रचलित थीं। उसने अवध के सर्क़ारी राज्य में मिला लेने के ४० वर्ष पूर्व एक बड़ी भारी जायदाद फ़ैज़ाबाद के ज़िले में एकत्र करली थी। उन्हें १८५५ में राजा की पदवी सदा के लिये मिली। और उनके बाद उनके पुत्र महाराज सरमानसिंह सी० एस० आई० उनके स्थान पर हुये। मानसिंह जी का १८७२ में देहावसान हो गया और १६ वर्ष के मुक़दमे के बाद उनके नाती लालप्रतापसिंह जी को जायदाद मिली। महामहोपाध्याय महाराज सर प्रतापनरायणसिंह के० सी० एस० आई० को अयोध्या के महाराज की पदवी मिली थी जिसे सर्कार भी मानती थी। उन्होंने २० साल तक रियासत को अपने आधीन रक्खा। वे भी १६०६ में निस्सन्तान पञ्च तत्व को प्राप्त हो गये और उनके बाद उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जगदम्बा देवी के हाथ में रियासत का कारबार है।

अब हम अयोध्या के ऐतिहासिक स्थानों का वर्णन करेंगे। इनमें सब से अधिक उल्लेखनीय स्थान रामकोट (रामचन्द्र जी का दुर्ग) है। दुर्ग के भीतर बहुत अधिक भूमि है और प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में लिखा है कि इस दुर्ग में २० कोटगढ़ थे और प्रत्येक कोटगढ़ में रामचन्द्र जी के मुख्य २ सेनापति रक्षक थे और इन गढ़कोटों के नाम भी वही थे और हैं जो इनके रक्षकों के थे। इस दुर्ग के भीतर आठ राजप्रासाद थे जहां राजा दशरथ उनकी रानियां और उनके देवतुल्य पुत्र राम रहते थे। अयोध्या महात्म से (जिसका अनुवाद बरेली के बाबू रामनारायण ने अंग्रेज़ी में किया है और जो बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नलमें प्रकाशित हुआ था) निम्नलिखित अंश रामकोट के वर्णन में लिखा है।

"राजप्रासाद के मुख्य द्वार पर हनुमान का बास था और उनके दक्षिण में सुग्रीव और उनके निकट अंगद रहते थे। दुर्ग के दक्षिण द्वार पर नल रहते थे और उसके पास ही सुखेन। पूर्व की ओर 'नवरत्न' नामक एक मन्दिर था और उसके उत्तर में गवाक्ष रहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। दुर्ग के पूर्व द्वार पर दुधावक्र रहते थे और उनके निकट सुतबल और कुछ दूरी पर गन्धमादन सुरभ और बनुस। दुर्ग के उत्तर द्वार पर विभीषण रहते थे और उनके पूर्व में उनकी स्त्री सुरमा रहती थी जो विघ्नेश्वर की रक्षा करती थी और उसके पूर्व में पिण्डुरक रहता था। उसके पूर्व में वीरमत्तगजेन्द्र का वास था। अयोध्या के रक्षक वीरसुन्क्य हमारी कामनाओं के भी रक्षक थे। पूर्वीय भाग में दोविद रहते थे और उसके उत्तर-पश्चिम में बुद्धिमान मयुन्द रहते थे और दक्षिणीय भाग में जाम्ववान और दक्षिण में केसरी। येही दुर्ग की चारों ओर से रक्षा करते थे।

अब आजकल ४ गढ़ ही बचे हैं, हनुमान गढ़ी, सुग्रीव और अङ्गद टीला और मत्तगजेन्द्र जिसे सर्वसाधारण मत्तगेंद कहते हैं। हनुमान गढ़ी जो अब चार कोट वाला छोटा सा दुर्ग दिखाई पड़ता है आसफुद्दौला के मन्त्री टिकैतराय के द्वारा पुराने ढांचे पर बनाई गई थी और एक बड़ी मूर्ति स्थापित की कई थी। जो प्राचीन छोटी मूर्ति थी वह उसी के सामने स्थापित है।

आयोध्या प्रधानतः बैरागियों का घर है और हनुमानगढ़ी उन का दृढ़ दुर्ग। गढ़ी के वैरागी निर्वाणी अखाड़े के हैं और चार पट्टियों में विभक्त हैं। साधारण पढ़े लिखे हिन्दुस्थानी समझते हैं कि वैरागी लोग बड़े उद्दण्ड होते हैं और उनका एक उद्देश्य खाओ पिओ और सुखी रहो है। किन्तु बात ऐसी नहीं है। चेलों को पहिले बहुत सेवा और तपस्या करनी पड़ती है, जो सब में होता है। उनका प्रवेश १६ वर्ष की अवस्था में होता है, यद्यपि ब्राह्मणों और राजपूतों के लिए वह बन्धन नहीं रहता। इन्हें और और भी सुविधाएँ हैं जैसे उन्हें नीच काम नहीं करना पड़ता। पहिली अवस्था में चेले को ३ वर्ष तक मंदिर और भोजन के छोटे २ बरतन मलने पड़ते हैं, लकड़ी लाना पड़ती है और पूजापाठ करना होता है। दूसरी अवस्था भी ३ वर्ष की होती है और इसमें उसे बन्दगीदार कहते हैं। इसमें उसे कुएं से पानी लाना पड़ता है, बड़े २ बरतन मांजने पड़ते हैं, भोजन बनाना पड़ता है और पूजा भी करना पड़ता है। इसके बाद इतने ही समय की (३ वर्ष) तीसरी अवस्था आरम्भ होती है जिसमें इसे "हुड़दंगा" कहते हैं। इसमें इन्हें मूर्तियों को भोग लगाना पड़ता है, खुराक बांटना पड़ता है जो इन्हें दोपहर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलती है पूजा करना पड़ता है और निशान या मन्दिर की पताका ले जाना पड़ता है। दसवें वर्ष में चेला उस अवस्था में जाता है जिसे "नागा" कहते हैं। इस समय वह अयोध्या को छोड़कर अपने साथियों के साथ भारतवर्ष के समस्त तीर्थों और पुण्यस्थानों का परिभ्रमण करने जाता है। यहां भिक्षा ही इसकी जीविका रहती है। लौट कर वह पांचवीं अवस्था में प्रवेश करता है जिसे "अतिथ" कहते हैं।

इस अवस्था में वह मृत्युपर्य्यन्त रहता है। अब इसे सिवाय पूजा पाठ के कोई काम नहीं करना पड़ता और उसे भोजन और वस्त्र मिलता है।

इससे स्पष्ट हो गया होगा कि बैरागी का काम बेकारी नहीं है। उसे नियम से धार्मिक साधना करनी पड़ती है और बैरागी सदा से हिन्दू धर्म सनातन धर्म के रक्षक रहे हैं जिन्हें परिवार का कोई बन्धन नहीं रहता और जो अपने धर्म के लिये जान तक देने को तैय्यार रहते हैं। लखनऊ म्यूज़ियम के एक चित्र से मालूम होता है कि हरद्वार में बैरागियों ने अकबर का कैसा विरोध किया था। सन् १८५५ में अयोध्या में जब हिन्दू और मुसलमानों में बड़ा झगड़ा होगया था और मुसलमानों ने गढ़ी पर धावा भी किया था जिसे वे नष्ट भ्रष्ट करना चाहते थे तो बैरागी ही थे जिन्होंने उन्हें पीछे हटा दिया था। उन्होंने वही वीरता का काम तब भी किया था जब कुछ ही दिन बाद अमेठी के मौलवी अमीर अली ने धावा करने का फिर से प्रयत्न किया था। ये सदा से अपने धर्म के रक्षक रहे हैं और अयोध्या को भ्रष्ट होने से बचाया है। वे सिवाय देश की सर्कार से और किसी से नहीं दबते किन्तु जब दबाव हटा लिया जाता है। फिर से स्वतन्त्र हो जाते हैं और और अवसरों पर वे उतने ही शान्त रहते हैं जैसे ईश्वर की सेवा में दत्तचित्त और कोई दूसरी धार्मिक संस्था। उनमें अनेकों कुलीन हैं बहुत से रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर और सबार्डिनेट जज हैं। आज कल जो सबसे बड़े साधु हैं उनका शुभ नाम श्री सीतारामशरण भगवान् प्रसाद है वे रिटायर्ड डिप्टी इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स हैं। कवि कुल दिवाकर महान् कवि, सुधारक और धार्मिक गुरु भक्त शिरोमणि तुलसीदास अयोध्या के स्मार्त वैष्णव थे। अभी मेरी याद में पन्ना रियासत के भूत पूर्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवान जानकी प्रसाद जो बाद में सिकरी बिहारी कहे जाते थे अयोध्या में आकर रहे और बैरागी होकर कनकभवन के महन्त हो गये। इनमें से एक बाबा रघुनाथदास थे जो मेरे पिता के गुरु थे और उन्होंने मेरी विद्या का श्रीगणेश कराया था। उन्हें भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों के लाखों हिन्दू देवता समझ कर पूजते हैं। बाबा जुगुलानन्दशरण और उनके चेला बाबा जानकीबरशरण दोनों संस्कृत और फ़ारसी के बड़े विद्वान थे और स्व० जुगुलानन्दशरण जी एक बड़े कवि भी थे।

मैं कह चुका हूं कि बैरागियों के कई अखाड़े हैं। "इन सातों अखाड़ों के नियमित संगठन हैं जिसके अनुसार ये बड़े बड़े मेलों और ऐसे ही अवसरों पर चलते हैं। पहिले दिगम्बरी रहते हैं फिर उनके बाद निर्वाणी दाहिनी ओर और निर्मोही बाईं ओर। तीसरी पंक्ति में निर्वाणियों के पीछे ख़ाकी दाहिनी ओर और निरालम्बो बाईं ओर। और निर्मोहियों के पीछे संतोषी और महानिर्वाणी। हर एक के आगे और पीछे कुछकुछ स्थान ख़ाली रहता है।" बैरागियों के इस संक्षिप्त वर्णन से तात्पर्य केवल यही है कि आजकल नवशिक्षित युवकों में बैरागियों के प्रति जो कुविचार फैला हुआ है दूर होजाय कि वे हरामख़ोर हैं और अन्धविश्वासी हिन्दू जनता के कुदान से जीते हैं और फिर गेरुआ बस्त्र धारण करके उसे ही ठगते हैं। प्रत्येक संस्था में बुरे भी होते हैं किन्तु मैं विश्वास के साथ बिना विरोध के भय के कह सकता हूँ कि अयोध्या के वैष्णव बैरागी जैसे कि वे भगवान् रामचन्द्र के भक्त हैं वैसे उतने त्यागी, संयमी भी हैं जितने संसार भर को और भी कोई धार्मिक संस्थाओं के पुरुष। मैं यह कह कर उनका अपमान कदापि नहीं करना चाहता।

दूसरे और तीसरे कोट सुग्रीव टीला और अङ्गद टीला (कबीर पर्वत) हैं, दोनों गढ़ी के दक्षिण में हैं। जेनरल कनिंगहम का कथन है कि सुग्रीव टीला उसी स्थान पर है जो ह्यू नसांग के मनीपर्वत के दक्षिण-पश्चिम में ५०० फुट के भीतर है। और बिलकुल दक्षिण में ५०० फुट की दूरी पर दूसरे खण्डहर पर वह स्तूप है जहां बुद्ध के नख और केश रखे गये थे। कनिंगहम भी मानते हैं कि रामकोट और मनीपर्वत से कोई सम्बन्ध है और इन खण्डहरों का भी रामकोट से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद दूसरा महत्व का स्थान जन्मस्थान है। जहां बाबर ने १५२२ में एक मस्जिद बनवाई थी जो आजतक उसके नाम से प्रसिद्ध है। वह उस खण्डहर पर बना है जिसे हिन्दू लोग यज्ञवेदी कहते हैं। कहा जाता है कि दशरथ ने यहीं पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। मैं अपने बाल्यकाल में जले चांवल यहां से खोदा करता था। मैं विक्रमादित्य द्वारा अयोध्या की पुनर्स्थापना की चर्चा कर चुका हूँ। यह दन्तकथाओं के भी अनुकूल है और ऐतिहासिक अन्वेषणों से भी पता चलता है कि विक्रमादित्य के पूर्व अयोध्या की दशा नष्टप्राय थी। क्योंकि यह सर्वसम्मत है कि कालिदास इन्हीं विक्रमादित्य के समय हुये थे और वे इनकी सभा के नवरत्नों में से एक रत्न थे। मैं यह सोचता हूँ कि रघुबंश के १६ वें सर्ग में जो कुश के द्वारा अयोध्या की प्रतिष्ठा पुनर्स्थापित करने की चर्चा है वह कदाचित गुप्तों की राजधानी को उज्जैन से (पाटलिपुत्र से नहीं) हटाकर चन्द्र गुप्त द्वितीय द्वारा अयोध्या ले जाने की ही बात है। और यज्ञवेदी वही स्थान है जहां महापूजा या यज्ञ हुआ था जब कि चांवल और घी का आजसरीखा शोचनीय भाव नहीं था। यज्ञवेदी भगवान् रामचन्द्र के जन्म का स्थान हो सकती है किन्तु मेरा यह दृढ़ मत है कि चन्द्र गुप्त (द्वितीय) विक्रमादित्य ने उसे फिर से यज्ञ कराकर पवित्र किया था। रामचन्द्र जी के पुराने मन्दिर में थोड़ा ही हेर फेर हुआ है। मस्जिद में जो मध्य की गुम्बज़ है वह प्राचीन मन्दिर ही की मालूम होती है और बहुत से स्तम्भ भी अभी ज्यों के त्यों खड़े हैं। ये सुदृढ़ काले काले भांति भांति के खुदाव किये हुये कसौटी के पत्थर के बने हुये हैं। ये सात से आठ फुट तक ऊंचे हैं और नीचे चोकोन हैं और मध्य और घुमाव में अठकोन।

उस झगड़े के बाद हिन्दुओं ने मस्जिद के दालान को ले लिया और वहां एक वेदी बनवा दी। अब एक दीवार खींच दी गई है जिससे कि मस्जिद के नमाज़ पढ़ने वाले मुसलमानों और बाहर वेदी पर पूजा करने वाले हिन्दुओं में झगड़ा न हो। वेदी के पासही कनकभवन है जिसे सीता का महल कहते हैं। वहां पर सीताराम की दो प्रतिमाएं प्रधान हैं। भगवान् रामचन्द्र की प्रतिमा को कनक भवन विहारी कहते हैं और यह प्रतिमा अयोध्या की इस ढंग की मूर्तियों में सब से अच्छी नहीं तो उनमें से एक अवश्य है। मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन में यह एक छोटा सा मन्दिर था किन्तु अब टीकमगढ़ बुंदेलखण्ड के महाराज ने बहुत रुपया व्यय करके एक विशाल मंदिर बनवा दिया है।

अब हम प्राचीन नगर के ऐतिहासिक मन्दिर त्रेता के ठाकुर पर आते हैं इसे कूलू (पंजाब) के राजा ने जोकि शायद जनौरा के ठाकुरों के जैसा कि ऊपर कहा गया है पूर्व पुरुषों में से हैं प्राचीन खण्डहरों के स्थान पर बनवाया था और फिर इन्दौर की प्रख्यात रानी अहल्या बाई ने उसमें कुछ सुधार किये थे। कहते हैं कि नौरंगशाह की जो टूटी हुई मस्जिद है वह रामदर्बार के खण्डहरों से बनाई गई थी किन्तु फिर किसी ने इस मन्दिर को नहीं बनाया।

अब हम सरयू के तट पर आते हैं। यहां सब से पहिले पश्चिम की ओर लक्ष्मण जी का मन्दिर या लछमनघाट मिलता है जहां कहते हैं, कि लक्ष्मण जी ने स्वर्गारोहण किया। मन्दिर में जो मूर्ति है वह लक्ष्मण जी के गौरवदन के समान नहीं है किन्तु ५ फुट ऊंची चतुर्भुज रूपधारी काले पत्थर की बनी हुई है। यह एक कुण्ड में मिली थी और माना यह जाता था कि यह काली जी की मूर्ति थी। किन्तु उसके हाथ में एक चक्र है इससे यह अनुभव हुआ हुआ कि वहां लक्ष्मण जी की ही मूर्ति थी। क्योंकि लक्ष्मण धरा के आधार शेष के अवतार हैं और वासुकि भगवान् अवश्य कृष्ण वर्ण हैं। नागपंचमी के अवसर पर अयोध्या के निवासी अन्य किसी नाग की पूजा न करके यहीं भगवान् वासुकि के अवतार लक्ष्मण जी को लावाखीर चढ़ाते हैं।

इस सुन्दर घाट और पत्थर की सीढ़ियों पर चलते हुये, जिन्हें राजा दर्शनसिंह ने बनाया था, हम नागेश्वर नाथ जी के ऐतिहासिक मन्दिर पर पहुँचते हैं। इसी मूर्ति के द्वारा और सरयू के द्वारा विक्रमादित्य ने अयोध्या का पता लगाया था। यह शिव जी की बहुत पुरानी मूर्ति है। कहते हैं भगवान् रामचन्द्र के पुत्र कुश ने इसे प्रतिष्ठापित किया था। उनका हार सरयू में गिर पड़ा था और वह पाताल में चला गया वहां नागलोक के नृप की कन्या ने उसे उठा लिया। महादेव जी इन दोनों में मेल कराने आये थे क्योंकि नाग अधिरोह करना चाहता था और कुश कुपित थे। कुश ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे प्रार्थना की कि वे वहीं रहें और यह उद्घोषित करा दिया कि बिना नागेश्वर नाथ के दर्शन किये किसी भी यात्री को अयोध्या आने का फल नहीं मिलेगा।

नागेश्वर नाथ जी के पास ही उत्तर की ओर गली में एक और अवलोकनीय मन्दिर है वहां एक ही काले पत्थर में चारों भाइयों और सीता जी की मूर्ति है। कहते हैं यही 'जन्मस्थान' की मूर्तियां हैं किन्तु जब बावर ने उसे तोड़ डाला तो हिन्दुओं ने उसे लाकर यहां स्थापित कर दिया।

अब हम फिर सड़क पर आवें तो हमें बहुत से मन्दिर, विक्टोरिया पार्क, धर्महरि की मूर्ति और कुछ बाएं पर पुराना स्कूल जिसे अब महाराज की कचेहरी कहते हैं और जहां मुझे मेरी प्रारम्भिक शिक्षा मिली थी, फिर शीशमहल का मन्दिर मिलता है जिसे मेरे चचेरे श्वसुर राय देवी प्रसाद ने ७५ वर्ष पूर्व बनवाया था।। कोतवाली पहुँचकर कुछ दक्षिण पूर्व (आग्नेय) की ओर चलकर एक बाज़ार जिसे शृंगारहाट कहते हैं और महाराज का महल मिलता है।

महल के दक्षिण की ओर उद्यान में एक सुन्दर शिवालय बना हुआ है जिसे लगभग ७० वर्ष पूर्व राजा दर्शनसिंह ने बनवाया था और वह इसी कारण दर्शनेश्वर के नाम से ख्यात है। अवध गज़ेटियर में इसके संबंध में लिखा है "आजकल अवध में इस ढंग का इससे बढ़कर सुन्दर और कोई स्थान नहीं है। वह महादेव जी का स्थान है। और बढ़िया चुनार के पत्थर का बना हुआ है और बहुत सी मूर्तियां आदि मिर्ज़ापुर में ही बनकर वहां से लायी गयी हैं। मूर्ति नर्मदा के सुन्दर पाषाण की बनी हुई है जिसका मूल्य वहीं २५०) था। संगमर्मर की मूर्तियां जयपुर से लाई गई हैं।

बढ़िया घंटी जो बनी हुई है वह यहीं नेपाल की घंटी को देखकर जो रास्ते में फूट गई थी बनाई गई है। यह स्थानीय कला के लिये प्रशंसनीय बात है।" (Oudh Gazetteer page 12) इस मंदिर के घिराव की दीवार के दक्षिण में खुले मैदान में "तुलसी चौरा" का मन्दिर है यह तुलसीदास जी के वहां ३०० वर्ष पहिले रहने का स्मारक है।

एक मील से कुछ कम की दूरी पर दक्षिण में मणि पर्वत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेनरल कनिंगहम का कथन है कि मणि पर्वत ६५ .फुट ऊंचा टूटी फूटी ईंट और कंकरों का मनुष्यों द्वारा स्वयं निर्मित टीला है। सर्वसाधारण उसे आजकल "ओराझार" "झावाझार" कहते हैं इस से यह मालुम होता है कि राम कोट को बनाने वाले मजदूरों के टोकनों का झाड़न है। जेनरल कनिंगहम का यह कहना है कि यह अशोक का स्तूप है जो २०० .फुट ऊंचा है और वहीं बना हुआ है जहां बुद्धदेव ने अपने ६ वर्ष के निवास में धर्म का आख्यान किया था। उनका अनुमान है-कि नीचे की भूमि शायद बौद्धों के समय के पूर्व की हो और पक्का स्तम्भ अशोक ने बनवाया था। किन्तु फ़ैज़बाद गज़ेटियर के शब्दों में हिन्दू लोग विश्वास करते हैं कि जब लक्ष्मण जी को शक्ति लग गई और हनुमान जी उस शक्ति के घात से लक्ष्मण को बचाने के लिए हिमालय सजीवन मूल लेने गए तो जब वे पर्वत को लेकर लौट रहे थे तो उसका एक अंश यहीं गिर पड़ा था। दूसरा कथन यह भी है कि जब राम कोट के मज़दूर काम कर चुकते थे तो अपने टोकनों का झाड़न यहीं फेंक देते थे जिसका ही ढेर यह मणि पर्वत है।

हम दतूनकुण्ड का वर्णन कर ही चुके हैं दूसरा मनोरंजक स्थान सोनखार है। रघुवंश के पाठकों को मालुम ही है कि रघु को एक ब्राह्मण को विश्वजीत यज्ञ में बहुत सा सुवर्ण देना था यद्यपि उनका कोषागार खाली हो चुका था। उन्होंने ठान लिया कि कुबेर पर चढ़ाई करके उससे इतना सुवर्ण प्राप्त कर लेना चाहिए। भयान्वित कुबेर ने रात्रि में वहां सुवर्ण की वर्षा कर दी।

इसी प्रकार जैन लोग भी अयोध्या को पवित्र मानते हैं क्योंकि वह पांच तीर्थङ्करों की जन्मभूमि थी। इनमें सब से प्रथम, जैन मत के प्रवर्तक आदिनाथ थे। उन्हें ऋषभनाथ, आदि सर्जिद्दल और ऋषभदेव भी कहते हैं। जिन देव का तेरह बार अवतार हुआ था और सबसे अन्त में सूर्य्यवंश में इक्ष्वाकु के कुल में अयोध्या में अवतार हुआ था। उनके पिता का नाम नभि और माता का नाम मिरू था। उनका देहावसान आबू पर्वत पर हुआ था जहां बिमलशाहने २० करोड़ रुपया लगाकर सन् १०३२ में एक मन्दिर बनवाया था जो संसार भरके सुन्दर भवनों या मन्दिरों में से एक है। इन जिनों के द्वतीय पुत्र अजातनाथ, चौथे अभिनन्नदननाथ और पांचवें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन्तनाथ अयोध्या में उत्पन्न हुये थे और पारसनाथ में पञ्चत्व को प्राप्त हुये। आठवें चन्द्रप्रभ चांदरीपुर (साहेत महेत, बहराइच का आधुनिक नाम) में उत्पन्न हुये थे और उनका भी देहावसान पारसनाथ में हुआ था यही हाल चौदहवें अनन्तनाथ का भी हुआ जन्म अयोध्या में और मृत्यु पारसनाथ में। इन पांचो तीर्थङ्करों के मन्दिर अभी भी अयोध्या में हैं जिनका वर्णन नीचे किया जाता है।

सं० १—आदिनाथ प्रथम तीर्थङ्कर का मन्दिर—यह मन्दिर स्वर्ग द्वारा के पास मुराई टोला में एक टीला पर है जहां बहुत सी क़बरें और एक मस्जिद है। वह टीले के आधी दूरी पर है और उसकी कुञ्जी एक मुसलमान के पास रहती है जो निकट ही रहता है इस टीले को शाहजुरां का टीला कहते हैं। इसका यह नाम मक़दूमशाह दूरां गोरी के पीछे चलता है जिसने अयोध्या में आकर पुराने मन्दिर को नष्ट कर डाला था।

सं० २—दूसरे अवतार अजितनाथ का मन्दिर—यह इतोरा सरोवर के पश्चिम में है उसमें एक मूर्ति और एक लेख है। वह सम्वत् १७८१ वि० में बनाया गया था और अब उसके आसपास खेती होती है।

सं० ३—चौथे अवतार अभिनन्दन नाथ का मन्दिर—यह सरायं के पास है और इसमें भी एक शिलालेख है।

सं० ४—पांचवे अवतार सुगन्तनाथ का मन्दिर—यह राम कोट के भीतर है। इस मन्दिर में पारसनाथ जी की दो मूर्तियां हैं। और तीन नेमनाथ जी की। वहां भी एक शिलालेख है जिससे पता लगता है कि मंदिर सं० १७८१ विक्रम में बनाया गया था।

सं० ५—चौदहवें अवतार अनन्तनाथ का मन्दिर—इसमें इनके पदचिन्ह हैं। इसमें भी एक शिलालेख है। यह घाघरा के ऊंचे तट पर गोलघाट नाला के किनारे है यह स्थान बड़ा मनोहर है। (Oudh Gazeteer Vol I page 8·9.) मेरे मित्र और कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथी परीक्षक बाबू पी० सी० नाहर ने मुझे बताया है कि जैन ग्रन्थों में अयोध्या को साकेत और विनिता भी कहते हैं। और उन तीर्थङ्करों के १६ कल्यारणक इस पवित्र नगरी में हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्राचीन नगरी का वर्णन मैं यहीं समाप्त करता हूं। अब यह एक छोटा सा शहर है और न उसका अब कोई राज नैतिक महत्व है और न व्यापारिक। इसके बहुसंख्यक निवासी धार्मिक हिन्दुओं के दान पर निर्भर रहते हैं तथापि आज भी वह उत्तरीय भारतवर्ष के पवित्रतम स्थानों में एक है और हम महाकवि नासिख़ के शब्दों में कुछ बदल कर कह सकते हैं कि—

"ए वाज़े जहां दौलते दीन है नासिन्त।
गो नहीं हुक्म रवां तबा रवां रखते हैं।"

ग्राहकों को आवश्यक सूचना।

ग्राहकों से सूचनार्थ सादर निवेदन है कि अब डाकखाने के नये नियम के अनुसार कोई वेल्युपेबुल (वी. पी.) बिना रजिस्ट्री किये नहीं भेजा जा सकता है। अतः प्रार्थना है कि नवीन वर्ष के मूल्य मध्ये १) मनिआर्डर द्वारा भेज देवें जिसमें पत्रिका वी.पी. से भेजने से व्यर्थ का ।≤) न देना पड़े।

निवेदक
सहायक मंत्री, हि० सा० सम्मेलन, प्रयाग।

बाबू विश्म्भरदयाल ने विश्व प्रेस में छापा प्रकाशक रामकृष्ण शर्म्मा
हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२९.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] भाद्रपद, संवत् १९७९ [अंक १

निज भाषा उन्नति अहै,
सबै उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हिय को सूल ॥

—श्रीभारतेन्दु

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित उत्तमोत्तम पुस्तकें

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित	...	मूल्य ॥=)
२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	...	मूल्य ।=)
३—भारत का इतिहास, प्रथम खण्ड	...	मूल्य १॥)
४—भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड	...	मूल्य २)
५—शिवा बावनी, टिप्पणी सहित	...	मूल्य ≡)
६—सूरदास की विनय पत्रिका	...	मूल्य ।)
७—रहिमन के दोहे टिप्पणी सहित	...	मूल्य -)॥
८—राष्ट्र भाषा	... ...	मूल्य ॥)
९—सरल पिङ्गल	... ...	मूल्य ॥
१०—भारत गीत	... ...	मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] भाद्रपद, संवत् १९७९ [अङ्क १

प्रभु बन्दना

अब के नाथ मोहि उबार।
मग नहौं भव अंबुनिधि में, कृपा सिंधु मुरारि॥
नीर अति गंभीर माया, लोभ लहरति रंग।
लिये जात अगाध जल में, गहे ग्राह अनंग॥
मीन इन्द्रिय अतिहि काटति, मोट अघ सिर भार।
पग न इत उत धरन पावत, उरझि मोह सिवार॥
काम क्रोध समेत तृस्ना, पवन अति झकझोर।
नाहिं चितवन देत तिय सुत, नाम नौका ओर॥
थक्यो बीच बिहाल बिह्वल, सुनो करुनामूल।
स्याम भुज गहि काढ़ि लीजै, सूर ब्रज के कूल॥

—महात्मा सूरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री स्वामी हरिदास की बानी

श्री स्वामी हरिदास जी निम्बार्क संप्रदाय के अन्तर्गत टट्टी संप्रदाय के आद्याचार्य्य थे। आप बड़े ही त्यागी और भगवद्भक्त थे। गानविद्या में स्व॰ तानसेन के गुरु थे। आपने सिद्धान्त के १७ पद तथा केलिमाल (११२ पद) नामक दो ग्रन्थ रचे हैं। ये पद राग रागिनियों में गाये जाते हैं। सिद्धान्त के कुछ पद नीचे दिये जाते हैं—

राग विभास

ज्योंही ज्योंही तुम राखत हौ,
त्योंही त्योंही रहियतु हों हो हरि ॥
और अचिरचै पाइ धरौं,
सु तौ कहौ कौन के पैंड़ भरि ॥
जदपि हौं अपनो भायो कियो चाहौं,
कैसे करि सकौं जो तुम राखौ पकरि ॥
कहि हरिदास पिंजरा के जनावर लौं,
तरफराइ रह्यो उड़िबे कौं कितोउ करि ॥
काहूको बस नाहिं तुम्हारी कृपातें,
सब होय बिहारी बिहारिनि।
और मिथ्या प्रपंच काहे कौं भाषियै,
सो तो है हारनि ॥
जाहि तुमसों हित तासों तुम हित करौ
सब सुख कारनि।
श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी,
प्राननि के आधारनि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग आसावरी

हित तौ कीजै कमलनैन सौं, जा हित के आगे और हित लागै फीको।
कै हित कीजै साधु संगति सौं, जावै कलमष जी को॥
हरि को हित ऐसो जैसो रंग मजीठ, संसार हित कसूंभि दिन दुती को।
कहि हरिदास हित कीजै बिहारी सौं, और न निबाहु जानि जीको॥

तिनका बयारि के बस।
ज्यौं भावै त्यौं उड़ाइ लै जाइ आपने रस॥
ब्रह्मलोक सिवलोक, और लोक अस।
कहि हरिदास बिचारि देख्यो बिना बिहारी नाहीं जस॥

राग बिहाग

गहौ मन सब रस को रस सार।
लोक वेद कुल करमै तजिये भजिये नित्य बिहार॥
गृह कामिनि कंचन धन त्यागो, सुमिरो स्याम उदार।
कहि हरिदास रीति संतनि की, गादी को अधिकार॥

राग आसावरी

हरि के नाम को आलस क्यों करत है रे काल फिरत सर साधैं।
हीरा बहुत जवाहर संचे, कहा भयो हस्ती दर बांधैं॥
बेर कुबेर कछू नहिं जानत, चढ़ो फिरत है कांधैं।
कहि हरिदास कछू न चलत, जब आवति अंत की आंधैं॥

मन लगाइ प्रीति कीजै करवा सौं, ब्रज बीथिन दीजै सोहिनी।
वृन्दावन सौं, वन उपवन सौं, गुंजमाल कर पोहिनी॥
गो गोसुतन सौं, मृग मृगसुतन सौं, और तन नैकु न जोहिनी।
श्रीहरिदासके स्वामीस्यामा कुंजबिहारीसौं, चित्त ज्यों सिरपरदोहिनी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग कल्यान

हरि को ऐसोई सब खेल।
मृग तृस्ना जग व्याप रही है, कहूं बिजोरो न बेल॥
धन मद जोबन मद औ राज मद, ज्यों पंछिन में डेल।
कहि हरिदास यहै जिय जानौ, तीरथ कोसौ मेल॥

झूठी बात साँची करि दिखावत हौ हरि नागर।
निसिदिन बुनत उधेरत ही जात प्रपंच को सागर॥
ठाठ बनाइ धर्‌यौ मिहरी को, है पूरष तें आगर।
कहि हरिदास यहै जिय जानौ, सुपने को सौ जागर॥

लोग तो भूले भले भूलैं, तुम मति भूलौ मालाधारी।
अपनो पति छांड़ि औरनि सौं रति, ज्यों दारनि में दारी॥
स्याम कहत ते जीवन मोतें बिमुख जिन दूसरी करि डारी।
कहि हरिदास जिन्हें जग्य देवता पितरनि कों सरधा भारी॥

जौलौं जीवै तौलौं हरि भजुरे मन, और बात सब बादि।
दिवस चारि के हला भला तू कहा लेइगौ लादि॥
माया मद गुनमद जोबन मद, भूल्यौ नगर बिवादि।
कहि हरिदास लोभ चरपट भयो काहे की लागै फिरादि॥

प्रेम समुद्र रूप रस गहिरे कैसे लागै घाट।
बेकार्‌यौ दै जानि कहावत जातिपनों की कहा परी बाट॥
काहू को सर परै न सूधो, मारत गाल गली गली हाट।
कहि हरिदास बिहारिहिं जानौ, तकौ न औघट घाट॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदनाष्टक

कविवर अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना (रहीम) ने "मदनाष्टक" नाम की खड़ी बोली और ब्रजभाषा मिश्रित एक पुस्तक लिखी थी। इसमें केवल आठ छन्द हैं। अब तक "कलित ललित माला वा जवाहर जड़ा था" आदि एक ही छन्द देखने में आया है। शिवसिंह सरोज, मिश्रबन्धु विनोद और कविता कौमुदी में यही छन्द उद्धृत किया गया है। प्रयाग निवासी हमारे मित्र श्री० पं० वामनाचार्य्य गोस्वामी ने मदनाष्टक के साढ़े छह छन्द भेजे हैं। डेढ़ छन्द का पता नहीं। हम श्रीगोस्वामी जी को धन्यवाद देकर उन छन्दों को नीचे प्रकाशित करते हैं—

कलित ललित माला वा जवाहर जड़ा था।
चपल चखन वाला चांदनी में खड़ा था॥
कटि तट बिच मेला पीत सेला नवेला।
अलि बन अलबेला यार मेरा अकेला॥ १॥

द्रग छकित छबीली छैलरा की छरी थी।
मनि जटित रसीली माधुरी मूंदरी थी॥
अमल कमल ऐसा खूब ते खूब देखा।
कहि न सकत जैसा श्याम का हस्त देखा॥ २॥

कठिन कुटिल कारी देख दिलदार जुलफैं।
अलि कलित निहारी आपने जी की कुलफैं॥
सकल शशि कला को रोशनी हीन लेखौं।
अहह! ब्रज लला को किस तरह फेर देखौं॥ ३॥

जरद बसन वाला गुल चमन देखता था।
झुक झुक मतवाला गावता रेखता था॥
श्रुतिजुग चपला से कुंडले झूमते थे।
नयन कर तमासे मस्त ह्वै घूमते थे॥ ४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरल तरन सी हैं तीर सी नोकदारैं।
अमल कमल सी हैं दीर्घ हैं दिल बिदारैं॥
मधुर मधुप हेरैं मान मस्ती न राखैं।
बिलसित मन मेरे सुन्दरी श्याम आंखैं॥ ५ ॥

भुजँग जुग किधौं हैं काम कमनैत सोहैं।
नटवर, तव मोहैं बाँकुरी मान भौहैं॥
सुन सखि, मृदु बानी बे दुरस्ती अकिल में।
सरल सरल सानी कै गयी सार दिल में॥ ६ ॥

पकरि परम प्यारा सांवरे को मिलाओ,
असल अमृत प्याला क्यों न मुझको पिलाओ?

× × × × ×

—वियोगी हरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्राकृत् साहित्य

[ले० श्री० पं० राधाचरण गोस्वामी]

न यद् वचश्चित्र पदं हरेर्यशो,
जगत् पवित्रं प्रगृणीत कर्हिचित् ।
तद्वायसन्तीर्थ मुशन्ति मानसाः,
न यत्र हंसाः निरमन्त्युशिक्तयाः ॥ १ ॥

साहित्य प्राकृत और अप्राकृत भेद से दो प्रकार का है। मनुष्य विषयक कविता प्राकृत, और भगवद्-विषयक काव्य अप्राकृत कहे जाते हैं। श्रीहर्ष, कालिदासादि प्रायः प्राकृतों काव्य के आचार्य्य हैं, जयदेव, माघ, श्री रूप गोस्वामी आदि अप्राकृत काव्यों के कर्त्ता हैं। जिस समय वंग भूमि में श्रीकृष्ण चैतन्य देव ने अपना कार्य्य आरम्भ किया था, उस समय अप्राकृत काव्य का प्रायः अभाव था। संस्कृत में श्री गीत गोविन्द और विल्वमंगल का कृष्ण कर्णामृत अथवा दो चार स्तोत्रों से अधिक कोई अप्राकृत ग्रन्थ न था। काव्य के विना प्रचार कार्य्य कठिन था। तब श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु ने अपने कृपा कटाक्ष से अप्राकृत कवि उत्पन्न किये। उनका संक्षिप्त परिचय नीचे लिखा जाता है।

१। श्री रूप गोस्वामी—मुर्शिदाबाद के निकट रामकेलि ग्राम में ब्राह्मण कुल में आप का जन्म हुआ। आपके बड़े भाई सनातन गोस्वामी थे। दोनों बादशाह के दर्बार ख़ास थे। श्री महाप्रभु के उपदेश से गृहस्थाश्रम छोड़ कर श्री वृन्दाबन वास किया। आप के निम्नोक्त अप्राकृत काव्य हैं जो श्रीकृष्ण लीला समुद्र के रत्न हैं।

(१) विदग्ध माधव नाटक (२) ललित माधव नाटक (३) दानकेलि कौमुदी (भाणिका) (४) भक्ति रसामृत सिन्धु (५) उज्ज्वल नील मणि (६) स्तवमाली (७) हंसदूत (८) उद्धव सन्देश (९) पद्यावली।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य में सत्य का स्वरूप

[लेखक—श्रीयुत नवीनचन्द्र]

साहित्य में कभी कभी कला का एक ऐसा आदर्श निर्मित होता है जो सत्य का विरोधी माना जाता है। उसी प्रकार सत्य का भी एक ऐसा रूप है जो कला का विरोधी है। कहा तो यह जाता है-सत्यं शिवं सुन्दरम्—जो सत्य है वही कल्याणकारक है और उसी में सौन्दर्य का यथार्थ स्वरूप विद्यमान है। परन्तु सत्य का स्वरूप सदैव सौन्दर्य-पूर्ण और श्रेयस्कर प्रतीत नहीं होता। संसार में ऐसी अनेक घटनायें होती हैं जिन्हें देखकर भी हम देखना नहीं चाहते। जब समाज में अनाचार फैल जाता है तब पाप की वीभत्स लीलायें दृष्टिगोचर होती हैं। परन्तु उन्हें साहित्य में अक्षयरूप देने का साहस कौन करेगा। उनकी सत्यता में किसी को सन्देह नहीं है पर उनमें सभी सौन्दर्य का कल्याणमय रूप नहीं देखते। यही नहीं, किन्तु अधिकांश लोग ऐसे दृश्यों पर पर्दा डाल देना चाहते हैं। वे यथार्थ जगत् से दूर रह कर एक कल्पित राज्य में विहार करना चाहते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कला को मानव-जीवन से पृथक् कर एक अलौकिक रूप देना चाहते हैं। संसार में चाहे वर्षा हो अथवा ग्रीष्म, उनके लिए सदैव वसन्त बना रहता है। वे अपनी कल्पना द्वारा भग्न कुटीर को सौन्दर्य-भवन बना डालते हैं, परन्तु उस कुटीर में जिन दरिद्रों का दुःख-मय जीवन व्यतीत होता है उन पर ऐसे कला-मर्मज्ञों की दृष्टि नहीं जाती। कुछ लोग सत्य के अनुसन्धान में ऐसे व्यग्र रहते हैं कि वे मनुष्य के भाव-जगत् को मिथ्या मान कर बाह्य जगत् में ही सत्य को परिमित कर डालते हैं। साहित्य में, सत्य और कला में जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध है उसका कारण है श्रेय और प्रेय की समस्या। अधिकांश लोगों की यही धारणा है कि जो प्रेय है वह श्रेय नहीं और जो श्रेय है वह प्रेय नहीं। अतएव जो लोग 'प्रेय' पथ के पथिक हैं वे कहते हैं कि कला में 'सु' और 'कु' की विवेचना नहीं करनी चाहिये। A thing of beauty is a joy for ever. जो लोग 'श्रेय' पथ के पथिक हैं वे ऐसे सौन्दर्य की ओर संशयालु रहते हैं। उनका कहना होता है कि कला मनुष्य को उन्नत करने के लिए है; अतएव सौन्दर्य वही है जो मनुष्य के लिए श्रेयस्कर है। 'सु'-विहीन सौन्दर्य हो नहीं सकता है। यदि 'सु'-विहीन होकर कोई कला चित्ताकर्षक है तो वह 'कु' है। वह मनुष्य के लिए अहितकारी है। हिन्दी में पुस्तकों के विषय में लोग अपनी राय तो दे डालते हैं, परन्तु हम अभी तक यह नहीं समझ सके हैं कि लोग किस कसौटी से पुस्तकों की परीक्षा करते हैं। यदि हम हिन्दी के किसी समालोचक के पास इब्सन अथवा उन्हींके किसी अनुयायी के ग्रन्थ समालोचनार्थ भेजें तो सम्भव है कि उसमें मनुष्य-जीवन के अन्धकारमय अंश का चित्र देख कर वे उसे अच्छा न समझें। परन्तु यही लोग जब बिहारी के दोहों की समालोचना करते हैं तब वे उन दोहों में शिक्षादायक अंश ढूँढने का प्रयत्न नहीं करते। नाटक अथवा उपन्यास में किसी पात्र की चरित्रहीनता पर उन्हें बड़ा क्षोभ होता है, पर बिहारी के सभी दोहों में सदाचार की शिक्षा कूट कूट कर नहीं भरी है। तो भी आजतक किसी समालोचक ने उनको तिरस्कृत नहीं किया है। दोहों में कला का उत्कृष्ट निदर्शन हुआ है, परन्तु पात्र के चरित्र-चित्रण में मानव-जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण होने पर सदाचार का संहार हो जाता है और कला निकृष्ट हो जाती है। इसीलिए आज हम यह विचार करना चाहते हैं कि कला की उत्तमता है क्या? क्या सत्य का स्वरूप प्रकट करने में ही कला की उत्तमता है? यदि यही बात है तो सत्य का स्वरूप है क्या? यदि सौन्दर्य-बोध से कला की उत्पत्ति होती है तो क्या सौन्दर्य और सत्य में विरोध है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य में काव्य और विज्ञान के कार्यक्षेत्र पृथक् पृथक् मा जाते हैं। कहा जाता है कि काव्य का कार्य-क्षेत्र है सौन्दर्य औ विज्ञान का सत्य। काव्य की गणना कला में की जाती है। कीट्स का कथन है कि Truth is beouty सत्य सुन्दर है। यदि यही बा हो तो काव्य और विज्ञान का कार्यक्षेत्र एक ही हो जाय। पर य सौन्दर्य है क्या वस्तु ? क्या यह भीतर है या बाहर, वस्तुगत है य मन की अवस्थामात्र है ? हम कहा करते हैं कि गुलाब सुन्दर है चन्द्रज्योत्स्ना सुन्दर है, कामिनी सुन्दरी है तब तो हम सौन्दर्य को वाह्य वस्तु में ही आरोपित करते हैं। परन्तु यदि सौन्दर्य वाह वस्तु का गुण है तो एक ही वस्तु के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न मनुष्यों की भिन्न भिन्न धारणाएँ क्यों होतीं? भारतीय कवि काले बाल औ काली आंखों की तारीफ़ करते हैं और पाश्चात्य कवि सुनहले बाल और नीली आंख पर मुग्ध हैं। चीनी छोटे पैर और चपटी नाक मं ही सौन्दर्य की पराकाष्ठा देखते हैं। कोई तन्वीश्यामा का उपासक है तो कोई तप्तकाञ्चनवर्णाभा का। जाति जाति की रुचि में भेद है, मनुष्य मनुष्य की रुचि में विचित्रता है। इससे यही प्रमाणित होता है कि विभिन्न अवस्थाओं में मनुष्यों की सौन्दर्य वृत्ति में भी भिन्नता आ जाती है। सौन्दर्य के आधार के सम्बन्ध में मत-भेद अवश्य है। तो भी सौन्दर्य की मूल भावना के सम्बन्ध में कोई मत-भेद नहीं है। सुन्दर कहने से सभी लोगों के मन में एक ही भाव उदित होता है, यद्यपि लोग अपने अपने संस्कारों के अनुसार उसके भिन्न भिन्न रूपों को कल्पना कर लेते हैं। वह भाव है आनन्द का। यह आनन्द तीन प्रकार का होता है। शारीरिक सौन्दर्य से शारीरिक आनन्द होता है। हृदय के सौन्दर्य से हृदय प्रफुल्लित होता है। उसी प्रकार आत्मा के सौन्दर्य से आत्मानन्द का अनुभव होना चाहिए।

कला में, कवि के काव्य और शिल्पी के शिल्प में, सौन्दर्य की यही तीनों अवस्थायें दृष्टि-गोचर होती हैं। जिस कला में शारीरिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति है उससे शारीरिक आनन्द होगा। जिस में मानसिक सौन्दर्य स्फुट हुआ है उससे मानसिक आनन्द की उप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लब्धि होगी। जिसमें सौन्दर्य की चरम सीमा है उसमें सत्य का भी अन्तिम रूप है। वह है आत्मा की अभिव्यक्ति। जिसमें आत्मा का यथार्थ रूप परिलक्षित होगा वही सर्वश्रेष्ठ कला समझी जायगी।

मनुष्य केवल शरीर नहीं है और न मन ही है। पर शारीरिक और मानसिक अवस्थाओं के द्वारा उसके यथार्थ रूप का विकास होता है। जिन अवस्थाओं को अतिक्रमण करने से आत्मिक विकास होता है वे कला के उपकरण हैं। दैनिक जीवन में मनुष्य का प्रतिक्षण जो उत्थान-पतन है वह कला के लिए उपेक्षणीय नहीं है क्योंकि उन्हीं क्षणिक जीवनों में होकर उसका अनन्त जीवन विकसित होता है। संसार में जितनी घटनायें होती हैं वे सभी मानव-जीवन से सम्बद्ध हैं। यही घटनायें सत्य की भिन्न भिन्न अवस्थाओं को सूचित करती हैं। अतएव ये सभी कला के कार्यक्षेत्र में आ सकती हैं। कला मानव-जीवन से पृथक् नहीं की जा सकती है। जहां मानव-जीवन की सम्पूर्णता उपलब्ध हो वहीं कला की सार्थकता है। तब कीट्स का यह कथन सार्थक हो जाता है कि सत्य सौन्दर्य है और सौन्दर्य सत्य है। पापों की भीषण लीलाओं में भी हम मनुष्य के अन्तर्जगत का द्वन्द्व-युद्ध देखते हैं। लेडी मेकवेथ के अन्धकारमय हृदय में पितृ-स्मृति की क्षीण रेखा देख कर हम जान सकते हैं कि अज्ञान के तमिस्रा-जाल में आत्मा का नाश नहीं हो सका है। उसका उज्ज्वलतम रूप अन्त में प्रकट अवश्य होता है, चाहे इसके लिये उसको अनेक अवस्थाओं को अतिक्रमण क्यों न करना पड़े।

साहित्यिक ग्रन्थों की समीक्षा में हम कला-सौष्ठव का विचार करते हैं। विहारी के समान कवियों ने अपनी कला में सौन्दर्य का जो अंश दिखलाया है उस पर हमारी दृष्टि नहीं जाती। हम केवल उन साधनों पर विचार करते हैं जिसको कवि ने अपनी कला की अभिव्यक्ति के लिये प्रयुक्त किया है। हमारी समझ में हिन्दी में अभी तक कला की परीक्षा के लिए यही विचार पर्याप्त समझा गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। हिन्दी साहित्य के जो मर्मज्ञ विद्वान हिन्दी के रस-सागर में गोता मारते हैं उन्हें सागर के अन्तस्तल से रत्न लाते हुए हमने तो नहीं देखा, कभी कभी कीचड़ उछालते हुए अवश्य देखा है। यदि कला की यथार्थ समीक्षा की जाय तो हम जीवन का रहस्य जान जाँय। अस्तु।

हमने अब देख लिया कि कला और सत्य में विरोध नहीं है। सत्य में ही कला की सार्थकता है पर कल्पना के साम्राज्य में सत्य का स्वरूप निश्चित करते समय लोग बहुधा भ्रम में पड़ जाते हैं। दादी ने एक कहानी आरम्भ की—किसी देश में एक राजपुत्र रहता था। मास्टर ने कहा, यह बिलकुल गप्प है, सच है चार पंचे बीस। पण्डितजी ने सावित्री-सत्यवान का आख्यान सुनाया। इतिहास-वेत्ता ने आकर कहा—इसके लिए कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं, अतएव यह मिथ्या है। सच यह है कि अकबर की मृत्यु १६०५ में हुई। पुरोहित जी से जितने पौराणिक आख्यान सुने थे उनकी निस्सारता किसी विज्ञान-वेत्ता ने सिद्ध कर दी। इनके लिए वाह्य जगत् की घटनायें ही सच हैं। परन्तु इन आख्यानों में सत्य है मनुष्य-जीवन। ऐतिहासिक और वैज्ञानिक सत्यों की भी सार्थकता उसी मनुष्य-जीवन के कारण है। मनुष्य-जीवन में सुख-दुःख, आशा-निराशा, ईर्षा-द्वेष, हर्ष-ग्लानि आदि भावनायें उतनी ही सच हैं जितनी अकबर की मृत्यु।

अब विचारणीय यह है कि सत्य का स्वरूप क्या है। इसके लिए हम पहले एक परीक्षा करलें। अग्नि को अग्नि मानना सच है। परन्तु यदि हम अग्नि को जल मानलें तो इस मिथ्या ज्ञान का फल यह होगा कि हम अग्नि को निर्भय हो कर छूलेंगे और उससे जल जावेंगे। मतलब यह कि मिथ्या ज्ञान अनिष्टकर है। जो कल्याणकारी है वही ज्ञान सच है। जिससे आनन्द की उपलब्धि हो वही सत्य है। आनन्द का संकुचित अर्थ हमें नहीं लेना चाहिये। जैसा हम ऊपर कह आये हैं आनन्द की तीन अवस्थायें हैं, शारीरिक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक और आत्मिक, अतएव सत्य सौन्दर्य है, आनन्दमय है और श्रेयस्कर है।

साहित्य में सत्य का यह सिद्धान्त मान लेने से पुस्तकों की परीक्षा के लिए सब से अच्छी कसौटी मिल जायगी। कालिदास विद्वानों के परितोषमात्र से सन्तुष्ट हो जाते थे। परन्तु साहित्य की इस परीक्षा में हमें जनता की ओर भी ध्यान देना पड़ेगा। जो ग्रन्थ सब से अधिक लोगों के लिए सब से अधिक श्रेयस्कर है वही श्रेष्ठ ग्रन्थ है क्योंकि उसीमें सत्य का यथार्थ रूप परिलक्षित होगा। वह रूप है सत्यं शिवं सुन्दरम्।

सभापति का अभिभाषण

[ले०—श्रीयुत वियोगी हरि]

हौर के द्वादश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति श्रीमान् पंडित जगन्नाथ प्रसाद जी चतुर्वेदी का भाषण। प्रकाशक—चतुर्वेदी भोलानाथ शर्मा ६०, सीताराम घोष स्ट्रीट, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या ७४.

श्री चतुर्वेदी जी की साहित्य सेवा से कौन हिन्दी भाषाभाषी अपरिचित होगा? आप को भाषा का जौहरी, उपज और सूझ का उस्ताद अथवा युक्तिपूर्ण गंभीर हास्य का अवतार कहें, तो अत्युक्ति न होगी। आप को सदा से हिन्दी पर प्रेम है। गन्दी हिन्दी तथा अंटसंट साहित्य के आप कट्टर शत्रु हैं। हिन्दी लिंग विचार एवं विभक्ति प्रत्यय से आप के भाषा विज्ञान का पर्य्याप्त पता चलता है। अस्तु।

लाहौर के अधिवेशन के अवसर पर आपने अपने अभिभाषण में कई बड़े मार्के की बातें कही हैं। तृतीय, पंचम और षष्ठ साहित्य सम्मेलन के सभापतियों की वक्तृता को छोड़ कर ऐसी ओजस्विनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सारगर्भिता वक्तृता किसी की नहीं हुई। किसी किसी अंश में यह अभिभाषण अपूर्व ही होगया है। पंजाब में हिन्दी साहित्य की सेवा, हिन्दी की वर्तमान दशा, भीतरी दशा, हिन्दी में बिन्दी, वर्ण-विन्यास, कोष, व्याकरण, लिंग विचार, वचन, विभक्ति, वाक्य रचना, शैली, बेमेल शब्द, उल्था, अशुद्ध शब्द, अशुद्ध सन्धि, असंस्कृत शब्द, फालतू शब्द, अनुपयुक्त शब्द, पद्य, शिक्षा, सम्मेलन आदि पर इस भाषण में जोरदार शब्दों में विचार किया गया है। वर्तमान हिन्दी की दुर्दशा जैसी कुछ हो रही है, उसे देख कर आंखों में आंसू आ जाते हैं। मन गढ़न्त सांचों में ढले हुए इन रँगरूटों की बाढ़, समय पर यदि न रोकी जायगी तो हमारा साहित्य न केवल गंदा ही वरन् मृतप्राय हो जायगा। संस्कृत की अनभिज्ञता, विषय का अनध्ययन तथा निरंकुशता के कारण केवल लेखक बनने की लालसा से ये साहित्य-हत्यारे हिन्दी का जैसा गला घोंट रहे हैं, वह किसी से छिपा नहीं है। क्या शब्दों के उपयोग में, क्या शैली की गढ़न्त में, क्या छन्दों के चुनने में, क्या विषय के विचार में दिन दहाड़े घर जानी मन मानी हो रही है। प्रति लेखक अपना एक नया school स्थापित कर रहा है। हर एक अपने को आदर्श बना रहा है। सभापति जी के शब्दों में—"कोई किसी की नहीं सुनता। नाई की बरात में सबी ठाकुर हो रहे हैं। ऐसी अवस्था में आलोचना की अत्यधिक आवश्यकता है। यदि समालोचक माली साहित्य वाटिका में काट छाँट न करे, तो गुलाब को धतूरे दबा लेंगे, इसमें संदेह नहीं।" गुलाब को धतूरे दबा ही रहे हैं। कभी कभी हमारे अभागे कानों में यह ध्वनि आती है—'साहब! जो आनन्द प्रिय-प्रवास, भारत-भारती या पथिक के पढ़ने में आता है, वह सूर, केशव या विहारी में कहाँ? पहले के कवि शृंगार में ही डूबे रहते थे, अब हो रहा है सच्चे साहित्य का विकास!' ठीक! यदि विकास का अर्थ अपने मूलतत्व का सर्वथा नाश है, तो निःसंदेह साहित्य का पूर्ण विकास हो रहा है। इसी अभिभाषण की आलोचना करते हुए साहित्य-संपादक श्री० पं० छविनाथ पाण्डेय ने लिख मारा है—"कोई कारण नहीं कि हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही पुरानी लकीर पीटते जाँय और नये २ छन्दों का समावेश कर क्षेत्र को और भी विस्तीर्ण न करें। ब्रजभाषा के लिए आंसू बहाना व्यर्थ है। ब्रजभाषा के दिन गये। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना है। यदि हम उसी पुरानी लकीर के फकीर बने रहेंगे और किसी तरह की गुंजाइस के लिए तैयार न होंगे, तो संदेह ही है कि हिन्दी को अपनाने में लोग अधिक उत्साह दिखावेंगे।"

श्रीमान् पाण्डेय जी। माफ़ कीजियेगा, आपने यह दलील कहां से पेश की है? हमें तो इस में कुछ सार नहीं दिखायी पड़ता, माना कि पुरानी लकीर न पीटनी चाहिए पर नयी लकीर का भी कोई ठीक ठिकाना होना चाहिए।

दुबिधा में दोऊ गये, माया मिली न राम।

आप पुरानी लकीर से तो हाथ धो ही बैठे। रही नयी लकीर, सो उसका वास्तविक रूप अभी तक निश्चित नहीं हुआ। अप्रत्यक्ष रूप से आप लोग भारतीय साहित्य को योरोपीय लिबास पहनाना चाहते हैं। क्या हमारे यहां छन्दों की कमी है, जो नयी गढ़न्त की जाय? बेतुकी ही हांकनी है, तो गद्य में हांकते जाइए, क्यों खाँ-मुखाँ पद्य को बदनामी उड़ा रहे हैं। ब्रजभाषा के लिए आँसू बहाना साहित्य-रसिकों का काम है, सब का नहीं। अहा!

मन चलि जात अजौ वहै वा जमुना के तीर।

साहित्य के अंगों की जितनी पुष्टि ब्रजभाषा ने की है और कर सकती है, उतनी और किस से होनी संभव है? यह बात समझ में नहीं आती कि बेचारी ब्रजभाषा हिन्दी के राष्ट्रभाषा के होने में क्या अड़चन डालेगी? हमारा प्रयोजन यह तो है नहीं कि ब्रजभाषा के पद्यों द्वारा राष्ट्रीय कचहरियों में काम चलाया जाय। हिन्दी या हिन्दुस्तानी राष्ट्रीय कार्यों में रहेगी, वहाँ ब्रजभाषा का क्या काम है? किन्तु कविता के काम में यदि ब्रजभाषा का थोड़ा बहुत आदर बना रहे तो आज कल के महारथी क्यों रुद्र नेत्र खोल रहे हैं? श्री चतुर्वेदी जी का खड़ी बोली से कोई विरोध नहीं, जैसा कि उन्होंने अपने भाषण में कहा है, किन्तु यह अवश्य है कि कविता की भाषा और बोल चाल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा एक नहीं हो सकती। सभी देशों में सदा से अंतर रहा है और रहेगा। फिर सबसे बड़ी कमी तो यह है कि आज कल के कवि और लेखक अपने लेख्य विषय में बिना तन्मय हुए ही धन या यश लोभ से नीरस और गन्दे साहित्य का प्रचार कर रहे हैं।

शैली के सम्बन्ध में सभापतिजी ने निम्न लिखित वाक्य बहुत ही उपयुक्त कहा है—'मेरी समझ से विषय के अनुकूल भाषा होनी चाहिए।' पर क्या ऐसा होता है? कोई हो भद्र भावोद्गामिनी हे भारती, हे भवगते' को तथा कोई 'मैं इसके लिये धन्यवाद देता हूं और मुबलिग़ ५) का नोट आप की सेवा में इर्साल करता हूं' आदि वर्णसंकरी को ही बोल चाल की सुमधुर भाषा मानते हैं।

शिक्षा के सम्बन्ध में आप का कथन है कि 'देशीय भाषा ही शिक्षा का स्वाभाविक साधन है। शिक्षा का माध्यम हिन्दी होना चाहिये।' हम इस बात में सोलह आने सहमत हैं। जब तक शिक्षा का माध्यम देशीय भाषा न होगा, लड़के सिवा रट्टू टट्टू बन जाने के भिन्न २ विषयों में जानकारी लाभ न कर सकेंगे। और ऐसा होता भी है। कितने ग्रेज्युएट विज्ञान या दर्शन के वास्तविक अभिज्ञाता वा आविष्कर्त्ता निकले? इस बात पर साहित्य संपादक जी चौकन्ना हो कर पूछते हैं—'वर्तमान दशा में हिन्दी को माध्यम बना कर क्या हमारा काम चल सकता है?' आपका यह भी कहना है कि अभी हिन्दी में सभी प्रकार के ग्रन्थ नहीं मिलते हैं पाठ्यक्रम कैसे बनाया जायगा। हम कहते हैं कि उन अनावश्यक विषयों का पढ़ाना अनिवार्य्य क्यों रखा जाय, जिससे हमें न तो राष्ट्रीय, न सामाजिक और न धार्मिक लाभ पहुँचे।' जबरदस्ती ऐसे विषयों का दिमाग़ में ठूंसना अत्याचार नहीं तो क्या है। हाँ, अभी हमारी भाषा उतनी परिपुष्ट नहीं हुई जितनी कि चाहिए, पर इसका यह अर्थ नहीं कि हम हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने से जी चुरावें। सभापति जी को शिक्षा के सम्बन्ध में और भी अधिक खोज के साथ लिखना चाहिये था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के सम्बन्ध में सभापति जी ने सन्तोष प्रकट किया है। आपने प्रचार के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए इस बात पर ज़ोर दिया है कि सम्मेलन को प्राचीन साहित्य ग्रन्थों का उद्धार करना चाहिए। अवश्य, सम्मेलन का यह मुख्य कर्त्तव्य है। यदि सम्मेलन सरीखी साहित्यिक संस्था ही इस महान् कार्य को न अपनायगी तो एक न एक दिन हमारे बहुमूल्य प्राचीन साहित्य का लोप हो जाना अवश्यम्भावी है। कम से कम साल भर में १० साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित होनी चाहिए।

आपने बड़ी ही उत्कण्ठा से कहा है—'मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह सम्मेलन हिन्दी भाषा का फ्रेंच एकेडेमी French Academy बने।' एवमस्तु।

आप लिखते हैं—'तुलसीदास, सूरदास हरिश्चन्द्र, प्रताप नारायणादि के जन्मोत्सव के अतिरिक्त होली, दिवाली, दसहरा वसंत-पंचमी आदि त्योहारों पर भी साहित्य-सेवियों का समारोह करना चाहिए। इससे जागति और साहित्य की वृद्धि होती है। प्रचार से यह काम अधिक उपयुक्त और उचित प्रतीत होता है। आशा है, सम्मेलन इन सूचनाओं पर विशेष ध्यान देगा।'

ज़रूर देना चाहिए। प्रचार कार्य में सम्मेलन बहुत कुछ सफल हो चुका है। अब मद्रास आदि प्रांतों को अपने पैरों खड़ा हो जाना चाहिए। और सम्मेलन को साहित्य-वर्द्धन की ओर ध्यान लगाना चाहिये। प्रचार और साहित्य-निर्माण दोनों एक ही वस्तु के अंग हैं। एक की उन्नति दूसरे पर निर्भर है।

उपसंहार में पंजाब निवासियों से आपने बड़े ही हृदयस्पर्शी शब्दों द्वारा हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिए अपील की है। आप ने कहा—"आइयो, हिन्दी माता करुणा भरी दृष्टि से पंजाब की ओर देख रही है। क्या आप लोग उसका दुःख दूर न करेंगे! अवश्य करेंगे।"

अन्त में स्वरचित मंगलकामनामयी कविता दी गयी है, जो उच्च भावों से भरी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें पूर्ण विश्वास है कि प्रत्येक हिन्दी-साहित्य-सेवी श्री चतुर्वेदी जी के भाषण को प्रेमपूर्वक पढ़ेगा और उनके निर्दिष्टमार्ग पर चलने की यथेष्ट चेष्टा करेगा।

कविराय

[ले०—श्रीयुत मुंशी देवीप्रसाद जी मुंसिफ़]

कविता की क़दर मुसलमान बादशाहों में भी थी। वे भी कवियों का मान सम्मान कर के उनको कविराय, महा कविराय, कवींद्र, पात्र, महापात्र और महा महापात्र की पदवी देते थे। उनकी कविता सुन कर ही नहीं राज़ी हो जाते थे, परन्तु उनसे राज काज में भी सहायता लेते थे। सम्राट् अकबर ने अपने कविराय को उड़ीसे के राजा मुकुन्दराय के पास भेजा था और उसके वाक्य-चातुर्य से राजा को इस बात पर राज़ी किया था कि जब सम्राट् उधर से बंगाले के पठानों से लड़ने को आवेंगे तो राजा इधर से उन पर चढ़ाई करेंगे।

सम्राट् शाहजहां की बीमारी में जब उनके बेटे बंगाल, दक्खिन और गुजरात से विना हुक्म आगरे को आते थे और सम्राट ने बड़े शाहज़ादे दारा शिकोह के कहने से उनके रोकने को फ़ौज़ भेजी, तो जोधपुर के बड़े महाराजा जसवन्तसिंह को औरंगजेब के रोकने का भार दिया गया था। उन्होंने उज्जैन में पहुंचकर रास्ता रोका और औरंगज़ेब को आगे बढ़ने से टोका, तब औरंगज़ेब ने अपने कविराय को महाराज के समझाने के लिये भेजा था।

कविराय, महा कविराय, कवींद्र, पात्र, महापात्र और महा महापात्र की पदवी किस किस सम्राट् ने किस किस कवि को दी थीं और उसका क्या हाल उस सम्राट् के इतिहास में लिखा है, यह हम अगले लेख में लिखेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूपति कवि

[ले०—श्रीयुत लाला भगवान दीन]

न्दी साहित्य के विषय में जब कोई गड़बड़ हमारी दृष्टि में आती है, तब हमें बड़ा दुःख होता है। भूपति कवि के विषय में भी आजकल बहुत भ्रमजनक सम्मति फैली हुई है। इस भ्रम के फैलाने में दो पुस्तकों ने विशेष सहायता दी है। एक मिश्रबन्धुओं के 'विनोद' ने, दूसरे 'हिन्दी फाइनल रीडर' ने। 'मिश्र बन्धु-विनोद' (भाग पहला, पृष्ठ २३६) में लिखा है :—

"चन्द और जल्हन के पीछे का सब से प्रथम ग्रन्थ जो अब मिला है वह भूपति कवि कृत भागवत दशमस्कन्ध का अनुवाद है। ....इसकी रचना संवत् १३४४ में हुई।"

मिश्रबन्धुओं ने जो इस ग्रन्थ के उद्धरण दिये हैं, वे यों हैं :—

ताको तुम कीजो जो जानो। एतनो बचन हमारो मानो॥
जबइ अवीची बहनोइ कहो। कंस वहींनी मारने रहो॥
करो कोट राखे तन दोऊ। तिन ढिग जान न पावै सोऊ॥
दूनों के पग बेरी डारी। चौ दुदीस चौकी बैठारी॥

सम्बत तेरह सै भये चारि अधिक चालीस।
मरगेसर सुद एकादशी बुद्धबार रजतीस॥
दिस पुनीत भे पुरन लावो पुरान।
जो हेत सों गावै सुनै पावै पद ञीबान॥

हिन्दी फाइनल रीडर के पृष्ठ ३९ में लिखा है :—

रासो के पीछे दूसरा ग्रन्थ जो अब मिला है वह भूपति कृत भागवत दशमस्कन्ध का अनुवाद है। इसकी रचना सन् १२८७ में हुई जिससे जान पड़ता है कि भूपति का जन्म सन् १२५० के आस पास हुआ होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पुस्तक में कविता का वही उद्धरण ज्यों का त्यों दे दिया गया है, केवल दो शब्दों में दुरुस्ती की गई है एक तो 'चौदुदीस' को 'चौहुदीस' बनाया है दूसरे 'रजतीस' को 'रजनीस' किया गया है।

'विनोद' में मिश्रबन्धुओं ने इनकी कविता पर एक नोट भी जड़ा है। आप कहते हैं :—

"इसको कविता बहुत साधारण है। फिर भी इसकी भाषा वर्त्तमान हिन्दी और चन्द की भाषा दोनों के बीचवाली समझ पड़ती है। इसमें छन्दोभङ्ग बहुतायत से है।"

ऐ कुर्बान इस परख पर! ज़रूर सच्ची परख है। भूपति की भाषा न तो १२ वीं सदी के पहले की है, न बीसवीं सदी के बाद की हो सकती है। कविता अवश्य साधारण है, क्योंकि यह कोई स्वतन्त्र काव्य नहीं है। केवल सर्व साधारण के उपकार के लिये भागवत का अनुवाद किया गया है। अनुवादों में विशेष चमत्कार नहीं होता।

रही बात छन्दोभङ्ग की सो हमें तो ऐसा जान पड़ता है कि 'बन्धुगण' पुस्तक को पढ़ ही नहीं सके।

विचार करने की बात है कि जो व्यक्ति भागवत का छन्दबद्ध अनुवाद लिखने बैठेगा वह साधारण विद्वान न होगा। ज़रूर कुछ योग्यता रखता होगा। हमें भूपति कवि का यह ग्रन्थ हाल में देखने को मिला। ग्रन्थ उर्दू अक्षरों में लिखा है। सम्पूर्ण है। इतनी शुद्ध-भाषा और शुद्ध छन्दरीति है जितनी कि हो सकती है। कहीं भी रंचमात्र छन्दोभङ्ग नहीं है। कवि ने अपना, अपने गुरु का, अपनी जाति तथा निवास स्थान का तथा ग्रंथ निर्माण स्थान और प्रणयन काल का बहुत काफी और स्पष्ट उल्लेख किया है, जिसे एक बालक भी (जो केवल पढ़ना जानता हो) निर्भ्रान्त रूप से पढ़ सकता है।

यह पुस्तक काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष पण्डित केदारनाथ पाठक की है। इस पुस्तक को पाठक जी बेंचना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी चाहते हैं। अनुमान से कहते हैं कि लगभग १००) रु० में पाठक जी यह पुस्तक दे देंगे। अस्तु।

पहले हम ऊपर उद्धृत की हुई कविता का शुद्धपाठ लिखते हैं। पाठक देखें और बतावें कि कहाँ छन्दोभङ्ग हैं :—

ताको तुम कीजौ जो जानौ। इतनो बचन हमारो मानौ॥
जब बहनोई या विधि कह्यौ। कंस बहिनि मारन तें रह्यौ॥
कारा-कोटहिं राखे दोऊ। तिन ढिग जान न पावै कोऊ॥
दोऊ के पग बेरी डारीं। चहुँदिसि बहु चौकी बैठारी॥

पुस्तक के अन्त में बहुत स्पष्ट अक्षरों में यों लिखा है :—

दो०—संवत सत्रह सै भये चारि अधिक चालीस।
मृगसर की एकादसी सुदी बार रजनीस॥
दच्छिन देस पुनीत अति किय पूरन भगवान।
जो हित सों गावै सुनै पावै पद निरबान॥

इससे जान पड़ता है कि कहीं दक्षिण में रह कर यह ग्रन्थ लिखा है।

पुस्तक की 'इति' में यह इबारत है :—

"पोथी श्री भागवत दशमस्कन्ध वर्णनं भूपति राय कायथ"

पुस्तक का आरम्भ इस प्रकार है :—

सुमिरौं आदि निरञ्जन देवा। जिहिं कोउ देव न पावै भेवा॥
कमलनाभ नारायन स्वामी। सब जीवन के अन्तरजामी॥
इत्यादि इत्यादि।

इसके आगे दशावतार की बन्दना करके कवि कहता है:—

दसमस्कन्ध कथा मन भाई। जामे हरि चरित्र सुखदाई॥
सो अब ब्रजभाषा में कही। पूरन सुख की साखा लही॥

खोज करनेवालों को चाहिये कि इस बात की खोज करें कि कविता की भाषा का नाम 'ब्रजभाषा' कबसे पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमको तो ऐसा ज्ञात है कि सूर, तुलसी, केशव इत्यादि के ग्रन्थों में केवल 'भाषा' शब्द का प्रयोग पाया जाता है। अतः यह ग्रन्थ इस समय तक नहीं बना था यह बात निर्विवाद सिद्ध हो जाती है। जहां तक हमें स्मरण आता है, वह यह है कि लगभग विहारी के समय में कविता की भाषा का नाम 'ब्रजभाषा' पड़ा है। अतः भूपति ने विहारी के बाद यह ग्रन्थ लिखा है, जो एक सत्य बात है। अतः भूपति का समय १३४४ संवत् के आगे पीछे मानना बिल्कुल गलत है, संवत् १७४४ ही ठीक है।

और आगे चलकर भूपति ने अपने गुरु का परिचय दिया है। वह इस प्रकार है :—

अब हौं गुरु की महिमा कहौं। जिहि माहीं पूरन पद लहौं॥
जिनको मेघस्याम सुभ नामा। सुमिरत सुनत होत विसरामा॥
परम प्रवीन पुनीत गुसाईं। भगत रीति प्रगटी सब ठाईं॥
तिनके पिता भगत पद पायो। जिन दामोदर नाम धरायो॥
कंगल भट्ट प्रसिद्ध बखानी। गुन मंगल सुरगन की जानी॥
तिनके वंश जनम उन लीनो। वही अंस हरि उनको दीनो॥
प्रथम तिलङ्ग देस के वासी। मथुरा बसिकै भगति प्रकासी॥

इससे मालूम होता है कि तैलङ्ग देश निवासी भट्टोपनामधारी कङ्गल भट्ट के पुत्र दामोदर भट्ट हुए, उनके पुत्र मेघश्याम गोस्वामी थे जो मथुरा में रहते थे। यही मेघश्याम जी भूपति के गुरु थे।

कोई मथुरा निवासी साहित्य सेवी इसका पता लगा दें तो अच्छा हो कि गोस्वामी मेघश्याम जी किस समय में थे। इस बात का पता लग जाने पर 'भूपति' कवि का ठीक समय निश्चित हो जायगा। फिर कुछ भी सन्देह न रह जायगा।

इसके आगे भूपति कवि अपना परिचय यों देते हैं :—

भूपति जन हरि लीला गाई। परम पुनीत सदा सुखदाई॥
ताहि उनायो कायथ जानो। लेखराज को सुत पहिचानो॥
तिनके पिता हरिहिं मन लायो। बिट्ठलदास नाम जिन पायो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्हरदास जु उनके भैया। तिनके मन में बसो कन्हैया॥
जिन धर करो इटाये माहीं। रहे आपु राजन के पाहीं॥

इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि भूपति कवि उनायें कायस्थ थे और इटावा में रहते थे। पिता का नाम लेखराज, दादा का नाम विट्ठलदास और दादा के भाई का नाम कान्हरदास वा कृष्णदास था। ये कान्हरदास जी वास्तव में बड़े कृष्ण भक्त थे, क्योंकि आगे लिखा है कि :—

कान्हरदास भये बड़ भागी। जिनकी मति कान्हर सों लागी॥
तिनके बंश जनम धरि आयो। भगति अंस तिनको कछु पायो॥

हमें तो इनकी कविता में कहीं छन्दोभङ्ग दोष नहीं मिलता। भाषा निहायत साफ़ और शुद्ध ब्रजभाषा है। काव्य रीति के अच्छे जानकार जान पड़ते हैं। भाषा स्पष्ट १८वीं सदी की है। इनको १४वीं सदी का कवि मानना नितान्त भ्रममूलक है।*

श्री तुलसी-जयन्ती

श्रावण शुक्ला सप्तमी रविवार को हिन्दी साहित्य के प्राणस्वरूप कविशिरोमणि महात्मा गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज का जयन्ती-उत्सव बड़े उत्साह और समारोह के साथ मनाया गया। आज गोस्वामी जी को इस नश्वर शरीर को छोड़े हुए तीन सौ वर्ष होने वाले हैं, इस काल में हमारे जीवन में अनेकानेक परिवर्तन हो गये हैं, किन्तु इस में रत्ती भर संदेह नहीं कि हमारे हृदयों में उन के प्रति श्रद्धा और भक्ति ज्यों की त्यों बनी हुई है, वस्तुतः हम को यह भी ज्ञात नहीं कि हमारा हृदय क्यों स्वतः उनकी ओर इस प्रकार खिंच जाता है। किन्तु हमारे सामाजिक जीवन में

---

* मैं पाठक केदारनाथ जी का बहुत ही अनुगृहीत हूं। आप सदैव प्राचीन काव्य सम्बन्धी खोज में मुझे बड़ी सहायता दिया करते हैं। यदि आपने अपनी बहुमूल्य हस्तलिखित पोथी न दी होती, तो मैं यह लेख न लिख सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीषण शिथिलता आजाने के कारण हम यथोचित रीति से अपने इन परम गुरुओं के प्रति प्राकाम्य रूप में प्रेम और आदर प्रदर्शित करने में अब तक सर्वथा असमर्थ रहे। इसलिये ईश्वर से बारम्बार प्रार्थना है कि हमको ऐसी सुबुद्धि दे कि हम अपने गुरुओं और आचार्य्यों का आदर करना सीखें। जो जाति अपने बड़ों का आदर करना नहीं जानती, उस के अभ्युदय की आशा करनी घोर दुस्साहस नहीं तो और क्या है। इसी लक्ष्य को सामने रखते हुए यह दिवस महात्मा गोस्वामी तुलसीदास जी की पवित्र स्मृति में बिताया गया, वैसे यह तो प्रत्यक्ष ही है कि जब तक इस पृथ्वी पर हिन्दू जाति का अस्तित्व विद्यमान है, जब तक भारत वासी हिन्दी बोलते हैं, जब तक लोग हिन्दी साहित्य का अनुशीलन करते हैं, तब तक गोस्वामी जी के नाम का मिटना सर्वथा असम्भव प्रतीत होता है, उनका नाम सदैव अमिट रहेगा, उनकी पवित्र स्मृति हमारे हृदय-पटल पर सर्वदा अंकित रहेगी।

इस जयन्ती की सूचना के अनुसार प्रयाग निवासी हिन्दी प्रेमी सज्जन ५ बजे सायंकाल से ही कार्य्यालय में आने लगे थे। प्रायः नगर के सभी प्रतिष्ठित हिन्दी-साहित्य-सेवी सज्जन इस में सम्मिलित हुए थे। कुछ महानुभावों के नाम ये हैं श्री ला० सीताराम जी बी. ए., श्री पदुमलाल पन्नालाल बख्शी बी. ए., श्री पं० लक्ष्मीनारायण नागर बी. ए., एल-एल. बी., श्री प्रो० ब्रजराज एम. ए. बी., एस-सी. एल-एल. बी., श्री प्रो० कौशलकिशोर जी एम. ए., श्री प्रो० पं० ईश्वरीप्रसाद जी एम. ए., श्री पं० रामजीलाल शर्म्मा, श्री गिरधर पाठक एम. ए., श्री पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम. ए., श्री प्रो० वेणीप्रसाद जी एम. ए., श्री प्रो० कुशालकर जी, श्री पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी, श्री पं० चन्द्रशेखर शास्त्री, श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, श्री बा० गंगाप्रसाद जी एम. ए., रायबरेली के श्री बा० महावीर प्रसाद बी. एस-सी., एल. टी., विशारद; सीतापुर के कविवर श्री पद्मधर अवस्थी।

हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि श्रीयुत श्रीधर पाठक जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया था। ६ बजे श्रीमान् सभापति जी पधारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० रामजीलाल शर्मा के प्रस्ताव करने पर श्रीमान् पं० श्रीधर पाठक जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया। प्रारम्भ में सभापति महोदय ने एक मंगलाचरण में कविता सुनायी। तत्पश्चात् श्रीमान् संगीत प्रोफेसर श्री कुशालकर जी ने गोस्वामी तुलसीदास जी के दो तीन भक्तिरसपूर्ण पद गाये। उनके ललित स्वर और भाव की पूर्णता से एक क्षण के लिये श्रोताओं का हृदय उस में तन्मय हो गया। इस के अनन्तर सभापति जी ने श्रीमान् सीताराम जी का परिचय देते हुए उनसे प्रार्थना की कि वे गोस्वामी जी के सम्बन्ध में व्याख्यान दें। उन्होंने कहा कि जितनी छानबीन गोस्वामी जी के सम्बन्ध में श्रीमान् ने की है, उतनी शायद ही किसी अन्य सज्जन ने की हो। पश्चात् श्रीमान् सीताराम जी ने अपना गवेषणापूर्ण व्याख्यान सुनाया। उन्होंने दो एक बड़े मार्के की बातें बतलायीं। गोस्वामी जी के पूर्व आचार्यों—श्री रामानुजाचार्य और स्वामी रामानन्द जी—के सिद्धान्तों का भले प्रकार दिग्दर्शन कराया। श्री स्वामी रामानन्द जी के समय में हिन्दू समाज की ठीक वैसी ही परिस्थिति थी जैसी की अभी हाल में है। जिस प्रकार उच्च जातियों के तिरस्कार से नीच जातियों के लोग इस समय झट से ईसाई बन कर अपना गौरव बढ़ाते हैं, उस समय निम्न जाति के लोग मुस्लिम धर्म स्वीकार करके अपना गौरव बढ़ाते थे। समाज में चारों ओर विद्वेष फैला हुआ था। इसी समस्या को हल करते हुए उन्होंने अपने शिष्यों में उच्च से उच्च ब्राह्मण के साथ नीच से नीच व्यक्ति को भी लेना प्रारम्भ कर दिया, इस प्रकार इस विकट प्रश्न को बहुत कुछ सुलझा दिया। उन्होंने बतलाया कि गोस्वामी जी ठीक इसी सिद्धान्त के मानने वाले थे। अपने काव्य में स्थल स्थल पर उन्होंने इस विशाल भाव को दिखाया है, यहां तक कि जब हनुमान जी राम और लक्ष्मण दो क्षत्रिय कुमारों से पहले पहल मिले, तब उन्होंने ब्राह्मण होकर भी क्षत्रियों से प्रणाम करने में तनिक भी संकोच नहीं किया। फिर उन्होंने वर्त्तमान व्यवस्था का दिग्दर्शन कराया कि श्री अयोध्या जी में अब भी उच्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से उच्च कोटि के वैष्णव साधु के साथ नीच से नीच जाति का मनुष्य वैरागी होने पर आनन्द के साथ एक ही पंक्ति में बैठाया जाता है। कैसा विशाल और मनोहर दृश्य है! दूसरी विशेषता गोस्वामी जी के काव्य में उन्होंने यह बतलायी कि जब चाहे तब गोस्वामी जी को देखिये, आप अपने भक्तिभाव से पृथक् उनको कभी नहीं पायँगे, यह बात और दूसरे कवियों में नहीं रही। इसी विषय के रामायण से प्रमाण देते हुए उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया।

इसके पश्चात् श्री प्रो० वेणीप्रसादजी एम. ए. ने एक मनोहर व्याख्यान दिया। उन्होंने बतलाया कि गोस्वामी जी के काव्य में मौलिकता है। उनकी हर बात में उनकी छाप लगी हुई है। उन्होंने इस बात को भले प्रकार बतलाया कि गोस्वामी जी के काव्य सर्व प्रिय क्यों हैं। सदाचार का मूल सहानुभूति है। वसुधैव कुटुम्बकम् के उच्च भाव से उनका सारा काव्य परिपूर्ण हो रहा है। दुष्ट से दुष्ट मनुष्यों के साथ, राक्षसों के साथ भी उन की सहानुभूति है। राक्षस राक्षस क्यों है? उनको पहिले दैवी शाप हो चुका है, विवश हैं, लाचार हैं, हमको उन से घृणा करने का कोई कारण नहीं। दूसरी ओर देखिये, मनुष्य की भावनाओं और देवताओं के भावों में सादृश्य दिखा दिया। उनको भी हर्ष है, शोक है, राग है, द्वेष है, वे भी मनुष्यों की भांति दूसरों का बुरा ताकते हैं, मनुष्यों से आकर मिलते हैं, उनके साथ व्यवहार करके अपना स्वार्थ साधते हैं। जब महाराज दशरथ इन्द्रके यहां पहुँचते हैं तो इन्द्र अपना आधा इन्द्रासन उनके लिये खाली कर देता है, वही मानवी भाव हर जगह व्यापक हो रहा है। मनुष्य की केवल मनुष्य के साथ ही नहीं, वरन् देवताओं और राक्षसों से भी सहानुभूति है अखिल विश्व से सहानुभूति है, यही उनके काव्य में एक महा मंत्र है, जो हरेक को मुग्ध कर लेता है। क्या दुर्जन क्या सज्जन हरेक के साथ उन की सहानुभूति है। सूरदास और तुलसीदास जी की तुलना करते हुए आपने बतलाया कि दोनों ही मौलिक और प्रासा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिक कवि हैं, भक्ति भाव में पगे हुए हैं। सूरदास जी के पद अधिकतर भावात्मक हैं, गाने के योग्य हैं, किन्तु तुलसीदास जी की कविता इसके साथ साथ वर्णनात्मक भी है। उनमें कथाका सुन्दर वर्णन हैं, सूरदास की कविता में एक पद में नहीं, दो पद में नहीं, कहीं कहीं तो सौ दो सौ पदों में एक ही घटना का वर्णन है, गानेवाला एक ही तरह से गाकर तृप्त नहीं होता, सैकड़ों प्रकार से उसी बात को गाता है। अन्त में गोस्वामी जी का यशोगान करते हुए उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया।

इस के पश्चात् श्री पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी ने गोस्वामी जी के जीवन चरित्र पर व्याख्यान दिया। उनके जन्म से लेकर अन्त तक की जीवन घटनाओं का सुन्दर वर्णन किया। उन्होंने बतलाया कि दृढ़ता गोस्वामी जी के स्वभाव का विशेष गुण है। जब तक यह गृहस्थाश्रम में रहे तब तक उन की अपनी पत्नी पर प्रगाढ़ आसक्ति थी और जब राम के भक्त हुए तो उनके भी अनन्य भक्त हुए। इसके पश्चात् उन्होंने कविता की आलोचना की। वे एक प्रतिभाशाली प्रासादिक कवि थे। कविता तो उनके लिये बिल्कुल स्वाभाविक है, गोस्वामी जी के वर्णाश्रम सिद्धान्त का वर्णन करते हुए उन्होंने बतलाया कि हरेक जगह उन्होंने ब्राह्मणों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया है। सुयोग्य ब्राह्मणों को उचित सम्मान देने के वे सदैव पक्षपाती रहे, किन्तु इसमें संदेह नहीं कि इस कलियुग में सच्चे ब्राह्मणों का बहुत अभाव है। श्री गोस्वामी जी की वन्दना करते हुए उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया।

इसके अनन्तर श्रीमान् पं० रामजीलाल शर्मा ने अपना ओजस्वी भाषण प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा कि हमारे ऊपर जो गोस्वामी जी का महान् उपकार है, उससे हम कभी उऋण नहीं हो सकते, किन्तु हम लोगों के लिये यह महान् शोक और लज्जा का विषय है कि हम अब तक ऐसे महान् उपकारी महात्मा का एक भी स्मारक स्थापित नहीं कर सके। उन्होंने हिन्दी प्रेमियों से प्रार्थना की कि इस विषय में शीघ्र कोई आयोजना होनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर उन्होंने रामायण के विषय में दो एक मार्के की बातें कहीं। उन्होंने बतलाया कि रामायण में कैसे कैसे आदर्श चरित्रों का संग्रह किया गया है जिससे स्त्री और पुरुषों को अपने जीवन में अमूल्य सहायता मिल सकती है। फिर बतलाया कि गोस्वामी जी ने शैवों और वैष्णवों का विरोध भाव मिटा दिया, दोनों को इस प्रकार मिलाया कि दोनों परस्पर एक दूसरे की उपासना करते हैं, यहां तक कि यह कहना कठिन है कि गोस्वामी जी शिव भक्त थे या राम भक्त, वस्तुतः वे दोनों को एक ही समझते थे। अतः गोस्वामी जी के प्रभाव का वर्णन करते हुए पुनः बतलाया कि एक तुलसी-स्मारक की अत्यन्त आवश्यकता है। गोस्वामी जी का यशोगान करते हुए भाषण समाप्त किया।

इसके अनन्तर श्री मान् बा० गंगा प्रसाद जी एम० ए०, ने अपना व्याख्यान प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा कि मुझ को महा शोक है कि मुझको तुलसीदास जी का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ, दुर्भाग्य वश शेक्सपियर और मिल्टन से ही मस्तिष्क लड़ाना पड़ा। आपने बतलाया कि धार्मिक विचारों में मैं आर्यसमाजी होते हुए भी अपने ऊपर गोस्वामी जी का बड़ा भारी प्रभाव मानता हूं। यद्यपि मैं व्यक्ति गत रूप से यह मानता हूं कि गोस्वामी जी धार्मिक सुधारक नहीं थे तो भी मैं समझता हूं कि तुलसी दास जी के काव्य ग्रन्थ की बराबरी करने वाले साहित्य ग्रन्थ और किसी भाषा में मिलने कठिन हैं। इसलिये हम सब को मिल कर ऐसा उद्योग करना चाहिये कि यह ग्रन्थ हमारे विश्व-विद्यालयों के सब से ऊंची कक्षाओं के लिये कोर्स में निश्चित किये जायं। इन ग्रन्थों के रहते हुए यह कहना सर्वथा मिथ्या है कि हिन्दी साहित्य में उच्च कोटि के ग्रन्थों का सर्वथा अभाव है। अपने भाषण में एक बात आपने बड़ी महत्वपूर्ण कही। आपने अंग्रेज डाक्टर ग्रियर्सन के उस भाषण का ज़िक्र किया जो उन्होंने लण्डन में दिया था। उसमें वे तुलसीदास जी की विपुल प्रशंसा करते हैं, उनकी कविता की प्रतिभा पर मुग्ध होते हैं, उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक विचारों की महत्ता दिखलाने में प्रसन्न होते हैं, किन्तु अन्त में कहते हैं कि इनकी और ईसाई शिक्षाओं में ऐसा घनिष्ठ सादृश्य है कि यह शंका होने लगती है कि उस समय में अवश्य इन दोनों में कुछ न कुछ सम्पर्क रहा होगा। आपने बतलाया कि एक अँग्रेज़ सज्जन जो बहुत दिनों तक बनारस में रह चुके हैं किस प्रकार यह बात अपने मुंह से निकाल सकते हैं, यह अवश्य मेघ आश्चर्यजनक है। उन्होंने कहा कि ऐसी प्रशंसा करने से तो न करना ही अच्छा है। अन्त में तुलसीदास की प्रशंसा करते हुए आपने भाषण समाप्त किया।

इनके बाद दो एक और छोटे छोटे व्याख्यान हुए।

इसके पश्चात् श्री कवि पद्मधर अवस्थी ने एक अपनी और एक "सनेही जी" की कविता सुनाई जो उन्होंने इस अवसर के लिये बनाई थी। इसके पश्चात् श्री सभापति महोदय ने भारत के लिये मंगल कामना की कि इस वृद्ध पुरुष की हार्दिक कामना है कि एक नहीं, सैकड़ों हजारों तुलसीदास इस भूमि में जन्म लें और इसका उद्धार करें। गोस्वामी जी की आत्मा हमारे हृदयों में सदैव प्रेरणा करती रहे।

श्री प्रधान मंत्री ने सम्मेलन की ओर से सभापति जी को धन्यवाद दिया और श्री प्रबन्ध मंत्री जी ने श्रोतागणों को धन्यवाद दिया।

इस प्रकार ८॥ बजे रात्रि को जयन्ती-उत्सव समाप्त हुआ।

मद्रास प्रचार उपसमिति की रिपोर्ट

आरम्भ इन्दौर सम्मेलन में जो कि संवत् १९७४ में महात्मा गांधी जी के सभापतित्व में हुआ था, इस आशय का एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था कि सम्मेलन गुजरात, महाराष्ट्र, और विशेषकर दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार का उद्योग करे। इस प्रस्ताव के तीन मास पश्चात् ही महात्मा जी ने अपने सुपुत्र श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीदास गाँधी को मद्रास में हिन्दी प्रचार के लिये भेजा। इस प्रकार ज्येष्ठ शुक्ल ८ सं० १९७५ तदनुसार १७ जून १९१८ को मद्रास में हिन्दी प्रचार का कार्य प्रारम्भ हुआ।

प्रचारक　इस उद्देश्य से अब तक प्रयाग में ३० दक्षिण भारतवासियों को हिन्दी की शिक्षा दी गई हिन्दी का यथेष्ट ज्ञान हो जाने पर वे मद्रास में प्रचारक नियुक्त किये गये। इस समय २३ सज्जन भिन्न भिन्न केन्द्रों में प्रचार का काम कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त १२ उत्तरभारतीय सज्जन मद्रास में प्रचारक नियुक्त किये गये हैं। इस प्रकार वहां पर कुल ३५ प्रचारक काम कर रहे हैं।

आय व्यय　ज्येष्ठ शु० १२ सं० १९७५ से आषाढ़ शु० १५, सं० १९७९ तक का आय व्यय चिट्ठा।

आय		व्यय	
३२३००)	महात्मा जी द्वारा प्राप्त	२२१६१।॥≋)	प्रचारकों का वेतन
४१३।=)	श्री देवदास गांधीकी भेंट द्वारा	२९४८॥=)॥	मार्ग व्यय
		१०५३॥=)॥	कार्यालय मकान किराया
५७२३।)	दाताओं से	४३॥।≋)॥।	लेखन सामग्री
२७।-)॥	फुटकर	३३२)॥।	डाक
२०९)	पुस्तकालय के लिये	१६२≋)॥	फुटकर
११३१३॥≋)॥	पुस्तक बिक्री से	४२७।=)॥।	सामान
१०००)	तामिल कांग्रेस से	२५।=)	प्रचारार्थ प्रकाशन आदि
१२५)	परीक्षा द्वारा	२१॥-)	पुस्तकालय
५९३०-)	सम्मेलन व अन्य दाताओं द्वारा	१३१४२॥=)	पुस्तक प्रकाशन व्यय
		३३।॥≋)।	पत्रिका
५९७४१॥।)	कुल आय	८३॥।)॥।	परीक्षा
		४९४०।-)	प्रयाग में व्यय हुआ
		४५३७७॥-)	कुल व्यय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११३६४≋) रोकड़ शेष

५६७४१॥) कुल योग

शेष रोकड़ का ब्योरा

१०,४७४।≋) मद्रास कार्यालय में

८८९॥।) प्रयाग सम्मेलन कार्यालय में

११३६४≋) कुल शेष

इनके अतिरिक्त ५०००) रु० श्री सेठ जमनालाल जी बजाज के पास जमा हैं। और वह कोष प्रकाशन निमित्त महात्मा जी ने उनके पास जमा कर रक्खा है। ५०००) रु० आगामी वर्ष में और जमा करने की आशा भी सेठ जी ने दिलाई है।

मद्रास में जो रकम शेष है उसका ब्योरा इस प्रकार है।

आँध्र कार्यालय खाता	१८१९।)॥
तामि केरल कार्यालय खाता	१७२०)
तामिल केरल प्रान्तीय प्रचारक विद्यालय खाता	१०००)
केन्द्रिक कार्यालय खाता	२१६४॥।-)॥
	६७०४=)।
पुस्तक प्रकाशन खाता	३७७०।)॥
	१०४७४।≡)

जो धन महात्माजी से प्राप्त हुआ है उसमें से ५०००) रु० केवल पुस्तक प्रकाशन निमित्त दिया गया था, उसमें से इस समय ३७७०।)॥ शेष हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि इस समय प्रचार विभाग के लिये केवल ६७०४=)। मद्रास कार्यालय में और ८८९॥।) प्रयाग में जमा हैं।

मासिक व्यय	केन्द्रिक कार्यालय के	३ प्रचारकों का	वेतन	१७५)
	आंध्र	२२ ,,	,,	६९४)
	तामिल केरल प्रान्तीय	१० ,,	,,	४०५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमानुसार साल में एकबार घर जाने आने को मार्ग व्यय का मासिक औसत	१७५)
कार्यालय मकान किराया	५०)
डाक व्यय	१५)
फुटकर	३५)
प्रचार सम्बन्धी भ्रमण आदि	१००)
कुल मासिक औसत व्यय	१६५०)

इस प्रकार मासिक औसत व्यय १६५०) रु० है।

आर्थिक समस्या इस समय कुल ७५६३॥।=)। मद्रास के प्रचार विभाग खाते में शेष हैं। और औसत व्यय १६५०) रु० है। किन्तु ५००) रु० मासिक मद्रास के दाताओं से मिल रहे हैं। इस प्रकार ११५०) रु० मासिक का बोझ सम्मेलन के सिर पर रहता है; और उसका कोष अधिक से अधिक ८। ६ महीने चल सकता है। ऐसे आर्थिक संकट के समय यह प्रश्न उपस्थित है कि भविष्य में मद्रास प्रचार क्या नीति स्थिर की जाय।

फल नीति स्थिर करने के पहिले यह जान लेना आवश्यक है कि इस प्रचार के द्वारा मद्रास प्रान्त में हिन्दी की कैसी उन्नति हुई है।

(अ) अनुमान से यह कहा जा सकता है कि अब तक लगभग २०००० लोग हिन्दी सीखने लगे। इनमें ५००० लोगों ने "हिन्दी का साधारण ज्ञान" प्राप्त किया होगा। आजकल लगभग ३००० दक्षिण भारतवासी हिन्दी सीख रहे हैं।

(आ) पुस्तक प्रकाशन विभाग की अवस्था देखकर भी कुछ पता चल सकता है कि मद्रास में इस समय हिन्दी की ओर लोगों की कैसी रुचि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

संख्या नाम पुस्तक	दर	संस्करण	कुल छपीं	बची	शेष पुस्तकों का मूल्य
१—हिन्दी की पहली पुस्तक	=)	६	२१०००	२६००	३३७॥)
२—तामिल अनुवाद	=)॥	३	५०००	९५०	१४८॥=)
३—तेलगू अनुवाद	=)॥	३	६५००	२४००	३७५)
४—हिन्दी तेलगू स्वबोधिनी	॥=)	१	३०००	...	...
५—हिन्दी अंगरेज़ी स्वबोधिनी	॥=)	१	३०००	७३०	४५६।)
६—हिन्दी तामिल	॥=)	१	३०००	१०९०	६८१।)
७—स्वदेश गीत	≡)	२	७०००	४६२५८	९२≡)
८—दूसरी पुस्तक	।–)	१	३०००	१३२०	४१२॥)
९—हिन्दी का हीर प्रथम सं०	–)	१	५०००	...	...
१० ,, ,, द्वितीय सं०	=)	१	४०००	५५०	६८॥)
११—राष्ट्रभाषाबोधिनी	।=)	१	४०००	३०००	७५०)
१२—तामिलबालबोधिनी	=)	१	२०००	१७५	२१॥=)
१३—तेलुगू बालबोधिनी	=)	२	७०००	३७५०	४६८॥)
१४—मलयालम् अनुवाद	=)॥	१	२०००	१७४०	२७१॥=)
१५—मलयालम् बालबोधिनी	=)	१	३०००	२८४५	३५५॥=)
१६—राष्ट्रभाषा मंजरी	=)	१	२०००	४५०	५६।)
			८०५००	२६३२५	५२९६।)

५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अबतक १६ प्रारम्भिक पुस्तकें निकाली गईं। कुल पुस्तकों की ८०५०० प्रतियां छपीं और इस समय केवल २६३२५ प्रतियां बची हैं। अपनी पुस्तकें प्रकाशन करने के अतिरिक्त बाहर की उपयोगी पुस्तकें भी विक्रयार्थ यह विभाग मंगाता रहा, जिसमें ८५४४≡)॥ की पुस्तकें इस समय स्टाक में जमा हैं। यह संख्या अप्राप्य है कि इस प्रकार की कितनी पुस्तकें बेची गईं।

आय	व्यय
११३१३॥≡)॥ अब तक की पुस्तक विक्री	१३१४२॥=)
६१६०।॥≡)॥ स्टाक की पुस्तकों का मूल्य	
५६७॥-)। प्रचारकों व वी. पी. से मिलते हैं	
६७०) टाइप के लिये पेशगी	
४६४॥=) कोश (हिन्दी तेलुगू जो छप रहा है) के कागज़ में	
८००) तेलगू स्वबोधिनीकी पेशगी ५००० छप रही है	
५०) मलयालम स्वबोधिनी की पेशगी	
२००८६।॥=) कुल आय	
३७७०।)॥ नक़द	
२३८५७=)।॥	

प्रकाशित पुस्तकों की संख्या देखने से ज्ञात होता है कि इस विभाग का कार्य सर्वथा सराहनीय रहा, इनके पढ़ने वालों की संख्या अवश्यमेव यथेष्ट रही होगी। साथ ही साथ इस विभाग की आर्थिक दशा भी पूर्ण सन्तोषप्रद है।

विद्यार्थियों की उपर्युक्त अनुमानित संख्या और पुस्तक विभाग का कार्य देखने से ज्ञात होता है कि मद्रास में हिन्दी प्रचार का कार्य संतोषप्रद है। सम्भव है, यथेष्ट उद्योग से यह चिरस्थायी कार्य हो जाय और यही सम्मेलन का सर्व श्रेष्ठ काम समझा जाय। ऐसे उत्तम कार्य का आर्थिक संकट में पड़ना शोकजनक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक समस्या को हल करने के दो ही मार्ग हैं।

१—यथेष्ट धन संग्रह करना और २—मद्रास में ऐसा संगठन करना कि वह प्रान्त शीघ्र ही हिन्दी प्रचार का भार अपने ऊपर ले ले।

वर्तमान संगठन ज्येष्ठ संवत् १९७९ के पहिले मद्रास में एक केन्द्रिक कार्य्यालय था और वही स्वयं सारे प्रान्त का प्रबन्ध और निरीक्षण करता था। कार्यक्षेत्र विस्तृत होने से इसमें अनेक असुविधाएँ थीं, इसलिए ज्येष्ठ कृ. १२ सं. ७९ का दक्षिण भारत दो विभागों में विभक्त किया गया। १—आंध्र, २—तामिल और अन्य शेष भाग। इन दोनों विभागों में एक एक अध्यक्ष के आधीन एक एक कार्यालय स्थापित किया गया। ये कार्यालय मद्रास केन्द्रिक कार्य्यालय के प्रति उत्तरदायी रहेंगे और केन्द्रिक कार्यालय से पुस्तक-प्रकाशन, परीक्षा, निरीक्षण, आयव्यय और हिसाब किताब सम्बन्धी समस्त कार्य हुआ करेगा। और यह केन्द्रिक कार्य्यालय सम्मेलन के प्रति उत्तरदायी रहेगा।

इसके अतिरिक्त इन दोनों कार्य्यालयों पर यह भार भी डाला गया कि वे अपने अपने प्रान्त में प्रचार के लिये धन एकत्र करने के लिये विशेष उद्योग करें जिससे कि वे जितनी जल्दी हो सके अपने पैरों पर खड़े हो जायं। इस हेतु इनके अध्यक्षों को यह अधिकार भी दे दिया गया कि वे अपने प्रचारकों की सहायता से स्वतंत्र रीति से धन एकत्र कर सकें। इस समय मद्रास कार्य्यालय में जो ५७०४) मद्रास प्रचार खाते में शेष हैं वह इस प्रकार तीनों कार्य्यालयों में बाँट दिया गया है। आंध्र कार्य्यालय को ज्येष्ठ से मार्गशीर्ष तक ६ महीने के लिये १८००) और तामिल और अन्य शेष भाग को इसी समय तक के लिये १८००) और शेष धन से मद्रास केन्द्रिक कार्य्यालय अपना काम चलायगा। इसके अतिरिक्त जो धन कार्य्यालयों को आवश्यक हो वे अपने प्रान्त से एकत्रित करने का उद्योग करें। यदि इन दोनों कार्य्यालयों ने अपना बोझ उठा लिया तो सम्मेलन को केवल केन्द्रिक कार्य्यालय का व्यय देना होगा। किन्तु वर्तमान स्थिति से ऐसा ज्ञात होता है कि आंध्र कार्य्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अपना काम आप चला ले जायगा किन्तु तामिल विभाग में अभी इतना प्रचार नहीं हुआ है कि वह इन ६ महीनों के भीतर स्वयं अपना भार उठा सके, कुछ न कुछ इसकी सहायता करनी ही होगी।

उपसंहार

इस उपसमिति की राय है कि मद्रास में हिन्दी प्रचार का कार्य सन्तोषप्रद हुआ है। इस कार्य को वर्तमान परिमाण में चलाने का पूरा पूरा उद्योग किया जाय, क्योंकि इस में दिन प्रति दिन उत्तरोत्तर वृद्धि की संभावना है। इसलिये यह उपसमिति उपर्युक्त वर्त्तमान संगठन को स्वीकार करती है, जो कि शेष धन से मार्गशीर्ष (दिसम्बर) तक मद्रास प्रान्त में हिन्दी प्रचार वर्त्तमान रूप से चलाने के लिये किया गया है। इस से एक लाभ यह होगा कि इस बात की परीक्षा हो जायगी कि दक्षिणवासियों की रुचि हिन्दी की ओर अब कैसी है, वे कहां तक राष्ट्रभाषा को साहाय्य देने के लिए तैयार हैं और मद्रास कार्यालय का यह कहना कि दो वर्ष में वे अपने पैरों खड़े हो सकेंगे और एक प्रान्तीय सम्मेलन की स्थापना करने के योग्य हो जायेंगे, कहां तक ठीक है। साथ ही यह उपसमिति स्थायी समिति को अभी से सचेत और सचेष्ट होने के लिये चेतावनी देती है कि यदि उक्त प्रयोग सफल होगा तब उसको केवल केन्द्रिक कार्य्यालय के व्यय के लिये, जो लगभग २५०) के मासिक है, धन देना होगा और कुछ दिनों तक तामिल विभाग की भी सहायता करनी होगी। इस प्रकार अधिक से अधिक ५०००) रु० वार्षिक से सम्मेलन वर्त्तमान स्वरूप में प्रचार का काम करता रहेगा। और यदि प्रयोग विफल हुआ तो उस को १०००) रु० मासिक के हिसाब से १२०००) रु० वार्षिक मद्रास में हिन्दी प्रचार के लिये व्यय करना पड़ेंगे। इस लिये स्थायी समिति को अभी से इस विषय में यत्नशील होना चाहिये।

अन्त में यह उपसमिति स्थायी समिति से अनुरोध करती है कि वह दिसम्बर १९२२ के प्रारम्भ में एक बार पुनः मद्रास हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार की गतिविधि का निरीक्षण करे और वर्त्तमान संगठन के प्रयोग के परिणाम को भली भाँति देख कर अपनी आगामी नीति निर्धारित करे।

(हस्ताक्षर)

श्री व्रजराज श्री वेणीप्रसाद
श्री रामजीलाल श्री संगमलाल

नोट—यह उपसमिति द्वादशवर्षीय स्थायी समिति के प्रथम अधिवेशन में बनाई गयी थी। इसने उपर्युक्त रिपोर्ट द्वितीय अधिवेशन में उपस्थित की है।

साहित्यावलोकन

[समालोचक के मत के लिये सम्मेलन उत्तरदायी नहीं है]

हिन्दी—

हिन्दी का साप्ताहिक पत्र; संपादक व प्रकाशक—श्रीयुत पं० भवानी दयाल जी, 'हिन्दी' जकोव्स, नेटाल (अफ्रीका)। वार्षिक मूल्य ६)।

बड़े ही आनंद और सौभाग्य की बात है कि आज हिन्दी की पूँछ अफ्रीका आदि विदेशों में भी होने लगी। श्रीयुत पं० भवानीदयाल जी का यह कार्य वास्तव में परम श्रेयस्कर है। इस पत्र के प्रकाशित होने से हमें और भी दृढ़ विश्वास हो गया है कि हिन्दी के राष्ट्र-भाषा होने में अब देर नहीं है। इस पत्र का मुख्य उद्देश हिन्दी द्वारा राष्ट्रीय विचारों का प्रचार करना है। कई उपयोगी लेखों के अतिरिक्त संपादकीय टिप्पणियाँ बड़े ही मार्के की रहती हैं। नामी धामी महापुरुषों के चित्र भी अलग छपाकर पत्र में रख दिये जाते हैं। हम हृदय से 'हिन्दी' पत्र के शुभचिंतक हैं। परमेश्वर करे यह पत्र अपने उद्देशों में दिन दूना रात चौगुना सफल हो।

प्रेम—

प्रेम-महाविद्यालय, वृन्दावन का मुख पत्र। साप्ताहिक पत्र, संपादक—श्रीयुत भगवानदास जी केला; वार्षिक मूल्य २॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पत्र दश वर्ष से निकल रहा है। यह प्रेमधर्म के प्रचार करने में जी जान से काम कर रहा है। राष्ट्रीयमत का पूर्ण प्रतिपोषक है।

संपादक महोदय की भी योग्यता किसी से छिपी नहीं है। आप अवैतनिक रूप से संपादन करते हैं। 'प्रेम' को लाभ कुछ भी नहीं है, हानि ही उठानी पड़ती है। प्रत्येक हिन्दी भाषाभाषी देशसेवी का धर्म है कि वह प्रेम का ग्राहक बनकर इसे यथेष्ट साहाय्य प्रदान करे। यह और भी उत्तम होगा यदि कोई देशभक्त संपादन में श्री केला जी की सहायता किया करे।

साहित्य—

मासिक पत्र; संपादक—श्रीयुत पं० छविनाथ पांडेय, बी. ए., एल. एल. बी., प्रकाशक—साहित्य कार्यालय, ६० मिर्जापुर स्ट्रीट कलकत्ता। छपाई कागज सुन्दर, वार्षिक मूल्य ५)

सहयोगी साहित्य का यह पहला ही अंक है। इसमें ६ लेख तथा ४ कविताएँ हैं। समालोचना एवं संपादकीय टिप्पणियाँ अंत में दी गयी हैं। श्री मैथिलीशरण रचित 'प्यारे! तेरी माया' और श्री 'उग्र' कृत 'कारागार और महात्मा' नामक कविताएं वास्तव में भावपूर्ण हैं। खाद का महत्व और उपयोग, महाकवि धोयी और उनका पवनदूत, लोकमत तथा सौन्दर्य नाम के लेख दृष्टव्य हैं। 'सनातनधर्म और रामचरितमानस' शीर्षकवाला लेख विशेष अच्छा है। संपादक महोदय ने कई उपयोगी बातें लिखी हैं। आपने द्वादश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति की वक्तृता पर भी नजर फेंकी है। व्रजभाषा की रही सही मान मर्यादा पर हाथ साफ़ किया गया है! यह भी लिखा है कि अभी हिन्दी शिक्षा का माध्यम बनने योग्य नहीं है! श्री पांडेय जी ने, समझ पड़ता है, विदेशीय दृष्टि से भारतीय साहित्य का दर्शन किया है। यह भी जान पड़ता है कि आप सौन्दर्य के वास्तविक रहस्य की उपेक्षा कर रहे हैं। आप ही क्या, इस समय कुछ ऐसी ही हवा चल रही है कि लोग क्या साहित्य, क्या धर्म आदि सभी विषयों की नयी नयी परिभाषाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़ रहे हैं। मूलतत्व का अत्यन्त ध्वंस कर देने को ही विकास कह कर पुकार रहे हैं। यह भारी भूल है। इससे आत्मानुकूलता को ज़ोर का धक्का लगेगा, इसमें संदेह नहीं। परिवर्तन और नाश में बड़ा अंतर है। माना कि देश काल पात्र के अनुसार साहित्य ही क्या सभी बातों में परिवर्तन होना चाहिये, किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उन सिद्धान्तों को समूल नष्ट कर देना चाहिये। संपादक महोदय से हमारी प्रार्थना है कि वे भारतीय साहित्य का खूब बारीकी से अध्ययन करें, क्योंकि उन्हें साहित्य-पत्र के उद्देशों को सफल करना है।

इस अंक में साहित्यिक सामग्री एक प्रकार से बहुत कम है। भविष्य में इस कमी के पूरी होने की पूरी आशा है। इसमें दो सादे और दो रंगीन चित्र हैं, जो उत्तम हैं। मुख पृष्ठ पर हाथ में 'साहित्य' और त्रिशूल लिये भारत-माता खड़ी हैं। यह चित्र चित्ताकर्षक नहीं कहा जा सकता।

हम सहयोगी साहित्य के हृदय से शुभचिंतक हैं।

चीन की राज्यक्रान्ति—

लेखक—श्री० बाबू संपूर्णानन्द जी वर्म्मा, बी० एस० सी०, एल० टी०; प्रकाशक—प्रताप पुस्तकालय, कानपुर; पृष्ठ संख्या २०० और मूल्य सजिल्द प्रति का १॥) मात्र।

यह प्रताप-पुस्तक-माला का अठारहवाँ पुष्प है। इसमें चीन की राज्य-सत्ता के उलट-पुलट का इतिहास लिखा गया है। इसमें यह दिखाया गया है कि पददलित चीन किस प्रकार स्वतंत्र हुआ है। एक समय चीन अपनी सभ्यता में समस्त संसार का मुकुट था। किन्तु पीछे भोगविलास में पड़ जाने के कारण वह ऐसा गुलाम हो गया कि उसके निवासियों को दाने दाने के लिए दूसरों का मोहताज होना पड़ा। दुनिया भर में भारत की तरह चीन का भी अपमान होने लगा। अंग्रेज़ों ने चीन को अफीम का बाजार बना रखा। बड़ी दुर्दशा हुई, किन्तु सदा एक से दिन नहीं रहते। काल-चक्र फिरा। लोग जागे। राज्यमदांध मंचू जाति के शासन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजातंत्रवादियों ने अंत कर दिया। बिल्कुल ही काया-पलट होगया। आज चीन धीरे धीरे उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। यह पुस्तक परतंत्र भारत के लिये बड़े काम की है। भाषा भी सरल है।

भारतीय जेल—

लेखक—श्रीयुत महताबसिंह जी वर्मा (जेल-प्रवासी); प्रकाशक—देशभक्त पुस्तकालय, सिरसागंज, मैनपुरी। पृष्ठ संख्या १०२ मूल्य ॥)

इस पुस्तक में श्रीकृष्ण-जन्मस्थान का विवरण लिखा गया है। सेन्ट्रल जेल, ज़िला जेल, प्रेसीडेन्सी जेल, फीमेल्स जेल, जुबनायल जेल, और ट्रांसपोर्टेशन (काला पानी) का सच्चा सच्चा हाल जानने के लिये इस पुस्तक का पढ़ना प्रत्येक देशभक्त के लिये आवश्यक है। जेल के अधिकारी भारतीय क़ैदियों को कैसे कैसे अन्याय पूर्ण कष्ट दिया करते हैं, उन्हें कैसा बुरा भोजन मिला करता है, उनका स्वास्थ्य किस तरह बिगाड़ा जाता है, उनके साथ कैसा पाशविक व्यवहार किया जाता है, आदि बातों के जानने के लिये यह पुस्तक बड़े काम की है। पुस्तक उपादेय है।

भारत-रहस्य, उपन्यास—

लेखक—श्री० जगदम्बा प्रसाद जी वर्मा; प्रकाशक—भारत रहस्य कार्य्यालय, ग्राम श्यामपुर, डा० मेडरा, जि० इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या ११२, छपाई कागज सुन्दर मूल्य ।) मात्र।

लेखक महाशय ने प्रस्तुत पुस्तक में असहयोग के साथ ही साथ भारतीय राष्ट्र निर्माण का जीता जागता चित्र खींच दिया है। शैली रोचक तथा भाषा परिष्कृत है। कहीं २ प्रूफ़ संबन्धी अशुद्धियां रह गयी हैं। यह बराबर कई भागों में निकलेगा। आशा है देश सेवी इसका समुचित आदर करेंगे।

—उमापति निगम बी. ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जांयगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य-शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०–१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला
लाल्लुकेदार-प्रेस १६ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांई तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूरसागर का क्यों नहीं हुआ ? इसलिये कि लोग इस वृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ के समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी की जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुई अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं। यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक काग़ज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] मार्गशीर्ष, संवत् १९७९ [अंक ४

निज भाषा बोलहु, लिखहु,
पढ़हु गुनहु सबलोग।
करहु सकल विषयन विषैं,
निज भाषा उपयोग॥

—श्रीधर पाठक

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जायँगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य-शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०-१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रथमाला
ताल्लुकेदार-प्रेस १९ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] मार्गशीर्ष, संवत् १९७९ [अङ्क ४

श्री कृष्ण-बन्दना

छप्पय

तिलक भाल बनमाल, अधिक राजत रसाल छबि।
मोर मुकुट की लटक, छटक बरनत अटकत कबि॥
पीताम्बर फहराय, मधुर मुसक्यान कपोलन।
रच्यो रुचिर मुख पान, तान गावत मृदु बोलन॥
रति कोटि काम अभिराम अति, दुष्ट निकंदन गिरिधरन।
आनंद कंद ब्रज चंद प्रभु, जय जय जय असरन सरन॥

—आचार्य केशवदास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा विहारीदास जी के सिद्धान्ती पद

[संग्रहकर्त्ता—श्री वियोगीहरि]

महात्मा विहारीदास जी स्वामी हरिदास जी की टट्टी संप्रदाय के अनुयायी थे। इस संप्रदाय में एक से एक बढ़ कर त्यागी महात्मा हुए हैं। इस संप्रदाय की रस-पराकाष्ठा भी। किसी भक्त अथवा साहित्य-सेवी से छिपी नहीं है। स्वामी हरिदास जी "रसिक सम्राट" ही कहे जाते थे, जैसा कि नाभा जी ने अपनी भक्तमाल में लिखा है कि

'रसिक छाप हरिदास की।'

अस्तु। मैंने इस संप्रदाय के साहित्य का किंचिन्मात्र अनुशीलन करते हुए, महात्मा विहारी दास जी के कुछ अनूठे सिद्धान्ती पद पाये हैं। कतिपय पद नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

पद

रे चित चंचल, अनत न जैये।
जुगल किसोर चरन चिंतन बिनु, सुख संतोष न पैये॥
कहुँ आदर कहुँ होत निरादर, बिनु बिवेक विष खैये।
मानुष भये होत कत कूकर, भँड़िहाई[1] न अघैये॥
कंचन लोहनि गढ़ हढ़े छूटैं, मनसाहू न बँधैये।
पाप पुन्य दोऊ सम सुनियत, डहकाये डहकैये॥
परमारथ बिनु जे स्वारथ की, सबै जानि दुख दैये।
दास बिहारी प्रभु को आनँद, नागर नैकु रिझैये॥

जितौ बुलायो तेतौ बोल्यो।
नातरि रह्यो मौन मुख मूँदे, खुसी खसम[2] ही खोल्यो॥

---

१ चोरी। २ पति, ईश्वर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै राख्यौ इक आसन कै डगडोलनि यौं ही डोल्यौ।
छल बल सबै तौलि लीन्हें पै तुव बल जातु न तौल्यौ॥
करि ममत्व ऽहंकार जगत सौं झूठे रोलनि रोल्यो।
दास बिहारी को मन प्रभु तुम नीके कै टकटोल्यो[१]॥

भक्ति में कहा जनेऊ जाति।

सब भूषन दूषन विनु प्राननि पति छवै बरनि[२] घिनाति॥
क्यों साधै चिर पन अभिमानी, बड़ी जाति इतराति।
बासर सौं कैसे सरि पावै, जदपि उजेरी राति॥
कहा हरे रँग भाँग बिराजति, तुलसी में न समाति।
सोहै नहीं सुहागिनी के सँग, सौति सुरेति कुजाति॥
बरनाश्रम अपने अपने मत तिन तिन ही सौं पाँति।
भगवत धर्म सिरोमनि सेवत, लालच मति भ्रम जाति॥
गायत्री संध्या तरपन तजि भजि लै मंत्र सजाति।
श्री बिहारी दास को सुख सर्बोपरि वेद विदित विख्याति॥

जाकी करत स्याम सहाय।

प्रथम बरनों कृपा, क्रम क्रम विषय मूल गँवाय॥
कुल कुटुम्ब बल बिन बिहीनौ दीन कै[३] दुखदाय।
आपुने कौं करि जु लीन्हों आपु ही अपुनाय॥
थके बल बुधि चातुरी चित और कछु न दृढ़ाय।
सबनिसों मन निठुर कीन्हों अनत कहुं न पत्याय[४]॥
परम आनँद कंद श्री हरिदास सरन सहाय।
श्री विहारीदास प्रभु पद चिते परचौ पाय॥

१ जांच लिया। २ स्त्री। ३ करके। ४ विश्वास करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुवा[1] कामरी[2] सौं रतिमति कब ह्वै है या गति जोग ।
जमुना कूल कदम्ब कुंज-ग्रह, बसि बन मैटे सोग ॥
चना चबेना छाछ जमुन जल, पत्र पुहुप कुल भोग ।
तिनके आगे ऐसी सुनियत षटरस फीके फोग[3] ॥
अटल निहाल करौ, जिन ऐसैं ज्यौं डहकायो लोग ।
विषय बासना हरौ सासना[4] बहुत जनम को रोग ॥
पर्यौ रहूं द्वारे दुलराऊँ गाऊँ प्रेम प्रयोग ।
दास बिहारी प्रभु अब अवसर आयो सरन सँयोग ॥

भैया, हरिदास सदा भयहीन ।

कर करुवा कामरि काँधे धरि, बांधे कटि कोपीन ॥
बन बन रटत बिचारत आरत, संतत स्याम अधीन ।
परम प्रीति रस रीति लड़ावत गावत सुजस नवीन ॥
कर्म धर्म यौं कहत बापुरे हम सेवक दिनदीन ।
तिनसौं[5] को करि सकै बराबरि, प्रकृति काल बल छीन ॥
पारस करत परसि सत्संगहि प्रगटत गुन प्राचीन ।
श्री बिहारी निहचै मन मानौ, जापै हरि हित कीन ॥

सतगुरु गोविंद बैद बिहारी ।

दीनौ मधु मथि प्रेम सुऔषधि अमर यहै उपचारी ॥
नैकु बदन दरसैं दुख जानत, बिनु परसैं कर नारी[6] ।
काम कुरोग ग्रसत संसृति मनु त्रस्ना हरी हमारी ॥
अति निरपेच्छ उदार कहावत संतत सब सुखकारी ।
श्री बिहारी दास मृतक की प्रगट प्रतिग्या पारी[7] ॥

१ मिट्टी का एक टोंटीदार बरतन । २ कंबल । ३ रद्दी । ४ कष्ट । ५ भक्तों से । ६ नाड़ी । ७ पाली, पूरी की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनौ करि काहे बौरावौ।
करुना निधि, नित विदित जगत जस,
हमहिं कहा जो बिरद लजावौ॥
उकति जुगति बिनती संभ्रम तें,
कहत रहत, दुख दोष नसावौ।
अपनी रुचि राचौ बिरचौ तुम,
पारस परसि कै कनक बनावौ॥
ग्यानी अभिमानी हौं नाहीं,
जन जानौ कछु कहौ कहावौ।
तुमहिँ न दोष लगै न मोहि अहं-
कार सु मो मन मतैं दृढ़ावौ॥
मोहि न सकुच होइ नहिं तुमही,
झुकत रीति पगु धरनि धरावौ।
दास बिहारी प्रभु सुख सागर,
त्यों राखौ ज्यों तुम सुख पावौ॥

सब रस को रस तिलक सिँगार।
जैसे सब अँग अँग को भूषन, अतिसै लसतु लिलार॥
बरनाश्रम कूपननि में राजत, भगवत भक्त उदार।
कायर कोटि कटक में सूझत सूर सजै हथियार॥
निसि नछत्र तब हीलौं जौलौं[1] ससि न कियौ उदगार[2]।
तैसे ही महराज के आगे, परजा को ब्यवहार॥
नाम बीज, नामी तरु साखा, साधन पुहुप अपार।
बिविध भाव फल मेवा कत बिनु निज रस रूप बिहार॥
निरौ अचार कहा लै कीजै, करौ बिवेक बिचार।
श्री बिहारी दास प्रानिन को, श्री हरिदास अधार॥

---

१ जब तक। २ उदय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला फूल

[ले०—श्रीयुत गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश']

अयि वनलते ! कभी क्या तू ने,
देखा है वह सुन्दर फूल ।
झूम रहा है जो मस्ती से,
निज अनन्त यौबन में भूल ?
अरी, बताते हैं सब उसको,
बड़ा रसीला लीला धाम ।
मैं भी मत्त हो गई हूं,
मृदु मूर्ति देख उसकी अभिराम ॥
इसी कुञ्ज में मैंने उसका,
नव यौबन निखरा देखा ;
यहीं अकेले मैंने उसका,
वर सौरभ बिखरा देखा ॥
जब से उसको देखा आली !
भूले जग के सारे क्लेश ।
पीती हूं कल्पना-दृष्टि से,
उसकी छबि का रस अनिमेष ॥
जब अपने अनन्त यौबन के,
मद से ही वह ऊब गया ;
मैंने देखा परम रसिकता के,
रस में वह डूब गया ॥
अपने ही मधु में फिर उसने,
तीखेपन की करदी सृष्टि ;
और बनाया काँटा उससे,
करने को संकट की वृष्टि ॥
फिर निज मादकता से ही कर,
मधु-ग्राहकता का निर्माण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस के लिए अधीर बावले,
अलि का उसे बनाया प्राण ॥

इस प्रकार वह फूल स्वयं ही,
कांटा और भ्रमर भी बन ;
अपना ही तन लगा चुभाने,
पाने को अपना मधु धन ॥

और उसी पीड़ा के भीतर,
पाया उसने रस-भाण्डार ,
फूला झूम झूम के झूला,
पी कर के अपना ही सार ॥

जब से मैंने देखा उसको,
पाई है मानस में शान्ति ;
धीरे से दृग-द्वारे से बह,
निकल गई है जी की क्लान्ति ॥

मेरे लिए मौन रजनी में,
तू है रुदन किया करती ;
सस्मित वदना हो कर के भी,
छिप छिप आहें है भरती ॥

किन्तु विवेक-शून्य इस पीड़ा से,
न मुझे तू पावेगी।
इसी भाँति रो रो कर के ही,
हाय ! भगिनि मर जावेगी ॥

इसी फूल के यौवन-मधु की,
धारा आज बनी हूं मैं ;
इसकी पंखड़ियों की लाली में ही,
आज सनी हूं मैं ॥

तू भी इस के नवयौवन को,
आके दृग-जल-धारा दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ आरुण्य हृदय-शोणित का,
इस के दल को न्यारा दे ॥
तेरा सौरभ इस में आवे,
तू इस का सौरभ पा जाय ;
इस का यौवन तुझ में जावे,
तव यौवन इस में आजाय ॥
फिर तो मेरा तेरा सौरभ,
औ मेरा तेरा यौवन ।
एक बनेंगे; मेरा तेरा,
होगा बड़ा अपूर्व्व मिलन ॥
मिट जावेगी सारी चिन्ता,
गत होगी मिथ्या पीड़ा ।
मेरे संग लगेगी करने !
हे व्यथिते ! अनन्त क्रीड़ा ॥
तो फिर यहीं चली आया कर,
जगते क्यों न रहें सब लोग ।
कोई पता नहीं पावेगा,
सध जावेगा तेरा योग ॥
भगिनि, हताश नहीं हो जाना,
पहले जो न पड़े वह दीख ,
रोती जाना दिखे न जब तक,
भूल न जाना मेरी सीख ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्नोत्तर

एक स्नेह--हीन बुझते हुए दीपक से

[ले०—श्री मोहनलाल महत्तो गयावाल]

चले ? चला ! अः जरा देर तो और ठहरिये ?
समय नहीं है ! कहना हो वह सत्वर कहिये !
कृपा करेंगे क्या न मुझे यह बतलाने की-
इतनी जल्दी पड़ी हुई है क्यों जाने की ?
सुनिये, स्नेह-विहीन है जीवन दुखमय हीन-तम,
अतः चला मैं; विदा दो; प्रियवर वन्देमातरम् ।

समालोचना-सिद्धान्त

[ले०—श्रीयुक्त नवीनचन्द्र]

पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदीजी ने सम्मेलन पत्रिका के गत अङ्क में मेरे एक लेख के सम्बन्ध में मुझ से कुछ प्रश्न किये थे। उन्हीं के सम्बन्ध में मुझे कुछ निवेदन करना है।

चतुर्वेदीजी का पहला प्रश्न यह है कि क्या ज्ञान और ज्ञाता के बीच एक ज्ञापयिता की आवश्यकता नहीं है। मेरा निवेदन है कि ज्ञान निराधार वस्तु नहीं है, वह ज्ञापयिता से पृथक् नहीं रहता। चतुर्वेदीजी के कथन से यह सूचित होता है कि ज्ञान कवियों के मस्तिष्क में निराधार उड़ता रहता है, स्वयं कवि उस ज्ञान के ज्ञापयिता नहीं हो सकते। इस लिए एक तीसरे आदमी की ज़रूरत होती है। यह आदमी कदाचित् आपकी राय में समालोचक है। समालोचक अपने ज्ञान का ज्ञापयिता हो सकता है, पर वह कवि के ज्ञान की दलाली कर सकता है, उसका ज्ञापयिता नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्वेदीजी का दूसरा प्रश्न यह है कि ग्रन्थकार और पाठक के सिवा सम्पादक, प्रकाशक, प्रभृति हैं। उनका उल्लेख क्यों नहीं किया गया? आप यह भी कहते हैं कि मनुष्यों में गधों की गणना क्यों न की जाय। इसके बाद आपने मुझ से यह पूछा है कि स्वयं क्यों यह अनधिकार चर्चा कर रहा हूं।

चतुर्वेदीजी के इस प्रश्न के पूछने से यह मालूम होता है कि प्रत्येक बात के लिखने में हमें ईश्वर के सिंहासन तक दौड़ लगानी चाहिये। आप कहते हैं कि मैंने ग्रन्थकार ही का नाम क्यों लिया। मुझे वहाँ सम्पादक और मुद्रक के सिवा दावात, कलम, कागज, स्याही, मिट्टी, कुम्हार, लुहार, भट्टी, आग, पञ्च तत्व और ईश्वर जोड़ देना चाहिए, क्योंकि इन्हीं की सहायता से कोई लेख लिख सकता है। चतुर्वेदीजी विद्वान् हैं, वे अपने लेख में सब का उल्लेख कर सकते हैं, मनुष्यों में गधे को भी शामिल कर सकते हैं, उन्हें यह करने का अधिकार है, परन्तु आपने मुझे यह अधिकार नहीं दिया है कि मैं समालोचना के विषय में एक लेख भी लिख सकूं।

अन्त में चतुर्वेदीजी ने जो प्रश्न पूछे हैं उन से उनका मतलब यह है कि समालोचना साहित्य की कसौटी है, समालोचक साहित्य वाटिका का माली है। अतएव ये दोनों आवश्यक हैं। मैं कसौटी और माली की आवश्यकता समझता हूँ, पर मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि समालोचना साहित्य की सच्ची कसौटी है और समालोचक साहित्य का सच्चा माली है। चतुर्वेदीजी समझते हैं कि समालोचक साहित्य में मलिन रचनाओं को दूर कर सकता है। चतुर्वेदीजी फ्रेञ्च साहित्य के मर्मज्ञ हैं, वे साहित्य-सम्मेलन को फ्रेञ्च एकेडमी बनाना चाहते हैं। मैं उन से पूछता हूं जिस साहित्य की रक्षा के लिये फ्रेञ्च एकेडमी के समान संस्था है, जिस में एक से एक धुरन्धर समालोचक हैं, उसमें कितने गन्दे और अश्लील उपन्यासों और नाटकों का प्रचार है। चतुर्वेदीजी ने तो फ्रेञ्च साहित्य का अध्ययन किया है, वही बतलावें कि फ्रांस के समालोचक क्या फ्रेञ्च साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से घास-फूस को दूर कर सके हैं। यदि समालोचना साहित्य की सच्ची कसौटी समझी जाय तो किस समालोचक की समालोचना को आप सच्ची कसौटी समझेंगे? सभी समालोचकों की क्या एक राय होती है? यदि नहीं तो जिस तरह कसौटी से सोने की परीक्षा हो जाती है, उसी तरह क्या समालोचना से साहित्य की परीक्षा सम्भव है? फिर आप कसौटी से समालोचना की क्यों तुलना करते हैं?

मैं समालोचना की उपयोगिता स्वीकार करता हूं, पर किस समालोचना की? उस समालोचना की नहीं, जो न्यायाधीश की कलम से निकली है, पर उस समालोचना की जो एक ज्ञाता की कलम से लिखी गई है। मैंने 'हिन्दी भाषा और साहित्य' के अन्त में इसकी जो चर्चा की है उसीका सारांश यहां लिखता हूं। इससे मेरा विचार स्पष्ट हो जायगा।

भारतीय साहित्य के साथ भारतीय समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध पर ध्यान देकर हमें हिन्दी-साहित्य की समालोचना करनी होगी। टेन, जार्ज ब्रैन्डस, डाउडन् आदि समालोचकों की रचनाओं को पढ़ने से यह मालूम होता है कि साहित्य और जातीय जीवन में परस्पर क्या सम्बन्ध है। ऐसे ही साहित्य-समालोचकों द्वारा जातीय चरित्र-गठन होता है। यही यथार्थ दार्शनिक हैं, साहित्य के पथ-प्रदर्शक और जातीय जीवन के नियामक हैं। फ्रांका नामक एक विद्वान ने जर्मन-साहित्य में समाज-शक्तियां नामक एक ग्रन्थ लिखा है। उसकी भूमिका में आपने लिखा है—एक ऐसे ग्रन्थ की बड़ी आवश्यकता है जो जर्मन देश के उस जीवन-स्रोत का रहस्य समझावे जो उसके साहित्य में विद्यमान है। विद्या और विज्ञान विषयक जो आन्दोलन देश में होता है उसकी उत्पत्ति समाज में ही होती है। और वही समाज की स्थिति को बदल देता है। ऐसे आन्दोलनों के साथ देश की सामाजिक और राजनीतिक अवस्थाओं में जो पारस्परिक सम्बन्ध है उसे बतला देना चाहिए। मतलब यह कि एक ऐसा ग्रन्थ तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जिसमें साहित्य से ही जर्मनजाति का इतिहास सङ्कलित किया जाय। एक दूसरे विद्वान ने कहा है कि किसी भी साहित्यिक ग्रन्थ की समीक्षा दो प्रकार से की जा सकती है, एक तो कला की दृष्टि से और दूसरी इतिहास की दृष्टि से। कला की दृष्टि से विचार करने पर कोई ग्रन्थ स्वयमेव पूर्ण ज्ञात होता है। संसार से वह सर्वथा पृथक रहता है। इससे उसका किसी तरह का सम्पर्क नहीं रहता। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर कोई भी ग्रन्थ, चाहे उसमें कला का पूर्ण निदर्शन क्यों न हुआ हो, असम्पूर्ण ही जान पड़ेगा। वह संसार के जीवन जाल का एक धागा-मात्र रहेगा। कला की दृष्टि से हम ग्रन्थ के अन्तर्गत मूल-भाव को बाह्य संसार पर दृष्टि-निक्षेप न करके भी समझ सकते हैं। परन्तु जब हम ऐतिहासिक रीति से उस पर विचार करेंगे तब हम उस ग्रन्थ की मूल-भावना में भी कार्य्य-कारण का सम्बन्ध देख सकेंगे। तब हम उस ग्रन्थ में पहले कवि का व्यक्तित्व देखेंगे और कवि के व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें तत्कालीन समाज की स्थिति पर विचार करना पड़ेगा। क्योंकि उसी स्थिति में रहकर कवि का व्यक्तित्व विकसित हुआ है।

यह तो सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है, वह समाज की यथार्थ अवस्था का द्योतक है। परन्तु हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि समाज पर भी साहित्य का बड़ा प्रभाव पड़ता है। साहित्य के द्वारा समाज का आदर्श निश्चित होता है और उसी के अनुसार मनुष्यों का सामाजिक जीवन सङ्गठित होता है। हिन्दी-साहित्य का महत्व यही है कि जब हिन्दू समाज में एक प्रकार की उच्छृङ्खलता फैल रही थी, जब जनसाधारण अपने जातीय आदर्शों को भूल रहे थे, तब इसी साहित्य ने उनके सामाजिक जीवन को शृङ्खला-बद्ध रक्खा। इसी ने उन आदर्शों का प्रचार किया जो अब हिन्दू-समाज के गार्हस्थ्य और धार्मिक जीवन में स्वीकृत हुए हैं। अतएव जो हिन्दी-साहित्य का इतिहास लिखेगा वह हिन्दू समाज की अन्तरात्मा का पता पा जायगा। अथवा यह कहना चाहिए जिसे उसका पता नहीं, वह हिन्दी-साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का इतिहास लिख भी नहीं सकता। हिन्दी-साहित्य में जिन विद्वानों को समालोचना से प्रेम है उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

समालोचना के विषय में मेरा (यदि मैं इसे अपना कह सकता हूं, क्योंकि यथार्थ में मेरा यह विचार चतुर्वेदीजी के समान भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का फल है) यही सिद्धान्त है। चतुर्वेदीजी खुशी से माली बन कर साहित्य की वाटिका में खुरपी चलावें और दूसरों को भी यही करने की आज्ञा दें। पर मेरी समझ में उनका परिश्रम व्यर्थ है। साहित्य वाटिका नहीं, अरण्य है। इसका विस्तार बढ़ता ही जाता है। यहां सभी तरह के झाड़ होते हैं और होंगे। यदि आपको चन्दन का शौक है तो चन्दन खोज लीजिए और दूसरों को भी बतला दीजिए। घास-फूस की चिन्ता करना व्यर्थ है। वर्षा के दिनों में इनका अस्तित्व अवश्य बना रहेगा। ग्रीष्म की ज्वाला में ये झुलस जायँ पर नष्ट होने के नहीं। फिर भी यदि चतुर्वेदीजी को खुरपी का कच-कच शब्द पसन्द है तो अच्छी बात है। समरथ को नहिं दोष गुसाईं।

छद्मयोगिनी

(गतांक के आगे)

द्वितीय दृश्य

स्थान—महाराज वृषभानु का उपवन

(श्री राधिकाजी ललिता, बिसाखा, मंजुमालिनी आदि सखियों सहित बैठी हैं)

ललिता—(बिसाखा से) अरी बीर, कल तैंने जल्दी जल्दी में श्रीजी का बनाया छन्द सुनाया था। मुझे उसके सुनने की फिर उत्कण्ठा है। तेरी बलैयाँ लेती हूं, एक बार और सुनाय दे।

मंजु०—हाँ, सखी मेरी भी साध पूरी करदे

बिसाखा—सब की साध पूरी किये देती हूं। सुनो—

श्री राधा—(बिसाखा से) चल, रहने दे। बड़ी छन्द सुनाने वाली आयी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि०—सुनाने में कौन सी हानि है ? क्या रसिक जनों की साध पूरी न करूं ? सुनो, बीर—

सवैया

जैहौ किते, चित चोर लला !
मन मन्दिर में तुम्हैं कैद करौंगी।
बाँधिहौं हाथ 'हरी' कसिकै,
बसिकै छिन में चतुराइ हरौंगी ॥
त्यौं तिरछी भ्रकुटी-लकुटी गहि,
नाच नचाइ कै दण्ड भरौंगी।
बैनु दुराइ कै, हार हराइ कै,
हाहा कराइ कै प्यारे ! टरौंगी ॥

मंजु०—बीर, एक बार और।

श्री राधा—क्या तुम सब को और कुछ काम नहीं है ?

मंजु०—श्रीजी महाराज, यह छंद सुन कर मुझे इस दोहे का स्मरण आ गया कि—

आउ पियारे मोहना, पलक झाँपि तोहि लेउँ।
ना मैं देखूं और को, ना तोहि देखनि देउँ ॥

ललि०—धन्य श्रीजी को ! कैसा ऊंचा भाव है। अहा ! "ना तोहि देखनि देउँ"—कहीं कैदी भी अपनी मन मानी कर सकता है ?

वि०—हाँ, समझ गयी। यह चंद्रावलीजी पर कहा गया है।

ललि०—श्रीजी को, प्यारे का चंद्रावली की ओर देखना ही तो खलता है। ठीक ठीक,—ना तोहि देखनि देउँ। न देखेंगे, जो आप की आज्ञा होगी सो करेंगे।

श्री राधा—क्यों व्यर्थ बातें बनाय रही है ? अरी, कहीं कविता भी साँची होती है ? यह तो कोरी कल्पना है, मनोरंजन है। किस की सामर्थ्य, जो प्यारे को किसी की ओर न देखने दे या उन्हें बाँध कर अपने बस में रख सके ?

वि०—आप की, आप की, और किसी की नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राधा—बीर, क्यों झूठ मूठ हँसी उड़ाय रही है? प्यारे तो स्ववश विहारी हैं, अपने मन के ठाकुर हैं। उन्हें किसी का दरद और माया मोह थोड़े ही है। (आह लेती हैं)

वि०—यह आप का भ्रम है। प्यारे—प्यारे अपने मन के नहीं, आप के मन के हैं।

ललि०—बेदाम के गुलाम हैं। सुन—

सवैया

जो अनवेद्य अनादि अनंत अखंड,
अनन्य अनूप अकाम है।
जाहि निरूपहिँ वेद सदा कहि,
नित्य निरीह निरंजन नाम है॥
जो जन रंजन दुष्ट विभंजन गंजन
गर्व 'हरी' सुखधाम है।
सोइ त्रिलोक को नाथ अली!
वृषभानु लली की गली को गुलाम है॥

मंजु०—सत्य है, सत्य है। कल ही की बात है, साँकरी गली में प्यारे अपनी धुन में यह गीत गाते चले जा रहे थे।

ललि०—सखी कौन गीत? याद होय, तो सुनाय दे।

मंजु०—याद तो है, पर वह सुरीली धुन कहाँ पाउँगी।

वि०—तू सुरीली न होगी तो होगा कौन!

मंजु—सुनो—

दादरा

राधे, छाँड़ो मान, विनय सुन मोरी।
तैं मो प्रान, मैं प्रान तिहारो, दो तन एकहि प्रान;
कहौं तृन तोरी। राधे० ॥
मैं चकोर तैं चन्द्र, मोर मैं, तैं घनमाल समान;
सरस रस बोरी। राधे० ॥
मैं चातक तैं स्वाति रँगीली, देहु प्रेम रस दान;
मान मति भोरी। राधे० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सेवक तैं सुरति स्वामिनी, प्यारी परम सुजान;
अचल हरि जोरी। राधे० ॥

दोहा

ललिता—जोड़ी जुगलकिसोर की, अचल रहौ जुगचार।
हम चकोर ह्वै नित लखैं, जुगल चन्द्र सिंगार ॥

बि०—बस—

बार बार ब्रज जनम लै, सेवैं स्यामा स्याम।
भुक्ति मुक्ति ठुकराय कै, पावैं नित निज धाम ॥

मंजु०—हम सब सदा प्रिया प्रीतम की टहल करती रहैं, यही अंचल पसार पसार बिधिना से माँगती हैं।

वि०—वीर मंजु, तू मान सम्बन्धी गीत समझ गयी न ?

मंजु—सखी, नहीं। यही समझ पाई कि प्यारे श्रीजी के लिये कैसे अधीर रहते हैं। न जाने, श्रीजी को मान करने में क्या आनन्द मिलता है ?

श्री०—सखी, कुछ न पूंछ। प्रेम का पंथ ही कुछ ऐसा है। अंतर में मान न रहते हुए भी कभी कभी ऊपरी मान आ ही जाता है। मैं मन में बहुत पछताती हूं। प्यारे की अधीरता देख देख क्या मेरा वज्र हृदय फटता नहीं है ? (आह लेती हैं।)

बि०—श्रीजी, आप दोनों की लीला अपार है, मन बानी से परे है। आप दो तन एक प्राण हैं। हम संसारी विषयी जीव आप की प्रणय-महिमा कैसे समझ सकते हैं।

नेपथ्य में—

"गुही है प्रेम माधुरी माल।"

श्री राधा—कैसा मधुर गीत है ! बिसाखा, कौन गाय रहा है ?

वि०—देखूँ ! (ध्यान से सुन कर) हाँ, माधवी है। फूल तोड़ने गयी थी। वही यह मधुर गीत अलाप रही है।

(फूलमाला लिये माधवी का प्रवेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राधा—प्यारी माधवी, क्यों रुक गयी! अपना मधुर गीत सुनाती क्यों नहीं?

माधवी—श्रीजी की जो आज्ञा।

गीत

गुही है प्रेम माधुरी माल।
धारिये उर पै ब्रज गोपाल॥
हिये में उपवन रम्य बिसाल।
भाव के फूले फूल रसाल॥
लगन को सूत रंगीलो लाल।
गुंथे हैं तामें कुसुम के जाल॥
पियारे, मानस मंजु मराल।
धारिये, आय हरी! बनमाल॥

श्री राधा—माधवी, आज तूही प्यारे को अपने हाथ से यह माधुरी माल पहिनाय दीजो। (विसाखा से) बीर, मालती कहां है? अबलौं नहीं आई।

बि०—उपवन ही में तो रही। यहीं कहीं घूमती होगी। क्या बुलाय लाऊँ?

श्री राधा—हाँ।

बि०—जो आज्ञा।

नेपथ्य में—

"रंगीली जोगिन जादूवारी।"

श्री राधा—सुनो, सुनो—क्या ही मधुर गीत है। सुर तो मालती कैसा लगता है, कौन है बिसाखा?

बि०—हाँ, मालती तो है। अहा!

नेपथ्य में—

रँगीली जोगिन जादूवारी।

श्री०—इधर ही आ रही है। सुनो, सुनो—

नेपथ्य में—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम सलौनी सुघर सांवरी, जोवन रंग मतवारी ॥

बि०—अहा !

भाल भसम कुंडल कानन में, मुख पै लट लटकारी ।
भगवा बसन कंठ बिच सेली, निपट नवेली नारी ॥
आसन मारे ध्यान लगाये बैठी अति सुकुमारी ।
चेली या की जाय होऊँगी, छाँड़ि सबै संसारी ॥

श्री राधा—एँ! ऐसी कौन सी पहुंची हुई जोगिन आय गयी जो मालती जैसी चंचला को भी चेली बनाय लेगी? चलो, नैक उसे देखैं तो।

बि०—अवश्य देखना चाहिए।

(श्री राधिका जी सब सखियों सहित मालती के पास जाती हैं।)

तृतीयाङ्क

प्रथम दृश्य

(मालती 'रंगीली जोगिन' आदि बार बार गाती है, श्रीराधिकाजी योगिनी के विषय में उससे पूछती हैं)

श्री राधा—मालती, तुझे क्या हुआ है? पागल तो नहीं हो गयी! किस जोगिन के गुन गाय रही है? कहां है वह जादूवाली जोगिन?

मालती—परम सलौनी सुघर साँवरी—

ल०—हाँ, सुन लिया, पर वह साँवरी जोगिन है कहाँ? कुछ कहैगी भी कि नहीं?

मालती—कहाँ है? मेरे हृदय में है, आँखोंमें है, रोम रोम में है। चल, दिखाय दूँ—

भाल भसम कुंडल कानन में...

मैं तो उसकी चेली बनूँगी, रात दिन सेवा करूँगी, सदा दर्शन करती रहूंगी। अहा!

मुख पै लट लटकारी।

(पागल का नाट्य करती है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राधा—चल दिखा—कहाँ है तेरी जोगिन ?

मालती—जो आज्ञा ।

चेली या की जाय होउँगी, छाँड़ि सबै संसारी—

(गाती हुई सब को लेकर जाती है)

द्वितीय दृश्य

(श्री कृष्ण योगिनी वेश में एक शिला पर ध्यानावस्थित बैठे हैं)

वि०—अहा ! ऐसी सुंदर सलौनी सूरत तो आज तक कहीं नहीं देखी । जोगिन क्या है, रूप की रासि है, तेज की पुंज है ।

ल०—सखी, तपस्या का तेज इसके मुखमंडल पर सूर्य जैसा झलक रहा है ।

मंजु०—सो तो सब ठीक है, पर वैराग्य अभी पूरा २ नहीं चढ़ा है ।

ल०—अभी वयस ही क्या है ?

वि०—क्यों वीर, यह बालावस्था ही में जोगिन क्यों हो गयी ?

मंजु०—मेरे जान इसने किसी के प्रेम में पड़ कर जोग धारन किया है ।

वि०—ताड़ा तो खूब ! देखो न, अधरों पर अनुराग का कैसा हलका हलका रँग झलक रहा है ।

ल०—यही क्यों, यदि आँख खोल दे तो वहां भी प्रेमरस छलकने लग जाय ।

श्री०—क्यों व्यर्थ बक बक लगाये हो ? जोगिन से यह पूँछो कि वह कहां से आयी है ।

वि०—जो आज्ञा ।

(विसाखा योगिनी के पास जाकर उसका नाम धाम आदि पूँछती है)

वि०—जोगिन जी, नैक नेत्र तो खोलो । आप कहाँ से पधारी हैं ? आप का नाम क्या है ?

योगिनी—(नेत्र खोल कर) नारायण, नारायण ! आत्म-चिंतन करने में कैसे विघ्न आते हैं । क्या ही शान्ति समाधि लग रही थी, कैसा इन लोगों ने आकर भजन भंग किया । शिव शिव ! (विसाखा से) इस शरीर को "सिद्धेश्वरी" कहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल०—आप का स्थान कहाँ है ? इस समय कहाँ से पधारी हैं ?
यो०—अपने राम का कोई एक स्थान तो है नहीं। रमते राम हैं। यह शरीर, आज बाराह क्षेत्र से आ रहा है। यहाँ एकान्त में जलाशय आदि का सुपास देख कर ठहर गयी थी, इतने में तुम सब ने आकर शान्ति भंग कर दी। नारायण नारायण!
मंजु०—जोगिन जी, आपने हमारी सखी मालती पर कौन सा जादू टोना कर दिया ? देखो, इसकी कैसी दशा हो गयी है। कहती है, मैं जोगिन की चेली हो जाउँगी।
यो०—न माई, मैं किसी को चेली बेली नहीं बनाती। अपने राम तो अकेले ही विचरते हैं।
वि०—जोगिन जी, हम सब आप की चेली हो जायँगी। कृपा कर आप इतना बताय दें कि आप ने ऐसी छोटी बयस में क्यों जोग धारन कर लिया ?
यो०—जितनी जल्दी हो सके संसारी झंझट छोड़ कर इस चंचल चित्त को आतम चिंतन में लगाना चाहिए ! न जाने, कब काल-कलेवा होना पड़े। 'शुभस्य शीघ्रम्' समझ कर ही मैंने यह धारणा धार ली है।
ल०—जोगिन जी, अपराध क्षमा हो, तो कुछ कहूं।
यो०—माई, क्या पूँछती है !
ल०—आप किसी बड़े राज घराने की बेटी समझ पड़ती हैं। आप पर वैराग्य का रंग कैसे चढ़ गया ?
श्री राधा—(ललिता से) क्यों जोगिनजी को सताय रही है ! (योगिनी से) आप भजन कीजिए। यह सब तो गँवार हैं।
यो०—माई, तू समझदार जान पड़ती है। तेरा भाग्य भी बड़ा शुभ है। तू किसकी पुत्री है ?
श्री राधा—महाराज वृषभानु मेरे पिता और कीरति मेरी माता हैं। ये सब सखी सहेलियाँ हैं।
योगिनी—क्या राधा तेरा ही नाम है ? अहा !
बि०—क्यों, जोगिन जी, आप ने श्रीजी का नाम कैसे जाना ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंजु०—जानती नहीं, जोगियों की पहुँच तीन लोक और चौदह भवन में होती है, और फिर, हमारी श्रीजी का तेज और प्रताप कहीं छिप सकता है ?

यो०—राधे, तू योग की अधिकारिणी है। मैं तुझे योगाभ्यास सिखाय दूँगी। इस नगरी में मुझे कोई योग-विद्या का अधिकारी नहीं मिला। पर, तू राजकुमारी है, भला हम योगियों की बातों में क्यों आने लगी ?

श्री राधा—जोगिन जी, योगाभ्यास सीखने से कौनसी वस्तु मिल जाती है ?

यो०—ज्ञान और विवेक।

श्री राधा—इनसे क्या होता है ?

यो०—आत्मा के सच्चे स्वरूप का दर्शन।

श्री०—फिर ?

यो०—इस संसार से मुक्ति।

श्री०—कैसी मुक्ति ?

यो०—संसार के दुःखों से सदा के लिये छूट जाना और अपने सहज स्वरूप की प्राप्ति कर लेना।

श्री०—हम सब को इस मुक्ति की चाह नहीं है।

यो०—क्यों ?

श्री०—यह ब्रजमंडल संसार से परे है। यहां संसारी त्रिविध ताप नहीं व्यापते। हाँ, जो आपके योगाभ्यास में कुछ प्रेम का तत्व होता, तो हम सब बड़े चाव से इसे सीख लेतीं।

यो०—(हँसकर) राज कुमारी ! यह झूठी बातें कहां सुनी है ? जहाँ तक मन वाणी की पहुंच है, वहाँ तक माया और संसार है। आत्म-लाभ के आगे प्रेम क्या वस्तु है ?

वि०—जोगिन जी, श्रीजी सत्य कहती हैं। हमारे ब्रज में तुम्हारी मुक्ति भी मुक्त हो जाती है। क्या सुना नहीं है—

मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय।
ब्रजरज उड़ि मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री०—हाँ, सखी ! जोगिन नयी है, बेचारी ब्रजभूमि की महिमा नहीं समझ सकती ।

मंजु०—यही समझने को तो संसार छोड़कर सिद्धपीठ बरसाने में तपस्या करने आयी है ।

यो०—नारायण, नारायण ! तुम लोग ज्ञान विवेक की बात तो समझती ही नहीं, लगीं उलटी मुझे ज्ञान देने !

श्री०—जोगिन जी, हम सब इतना योग, ज्ञान, विवेक तो सीख चुकी हैं, इससे आगे कहिये, क्या है ?

यो०—मुक्ति के आगे क्या है, कुछ नहीं कह सकती । इस अवस्था में जीव और ब्रह्म एक रूप हो जाते हैं ।

श्री०—एक रूप होने से क्या लाभ है ?

ल०—खांड़ के खाने में ही सुख है, स्वयं खांड़ बन कर क्या करेंगी ! बाबा, छोड़ा ऐसा जोग ।

श्री०—जोगिन जी, संसार से जब मुक्ति हो गयी, तब मुक्ति के बाद जो सुख है, उसका वर्णन कीजिए ।

यो०—मुक्ति के आगे पीछे का वर्णन कैसा ? वह तो स्वयं सुख रूपा है ।

श्री०—मैं आप का वेदांत नहीं समझती । सीधी सीधी बात कहिए, क्या योगाभ्यास से प्रेमस्वरूप वृन्दाबन-बिहारी की प्राप्ति हो सकती है ? मुक्ति के आगे भी कुछ है, और वह यही मिलन सुख है । देखो, राग कैसा दुःखदायी है ! उसे छोड़ कर वैराग्य लेना पड़ता है, किन्तु वैराग्य ही सर्वस्व नहीं है, इसके आगे अनुराग है । इसी प्रकार संसार से मुक्त होकर, मुक्ति से भी मुक्त होना पड़ता है, और वह अवस्था निष्काम शुद्धप्रेम द्वारा ही प्राप्त हो सकती है, योग द्वारा नहीं ।

यो०—राजकुमारी ! तू बड़ी चतुर है । योग विद्या का अधिकारी होने पर भी कुछ चंचलता है, इसी से तुझ पर मेरा ज्ञान ठीक ठीक नहीं जमता । यह लड़कपन है, और कुछ नहीं !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंजु—श्रीजी का तो लड़कपन है, और आप कौन बड़ी पुरखा हैं ?

श्री०—जोगिन जी, आप इन लोगों के कहने का बुरा न मानना। ये आपकी महिमा नहीं समझ सकती।

यो०—राधे, मैं तेरी बुद्धि पर बड़ी प्रसन्न हूं। हां, अभी तूने क्या कहा था ? यही न कि मुक्ति के बाद प्रेमस्वरूप वृन्दावन बिहारी की प्राप्ति होती है। वृन्दावन बिहारी से तेरा क्या तात्पर्य है ?

श्री०—आश्चर्य है, कि आप वृन्दावन-विहारी को नहीं जानतीं !

यो०—नहीं।

श्री०—फिर जाना ही क्या ? सुनिये—

ब्रज वल्लभ आनंद-रासि सब उर पुर बासी।
योगेश्वर नँद नंद मुक्ति हू जिन की दासी॥
स्ववस बिहारी भावते, नित किसोर घनस्याम।
हम सब के प्रीतम सोई, हरि पूरन सुखधाम॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—निराकार निरगुन निरीह नित अज अविनासी।
परब्रह्म परमेश एक सब उर पुर वासी॥
जाके नाम न रूप गुण, अखिल सच्चिदानंद।
सो ब्रज कैसे आइ कै, परयो प्रेम के फंद॥
कहौ नव नागरी।

श्री०—होइ धरम की हानि जबै अधरम बढ़ि जावै।
नर तनु धरि जन रंजन हरि तब भूतल आवै॥
कृष्णचंद्र पूरन कला, लैकै ब्रज अवतार।
देत ब्रह्म सुख नित हमैं रचि रचि रास बिहार॥
सुनौ हो जोगिनी।

यो०—निरविकार अज ब्रह्म रचै किमि रास बिहारै।
अखिल लोक को ईश कहो किमि नर तनु धारै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निगम निरूपहिं नेति कहि, जाके तात न मात ।
सो किमि ब्रज गोपीन गृह, दुरि दुरि माखन खात ॥
कहौ नवनागरी ।

श्री०—निगम निरूपहिं जाहि, दरस योगी नहिं पावैं ।
हम सब दै दै छाछ ताहि नित नाच नचावैं ॥
जाने हरिहर विधि सबै लिये बाँधि निज फंद ।
सोइ जसुमति ऊखल बँध्यो, सुद्ध सच्चिदानंद ॥
सुनो हो जोगिनी ।

यो०—ज्योति रूप वह ब्रह्म अगोचर अकथ अभोगी ।
साधि समाधि अखंड जाहि पावै इक योगी ॥
करि विराग संसार सौं, साधि योग के अंग ।
जीव लीन करि ज्योति में, मिलै ब्रह्म रस रंग ॥
सुनो नव नागरी ।

श्री०—आसन प्राणायाम साधि क्यों समय गमावै ।
भक्ति योग सौं जो प्रियतम अधरामृत पावै ॥
सोहं सोहं जपै क्यों, पचै समाधि लगाइ ।
क्यों न रास रस लूटिलै, ब्रज वल्लभ आराधि ॥
सुनो हो जोगिनी ।

यो०—योग साधना साधि क्यों न निरगुन पद पावै ।
ओंकार आराधि आधि औ व्याधि नसावै ॥
आदि रूप ओंकार है, निगमागम को मूल ।
यातें ब्रह्मानँद मिलै, मिटै त्रिविध जग सूल ॥
सुनो नव नागरी ।

वि०—श्रीजी की नूपुर तें प्रगट्यो प्रणव तिहारो ।
ज्योंति ज्योति जिहि कहत, प्रिया-पदनख उजियारो ॥
जुगुल रूप रस माधुरी, निगमागम की मूल ।
नैक नैन की कोर तें, मिटै त्रिविध जग सूल ॥
सुनो हो जोगिनी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल०—रूखी सूखी जोग कथा तेरी को सुनिहै।
ब्रज बिहार तजि सरस ज्ञान नीरस को गुनिहै॥
मेवा मिसरी पाइ कों, नीम निबौरी खाइ।
कामधेनु तजि बावरी, छेरी कौन दुहाइ॥
सुनो हो जोगिनी।

मंजु०—कहँ समाधि में मधुप पुंज गुंजरत कुंज री।
कहँ कदम्ब घन छाँह बिपिन वृन्दा सुमंजरी॥
नहिं गोवर्धन गिरि तहाँ, नहिं कालिन्दी कूल।
नहिं बीनन को मिलैं तहँ, नित सिंगार के फूल॥
सुनो हो जोगिनी।

माधवी०—साधि समाधि अखंड कहा योगी जन पायो।
अहंकार अति बढ्यो अष्ट सिधि जाइ फँसायो॥
करनी कछु कथनी कछू ज्ञानी दंभ स्वरूप।
प्रेम लच्छना भक्ति बिनु परे रहत भव कूप॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—कहा योग को तत्व गँवारिन गोपी जानै।
बिनु जौहरी अमोल रतन कोउ का पहिचानै॥
राग द्वेष में फँसे जे, समुझें नाहिं विवेक।
छाँडें नहिं हठ आपनी, गहि लीन्हीं जो टेक॥
सुनो ब्रज नागरी।

श्री०—रोष करौ जिनि दोष देहु गोपिन को प्यारी।
पै गँवार पै तुम बिरागिनी चतुर सुनारी॥
तुम्हें न माया मोह कछु होय चुकीं भव पार।
ब्रह्म ज्ञान के तत्व को जानै कहा गँवार॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—तो पर मेरो सहज नेह वृषभानु-कुमारी।
सिखा देउँगी योग अंग सब तोकों प्यारी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या ही उपवन में अली, राखौ प्राणायाम ।
देहौं तोहि बताय मैं, अचल मुक्ति को धाम ॥
सुनो नव नागरी ।

श्री०—बार बार क्यों कहति जोगिनी जोग सिखावन ।
साधि चुकीं हम जोग मिले प्यारे मन भावन ॥
इकटक त्राटक करैं नित, निरखि स्याम मुख चंद ।
मुरली अनहद नाद सुनि, दिये काटि जग फंद ॥
सुनो हो जोगिनी ।

यो०—बार बार तू प्रेम नेम की बात बढ़ावति ।
मेरो ज्ञान विवेक नैक नहिं मन में लावति ॥
ज्ञान मुक्ति को द्वार है, मोह बंध को मूल ।
राधे, ईश्वर जगत के, भोगनि सें मति भूल ॥
जोग तू साधि लै ।

श्री०—कौन करति इत मोह भोग जग के को चाहै ।
प्रेम पंथ अनुसरति सोइ लै कों तन दाहै ॥
मोह प्रेम में भेद कछु, समुझ्यो नहिं निरधारि ।
देति कहा उपदेस री, ज्ञान जोगिनी हारि ॥
बावँरी जोगिनी ।

मंजु०—जोगिन जी, अद्वैत वाद यह नीको गायो ।
हरिया हरी कपूर एक ही भाव लगायो ॥
राग मोह परपंच तजि, पायो पिय अनुराग ।
पहुँचि सकै नहिं जहँ कबौं, ज्ञान विवेक विराग ॥
तिहारे जोगिनी ।

श्री०—सचराचर में मदन मंजिनी पिय छवि छाई ।
नहिं काहू सौं द्रोह मोह समता इमि आई ।
स्याम रूप रस रसिक हम, पीवैं अधर पियूख ।
साधी सहज समाधि, तजि नींद प्यास अरु भूख ॥
सुनो हो जोगिनी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपथ्य में—

श्री राधे योगेश्वरी, धन्य तिहारो योग।
पिय अनुराग सुहागिनी, दिये त्याग जग भोग॥

वि०—ऐं ! यह कौन है !

ल०—सुर तो मैना जैसा है।

मंजु—(ऊपर की ओर देख कर) वीर, ठीक है। देख, इस तमाल वृक्ष पर दो सारिकाएँ बैठी हैं। यही हम सब का वाद विवाद सुन रही हैं।

ल०—अवश्य श्रीजी की ही जीत है, पंछी तक साखी दे रहे हैं।

मंजु०—(ऊपर की ओर देख कर) अरी मैना, तेरा क्या नाम है ! तू कहाँ से आय इस तमाल पर बैठ गयी ?

सारिका—हम दोनों न जाने कहाँ कहाँ विरमती हुईं इस सुन्दर उपवन में आ पहुँची हैं। आज श्रीजी के दर्शन कर हमारे जन्म सफल हो गये। मेरा नाम मान मंजरी और मेरी सखी का नाम कुंज कामिनी है। दासियों को क्या आज्ञा है ?

श्री०—मान मंजरी, सारिका होकर भी तू पंडितों जैसी बात कर रही है। तेरी बोली बड़ी मधुर लगती है। तुम दोनों, तमाल पर से उतर कर हमारे समीप आओ।

वि०—हम लोग तुम्हें योगिनी और श्रीजी के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ बनायँगीं।

दोनों सा०—जो आज्ञा।

(दोनों सारिकाएँ उतर कर श्रीजी के चरणों के समीप बैठ जाती हैं)

(शेष आगे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य निर्माण

[ले०—श्री० युगात्मा "क्रांति", सम्पादक श्रीस्वदेश]

टलीके सुप्रसिद्ध नवयुवक नेता मेजनी का कहना था कि बिना स्वदेश प्रेम और स्वतंत्रताके वास्तविक साहित्यका निर्माण होना असम्भव है। प्रिय पाठक वृन्द ! यह कथन अत्युक्ति पूर्ण नहीं, बल्कि अक्षरशः सत्य है। भारतमें उसी समय वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, सूत्र, स्मृति आदि अनुपम ग्रंथों की रचना हुई, जिस समय कि वह पूर्ण स्वतंत्र था। पश्चात् रामायण, महाभारत, रघुवंश, नैषध चरित, शकुन्तला, उत्तर रामचरित, शिशुपालवध, कादम्बरी, किरातार्जुनीय आदि काव्य तथा नाटकों की उत्तमोत्तम रचनाएं हुईं। मुसलमान बादशाहों के जमाने तक तुलसी और सूर की प्रभावशालिनी कविता ने साहित्य क्षेत्र की अपार वृद्धि कीं। यद्यपि यह समय पराधीनता की दुर्गन्ध से दूषित हो चुका था, पर स्वतंत्रता समूल नष्ट नहीं हुई थी, स्वदेश प्रेम का अंकुर जड़ से उखाड़ कर फेंक नहीं दिया गया था। परन्तु इस घोर पारतन्त्र्यकालमें सत्साहित्य का निर्माण क्योंकर हो ?

अब प्रश्न यह उठता है, तो क्या हमें हाथ पर हाथ रख बैठ जाना चाहिए ? नहीं, ऐसी दशा में ऐसे साहित्य का निर्माण करना चाहिए जिससे शीघ्र स्वराज्य प्राप्त करने के निमित्त लोग कटिबद्ध हो जायँ। हर्ष का विषय है कि आधुनिक समय में सुलेखक ऐसा करने भी लगे हैं।

शृङ्गार की इस समय जरूरत नहीं है। वर्तमान काल में आवश्यकता है केवल राष्ट्रीय रचनाओं की। महाकवि वृन्द ने क्या ही युक्तियुक्त कहा है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस सिंगार न सुहात॥

यदि किसी को विवस हो राष्ट्रीय रचना से वञ्चित रहना पड़े तो कम से कम उसे नायिका भेद, नखशिख आदि की तो अवश्य उपेक्षा करनी चाहिये।

साहित्य निर्माण में जाति के हित का अवश्य विचार रहना चाहिये। भला जिस साहित्य से जाति की अवनति होती हो उसका निर्माण करना निरा परिश्रम कमाना नहीं तो और क्या? तुलसीदास जी की जो इतनी प्रसिद्धि है उसका यही कारण है कि उन्होंने व्यर्थ की रचना न कर स्थान स्थान पर धर्म की दुहाई देते हुए आध्यात्मिक बातों का वर्णन किया है जो साहित्य निर्माण का आदर्श है।

नायिका-भेदादि ने साहित्य सरोवर के स्वच्छ सलिल को गँदला कर डाला, कहा जाय तो अन्याय संगत नहीं। साहित्य निर्माण में प्रेम की छटा छटकानी चाहिये, न कि विरोध की, सती स्त्री का चरित्र चित्रण करना चाहिये न कि व्यभिचारणी का, स्थान स्थान पर मनुष्यत्व की विवेचना रहनी चाहिये न कि पशु की, अक्रोध, अहिंसा, क्षमा, दान आदि का वर्णन रहना चाहिये न कि क्रोध, हिंसा, कंजूसी आदि का। सारांश यह कि साहित्य में उच्च आदर्श की कल्पना करनी चाहिये न कि नीच की। रक्तपात, हत्या वीभत्स रस आदि का वर्णन तो न होना ही उचित है।

हमारे उपर्युक्त कथन का प्रतिवाद भी उपस्थित हो सकता है और वह यह कि बिना नीम का स्वाद चखे सिता के सुस्वाद का अनुभव नहीं होता, परन्तु इसका यही प्रत्युत्तर है कि जो गुड़ देने से काम बन जाय तो उसे विष क्यों दिया जाय? चाहे हित के उद्देश्य से ही नारकीय दृश्यों की रचना की जाय परन्तु उनका प्रभाव कुत्सित पड़े बिना नहीं रह सकता। साहित्य निर्माण में जाति के हित का, राष्ट्र के हित का कुल वर्णन होना चाहिये। जाति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भलाई, बुराई, उन्नति, अवनति का चित्र खींचना चाहिये, न कि व्यर्थ के अश्लीलता भरे शब्दाडम्बरों का *

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का तृतीय अधिवेशन

द्वादशवर्षीय स्थायी समितिका तृतीय साधारण अधिवेशन रविवार कार्तिक शुक्ल ६। ७९ तदनुसार २९ अक्टूबर २२ को १२ बजे दिन से सम्मेलन कार्य्यालय में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

१—श्री० पुत्तनलाल विद्यार्थी
२—श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
३—श्री० " इन्द्रनारायण द्विवेदी
४—श्री० प्रो० वेणीप्रसाद जी
५—श्री० " व्रजराज जी
६—श्री० पं० रामजी लाल शर्मा
७—श्री०प्रो० गोपालस्वरूप भार्गव
८—श्री० पं० लक्ष्मीनारायण नागर
९—श्री० बा० संगमलाल जी

कार्य विवरण

सर्व सम्मति से श्री० पुत्तनलाल जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—गत अधिवेशन का कार्य विवरण स्वीकृत हुआ।

२—इस समिति को अपने सदस्य हिन्दी, संस्कृत और पाली के धुरन्धर विद्वान् श्रीयुत चन्द्रधर शर्मा गुलेरी बी. ए. की आकस्मिक मृत्यु का समाचार सुनकर हार्दिक दुःख हुआ। यह समिति भगवान् से प्रार्थना करती है कि आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान कर आपके कुटुम्बियों को इस असीम दुःख सहने की शक्ति दे।

३—यह भी निश्चित हुआ कि इस सहानुभूति सूचक प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि श्रीगुलेरीजी के कुटुम्बियों के पास भेजी जाय।

---

* यह लेख बहुत अंशों में, कुछ बातें निकाल देने पर भी, विषय-संगत नहीं है। इस लेख के लेखकों को अभी खूब बारीकी से हिन्दी साहित्य का अनुशीलन करना चाहिये।—संपादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—श्री गोकुलचन्द जी की घोषणा की शर्तों के अनुसार जो ५ सज्जनों की एक समिति 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' के प्रबन्ध के लिए बननी चाहिये थी, उस के निम्नलिखित सज्जन सर्व सम्मति से सदस्य चुन गये :—

१—श्री० गोकुलचन्द जी,
२—सभापति-श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी
३—श्री० प्रो० ब्रजराज
४—श्री० पं० रामजी लाल शर्मा
५—श्री० पुत्तनलाल विद्यार्थी

५—निश्चित हुआ कि इस उपसमिति का नाम "भाई मङ्गला प्रसाद पारितोषिक समिति" रक्खा जाय।

६—निश्चित हुआ कि मंगला प्रसाद पारितोषिक के लिए केवल उन्हीं पुस्तकों पर विचार किया जायगा जो पारितोषिक द्वारा नियत तिथि तक सम्मेलन कार्यालय में आ जायँगी। जिन पुस्तकों पर एक बार विचार हो जायगा, उन पर पुनः विचार न हो सकेगा।

व्याख्या—प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार होगा कि वह किसी हिन्दी पुस्तक को विचारार्थ भेज सके, परन्तु इस कार्य के लिए उन्हें नियत तिथि तक उस पुस्तक की 'तीन' प्रतियाँ कार्य्यालय में भेज देनी होंगी।

७—निश्चित हुआ कि पारितोषिक-प्रदान के लिए सम्पूर्ण विषयों के निम्न लिखित चार विभाग किये जायँ:—

(१) साहित्य (काव्य, उपन्यास, नाटक, कविता आदि)
(२) दर्शन (धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान आदि)
(३) विज्ञान (गणित, रसायन, भौतिकशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक आदि)
(४) इतिहास (पुरातत्व, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयोंके सम्बन्ध में पारितोषिक समिति निश्चय करेगी कि कौनसा विषय किस विभाग के अन्तर्गत जाना चाहिए।

८—प्रस्ताव ७ में वर्णित ४ विषयों में से यथाक्रम एक विषय पर प्रतिवर्ष 'पारितोषिक' दिया जाया करेगा।

९—इस पारितोषिक का प्रबन्ध करने के लिए जो पांच सज्जनों की उपसमिति बनायी गई है, उसका प्रत्येक वर्ष स्थायी समिति द्वारा चुनाव हुआ करेगा, उसके एक सदस्य श्री० गोकुलचन्द जी या उनके एक प्रतिनिधि अवश्य रहेंगे।

१०—निश्चित हुआ कि पारितोषिक समिति उपर्युक्त नियमों के अनुकूल पारितोषिक के लिए अन्य आवश्यक उपनियम बना सकती है, किंतु उनकी स्वीकृति स्थायी समिति से लेनी होगी।

११—निश्चित हुआ कि आगामी सम्मेलन के अवसर पर 'साहित्य' विषय पर प्रथम पारितोषिक दिया जाय।

१२—(अ) निश्चित हुआ कि इस वर्ष तीन सज्जनों की एक समिति जो 'निर्णायक समिति' कहलायगी, इस बात का निर्णय करेगी कि कौन लेखक इस पारितोषिक के अधिकारी हैं।

(आ) सात सज्जन इस निर्णायक समिति के लिए चुने गये और यह नियम निश्चित हुआ कि प्रथम तीन सज्जन इस निर्णायक समिति के सदस्य चुने जाँय, और यदि कोई सज्जन सदस्य होना स्वीकार न करें तो क्रमानुसार निम्न लिखित अन्य शेष सज्जनों से सदस्य होने के लिए प्रार्थना की जाय।

(३) यदि इन सातों सज्जनों में से तीन सज्जन भी निर्णायक समिति का सदस्य होना स्वीकार न करें, तो पारितोषिक समिति को अन्य निर्णायक चुनने का अधिकार होगा।

१४—निश्चित हुआ कि श्री दीनदयालु बी. ए., ६०) रु० मासिक वेतन सम्मेलन-कार्यालय में चार मास के लिए सहायक मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियुक्त किये जायँ। उस अवधि के बाद इनकी नियुक्ति स्थायी करने के लिए पुनः विचार किया जायगा।

१५—पंजाब में प्रान्तीय सम्मेलन की स्थापना के विषय में निश्चित हुआ कि श्री प्रचार मंत्रीजी पंजाब प्रान्त के हिन्दी प्रेमियों से पत्र व्यवहार करके तथा पंजाब प्रान्त के समाचार पत्रों द्वारा आन्दोलन करके पंजाब प्रान्त में प्रान्तीय सम्मेलन स्थापित करने का प्रयत्न करें।

१६—विद्यापीठ के संगठन के विषय में निश्चित हुआ कि विद्यार्थियों की सुविधा के लिए संध्योपरान्त पढ़ाई प्रारम्भ की जाय और उसके लिये १००) रु० मासिक से अधिक व्यय न किया जाय। करघा विभाग का प्रबन्ध दिन में कर दिया जाय।

१७—आयव्यय-परीक्षक का नोट पढ़ा गया और निश्चित हुआ कि गत वर्ष का भाद्र कृ० १।७६ से आ० शु० १५।७८ का आय व्यय का चिट्ठा स्वीकृत किया जाय और आय व्यय परीक्षक के नोट तत्सम्बन्धी विभागों में सूचनार्थ भेजे जायं।

१८—निश्चित हुआ कि मद्रास प्रचार का निरीक्षण करने के लिए शीघ्र ही मद्रास प्रान्त में सहायक मंत्री भेजे जायँ, जिससे दिसम्बर की स्थायी समिति की बैठक में मद्रास वाली रिपोर्ट पर विचार किया जाय।

सभापति को धन्यवाद देने के बाद अधिवेशन समाप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सं० १९७९ की मध्यमा परीक्षा का परीक्षा फल

प्रथम श्रेणी

*क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
१३७	श्री गुरु प्रसाद टण्डन	श्री पुरुषोत्तमदास टंडन	प्रयाग
७४	" चन्द्रप्रकाश सकसैना	" ज्वाला प्रसाद जी	"
२०७	" राम लाल अग्निहोत्री	" बलदेव प्रसाद अग्निहोत्री	लखनऊ
२३३	" बीरेश दत्त सिंह	" रामभद्र सिंह	कलकत्ता
		द्वितीय श्रेणी	
५	" अम्बादत्त पन्त	" पं० लीलाधर पन्त	अनूपशहर
१०	" श्रीराम विद्यार्थी	" लाला गणेश लालजी	"
१४	" फूलचन्द्र	" बाबू जय नारायण	अलीगढ़
१५	" शिवशंकर शुक्ल	" धर्मराज शुक्ल	"
१८	" केशवदेव ढण्ड	" ब्रह्मादत्तजी ढण्ड	प्रयाग
२०	" वंशीधर	" बद्रीनारायणजी शर्मा	"
२१	" भोलानाथ चतुर्वेदी	" दम्मीलाल चतुर्वेदी	आगरा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
२२	श्री मुनिलाल विद्यार्थी	श्री ला० बाबूलाल	आगरा
२४	" लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी	" कालिकाप्रसाद चतुर्वेदी	"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२१ ,, भोलानाथ चतुर्वेदी ,, दम्मीलाल चतुर्वेदी आगरा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
२२	श्री मुनिलाल विद्यार्थी	श्री ला० बाबूलाल	आगरा
२४	,, लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी	,, कालिकाप्रसाद चतुर्वेदी	,,
२८	,, लक्ष्मीनारायण दीक्षित	,, पं० दीनानाथ दीक्षित	इटावा
३०	,, राजेन्द्र सिंह	,, दिग्विजय सिंह	इनानजाँव
३१	,, रुद्रपाल सिंह	,, ठाकुर वजरंग वली	,,
३२	,, अयोध्या प्रसाद व्यास	,, लक्ष्मण प्रसाद व्यास	इन्दौर
३३	,, गणेशप्रसाद शर्मा	,, नारायण शर्मा	,,
३६	,, जानकी वल्लभ त्रिपाठी	,, कनीराम त्रिपाठी	,,
३८	,, दौलतराम शर्मा	,, हीरालालजी शर्मा	,,
४३	,, माँगू लाल मिश्र	,, झूथा लाल मिश्र	,,
४५	,, राधा कृष्ण	,, वृद्धिचन्द	,,
४७	,, सुजान सिंह तोमर	,, भंवर सिंह तोमर	,,
४८	,, हबीबुल्लाखाँ पठान	,, सआदत खाँ	,,
४९	,, हीरालाल कपूर	,, नन्दराम जी	,,
५२	,, गोवर्द्धन लाल	,, दयाचन्द	उज्जैन
५७	,, ब्रजलाल शर्मा	,, पं० शिव नारायण	एटा
६१	,, शीतला प्रसाद तिवारी	,, ब्रजमोहन तिवारी	कानपुर
६५	,, बद्रीलाल	,, जगन्नाथ	कोटा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
६८	श्री अनन्त शरण ओझा	श्री पं० श्यामराज ओझा	काशी
६९	,, अक्षयबट सिंह	,, विक्रमादित्य सिंह	,,
७२	,, घुरहूराम	,, गोबर्द्धन प्रसाद	,,
७५	,, चूड़ामणि प्रसाद	,, कान्ध जी सहाय	काशी
७७	,, नरोत्तम दास स्वामी	,, पं० जयश्री जी स्वामी	,,
७९	,, बनारसी लाल	,, मुन्शी राम दयाल लाल	,,
८०	,, बेचन राम गुप्त	,, श्रीयुत अनंतराम	,,
८१	,, पांडे बेचन शर्मा 'उग्र'	,, पं० बैजनाथ पाण्डेय	,,
८५	,, शिवप्रसाद सिंह	,, अम्बिकासिंह	,,
८८	,, कुअँर हाकिम सिंह चौहान	,, ठा० मुलायम सिंह	,,
९४	,, परमानन्द नेमा	,, भोगी राम	गाडरवारा
९६	,, राम लोटन प्रसाद	,, जालिम राम राहत	गङ्गाशहर
९९	,, गोकुल प्रसाद शर्मा	,, गोपाल प्रसाद जी शर्मा	चूरू
१००	,, चन्द्रशेखर मिश्र	,, पं० शिवप्रसाद मिश्र	गंगाशहर
१०८	,, वृन्द्रावन विहारी मिश्र	,, पं० रामरतन मिश्र	जबलपुर
१०९	,, भगवत प्रसाद त्रिपाठी	,, माधो प्रसाद	,,
११०	,, मंगल प्रसाद विश्वकर्मा	,, श्री नन्दलाल जी विश्वकर्मा	,,
[illegible]	,, [illegible]	,, [illegible]	,,

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
११३	श्री रामशरण सिंह	श्री कुंजीराम	जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
११३	श्री रामशरण सिंह	श्री कुंजीराम	जबलपुर
११५	" श्रीमती लक्ष्मी बाई	" रघुनाथ प्रसाद	"
११७	" हज़ारी लाल	" छुन्नीलाल	"
११६	" हरिशंकर वर्मा	" मुन्शी गोपाल प्रसाद खत्री	"
१२०	" ज्ञान भूषण त्रिवेदी	" पं० रामरतन त्रिवेदी	"
१२१	" कल्य नारायण शर्मा	" सूर्यनारायण जी	जयपुर
१२४	" सत्य नारायण भट्ट	" देव बक्स भट्ट	झालरापाटन
१२८	" देवदत्त उपाध्याय	" तुलसीराम जी	नारायणगढ़
१२६	" नान्हूराम	" रामलाल जी	"
१३०	" बालमकुन्द जोषी	" नान्हूराम जोषी	"
१३२	" मथुरादास	" रामप्रताप जी	"
१३३	" मथुरालाल	" धूलचन्द्र जी	"
१३४	" रणछोड़दास	" भगवानदास जी	"
१३८	" गिरिजा शंकर द्विवेदी	" भवानी प्रसाद जी द्विवेदी	प्रयाग
१४२	" प्रेम चन्द्र टन्डन	" डा० मूलचन्द्र टन्डन	"
१४३	" प्रेम प्रसाद सेठ	" बा० रामनाथ सेठ	"
१४४	" भक्त चन्द्र टन्डन	" मूलचन्द्र टन्डन	"
१४५	" मूंगी लाल नेवटिया	" ज्वालादत्त जी नेवटिया	"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
१४६	श्री युधिष्ठर प्रसाद सिंहानिया	श्री जगन्नाथ जी सिंहानियाँ	प्रयाग
१४७	" रामधर द्विवेदी	" पं० मुनीश्वर धर द्विवेदी	"
१४८	" रामेश्वरदास टंडन	" बाबू अनन्त राम टन्डन	"
१४९	" रामेश्वर प्रसाद नेवटिया	" कन्हैयालाल जी नेवटिया	"
१५०	" रेवती रमण भार्गव	" पं० केदारनाथ भार्गव	"
१५२	" विश्वप्रकाश	" बा० गंगा प्रसाद एम. ए.	"
१५३	" शुकदेव सिंह	" मथुरा सिंह	"
१५४	" श्री गोपाल नेवटिया	" फूलचन्द जी नेवटिया	"
१६१	" प्रह्लाद सिंह	" केहरी लाल	फरुखाबाद
१६२	" राज कुमार द्विवेदी	" पं० जीवालाल द्विवेदी	"
१६४	" विश्वनाथ प्रसाद	" बाबू त्रिवेणी प्रसाद वकील	बांकीपुर
१६५	" कन्हैयालाल श्रीवास्तव	" शिवप्रसाद लाल	बिलासपुर
१६७	" द्वारिका प्रसाद शुक्ल	" रामनारायण शुक्ल	"
१६८	" पंचमनाथ	" तुलसी राम	"
१७१	" ललिता प्रसाद त्रिपाठी	" शिवशरण त्रिपाठी	"
१७३	" शुकलाल प्रसाद पांडेय	" गोविन्द हरि	"
१७४	" सरयू प्रसाद तिवारी	" पं० पृथ्वीपाल तिवारी	"
१७५	" चांदसिंह	" मोती सिंह	बीकानेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
१७७	श्री रमाशंकर पाण्डेय	श्री पं० मुरलीधर पाण्डेय	,,
१७८	,, रामखेलावन प्रसाद	,, अयोध्या प्रसाद	,,
१७९	,, लक्ष्मीनारायण व्यास	,, मदनमोहन व्यास	,,
१८०	,, उमराव सिंह	,, पं० हरिलाल शर्मा	बुलन्दशहर
१८१	,, दलीप चन्द गुप्त	,, लाला दुर्गा प्रसाद गुप्त	,,
१८७	,, जगदीश नारायण	,, अभयनारायण लाल	मुज़फ़्फ़रपुर
१९४	,, रामफल कुअर वर्मा	,, बाबू मदीप कुअँर वर्मा	,,
२११	,, बचीराम जोशी	,, नन्दकिशोर जोषी	लश्कर
२१४	,, रामस्वरूप	,, जगन्नाथ प्रसाद	,,
२१८	,, धर्म चन्द	,, लाला करमचन्द्र जी	लाहौर
२२६	,, कामता प्रसाद पारसाई	,, अयोध्या प्रसाद शिक्षक	होशंगाबाद
२३५	,, चन्द्रिका प्रसाद शर्मा	,, पं० विनोद बिहारी शर्मा	काशी

गोपालस्वरूप भार्गव एम. एस. सी

परीक्षा मंत्री

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य की प्रदर्शिनी

सर्व साधारण के ज्ञान तथा विज्ञान के विकाश का प्रदर्शिनी से उत्तम और कोई साधन नहीं है। यही कारण है कि आज कल लाखों और करोड़ों रुपया खर्च करके भी प्रदर्शिनियों का आयोजन किया जा रहा है। बड़े बड़े नगरों में स्थापित अजायब घर और चिड़िया घर वास्तव में प्रदर्शिनी का ही एक स्थायी रूप है, जिनमें संसार के दुष्प्राप्य, जड़ चेतन, प्राचीन आधुनिक, परमात्मा के रचे या मनुष्य कृत पदार्थ संग्रह करके प्रदर्शित किए जाते हैं। यदि यह प्रदर्शिनियां न हों तो इन अद्भुत और अपूर्व वस्तुओं का दर्शन या ज्ञान प्राप्त करना एक ऐश्वर्य्य सम्पन्न व्यक्ति के लिए भी सर्वथा असम्भव है। घर बैठे अनायास ही यदि संसार को प्रत्यक्ष करना हो तो वह प्रदर्शिनी द्वारा ही हो सकता है। स्थान स्थान की संगृहीत वस्तुओं के देखने से वहाँ के मनुष्यों का रहन सहन, शिक्षा सभ्यता, कला कौशल, उन्नति अवनति का बड़ी सुगमता से थोड़े ही परिश्रमसे ज्ञान हो जाता है। यही विचार कर बुद्धिमानों ने मानवीय विज्ञान के विकास के लिए प्रदर्शिनी का आयोजन किया है।

इसकी उपयोगिता और प्रभाव ने आजकल प्रायः सभी संस्थाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रखा है। प्रदर्शिनी के विना उनके उत्सवों की शोभा अधूरी ही समझी जाती है। इसलिए वार्षिकोत्सवों पर प्रदर्शिनी का होना उत्सव का एक मुख्य अङ्ग सा हो गया है और चाहिए भी।

पाठकों को यह जान कर अवश्य ही प्रसन्नता होगी कि हिन्दी के प्रेमी भी हिन्दी साहित्य की उन्नति के किसी भी साधन से उपेक्षित नहीं है। भागलपुर, लखनऊ, जबलपुर, इन्दौर और पटना के वार्षिक अखिल भारतीय सम्मेलनों के अवसरों पर हिन्दी साहित्य की प्रदर्शिनियां की गई थीं। यह प्रदर्शिनियां अपने ठाट बाट में एक से एक बढ़ कर हुई हैं।

इन प्रदर्शिनियों में जिन महानुभावों ने हस्तलिखित, या प्रकाशित ग्रन्थों या अन्य वस्तुओं द्वारा प्रदर्शिनी की उपयोगिता तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभा को बढ़ाया है उनके लिए हिन्दी संसार उनका बड़ा ही अनुगृहीत है; पर उन महानुभावों की जिन्होंने प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों को भेज कर प्रदर्शिनी की महत्ता को बढ़ाया है उसके लिए जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। क्योंकि वस्तुतः उन्होंने केवल पुराने काग़ज़ों पर ताड़ पत्रों की ही रक्षा नहीं की है प्रत्युत भारत के प्राचीन गौरव प्राचीन सभ्यता, प्राचीन विज्ञान और प्राचीन भारत की सरस्वती की रक्षा की है।

अधिक न लिख कर अब मैं अपने पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि इस वर्ष अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिकोत्सव भारतवर्ष के एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर कानपुर में होने जा रहा है। पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी जैसे विख्यात विद्वान ने उसकी स्वागत समिति का अध्यक्ष होना स्वीकार कर लिया है और सम्मेलन के सभापति की सूचना भी शीघ्र ही आप लोगों को मिल जायगी। सम्मेलन की तैयारी कानपुर में प्रारम्भ हो गई है, इसमें हिन्दी साहित्य की एक बृहत् प्रदर्शिनी का उपक्रम हो रहा है।

उन उदार महानुभावों से, जिन्होंने समय समय पर अपने यहां प्राणों से भी अधिक सुरक्षित अमूल्य ग्रन्थों को भेज कर प्रदर्शिनी की शोभा बढ़ाई है या जो किन्हीं कारणों से अभी तक नहीं भेज सके हैं, हमारी प्रार्थना है कि इस सुअवसर पर अपने ग्रन्थों को या प्रदर्शिनी के योग्य अन्य वस्तुओं को भेज कर प्रदर्शिनी की शोभा को बढ़ावें। वस्तुओं के भेजनेवालों को हम विश्वास दिलाते हैं कि प्रदर्शिनी के समाप्त होते ही धन्यवाद पूर्वक उनकी वस्तु उन्हें लौटा दी जायगी, इस बीच में उनकी वस्तु सुरक्षित रहेगी।

नो०—प्रदर्शिनी सम्बन्धिनी अन्य सूचनाएं समय २ पर पत्रों द्वारा दी जायगी। इस समय जो महानुभाव जो कुछ भी भेजना चाहें, प्रथम चिट्ठी द्वारा हमें उसकी सूचना देने की कृपा करें, फिर हमारे पत्र लिखने पर भेजें।

भूदेव विद्यालंकार, मन्त्री, प्रदर्शिनी विभाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांई तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूर-सागर का क्यों नहीं हुआ ? इसलिए कि लोग इस वृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ की समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी की जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुई अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक काग़ज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२९.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] मार्गशीर्ष, संवत् १९७९ [अंक ४

निज भाषा बोलहु, लिखहु,
पढ़हु गुनहु सबलोग।
करहु सकल विषयन विषैं,
निज भाषा उपयोग॥

—श्रीधर पाठक

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जायँगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य-शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०-१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला
ताल्लुकेदार-प्रेस १९ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] मार्गशीर्ष, संवत् १९७९ [अङ्क ४

श्री कृष्ण-बन्दना

छप्पय

तिलक भाल बनमाल, अधिक राजत रसाल छबि।
मोर मुकुट की लटक, छटक बरनत अटकत कबि॥
पीताम्बर फहराय, मधुर मुसक्यान कपोलन।
रच्यो रुचिर मुख पान, तान गावत मृदु बोलन॥
रति कोटि काम अभिराम अति, दुष्ट निकंदन गिरिधरन।
आनंद कंद ब्रज चंद प्रभु, जय जय जय असरन सरन॥

—आचार्य केशवदास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा बिहारीदास जी के सिद्धान्ती पद

[संग्रहकर्त्ता—श्री वियोगीहरि]

हात्मा विहारीदास जी स्वामी हरिदास जी की टट्टी संप्रदाय के अनुयायी थे। इस संप्रदाय में एक से एक बढ़ कर त्यागी महात्मा हुए हैं। इस संप्रदाय की रस-पराकाष्ठा भी। किसी भक्त अथवा साहित्य-सेवी से छिपी नहीं है। स्वामी हरिदास जी "रसिक सम्राट" ही कहे जाते थे, जैसा कि नाभा जी ने अपनी भक्तमाल में लिखा है कि

'रसिक छाप हरिदास की।'

अस्तु। मैंने इस संप्रदाय के साहित्य का किंचिन्मात्र अनुशीलन करते हुए, महात्मा विहारी दास जी के कुछ अनूठे सिद्धान्ती पद पाये हैं। कतिपय पद नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

पद

रे चित चंचल, अनत न जैये।

जुगल किसोर चरन चिंतन बिनु, सुख संतोष न पैये॥
कहुँ आदर कहुँ होत निरादर, बिनु बिवेक विष खैये।
मानुष भये होत कत कूकर, भँड़िहाई[1] न अघैये॥
कंचन लोहनि गढ़ दृढ़ै छूटैं, मनसाहू न बँधैये।
पाप पुन्य दोऊ सम सुनियत, डहकाये डहकैये॥
परमारथ बिनु जे स्वारथ की, सबै जानि दुख दैये।
दास बिहारी प्रभु को आनँद, नागर नैकु रिझैये॥

जितौ बुलायो तेतौ बोल्यो।

नातरि रह्यो मौन मुख मूँदे, खुसी खसम[2] ही खोल्यो॥

१ चोरी। २ पति, ईश्वर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै राख्यौ इक आसन कै डगडोलनि यौं ही डोल्यौ।
छल बल सबै तौलि लीन्हें पै तुव बल जातु न तौल्यौ ॥
करि ममत्व ऽहंकार जगत सौं झूठे रोलनि रोल्यो।
दास बिहारी को मन प्रभु तुम नीके कै टकटोल्यो[1] ॥

भक्ति में कहा जनेऊ जाति।
सब भूषन दूषन बिनु प्राननि पति छ्वै घरनि[2] घिनाति ॥
क्यों साधै चिर पन अभिमानी, बड़ी जाति इतराति।
बासर सौं कैसे सरि पावैं, जदपि उजेरी राति ॥
कहा हरे रँग भाँग बिराजति, तुलसी में न समाति।
सोहै नहीं सुहागिनी के सँग, सौति सुरेति कुजाति ॥
बरनाश्रम अपने अपने मत तिन तिन ही सौं पाँति।
भगवत धर्म सिरोमनि सेवत, लालच मति भ्रम जाति ॥
गायत्री संध्या तरपन तजि भजि लै मंत्र सजाति।
श्री बिहारी दास को सुख सर्बोपरि वेद विदित विख्याति ॥

जाकी करत स्याम सहाय।
प्रथम बरनौं कृपा, क्रम क्रम विषय मूल गँवाय ॥
कुल कुटुम्ब बल बिन बिहीनौ दीन कै[3] दुखदाय।
आपुने कौं करि जु लीन्हों आपु ही अपुनाय ॥
थके बल बुधि चातुरी चित और कछु न दृढ़ाय।
सबनिसों मन निठुर कीन्हों अनत कहुं न पत्याय[4] ॥
परम आनँद कंद श्री हरिदास सरन सहाय।
श्री बिहारीदास प्रभु पद चितै परचौ पाय ॥

१ जांच लिया। २ स्त्री। ३ करके। ४ विश्वास करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुवा[१] कामरी[२] सौं रतिमति कब है है या गति जोग।
जमुना कूल कदम्ब कुंज ग्रह, बसि बन मैटे सोग॥
चना चबेना छाछ जमुन जल, पत्र पुहुप फुल भोग।
तिनके आगे ऐसी सुनियत षटरस फीके फोग[३]॥
अटल निहाल करौ, जिन ऐसैं ज्यों डहकायो लोग।
बिषय बासना हरौ सासना[४] बहुत जनम को रोग॥
पर्यौ रहूं द्वारे दुलराऊँ गाऊँ प्रेम प्रयोग।
दास बिहारी प्रभु अब अवसर आयो सरन सँयोग॥

भैया, हरिदास सदा भयहीन।

कर करुवा कामरि काँधे धरि, बांधे कटि कोपीन॥
बन बन रटत बिचारत आरत, संतत स्याम अधीन।
परम प्रीति रस रीति लड़ावत गावत सुजस नवीन॥
कर्म धर्म यों कहत बापुरे हम सेवक दिनदीन।
तिनसों[५] को करि सकै बराबरि, प्रकृति काल बल छीन॥
पारस करत परसि सत्संगहि प्रगटत गुन प्राचीन।
श्री बिहारी निहचै मन मानौ, जापै हरि हित कीन॥

सतगुरु गोविंद बैद बिहारी।

दीनों मधु मथि प्रेम सुऔषधि अमर यहै उपचारी॥
नैकु वदन दरसैं दुख जानत, बिनु परसैं कर नारी[६]।
काम कुरोग ग्रसत संसृति मनु त्रस्ना हरी हमारी॥
अति निरपेच्छ उदार कहावत संतत सब सुखकारी।
श्री बिहारी दास मृतक की प्रगट प्रतिग्या पारी[७]॥

१ मिट्टी का एक टोंटीदार बरतन। २ कंबल। ३ रद्दी। ४ कष्ट। ५ भक्तों से। ६ नाड़ी। ७ पाली, पूरी की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनौ करि काहे बौरावौ।
करुना निधि, नित बिदित जगत जस,
हमहिं कहा जो बिरद लजावौ॥
उकति जुगति बिनती संभ्रम तैं,
कहत रहत, दुख दोष नसावौ।
अपनी रुचि राचौ बिरचौ तुम,
पारस परसि कै कनक बनावौ॥
ग्यानी अभिमानी हौं नाहीं,
जन जानौ कछु कहौ कहावौ।
तुमहिँ न दोष लगै न मोहि अहं-
कार सु मो मन मतैं दृढ़ावौ॥
मोहि न सकुच होइ नहिं तुमही,
झुकत रीति पगु धरनि धरावौ।
दास बिहारी प्रभु सुख सागर,
त्यों राखौ ज्यौं तुम सुख पावौ॥

सब रस को रस तिलक सिँगार।
जैसे सब अँग अँग को भूषन, अतिसै लसतु लिलार॥
वरनाश्रम कूपननि में राजत, भगवत भक्त उदार।
कायर कोटि कटक में सूझत सूर सजै हथियार॥
निसि नछत्र तब हीलौं जौलौं[1] ससि न कियौ उदगार[2]।
तैसे ही महराज के आगे, परजा को ब्यवहार॥
नाम बीज, नामी तरु साखा, साधन पुहुप अपार।
विविध भाव फल मेवा कत बिनु निज रस रूप बिहार॥
निरौ अचार कहा लै कीजै, करौ विवेक विचार।
श्री बिहारी दास प्राननि को, श्री हरिदास अधार॥

---

१ जब तक। २ उदय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला फूल

[ले०—श्रीयुत गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश']

अयि वनलते ! कभी क्या तू ने,
देखा है वह सुन्दर फूल।
झूम रहा है जो मस्ती से,
निज अनन्त यौवन में भूल ?
अरी, बताते हैं सब उसको,
बड़ा रसीला लीला धाम।
मैं भी मत्त हो गई हूं,
मृदु मूर्ति देख उसकी अभिराम ॥
इसी कुञ्ज में मैंने उसका,
नव यौवन निखरा देखा ;
यहीं अकेले मैंने उसका,
वर सौरभ बिखरा देखा ॥
जब से उसको देखा आली !
भूले जग के सारे क्लेश।
पीती हूं कल्पना-दृष्टि से,
उसकी छवि का रस अनिमेष ॥
जब अपने अनन्त यौवन के,
मद से ही वह ऊब गया ;
मैंने देखा परम रसिकता के,
रस में वह डूब गया ॥
अपने ही मधु में फिर उसने,
तीखेपन की करदी सृष्टि ;
और बनाया काँटा उससे,
करने को संकट की वृष्टि ॥
फिर निज मादकता से ही कर,
मधु-ग्राहकता का निर्माण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस के लिए अधीर बावले,
अलि का उसे बनाया प्राण ॥

इस प्रकार वह फूल स्वयं ही,
कांटा और भ्रमर भी बन ;
अपना ही तन लगा चुभाने,
पाने को अपना मधु धन ॥

और उसी पीड़ा के भीतर,
पाया उसने रस-भाण्डार ,
फूला झूम झूम के झूला,
पी कर के अपना ही सार ॥

जब से मैंने देखा उसको,
पाई है मानस में शान्ति ;
धीरे से दृग-द्वारे से बह,
निकल गई है जी की क्लान्ति ॥

मेरे लिए मौन रजनी में,
तू है रुदन किया करती ;
सस्मित वदना हो कर के भी,
छिप छिप आहें है भरती ॥

किन्तु बिवेक-शून्य इस पीड़ा से,
न मुझे तू पावेगी।
इसी भाँति रो रो कर के ही,
हाय ! भगिनि मर जावेगी ॥

इसी फूल के यौवन-मधु की,
धारा आज बनी हूं मैं ;
इसकी पंखड़ियों की लाली में ही,
आज सनी हूं मैं ॥

तू भी इस के नवयौबन को,
आके दृग-जल-धारा दे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ आरुण्य हृदय-शोणित का,
इस के दल को न्यारा दे ॥
तेरा सौरभ इस में आवे,
तू इस का सौरभ पा जाय ;
इस का यौबन तुझ में जावे,
तव यौबन इस में आजाय ॥
फिर तो मेरा तेरा सौरभ,
औ मेरा तेरा यौबन ।
एक बनेंगे; मेरा तेरा,
होगा बड़ा अपूर्व्व मिलन ॥
मिट जावेगी सारी चिन्ता,
गत होगी मिथ्या पीड़ा ।
मेरे संग लगेगी करने !
हे व्यथिते ! अनन्त क्रीड़ा ॥
तो फिर यहीं चली आया कर,
जगते क्यों न रहें सब लोग ।
कोई पता नहीं पावेगा,
सध जावेगा तेरा योग ॥
भगिनि, हताश नहीं हो जाना,
पहले जो न पड़े वह दीख ,
रोती जाना दिखे न जब तक,
भूल न जाना मेरी सीख ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्नोत्तर

एक स्नेह--हीन बुझते हुए दीपक से

[ले०—श्री मोहनलाल महत्तो गयावाल]

चले ? चला ! अः जरा देर तो और ठहरिये ?
समय नहीं है ! कहना हो वह सत्वर कहिये !
कृपा करेंगे क्या न मुझे यह बतलाने की-
इतनी जल्दी पड़ी हुई है क्यों जाने की ?
सुनिये, स्नेह-विहीन है जीवन दुखमय हीन-तम,
अतः चला मैं; विदा दो; प्रियवर बन्देमातरम् ।

समालोचना-सिद्धान्त

[ले०—श्रीयुक्त नवीनचन्द्र]

पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदीजी ने सम्मेलन पत्रिका के गत अङ्क में मेरे एक लेख के सम्बन्ध में मुझ से कुछ प्रश्न किये थे। उन्हीं के सम्बन्ध में मुझे कुछ निवेदन करना है।

चतुर्वेदीजी का पहला प्रश्न यह है कि क्या ज्ञान और ज्ञाता के बीच एक ज्ञापयिता की आवश्यकता नहीं है। मेरा निवेदन है कि ज्ञान निराधार वस्तु नहीं है, वह ज्ञापयिता से पृथक् नहीं रहता। चतुर्वेदीजी के कथन से यह सूचित होता है कि ज्ञान कवियों के मस्तिष्क में निराधार उड़ता रहता है, स्वयं कवि उस ज्ञान के ज्ञापयिता नहीं हो सकते। इस लिए एक तीसरे आदमी की ज़रूरत होती है। यह आदमी कदाचित् आपकी राय में समालोचक है। समालोचक अपने ज्ञान का ज्ञापयिता हो सकता है, पर वह कवि के ज्ञान की दलाली कर सकता है, उसका ज्ञापयिता नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्वेदीजी का दूसरा प्रश्न यह है कि ग्रन्थकार और पाठक के सिवा सम्पादक, प्रकाशक, प्रभृति हैं। उनका उल्लेख क्यों नहीं किया गया? आप यह भी कहते हैं कि मनुष्यों में गधों की गणना क्यों न की जाय। इसके बाद आपने मुझ से यह पूछा है कि मैं स्वयं क्यों यह अनधिकार चर्चा कर रहा हूं।

चतुर्वेदीजी के इस प्रश्न के पूछने से यह मालूम होता है कि प्रत्येक बात के लिखने में हमें ईश्वर के सिंहासन तक दौड़ लगानी चाहिये। आप कहते हैं कि मैंने ग्रन्थकार ही का नाम क्यों लिया। मुझे वहाँ सम्पादक और मुद्रक के सिवा दावात, कलम, कागज, स्याही, मिट्टी, कुम्हार, लुहार, भट्टी, आग, पञ्च तत्व और ईश्वर जोड़ देना चाहिए, क्योंकि इन्हीं की सहायता से कोई लेख लिख सकता है। चतुर्वेदीजी विद्वान् हैं, वे अपने लेख में सब का उल्लेख कर सकते हैं, मनुष्यों में गधे को भी शामिल कर सकते हैं, उन्हें यह करने का अधिकार है, परन्तु आपने मुझे यह अधिकार नहीं दिया है कि मैं समालोचना के विषय में एक लेख भी लिख सकूं।

अन्त में चतुर्वेदीजी ने जो प्रश्न पूछे हैं उन से उनका मतलब यह है कि समालोचना साहित्य की कसौटी है, समालोचक साहित्य-वाटिका का माली है। अतएव ये दोनों आवश्यक हैं। मैं कसौटी और माली की आवश्यकता समझता हूँ, पर मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि समालोचना साहित्य की सच्ची कसौटी है और समालोचक साहित्य का सच्चा माली है। चतुर्वेदीजी समझते हैं कि समालोचक साहित्य में मलिन रचनाओं को दूर कर सकता है। चतुर्वेदीजी फ्रेञ्च साहित्य के मर्मज्ञ हैं, वे साहित्य-सम्मेलन को फ्रेञ्च एकेडमी बनाना चाहते हैं। मैं उन से पूछता हूं जिस साहित्य की रक्षा के लिए फ्रेञ्च एकेडमी के समान संस्था है, जिस में एक से एक धुरन्धर समालोचक हैं, उसमें कितने गन्दे और अश्लील उपन्यासों और नाटकों का प्रचार है। चतुर्वेदीजी ने तो फ्रेञ्च साहित्य का अध्ययन किया है, वही बतलावें कि फ्रांस के समालोचक क्या फ्रेञ्च साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से घास-फूस को दूर कर सके हैं। यदि समालोचना साहित्य की सच्ची कसौटी समझी जाय तो किस समालोचक की समालोचना को आप सच्ची कसौटी समझेंगे ? सभी समालोचकों की क्या एक राय होती है ? यदि नहीं तो जिस तरह कसौटी से सोने की परीक्षा हो जाती है, उसी तरह क्या समालोचना से साहित्य की परीक्षा सम्भव है ? फिर आप कसौटी से समालोचना की क्यों तुलना करते हैं ?

मैं समालोचना की उपयोगिता स्वीकार करता हूं, पर किस समालोचना की ? उस समालोचना की नहीं, जो न्यायाधीश की कलम से निकली है, पर उस समालोचना की जो एक ज्ञाता की कलम से लिखी गई है। मैंने 'हिन्दी भाषा और साहित्य' के अन्त में इसकी जो चर्चा की है उसीका सारांश यहां लिखता हूं। इससे मेरा विचार स्पष्ट हो जायगा।

भारतीय साहित्य के साथ भारतीय समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध पर ध्यान देकर हमें हिन्दी-साहित्य की समालोचना करनी होगी। टेन, जार्ज ब्रैन्डस, डाउडन् आदि समालोचकों की रचनाओं को पढ़ने से यह मालूम होता है कि साहित्य और जातीय जीवन में परस्पर क्या सम्बन्ध है। ऐसे ही साहित्य-समालोचकों द्वारा जातीय चरित्र-गठन होता है। यही यथार्थ दार्शनिक हैं, साहित्य के पथ-प्रदर्शक और जातीय जीवन के नियामक हैं। फ्रांका नामक एक विद्वान ने जर्मन-साहित्य में समाज-शक्तियां नामक एक ग्रन्थ लिखा है। उसकी भूमिका में आपने लिखा है—एक ऐसे ग्रन्थ की बड़ी आवश्यकता है जो जर्मन देश के उस जीवन-स्रोत का रहस्य समझावे जो उसके साहित्य में विद्यमान है। विद्या और विज्ञान विषयक जो आन्दोलन देश में होता है उसकी उत्पत्ति समाज में ही होती है। और वही समाज की स्थिति को बदल देता है। ऐसे आन्दोलनों के साथ देश की सामाजिक और राजनीतिक अवस्थाओं में जो पारस्परिक सम्बन्ध है उसे बतला देना चाहिए। मतलब यह कि एक ऐसा ग्रन्थ तैयार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जिसमें साहित्य से ही जर्मनजाति का इतिहास सङ्कलित किया जाय। एक दूसरे विद्वान ने कहा है कि किसी भी साहित्यिक ग्रन्थ की समीक्षा दो प्रकार से की जा सकती है, एक तो कला की दृष्टि से और दूसरी इतिहास की दृष्टि से। कला की दृष्टि से विचार करने पर कोई ग्रन्थ स्वयमेव पूर्ण ज्ञात होता है। संसार से वह सर्वथा पृथक रहता है। इससे उसका किसी तरह का सम्पर्क नहीं रहता। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर कोई भी ग्रन्थ, चाहे उसमें कला का पूर्ण निदर्शन क्यों न हुआ हो, असम्पूर्ण ही जान पड़ेगा। वह संसार के जीवन जाल का एक धागा-मात्र रहेगा। कला की दृष्टि से हम ग्रन्थ के अन्तर्गत मूल-भाव को बाह्य संसार पर दृष्टि-निक्षेप न करके भी समझ सकते हैं। परन्तु जब हम ऐतिहासिक रीति से उस पर विचार करेंगे तब हम उस ग्रन्थ की मूल-भावना में भी कार्य्य-कारण का सम्बन्ध देख सकेंगे। तब हम उस ग्रन्थ में पहले कवि का व्यक्तित्व देखेंगे और कवि के व्यक्तित्व को समझने के लिए हमें तत्कालीन समाज की स्थिति पर विचार करना पड़ेगा। क्योंकि उसी स्थिति में रहकर कवि का व्यक्तित्व विकसित हुआ है।

यह तो सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है, वह समाज की यथार्थ अवस्था का द्योतक है। परन्तु हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि समाज पर भी साहित्य का बड़ा प्रभाव पड़ता है। साहित्य के द्वारा समाज का आदर्श निश्चित होता है और उसी के अनुसार मनुष्यों का सामाजिक जीवन सङ्गठित होता है। हिन्दी-साहित्य का महत्व यही है कि जब हिन्दू समाज में एक प्रकार की उच्छृङ्खलता फैल रही थी, जब जनसाधारण अपने जातीय आदर्शों को भूल रहे थे, तब इसी साहित्य ने उनके सामाजिक जीवन को शृङ्खला-बद्ध रक्खा। इसी ने उन आदर्शों का प्रचार किया जो अब हिन्दू-समाज के गार्हस्थ्य और धार्मिक जीवन में स्वीकृत हुए हैं। अतएव जो हिन्दी-साहित्य का इतिहास लिखेगा वह हिन्दू समाज की अन्तरात्मा का पता पा जायगा। अथवा यह कहना चाहिए जिसे उसका पता नहीं, वह हिन्दी-साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का इतिहास लिख भी नहीं सकता। हिन्दी-साहित्य में जिन विद्वानों को समालोचना से प्रेम है उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

समालोचना के बिषय में मेरा (यदि मैं इसे अपना कह सकता हूं, क्योंकि यथार्थ में मेरा यह विचार चतुर्वेदीजी के समान भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों के विचारों का फल है) यही सिद्धान्त है। चतुर्वेदीजी खुशी से माली बन कर साहित्य की वाटिका में खुरपी चलावें और दूसरों को भी यही करने की आज्ञा दें। पर मेरी समझ में उनका परिश्रम व्यर्थ है। साहित्य वाटिका नहीं, अरण्य है। इसका विस्तार बढ़ता ही जाता है। यहां सभी तरह के झाड़ होते हैं और होंगे। यदि आपको चन्दन का शौक है तो चन्दन खोज लीजिए और दूसरों को भी बतला दीजिए। घास-फूस की चिन्ता करना व्यर्थ है। वर्षा के दिनों में इनका अस्तित्व अवश्य बना रहेगा। ग्रीष्म की ज्वाला में ये झुलस जायँ पर नष्ट होने के नहीं। फिर भी यदि चतुर्वेदीजी को खुरपी का कच-कच शब्द पसन्द है तो अच्छी बात है। समरथ को नहिं दोष गुसाईं।

छद्मयोगिनी

(गतांक के आगे)

द्वितीय दृश्य

स्थान—महाराज बृषभानु का उपवन

(श्री राधिकाजी ललिता, बिसाखा, मंजुमालिनी आदि सखियों सहित बैठी हैं)

ललिता—(विसाखा से) अरी बीर, कल तैंने जल्दी जल्दी में श्रीजी का बनाया छन्द सुनाया था। मुझे उसके सुनने की फिर उत्कण्ठा है। तेरी बलैयाँ लेती हूं, एक बार और सुनाय दे।

मंजु०—हाँ, सखी मेरी भी साध पूरी करदे

विसाखा—सब की साध पूरी किये देती हूं। सुनो—

श्री राधा—(विसाखा से) चल, रहने दे। बड़ी छन्द सुनाने वाली आयी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि०—सुनाने में कौन सी हानि है ? क्या रसिक जनों की साध पूरी न करूं ? सुनो, बीर—

सवैया

जैहौ किते, चित चोर लला !
मन मन्दिर में तुम्हैं कैद करौंगी।
बाँधिहौं हाथ 'हरी' कसिकै,
बसिकै छिन में चतुराइ हरौंगी॥
त्यौं तिरछी भकुटी-लकुटी गहि,
नाच नचाइ कै दण्ड भरौंगी।
बैनु दुराइ कै, हार हराइ कै,
हाहा कराइ कै प्यारे ! टरौंगी॥

मंजु०—बीर, एक बार और।

श्री राधा—क्या तुम सब को और कुछ काम नहीं है ?

मंजु०—श्रीजी महाराज, यह छंद सुन कर मुझे इस दोहे का स्मरण आ गया कि—

आउ पियारे मोहना, पलक झाँपि तोहि लेउँ।
ना मैं देखूं और को, ना तोहि देखनि देउँ॥

ललि०—धन्य श्रीजी को ! कैसा ऊंचा भाव है। अहा ! "ना तोहि देखनि देउँ"—कहीं कैदी भी अपनी मन मानी कर सकता है ?

वि०—हाँ, समझ गयी। यह चंद्रावलीजी पर कहा गया है।

ललि०—श्रीजी को, प्यारे का चंद्रावली की ओर देखना ही तो खलता है। ठीक ठीक,—ना तोहि देखनि देउँ। न देखेंगे, जो आप की आज्ञा होगी सो करेंगे।

श्री राधा—क्यों व्यर्थ बातें बनाय रही है ? अरी, कहीं कविता भी साँची होती है ! यह तो कोरी कल्पना है, मनोरंजन है। किस की सामर्थ्य, जो प्यारे को किसी की ओर न देखने दे या उन्हें बाँध कर अपने बस में रख सके ?

वि०—आप की, आप की, और किसी की नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राधा—वीर, क्यों झूठ मूठ हँसी उड़ाय रही है? प्यारे तो स्ववश बिहारी हैं, अपने मन के ठाकुर हैं। उन्हें किसी का दरद और माया मोह थोड़े ही है। (आह लेती हैं)

वि०—यह आप का भ्रम है। प्यारे—प्यारे अपने मन के नहीं, आप के मन के हैं।

ललि०—बेदाम के गुलाम हैं। सुन—

सवैया

जो अनवेद्य अनादि अनंत अखंड,
अनन्य अनूप अकाम है।
जाहि निरूपहिँ वेद सदा कहि,
नित्य निरीह निरंजन नाम है॥
जो जन रंजन दुष्ट विभंजन गंजन
गर्व 'हरी' सुखधाम है।
सोइ त्रिलोक को नाथ अली!
वृषभानु लली की गली को गुलाम है॥

मंजु०—सत्य है, सत्य है। कल ही की बात है, साँकरी गली में प्यारे अपनी धुन में यह गीत गाते चले जा रहे थे।

ललि०—सखी कौन गीत? याद होय, तो सुनाय दे।

मंजु०—याद तो है, पर वह सुरीली धुन कहाँ पाउँगी।

वि०—तू सुरीली न होगी तो होगा कौन!

मंजु—सुनो—

दादरा

राधे, छाँड़ो मान, बिनय सुन मोरी।
तैं मो प्रान, मैं प्रान तिहारो, दो तन एकहि प्रान;
कहौं तृन तोरी। राधे० ॥
मैं चकोर तैं चन्द, मोर मैं, तैं घनमाल समान;
सरस रस बोरी। राधे० ॥
मैं चातक तैं स्वाति रँगीली, देहु प्रेम रस दान;
मान मति भोरी। राधे० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सेवक तैं सुरति स्वामिनी, प्यारी परम सुजान;
अचल हरि जोरी। राधे० ॥

दोहा

ललिता—जोड़ी जुगलकिसोर की, अचल रहौ जुगचार।
हम चकोर ह्वै नित लखैं, जुगल चन्द्र सिंगार ॥

बि०—बस—

बार बार ब्रज जनम लै, सेवैं स्यामा स्याम।
भुक्ति मुक्ति ठुकराय कै, पावैं नित निज धाम ॥

मंजु०—हम सब सदा प्रिया प्रीतम की टहल करती रहें, यही अंचल पसार पसार बिधिना से माँगती हैं।

बि०—बीर मंजु, तू मान सम्बन्धी गीत समझ गयी न ?

मंजु—सखी, नहीं। यही समझ पाई कि प्यारे श्रीजी के लिये कैसे अधीर रहते हैं। न जाने, श्रीजी को मान करने में क्या आनन्द मिलता है ?

श्री०—सखी, कुछ न पूंछ। प्रेम का पंथ ही कुछ ऐसा है। अंतर में मान न रहते हुए भी कभी कभी ऊपरी मान आ ही जाता है। मैं मन में बहुत पछताती हूं। प्यारे की अधीरता देख देख क्या मेरा बज्र हृदय फटता नहीं है ? (आह लेती हैं।)

बि०—श्रीजी, आप दोनों की लीला अपार है, मन बानी से परे है। आप दो तन एक प्राण हैं। हम संसारी विषयी जीव आप की प्रणय-महिमा कैसे समझ सकते हैं।

नेपथ्य में—

"गुही है प्रेम माधुरी माल।"

श्री राधा—कैसा मधुर गीत है ! बिसाखा, कौन गाय रहा है ?

बि०—देखूँ ! (ध्यान से सुन कर) हाँ, माधवी है। फूल तोड़ने गयी थी। वही यह मधुर गीत अलाप रही है।

(फूलमाला लिये माधवी का प्रवेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राधा—प्यारी माधवी, क्यों रुक गयी ! अपना मधुर गीत सुनाती क्यों नहीं ?

माधवी—श्रीजी की जो आज्ञा।

गीत

गुही है प्रेम माधुरी माल।
धारिये उर पै व्रज गोपाल ॥
हिये में उपवन रम्य बिसाल।
भाव के फूले फूल रसाल ॥
लगन को सूत रंगीलो लाल।
गुथे, हैं तामें कुसुम के जाल ॥
पियारे, मानस मंजु मराल।
धारिये, आय हरी ! बनमाल ॥

श्री राधा—माधवी, आज तूही प्यारे को अपने हाथ से यह माधुरी माल पहिनाय दीजौ। (विसाखा से)- बीर, मालती कहां है? अबलौं नहीं आई।

वि०—उपवन ही में तो रही। यहीं कहीं घूमती होगी। क्या बुलाय लाऊँ ?

श्री राधा—हाँ।

वि०—जो आज्ञा।

नेपथ्य में—

"रंगीली जोगिन जादूवारी।"

श्री राधा—सुनो, सुनो—क्या ही मधुर गीत है। सुर तो मालती कैसा लगता है, कौन है विसाखा ?

वि०—हाँ, मालती तो है। अहा !

नेपथ्य में—

रँगीली जोगिन जादूवारी।

श्री०—इधर ही आ रही है। सुनो, सुनो—

नेपथ्य में—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम सलौनी सुघर सांवरी, जोबन रंग मतवारी ॥

बि०—अहा !

भाल भसम कुंडल कानन में, मुख पै लट लटकारी।
भगवा बसन कंठ बिच सेली, निपट नवेली नारी ॥
आसन मारे ध्यान लगाये बैठी अति सुकुमारी।
चेली या की जाय होउँगी, छाँड़ि सबै संसारी ॥

श्री राधा—एँ ! ऐसी कौन सी पहुंची हुई जोगिन आय गयी जो मालती जैसी चंचला को भी चेली बनाय लेगी ? चलो, नैक उसे देखैं तो।

बि०—अवश्य देखना चाहिए।

(श्री राधिका जी सब सखियों सहित मालती के पास जाती हैं।)

तृतीयाङ्क

प्रथम दृश्य

(मालती 'रंगीली जोगिन' आदि बार बार गाती है, श्रीराधिकाजी योगिनी के विषय में उससे पूछती हैं)

श्री राधा—मालती, तुझे क्या हुआ है ? पागल तो नहीं हो गयी ! किस जोगिन के गुन गाय रही है ? कहां है वह जादूवाली जोगिन ?

मालती—परम सलौनी सुघर साँवरी—

ल०—हाँ, सुन लिया, पर वह साँवरी जोगिन है कहाँ ? कुछ कहैगी भी कि नहीं ?

मालती—कहाँ है ? मेरे हृदय में है, आँखोंमें है, रोम रोम में है। चल, दिखाय दूँ—

भाल भसम कुंडल कानन में...

मैं तो उसकी चेली बनूँगी, रात दिन सेवा करूँगी, सदा दर्शन करती रहूंगी। अहा !

मुख पै लट लटकारी।

(पागल का नाट्य करती है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राधा—चल दिखा—कहाँ है तेरी जोगिन ?

मालती—जो आज्ञा ।

चेली या की जाय होउँगी, छाँड़ि सबै संसारी—

(गाती हुई सब को लेकर जाती है)

द्वितीय दृश्य

(श्री कृष्ण योगिनी वेश में एक शिला पर ध्यानावस्थित बैठे हैं)

वि०—अहा ! ऐसी सुंदर सलोनी मूरत तो आज तक कहीं नहीं देखी । जोगिन क्या है, रूप की रासि है, तेज की पुंज है ।

ल०—सखी, तपस्या का तेज इसके मुखमंडल पर सूर्य जैसा झलक रहा है ।

मंजु०—सो तो सब ठीक है, पर वैराग्य अभी पूरा २ नहीं चढ़ा है ।

ल०—अभी बयस ही क्या है ?

वि०—क्यों बीर, यह बालावस्था ही में जोगिन क्यों हो गयी ?

मंजु०—मेरे ज्ञान इसने किसी के प्रेम में पड़ कर जोग धारन किया है ।

वि०—ताड़ा तो खूब । देखो न, अधरों पर अनुराग का कैसा हलका हलका रँग झलक रहा है ।

ल०—यही क्यों, यदि आँख खोल दे तो वहां भी प्रेमरस छलकने लग जाय ।

श्री०—क्यों व्यर्थ बक बक लगाये हो ? जोगिन से यह पूँछो कि वह कहां से आयी है ।

वि०—जो आज्ञा ।

(विसाखा योगिनी के पास जाकर उसका नाम धाम आदि पूँछती है)

वि०—जोगिन जी, नैक नेत्र तो खोलो । आप कहाँ से पधारी हैं ? आप का नाम क्या है ?

योगिनी—(नेत्र खोल कर) नारायण, नारायण ! आत्म-चिंतन करने में कैसे विघन आते हैं । क्या ही शान्ति समाधि लग रही थी, कैसा इन लोगों ने आकर भजन भंग किया । शिव शिव ! (विसाखा से) इस शरीर को "सिद्धेश्वरी" कहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल०—आप का स्थान कहाँ है ? इस समय कहाँ से पधारी हैं ?

यो०—अपने राम का कोई एक स्थान तो है नहीं। रमते राम हैं। यह शरीर, आज बाराह क्षेत्र से आ रहा है। यहाँ एकान्त में जलाशय आदि का सुपास देख कर ठहर गयी थी, इतने में तुम सब ने आकर शान्ति भंग कर दी। नारायण नारायण!

मंजु०—जोगिन जी, आपने हमारी सखी मालती पर कौन सा जादू टोना कर दिया ? देखो, इसकी कैसी दशा हो गयी है। कहती है, मैं जोगिन की चेली हो जाउँगी।

यो०—न माई, मैं किसी को चेली बेली नहीं बनाती। अपने राम तो अकेले ही विचरते हैं।

वि०—जोगिन जी, हम सब आप की चेली हो जायँगी। कृपा कर आप इतना बताय दें कि आप ने ऐसी छोटी बयस में क्यों जोग धारन कर लिया ?

यो०—जितनी जल्दी हो सके संसारी झंझट छोड़ कर इस चंचल चित्त को आत्म चिंतन में लगाना चाहिए! न जाने, कब काल-कलेवा होना पड़े। 'शुभस्य शीघ्रम्' समझ कर ही मैंने यह धारणा धार ली है।

ल०—जोगिन जी, अपराध क्षमा हो, तो कुछ कहूं।

यो०—माई, क्या पूँछती है!

ल०—आप किसी बड़े राज घराने की बेटी समझ पड़ती हैं। आप पर वैराग्य का रंग कैसे चढ़ गया ?

श्री राधा—(ललिता से) क्यों जोगिनजी को सताय रही है ? (योगिनी से) आप भजन कीजिए। यह सब तो गँवार हैं।

यो०—माई, तू समझदार जान पड़ती है। तेरा भाग्य भी बड़ा शुभ है। तू किसकी पुत्री है ?

श्री राधा—महाराज वृषभानु मेरे पिता और कीरति मेरी माता हैं। ये सब सखी सहेलियाँ हैं।

योगिनी—क्या राधा तेरा ही नाम है ? अहा!

वि०—क्यों, जोगिन जी, आप ने श्रीजी का नाम कैसे जाना ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंजु०—जानती नहीं, जोगियों की पहुँच तीन लोक और चौदह भवन में होती है, और फिर, हमारी श्रीजी का तेज और प्रताप कहीं छिप सकता है ?

यो०—राधे, तू योग की अधिकारिणी है। मैं तुझे योगाभ्यास सिखाय दूँगी। इस नगरी में मुझे कोई योग-विद्या का अधिकारी नहीं मिला। पर, तू राजकुमारी है, भला हम योगियों की बातों में क्यों आने लगी ?

श्री राधा—जोगिन जी, योगाभ्यास सीखने से कौनसी वस्तु मिल जाती है ?

यो०—ज्ञान और विवेक।

श्री राधा—इनसे क्या होता है ?

यो०—आत्मा के सच्चे स्वरूप का दर्शन।

श्री०—फिर ?

यो०—इस संसार से मुक्ति।

श्री०—कैसी मुक्ति ?

यो०—संसार के दुःखों से सदा के लिये छूट जाना और अपने सहज स्वरूप की प्राप्ति कर लेना।

श्री०—हम सब को इस मुक्ति की चाह नहीं है।

यो०—क्यों ?

श्री०—यह ब्रजमंडल संसार से परे है। यहां संसारी त्रिविध ताप नहीं व्यापते। हाँ, जो आपके योगाभ्यास में कुछ प्रेम का तत्व होता, तो हम सब बड़े चाव से इसे सीख लेतीं।

यो०—(हँसकर) राज कुमारी ! यह झूठी बातें कहां सुनी है ? जहाँ तक मन वाणी की पहुंच है, वहाँ तक माया और संसार है। आत्म-लाभ के आगे प्रेम क्या वस्तु है ?

वि०—जोगिन जी, श्रीजी सत्य कहती हैं। हमारे ब्रज में तुम्हारी मुक्ति भी मुक्त हो जाती है। क्या सुना नहीं है—

> मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय।
> ब्रजरज उड़ि मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री०—हाँ, सखी ! जोगिन नयी है, बेचारी ब्रजभूमि की महिमा नहीं समझ सकती।

मंजु०—यही समझने को तो संसार छोड़कर सिद्धपीठ बरसाने में तपस्या करने आयी है।

यो०—नारायण, नारायण ! तुम लोग ज्ञान विवेक की बात तो समझती ही नहीं, लगीं उलटी मुझे ज्ञान देने !

श्री०—जोगिन जी, हम सब इतना योग, ज्ञान, विवेक तो सीख चुकी हैं, इससे आगे कहिये, क्या है ?

यो०—मुक्ति के आगे क्या है, कुछ नहीं कह सकती। इस अवस्था में जीव और ब्रह्म एक रूप हो जाते हैं।

श्री०—एक रूप होने से क्या लाभ है ?

ल०—खांड़ के खाने में ही सुख है, स्वयं खांड़ बन कर क्या करैंगी! बाबा, छोड़ा ऐसा जोग।

श्री०—जोगिन जी, संसार से जब मुक्ति हो गयी, तब मुक्ति के बाद जो सुख है, उसका वर्णन कीजिए।

यो०—मुक्ति के आगे पीछे का वर्णन कैसा ? वह तो स्वयं सुख रूपा है।

श्री०—मैं आप का वेदांत नहीं समझती। सीधी सीधी बात कहिए, क्या योगाभ्यास से प्रेमस्वरूप वृन्दावन-बिहारी की प्राप्ति हो सकती है ? मुक्ति के आगे भी कुछ है, और वह यही मिलन सुख है। देखो, राग कैसा दुःखदायी है। उसे छोड़ कर वैराग्य लेना पड़ता है, किन्तु वैराग्य ही सर्वस्व नहीं है, इसके आगे अनुराग है। इसी प्रकार संसार से मुक्त होकर, मुक्ति से भी मुक्त होना पड़ता है, और वह अवस्था निष्काम शुद्धप्रेम द्वारा ही प्राप्त हो सकती है, योग द्वारा नहीं।

यो०—राजकुमारी ! तू बड़ी चतुर है। योग विद्या का अधिकार होने पर भी कुछ चंचलता है, इसी से तुझ पर मेरा ज्ञान ठीक ठीक नहीं जमता। यह लड़कपन है, और कुछ नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंजु—श्रीजी का तो लड़कपन है, और आप कौन बड़ी पुरखा हैं ?

श्री०—जोगिन जी, आप इन लोगों के कहने का बुरा न मानना। ये आपकी महिमा नहीं समझ सकती।

यो०—राधे, मैं तेरी बुद्धि पर बड़ी प्रसन्न हूं। हां, अभी तूने क्या कहा था ? यही न कि मुक्ति के बाद प्रेमस्वरूप वृन्दावन बिहारी की प्राप्ति होती है। वृन्दावन बिहारी से तेरा क्या तात्पर्य है ?

श्री०—आश्चर्य है, कि आप वृन्दावन-विहारी को नहीं जानतीं !

यो०—नहीं।

श्री०—फिर जाना ही क्या ? सुनिये—

ब्रज वल्लभ आनंद-रासि सब उर पुर वासी।
योगेश्वर नँद नंद मुक्ति हू जिन की दासी॥
स्ववस बिहारी भावते, नित किसोर घनस्याम।
हम सब के प्रीतम सोई, हरि पूरन सुखधाम॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—निराकार निरगुन निरीह नित अज अविनासी।
परब्रह्म परमेश एक सब उर पुर वासी॥
जाके नाम न रूप गुण, अखिल सच्चिदानंद।
सो ब्रज कैसे आइ कै, पर्‌यो प्रेम के फंद॥
कहौ नव नागरी।

श्री०—होइ धरम की हानि जबै अधरम बढ़ि जावै।
नर तनु धरि जन रंजन हरि तब भूतल आवै॥
कृष्णचंद्र पूरन कला, लैकै ब्रज अवतार।
देत ब्रह्म सुख नित हमैं रचि रचि रास विहार॥
सुनौ हो जोगिनी।

यो०—निरविकार अज ब्रह्म रचै किमि रास बिहारै।
अखिल लोक को ईश कहौ किमि नर तनु धारै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निगम निरूपहिं नेति कहि, जाके तात न मात।
सो किमि ब्रज गोपीन गृह, दुरि दुरि माखन खात॥
कहौ नवनागरी।

श्री०—निगम निरूपहिं जाहि, दरस योगी नहिं पावैं।
हम सब दै दै छाछ ताहि नित नाच नचावैं॥
जाने हरिहर बिधि सबै लिये बाँधि निज फंद।
सोइ जसुमति ऊखल बँध्यो, सुद्ध सच्चिदानंद॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—ज्योति रूप वह ब्रह्म अगोचर अकथ अभोगी।
साधि समाधि अखंड जाहि पावै इक योगी॥
करि विराग संसार सौं, साधि योग के अंग।
जीव लीन करि ज्योति में, मिले ब्रह्म रस रंग॥
सुनो नव नागरी।

श्री०—आसन प्राणायाम साधि क्यों समय गमावै।
भक्ति योग सौं जो प्रियतम अधरामृत पावै॥
सोहं सोहं जपै क्यों, पचै समाधि लगाइ।
क्यों न रास रस लूटिलै, ब्रज वल्लभ आराधि॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—योग साधना साधि क्यों न निरगुन पद पावै।
ओंकार आराधि आधि औ व्याधि नसावै॥
आदि रूप ओंकार है, निगमागम को मूल।
यातें ब्रह्मानँद मिलै, मिटै त्रिविध जग सूल॥
सुनो नव नागरी।

वि०—श्रीजी की नूपुर तें प्रगट्यो प्रणव तिहारो।
ज्योति ज्योति जिहि कहत, प्रिया-पदनख उजियारो॥
जुगुल रूप रस माधुरी, निगमागम की मूल।
नैक नैन की कोर तें, मिटै त्रिविध जग सूल॥
सुनो हो जोगिनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल०—रूखी सूखी जोग कथा तेरी को सुनिहै।
ब्रज बिहार तजि सरस ज्ञान नीरस को गुनिहै॥

मेवा मिसरी पाइ को, नीम निबौरी खाइ।
कामधेनु तजि बाखरी, छेरी कौन दुहाइ॥
सुनो हो जोगिनी।

मंजु०—तहँ समाधि में मधुप पुंज गुंजरत कुंज री।
कहँ कदम्ब घन छाँह बिपिन वृन्दा सुमंजरी॥

नहिं गोवर्धन गिरि तहाँ, नहिं कालिन्दी कूल।
नहिं बीनन को मिलैं तहँ, नित सिंगार के फूल॥
सुनो हो जोगिनी।

माधवी०—साधि समाधि अखंड कहा योगी जन पायो।
अहंकार अनि बढ्यो अष्ट सिधि जाइ फँसायो॥

करनी कछु कथनी कछू ज्ञानी दंभ स्वरूप।
प्रेम लच्छना भक्ति बिनु परे रहत भव कूप॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—कहा योग को तत्व गँवारिनि गोपी जानै।
बिनु जौहरी अमोल रतन कोउ का पहिचानै॥

राग द्वेष में फँसे जे, समुझैं नाहिं विवेक।
छाँडैं नहिं हठ आपनी, गहि लीन्हीं जो टेक॥
सुनो ब्रज नागरी।

श्री०—रोष करौ जिनि दोष देहु गोपिन को प्यारी।
ये गँवार पै तुम विरागिनी चतुर सुनारी॥

तुम्हैं न माया मोह कछु होय चुकीं भव पार।
ब्रह्म ज्ञान के तत्व को जानै कहा गँवार॥
सुनो हो जोगिनी।

यो०—तो पर मेरो सहज नेह वृषभानु-कुमारी।
सिखा देउँगी योग अंग सब तोकों प्यारी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या ही उपवन में अली, साधौ प्राणायाम ।
देहौं तोहि बताय मैं, अचल मुक्ति को धाम ॥
सुनो नव नागरी ।

श्री०—बार बार क्यों कहति जोगिनी जोग सिखावन ।
साधि चुकीं हम जोग मिले प्यारे मन भावन ॥
इकटक त्राटक करैं नित, निरखि स्याम मुख चंद ।
मुरली अनहद नाद सुनि, दिये काटि जग फंद ॥
सुनो हो जोगिनी ।

यो०—बार बार तू प्रेम नेम की बात बढ़ावति ।
मेरो ज्ञान विवेक नैक नहिं मन में लावति ॥
ज्ञान मुक्ति को द्वार है, मोह बंध को मूल ।
राधे, ईश्वर जगत के, भोगनि में मति भूल ॥
जोग तू साधि लै ।

श्री०—कौन करति इत जोग भोग जग के को चाहै ।
प्रेम पंथ अनुसरति जो। लै को तन दाहै ॥
मोह प्रेम में भेद कछु, समुझ्यो नहिं निरधारि ।
देति कहा उपदेस री, ज्ञान जोगिनी हारि ॥
बाँवरी जोगिनी ।

मंजु०—जोगिन जी, अद्वैत बात यह नीकौ गावो ।
हरिया हरी कपूर एक ही भाव लगावो ॥
राग मोह परपंच तजि, पायो पिय अनुराग ।
पहुँचि सकैं नहिं जहँ कबौं, ज्ञान विवेक विराग ॥
तिहारे जोगिनी ।

श्री०—सचराचर में मदन मोहिनी पिय छवि छाई ।
नहिं काहू सौं द्रोह मोह समता इमि आई ।
स्याम रूप रस रसिक हम, पीवैं अधर पियूख ।
साधी सहज समाधि, तजि नींद प्यास अरु भूख ॥
सुनो हो जोगिनी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपथ्य में—

श्री राधे योगेश्वरी, धन्य तिहारो योग।
प्रिय अनुराग सुहागिनी, दिये त्याग जग भोग॥

वि०—ऐं! यह कौन है!

ल०—सुर तो मैना जैसा है।

मंजु—(ऊपर की ओर देख कर) वीर, ठीक है। देख, इस तमाल वृक्ष पर दो सारिकाएँ बैठी हैं। यही हम सब का वाद विवाद सुन रही हैं।

ल०—अवलौं श्रीजी की ही जीत है, पंछी तक साखी दे रहे हैं।

मंजु०—(ऊपर की ओर देख कर) अरी मैना, तेरा क्या नाम है! तू कहाँ से आय इस तमाल पर बैठ गयी?

सारिका—हम दोनों न जाने कहाँ कहाँ विरमती हुई इस सुन्दर उपवन में आ पहुँची हैं। आज श्रीजी के दर्शन कर हमारे जन्म सफल हो गये। मेरा नाम मान मंजरी और मेरी सखी का नाम कुंज कामिनी है। दासियों को क्या आज्ञा है?

श्री०—मान मंजरी, सारिका होकर भी तू पंडितों जैसी बात कर रही है। तेरी बोली बड़ी मधुर लगती है। तुम दोनों, तमाल पर से उतर कर हमारे समीप आओ।

वि०—हम लोग तुम्हें योगिनी और श्रीजी के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ बनायँगीं।

दोनों सा०—जो आज्ञा।

(दोनों सारिकाएँ उतर कर श्रीजी के चरणों के समीप बैठ जाती हैं)

(शेष आगे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य निर्माण

[ले०—श्री० युगलात्मा "कोविद", सम्पादक श्री स्वदेश]

टलीके सुप्रसिद्ध नवयुवक नेता मेजनी का कहना था कि विना स्वदेश प्रेम और स्वतंत्रताके वास्तविक साहित्यका निर्माण होना असम्भव है। प्रिय पाठक वृन्द ! यह कथन अत्युक्ति पूर्ण नहीं, बल्कि अक्षरशः सत्य है। भारतमें उसी समय वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, सूत्र, स्मृति आदि अनुपम ग्रंथों की रचना हुई, जिस समय कि वह पूर्ण स्वतंत्र था। पश्चात् रामायण, महाभारत, रघुवंश, नैषध चरित, शकुन्तला, उत्तर रामचरित, शिशुपालवध, कादम्बरी, किरातार्जुनीय आदि काव्य तथा नाटकों की उत्तमोत्तम रचनाएं हुईं। मुसलमान बादशाहों के जमाने तक तुलसी और सूर की प्रभावशालिनी कविता ने साहित्य क्षेत्र की अपार वृद्धि की। यद्यपि यह समय पराधीनता की दुर्गन्ध से दूषित हो चुका था, पर स्वतंत्रता समूल नष्ट नहीं हुई थी, स्वदेश प्रेम का अंकुर जड़ से उखाड़ कर फेंक नहीं दिया गया था। परन्तु इस घोर पारतन्त्र्यकालमें सत्साहित्य का निर्माण क्योंकर हो ?

अब प्रश्न यह उठता है, तो क्या हमें हाथ पर हाथ रख बैठ जाना चाहिए ? नहीं, ऐसी दशा में ऐसे साहित्य का निर्माण करना चाहिए जिससे शीघ्र स्वराज्य प्राप्त करने के निमित्त लोग कटिबद्ध हो जायँ। हर्ष का विषय है कि आधुनिक समय में सुलेखक ऐसा करने भी लगे हैं।

शृङ्गार की इस समय जरूरत नहीं है। वर्तमान काल में आवश्यकता है केवल राष्ट्रीय रचनाओं की। महाकवि वृन्द ने क्या ही युक्तियुक्त कहा है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस सिंगार न सुहात॥

यदि किसी को विवश हो राष्ट्रीय रचना से वञ्चित रहना पड़े तो कम से कम उसे नायिका भेद, नखशिख आदि की तो अवश्य उपेक्षा करनी चाहिये।

साहित्य निर्माण में जाति के हित का अवश्य विचार रहना चाहिये। भला जिस साहित्य से जाति की अवनति होती हो उसका निर्माण करना निरा परिश्रम कमाना नहीं तो और क्या? तुलसीदास जी की जो इतनी प्रसिद्धि है उसका यही कारण है कि उन्होंने व्यर्थ की रचना न कर स्थान स्थान पर धर्म की दुहाई देते हुए आध्यात्मिक बातों का वर्णन किया है जो साहित्य निर्माण का आदर्श है।

नायिका-भेदादि ने साहित्य सरोवर के स्वच्छ सलिल को गँदला कर डाला, कहा जाय तो अन्याय संगत नहीं। साहित्य निर्माण में प्रेम की छटा छटकानी चाहिये, नकि विरोध की, सती स्त्री का चरित्र चित्रण करना चाहिये न कि व्यभिचारणी का, स्थान स्थान पर मनुष्यत्व की विवेचना रहनी चाहिये न कि पशु की, अक्रोध, अहिंसा, क्षमा, दान आदि का वर्णन रहना चाहिये न कि क्रोध, हिंसा, कंजूसी आदि का। सारांश यह कि साहित्य में उच्च आदर्श की कल्पना करनी चाहिये न कि नीच की। रक्तपात, हत्या वीभत्स रस आदि का वर्णन तो न होना ही उचित है।

हमारे उपर्युक्त कथन का प्रतिवाद भी उपस्थित हो सकता है और वह यह कि बिना नीम का स्वाद चखे सिता के सुस्वाद का अनुभव नहीं होता, परन्तु इसका यही प्रत्युत्तर है कि जो गुड़ देने से काम बन जाय तो उसे विष क्यों दिया जाय? चाहे हित के उद्देश्य से ही नारकीय दृश्यों की रचना की जाय, परन्तु उनका प्रभाव कुत्सित पड़े बिना नहीं रह सकता। साहित्य निर्माण में जाति के हित का, राष्ट्र के हित का कुल वर्णन होना चाहिये। जाति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भलाई, बुराई, उन्नति, अवनति का चित्र खींचना चाहिये, कि व्यर्थ के अश्लीलता भरे शब्दाडम्बरों का *

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का तृतीय अधिवेशन

द्वादशवर्षीय स्थायी समितिका तृतीय साधारण अधिवेशन रविवार कार्तिक शुक्ल ९। ७९ तदनुसार २९ अक्टूबर २२ को १२ बजे दिन से सम्मेलन कार्य्यालय में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

१—श्री० पुत्तनलाल विद्यार्थी
२—श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
३—श्री० " इन्द्रनारायण द्विवेदी
४—श्री० प्रो० वेणीप्रसाद जी
५—श्री० " व्रजराज जी
६—श्री० पं० रामजी लाल शर्मा
७—श्री० प्रो० गोपालस्वरुप भार्गव
८—श्री० पं० लक्ष्मीनारायण नागर
९—श्री० बा० संगमलाल जी

कार्य विवरण

सर्व सम्मति से श्री० पुत्तनलाल जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—गत अधिवेशन का कार्य विवरण स्वीकृत हुआ।

२—इस समिति को अपने सदस्य हिन्दी, संस्कृत और पाली के धुरन्धर विद्वान् श्रीयुत चन्द्रधर शर्मा गुलेरी बी. ए. की आकस्मिक मृत्यु का समाचार सुनकर हार्दिक दुःख हुआ। यह समिति भगवान् से प्रार्थना करती है कि आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान कर आपके कुटुम्बियों को इस असीम दुःख सहने की शक्ति दे।

३—यह भी निश्चित हुआ कि इस सहानुभूति सूचक प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि श्रीगुलेरीजी के कुटुम्बियों के पास भेजी जाय।

* यह लेख बहुत अंशों में, कुछ बातें निकाल देने पर भी, विषय-संगत नहीं है। इस लेख के लेखकों को अभी खूब बारीकी से हिन्दी साहित्य का अनुशीलन करना चाहिये।—संपादक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—श्री गोकुलचन्द जी की घोषणा की शर्तों के अनुसार जो ५ सज्जनों की एक समिति 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' के प्रबन्ध के लिए बननी चाहिये थी, उस के निम्नलिखित सज्जन सर्व सम्मति से सदस्य चुन गये :—

१—श्री० गोकुलचन्द जी,
२—सभापति-श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी
३—श्री० प्रो० व्रजराज
४—श्री० पं० रामजी लाल शर्मा
५—श्री० पुत्तनलाल विद्यार्थी

५—निश्चित हुआ कि इस उपसमिति का नाम "भाई मङ्गला प्रसाद पारितोषिक समिति" रक्खा जाय।

६—निश्चित हुआ कि मंगला प्रसाद पारितोषिक के लिए केवल उन्हीं पुस्तकों पर विचार किया जायगा जो पारितोषिक द्वारा नियत तिथि तक सम्मेलन कार्यालय में आ जायँगी। जिन पुस्तकों पर एक बार विचार हो जायगा, उन पर पुनः विचार न हो सकेगा।

व्याख्या—प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार होगा कि वह किसी हिन्दी पुस्तक को विचारार्थ भेज सके, परन्तु इस कार्य के लिए उन्हें नियत तिथि तक उस पुस्तक की 'तीन' प्रतियाँ कार्यालय में भेज देनी होंगी।

७—निश्चित हुआ कि पारितोषिक-प्रदान के लिए सम्पूर्ण विषयों के निम्न लिखित चार विभाग किये जायँ:—

(१) साहित्य (काव्य, उपन्यास, नाटक, कविता आदि)
(२) दर्शन (धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान आदि)
(३) विज्ञान (गणित, रसायन, भौतिकशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक आदि)
(४) इतिहास (पुरातत्व, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयोंके सम्बन्ध में पारितोषिक समिति निश्चय करेगी कि कौनसा विषय किस विभाग के अन्तर्गत जाना चाहिए।

८—प्रस्ताव ७ में वर्णित ४ विषयों में से यथाक्रम एक विषय पर प्रतिवर्ष 'पारितोषिक' दिया जाया करेगा।

९—इस पारितोषिक का प्रबन्ध करने के लिए जो पांच सज्जनों की उपसमिति बनायी गई है, उसका प्रत्येक वर्ष स्थायी समिति द्वारा चुनाव हुआ करेगा, उसके एक सदस्य श्री० गोकुलचन्द जी या उनके एक प्रतिनिधि अवश्य रहेंगे।

१०—निश्चित हुआ कि पारितोषिक समिति उपर्युक्त नियमों के अनुकूल पारितोषिक के लिए अन्य आवश्यक उपनियम बना सकती हैं, किंतु उनकी स्वीकृति स्थायी समिति से लेनी होगी।

११—निश्चित हुआ कि आगामी सम्मेलन के अवसर पर 'साहित्य' विषय पर प्रथम पारितोषिक दिया जाय।

१२—(अ) निश्चित हुआ कि इस वर्ष तीन सज्जनों की एक समिति जो 'निर्णायक समिति' कहलायगी, इस बात का निर्णय करेगी कि कौन लेखक इस पारितोषिक के अधिकारी हैं।

(आ) सात सज्जन इस निर्णायक समिति के लिए चुने गये और यह नियम निश्चित हुआ कि प्रथम तीन सज्जन इस निर्णायक समिति के सदस्य चुने जाँय, और यदि कोई सज्जन सदस्य होना स्वीकार न करें तो क्रमानुसार निम्न लिखित अन्य शेष सज्जनों से सदस्य होने के लिए प्रार्थना की जाय।

(३) यदि इन सातों सज्जनों में से तीन सज्जन भी निर्णायक समिति का सदस्य होना स्वीकार न करें, तो पारितोषिक समिति को अन्य निर्णायक चुनने का अधिकार होगा।

१४—निश्चित हुआ कि श्री दीनदयालु बी. ए., ६०) रु० मासिक वेतन सम्मेलन-कार्य्यालय में चार मास के लिए सहायक मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियुक्त किये जायँ। उस अवधि के बाद इनकी नियुक्ति स्थायी करने के लिए पुनः विचार किया जायगा।

१५—पंजाब में प्रान्तीय सम्मेलन की स्थापना के विषय में निश्चित हुआ कि श्री प्रचार मंत्रीजी पंजाब प्रान्त के हिन्दी प्रेमियों से पत्र व्यवहार करके तथा पंजाब प्रान्त के समाचार पत्रों द्वारा आन्दोलन करके पंजाब प्रान्त में प्रान्तीय सम्मेलन स्थापित करने का प्रयत्न करें।

१६—विद्यापीठ के संगठन के विषय में निश्चित हुआ कि विद्यार्थियों की सुविधा के लिए संध्योपरान्त पढ़ाई प्रारम्भ की जाय और उसके लिये १००) रु० मासिक से अधिक व्यय न किया जाय। करघा विभाग का प्रबन्ध दिन में कर दिया जाय।

१७—आयव्यय-परीक्षक का नोट पढ़ा गया और निश्चित हुआ कि गत वर्ष का भाद्र कृ० १।७६ से आ० शु० १५।७६ का आय व्यय का चिट्ठा स्वीकृत किया जाय और आय व्यय परीक्षक के नोट तत्सम्बन्धी विभागों में सूचनार्थ भेजे जायं।

१८—निश्चित हुआ कि मद्रास प्रचार का निरीक्षण करने के लिए शीघ्र ही मद्रास प्रान्त में सहायक मंत्री भेजे जायँ, जिससे दिसम्बर की स्थायी समिति की बैठक में मद्रास वाली रिपोर्ट पर विचार किया जाय।

सभापति को धन्यवाद देने के बाद अधिवेशन समाप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

सं० १९७९ की मध्यमा परीक्षा का परीक्षा फल

प्रथम श्रेणी

*क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
१३७	श्री गुरु प्रसाद टण्डन	श्री पुरुषोत्तमदास टंडन	प्रयाग
७४	" चन्द्रप्रकाश सकसैना	" ज्वाला प्रसाद जी	"
२०७	" राम लाल अग्निहोत्री	" बलदेव प्रसाद अग्निहोत्री	लखनऊ
२३३	" बीरेश दत्त सिंह	" रामभद्र सिंह	कलकत्ता

द्वितीय श्रेणी

*क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
५	" अम्बादत्त पन्त	" पं० लीलाधर पन्त	अनूपशहर
१०	" श्रीराम विद्यार्थी	" लाला गणेश लालजी	"
१४	" फूलचन्द्र	" बाबू जय नारायण	अलीगढ़
१५	" शिवशंकर शुक्ल	" धर्मराज शुक्ल	"
१८	" केशवदेव ढण्ड	" ब्रह्मादत्तजी ढण्ड	प्रयाग
२०	" वंशीधर	" बद्रीनारायणजी शर्मा	"
२१	" भोलानाथ चतुर्वेदी	" दम्मीलाल चतुर्वेदी	आगरा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
२२	श्री मुनिलाल विद्यार्थी	श्री ला० बाबूलाल	आगरा
२४	" लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी	" कालिकाप्रसाद चतुर्वेदी	"

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
२१	" भोलानाथ चतुर्वेदी	" दम्मीलाल चतुर्वेदी	आगरा
२२	श्री मुनिलाल विद्यार्थी	श्री ला० बाबूलाल	आगरा
२४	" लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी	" कालिकाप्रसाद चतुर्वेदी	"
२८	" लक्ष्मीनारायण दीक्षित	" पं० दीनानाथ दीक्षित	इटावा
३०	" राजेन्द्र सिंह	" दिग्विजय सिंह	इनानजाँव
३१	" रुद्रपाल सिंह	" ठाकुर बजरंग वली	"
३२	" अयोध्या प्रसाद व्यास	" लक्ष्मण प्रसाद व्यास	इन्दौर
३३	" गणेशप्रसाद शर्मा	" नारायण शर्मा	"
३६	" जानकी वल्लभ त्रिपाठी	" कनीराम त्रिपाठी	"
३८	" दौलतराम शर्मा	" हीरालालजी शर्मा	"
४३	" माँगू लाल मिश्र	" भूथा लाल मिश्र	"
४५	" राधा कृष्ण	" वृद्धिचन्द	"
४७	" सुजान सिंह तोमर	" भंवर सिंह तोमर	"
४८	" हबीबुल्लाखाँ पठान	" सआदत खाँ	"
४९	" हीरालाल कपूर	" नन्दराम जी	"
५२	" गोबर्द्धन लाल	" दयाचन्द	उज्जैन
५७	" ब्रजलाल शर्मा	" पं० शिव नारायण	एटा
६१	" शीतला प्रसाद तिवारी	" ब्रजमोहन तिवारी	कानपुर
६५	" बद्रीलाल	" जगन्नाथ	कोटा

क्रम संख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
६८	श्री अनन्त शरण ओझा	श्री पं० श्यामराज ओझा	काशी
६६	" अक्षयवट सिंह	" विक्रमादित्य सिंह	"
७२	" घुरहूराम	" गोवर्द्धन प्रसाद	"
७५	" चूड़ामणि प्रसाद	" कान्ध जी सहाय	काशी
७७	" नरोत्तम दास स्वामी	" पं० जयश्री जी स्वामी	"
७६	" बनारसी लाल	" मुन्शी राम दयाल लाल	"
८०	" बेचन राम गुप्त	" श्रीयुत अनंतराम	"
८१	" पांडे बेचन शर्मा 'उग्र'	" पं० बैजनाथ पाण्डेय	"
८५	" शिवप्रसाद सिंह	" अम्बिकासिंह	"
८८	" कुअँर हाकिम सिंह चौहान	" ठा० मुलायम सिंह	"
६४	" परमानन्द नेमा	" भोगी राम	गाडरवारा
६६	" राम लोटन प्रसाद	" जालिम राम राहत	गङ्गाशहर
६६	" गोकुल प्रसाद शर्मा	" गोपाल प्रसाद जी शर्मा	चूरू
१००	" चन्द्रशेखर मिश्र	" पं० शिवप्रसाद मिश्र	गंगाशहर
१०८	" वृन्दावन विहारी मिश्र	" पं० रामरतन मिश्र	जबलपुर
१०६	" भगवत प्रसाद त्रिपाठी	" माधो प्रसाद	"
११०	" मंगल प्रसाद विश्वकर्मा	" श्री नन्दलाल जी विश्वकर्मा	"
११२	" राम प्रसाद [illegible]	" [illegible]	"

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
११३	श्री रामशरण सिंह	श्री कुंजीराम	जबलपुर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
११३	श्री रामशरण सिंह	श्री कुंजीराम	जबलपुर
११५	,, श्रीमती लक्ष्मी बाई	,, रघुनाथ प्रसाद	,,
११७	,, हज़ारी लाल	,, चुन्नीलाल	,,
११८	,, हरिशंकर वर्मा	,, मुन्शी गोपाल प्रसाद खत्री	,,
१२०	,, ज्ञान भूषण त्रिवेदी	,, पं० रामरतन त्रिवेदी	,,
१२१	,, कल्य नारायण शर्मा	,, सूर्यनारायण जी	जयपुर
१२४	,, सत्य नारायण भट्ट	,, देव बक्स भट्ट	झालरापाटन
१२८	,, देवदत्त उपाध्याय	,, तुलसीराम जी	नारायणगढ़
१२९	,, नान्हूराम	,, रामलाल जी	,,
१३०	,, बालमकुन्द जोषी	,, नान्हूराम जोषी	,,
१३२	,, मथुरादास	,, रामप्रताप जी	,,
१३३	,, मथुरालाल	,, धूलचन्द्र जी	,,
१३४	,, रणछोड़दास	,, भगवानदास जी	,,
१३८	,, गिरिजा शंकर द्विवेदी	,, भवानी प्रसाद जी द्विवेदी	प्रयाग
१४२	,, प्रेम चन्द्र टन्डन	,, डा० मूलचन्द्र टन्डन	,,
१४३	,, प्रेम प्रसाद सेठ	,, बा० रामनाथ सेठ	,,
१४४	,, भक्त चन्द्र टन्डन	,, मूलचन्द्र टन्डन	,,
१४५	,, मूंगी लाल नेवटिया	,, ज्वालादत्त जी नेवटिया	,,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
१४६	श्री युधिष्ठर प्रसाद सिंहानिया	श्री जगन्नाथ जी सिंहानियाँ	प्रयाग
१४७	" रामधर द्विवेदी	" पं० मुनीश्वर धर द्विवेदी	"
१४८	" रामेश्वरदास टंडन	" बाबू अनन्त राम टन्डन	"
१४९	" रामेश्वर प्रसाद नेवटिया	" कन्हैयालाल जी नेवटिया	"
१५०	" रेवती रमण भार्गव	" पं० केदारनाथ भार्गव	"
१५२	" विश्वप्रकाश	" बा० गंगा प्रसाद एम. ए.	"
१५३	" शुकदेव सिंह	" मथुरा सिंह	"
१५४	" श्री गोपाल नेवटिया	" फूलचन्द जी नेवटिया	"
१६१	" प्रह्लाद सिंह	" केहरी लाल	फरुखाबाद
१६२	" राज कुमार द्विवेदी	" पं० जीवालाल द्विवेदी	"
१६४	" विश्वनाथ प्रसाद	" बाबू त्रिवेणी प्रसाद वकील	बांकीपुर
१६५	" कन्हैयालाल श्रीवास्तव	" शिवप्रसाद लाल	बिलासपुर
१६७	" द्वारिका प्रसाद शुक्ल	" रामनारायण शुक्ल	"
१६८	" पंचमनाथ	" तुलसी राम	"
१७१	" ललिता प्रसाद त्रिपाठी	" शिवशरण त्रिपाठी	"
१७३	" शुकलाल प्रसाद पांडेय	" गोविन्द हरि	"
१७४	" सरयू प्रसाद तिवारी	" पं० पृथ्वीपाल तिवारी	"
१७५	" चांदसिंह	" मोती सिंह	बीकानेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्रमसंख्या	नाम परीक्षार्थी	पिता का नाम	केन्द्र
१७४	" सरयू प्रसाद तिवारी	" पं० पृथ्वीपाल तिवारी	"
१७५	" चांदसिंह	" मोती सिंह	बीकानेर
१७७	श्री रमाशंकर पाण्डेय	श्री पं० मुरलीधर पाण्डेय	"
१७८	" रामखेलावन प्रसाद	" अयोध्या प्रसाद	"
१७९	" लक्ष्मीनारायण व्यास	" मदनमोहन व्यास	"
१८०	" उमराव सिंह	" पं० हरिलाल शर्मा	बुलन्दशहर
१८१	" दलीप चन्द गुप्त	" लाला दुर्गा प्रसाद गुप्त	"
१८७	" जगदीश नारायण	" अभयनारायण लाल	मुज़फ़्फरपुर
१९४	" रामफल कुअर वर्मा	" बाबू मदीप कुअँर वर्मा	"
२११	" बचीराम जोशी	" नन्दकिशोर जोषी	लश्कर
२१४	" रामस्वरूप	" जगन्नाथ प्रसाद	"
२१८	" धर्म चन्द	" लाला करमचन्द्र जी	लाहौर
२२६	" कामता प्रसाद पारसाई	" अयोध्या प्रसाद शिक्षक	होशंगाबाद
२३५	" चन्द्रिका प्रसाद शर्मा	" पं० विनोद बिहारी शर्मा	काशी

गोपालस्वरूप भार्गव एम. एस. सी

परीक्षा मंत्री

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य की प्रदर्शिनी

सर्व साधारण के ज्ञान तथा विज्ञान के विकाश का प्रदर्शिनी से उत्तम और कोई साधन नहीं है। यही कारण है कि आज कल लाखों और करोड़ों रुपया खर्च करके भी प्रदर्शिनियों का आयोजन किया जा रहा है। बड़े बड़े नगरों में स्थापित अजायब घर और चिड़िया घर वास्तव में प्रदर्शिनी का ही एक स्थायी रूप है, जिनमें संसार के दुष्प्राप्य, जड़ चेतन, प्राचीन आधुनिक, परमात्मा के रचे या मनुष्य कृत पदार्थ संगृह करके प्रदर्शित किए जाते हैं। यदि यह प्रदर्शिनियां न हों तो इन अद्भुत और अपूर्व वस्तुओं का दर्शन या ज्ञान प्राप्त करना एक ऐश्वर्य्य सम्पन्न व्यक्ति के लिए भी सर्वथा असम्भव है। घर बैठे अनायास ही यदि संसार को प्रत्यक्ष करना हो तो वह प्रदर्शिनी द्वारा ही हो सकता है। स्थान स्थान की संगृहीत वस्तुओं के देखने से वहाँ के मनुष्यों का रहन सहन, शिक्षा सभ्यता, कला कौशल, उन्नति अवनति का बड़ी सुगमता से थोड़े ही परिश्रमसे ज्ञान हो जाता है। यही विचार कर बुद्धिमानों ने मानवीय विज्ञान के विकास के लिए प्रदर्शिनी का आयोजन किया है।

इसकी उपयोगिता और प्रभाव ने आजकल प्रायः सभी संस्थाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रखा है। प्रदर्शिनी के बिना उनके उत्सवों की शोभा अधूरी ही समझी जाती है। इसलिए वार्षिकोत्सवों पर प्रदर्शिनी का होना उत्सव का एक मुख्य अङ्ग सा हो गया है और चाहिए भी।

पाठकों को यह जान कर अवश्य ही प्रसन्नता होगी कि हिन्दी के प्रेमी भी हिन्दी साहित्य की उन्नति के किसी भी साधन से उपेक्षित नहीं है। भागलपुर, लखनऊ, जबलपुर, इन्दौर और पटना के वार्षिक अखिल भारतीय सम्मेलनों के अवसरों पर हिन्दी साहित्य की प्रदर्शिनियां की गई थीं। यह प्रदर्शिनियां अपने ठाट बाट में एक से एक बढ़ कर हुई हैं।

इन प्रदर्शिनियों में जिन महानुभावों ने हस्तलिखित, या प्रकाशित ग्रन्थों या अन्य वस्तुओं द्वारा प्रदर्शिनी की उपयोगिता तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभा को बढ़ाया है उनके लिए हिन्दी संसार उनका बड़ा ही अनुगृहीत है; पर उन महानुभावों की जिन्होंने प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों को भेज कर प्रदर्शिनी की महत्ता को बढ़ाया है उसके लिए जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। क्योंकि वस्तुतः उन्होंने केवल पुराने काग़ज़ों पर ताड़ पत्रों की ही रक्षा नहीं की है प्रत्युत भारत के प्राचीन गौरव प्राचीन सभ्यता, प्राचीन विज्ञान और प्राचीन भारत की सरस्वती की रक्षा की है।

अधिक न लिख कर अब मैं अपने पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि इस वर्ष अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिकोत्सव भारतवर्ष के एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर कानपुर में होने जा रहा है। पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी जैसे विख्यात विद्वान ने उसकी स्वागत समिति का अध्यक्ष होना स्वीकार कर लिया है और सम्मेलन के सभापति की सूचना भी शीघ्र ही आप लोगों को मिल जायगी। सम्मेलन की तैयारी कानपुर में प्रारम्भ हो गई है, इसमें हिन्दी साहित्य की एक वृहत् प्रदर्शिनी का उपक्रम हो रहा है।

उन उदार महानुभावों से, जिन्होंने समय समय पर अपने यहां प्राणों से भी अधिक सुरक्षित अमूल्य ग्रन्थों को भेज कर प्रदर्शिनी की शोभा बढ़ाई है या जो किन्हीं कारणों से अभी तक नहीं भेज सके हैं, हमारी प्रार्थना है कि इस सुअवसर पर अपने ग्रन्थों को या प्रदर्शिनी के योग्य अन्य वस्तुओं को भेज कर प्रदर्शिनी की शोभा को बढ़ावें। वस्तुओं के भेजनेवालों को हम विश्वास दिलाते हैं कि प्रदर्शिनी के समाप्त होते ही धन्यवाद पूर्वक उनकी वस्तु उन्हें लौटा दी जायगी, इस बीच में उनकी वस्तु सुरक्षित रहेंगी।

नो०—प्रदर्शिनी सम्बन्धिनी अन्य सूचनाएं समय २ पर पत्रों द्वारा दी जायगी। इस समय जो महानुभाव जो कुछ भी भेजना चाहें, प्रथम चिट्ठी द्वारा हमें उसकी सूचना देने की कृपा करें, फिर हमारे पत्र लिखने पर भेजें।

भूदेव विद्यालंकार, मन्त्री, प्रदर्शिनी विभाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांईं तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूरसागर का क्यों नहीं हुआ ? इसलिए कि लोग इस बृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ की समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी की जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुईं अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक कागज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] कार्तिक, संवत् १९७९ [अंक ३

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हिय को सूल॥

—श्रीभारतेन्दु

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जांयगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य-शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०-१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रथमाला
तालुकेदार-प्रेस १९ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

का

मुख-पत्रिका

भाग १०] कार्तिक, संवत् १९७९ [अङ्क ३

पश्चात्ताप

पद

ऐसेहिं जन्म समूह सिराने।
प्राननाथ रघुनाथ से प्रभु तजि, सेवत चरन बिराने ॥
जे जड़ जीव कुटिल कायर खल, केवल कलिमल साने।
सूखत बदन प्रशंसत नित कहँ, हरि तें अधिक करि माने ॥
सुख हित कोटि उपाय निरन्तर, करत न पायँ पिराने।
सदा मलीन पंथ के जल ज्यों, कबहुंक सो कि थिराने ॥
यह दीनता दूर करिबे कों, अमित जतन उर आने।
'तुलसी' चित चिंता न मिटै, बिनु चिंतामनि पहिचाने ॥

—गोस्वामी तुलसीदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तवर भगवतरसिक की कुंडलियाँ।

[ले०—श्री वियोगी हरि]

महात्मा भगवतरसिक टट्टी संप्रदाय के अनन्य वैष्णव थे। यह बड़े ही त्यागी, अनुरागी और सूक्ष्मदर्शी कवि थे। इनकी कुछ बानी वृन्दावन से प्रकाशित हो चुकी है। अप्रकाशित बानी बहुत कुछ पड़ी हुई है। इन्होंने शृंगार जिस प्रतिभा के साथ अंकित किया है, वैराग्य भी उसी खूबी से चित्रित किया है। कौन कह सकता है कि इन अनुरागी महात्माओं द्वारा कथित शृंगार अश्लील है? अस्तु, आज मैं उनकी कतिपय कुण्डलियाँ उद्धृत करता हूं। उनकी बानी समझना सहज नहीं है, क्योंकि वे स्वयं लिख गये हैं:—

"भगवतरसिक रसिक की बातें
रसिक बिना कोउ समुझि सकै ना।"

कुंडलियाँ

साँचे श्री राधारमन, झूठो सब संसार।
बाजीगर को पेखनो, मिटत न लागै बार॥
मिटत न लागै बार, भूत की संपति जैसे।
मिहिरी, नाती, पूत धुआँ के धौरा तैसे॥
भगवत ते नर अधम, लोभ बस घर घर नाँचे।
झूठे गढ़ै सुनार, मोम के बोलै साँचे॥

कपटी संग न कीजिये, जदपि विष्णु सौ होय।
वामन ह्वै बलि को छल्यो, यह जानै सब कोय॥
यह जानै सब कोय, बहुरि वपु धारि मोहिनी।
असुरनि सुरा पिवाय, सुरनि दई सुधा दोहिनी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्दा धर्म घटाइ, मृत्यु जालंधर लपटी ।
भगवत बनिता विप्र भयो परमेश्वर कपटी ॥ १ ॥

नित्य बिहारी की कला, प्रथम पुरुष अवतार ।
तासु अंस माया भई, जाको सकल पसार ॥
जाको सकल पसार, महातत उपज्यौ जातें ।
अहंकार उत्पत्ति भई, श्रुति कहैं जु तातें ॥
अहंकार त्रैरूप भयो, सिव विधि असुरारी ।
भगवत सब को नित्य बीज श्री नित्यबिहारी ॥ २ ॥

जो जानै मानै सोई मानै क्यों बिन जान ।
पीर प्रसूती की कहा, जानै बाँझ अजान ॥
जानै बाँझ अजान नपुंसक रति सुख नाहीं ।
ऐसेहिं नीरस पुरुष कहा समुझै रस माहीं ॥
भगवत नित्य बिहार रसिक अनुभवैं उर आनै ।
गूढ़ बात नभ जाति जाति बरही जो जानै ॥ ३ ॥

आचारज ललिता सखी, रसिक हमारी छाप ।
नित्य किसोर उपासना, जुगल मंत्र को जाप ॥
जुगल मंत्र को जाप, वेद रसिकन की बानी ।
श्री वृन्दावन धाम, इष्ट स्यामा महरानी ॥
प्रेमदेवता मिले बिना सिधि होय न कारज ।
भगवत सब सुखदानि, प्रगट भये रसिकाचारज ॥ ४ ॥

नहिं हिन्दू नहिं तुरक हम, नहिं जैनी अँगरेज ।
सुमत सम्हारत रहत नित, कुंजबिहारी सेज ॥
कुंजबिहारी सेज, छांड़ि मग दच्छिन डेरो ।
रहैं बिलोकत केलि, नाम भगवत अलि मेरो ॥
श्री ललिता सखि पाइ कृपा सेवत श्री स्यामहिं ।
नहिं काहू सों द्रोह मोह काहू सों है नहिं ॥ ५ ॥

कामी के प्रिय कामिनी, लोभी के प्रिय दाम ।
ऐसेहि भगवतरसिक के, प्रिय श्री स्यामास्याम ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय श्री स्यामास्याम, भये नैनन के कजरा ।
केलि बिलोकत रहैं और नहिं आवे नजरा ॥
ते स्रावन के सूर कहूं बिरले निष्कामी ।
कहन सुनन के बहुत जगत में भक्त सकामी ॥ ६ ॥

देखे हाट बजार सब, जहँ तहँ पोति बिकाय ।
लिये जवाहर जौहरी, बिनु गाहक फिरि जाय ॥
बिनु गाहक फिरि जाय बलाहक ऊसर बरसै ।
छप्पन भोग बनाइ कहा बनचर के परसै ॥
ऐसेहि कर्मठ लोग धर्म रति बरन बिसेषे ।
भगवत रसिक अनन्य स्वादभेदी कहु देखे ॥ ७ ॥

अनुभव बिनु जग आँधरो, वस्तु न दीखै कोय ।
मुकुर दिखाये होत का, मुख नहिं जानत जोय ॥
मुख नहिं जानत जोय, अर्थ बानी को कहिबो ।
सुनै न होइ प्रतीति, बिना देखे उर दहिबो ॥
बहु बिधि मर्दन करै नहीं चैतन्य होय शव ।
भगवत रस की बात कहा जानै बिनु अनुभव ॥ ८ ॥

काहू दई न लई कोइ विद्यमान दरसाय ।
ज्यों मणिवारो उरग मणि लै आवे लै जाय ॥
लै आवे लै जाय, वस्तु रसिकन की ऐसे ।
निसि दिन देखत रहै कृपन निज संपति जैसे ॥
भगवत रसिक सुकेलि स्याम स्यामा अवगाहू ।
रही दगन भरपूर भेद जानौ नहिं काहू ॥ ९ ॥

भगवतरसिक अनन्य मणि, गौर स्याम रंगरात ।
अमर कोस के धूप लौं मृगमद छोड़ न जात ॥
मृगमद छोड़ न जात गही ज्यों हारिल लकड़ी ।
चुम्बक लोह न तजै दारु पावक ज्यों पकड़ी ॥
गुन बयारि तनु लगै डिगै नहिं मनसा नगवत ।
सन्तत स्यामा स्याम धाम कीनों उर भगवत ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागर रसिक अनन्य संग, वर बृन्दावन जान।
गान विहारी को, दरस बानी जमुना पान॥
बानी जमुना पान पुलिन पुलकावलि तन में।
अनुभव रास विलास विहारिनि प्रगटत मन में॥
भगवत नित्य विहार प्रेम उमगन रस सागर।
कुञ्जी कुटी अभिराम भावना निरखै नागर ॥ ११ ॥

मदनाष्टक का एक छंद और मिला।

[प्रेषक—श्रीमान् लल्ला जुझार सिंह जी, माधौपुर]

हमारे सुहृद्वर साहित्य-रसिक श्रीमान् लल्ला जुझार सिंह जी, रईस माधौपुर (छतरपुर) ने रहीम कृत मदनाष्टक का एक छन्द और भेजा है। पत्रिका के गतांक में साढ़े छह छंद प्रकाशित हो चुके हैं। इसे मिला कर साढ़े सात छंद हुए, केवल आधे छंद की और कमी है, आशा है वह भी मिल जायगा। श्री लल्ला साहब का भेजा हुआ छंद यह है:—

सरद निसि निसीथे, चाँद की रोशनाई,
सघन वन निकुंजे कान्ह बंशी बजाई।
रति, पति, सुत, निद्रा, साइयाँ छोड़ि भागीं,
मदन सरिस भो या क्या बला आन लागी!

अधिकांश में यही छन्द 'मदनाष्टक' का प्रथम छन्द है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलदस्तये बिहारी

(गतांक की पूर्त्ति)

[लेखक—श्री० देवीप्रसाद 'प्रीतम']

दोहा—हठ न हठीली कर सकै यह पावस ऋतु पाय ।
आन गाँठ घुट जात ज्यों मान गाँठ छुट जाय ॥
शैर—हठीली भी नहीं हठ मौसिमे बारिश में कर पाती ।
हैं घुटती आन गिरह पर बान गिरह है साफ़ छुट जाती ॥

दोहा—अब तज नावँ उपाव कौ आयो सावन मास ।
खेल न रहियो खेम सौं कैम कुसुम की बास ॥
शैर—लगे सावन सुहावन छोड़ दे तदबीर अब सारी ।
कदम की बू से है अब खेल तज रस केल की बारी ॥

दोहा—घन घोरा छुटवौ हरषि चली चहूँ दिश राह ।
कियो सु चैन आय अग शरद सूर नर नाह ॥
शैर—लगे चलने मुसाफ़िर उठ गया अब जग से घनघेरा ।
जरी सुल्ताँ शरद ने आ-रिफ़ाहे आम फिर फेरा ॥

दोहा—लगत शुभग शीतल किरण निश सुख दिन अवगाह ।
माह ससी भ्रम सूर त्यों रही चकोरी चाह ॥
शैर—खुनुक किरणों से निश का सुख वह दिन ही में है पा सकती ।
चकोरी चांद के धोके हैं सूरज माघ का तकती ॥

दोहा—द्वैज सुधा दीधित कला वह लखि ढीठ लगाय ।
मनों अकास अगस्तिया एकै कली लखाय ॥
शैर—हिलाले द्वैज़ है रश्के कमर तू देख सनये रब ।
खिला है एक ही गुंचा अगस्ते अर्श में इम शब ॥

दोहा—धन यह द्वैज जहाँ लख्यौ तज्यौ द्रगन दुख दंद ।
तो भागन पूरब उग्यो अहो अपूरब चंद ॥
शैर—ज़हे यह द्वैज जिससे इश्तियाक़े आरज़ू निकला ।
तेरे ताले महेनो शर्क़ से ऐ माहरू निकला ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—विकसत नववल्ली कुसुम निकसत परिमल पाय ।
परस पजारत विरह हिय बरस रहे की वाय ॥
शेर—नई बेलों में कलियाँ खिल रहीं खुशबू निकलती है ।
शमीमे बर्शगाली लग लगन की आग जलती है ॥

फुटकर

दोहा—हँस ओंठन बिच कर उँचै किए निचौंहैं नैन ।
खड़े अरे पिय के प्रिया लगी बिरी मुख दैन ॥
शेर—लबों बिच हाथ ऊँचा कर निचौंहैं नैन से हँस कर ।
पिया के मुहँ गिलौरी पुरवज़िद दैने लगी दिलवर ॥

दोहा—नाक मोर नाहीं ककै बार निहोरे लेह ।
छुवत ओंठ पिय आंगुरिन बिरी बदन तिय देह ॥
शेर—सिकोड़े नाक नट नट कर निहोरे ले रही छम छम ।
छुआ उँगली अधर बीरी प्रिया मुख दे रहे प्रीतम ॥

दोहा—लाल न लह पाये हरै चोरी सौंहँ करैन ।
शीश चढ़ै पनहाँ प्रगट कहत पुकारे नैन ॥
शेर—यह चोरी छिप नहीं सकती कसम क्यों आप खाते हैं ।
सुराग़ इसका ये दाँदे साफ़ ही सिर चढ़ बताते हैं ॥

दोहा—कत वे काज चलाइयत चतुराई की चाल ।
कहे देत गुन रावरे सब गुन बिन गुन माल ॥
शेर—अबस तकरीर ला हासिल कहो किस काम आती है ।
यह बिन गुन माल सब गुन आप के हज़रत बताती है ॥

दोहा—प्राण प्रिया हिय में बसै नख रेखा शशि भाल ।
भलौ दिखायो आन यह हरि हर रूप रसाल ॥
शेर—ज़बीं पर है हिलाले नाखुनों दिल पर श्री छाई ।
हरी हर की ये झाँकी आपने क्या खूब दिखलाई ॥

दोहा—वाही दिनतैं ना मिट्यो मान कलह को मूल ।
भले पधारे पाहुने ह्वै गुड़हल को फूल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैर—इसी दिन से जमी है जड़ कलह का मान नित ठन कर।
भले मेहमान आये आप गुड़हल का सुमन बन कर॥

दोहा—रह्यौ चकित चहुँदा चितै चित मेरो मत भूल॥
सूर उदय आये रही दृगन सांझ सी फूल॥

शैर—मेरी अक़लाप की सूरत से शशदर होके भूली है।
सुबह तशरीफ़ लाये शाम सी आँखों में फूली है॥

दोहा—तोही निर्मोही बंध्यो मोही यही स्वभाव।
बिन आये आवैं नहीं आये आव न आव॥

शैर—है वावस्ता तेरे बे मह्र दिल से दिल न तरसाओ।
बिन आये वह न आयेगा वह आये आयेगा आओ॥

दोहा—आये आप भली करी मेटन मान मरोर।
दूर करहु यह देख है छला छिगुनियां छोर॥

शैर—मनाने आप आये आइये हज़रत करम कीजे।
छला छिँगुरी किनारे का किनारे आप कर दीजे॥

दोहा—मैं तपाय त्रय ताप सौं राख्यो हियो हमाम।
मत कबहूं आवै यहाँ पुलक पसीजें श्याम॥

शैर—यह तो हम्माम सीना तीन तापों से है गरमाया।
पसीजें श्याम घन शायद करें इस दीन पर दाया॥

दोहा—पर्‌यो ज़ोर विपरीत रत रूपी सुरत रंधीर।
करत कुलाहल किंकनी गहैं मौन मंजीर॥

शैर—कमर वस्ता थमी विपरीत रत में सख़्त ज़ोरों पर।
कुलाहल किंकनी करती है विछिया चुप है पोरों पर॥

दोहा—बृज भाषा वरणी सबै कविवर बुद्धि विशाल।
सब की भूषण सतसई करी विहारी लाल॥

शैर—खिलाये शायरों ने गो चिमन रुच रुच के बृज बानी।
विहारी का ये गुलदस्ता है रंगीनी में लासानी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचनासिद्धान्त

[ले०—श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी]

नवीनचन्द्र ने जुलाई की "सरस्वती" में—"हिन्दी भाषा और साहित्य" पर नवीन चन्द्रिका डाल कर समालोचना का नवीन सिद्धान्त प्रकट कर दिया है। हिन्दी साहित्य सेवी ही क्यों संसार के समस्त साहित्य सेवी श्री नवीन चन्द्र की कृतज्ञता मान सदा सिर झुकाये रहेंगे। आप के नवीन सिद्धान्त का सार इस प्रकार है— "इस समालोचना की जरूरत ही क्या है? ग्रन्थकार हैं और पाठक हैं (सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक प्रभृति शायद अब नहीं रहे)। दोनों आपस में निपट लेंगे। इन दोनों के बीच में एक तीसरे आदमी के कूद पड़ने की क्या आवश्यकता है? (कुछ भी नहीं, फिर भी आप कूद ही पड़े।) उपभोग है और उपभोक्ता है, ज्ञान है और ज्ञाता है (ज्ञापयिता शायद मर गया।) किसी को यह क्या अधिकार है कि वह मनुष्य को (गधे को नहीं) ज्ञान के एक निर्दिष्ट पथ पर ही चलने की आज्ञा दे?" (फिर आप ही क्यों अनधिकार चर्चा कर रहे हैं?)

अगर यही बात है तो स्वर्णकार है और ग्राहक है फिर कसौटी की क्या जरूरत है? घीवाला है और खरीदने वाला है फिर उसकी जांच के लिये रासायनिक परीक्षक की क्या जरूरत है? लेखक हैं और पाठक हैं फिर सम्पादक की क्या जरूरत है? जमीन है और घास है फिर किसी को क्या अधिकार है कि वह घास पात को उखाड़ फेंके और फूल फल के वृक्षों को बढ़ने दे? अन्धा है और कुंआ है फिर किसी को क्या अधिकार है कि वह अन्धे को कुए में गिरने से रोके?

क्या श्री नवीनचन्द्र जी इन प्रश्नों के उत्तर देने की कृपा न करेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छद्म योगिनी।

[ले०—श्री० वियोगी हरि]

मंगल पाठ—

दोहा।

जाके पान किये सबै, जग रस नीरस होत।
जयतु सदा सो प्रेम रस, उर आनन्द उदोत॥

(सूत्रधार और पारिपार्श्वक का प्रवेश)

पारि—मित्र, प्रेम रस का मंगलस्तव बहुत दिनों में सुनायी दिया। आज क्या होने वाला है? क्या अब भी इस अनिर्वचनीय रस के सहृदय रसिक संसार में विद्यमान हैं? कौन पूछता है प्रेम और भक्ति के पचड़े को इस वैज्ञानिक युग में? अब तो नित नये आविष्कार हो रहे हैं। साहित्य की भी काया पलट हो चली है। पाश्चात्य आदर्श सबी बातों में स्थान पा रहा है। अधिक क्या, भारतीय नाट्यशास्त्र पर नाक भौं चढ़ाकर नवयुवकों का दल योरोपीय नाटकों की ओर बढ़ रहा है। फिर, इस प्रेम के गुणगान से क्या अभीष्ट सिद्ध होगा? मेरे जान तो यह रसराज संसार से उठ गया, तुम्हारा क्या विचार है?

सूत्र—तुमसे इस विषय में पूर्णतः सहमत नहीं हूं। इसके अधिकारी सदा से ही कम रहे हैं, साम्प्रति और भी न्यून हो गये हैं, पर सबीज नष्ट नहीं हुए हैं।

पारि—राम जाने। मुझे तो निराशा ही सूझती है। आज, प्रेमोन्मत्त नारद, शुक और सनकादिक के मधुर स्वर नीरवता में विलीन हो गये हैं। जयदेव, कर्णपूर, महाप्रभु चैतन्य देव, रूप सनातन की सुधा सूक्तियां किसके हृदय को वेधित करती हैं? सूर, तुलसी, हरिवंस, हरिदास, नागरीदास और ललित किशोरी की सरस वाणियों के सुनने सुनाने की किसे उत्कण्ठा है? हाय, आज हमारे एकमात्र जीवनाधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेममूर्ति हरिश्चन्द्र तक को लोगों ने भुला दिया है ! कैसा दुःख का विषय है ! प्यारे हरिश्चन्द्र, तुम्हारी चन्द्रावली किसने समझी ? हृदय के प्रेमोद्गार हृदय में ही रखते, क्यों अरसिकों के आगे ऐसे अमूल्य रत्न बिखरा कर चले गये ? लोग इस अप्राकृत साहित्य को अपूर्ण और अश्लील कह कह कर हंसी उड़ा रहे हैं। क्या यह समालोचना का विषय है ? मेरी राय में, मित्र, प्रेम-साहित्य की चर्चा छेड़नी ही अनुचित है।

सूत्र—मित्र, निराश मत होओ। सद्विचार कभी सबीज नष्ट नहीं होते। व्रजभाषा का अप्राकृत साहित्य, प्रेमोद्गार तथा प्रेमियों की कृतियां सदा रहेंगी। हम आज, उसी विस्मृत प्रेमरस का अभिनय दिखाना चाहते हैं। संभव है और बहुत संभव है, कि इसके देखने वाले बहुत कम मिलेंगे, पर क्या इससे हम अपनी उमंगों को दबा सकते हैं ?

पारि—कौन सा नाटक खेलेंगे ?

सूत्र—श्री छद्मयोगिनी।

पारि—इसका प्रणेता कौन है ?

सूत्र—व्रज साहित्य के मधुप, राधारमण के अनन्य सेवक, हरीश्चन्द्र के अनुयायी रसिकवर वियोगी हरी।

पारि—यह नाम तो मैंने आज ही सुना। वियोगी हरी को तो कोई भी नहीं जानता। यदि नाटक अच्छा जान पड़ा तो इस लेखक से और भी नाटक लिखाये जायँ।

सूत्र—वह लेखक नहीं है, न किसी के कहने सुनने से कुछ लिख ही सकता है। उसे धन और यश का लोभ नहीं है। कोई उसे साहित्य सेवक कहे या न कहे, उसे इसकी परवा नहीं। वह मान का भूखा नहीं है। वह तो प्रेम का उपासक और रूप-माधुरी का आशिक है। उसे इतना समय ही कहां कि पुस्तकें और लेख लिख लिख कर अपनी ख्याति का ढिंढोरा पीटता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरे ? वह मनमौजी जो लिखता है अपनी मौज के लिये लिखता है। क्या तुमने उसकी यह दर्पोक्ति नहीं सुनी है—

दोहा

सब तें न्यारे रहत हैं, हमैं न जानत कोय।
जानि सकेगो सोइ हमैं, जो दृढ़ प्रेमी होय॥
जुगलरूपरस रसिक हम, हरी वियोगी नाम।
अनुगामी हरिचंद के, सेवैं स्यामा स्याम॥

पारि—अहा ! क्या अब भी ऐसे ऐसे 'धूल भरे हीरे' पड़े हुए हैं! मित्र अवश्य उस रसिकवर की रची हुई छद्मयोगिनी नाटिका खेलनी चाहिए। लोग उसे पसंद करें या न करें इससे क्या ! हरि कीर्तन ही सही।

सूत्र—सत्य है, हरिकीर्तन ही तो मानव जीवन का सार है। देखो, देवर्षि नारद जी भी हरिकीर्तन करते हुए अंतरिक्ष से उतर रहे हैं। चलो, हम लोग भी तयारी करें।

(दोनों जाते हैं)

इति प्रस्तावना।

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—महाराज वृषभानु का ग्राम बरसाना

(देवर्षि नारद हरि कीर्तन कर रहे हैं।)

पद

जय गोविन्द हरे,
बोल हरे, जय बोल हरे। जयगोविन्द०
जय नँदनंदन, दुष्टनिकंदन,
केशव बोल हरे। जय गोविन्द०
श्री राधाधव, जय श्यामाधव,
माधव बोल हरे। जय गोविन्द०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयति मुरारे, गिरिवरधारे,
प्यारे बोल हरे। जय गोविन्द०
ललित त्रिभंगी, रतिरसरंगी,
प्यारे बोल हरे। जय गोविन्द०
जय ब्रज वल्लभ, गोपी वल्लभ,
वल्लभ बोल हरे। जय गोविन्द०
रुक्मिणि वल्लभ, वल्लभ वल्लभ,
वल्लभ बोल हरे। जय गोविन्द०
कुंज बिहारी, रसिक बिहारी,
प्रीतम बोल हरे। जय गोविन्द०
घट घट वासी, आनँदरासी,
अनुपम बोल हरे। जय गोविन्द०
भव भय भंजन, खलदल पुंज
विभंजन बोल हरे। जय गोविन्द०
जनदृग अंजन, निखिल निरंजन
रंजन बोल हरे। जय गोविन्द०
श्याम हरे घन श्याम हरे जय
हरि हरि बोल हरे। जय गोविन्द०
राम हरे अभिराम हरे जय
हरि हरि बोल हरे। जय गोविन्द०
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

आज मुझे धन्य है, जो ब्रज मंडल में, श्री कृष्ण की विहार भूमि में हरि कीर्तन करता हुआ अनिर्वाच्य आनंद का अनुभव कर रहा हूं। चौदह लोक घूम डाले, कहीं भी मन स्थिर न हुआ। इस भूमि में पैर रखते ही चित्त शान्ति सागर में डूब जाता है। यहां की प्रकृति ही कुछ और देखी। वन-उपवन, नदी नाले, लतापता सभी हरिमय दिखाई देते हैं। आनंद की वर्षा सदा ही पीयूषधार बरसाती रहती है। अद्भुत मोहिनी है, अपूर्व वसीकरन है। जी चाहता है, इन ललित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लताओं के साथ एक रूप होकर रसिकेश्वर श्यामसुन्दर के कर-पल्लवों का स्पर्श करूँ, कलित कली बन कर अलकावली में गूँथा जाऊँ, रज होकर चंद्र मुख मंडित स्वेद-विन्दुओं में मिल सुख लूटूँ!

अहा! यह सुख अनन्य भक्तों को छोड़ किसे मिला है? कृपा कटाक्ष के आगे मोक्ष का सुख तुच्छ है! मंद मधुर मुसक्यान के सामने स्वर्ग के विलास कुछ भी नहीं। रासलीला का अपूर्व रस मिल जाने पर निर्वाण की नीरस बातें किसे सुहायँगीं? यह सुख, यह रस, यह अनिर्वाच्य आनंद तभी मिलता है, जब वृन्दावन-बिहारी की कृपा होती है। किंतु बिना ब्रज विहारिणी के निकुंज विहारी की कृपा दुर्लभ है।

अनाराध्य राधा पदाम्भोजयुग्म
मनाश्रित्य वृन्दाहवीं तत्पदाङ्काम्
असंभाष्य तद्भाव गंभीर चित्तान्
कुतः श्याम सिन्ध्योः रसस्यावगाहः

भक्ति रहस्य में अत्यन्त गोपनीय और उत्कृष्ट कान्ताभाव ही माना गया है। यह भाव माधुर्य्य सागर का सुधासार है, अप्राकृत शृंगार का आभूषण है तथा उपासना काण्ड का परात्पर रहस्य है। इसके सबी अधिकारी नहीं हैं। इस रस के पान करने के लिये जीव को निज पुरुषार्थ छोड़ कर, खड्ग की धार पर चढ़ कर, परम पुरुष, नित्य किशोर, त्रिभुवनैक सुंदर श्री कृष्ण की कान्ताभाव से सेवा करनी पड़ती है। इस रस के पाने के अर्थ शिव जी को भी गोपी-वेष धारण करना पड़ा था—

नारायण ब्रज भूमि को, को न नवावे माथ।
जहाँ आय गोपी भये, श्री गोपेश्वर नाथ॥

मैं भगवान की सब लीलाएँ देख चुका। ऐश्वर्य देखा, माधुर्य्य देखा, सब रस देखे, पर रास रस और नित्य विहार देखने की उत्कण्ठा बनी ही रही, आज तक पूरी न हुई। उस रस के पान करने की तृषा बढ़ती ही जा रही है। अत्यंत विरहासक्तिवश विदेह-दशा सी हो रही है। देखूँ, कब श्री निकुंजेश्वरी राधिका जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपाकटाक्ष करती है। मन चाहता है कि इस "गह्वर वन" की सघन कुंजों में छिपकर नित्य बिहार देखता हुआ अगाध आनन्द लूटता रहूं। 'मोर कुटी' में मयूर बनकर युगल-घन-घटा की ओर निहारता हुआ नाचता रहूं!

(गाते हैं।)

दादरा

प्रीतम प्यारी दरस मोहि दीजै ॥
जयति श्री राधा, हरौ सब बाधा,
जगत इक आस तिहारी, कृपा अब कीजै।
—दरस मोहि दीजै ॥

चरन रज धारूं, सबै सुख वारूं,
रहस-रस पावै भिखारी, विमल जसु लीजै।
—दरस मोहि दीजै ॥

जुगल छवि ध्याऊं, सदा गुन गाऊँ;
रसिकवर कुंजविहारी, अधर रसु पीजै।
—दरस मोहि दीजै ॥

(प्रेमावेश में नाचते नाचते मूर्छित हो गिर पड़ते हैं।)

(शुकदेव जी का प्रवेश)

शुक—(मूर्छित नारद जी को देखकर) ऐं! यह क्या? एक ओर वीणा पड़ी है, दूसरी ओर करताल। देवर्षि नारद क्यों मूर्छित हो गये हैं? नेत्रों से आँसुओं की अविरल धारा लगी है, शरीर पुलकायमान हो रहा है!

(जल छिड़क कर जगाते हैं।)

नारद—(कंपित स्वर से) राधाकृष्ण, राधाकृष्ण, राधाकृष्ण.........

शुक—महाराज! यह क्या दशा हो रही है? कहिये तो—

नारद—(नेत्र खोलकर) शुक! प्यारे शुक! भले आये—

प्रीतम प्यारी, दरस मोहि दीजै

इत्यादि गाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक—भगवान् ! इतने व्याकुल क्यों हो रहे हैं ? परम कृपामयी श्री निकुंजेश्वरी दर्शन देकर गोप्य रास रस प्रत्यक्ष करेंगी। धीरज धरिये।

नारद—रसिक पुंगव शुक ! तुम्हारे दर्शन से मुझे निश्चय होगया कि वह अखंड रस अब दूर नहीं। धन्य ! तुम्हें, जो सदा ही उस रस-सिंधु में निमग्न रहा करते हो। श्री निकुंजेश्वरी तो तुम्हारी परमगुरु हैं। तुम्हारी गुरु-मर्यादा को धन्य है। समस्त श्री मद्भागवत कह डाली, पर हृदयस्थ गुरु रूपिणी श्री राधिका जी का नामोच्चारण मुख से न किया। विद्याभिमानी इस रहस्य को कैसे समझ सकते हैं ? अहा !

> धन्य धन्य शुकदेव ! रसिक पुंगव रस धारी।
> कृष्ण रसासव-मत्त मधुप वृन्दावन चारी॥
> नित किसोर लावन्य ललित लट लहरैं न्यारी।
> परमहंस हरि अंस भागवत भावुक भारी॥
> सम संयम यम नियम भक्ति ज्ञानादि प्रचारक।
> परम कारुनिक-कृपारूप जग जन उद्धारक॥
> धन्य अनन्य अनूप राधिका रमन उपासी।
> कांता भाव विभोर कुंज रस रङ्ग विलासी॥

रसिकवर शुक ! किस प्रकार मैं निकुंज-माधुर्य देख सकूंगा ? क्या मेरा ऐसा भाग्य है ?

शुक—देवर्षि, भला आप निकुंज-माधुर्य के अधिकारी न होंगे, तो फिर कौन होगा ? आप महा भाग हैं। आप को भगवान ने स्वयं श्रीमुख से वैष्णव धर्मसार पांचरात्र सुनाया था। चलिये, आज नन्दनन्दन का छद्म देखें।

नारद—ऐं ! क्या भगवान् भी छद्म वेष धारण करते हैं ? भाई, कैसा छद्म, किसके लिये और क्यों ?

शुक—श्री सर्वेश्वरी की रूपमाधुरी पान करने के लिये, आप क्या क्या छद्म नहीं धारण करते। आज, आप योगिनी का छद्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण कर श्रीप्रिया जी से योग सम्बन्धी वादविवाद करेंगे। पर प्रेम के आगे योग ठहर न सकेगा। प्रिया जी की ही जीत रहेगी।

नारद—अवश्य! यह लीला किस प्रकार देखने को मिलेगी?

शुक—हम लोग सारिकाओं का रूप धारण कर गह्वर वन की लताओं पर बैठ जायँगे। वहीं से प्रिया प्रीतम के प्रेमालाप को सुनेंगे, रूपमाधुरी का पान करेंगे, और नित्य विहार का आनन्द लूटेंगे।

नारद—धन्य! शुक, धन्य! मैं सदा तुम्हारा आभारी रहूंगा। सत्य है, बिना सन्तों की कृपा के यह रस दुर्लभ है।

अहा—

असंभाप्य तद्भाव गंभीर चित्तान्
कुतः श्यामसिंधोः रसस्यावगाहः।

और फिर संत भी कैसे, भाव में भींगे हुए, रस में रँगे हुए, महान् भागवत, महान् भावुक।

शुक—भगवन्! शीघ्रता कीजिए। श्री सर्वेश्वरी सहेलियों सहित उपवन में आ विराजी हैं। चलिये, दर्शन कर नेत्रों को तृप्त करें।

नारद—बहुत अच्छा।

(कुंज कामिनी और मान मंजरी नामक सारिकाओं का रूप धारण कर नारद और शुकदेव उपवन को जाते हैं।)

द्वितीय दृश्य

स्थान—नंदगांव

(श्री कृष्ण एकांत में कुछ सोच रहे हैं।)

श्रीकृष्ण—(स्वगत) मेरे पूर्णावतार के अगम्य रहस्यों को कितनों ने समझा। अधिक से अधिक, लोगों की ऐश्वर्य तक पहुँच है। वे चमत्कार देखने में ही अहोभाग्य मानते हैं। वे यह नहीं जानते कि ऐश्वर्य केवल मेरी एक कला का प्रसार है। मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता तो माधुर्य में ही है। इस माधुर्य के अनुभवी संसार में विरले हैं। मेरा माधुर्य, मेरा शृङ्गार अप्राकृत है, दिव्य है। इस गोप्य रस के अधिकारी दिव्य चक्षुओं से मेरे नित्य विहार को देख सकते हैं।

प्रिया राधिका मेरी आह्लादिनी शक्ति है। मुझमें और उनमें लेशमात्र भी अंतर नहीं। सदा से एक रूपता है। हम दोनों परस्पर चंद्र-चकोरी हैं, घन-मयूर हैं, जल-मीन हैं, लोह-चुम्बक हैं, दो तन एक प्राण हैं। इसी आह्लादिनी शक्ति के साथ मैं नित्य विहार किया करता हूं। यहां सूर्य-चंद्र, पृथ्वी-पवन, जल-आकाश, प्रकृति-काल किसकी भी पहुंच नहीं। मेरे विहार में सदा अमृत की वर्षा होती है। यहां परमहंस रूपमाधुरी में मतवाले होकर केलि किया करते हैं। शिव, नारद, शुक, सनकादिक कांताभाव से हम दम्पति की टहल करते हैं। श्रुति की ऋचाएँ गोपिका वेष धारण कर रास रस के आनन्द को लूटती हैं। यहां केवल प्रेमदेव का साम्राज्य है। प्रेमलक्षना पराभक्ति के पूर्णाधिकारी जन मुझ निर्गुण, निराकार परब्रह्म को बांधकर मन माना नाच नचाते हैं। मैं उनके अधीन होकर पीछे पीछे दास की नाईं डोला करता हूँ। मेरी माधुर्य-महिमा जैसी कुछ गोपियों ने जानीं, कोई और क्या जानेगा? गोपियाँ प्रेम मंदिर की धुजाएँ हैं। इन्होंने मुझे अपने वश में कर लिया है। जैसा वह कहती हैं, मुझे करना पड़ता है।

मोहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं! नाचता हूं, गाता हूँ, जैसे बने तैसे रिझाता हूं! कैसा आश्चर्य है! मेरी भ्रकुटि के संकेतमात्र से ब्रह्मा, विष्णु, महेश नाचा करते हैं, पर मैं अपने अनन्य भक्तों के रुख पर नाचता हूं। मैं इन सर्वत्यागी एकान्ती भक्तों से कदापि उऋण नहीं हो सकता। इनकी महिमा वर्णन करने की मुझ में भी शक्ति नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहा ! प्यारी गोपियो ! तुम्हारी लगन अपूर्व है। तुमने मेरे लिये क्या नहीं त्याग दिया। मेरे इस कथन की तुम्हीं ने यथेष्ट पुष्टि की कि—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज

अब मैं तुमसे पल भर भी विलग नहीं हो सकता।

(प्रेमावेश में गोपियों की प्रेम महिमा गाते हैं।)

पद—धन्य धन्य ब्रज गोप कुमारीं।
प्रेम धुजा रस राज पुजारिन प्रीतम हृदय दुलारीं॥
नित्य विहार अनन्य रसिकनी मेरी परम पियारीं।
हम तुम में नहिं भेद रञ्चहरि, बलिहारीं, बलिहारीं॥

संसार में कौनसी ऐसी मोहिनी है, जो तुम्हें लुभा सकती है ? तुमने मोक्ष सुख को भी तिनके के समान मानकर छोड़ दिया है। तुमने भक्ति के आगे ज्ञान को पछाड़ दिया है, प्रेम के सामने नेम को मटियामेट कर दिया है। तुमने सिद्धकर दिखाया है कि प्रेम ही परमात्मा है।

नेपथ्य में—यह आपका भ्रम है।

श्री कृष्ण—एं ! भ्रम कहने वाला कौन ?

(ब्रह्मा का प्रवेश)

ब्रह्मा—(प्रणाम करके) नाथ ! दास की धृष्टता क्षमा कीजिए, जो मैंने एकांत में आपकी प्रेमवार्ता में विक्षेप डाला। मैं आपकी अनन्त महिमा को नहीं जान सकता। आपकी माया से भला कौन अछूता बचा है। आपकी अनन्त रहस्यमयी लीला को वही समझ सकता है, जिस पर आपकी सहज कृपा हो गयी हो। मैं रजोगुण से विमूढ़ अहंकारी जीव आप की लीलाओं को प्राकृत समझ कर भ्रम में पड़ जाता हूँ। हे जगद्गुरो ! हम लोगों का अज्ञानसंभव भ्रम केवल आप ही दूर कर सकते हैं। मैं गाय बछड़े चुराकर एकबार आप की परीक्षा ले चुका हूँ। किंतु जीव का बार बार भूलने का स्वभाव ही है। कल एक लीला देखकर मुझे फिर आश्चर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ और वह भ्रम किसी भांति दूर नहीं हो सका। आज्ञा हो तो निवेदन करूँ।

श्री कृष्ण—पितामह! आप अपने भ्रम द्वारा जगत में मेरे रहस्यों को प्रकट करना चाहते हैं। चतुरानन! यह सब आपकी चतुराई है। कहिये, क्या पूछना चाहते हैं?

ब्रह्मा—श्याम सुन्दर! क्या यह अनुचित नहीं है कि गँवार गोपियाँ मान कर करके आपके कर कमलों से अपने चरण दबाती हैं। हरे कृष्ण! ऐसा उनमें कौनसा परम तत्व धरा है कि आप उनके पीछे २ दास की नाईं घूमते हैं, जो वह कहती हैं, करते हैं। जिस परब्रह्म तक बड़े बड़े तपोनिष्ठ ऋषिमुनि भी नहीं पहुँच सकते, जिसका वेदादि निरूपण नहीं कर सकते, जो गुणातीत और अगोचर है, उसे ये गँवार भ्रकुटि के बल नचाती हैं, आश्चर्य नहीं तो क्या है! उनके रूठ जाने पर आप मनाने के लिये हाथ जोड़ते हैं, पैर पड़ते हैं, हा हा करते हैं, सदा आप श्री मुख से उनका गुणानुवाद करते हैं। उन्होंने ऐसा क्या तप किया, क्या पुण्य संचय किया, आज तक मेरी समझ में नहीं आया। अभी आप कह ही रहे थे कि उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि प्रेम ही परमात्मा है। हे सर्वेश्वर! यह आपका भ्रम नहीं तो क्या है?

श्री कृष्ण—पितामह! यह भ्रम नहीं, बिल्कुल सत्य है। मेरी सामर्थ्य नहीं कि मैं उन प्रेमरूपा गोपिकाओं के चित्त को किसी भी प्रकार डिगा सकूं। मैं इनकी सब तरह से परीक्षा ले चुका, वे कभी प्रेम पंथ से एक पग भी पीछे नहीं हटीं। आज भी, मैं एक छद्म से अपनी हृदयेश्वरी परम प्यारी राधिका की प्रेम परीक्षा लेने जा रहा हूं। देखूं—

ब्रह्मा—भगवन्! वह कौनसा छद्म होगा?

कृष्ण—योगिनी का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा—योगेश्वर ! यह तो आप का सहज रूप है, छद्म नहीं। पर योगी न होकर योगिनी क्यों बनेंगे ?

कृष्ण—जाति के प्रेम भाव से। वैसे तो 'मैं' और 'राधिका' एक रूप हूं। अर्धनारी नटेश्वर हूं, परन्तु मानवी चेष्टा के अनुसार मुझे लीला करनी है।

ब्रह्मा—अखिल ब्रह्माण्ड के सूत्रधार ! छद्मयोगिनी बन कर आप श्री राधिका जी की किस प्रकार प्रेम परीक्षा लेंगे ?

कृष्ण—योग की अगाध महिमा गा कर प्रेम को परास्त करूँगा।

ब्रह्मा—योग, वेदान्त के आगे प्रेम नेम ठहर ही क्या सकता है, तिस पर वह गँवार गोपियां आप से वाद विवाद कर ही क्या सकती हैं ?

कृष्ण—नहीं पितामह ! प्रेममूर्त्ति राधिका के साथ शास्त्रार्थ करना हँसी खेल नहीं है। मुझे जहां तक जान पड़ता है, मैं इस विषय में अवश्य हार जाऊँगा। प्रेम की ही जीत होगी। छिप कर आप भी आज के छद्म को देख सकते हैं। इसी से आप की शंकाओं का समाधान होगा।

ब्रह्मा—देवाधिदेव ! आप ही की कृपा से मेरा अज्ञान दूर होगा।

कृष्ण—अच्छा, अब मैं योगिनी वेष धारण कर गह्वर वन की कुञ्जों में आसन मार कर बैठूँगा और प्रिया जी के साथ योग शास्त्र पर विवाद करूंगा, इच्छा हो, आप भी चलिए।

ब्रह्मा—जो आज्ञा। मैं भ्रमर बना जाता हूं, रसज्ञ भ्रमर के रूप से आप की छद्म लीला देखूंगा।

कृष्ण—(स्वगत) प्रिया जी के सामने तुम्हारा सब कपट खुल जायगा, देखो, कितनी उलटी सीधी बातें सुननी पड़ेंगी। (प्रकट) अच्छा, चलिये।

(ब्रह्मा जाते हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—बरसाने का मार्ग

(श्री कृष्ण योगिनी के रूप में अलख जगाते जा रहे हैं।)

(वीणा के स्वर में गाते हैं।)

श्रीकृष्ण—मैं बाला जोगिनि या ब्रज में घर घर अलख जगाऊँ।
जोग जुगति सौं सहज निरञ्जन आतम जोति दिखाऊँ॥
चौरासी आसन साधूं यम नियम धारना ध्याऊँ।
निर्विकल्प निर्बीज निरंतर सिद्ध समाधि लगाऊँ॥
चार वेद षट शास्त्र सार को अनुभव मैंने पायो।
ज्ञान भक्ति वैराग्य छानि कै जोगिनि भेष बनायो॥
सदा फिरूँ अलमस्त अकेली लूटी आनँद रासी।
कांपत काल, सिद्धि सब ठाढ़ीं, मुक्ति भयी मम दासी॥
शिव, सनकादिक नारद शुक से चेला मैंने कीन्हें।
आतम ज्ञान सिखाय सबन के त्रिविध ताप हर लीन्हें॥
है ऐसो कोई या ब्रज में जोग जुगति जो सीखै।
छूटै जरा जंजाल सहज ही रूप आपनो दीखै॥
मैं बाला जोगिनि या ब्रज में घर घर अलख जगाऊँ।
जोग जुगति सौं सहज निरंजन आतम जोति दिखाऊँ॥

अलख ! खोल दे पलक—

सारे गाँव में घूमते घूमते दोपहर बीत गये, कोई भी योग का अधिकारी न मिला। गँवार ग्वालों के गाँव में योग की चर्चा करना वैसा ही है, जैसे बहरे के आगे राग रागिनी अलापना। शिव, शिव ! जहाँ देखती हूं तहाँ लोग व्यौपार धंधे में फँसे हैं, परमात्मा की ओर किसी का भी चित्त नहीं है। सब घोर निद्रा में सो रहे हैं। पुत्र कलत्र को ही सर्वस्व मान कर ऐसे निश्चिंत बैठे हैं, मानों इन पर कभी काल झपटेगा ही नहीं। कैसी अज्ञानता है, कैसा घोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोह है। यह नहीं जानते कि हम सब काल कलेवा हैं। आज एक की वारी है, तो कल दूसरे की। यह संसार सराय है। मुसाफ़िर आते जाते रहते हैं। ज़रा गफलत हुई कि जनम भर की कमाई से हाथ धो बैठे। सम्हल जाओ, जाग उठो, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है—

मात नहीं, तेरा तात नहीं, औ भ्रात नहीं, कोइ सगा यहां।
जाग मुसाफ़िर गाफ़िल क्यों है, धन दौलत में पगा यहां॥
बँधा है आसा की डोरी से फिकर का मारा घूम रहा।
जाग मुसाफिर काल बली तेरे सीस पै कैसा नाच रहा॥
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे ज्ञान खजाना लूट रहे।
जाग मुसाफ़िर सुमर हरी को प्रान तेरे अब छूट रहे॥
जनम दुःख औ जरा दुःख है मरन दुःख फिर चौरासी।
जाग मुसाफ़िर सुमर हरी को जो सत चित आनंद रासी॥

अलख ! खोल दे पलक—

(सामने के उपवन को देख कर)

अहा ! बड़ा ही रमणीक उपवन है। एकान्त भी है। यहीं आज अपने राम रमेंगे। क्या ही सघन कुंज है, समीप ही जलाशय भी है। हम योगियों के लिए ऐसे ही रम्य और एकान्त स्थान उपयुक्त हैं। इसी कुंज की छाया में चौकी पर सिद्धासन लगा कर समाधि लगाऊँगी।

(चौकी पर योगिनी ध्यानावस्थित बैठ जाती है।) [क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

का

चतुर्थ अधिवेशन, छपरा

प्रथम-दिवस

देशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन आश्विन शुक्ल १५, (ता० ५ अक्तूबर) को आरम्भ हुआ। सम्मेलन के लिए छपरा कचहरी-स्टेशन के निकट खूब बड़ा, सुन्दर किन्तु सादा सभा मण्डप बनाया गया था। अधिवेशन के आरंभ का समय १२-३० बजे निश्चित था, किन्तु कार्य्यारम्भ ठीक एक बजे से हुआ। मञ्च पर विशेष उल्लेखयोग्य व्यक्ति इस प्रकार थे:—मलयपुर निवासी द्वादश अखिल भारतवर्षीय हिंन्दी-साहित्य-सम्मेलन तथा प्रथम विहार प्रादेशिक सम्मेलन के सभापति पं० जगन्नाथ प्रसाद जी चतुर्वेदी, विहार के सुप्रसिद्ध नेता श्रीमान् राजेन्द्र प्रसाद जी, बा० जगतनारायण लाल जी, पटना, अखौरी गोपी किशोर लाल जी बी. ए. मुजफ़्फ़रपुर, रायसाहेब राजेन्द्र प्रसाद जी पटना, काशी के प्रसिद्ध असहयोगी नेता अध्यापक जे. बी. कृपलानी, पटना के बा० देवकी प्रसाद सिंह जी एम. ए., बी. एल., एम. एस-सी, आरा के बा० ब्रजनन्दन सहाय जी वकील, मनोरञ्जन-सम्पादक पं० ईश्वरी प्रसाद जी शर्मा, पाण्डेय सत्यनारायण जी शर्मा, बा० शुकदेव सिंह जी, हिन्दू विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र के अध्यापक श्रीयुत फूलदेव सहाय जी वर्मा, एम-ए., गया के श्री मन्नूलाल पुस्तकालय के संस्थापक श्रीयुत सूर्य्यप्रसाद जी महाजन, मसौढ़ी (पटना) के मौलवी अब्दुल जलील, मुज़फ़्फ़रपुर के मौलवी लतीफ हुसैन, बा० ज्ञानचन्द सोन्थी वी. ए., वैष्णव पुरुषोत्तमदास जी, पं० मथुरा प्रसाद जी दीक्षित,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विशारद' जी, बी. बी. कालिज के गणित के अध्यापक बा० रामेश्वर प्रसाद जी वर्मा, एम. ए., बी. एल., बा० सतरञ्जन प्रसाद जी मुन्सिफ, पं० रामचन्द्र मिश्र जी मुन्सिफ, पटना; बा० राजकिशोर जी सबजज, स्थायी-समिति के प्रधान-मंत्री श्रीयुत रामधारी प्रसाद जी 'विशारद', सहकारी मंत्री श्री राघव प्रसाद सिंह जी तथा पं० चन्द्रमाराय जी विशारद; विहार के प्रसिद्ध असहयोग प्रचारक ब्रह्मचारी रामरत्न जी, गान्धी कुटीर मलखाचक के अध्यक्ष बा० राम विनोद सिंह जी, नवयुवक कवि बा० मनोरञ्जन प्रसाद जी आरा, प्रभृति बाहर से आए हुए तथा स्वागत-समिति के अध्यक्ष बा० लक्ष्मी प्रसाद जी, वकील; छपरा के लब्धप्रतिष्ठ रईस एवं स्वागतसमिति के उप-सभापति बा० जगन्नाथ शरण जी, वकील; बा० महेन्द्र प्रसाद जी, प्रधान मंत्री स्वागतसमिति तथा स्वागत-समिति के उपमंत्री पटना कालिज के अर्थशास्त्र के अध्यापक बा० सांवलिया बिहारी लाल जी वर्म्मा, एम-ए., बी. एल., महन्त जानकी वल्लभ शरण जी, बा० मथुरा प्रसाद जी, बा० नारायण प्रसाद जी, बा० रामानन्द सिंह जी, बाबा दामोदर दास जी, बा० माधव सिंह जी, बा० रामनारायण लाल जी प्रधानाध्यापक दरभंगा नौर्थब्रुक स्कूल, पं० भरतमिश्र जी आदि आदि सज्जन उपस्थित थे।

सम्मेलन के मनोनीत सभापति पाण्डेय सकलनारायण जी शर्मा काव्य, सांख्य, व्याकरणतीर्थ, विद्याभूषण तथा कलकत्ता संस्कृत कालिज के अध्यापक एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी के व्याख्याता, स्वागत समिति के अध्यक्ष तथा पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी के साथ ठीक एक बजे सभा में आए। लोगों ने खड़े होकर इनका स्वागत किया। सभामण्डप कार्य्यारम्भ के पूर्व ही खूब भर गया था। उपस्थिति लगभग ३०० के थी। सर्व प्रथम पांच बालकों ने बाबू जगन्नाथशरण जी द्वारा रचित मङ्गल-गान किया। इसके बाद बा० जगन्नाथशरण जी ने स्वयं स्वरचित स्वागत कविता पढ़ी। इसके बाद छपरा के श्रीयुत मनोरञ्जन सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब डिपुटीकलक्टर ने बंगाली भाइयों की ओर से आगत सज्जनों का स्वागत हिन्दी में व्याख्यान देते हुए किया। आपके बाद बाबू मनोरञ्जन प्रसाद जी ने स्वरचित 'राष्ट्रभाषा गौरव', श्री बलदेव प्रसाद जी अग्रहरी, छपरा ने हिन्दी-सम्बन्धी गान तथा मुज़फ्फरपुर के पांडेय रामावतार शर्मा (विद्यार्थी) ने गान एवं कविताएं पढ़ीं। तत्पश्चात स्वागत-समिति के अध्यक्ष, अनेक नाटकों के लेखक बा० लक्ष्मीप्रसाद जी, वकील ने अपना भाषण पढ़ना आरम्भ किया। आप इतने वृद्ध हो गए हैं कि बड़ी कठिनाई से चल फिर सकते हैं तथा कुछ पढ़ लिख सकते हैं, तो भी हिन्दीप्रेम ने इन्हें विवश किया और लगभग पौन घन्टे तक खड़े होकर अपना भाषण पढ़ते रहे। आपका भाषण, मनोरञ्जक, शिक्षाप्रद एवं उत्तम था। साहित्य का महत्व दिखलाते हुए आपने अपने भाषण में विहार में हिन्दी की दशा का दिग्दर्शन कराया तथा 'विहारी हिन्दी' कह कर विहार को लाञ्छित करने वाले महाशयों को युक्तियों से मुँह तोड़ उत्तर दिया तथा यह भी बतलाया कि किस प्रांत के लेखक प्रान्तीयता के पंजे से निकले हुए हैं और अशुद्धियां नहीं करते। अन्त में आपने स्वागत करते हुए मनोनीत सभापति के निर्वाचन का प्रस्ताव उपस्थित करने के लिए श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी से अनुरोध किया।

तदनुसार चतुर्वेदी जी ने सभापति के निर्वाचन का प्रस्ताव उपस्थित करते हुए इनकी योग्यता तथा विशाल पाण्डित्य का परिचय लोगों को दिया। आपके हास्यपूर्ण भाषण के समय बराबर उपस्थित जनता हँसती ही रही। तदनन्तर बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने पटना, पं० ईश्वरी प्रसाद जी शर्मा ने आरा, पं० पुरुषोत्तम दास जी वैष्णव तथा अखौरी गोपी किशोर लाल ज़ी ने मुजफ्फरपुर, बा० फुलदेव सहाय जी वर्मा ने छपरा तथा बा० देवकीप्रसाद सिंह जी एम. एल. सी. ने डाल्टनगंज की ओर से इस प्रस्ताव का समर्थन किया। तत्पश्चात सभापति महोदय ने करतलध्वनि में सभापति का आसन ग्रहण किया और छपरा के बा० मथुरा प्रसाद जी ने सभापति एवं कुछ अन्य सज्जनों को पुष्प मालाएँ पहनाईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद सभापति महोदय उठे और वेदध्वनि से सभा-मण्डप को गुंजाते हुए अपना भाषण आरम्भ किया। आपके भाषण में लगभग डेढ़ घन्टा समय लगा। स्थान स्थान पर आपके भाषण से आपकी गंभीरता, आपकी विद्वता तथा अपरिमेय योग्यता का पता लगता है। अपने भाषण में आपने साहित्य की व्याख्या स्वतन्त्र रूप से करते हुए साहित्य के सभी अँगों का पर्य्यवेक्षण किया और विहार में वर्तमान हिन्दी की दशा का विशद रूप से विवेचन किया, आपके भाषण से लोग बहुत संतुष्ट हुए।

सभापति के भाषण के पश्चात स्वागत-समिति के उपमंत्री श्रीयुत बा० सांवलिया विहारी लाल जी वर्मा एम. ए., बी. एल. ने निम्न सज्जनों के आए हुए तार और पत्र पढ़ेः—

द्वितीय प्रादेशिक सम्मेलन के सभापति सूर्यपुराधीश राजा राधिका रमणप्रसाद सिंह जी, तृतीय प्रादेशिक सम्मेलन के सभापति बा० शिवनन्दन सहाय जी, श्रीयुत बा० बदरीनाथ जी वर्मा, प्रयाग विश्वविद्यालय के इतिहास के व्याख्याता श्रीयुत वेणीप्रसाद जी एम.ए., सेठ गोविन्ददास जी, जबलपुर, बा० गोकुलानन्द प्रसाद जी वर्म्मा, भागलपुर, पं० नागेश्वर प्रसाद सिंह जी शर्म्मा (लाल बाबू) संरक्षक, 'तरुण भारत,' आदि। इसके बाद रात्रि में 'भारत-रमणी' नाटक के खेले जाने की तथा दूसरे दिन प्रातः विषय-निर्धारिणी-समिति की बैठक की सूचना देते हुए सभापति महोदय ने प्रथम दिवस का कार्य समाप्त किया।

विषय-निर्धारिणी-समिति

दूसरे दिन प्रातः साढ़े आठ बजे से विषय-निर्धारिणी-समिति की बैठक आरंभ हुई और लगभग साढ़े दस बजे समाप्त हुई।

शुद्ध भाषा भाषण

इसके बाद प्रतिनिधियों के मनोविनोदार्थ शुद्ध-भाषा-भाषण का आयोजन किया गया। यह निश्चित हुआ था कि जो इसमें भाग लेना चाहें वे केवल शुद्ध हिन्दी, संस्कृत एवं प्राकृत शब्दों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ही व्यवहार करें, फ़ारसी, अर्बी के शब्दों का व्यवहार न करें। इसमें लगभग २५ सज्जन सम्मिलित हुए, उर्दू, फ़ारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों के व्यवहार पर खूब हँसी होती थी। इससे लोगों का बड़ा मनोरंजन हुआ।

द्वितीय-दिवस

द्वितीय दिवस का कार्य्यारम्भ ठीक १ बजे हुआ। आज भी उपस्थिति सन्तोषजनक थी। आज सभामञ्च पर अखिल भारतवर्षीय सप्तम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति, साहित्याचार्य्य श्रीमान् पं० रामावतार जी शर्म्मा एम. ए., श्रीयुत बा० कालिका प्रसाद जी बी. ए., बी. टी., बा० गोकर्णसिंह जी, 'शान्ति' सम्पादक पं० अशर्फी मिश्र जी, 'देश' के सहायक सम्पादक पं० पारसनाथ जी त्रिपाठी भी उपस्थित थे।

सभापति महोदय के आसन ग्रहण कर लेने पर उनके प्रिय पुत्र ने मङ्गलाचरण किया। उसके बाद बा० मनोरंजन प्रसाद जी ने स्वरचित 'विहार-गौरव' गान गाया।

तत्पश्चात् सप्तम अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति, साहित्याचार्य्य पं० रामावतार जी शर्म्मा एम. ए., ने 'हिन्दी साहित्य की उन्नति' विषय पर अपना विद्वतापूर्ण भाषण दिया। आपने अपने भाषण में हिन्दी साहित्य की त्रुटियों तथा अभावों पर पूरा प्रकाश डाला।

तदनन्तर प्रस्तावों की बारी आई और स्थायी समिति के संगठन सम्बन्धी प्रस्ताव को छोड़ कर सभी प्रस्ताव केवल एक घन्टे के भीतर पास हो गए। सम्मेलन द्वारा इस बार केवल ७ प्रस्ताव स्वीकृत हुए। सभी प्रस्ताव काम के थे। एक भी प्रस्ताव इनमें बेकार अनुनय विनय तथा प्रार्थना का नहीं था। इसके बाद 'सौंदर्योपासक' तथा 'लालचीन' के लेखक श्रीयुत बा० व्रजनन्दन सहायजी ने अपना "मैथिल कोकिल विद्यापति का हिन्दी में स्थान" विषयक लेख पढ़ा। यह साहित्यिक लेख बड़ी ही विद्वता से लिखा गया था। आपके लेख पाठ से लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद अखौटी बा० सहदेव सहाय सिंह वर्म्मा, तथा पाएडेय रामावतार शर्म्मा (विद्यार्थी) ने अपने मनोरञ्जक अनुप्रासयुक्त लेख पढ़े। इन लेखों से लोगों का मनोविनोद खूब ही हुआ। स्वागत-समिति के पास बहुत से अच्छे लेख आए थे किन्तु समयाभाव से वे पढ़े नहीं जा सके।

लेख पाठ के बाद श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य पर एक मनोरंजक भाषण दिया। आपके भाषण से सभी मुग्ध हो गए। भाषण के अन्त में आपने सम्मेलन की आर्थिक दुरावस्था की बात कही और लोगों से उसकी सहायता के लिए धन देने की अपील की। आपकी अपील पर लगभग ४५) रुपये नक़द आये तथा ५००) रुपए की प्रतिज्ञा हुई।

इसके बाद स्थायी समिति के प्रधान-मंत्री श्रीयुत रामधारी प्रसाद, 'विशारद' द्वारा स्थायी-समिति के गत वर्ष का विवरण पढ़ा गया और वह सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

फिर अगले वर्ष के लिए स्थायी-समिति का संगठन किया गया, तब श्रीयुत राजेन्द्र प्रसाद जी उठे और प्रतिनिधियों की ओर से सभापति महोदय को धन्यवाद देने का प्रस्ताव किया। इसका समर्थन श्रीयुत पं० जगन्नाथ प्रसाद जी चतुर्वेदी ने किया। फिर स्वागत-समिति की ओर से श्रीयुत बा० रामानन्द सिंह जी ने सभापति महोदय, श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी तथा अन्यान्य भिन्न भिन्न स्थान से आगत प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया। साथ साथ स्वागत समिति में काम करने वाले सभी सज्जनों को धन्यवाद दिया।

फिर सभापति महोदय उठे और धन्यवाद के प्रस्ताव का उत्तर देते हुए लगभग २० मिनट तक बोलते रहे। उनका यह अन्तिम भाषण भी गंभीर तथा साहित्यिक था। सभापति के अन्तिम भाषण के बाद सम्मेलन का अन्तिम दिवस समाप्त हुआ।

नाट्याभिनय

रात्रि में स्वागत-समिति की ओर से पुनः 'वीर अभिमन्यु' का अभिनय हुआ। यह अभिनय भी साधारणतः अच्छा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य बातें

इस बार प्रतिनिधियों की संख्या लगभग १०० थी। स्वागत-समिति का प्रबन्ध बड़ा ही उत्तम था। लोगों के रहने तथा भोजन आदि का बड़ा ही अच्छा प्रबन्ध था। इसका सारा श्रेय स्वागत-समिति के प्रधान-मंत्री बा० महेन्द्र प्रसाद जी को है। स्वयं सेवकों ने भी ख़ूब ही काम किया। उन लोगों की तत्परता एवं कठिन कार्य्य को देख कर दंग रह ज़ाना पड़ता था। इसके लिए स्वयं सेवकों के नायक श्रीयुत बा० कामेश्वर नारायण सिंह जी बी.ए. को जितना धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा है, दोनों दिनों के अभिनय की सफलता के लिए नाटकों के प्रबन्धक श्रीयुत बा० श्यामदेव नारायण सिंह जी, बा० मथुरा प्रसाद जी तथा बा० रामानन्द सिंह जी को हार्दिक धन्यवाद देना उपयुक्त होगा।

श्रीरामधारी प्रसाद
प्रधान-मंत्री विहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

चतुर्थ विहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, छपरा द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव।

ह सम्मेलन हिन्दी, प्राकृत और संस्कृत के धुरन्धर विद्वान जयपुर निवासी श्रीयुत पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी बी. ए., 'मिथिला मिहिर' के सम्पादक और हिन्दी साहित्य के सुयोग्य ज्ञाता पं० योगानन्द जी कुमर तथा अफ्रीका के हिन्दी प्रचार में प्रधान भाग लेने वाली श्री भवानी दयाल जी की धर्म-पत्नी श्रीमती जगरानी देवी की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करता और उनके शोक-विह्वल परिवार के साथ समवेदना प्रकाश करता है।

(सभापति द्वारा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—हिन्दी साहित्य की उन्नति के विचार से यह परम आवश्यक है कि काव्य, अर्थशास्त्र, विज्ञान, इतिहास, कृषि, कला कौशल, दर्शन आदि विषयों के विषयानुसन्धान कराने एवं उस विषय की पुस्तकें लिखाने और उनको प्रचारार्थ छपाने और प्रकाशित करने के लिए एक समिति बनायी जाय जो इसका उचित प्रबन्ध करे और जिसके निम्नलिखित सदस्य हों:—

(१) श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी, कलकत्ता
(२) श्रीयुत बाबू सूर्य प्रसाद जी महाजन, गया
(३) सूर्यपुराधीश राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह जी, एम. ए., सूर्यपुरा
(४) श्रीयुत बाबू बैद्यनाथ प्रसाद सिंह जी, एम. एल. ए., मुजफ़्फ़रपुर
(५) राय बहादुर बाबू रामरणविजय सिंह जी, पटना
(६) सेठ रामयशमल जी अग्रवाल, झरिया
(७) श्रीयुत युद्ध विक्रम मारूफ, मुज़फ्फरपुर
(८) श्रीयत बाबू श्यामनन्दन सहाय जी, बी. ए. मुज़फ्फ़रपुर
(९) श्रीयुत आखौरी गोपीकिशोर लाल जी, बी. ए. मुज़फ्फ़रपुर (नियोजक)

प्रस्तावक—श्रीयुत बा० फुलदेव सहाय जी वर्मा, एम. ए.
अनुमोदक—श्रीयुत बा० गोकर्ण सिंह जी
समर्थक—श्रीयुत बा० सांवलिया विहारी लाल जी वर्म्मा, एम. ए., बी. एल.

३—यह सम्मेलन स्थायी-समिति को आदेश करता है कि वह साल भर में बिहार प्रान्त से प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों और विहारी ग्रन्थकारों की लिखी पुस्तकों की सूची तय्यार कर प्रति वर्ष सम्मेलन में उपस्थित करे। (सभापति द्वारा)

४—(क) यह सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि अखिल भारतीय सम्मेलन द्वारा निर्धारित परीक्षाओं के प्रचारार्थ स्थायी-समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहार के मुख्य मुख्य स्थानों में केन्द्र खुलवाने तथा उन परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों के पढ़ाने का उन स्थानों में उचित प्रबन्ध करे।

(ख) यह सम्मेलन छपरा में उपर्युक्त उद्देश्य से एक छोटे आकार में विद्यालय स्थापित होने पर सन्तोष प्रकट करता है तथा स्थायी-समिति को आदेश करता है कि वह इसका निरीक्षण कर इसके कार्यकर्ताओं को उत्साहित करे। (सभापति द्वारा)

(५) यह सम्मेलन उड़ीसा प्रान्त में तथा बिहार के उन प्रान्तों में जहां हिन्दी का प्रचार नहीं है, हिन्दी प्रचार करने के कार्य को सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण समझता हुआ यह निश्चय करता है कि प्रचार कार्य्य का आरंभ इस वर्ष अवश्य कर दिया जाय और इसके लिए समुचित द्रव्य इकट्ठा किया जाय। इस कार्य्य के लिए द्रव्य एकत्र करने का भार निम्न सज्जनों को दिया जाय और उन लोगों से प्रार्थना की जाय कि वह शीघ्र ही यथेष्ट रुपए का प्रबन्ध करें:—

१—बाबू जगन्नाथ शरण जी, छपरा
२—राय बहादुर सखीचन्द जी, जगन्नाथपुरी
३—श्रीयुत मथुरा प्रसाद जी दीक्षित, विशारद (संयोजक)
प्रस्तावक—श्रीयुत राजेन्द्र प्रसाद जी
समर्थक—अध्यापक श्रीयुत जगतनारायण लाल जी

६—यह सम्मेलन स्थायी-समिति को आदेश करता है कि प्रान्त की उन संस्थाओं एवं सज्जनों को जो हिन्दी की उन्नति में संलग्न हों और यदि वे सम्मेलन से सहायता चाहते हों तो उनकी सहायता यथासंभव हरप्रकार से स्थायी-समिति करे।

प्रस्तावक—श्रीयुत पं० भरत मिश्र जी,
समर्थक—श्रीयुत दामोदर सहाय जी,

७—यह सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि अगले वर्ष सम्मेलन का कार्य्य नियमित रूप से चलाने के लिए स्थायी-समिति का इस प्रकार से संगठन किया जाय:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापति—श्री पाण्डेय सकल नारायण जी शर्म्मा

उपसभापति—

१. श्रीयुत बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी, पटना
२. श्रीयुत बाबू वैद्यनाथ प्रसाद सिंह जी, एम. एल. ए., मुजफ्फरपुर
३. श्री कवि पं० विजयानन्द जी त्रिपाठी, पटना
४. राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह जी एम. ए. सूर्यपुरा
५. श्रीयुत बाबू जगन्नाथशरण जी बी. एल., छपरा

प्रधान-मंत्री—श्रीयुत बाबू रामधारी प्रसाद जी, विशारद

सहकारी मंत्री—१. श्रीयुत राघव प्रसाद सिंह जी
२. पं० चन्द्रमाराय जी शर्म्मा, विशारद
३. पं० नन्नू प्रसाद झा,

कोषाध्यक्ष—श्रीयुत बाबू श्यामनन्दन सहाय जी, बी. ए., ज़मींदार

आय-व्यय-परीक्षक—श्रीयुत अखौरी गोपीकिशोर लाल जी बी. ए.

प्रस्तावक—श्रीयुत मथुरा प्रसाद जी दीक्षित, विशारद
समर्थक—श्रीयुत राजेन्द्र प्रसाद ज़ी,

श्रीरामधारी प्रसाद
प्रधान मंत्री।

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का द्वितीय अधिवेशन

स्थायी समिति का एक साधारण अधिवेशन श्रा० शु० ७। ७९ रविवार तदनुसार ३० जुलाई १९२२ को ३ बजे दिन से सम्मेलन कार्य्यालय में निम्न लिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

श्रीयुत बा० महाबीरप्रसाद श्रीवास्तव, बी. एस-सी., एल. टी., विशारद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी
श्रीयुत प्रो० वेणीप्रसाद, एम. ए.
श्रीयुत भगवतीप्रसाद, बी. ए.
श्रीयुत प्रो० ब्रजराज जी, एम. ए., बी. एस-सी., एल. एल. बी.
श्रीयुत प्रो० गोपालस्वरूप जी, एम. एस-सी.
श्रीयुत पं० रामजीलाल शर्मा, सम्पादक 'विद्यार्थी'
श्रीयुत आयुर्वेद पञ्चानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल
श्रीयुत पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी
श्रीयुत साहित्याचार्य्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
श्रीयुत श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम. ए., एल. टी.

सर्वसम्मति से श्रीमान् महावीरप्रसाद श्रीवास्तव जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

गत अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़ा गया, एक संशोधन होने के बाद वह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

१—मद्रास प्रचार उपसमिति ने अपनी रिपोर्ट उपस्थित की, निश्चित हुआ कि वह रिपोर्ट 'पत्रिका' में प्रकाशित की जाय।

२—निश्चित हुआ कि स्थायी समिति का कोई अधिकारी या सदस्य मद्रास प्रचार के सारे प्रबन्ध और कार्य की जाँच करने के लिये मद्रास जाँय और स्थायी समिति के सामने अपनी रिपोर्ट उपस्थित करें।

प्र०—प्रो० बेनीप्रसाद
अ०—श्रीनारायण चतुर्वेदी

३—स्थायी समिति प्रस्ताव करती है कि जितनी जल्दी हो सके सदस्यों का एक डेपूटेशन सम्मेलन कार्य के हेतु धन संग्रह करने के लिये भ्रमण करे। डेपूटेशन का संगठन श्री पं० रामजीलाल शर्मा करें।

सर्व सम्मति से स्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—मद्रास प्रचार के सम्बन्ध में स्थायी समिति दिसम्बर १९२२ के पहिले मद्रास प्रचार निरीक्षक की रिपोर्ट आ जाने पर पुनः विचार करे। सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

५—निश्चित हुआ कि परलोकवासी श्री सोमदेव शर्मा जी के स्थान पर श्रीमान् पुरोहित हरिनारायण, बी. ए. जयपुर निवासी स्थायी समिति के सदस्य चुने जाँय।

प्र०—प्रो० बेणीप्रसाद जी
अ०—प्रो० ब्रजराज जी

६—श्री जगन्नाथप्रसाद अधिकारी का वह पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने देहली में स्थायी समिति का आगामी अधिवेशन करने का प्रस्ताव किया था। निश्चित हुआ कि इस समय देहली में अधिवेशन नहीं हो सकता। सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

सभापति को धन्यवाद देने के पश्चात अधिवेशन समाप्त हुआ।

प्रयाग-महिला-विद्यापीठ

सन् १९२२ ई० की विद्याविनोदिनी परीक्षा का परीक्षा फल

निम्नलिखित परीक्षार्थिनी विद्याविनोदिनी की सम्पूर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण हुईं:—

क्र० सं०	नाम	श्रेणी	क्र० सं०	नाम	श्रेणी
* ९५	श्री० चन्द्रवती देवी	प्रथम	४५	श्री० तुलसा देवी	द्वितीय
८१	" सुशीलादेवी सेठ	"	५४	" पार्वती देवी	"
७३	" विद्यावती देवी	"	१६	" शिवरानी देवी	"
९०	" सुशीला देवी	"	११८	" सरला देवी	"
२३	" विप्र देवी	"	२७	" कमला देवी सेठ	तृतीय
२२	" जया देवी	"	८३	" सुदक्षिणा देवी	"
११६	" अम्बा देवी	"	१२	" आनन्दी देवी	"
६	" शिवरानी देवी	"	११७	" गायत्री देवी	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो परीक्षार्थिनी केवल गृहशास्त्र और स्वास्थ्यरक्षा में उत्तीर्ण हुई हैं, उनकी क्रमसंख्या और नाम निम्नलिखित हैं:—

क्रम	नाम	क्रम	नाम
८	श्रीमती पार्वती देवी	६२	श्री० सुन्दर देवी
९	" रमा देवी	६६	" रत्नमणि देवी
३०	" कुन्ती देवी	७०	" श्री० रामदुलारी देवी
३४	" गङ्गा देवी	७१	" रुद्ररानी देवी
३८	" चन्द्रकली देवी	७४	" विद्यावती श्रीवास्तव
३९	" चमेली देवी	७६	" शिवकली देवी
४०	" चमेली देवी	७९	" श्यामा देवी
४१	" चन्द्रावती देवी	८४	" सुन्दर देवी
४३	" जुगावती	८८	" सरला देवी अग्रवाल
४४	" तारा देवी	८९	" सहदेई देवी
४८	" प्रसन्ना देवी	९१	" सोना देवी
५२	" प्रभावती दासी	१०७	" भगवती देवी
५५	" बलवंती देवी	११०	" सत्यवती देवी
५७	" बसंती देवी	१११	" विद्या देवी
६०	" भौसी देवी	११३	" सत्यवती देवी
६१	" मङ्गला देवी	११४	" चन्द्रभागा देवी

जो परीक्षार्थिनी दो विषय लेकर उत्तीर्ण हुई हैं उनकी क्रम संख्या और नाम निम्नलिखित हैं:—

क्रम०	नाम	क्रम०	नाम
५	श्रीमती नन्दरानी देवी	६९	श्रीमती रूपरानी देवी
१०	" सौभाग्यवती देवी	८१	" सरला देवी
११	" चन्द्रकला देवी	९३	" बुद्धिमती देवी
२०	" कुमारी विद्यावती देवी	१००	" शान्ताकुमारी देवी
२४	" आनन्द कुमारी देवी	१०४	" देवहुती देवी शारदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम सं०	नाम	क्रम सं०	नाम
२८	" कैलाशी देवी	१०६	नारायणी देवी
३१	" केशव देवी	११२	" क्षमा देवी
३५	" गायत्री देवी	११६	" गार्गी देवी
५६	" विमला देवी	१२०	" राजेश्वरी देवी
६३	" यशोदा देवी	१२१	" विद्यावती देवी
६७	" रामप्यारी देवी		

जो परीक्षार्थिनी तीन विषय लेकर उत्तीर्ण हुई हैं उनकी क्रम संख्या और नाम निम्न लिखित हैं:—

१—" श्री मती कौशल्या देवी — १६ श्री मती रूप देवी
२—" प्रीतम देवी — ४६ " प्रेम कली देवी
३—" विद्यावती देवी

जो परीक्षार्थिनी चार विषय लेकर उत्तीर्ण हुई हैं उनकी क्रम संख्या और नाम निम्न लिखित हैं:—

४ श्रीमती जगरानी देवी — २१ श्रीमती राजकुंवर देवी.
१३ " कटोरी देवी — ६८ " रमा देवी
१८ " ज्ञानवती वाशिष्ठ

नोटः—क्रम संख्या ६५ श्रीमती चन्द्रवती देवी महेन्द्रगढ़ सर्व प्रथम होने के कारण १००) का पुरस्कार पूर्व निश्चय के अनुसार श्री सङ्गमलाल जी अग्रवाल की माता द्वारा पाने की अधिकारिणी हुई हैं।

भवदीय
मजीद-उद्दीन अब्बासी
रजिष्ट्रार

त्रयोदश-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, कानपुर

सम्मेलन का आगामी वार्षिक अधिवेशन कानपुर में होगा। वहाँ पर स्वागत-कारिणी-समिति का संगठन हो गया है, हर्ष का विषय है कि हिन्दी संसार के सुपरिचित विद्वान श्री मान् पं० महा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर प्रसाद द्विवेदी, भूतपूर्व सम्पादक 'सरस्वती' ने समिति का अध्यक्ष होना स्वीकार कर लिया है। इस समिति की कार्य कारिणी समिति में ५१ सदस्य चुने गये हैं, कार्य बड़े उत्साह से हो रहा है। कार्य कर्त्ताओं का चुनाव और विभागों का संगठन निम्न लिखित है।

सभापति—श्री पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

उपसभापति—१. श्री से० काशीनाथ जी
२. श्री गणेश शंकर विद्यार्थी
३. श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा
४. श्री पं० बलभद्रप्रसाद तिवारी
५. श्री राय बहादुर ला० विश्वम्भरनाथ
६. श्री लाला छुंगालाल जी
७. श्री पं० महेशदत्त शुक्ल
८. श्री लाला चम्पाराम जी

प्रधान मंत्री—श्री पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

१. साहित्य विभाग मंत्री—श्री पं० उदयनारायण वाजपेयी
सह० मंत्री—श्री पं० भगवती प्रसाद वाजपेयी

२. प्रकाशन विभाग मंत्री—श्री पं० रामप्रसाद मिश्र
सह० मंत्री—श्री पं० चण्डिका प्रसाद मिश्र

३. अर्थ विभाग मंत्री—श्री लाला फूलचन्द जी
सह० मंत्री—श्री पं० कृष्ण नारायण शुक्ल

४. प्रबन्ध विभाग मंत्री—श्री पं० देवीप्रसाद द्विवेदी

५. पण्डाल विभाग मंत्री—श्री लाला रूपचन्द जैन

६. आतिथ्य विभाग मंत्री—श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही
सह० मंत्री—श्री जगमोहन गुप्त

७. प्रदर्शनी विभाग मंत्री—श्री पं० भूदेव शर्मा विद्यालङ्कार
सह० मंत्री—श्री पं० भैरवदत्त मिश्र

कोषाध्यक्ष—श्री बा० वेणीमाधव खन्ना

कार्यालय—धर्मशाला श्री लक्ष्मणदास चम्पाराम, लाठी मुहाल, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यावलोकन

(समालोचक के मत के लिए सम्मेलन उत्तरदायी नहीं है ।)

नव रस—

लेखक—श्रीयुत बाबू गुलाबराय जी एम. ए., एल-एल. बी., प्रकाशक—नागरी प्रचारणी सभा आरा । कागज छपाई सुन्दर, पृष्ठ संख्या ६७, मूल्य १।) सजिल्द १॥)

श्री गुलाबराय जी दर्शन के अच्छे लेखक हैं । साहित्य की ओर भी आपकी अभिरुचि रहती है । आपने दार्शनिक पद्धति से इस पुस्तक में साहित्यिक नवरसों पर विचार प्रकट किये हैं । रसों की परिभाषा, उनकी बारीकियां, उदाहरण आदि का विवेचनापूर्ण वर्णन किया है । यदि आप हिन्दी साहित्य के रस संबन्धी ग्रन्थों का भली भाँति परिशीलन कर जाते, तो इस पुस्तक के लिखने में और भी अधिक सफल होते । कहीं कहीं पर भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी खटकती हैं । रसों के उदाहरण भी बहुत अच्छे नहीं चुने गये हैं । फिर भी रसों पर इस ढँग की यह एक ही पुस्तक होगी, इसमें संदेह नहीं । इसका मूल्य बहुत अधिक है ।

मारुति-विजय—

खण्ड काव्य; लेखक—श्री गोस्वामी भैरवगिरि, प्रकाशक—विजयकम्पनी लिमिटेड, मुजफ़्फरपुर; पृष्ठ संख्या ११५; मूल्य सजिल्द ॥।); सादा ॥)

यह खड़ी बोली का प्रचंड खंड काव्य है । एक ओर महावीर हनुमान जी की प्रचंडता है तो दूसरी ओर गोस्वामी भैरवगिरि की काव्य-कला-प्रचंडता । इसमें पांच सर्ग हैं । शिखरिणी छंद हैं । समझ में नहीं आता, लोग संस्कृत के संकीर्ण छन्दों के चुनने में क्या ख़ूबी समझते हैं । इन छन्दों में जहां देखिये तहां यतिभंग दोष, छंद-व्याकरण दोष, भाषा दोष आदि की भरमार रहती है । इस खण्ड काव्य की तो कुछ पूंछिये ही नहीं । क्या भाषा, क्या भाव, क्या शब्द योजना, क्या छन्द रचना आदि सबी का गला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोंटा गया है। ऐसी रद्दी पुस्तकों को प्रकाशित कर न जाने प्रकाशक लोग क्या लाभ समझते हैं? उन्हें क्या जैसे तैसे पैसे आने चाहिये, साहित्य की चाहें जो दुर्दशा हो। प्रकाशकों का यह मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे पुस्तक को भली भांति देख भाल कर छापा करें। आशा है, श्री गोस्वामी जी भविष्य में उसी छंद में लिखेंगे, जिसमें उन्हें भाव-प्रकाशन में सुलभता हो।

ब्रिटिश भारत का आर्थिक इतिहास—

प्रसिद्ध विद्वान श्रीयुक्त रमेशचन्द्र दत्त ने अँग्रेजी में इकोनोमिक हिस्ट्री आफ इण्डिया नाम की पुस्तक लिखी है, इसी का यह संक्षिप्त अनुवाद है। अनुवादक श्री केशव देव सहारिया जी हैं। पुस्तक में १९ परिच्छेद हैं, लार्ड क्लाइव के समय से लेकर महारानी विक्टोरिया के राजत्वकाल तक भारत की जैसी आर्थिक स्थिति थी उसकी विवेचना इसमें की गई है। भिन्न भिन्न शासकों ने अपने अपने शासन काल में जो जो सुधार किये हैं, उनकी अच्छी आलोचना की गई है; हिन्दी में आजकाल राजनैतिक विषयों की खूब चर्चा हो रही है, अतएव यह पुस्तक भी समयानुकूल है, इस में सन्देह नहीं कि इस पुस्तक के पढ़ने से भारत की निर्धनता के कारण समझ में आ सकते हैं और यही वर्तमान असंतोष का प्रधान कारण भी है। रमेशचन्द्र दत्त ने जिस उदारनीति का समर्थन किया है उससे भारत और ब्रिटेन दोनों का कल्याण हो सकता है। पुस्तक की उपयोगिता के विषय में हमारा एक निवेदन है वह यह कि देश की आर्थिक अवस्था सदैव बदलती रहती है, यही कारण है कि अर्थशास्त्र की पुस्तकें शीघ्र ही पुरानी पड़ जाती हैं, रमेशचन्द्र दत्त जी ने जो इतिहास लिखा है वह विद्वत्तापूर्ण होने पर भी अब इस योग्य नहीं है कि वर्तमान भारतवर्ष की आर्थिक समस्याओं को हल कर सके, देश की राजनैतिक अवस्था में भी बड़ा परिवर्तन हो गया है, तो भी यह पुस्तक इतिहास-प्रेमियों के लिए आदरणीय है। मूल्य १।), प्रकाशक—ज्ञान मण्डल कार्यालय, काशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारनाथ का इतिहास—

कुछ ही समय में हिन्दी में प्राचीन भारतवर्ष के सम्बन्ध में कई अच्छी पुस्तकें निकली हैं, बुद्धदेव के कई अच्छे अच्छे चरित्र भी प्रकाशित हुए हैं, तो भी अभी हिन्दी में बौद्धधर्म का कोई भी अच्छा इतिहास नहीं लिखा गया है। भारतवर्ष के इतिहास में बौद्धकाल का महत्वपूर्ण स्थान है, इस अभाव को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि योग्य विद्वान इस काम को स्वीकार करें। वर्तमान पुस्तक के लेखक, श्री वृन्दावन भट्टाचार्य योग्य विद्वान हैं।

भगवान बुद्ध के चरित्र से चार स्थानों का विशेष सम्बन्ध है, लुम्बिनि ग्राम, बोधिगया, सारनाथ और कुशीनगर। सारनाथ में भगवान बुद्ध ने सब से प्रथम धर्मोपदेश किया, तब से यह बौद्धों के लिए तीर्थ स्थान हो गया है। समय समय पर बुद्ध भक्तों ने वहाँ मन्दिर तथा स्तम्भ आदि स्थापित किये हैं। यह सच है कि सारनाथ की इमारतों का कई वार नाश भी हुआ, पर हर समय किसी न किसी बुद्धभक्त ने उसका पुनरुद्धार किया। वहाँ कितने ही प्राचीन चिह्न अभीतक उपलब्ध होते हैं। समय समय पर वहाँ जो खुदाई की गई है, उससे अनेक ऐतिहासिक वस्तुएँ प्राप्त हुईं। सन् १८१५ से लेकर १६०७ तक पुरातत्व विभाग की ओर से कई बार खुदाई हुई, जिसमें कुशान और गुप्तकाल से लेकर १२वीं शताब्दी तक के चिह्न पाये गये। सारनाथ बौद्ध धर्म का आदि काल से ह्रास काल तक केन्द्र रहा है, अतएव उसका इतिहास महत्वपूर्ण होना ही चाहिये। अध्यापक महोदय ने यह इतिहास अच्छे ढंग से लिखा है। पुस्तक में छोटे छोटे सात अध्याय हैं, पहले तीन अध्यायों में सारनाथ का ऐतिहासिक विवरण है, चौथे में पुरातत्व विभाग की खुदाई का हाल दिया है, इसके बाद वहाँ जो जो शिल्प चिह्न प्राप्त हुए हैं, उनके महत्व का निदर्शन किया है। सारनाथ के शिला लेखों की भी अच्छी विवेचना की गई है। सारांश, पुस्तक में एक भी महत्व पूर्ण बात छूटने नहीं पायी है। मूल्य १।) ज्ञानमण्डल काशी से प्राप्त।

उमापति निगम, बी. ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांई तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूरसागर का क्यों नहीं हुआ ? इसलिये कि लोग इस वृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ के समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी को जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुई अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक कागज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] कार्तिक, संवत् १६७६ [अंक ३

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हिय को सूल॥

—श्रीभारतेन्दु

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जांयगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य-शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०-१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला
तालुकेदार-प्रेस १९ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

का

मुख-पत्रिका

भाग १०] कार्तिक, संवत् १९७९ [अङ्क ३

पश्चात्ताप

पद

ऐसेहि जन्म समूह सिराने ।
प्राननाथ रघुनाथ से प्रभु तजि, सेवत चरन बिराने ॥
जे जड़ जीव कुटिल कायर खल, केवल कलिमल साने ।
सूखत बदन प्रशंसत नित कहँ, हरि तें अधिक करि माने ॥
सुख हित कोटि उपाय निरन्तर, करत न पायँ पिराने ।
सदा मलीन पंथ के जल ज्यों, कबहुंक सो कि थिराने ॥
यह दीनता दूर करिबे कों, अमित जतन उर आने ।
'तुलसी' चित चिंता न मिटै, बिनु चिंतामनि पहिचाने ॥

—गोस्वामी तुलसीदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तवर भगवतरसिक की कुंडलियाँ।

[ले०—श्री वियोगी हरि]

महात्मा भगवतरसिक टट्टी संप्रदाय के अनन्य वैष्णव थे। यह बड़े ही त्यागी, अनुरागी और सूक्ष्मदर्शी कवि थे। इनकी कुछ बानी वृन्दावन से प्रकाशित हो चुकी है। अप्रकाशित बानी बहुत कुछ पड़ी हुई है। इन्होंने शृंगार जिस प्रतिभा के साथ अंकित किया है, वैराग्य भी उतनी खूबी से चित्रित किया है। कौन कह सकता है कि इन अनुरागी महात्मा द्वारा कथित शृंगार अश्लील है? अस्तु, आज मैं उनकी कतिपय कुण्डलियाँ उद्धृत करता हूं। उनकी बानी समझना सहज नहीं है, क्योंकि वे स्वयं लिख गये हैं :—

"भगवतरसिक रसिक की बातें
रसिक बिना कोउ समुझि सकै ना।"

कुंडलियाँ

साँचे श्री राधारमन, झूंठो सब संसार।
बाजीगर को पेखनो, मिटत न लागै बार॥
मिटत न लागै बार, भूत की संपति जैसे।
मिहिरी, नाती, पूत धुआँ के धौरा तैसे॥
भगवत ते नर अधम, लोभ बस घर घर नाँचे।
झूंठे गढ़ै सुनार, मोम के बोलै साँचे॥

कपटी संग न कीजिये, जदपि विष्णु सौ होय।
वामन ह्वै बलि को छल्यो, यह जानै सब कोय॥
यह जानै सब कोय, बहुरि वपु धारि मोहिनी।
असुरनि सुरा पिवाय, सुरनि दई सुधा दोहिनी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृन्दा धर्म घटाइ, मृत्यु जालंधर लपटी ।
भगवत बनिता बिप्र भयो परमेश्वर कपटी ॥ १ ॥

नित्य बिहारी की कला, प्रथम पुरुष अवतार ।
तासु अंस माया भई, जाको सकल पसार ॥
जाको सकल पसार, महातत उपज्यौ जातें ।
अहंकार उत्पत्ति भई, श्रुति कहैं जु तातें ॥
अहंकार त्रैरूप भयो, सिव विधि असुरारी ।
भगवत सब को नित्य बीज श्री नित्यबिहारी ॥ २ ॥

जो जानै मानै सोई मानै क्यों बिन जान ।
पीर प्रसूती की कहा, जानै बाँझ अजान ॥
जानै बाँझ अजान नपुंसक रति सुख नाहीं ।
ऐसेहि नीरस पुरुष कहा समुझै रस माहीं ॥
भगवत नित्य बिहार रसिक अनुभव उर आनै ।
गूढ़ बात नभ जाति जाति वरही जो जानै ॥ ३ ॥

आचारज ललिता सखी, रसिक हमारी छाप ।
नित्य किसोर उपासना, जुगल मंत्र को जाप ॥
जुगल मंत्र को जाप, वेद रसिकन की बानी ।
श्री वृन्दावन धाम, इष्ट स्यामा महरानी ॥
प्रेमदेवता मिले बिना सिधि होय न कारज ।
भगवत सब सुखदानि, प्रगट भये रसिकाचारज ॥ ४ ॥

नहिं हिन्दू नहिं तुरक हम, नहिं जैनी अँगरेज ।
सुमत सम्हारत रहत नित, कुंजबिहारी सेज ॥
कुंजबिहारी सेज, छांड़ि मग दच्छिन डेरौ ।
रहैं बिलोकत केलि, नाम भगवत अलि मेरो ॥
श्री ललिता सखि पाइ कृपा सेवत श्री स्यामहिं ।
नहिं काहू सों द्रोह मोह काहू सों है नहिं ॥ ५ ॥

कामी के प्रिय कामिनी, लोभी के प्रिय दाम ।
ऐसेहि भगवतरसिक के, प्रिय श्री स्यामास्याम ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय श्री स्यामास्याम, भये नैनन के कजरा ।
केलि बिलोकृत रहैं और नहिं आवै नजरा ॥
ते सावन के सूर कहूं बिरले निष्कामी ।
कहन सुनन के बहुत जगत में भक्त सकामी ॥ ६ ॥

देखे हाट बजार सब, जहँ तहँ पोति बिकाय ।
लिये जवाहर जौहरी, बिनु गाहक फिरि जाय ॥
बिनु गाहक फिरि जाय बलाहक ऊसर बरसै ।
छप्पन भोग बनाइ कहा बनचर के परसै ॥
ऐसेहि कर्मठ लोग धर्म रति बरन बिसेषे ।
भगवत रसिक अनन्य स्वादभेदी कहुं देखे ॥ ७ ॥

अनुभव बिनु जग आँधरो, वस्तु न दीखै कोय ।
मुकुर दिखाये होत का, मुख नहिं जानत जोय ॥
मुख नहिं जानत जोय, अर्थ बानी को कहिबो ।
सुनै न होइ प्रतीति, बिना देखे उर दहिबो ॥
बहु बिधि मर्दन करै नहीं चैतन्य होय शव ।
भगवत रस की बात कहा जानै बिनु अनुभव ॥ ८ ॥

काहू दई न लई कोइ विद्यमान दरसाय ।
ज्यौं मणिवारो उरग मणि लै आवै लै जाय ॥
लै आवै लै जाय, वस्तु रसिकन की ऐसे ।
निसि दिन देखत रहै कृपन निज संपति जैसे ॥
भगवत रसिक सुकेलि स्याम स्यामा अवगाहू ।
रही दृगन भरपूर भेद जानौ नहिं काहू ॥ ९ ॥

भगवतरसिक अनन्य मणि, गौर स्याम रंगरात ।
अमर कोस के धूम लौं मृगमद छोड़ न जात ॥
मृगमद छोड़ न जात गही ज्यों हारिल लकड़ी ।
चुम्बक लोह न तजै दारु पावक ज्यों पकड़ी ॥
गुन बयारि तनु लगै डिगै नहिं मनसा नगवत ।
सन्तत स्यामा स्याम धाम कीनों उर भगवत ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागर रसिक अनन्य संग, वर बृन्दावन जात।
गान बिहारी को, दरस बानी जमुना पान॥
बानी जमुना पान पुलिन पुलकावलि तन में।
अनुभव रास विलास बिहारिनि प्रगटत मन में॥
भगवत नित्य विहार प्रेम उमगन रस सागर।
कुञ्जी कुटी अभिराम भावना निरखै नागर॥ ११॥

मदनाष्टक का एक छंद और मिला।

[प्रेषक—श्रीमान् लल्ला जुझार सिंह जी, माधौपुर]

हमारे सुहृद्वर साहित्य-रसिक श्रीमान् लल्ला जुझार सिंह जी, रईस माधौपुर (छतरपुर) ने रहीम कृत मदनाष्टक का एक छन्द और भेजा है। पत्रिका के गतांक में साढ़े छह छंद प्रकाशित हो चुके हैं। इसे मिला कर साढ़े सात छंद हुए, केवल आधे छंद की और कमी है, आशा है वह भी मिल जायगा। श्री लल्ला साहब का भेजा हुआ छंद यह है:—

सरद निसि निसीथे, चाँद की रोशनाई,
सघन वन निकुंजे कान्ह बंशी बजाई।
रति, पति, सुत, निद्रा, साइयाँ छोड़ि भार्गी,
मदन सरिस भो या क्या बला आन लागी!

अधिकांश में यही छन्द 'मदनाष्टक' का प्रथम छन्द है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलदस्तये विहारी

(गतांक की पूर्त्ति)

[लेखक—श्री० देवीप्रसाद 'प्रीतम']

दोहा—हठ न हठीली कर सकै यह पावस ऋतु पाय ।
आन गाँठ घुट जात ज्यों मान गाँठ छुट जाय ॥
शैर—हठीली भी नहीं हठ मौसिमे बारिश में कर पाती ।
है घुटती आन गिरह पर बान गिरह है साफ छुट जाती ॥

दोहा—अब तज नावँ उपाव कौ आयो सावन मास ।
खेल न रहियो खेम सौं कैम कुसुम की बास ॥
शैर—लगे सावन सुहावन छोड़ दे तदबीर अब सारी ।
कदम की बू से है अब खेल तज रस केल की बारी ॥

दोहा—घन घोरा छुटवौ हरषि चली चहूँ दिश राह ।
कियो सु चैन आय जग शरद सूर नर नाह ॥
शैर—लगे चलने मुसाफ़िर उठ गया अब जग से घनघेरा ।
जरीं सुल्ताँ शरद ने आ-रिफ़ाहे आम फिर फेरा ॥

दोहा—लगत शुभग शीतल किरण निश सुख दिन अवगाह ।
माह ससी भ्रम सूर त्यों रही चकोरी चाह ॥
शैर—खुनुक किरणों से निश का सुख वह दिन ही में है पा सकती ।
चकोरी चांद के धोके है सूरज माघ का तकती ॥

दोहा—द्वैज सुधा दीधित कला वह लखि ढीठ लगाय ।
मनों अकास अगस्तिया एकै कली लखाय ॥
शैर—हिलाले द्वैज है रश्के कमर तू देख सनये रब ।
खिला है एक ही गुंचा अगस्ते अर्श में इस शब ॥

दोहा—धन यह द्वैज जहाँ लख्यौ तज्यौ द्रगन दुख दंद ।
तो भागन पूरब उग्यो अहो अपूरब चंद ॥
शैर—ज़हे यह द्वैज जिससे इश्तियाक़े आरज़ू निकला ।
तेरे ताले महेनो शर्क़ से ऐ माहरू निकला ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—विकसत नववल्ली कुसुम निकसत परिमल पाय।
परस पजारत विरह हिय बरस रहे की वाय॥
शैर—नई बेलों में कलियाँ खिल रहीं खुशबू निकलती है।
शमीमे वशगाली लग लगन की आग जलती है॥

फुटकर

दोहा—हँस ओंठन बिच कर उँचे किए निचौंहैं नैन।
खड़े अरे पिय के प्रिया लगी बिरी मुख दैन॥
शैर—लबों बिच हाथ ऊँचा कर निचौंहैं नैन से हँस कर।
पिया के मुहँ गिलौरी पुरवज़िद देने लगी दिलवर॥

दोहा—नाक मोर नाहीं ककै बार निहोरे लेह।
छुवत ओंठ पिय आंगुरिन बिरी बदन तिय देह॥
शैर—सिकोड़े नाक नट नट कर निहोरे ले रही छम छम।
छुआ उँगली अधर बीरी प्रिया मुख दे रहे प्रीतम॥

दोहा—लाल न लह पाये हरै चोरी सौहँ करैन।
शीश चढ़ै पनहाँ प्रगट कहत पुकारे नैन॥
शैर—यह चोरी छिप नहीं सकती कसम क्यों आप खाते हैं।
सुराग़ इसका ये दीदे साफ़ ही सिर चढ़ बताते हैं॥

दोहा—कत वे काज चलाइयत चतुराई की चाल।
कहे देत गुन रावरे सब गुन बिन गुन माल॥
शैर—अबस तकरीर ला हासिल कहो किस काम आती है।
यह बिन गुन माल सब गुन आप के हज़रत बताती है॥

दोहा—प्राण प्रिया हिय में बसै नख रेखा शशि भाल।
भलौ दिखायो आन यह हरि हर रूप रसाल॥
शैर—ज़बीं पर है हिलाले नाखुनों दिल पर श्री छाई।
हरी हर की ये झाँकी आपने क्या खूब दिखलाई॥

दोहा—वाही दिनतें ना मिट्यो मान कलह को मूल।
भले पधारे पाहुने है गुड़हल को फूल॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैर—उसी दिन से ज़मी है जड़ कलह का मान नित ठन कर।
भले मेहमान आये आप गुड़हल का सुमन बन कर॥

दोहा—रह्यो चकित चहुँदा चितै चित मेरो मत भूल॥
सूर उदय आये रही दृगन सांझ सी फूल॥

शैर—मेरी अक़लाप की सूरत से शशदर होके भूली है।
सुबह तशरीफ़ लाये शाम सी आँखों में फूली है॥

दोहा—तोही निर्मोही बंध्यो मोही यही स्वभाव।
बिन आये आवैं नहीं आये आव न आव॥

शैर—है वावस्ता तेरे बे महर दिल से दिल न तरसाओ।
बिन आये वह न आयेगा वह आये आयेगा आओ॥

दोहा—आये आप भली करी मेंटन मान मरोर।
दूर करहु यह देख है छला छिँगुनियां छोर॥

शैर—मनाने आप आये आइये हज़रत करम कीजे।
छला छिँगुरी किनारे का किनारे आप कर दीजे॥

दोहा—मैं तृपाय त्रय ताप सौं राख्यो हियो हमाम।
मत कबहूं आवै यहाँ पुलक पसीजें श्याम॥

शैर—यह नो हम्माम सीना तीन तापों से है गरमाया।
पसीजें श्याम घन शायद करैं इस दीन पर दाया॥

दोहा—पर्‍यो ज़ोर विपरीत रत रूपी सुरत रंधीर।
करत कुलाहल किंकनी गहैं मौन मंजीर॥

शैर—कमर वस्ता थमी विपरीत रत में सख़ ज़ोरों पर।
कुलाहल किंकनी करती है बिछिया चुप है पोरों पर॥

दोहा—बृज भाषा वरणी सबै कविवर बुद्धि विशाल।
सब की भूषण सतसई करी विहारी लाल॥

शैर—खिलाये शायरों ने गो चिमन रुच रुच के बृजवानी।
विहारी का ये गुलदस्ता है रंगीनी में लासानी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचनासिद्धान्त

[ले०—श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी]

श्री नवीनचन्द्र ने जुलाई की "सरस्वती" में—"हिन्दी भाषा और साहित्य" पर नवीन चन्द्रिका डाल कर समालोचना का नवीन सिद्धान्त प्रकट कर दिया है। हिन्दी साहित्य सेवी ही क्यों संसार के समस्त साहित्य सेवी श्री नवीन चन्द्र की कृतज्ञता मान सदा सिर झुकाये रहेंगे। आप के नवीन सिद्धान्त का सार इस प्रकार है—"इस समालोचना की जरूरत ही क्या है? ग्रन्थकार हैं और पाठक हैं (सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक प्रभृति शायद अब नहीं रहे)। दोनों आपस में निपट लेंगे। इन दोनों के बीच में एक तीसरे आदमी के कूद पड़ने की क्या आवश्यकता है? (कुछ भी नहीं, फिर भी आप कूद ही पड़े।) उपभोग है और उपभोक्ता है, ज्ञान है और ज्ञाता है (ज्ञापयिता शायद मर गया।) किसी को यह क्या अधिकार है कि वह मनुष्य को (गधे को नहीं) ज्ञान के एक निर्दिष्ट पथ पर ही चलने की आज्ञा दे?" (फिर आप ही क्यों अनधिकार चर्चा कर रहे हैं?)

अगर यही बात है तो स्वर्णकार है और ग्राहक है फिर कसौटी की क्या जरूरत है? घीवाला है और खरीदने वाला है फिर उसकी जांच के लिये रासायनिक परीक्षक की क्या जरूरत है? लेखक हैं और पाठक हैं फिर सम्पादक की क्या जरूरत है? जमीन है और घास है फिर किसी को क्या अधिकार है कि वह घास पात को उखाड़ फेंके और फूल फल के वृक्षों को बढ़ने दे? अन्धा है और कुआ है फिर किसी को क्या अधिकार है कि वह अन्धे को कुए में गिरने से रोके?

क्या श्री नवीनचन्द्र जी इन प्रश्नों के उत्तर देने की कृपा न करेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छद्म योगिनी।

[ले०—श्री० वियोगी हरि]

मंगल पाठ—

दोहा।

जाके पान किये सबै, जग रस नीरस होत।
जयतु सदा सो प्रेम रस, उर आनन्द उदोत॥

(सूत्रधार और पारिपार्श्वक का प्रवेश)

पारि—मित्र, प्रेम रस का मंगलस्तव बहुत दिनों में सुनायी दिया। आज क्या होने वाला है? क्या अब भी इस अनिर्वचनीय रस के सहृदय रसिक संसार में विद्यमान हैं? कौन पूछता है प्रेम और भक्ति के पचड़े को इस वैज्ञानिक युग में? अब तो नित नये आविष्कार हो रहे हैं। साहित्य की भी काया पलट हो चली है। पाश्चात्य आदर्श सभी बातों में स्थान पा रहा है। अधिक क्या, भारतीय नाट्यशास्त्र पर नाक भौं चढ़ाकर नवयुवकों का दल योरोपीय नाटकों की ओर बढ़ रहा है। फिर, इस प्रेम के गुणगान से क्या अभीष्ट सिद्ध होगा? मेरे जान तो यह रसराज संसार से उठ गया, तुम्हारा क्या विचार है?

सूत्र—तुमसे इस विषय में पूर्णतः सहमत नहीं हूं। इसके अधिकारी सदा से ही कम रहे हैं, साम्प्रति और भी न्यून हो गये हैं, पर सबीज नष्ट नहीं हुए हैं।

पारि—राम जाने। मुझे तो निराशा ही सूझती है। आज, प्रेमोन्मत्त नारद, शुक और सनकादिक के मधुर स्वर नीरवता में विलीन हो गये हैं। जयदेव, कर्णपूर, महाप्रभु चैतन्य देव, रूप सनातन की सुधा सूक्तियां किसके हृदय को वेधित करती हैं? सूर, तुलसी, हरिवंस, हरिदास, नागरीदास और ललित किशोरी की सरस वाणियों के सुनने सुनाने की किसे उत्कण्ठा है? हाय, आज हमारे एकमात्र जीवनाधार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेममूर्ति हरिश्चन्द्र तक को लोगों ने भुला दिया है ! कैसा दुःख का विषय है ! प्यारे हरिश्चन्द्र, तुम्हारी चन्द्रावली किसने समझी ? हृदय के प्रेमोद्गार हृदय में ही रखते, क्यों अरसिकों के आगे ऐसे अमूल्य रत्न बिखरा कर चले गये ? लोग इस अप्राकृत साहित्य को अपूर्ण और अश्लील कह कह कर हंसी उड़ा रहे हैं। क्या यह समालोचना का विषय है ? मेरी राय में, मित्र, प्रेम-साहित्य की चर्चा छेड़नी ही अनुचित है।

सूत्र—मित्र, निराश मत होओ। सद्विचार कभी सबीज नष्ट नहीं होते। ब्रजभाषा का अप्राकृत साहित्य, प्रेमोद्गार तथा प्रेमियों की कृतियां सदा रहेंगी। हम आज, उसी विस्मृत प्रेमरस का अभिनय दिखाना चाहते हैं। संभव है और बहुत संभव है, कि इसके देखने वाले बहुत कम मिलेंगे, पर क्या इससे हम अपनी उमंगों को दबा सकते हैं ?

पारि—कौन सा नाटक खेलेंगे ?

सूत्र—श्री छद्मयोगिनी।

पारि—इसका प्रणेता कौन है ?

सूत्र—ब्रज साहित्य के मधुप, राधारमण के अनन्य सेवक, हरीश्चन्द्र के अनुयायी रसिकवर वियोगी हरी।

पारि—यह नाम तो मैंने आज ही सुना। वियोगी हरी को तो कोई भी नहीं जानता। यदि नाटक अच्छा जान पड़ा तो इस लेखक से और भी नाटक लिखाये जायँ।

सूत्र—वह लेखक नहीं है, न किसी के कहने सुनने से कुछ लिख ही सकता है। उसे धन और यश का लोभ नहीं है। कोई उसे साहित्य सेवक कहे या न कहे, उसे इसकी परवा नहीं। वह मान का भूखा नहीं है। वह तो प्रेम का उपासक और रूप-माधुरी का आशिक है। उसे इतना समय ही कहां कि पुस्तकें और लेख लिख लिख कर अपनी ख्याति का ढिंढोरा पीटता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरे ? वह मनमोजी जो लिखता है अपनी मौज के लिये लिखता है। क्या तुमने उसकी यह दर्पोक्ति नहीं सुनी है—

दोहा

सब तें न्यारे रहत हैं, हमैं न जानत कोय।
जानि सकेगो सोइ हमैं, जो दृढ़ प्रेमी होय॥
जुगलरूपरस रसिक हम, हरी वियोगी नाम।
अनुगामी हरिचंद के, सेवैं स्यामा स्याम॥

पारि—अहा ! क्या अब भी ऐसे ऐसे 'धूल भरे हीरे' पड़े हुए हैं! मित्र अवश्य उस रसिकवर की रची हुई छद्मयोगिनी नाटिका खेलनी चाहिए। लोग उसे पसंद करें या न करें इससे क्या ! हरि कीर्तन ही सही।

सूत्र—सत्य है, हरिकीर्तन ही तो मानव जीवन का सार है। देखो, देवर्षि नारद जी भी हरिकीर्तन करते हुए अंतरिक्ष से उतर रहे हैं। चलो, हम लोग भी तयारी करें।

(दोनों जाते हैं)

इति प्रस्तावना।

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—महाराज वृषभानु का ग्राम बरसाना

(देवर्षि नारद हरि कीर्तन कर रहे हैं।)

पद

जय गोविन्द हरे,
बोल हरे, जय बोल हरे। जयगोविन्द०
जय नँदनंदन, दुष्टनिकंदन,
केशव बोल हरे। जय गोविन्द०
श्री राधाधव, जय श्यामाधव,
माधव बोल हरे। जय गोविन्द०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयति मुरारे, गिरिवरधारे,
प्यारे बोल हरे। जय गोविन्द०
ललित त्रिभंगी, रतिरसरंगी,
प्यारे बोल हरे। जय गोविन्द०
जय ब्रज वल्लभ, गोपी वल्लभ,
वल्लभ बोल हरे। जय गोविन्द०
रुक्मिणि वल्लभ, वल्लभ वल्लभ,
वल्लभ बोल हरे। जय गोविन्द०
कुंज विहारी, रसिक विहारी,
प्रीतम बोल हरे। जय गोविन्द०
घट घट वासी, आनँदरासी,
अनुपम बोल हरे। जय गोविन्द०
भव भय भंजन, खलदल पुंज
विभंजन बोल हरे। जय गोविन्द०
जनदृग अंजन, निखिल निरंजन
रंजन बोल हरे। जय गोविन्द०
श्याम हरे घन श्याम हरे जय
हरि हरि बोल हरे। जय गोविन्द०
राम हरे अभिराम हरे जय
हरि हरि बोल हरे। जय गोविन्द०
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

आज मुझे धन्य है, जो व्रज मंडल में, श्री कृष्ण की विहार भूमि में हरि कीर्तन करता हुआ अनिर्वाच्य आनंद का अनुभव कर रहा हूं। चौदह लोक घूम डाले, कहीं भी मन स्थिर न हुआ। इस भूमि में पैर रखते ही चित्त शान्ति सागर में डूब जाता है। यहां की प्रकृति ही कुछ और देखी। वन-उपवन, नदी नाले, लतापता सभी हरिमय दिखाई देते हैं। आनंद की वर्षा सदा ही पीयूषधार बरसाती रहती है। अद्भुत मोहिनी है, अपूर्व बसीकरन है। जी चाहता है, इन ललित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लताओं के साथ एक रूप होकर रसिकेश्वर श्यामसुन्दर के कर-पल्लवों का स्पर्श करूँ, कलित कली बन कर अलकावली में गूँथा जाऊँ, रज होकर चंद्र मुख मंडित स्वेद-विन्दुओं में मिल सुख लूटूं!

अहा! यह सुख अनन्य भक्तों को छोड़ किसे मिला है? कृपा कटाक्ष के आगे मोक्ष का सुख तुच्छ है! मंद मधुर मुसक्यान के सामने स्वर्ग के विलास कुछ भी नहीं। रासलीला का अपूर्व रस मिल जाने पर निर्वाण की नीरस बातें किसे सुहायँगीं? यह सुख, यह रस, यह अनिर्वाच्य आनंद तभी मिलता है, जब वृन्दावन-बिहारी की कृपा होती है। किंतु विना ब्रज विहारिणी के निकुंज बिहारी की कृपा दुर्लभ है।

अनाराध्य राधा पदाम्भोजयुग्म
मनाश्रित्य वृन्दाटवीं तत्पदाङ्काम
असंभाष्य तद्भाव गंभीर चित्तान्
कुतः श्याम सिन्ध्योः रसस्यावगाहः

भक्ति रहस्य में अत्यन्त गोपनीय और उत्कृष्ट कान्ताभाव ही माना गया है। यह भाव माधुर्य्य सागर का सुधासार है, अप्राकृत शृंगार का आभूषण है तथा उपासना काण्ड का परात्पर रहस्य है। इसके सबी अधिकारी नहीं हैं। इस रस के पान करने के लिये जीव को निज पुरुषार्थ छोड़ कर, खड्ग की धार पर चढ़ कर, परम पुरुष, नित्य किशोर, त्रिभुवनैक सुंदर श्री कृष्ण की कान्ताभाव से सेवा करनी पड़ती है। इस रस के पाने के अर्थ शिव जी को भी गोपी-वेष धारण करना पड़ा था—

नारायण ब्रज भूमि को, को न नवावे माथ।
जहाँ आय गोपी भये, श्री गोपेश्वर नाथ॥

मैं भगवान की सब लीलाएँ देख चुका। ऐश्वर्य देखा, माधुर्य्य देखा, सब रस देखे, पर रास रस और नित्य विहार देखने की उत्कण्ठा बनी ही रही, आज तक पूरी न हुई। उस रस के पान करनें की तृषा बढ़ती ही जा रही है। अत्यंत विरहासक्तिवश विदेह-दशा सी हो रही है। देखूँ, कब श्री निकुंजेश्वरी राधिका जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपाकटाक्ष करती है। मन चाहता है कि इस "गह्वर वन" की सघन कुंजों में छिपकर नित्य बिहार देखता हुआ अगाध आनन्द लूटता रहूं। 'मोर कुटी' में मयूर बनकर युगल-घन-घटा की ओर निहारता हुआ नाचता रहूं!

(गाते हैं।)

दादरा

प्रीतम प्यारी दरस मोहि दीजै ॥

जयति श्री राधा, हरौ सब बाधा,
जगत इक आस तिहारी, कृपा अब कीजै।
—दरस मोहि दीजै ॥

चरन रज चाहूं, सबै सुख बाहूं,
रहस-रस पावै भिखारी, विमल जसु लीजै।
—दरस मोहि दीजै ॥

जुगल छवि ध्याऊं, सदा गुन गाऊँ;
रसिकवर कुंजबिहारी, अधर रसु पीजै।
—दरस मोहि दीजै ॥

(प्रेमावेश में नाचते नाचते मूर्छित हो गिर पड़ते हैं।)

(शुकदेव जी का प्रवेश)

शुक—(मूर्छित नारद जी को देखकर) ऐं! यह क्या? एक ओर वीणा पड़ी है, दूसरी ओर करताल। देवर्षि नारद क्यों मूर्छित हो गये हैं? नेत्रों से आँसुओं की अविरल धारा लगी है, शरीर पुलकायमान हो रहा है!

(जल छिड़क कर जगाते हैं।)

नारद—(कंपित स्वर से) राधाकृष्ण, राधाकृष्ण, राधाकृष्ण............

शुक—महाराज! यह क्या दशा हो रही है? कहिये तो—

नारद—(नेत्र खोलकर) शुक! प्यारे शुक! भले आये—

प्रीतम प्यारी, दरस मोहि दीजै

इत्यादि गाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक—भगवान् ! इतने व्याकुल क्यों हो रहे हैं ? परम कृपामयी श्री निकुंजेश्वरी दर्शन देकर गोप्य रास रस प्रत्यक्ष करेंगी। धीरज धरिये।

नारद—रसिक पुंगव शुक ! तुम्हारे दर्शन से मुझे निश्चय होगया कि वह अखंड रस अब दूर नहीं। धन्य ! तुम्हें, जो सदा ही उस रस-सिंधु में निमग्न रहा करते हो। श्री निकुंजेश्वरी तो तुम्हारी परमगुरु हैं। तुम्हारी गुरु-मर्यादा को धन्य है। समस्त श्री मद्भागवत कह डाली, पर हृदयस्थ गुरु-रूपिणी श्री राधिका जी का नामोच्चारण मुख से न किया। विद्याभिमानी इस रहस्य को कैसे समझ सकते हैं ? अहा !

धन्य धन्य शुकदेव ! रसिक पुंगव रस धारी।
कृष्ण रसासव-मत्त मधुप वृन्दावन चारी॥
नित किसोर लावन्य ललित लट लहरैं न्यारी।
परमहंस हरि अंस भागवत भावुक भारी॥
सम संयम यम नियम भक्ति ज्ञानादि प्रचारक।
परम कारुनिक कृपारूप जग जन उद्धारक॥
धन्य अनन्य अनूप राधिका रमन उपासी।
कांता भाव विभोर कुंज रस रङ्ग विलासी॥

रसिकवर शुक ! किस प्रकार मैं निकुंज-माधुर्य देख सकूंगा ? क्या मेरा ऐसा भाग्य है ?

शुक—देवर्षि, भला आप निकुंज-माधुर्य के अधिकारी न होंगे, तो फिर कौन होगा ? आप महा भाग हैं। आप को भगवान ने स्वयं श्रीमुख से वैष्णव धर्मसार पांचरात्र सुनाया था। चलिये, आज नन्दनन्दन का छद्म देखें।

नारद—एँ ! क्या भगवान् भी छद्म वेष धारण करते हैं ? भाई, कैसा छद्म, किसके लिये और क्यों ?

शुक—श्री सर्वेश्वरी की रूपमाधुरी पान करने के लिये, आप क्या क्या छद्म नहीं धारण करते। आज, आप योगिनी का रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण कर श्रीप्रिया जी से योग सम्बन्धी वादविवाद करेंगे। पर प्रेम के आगे योग ठहर न सकेगा। प्रिया जी की ही जीत रहेगी।

नारद—अवश्य! यह लीला किस प्रकार देखने को मिलेगी?

शुक—हम लोग सारिकाओं का रूप धारण कर गह्वर वन की लताओं पर बैठ जायँगे। वहीं से प्रिया प्रीतम के प्रेमालाप को सुनेंगे, रूपमाधुरी का पान करेंगे, और नित्य विहार का आनन्द लूटेंगे।

नारद—धन्य! शुक, धन्य! मैं सदा तुम्हारा आभारी रहूंगा। सत्य है, बिना सन्तों की कृपा के यह रस दुर्लभ है।

अहा—

> असंभाव्य तद्भाव गंभीर चित्तान्
> कुतः श्यामसिंधोः रसस्यावगाहः।

और फिर संत भी कैसे, भाव में भींगे हुए, रस में रँगे हुए, महान् भागवत, महान् भावुक।

शुक—भगवन्! शीघ्रता कीजिए। श्री सर्वेश्वरी सहेलियों सहित उपवन में आ विराजी हैं। चलिये, दर्शन कर नेत्रों को तृप्त करें।

नारद—बहुत अच्छा।

(कुंज कामिनी और मान मंजरी नामक सारिकाओं का रूप धारण कर नारद और शुकदेव उपवन को जाते हैं।)

द्वितीय दृश्य

स्थान—नंदगांव

(श्री कृष्ण एकांत में कुछ सोच रहे हैं।)

श्रीकृष्ण—(स्वगत) मेरे पूर्णावतार के अगम्य रहस्यों को कितनों ने समझा। अधिक से अधिक, लोगों की ऐश्वर्य तक पहुँच है। वे चमत्कार देखने में ही अहोभाग्य मानते हैं। वे यह नहीं जानते कि ऐश्वर्य केवल मेरी एक कला का प्रसार है। मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णता तो माधुर्य में ही है। इस माधुर्य के अनुभवी संसार में विरले हैं। मेरा माधुर्य, मेरा शृङ्गार अप्राकृत है, दिव्य है। इस गोप्य रस के अधिकारी दिव्य चक्षुओं से मेरे नित्य विहार को देख सकते हैं।

प्रिया राधिका मेरी आह्लादिनी शक्ति है। मुझमें और उनमें लेशमात्र भी अंतर नहीं। सदा से एक रूपता है। हम दोनों परस्पर चंद्र-चकोरी हैं, घन-मयूर हैं, जल-मीन हैं, लोह-चुम्बक हैं, दो तन एक प्राण हैं। इसी आह्लादिनी शक्ति के साथ मैं नित्य विहार किया करता हूं। यहां सूर्य-चंद्र, पृथ्वी-पवन, जल-आकाश, प्रकृति-काल किसकी भी पहुंच नहीं। मेरे विहार में सदा अमृत की वर्षा होती है। यहां परमहंस रूपमाधुरी में मतवाले होकर केलि किया करते हैं। शिव, नारद, शुक, सनकादिक कांताभाव से हम दम्पति की टहल करते हैं। श्रुति की ऋचाएँ गोपिका वेष धारण कर रास रस के आनन्द को लूटती हैं। यहां केवल प्रेमदेव का साम्राज्य है। प्रेमलच्छना पराभक्ति के पूर्णाधिकारी जन मुझ निर्गुण, निराकार परब्रह्म को बांधकर मन माना नाच नचाते हैं। मैं उनके अधीन होकर पीछे पीछे दास की नाईं डोला करता हूँ। मेरी माधुर्य-महिमा जैसी कुछ गोपियों ने जानीं, कोई और क्या जानेगा? गोपियाँ प्रेम मंदिर की धुजाएँ हैं। इन्होंने मुझे अपने वश में कर लिया है। जैसा वह कहती हैं, मुझे करना पड़ता है।

मोहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं! नाचता हूं, गाता हूँ, जैसे बने तैसे रिझाता हूं। कैसा आश्चर्य है! मेरी भ्रकुटि के संकेतमात्र से ब्रह्मा, विष्णु, महेश नाचा करते हैं, पर मैं अपने अनन्य भक्तों के रुख पर नाचता हूं। मैं इन सर्वत्यागी एकान्ती भक्तों से कदापि उऋण नहीं हो सकता। इनकी महिमा वर्णन करने की मुझ में भी शक्ति नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहा ! प्यारी गोपियो ! तुम्हारी लगन अपूर्व है। तुमने मेरे लिये क्या नहीं त्याग दिया। मेरे इस कथन की तुम्हीं ने यथेष्ट पुष्टि की कि—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज

अब मैं तुमसे पल भर भी विलग नहीं हो सकता।

(प्रेमावेश में गोपियों की प्रेम महिमा गाते हैं।)

पद—धन्य धन्य व्रज गोप कुमारीं।
प्रेम धुजा रस राज पुजारिनि प्रीतम हृदय दुलारीं॥
नित्य विहार अनन्य रसिकनी मेरी परम पियारीं।
हम तुम में नहिं भेद रञ्चहरि, बलिहारीं, बलिहारीं॥

संसार में कौनसी ऐसी मोहिनी है, जो तुम्हें लुभा सकता है ? तुमने मोक्ष सुख को भी तिनके के समान मानकर छोड़ दिया है। तुमने भक्ति के आगे ज्ञान को पछाड़ दिया है, प्रेम के सामने नेम को मटियामेट कर दिया है। तुमने सिद्धकर दिखाया है कि प्रेम ही परमात्मा है।

नेपथ्य में—यह आपका भ्रम है।

श्री कृष्ण—एँ ! भ्रम कहने वाला कौन ?

(ब्रह्मा का प्रवेश)

ब्रह्मा—(प्रणाम करके) नाथ ! दास की धृष्टता क्षमा कीजिए, जो मैंने एकांत में आपकी प्रेमवार्ता में विक्षेप डाला। मैं आपकी अनन्त महिमा को नहीं जान सकता। आपकी माया से भला कौन अछूता बचा है। आपकी अनन्त रहस्यमयी लीला को वही समझ सकता है, जिस पर आपकी सहज कृपा हो गयी हो। मैं रजोगुण से विमूढ़ अहंकारी जीव आप की लीलाओं को प्राकृत समझ कर भ्रम में पड़ जाता हूँ। हे जगद्गुरो ! हम लोगों का अज्ञानसंभव भ्रम केवल आप ही दूर कर सकते हैं। मैं गाय बछड़े चुराकर एकबार आप की परीक्षा ले चुका हूँ। किंतु जीव का बार बार भूलने का स्वभाव ही है। कल एक लीला देखकर मुझे फिर आश्चर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ और वह भ्रम किसी भांति दूर नहीं हो सका। आज्ञा हो तो निवेदन करूँ।

श्री कृष्ण—पितामह ! आप अपने भ्रम द्वारा जगत में मेरे रहस्यों को प्रकट करना चाहते हैं। चतुरानन ! यह सब आपकी चतुराई है। कहिये, क्या पूछना चाहते हैं ?

ब्रह्मा—श्याम सुन्दर ! क्या यह अनुचित नहीं है कि गँवार गोपियाँ मान कर करके आपके कर कमलों से अपने चरण दबाती हैं। हरे कृष्ण ! ऐसा उनमें कौनसा परम तत्व धरा है कि आप उनके पीछे २ दास की नाईं घूमते हैं, जो वह कहती हैं करते हैं। जिस परब्रह्म तक बड़े बड़े तपोनिष्ट ऋषिमुनि भी नहीं पहुँच सकते, जिसका वेदादि निरूपण नहीं कर सकते, जो गुणातीत और अगोचर है, उसे ये गँवार भ्रकुटि के बल नचाती हैं, आश्चर्य नहीं तो क्या है ! उनके रूठ जाने पर आप मनाने के लिये हाथ जोड़ते हैं, पैर पड़ते हैं, हा हा करते हैं, सदा आप श्री मुख से उनका गुणानुवाद करते हैं। उन्होंने ऐसा क्या तप किया, क्या पुराय संचय किया, आज तक मेरी समझ में नहीं आया। अभी आप कह ही रहे थे कि उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया है कि प्रेम ही परमात्मा है। हे सर्वेश्वर ! यह आपका भ्रम नहीं तो क्या है ?

श्री कृष्ण—पितामह ! यह भ्रम नहीं, बिल्कुल सत्य है। मेरी सामर्थ्य नहीं कि मैं उन प्रेमरूपा गोपिकाओं के चित्त को किसी भी प्रकार डिगा सकूं। मैं उनकी सब तरह से परीक्षा ले चुका, वे कभी प्रेम पंथ से एक पग भी पीछे नहीं हटीं। आज भी, मैं एक छद्म से अपनी हृदयेश्वरी परम प्यारी राधिका की प्रेम परीक्षा लेने जा रहा हूं। देखूं—

ब्रह्मा—भगवन् ! वह कौनसा छद्म होगा ?

कृष्ण—योगिनी का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मा—योगेश्वर ! यह तो आप का सहज रूप है, छद्म नहीं। पर योगी न होकर योगिनी क्यों बनेंगे ?

कृष्ण—जाति के प्रेम भाव से। वैसे तो 'मैं' और 'राधिका' एक रूप हूं। अर्धनारी नटेश्वर हूं, परन्तु मानवी चेष्टा के अनुसार मुझे लीला करनी है।

ब्रह्मा—अखिल ब्रह्माण्ड के सूत्रधार ! छद्मयोगिनी बन कर आप श्री राधिका जी की किस प्रकार प्रेम परीक्षा लेंगे ?

कृष्ण—योग की अगाध महिमा गा कर प्रेम को परास्त करूँगा।

ब्रह्मा—योग, वेदान्त के आगे प्रेम नेम ठहर ही क्या सकता है, तिस पर वह गँवार गोपियां आप से वाद विवाद कर ही क्या सकती हैं ?

कृष्ण—नहीं पितामह ! प्रेममूर्त्ति राधिका के साथ शास्त्रार्थ करना हँसी खेल नहीं है। मुझे जहां तक जान पड़ता है, मैं इस विषय में अवश्य हार जाऊँगा। प्रेम की ही जीत होगी। छिप कर आप भी आज के छद्म को देख सकते हैं। इसी से आप की शंकाओं का समाधान होगा।

ब्रह्मा—देवाधिदेव ! आप ही की कृपा से मेरा अज्ञान दूर होगा।

कृष्ण—अच्छा, अब मैं योगिनी वेष धारण कर गह्वर वन की कुञ्जों में आसन मार कर बैठूँगा और प्रिया जी के साथ योग शास्त्र पर विवाद करूंगा, इच्छा हो, आप भी चलिए।

ब्रह्मा—जो आज्ञा। मैं भ्रमर बना जाता हूं, रसज्ञ भ्रमर के रूप से आप की छद्म लीला देखूंगा।

कृष्ण—(स्वगत) प्रिया जी के सामने तुम्हारा सब कपट खुल जायगा, देखो, कितनी उलटी सीधी बातें सुननी पड़ेंगी। (प्रकट) अच्छा, चलिये।

(ब्रह्मा जाते हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—बरसाने का मार्ग

(श्री कृष्ण योगिनी के रूप में अलख जगाते जा रहे हैं।)

(वीणा के स्वर में गाते हैं।)

श्रीकृष्ण—मैं बाला जोगिनि या ब्रज में घर घर अलख जगाऊँ।
जोग जुगति सौं सहज निरञ्जन आतम जोति दिखाऊँ॥
चौरासी आसन साधूं यम नयम धारना ध्याऊँ।
निर्विकल्प निर्बीज निरंतर सिद्ध समाधि लगाऊँ॥
चार वेद षट शास्त्र सार को अनुभव मैंने पायो।
ज्ञान भक्ति वैराग्य छानि कै जोगिनि भेष बनायो॥
सदा फिरूँ अलमस्त अकेली लूटी आनँद रासी।
कांपत काल, सिद्धि सब ठाढ़ीं, मुक्ति भयी मम दासी॥
शिव, सनकादिक नारद शुक से चेला मैंने कीन्हें।
आतम ज्ञान सिखाय सबन के त्रिविध ताप हर लीन्हें॥
है ऐसो कोई या ब्रज में जोग जुगति जो सीखै।
छूटै जरा जंजाल सहज ही रूप आपनो दीखै॥
मैं बाला जोगिनि या ब्रज में घर घर अलख जगाऊँ।
जोग जुगति सौं सहज निरंजन आतम जोति दिखाऊँ॥

अलख ! खोल दे पलक—

सारे गाँव में घूमते घूमते दोपहर बीत गये, कोई भी योग का अधिकारी न मिला। गँवार ग्वालों के गाँव में योग की चर्चा करना वैसा ही है, जैसे बहरे के आगे राग रागिनी अलापना। शिव, शिव ! जहाँ देखती हूं तहाँ लोग व्यौपार धंधे में फँसे हैं, परमात्मा की ओर किसी का भी चित्त नहीं है। सब घोर निद्रा में सो रहे हैं। पुत्र कलत्र को ही सवस्व मान कर ऐसे निश्चित बैठे हैं, मानों इन पर कभी काल झपटेगा ही नहीं। कैसी अज्ञानता है, कैसा घोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोह है। यह नहीं जानते कि हम सब काल कलेवा हैं। आज एक की बारी है, तो कल दूसरे की। यह संसार सराय है। मुसाफ़िर आते जाते रहते हैं। ज़रा गफलत हुई कि जनम भर की कमाई से हाथ धो बैठे। सम्हल जाओ, जाग उठो, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है—

मात नहीं, तेरा तात नहीं, औ भ्रात नहीं, कोइ सगा यहां।
जाग मुसाफ़िर गाफ़िल क्यों है, धन दौलत में पगा यहां॥
बँधा है आसा की डोरी से फिकर का मारा घूम रहा।
जाग मुसाफिर काल बली तेरे सीस पै कैसा नाच रहा॥
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे ज्ञान खजाना लूट रहे।
जाग मुसाफ़िर सुमर हरी को प्रान तेरे अब छूट रहे॥
जनम दुःख औ जरा दुःख है मरन दुःख फिर चौरासी।
जाग मुसाफ़िर सुमर हरी को जो सत चित आनंद रासी॥

अलख! खोल दे पलक—

(सामने के उपवन को देख कर)

अहा! बड़ा ही रमणीक उपवन है। एकान्त भी है। यहीं आज अपने राम रमेंगे। क्या ही सघन कुंज है, समीप ही जलाशय भी है। हम योगियों के लिए ऐसे ही रम्य और एकान्त स्थान उपयुक्त हैं। इसी कुंज की छाया में चौकी पर सिद्धासन लगा कर समाधि लगाऊँगी।

(चौकी पर योगिनी ध्यानावस्थित बैठ जाती है।) [क्रमशः]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

का

चतुर्थ अधिवेशन, छपरा

प्रथम-दिवस

देशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन आश्विन शुक्ल १५, (ता० ५ अक्तूबर) को आरम्भ हुआ। सम्मेलन के लिए छपरा कचहरी-स्टेशन के निकट खूब बड़ा, सुन्दर किन्तु सादा सभा मण्डप बनाया गया था। अधिवेशन के आरंभ का समय १२-३० बजे निश्चित था, किन्तु कार्य्यारम्भ ठीक एक बजे से हुआ। मञ्च पर विशेष उल्लेखयोग्य व्यक्ति इस प्रकार थेः—मलयपुर निवासी द्वादश अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन तथा प्रथम विहार प्रादेशिक सम्मेलन के सभापति पं० जगन्नाथ प्रसाद जी चतुर्वेदी, विहार के सुप्रसिद्ध नेता श्रीमान् राजेन्द्र प्रसाद जी, बा० जगतनारायण लाल जी, पटना, अखौरी गोपी किशोर लाल जी बी. ए. मुजफ्फरपुर, रायसाहेब राजेन्द्र प्रसाद जी पटना, काशी के प्रसिद्ध असहयोगी नेता अध्यापक जे. बी. कृपलानी, पटना के बा० देवकी प्रसाद सिंह जी एम. ए., बी. एल., एम. एल-सी, आरा के बा० व्रजनन्दन सहाय जी वकील, मनोरञ्जन-सम्पादक पं० ईश्वरी प्रसाद जी शर्मा, पाण्डेय सत्यनारायण जी शर्मा, बा० शुकदेव सिंह जी, हिन्दू विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र के अध्यापक श्रीयुत फूलदेव सहाय जी वर्मा, एम-ए., गया के श्री मन्नूलाल पुस्तकालय के संस्थापक श्रीयुत सूर्य्यप्रसाद जी महाजन, मसौढ़ी (पटना) के मौलवी अब्दुल जलील, मुज़फ़्फ़रपुर के मौलवी लतीफ हुसैन, बा० ज्ञानचन्द सोन्धी बी. ए., वैष्णव पुरुषोत्तमदास जी, पं० मथुरा प्रसाद जी दीक्षित,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'विशारद' जी, बी. वी. कालिज के गणित के अध्यापक बा० रामेश्वर प्रसाद जी वर्मा, एम. ए., बी. एल., बा० सतरञ्जन प्रसाद जी मुन्सिफ, पं० रामचन्द्र मिश्र जी मुन्सिफ, पटना; बा० राजकिशोर जी सवजज, स्थायी-समिति के प्रधान-मंत्री श्रीयुत रामधारी प्रसाद जी 'विशारद', सहकारी मंत्री श्री राघव प्रसाद सिंह जी तथा पं० चन्द्रमाराय जी विशारद; विहार के प्रसिद्ध असहयोग प्रचारक ब्रह्मचारी रामरत्न जी, गान्धी कुटीर मलखाचक के अध्यक्ष बा० राम विनोद सिंह जी, नवयुवक कवि बा० मनोरञ्जन प्रसाद जी आरा, प्रभृति बाहर से आए हुए तथा स्वागत-समिति के अध्यक्ष बा० लक्ष्मी प्रसाद जी, वकील; छपरा के लब्धप्रतिष्ठ रईस एवं स्वागतसमिति के उप-सभापति बा० जगन्नाथ शरण जी, वकील; बा० महेन्द्र प्रसाद जी, प्रधान मंत्री स्वागतसमिति तथा स्वागत-समिति के उपमंत्री पटना कालिज के अर्थशास्त्र के अध्यापक बा० सांवलिया विहारी लाल जी वर्म्मा, एम-ए., बी. एल., महन्त जानकी वल्लभ शरण जी, बा० मथुरा प्रसाद जी, बा० नारायण प्रसाद जी, बा० रामानन्द सिंह जी, बाबा दामोदर दास जी, बा० माधव सिंह जी, बा० रामनारायण लाल जी प्रधानाध्यापक दरभंगा नौर्थब्रुक स्कूल, पं० भरतमिश्र जी आदि आदि सज्जन उपस्थित थे।

सम्मेलन के मनोनीत सभापति पाण्डेय सकलनारायण जी शर्मा काव्य, सांख्य, व्याकरणतीर्थ, विद्याभूषण तथा कलकत्ता संस्कृत कालिज के अध्यापक एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी के व्याख्याता, स्वागत समिति के अध्यक्ष तथा पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी के साथ ठीक एक बजे सभा में आए। लोगों ने खड़े होकर इनका स्वागत किया। सभामण्डप कार्य्यारम्भ के पूर्व ही खूब भर गया था। उपस्थिति लगभग २०० के थी। सर्व प्रथम पांच बालकों ने बाबू जगन्नाथशरण जी द्वारा रचित मङ्गल-गान किया। इसके बाद बा० जगन्नाथशरण जी ने स्वयं स्वरचित स्वागत कविता पढ़ी। इसके बाद छपरा के श्रीयुत मनोरञ्जन सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब डिपुटीकलक्टर ने बंगाली भाइयों की ओर से आगत सज्जनों का स्वागत हिन्दी में, व्याख्यान देते हुए किया। आपके बाद बाबू मनोरञ्जन प्रसाद जी ने स्वरचित 'राष्ट्रभाषा गौरव', श्री बलदेव प्रसाद जी अग्रहरी, छपरा ने हिन्दी-सम्बन्धी गान तथा मुज़फ्फ़रपुर के पांडेय रामावतार शर्मा (विद्यार्थी) ने गान एवं कविताएं पढ़ी। तत्पश्चात स्वागत-समिति के अध्यक्ष, अनेक नाटकों के लेखक बा० लक्ष्मीप्रसाद जी, वकील ने अपना भाषण पढ़ना आरम्भ किया। आप इतने वृद्ध हो गए हैं कि बड़ी कठिनाई से चल फिर सकते हैं तथा कुछ पढ़ लिख सकते हैं, तो भी हिन्दीप्रेम ने इन्हें विवश किया और लगभग पौन घन्टे तक खड़े होकर अपना भाषण पढ़ते रहे। आपका भाषण, मनोरञ्जक, शिक्षाप्रद एवं उत्तम था। सारन का महत्व दिखलाते हुए आपने अपने भाषण में विहार में हिन्दी की दशा का दिग्दर्शन कराया तथा 'विहारी हिन्दी' कह कर विहार को लाञ्छित करने वाले महाशयों को युक्तियों से मुँह तोड़ उत्तर दिया तथा यह भी बतलाया कि किस प्रांत के लेखक प्रान्तीयता के पंजे से निकले हुए हैं और अशुद्धियां नहीं करते। अन्त में आपने स्वागत करते हुए मनोनीत सभापति के निर्वाचन का प्रस्ताव उपस्थित करने के लिए श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी से अनुरोध किया।

तदनुसार चतुर्वेदी जी ने सभापति के निर्वाचन का प्रस्ताव उपस्थित करते हुए इनकी योग्यता तथा विशाल पाण्डित्य का परिचय लोगों को दिया। आपके हास्यपूर्ण भाषण के समय बराबर उपस्थित जनता हँसती ही रही। तदन्तर बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने पटना, पं० ईश्वरी प्रसाद जी शर्मा ने आरा, पं० पुरुषोत्तम दास जी वैष्णव तथा अखौटी गोपी किशोर लाल जी ने मुजफ्फ़रपुर, बा० फुलदेव सहाय जी वर्मा ने छपरा तथा बा० देवकीप्रसाद सिंह जी एम. एल. सी. ने डाल्टनगंज की ओर से इस प्रस्ताव का समर्थन किया। तत्पश्चात सभापति महोदय ने करतलध्वनि में सभापति का आसन ग्रहण किया और छपरा के बा० मथुरा प्रसाद जी ने सभापति एवं कुछ अन्य सज्जनों को पुष्प मालाएँ पहनाईं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद सभापति महोदय उठे और वेदध्वनि से सभा-मण्डप को गुंजाते हुए अपना भाषण आरम्भ किया। आपके भाषण में लगभग डेढ़ घन्टा समय लगा। स्थान स्थान पर आपके भाषण से आपकी गंभीरता, आपकी विद्वता तथा अपरिमेय योग्यता का पता लगता है। अपने भाषण में आपने साहित्य की व्याख्या स्वतन्त्र रूप से करते हुए साहित्य के सभी अँगों का पर्य्यवेक्षण किया और विहार में वर्तमान हिन्दी की दशा का विशद रूप से विवेचन किया, आपके भाषण से लोग बहुत संतुष्ट हुए।

सभापति के भाषण के पश्चात स्वागत-समिति के उपमंत्री श्रीयुत बा० सांवलिया विहारी लाल जी वर्मा एम. ए., बी. एल. ने निम्न सज्जनों के आए हुए तार और पत्र पढ़े:—

द्वितीय प्रादेशिक सम्मेलन के सभापति सूर्यपुराधीश राजा राधिका रमणप्रसाद सिंह जी, तृतीय प्रादेशिक सम्मेलन के सभापति बा० शिवनन्दन सहाय जी, श्रीयुत बा० बदरीनाथ जी वर्मा, प्रयाग विश्वविद्यालय के इतिहास के व्याख्याता श्रीयुत वेणीप्रसाद जी एम.ए., सेठ गोविन्ददास जी, जबलपुर, बा० गोकुलानन्द प्रसाद जी वर्म्मा, भागलपुर, पं० नागेश्वर प्रसाद सिंह जी शर्म्मा (लाल बाबू) संरक्षक, 'तरुण भारत,' आदि। इसके बाद रात्रि में 'भारत-रमणी' नाटक के खेले जाने की तथा दूसरे दिन प्रातः विषय-निर्धारिणी-समिति की बैठक की सूचना देते हुए सभापति महोदय ने प्रथम दिवस का कार्य समाप्त किया।

विषय-निर्धारिणी-समिति

दूसरे दिन प्रातः साढ़े आठ बजे से विषय-निर्धारिणी-समिति की बैठक आरंभ हुई और लगभग साढ़े दस बजे समाप्त हुई।

शुद्ध भाषा भाषण

इसके बाद प्रतिनिधियों के मनोविनोदार्थ शुद्ध-भाषा-भाषण का आयोजन किया गया। यह निश्चित हुआ था कि जो इसमें बोलना चाहें वे केवल शुद्ध हिन्दी, संस्कृत एवं प्राकृत शब्दों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ही व्यवहार करें, फारसी, अर्बी के शब्दों का व्यवहार न करें। इसमें लगभग २५ सज्जन सम्मिलित हुए, उर्दू, फ़ारसी तथा अन्य भाषाओं के शब्दों के व्यवहार पर खूब हँसी होती थी। इससे लोगों का बड़ा मनोरंजन हुआ।

द्वितीय दिवस

द्वितीय दिवस का कार्य्यारम्भ ठीक १ बजे हुआ। आज भी उपस्थिति सन्तोषजनक थी। आज सभामञ्च पर अखिल भारतवर्षीय सप्तम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति, साहित्याचार्य्य श्रीमान् पं० रामावतार जी शर्म्मा एम. ए., श्रीयुत बा० कालिका प्रसाद जी बी. ए., बी. टी., बा० गोकर्णसिंह जी, 'शान्ति' सम्पादक पं० अशर्फी मिश्र जी, 'देश' के सहायक सम्पादक पं० पारसनाथ जी त्रिपाठी भी उपस्थित थे।

सभापति महोदय के आसन ग्रहण कर लेने पर उनके प्रिय पुत्र ने मङ्गलाचरण किया। उसके बाद बा० मनोरंजन प्रसाद जी ने स्वरचित 'विहार-गौरव' गान गाया।

तत्पश्चात् सप्तम अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति, साहित्याचार्य्य पं० रामावतार जी शर्म्मा एम. ए., ने 'हिन्दी साहित्य की उन्नति' विषय पर अपना विद्वतापूर्ण भाषण दिया। आपने अपने भाषण में हिन्दी साहित्य की त्रुटियों तथा अभावों पर पूरा प्रकाश डाला।

तदनन्तर प्रस्तावों की बारी आई और स्थायी समिति के संगठन सम्बन्धी प्रस्ताव को छोड़ कर सभी प्रस्ताव केवल एक घन्टे के भीतर पास हो गए। सम्मेलन द्वारा इस बार केवल ७ प्रस्ताव स्वीकृत हुए। सभी प्रस्ताव काम के थे। एक भी प्रस्ताव इनमें बेकार अनुनय विनय तथा प्रार्थना का नहीं था। इसके बाद 'सौंदर्योपासक' तथा 'लालचीन' के लेखक श्रीयुत बा० ब्रजनन्दन सहायजी ने अपना "मैथिल कोकिल विद्यापति का हिन्दी में स्थान" विषयक लेख पढ़ा। यह साहित्यिक लेख बड़ी ही विद्वता से लिखा गया था। आपके लेख पाठ से लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद अखौटी बा० सहदेव सहाय सिंह वर्म्मा तथा पाण्डेय रामावतार शर्म्मा (विद्यार्थी) ने अपने मनोरञ्जक अनुप्रासयुक्त लेख पढ़े। इन लेखों से लोगों का मनोविनोद खूब ही हुआ। स्वागत-समिति के पास बहुत से अच्छे लेख आए थे किन्तु समयाभाव से वे पढ़े नहीं जा सके।

लेख पाठ के बाद श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य पर एक मनोरंजक भाषण दिया। आपके भाषण से सभी मुग्ध हो गए। भाषण के अन्त में आपने सम्मेलन की आर्थिक दुरावस्था की बात कही और लोगों से उसकी सहायता के लिए धन देने की अपील की। आपकी अपील पर लगभग ४५) रुपये नक़द आये तथा ५००) रुपए की प्रतिज्ञा हुई।

इसके बाद स्थायी समिति के प्रधान-मंत्री श्रीयुत रामधारी प्रसाद, 'विशारद' द्वारा स्थायी-समिति के गत वर्ष का विवरण पढ़ा गया और वह सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

फिर अगले वर्ष के लिए स्थायी-समिति का संगठन किया गया; तब श्रीयुत राजेन्द्र प्रसाद जी उठे और प्रतिनिधियों की ओर से सभापति महोदय को धन्यवाद देने का प्रस्ताव किया। इसका समर्थन श्रीयुत पं० जगन्नाथ प्रसाद जी चतुर्वेदी ने किया। फिर स्वागत-समिति की ओर से श्रीयुत बा० रामानन्द सिंह जी ने सभापति महोदय, श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी तथा अन्यान्य भिन्न भिन्न स्थान से आगत प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया। साथ साथ स्वागत समिति में काम करने वाले सभी सज्जनों को धन्यवाद दिया।

फिर सभापति महोदय उठे और धन्यवाद के प्रस्ताव का उत्तर देते हुए लगभग २० मिनट तक बोलते रहे। उनका यह अन्तिम भाषण भी गंभीर तथा साहित्यिक था। सभापति के अन्तिम भाषण के बाद सम्मेलन का अन्तिम दिवस समाप्त हुआ।

नाट्याभिनय

रात्रि में स्वागत-समिति की ओर से पुनः 'वीर अभिमन्यु' का अभिनय हुआ। यह अभिनय भी साधारणतः अच्छा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य बातें

इस वार प्रतिनिधियों की संख्या लगभग १०० थी। स्वागत-समिति का प्रबन्ध बड़ा ही उत्तम था। लोगों के रहने तथा भोजन आदि का बड़ा ही अच्छा प्रबन्ध था। इसका सारा श्रेय स्वागत-समिति के प्रधान-मंत्री बा० महेन्द्र प्रसाद जी को है। स्वयं सेवकों ने भी ख़ूब ही काम किया। उन लोगों की तत्परता एवं कठिन कार्य्य को देख कर दंग रह जाना पड़ता था। इसके लिए स्वयंसेवकों के नायक श्रीयुत बा० कामेश्वर नारायण सिंह जी बी.ए. को जितना धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा है, दोनों दिनों के अभिनय की सफलता के लिए नाटकों के प्रबन्धक श्रीयुत बा० श्यामदेव नारायण सिंह जी, बा० मथुरा प्रसाद जी तथा बा० रामानन्द सिंह जी को हार्दिक धन्यवाद देना उपयुक्त होगा।

श्रीरामधारी प्रसाद
प्रधान-मंत्री विहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

चतुर्थ विहार प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, छपरा द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव।

ह सम्मेलन हिन्दी, प्राकृत और संस्कृत के धुरन्धर विद्वान जयपुर निवासी श्रीयुत पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी बी. ए., 'मिथिला मिहिर' के सम्पादक और हिन्दी साहित्य के सुयोग्य ज्ञाता पं० योगानन्द जी कुमर तथा अफ्रीका के हिन्दी प्रचार में प्रधान भाग लेने वाली श्री भवानी दयाल जी की धर्म-पत्नी श्रीमती जगरानी देवी की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करता और उनके शोक-विह्वल परिवार के साथ समवेदना प्रकाश करता है।

(सभापति द्वारा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—हिन्दी साहित्य की उन्नति के विचार से यह परम आवश्यक है कि काव्य, अर्थशास्त्र, विज्ञान, इतिहास, कृषि, कला कौशल, दर्शन आदि विषयों के विषयानुसन्धान कराने एवं उस विषय की पुस्तकें लिखाने और उनको प्रचारार्थ छपाने और प्रकाशित करने के लिए एक समिति बनायी जाय जो इसका उचित प्रबन्ध करे और जिसके निम्नलिखित सदस्य हों:—

(१) श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी, कलकत्ता
(२) श्रीयुत बाबू सूर्य प्रसाद जी महाजन, गया
(३) सूर्यपुराधीश राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह जी, एम. ए., सूर्यपुरा
(४) श्रीयुत बाबू बैद्यनाथ प्रसाद सिंह जी, एम. एल. ए., मुजफ़्फ़रपुर
(५) राय बहादुर बाबू रामरणविजय सिंह जी, पटना
(६) सेठ रामयशमल जी अग्रवाल, झरिया
(७) श्रीयुत युद्ध विक्रम मारूफ़, मुज़फ़्फ़रपुर
(८) श्रीयत बाबू श्यामनन्दन सहाय जी, बी. ए. मुज़फ़्फ़रपुर
(९) श्रीयुत आखौरी गोपीकिशोर लाल जी, बी. ए. मुज़फ़्फ़रपुर (नियोजक)

प्रस्तावक—श्रीयुत बा० फुलदेव सहाय जी वर्मा, एम. ए.
अनुमोदक—श्रीयुत बा० गोकर्ण सिंह जी
समर्थक—श्रीयुत बा० सांवलिया विहारी लाल जी वर्म्मा, एम. ए., बी. एल.

३—यह सम्मेलन स्थायी-समिति को आदेश करता है कि वह साल भर में बिहार प्रान्त से प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों और विहारी ग्रन्थकारों की लिखी पुस्तकों की सूची तय्यार कर प्रति वर्ष सम्मेलन में उपस्थित करे। (सभापति द्वारा)

४—(क) यह सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि अखिल भारतीय सम्मेलन द्वारा निर्धारित परीक्षाओं के प्रचारार्थ स्थायी-समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार के मुख्य मुख्य स्थानों में केन्द्र खुलवाने तथा उन परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों के पढ़ाने का उन स्थानों में उचित प्रबन्ध करे।

(ख) यह सम्मेलन छपरा में उपर्युक्त उद्देश्य से एक छोटे आकार में विद्यालय स्थापित होने पर सन्तोष प्रकट करता है तथा स्थायी-समिति को आदेश करता है कि वह इसका निरीक्षण कर इसके कार्यकर्ताओं को उत्साहित करे। (सभापति द्वारा)

(५) यह सम्मेलन उड़ीसा प्रान्त में तथा बिहार के उन प्रान्तों में जहां हिन्दी का प्रचार नहीं है, हिन्दी प्रचार करने के कार्य को सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण समझता हुआ यह निश्चय करता है कि प्रचार कार्य्य का आरंभ इस वर्ष अवश्य कर दिया जाय और इसके लिए समुचित द्रव्य इकट्ठा किया जाय। इस कार्य्य के लिए द्रव्य एकत्र करने का भार निम्न सज्जनों को दिया जाय और उन लोगों से प्रार्थना की जाय कि वह शीघ्र ही यथेष्ट रुपए का प्रबन्ध करें:—

१—बाबू जगन्नाथ शरण जी, छपरा
२—राय बहादुर सखीचन्द जी, जगन्नाथपुरी
३—श्रीयुत मथुरा प्रसाद जी दीक्षित, विशारद (संयोजक)
प्रस्तावक—श्रीयुत राजेन्द्र प्रसाद जी
समर्थक—अध्यापक श्रीयुत जगतनारायण लाल जी

६—यह सम्मेलन स्थायी-समिति को आदेश करता है कि प्रान्त की उन संस्थाओं एवं सज्जनों को जो हिन्दी की उन्नति में संलग्न हों और यदि वे सम्मेलन से सहायता चाहते हों तो उनकी सहायता यथासंभव हरप्रकार से स्थायी-समिति करे।

प्रस्तावक—श्रीयुत पं० भरत मिश्र जी,
समर्थक—श्रीयुत दामोदर सहाय जी,

७—यह सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि अगले वर्ष सम्मेलन का कार्य्य नियमित रूप से चलाने के लिए स्थायी-समिति का इस प्रकार से संगठन किया जाय:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापति—श्री पाण्डेय सकल नारायण जी शर्म्मा

उपसभापति—

१. श्रीयुत बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी, पटना
२. श्रीयुत बाबू वैद्यनाथ प्रसाद सिंह जी, एम. एल. ए., मुजफ्फरपुर
३. श्री कवि पं० विजयानन्द जी त्रिपाठी, पटना
४. राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह जी एम. ए. सूर्यपुरा
५. श्रीयुत बाबू जगन्नाथशरण जी बी. एल., छपरा

प्रधान-मंत्री—श्रीयुत बाबू रामधारी प्रसाद जी, विशारद

सहकारी मंत्री—१. श्रीयुत राघव प्रसाद सिंह जी
२. पं० चन्द्रमाराय जी शर्म्मा, विशारद
३. पं० नन्नू प्रसाद झा,

कोषाध्यक्ष—श्रीयुत बाबू श्यामनन्दन सहाय जी, बी. ए., ज़मींदार

आय-व्यय-परीक्षक—श्रीयुत अखौरी गोपीकिशोर लाल जी बी. ए.

प्रस्तावक—श्रीयुत मथुरा प्रसाद जी दीक्षित, विशारद
समर्थक—श्रीयुत राजेन्द्र प्रसाद जी,

श्रीरामधारी प्रसाद
प्रधान मंत्री।

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का द्वितीय अधिवेशन

स्थायी समिति का एक साधारण अधिवेशन आ० शु० ७। ७६ रविवार तदनुसार ३० जुलाई १९२२ को ३ बजे दिन से सम्मेलन कार्य्यालय में निम्न लिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

श्रीयुत बा० महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, बी. एस-सी., एल. टी., विशारद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीयुत पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी
श्रीयुत प्रो० वेणीप्रसाद, एम. ए.
श्रीयुत भगवतीप्रसाद, बी. ए.
श्रीयुत प्रो० ब्रजराज जी, एम. ए., बी. एस सी., एल. एल. बी.
श्रीयुत प्रो० गोपालस्वरूप जी, एम. एस-सी.
श्रीयुत पं० रामजीलाल शर्मा, सम्पादक 'विद्यार्थी'
श्रीयुत आयुर्वेद पञ्चानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल
श्रीयुत पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी
श्रीयुत साहित्याचार्य्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
श्रीयुत श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम. ए., एल. टी.

सर्वसम्मति से श्रीमान् महावीरप्रसाद श्रीवास्तव जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

गत अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़ा गया, एक संशोधन होने के बाद वह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

१—मद्रास प्रचार उपसमिति ने अपनी रिपोर्ट उपस्थित की, निश्चित हुआ कि वह रिपोर्ट 'पत्रिका' में प्रकाशित की जाय।

२—निश्चित हुआ कि स्थायी समिति का कोई अधिकारी या सदस्य मद्रास प्रचार के सारे प्रबन्ध और कार्य की जाँच करने के लिये मद्रास जाँय और स्थायी समिति के सामने अपनी रिपोर्ट उपस्थित करें।

प्र०—प्रो० बेनीप्रसाद
अ०—श्रीनारायण चतुर्वेदी

३—स्थायी समिति प्रस्ताव करती है कि जितनी जल्दी हो सके सदस्यों का एक डेपूटेशन सम्मेलन कार्य के हेतु धन संग्रह करने के लिये भ्रमण करें। डेपूटेशन का संगठन श्री पं० रामजीलाल शर्मा करें।

सर्व सम्मति से स्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—मद्रास प्रचार के सम्बन्ध में स्थायी समिति दिसम्बर १९२२ के पहिले मद्रास प्रचार निरीक्षक की रिपोर्ट आ जाने पर पुनः विचार करे। सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

५—निश्चित हुआ कि परलोकवासी श्री सोमदेव शर्मा जी के स्थान पर श्रीमान् पुरोहित हरिनारायण, बी. ए. जयपुर निवासी स्थायी समिति के सदस्य चुने जाँय।

प्र०—प्रो० बेणीप्रसाद जी
अ०—प्रो० ब्रजराज जी

६—श्री जगन्नाथप्रसाद अधिकारी का वह पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने देहली में स्थायी समिति का आगामी अधिवेशन करने का प्रस्ताव किया था। निश्चित हुआ कि इस समय देहली में अधिवेशन नहीं हो सकता। सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

सभापति को धन्यवाद देने के पश्चात अधिवेशन समाप्त हुआ।

प्रयाग-महिला-विद्यापीठ

सन् १९२२ ई० की विद्याविनोदिनी परीक्षा का परीक्षा फल

निम्नलिखित परीक्षार्थिनी विद्याविनोदिनी की सम्पूर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण हुईं:—

क्र० सं०	नाम	श्रेणी	क्र० सं०	नाम	श्रेणी
*९५	श्री० चन्द्रवती देवी	प्रथम	४५	श्री० तुलसा देवी	द्वितीय
८१	" सुशीलादेवी सेठ	"	५४	" पार्वती देवी	"
७३	" विद्यावती देवी	"	१६	" शिवरानी देवी	"
९०	" सुशीला देवी	"	११८	" सरला देवी	"
२३	" विप्र देवी	"	२७	" कमला देवी सेठ	तृतीय
२२	" जया देवी	"	८३	" सुदक्षिणा देवी	"
११६	" अम्बा देवी	"	१२	" आनन्दी देवी	"
६	" शिवरानी देवी	"	११७	" गायत्री देवी	"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो परीक्षार्थिनी केवल गृहशास्त्र और स्वास्थ्यरक्षा में उत्तीर्ण हुई हैं, उनकी क्रमसंख्या और नाम निम्नलिखित हैं:—

क्रम	नाम	क्रम	नाम
८	श्रीमती पार्वती देवी	६२	श्री० सुन्दर देवी
९	" रमा देवी	६६	" रत्नमणि देवी
३०	" कुन्ती देवी	७०	" श्री० रामदुलारी देवी
३४	" गङ्गा देवी	७१	" रुद्ररानी देवी
३८	" चन्द्रकली देवी	७४	" विद्यावती श्रीवास्तव
३९	" चमेली देवी	७६	" शिवकली देवी
४०	" चमेली देवी	७९	" श्यामा देवी
४१	" चन्द्रावती देवी	८४	" सुन्दर देवी
४३	" जुगावती	८८	" सरला देवी अग्रवाल
४४	" तारा देवी	८९	" सहदेई देवी
४८	" प्रसन्ना देवी	९१	" सोना देवी
५२	" प्रभावती दासी	१०७	" भगवती देवी
५५	" बलवंती देवी	११०	" सत्यवती देवी
५७	" बसंती देवी	१११	" विद्या देवी
६०	" भोसी देवी	११३	" सत्यवती देवी
६१	" मङ्गला देवी	११४	" चन्दभागा देवी

जो परीक्षार्थिनी दो विषय लेकर उत्तीर्ण हुई हैं उनकी क्रम संख्या और नाम निम्नलिखित हैं:—

क्रम०	नाम	क्रम०	नाम
५	श्रीमती नन्दरानी देवी	६९	श्रीमती रूपरानी देवी
१०	" सौभाग्यवती देवी	८१	" सरला देवी
११	" चन्द्रकला देवी	९३	" बुद्धिमती देवी
२०	" कुमारी विद्यावती देवी	१००	" शान्ताकुमारी देवी
२४	" आनन्द कुमारी देवी	१०४	" देवहुती देवी शारदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम सं० नाम	क्रम सं० नाम
२८ " कैलाशी देवी	१०६ नारायणी देवी
३१ " केशव देवी	११२ " क्षमा देवी
३५ " गायत्री देवी	११६ " गार्गी देवी
४६ " विमला देवी	१२० " राजेश्वरी देवी
६३ " यशोदा देवी	१२१ " विद्यावती देवी
६७ " रामप्यारी देवी	

जो परीक्षार्थिनी तीन विषय लेकर उत्तीर्ण हुई हैं उनकी क्रम संख्या और नाम निम्न लिखित हैं:—

१—" श्री मती कौशल्या देवी	१६ श्री मती रूप देवी
२—" प्रीतम देवी	४६ " प्रेम कली देवी
३—" विद्यावती देवी	

जो परीक्षार्थिनी चार विषय लेकर उत्तीर्ण हुई हैं उनकी क्रम संख्या और नाम निम्न लिखित है:—

४ श्रीमती जगरानी देवी	२१ श्रीमती राजकुंवर देवी
१३ " कटोरी देवी	६८ " रमा देवी
१८ " ज्ञानवती वाशिष्ठ	

नोटः—क्रम संख्या ६५ श्रीमती चन्द्रवती देवी महेन्द्रगढ़ सर्व प्रथम होने के कारण १००) का पुरस्कार पूर्व निश्चय के अनुसार श्री सङ्गमलाल जी अग्रवाल की माता द्वारा पाने की अधिकारिणी हुई हैं।

भवदीय
मजीद-उद्दीन अब्बासी
रजिष्ट्रार

त्रयोदश-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, कानपुर

सम्मेलन का आगामी वार्षिक अधिवेशन कानपुर में होगा। यहाँ पर स्वागत-कारिणी-समिति का संगठन हो गया है, हर्ष का विषय है कि हिन्दी संसार के सुपरिचित विद्वान श्री मान् पं० महा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीर प्रसाद द्विवेदी, भूतपूर्व सम्पादक 'सरस्वती' ने समिति का अध्यक्ष होना स्वीकार कर लिया है। इस समिति की कार्य कारिणी समिति में ५१ सदस्य चुने गये हैं, कार्य बड़े उत्साह से हो रहा है। कार्य कर्त्ताओं का चुनाव और विभागों का संगठन निम्न लिखित है।

सभापति—श्री पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी

उपसभापति—१. श्री से० काशीनाथ जी
२. श्री गणेश शंकर विद्यार्थी
३. श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा
४. श्री पं० बलभद्रप्रसाद तिवारी
५. श्री राय बहादुर ला० विश्वम्भरनाथ
६. श्री लाला छुंगालाल जी
७. श्री पं० महेशदत्त शुक्ल
८. श्री लाला चम्पाराम जी

प्रधान मंत्री—श्री पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

१. साहित्य विभाग मंत्री—श्री पं० उदयनारायण वाजपेयी
सह० मंत्री—श्री पं० भगवती प्रसाद वाजपेयी

२. प्रकाशन विभाग मंत्री—श्री पं० रामप्रसाद मिश्र
सह० मंत्री—श्री पं० चण्डिका प्रसाद मिश्र

३. अर्थ विभाग मंत्री—श्री लाला फूलचन्द जी
सह० मंत्री—श्री पं० कृष्ण नारायण शुक्ल

४. प्रबन्ध विभाग मंत्री—श्री पं० देवीप्रसाद द्विवेदी

५. पण्डाल विभाग मंत्री—श्री लाला रूपचन्द जैन

६. आतिथ्य विभाग मंत्री—श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही
सह० मंत्री—श्री जगमोहन गुप्त

७. प्रदर्शनी विभाग मंत्री—श्री पं० भूदेव शर्मा विद्यालङ्कार
सह० मंत्री—श्री पं० भैरवदत्त मिश्र

कोषाध्यक्ष—श्री बा० वेणीमाधव खन्ना

कार्यालय—धर्मशाला श्री लक्ष्मणदास चम्पाराम, लाठी मुहाल, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यावलोकन

(समालोचक के मत के लिए सम्मेलन उत्तरदायी नहीं है।)

नव रस—

लेखक—श्रीयुत बाबू गुलाबराय जी एम. ए., एल-एल. बी., प्रकाशक—नागरी प्रचारणी सभा आरा। कागज छपाई सुन्दर, पृष्ठ संख्या ६७, मूल्य १।) सजिल्द १॥)

श्री गुलाबराय जी दर्शन के अच्छे लेखक हैं। साहित्य की ओर भी आपकी अभिरुचि रहती है। आपने दार्शनिक पद्धति से इस पुस्तक में साहित्यिक नवरसों पर विचार प्रकट किये हैं। रसों की परिभाषा, उनकी बारीकियां, उदाहरण आदि का विवेचनापूर्ण वर्णन किया है। यदि आप हिन्दी साहित्य के रस संबन्धी ग्रन्थों का भली भाँति परिशीलन कर जाते, तो इस पुस्तक के लिखने में और भी अधिक सफल होते। कहीं कहीं पर भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ भी खटकती हैं। रसों के उदाहरण भी बहुत अच्छे नहीं चुने गये हैं। फिर भी रसों पर इस ढँग की यह एक ही पुस्तक होगी, इसमें संदेह नहीं। इसका मूल्य बहुत अधिक है।

मारुति-विजय—

खण्ड काव्य; लेखक—श्री गोस्वामी भैरवगिरि, प्रकाशक—विजयकम्पनी लिमिटेड, मुजफ़्फ़रपुर; पृष्ठ संख्या ११५; मूल्य सजिल्द ।।।); सादा ॥)

यह खड़ी बोली का प्रचंड खंड काव्य है। एक ओर महावीर हनुमान जी की प्रचंडता है तो दूसरी ओर गोस्वामी भैरवगिरि की काव्य-कला-प्रचंडता। इसमें पांच सर्ग हैं। शिखरिणी छंद हैं। समझ में नहीं आता, लोग संस्कृत के संकीर्ण छन्दों के चुनने में क्या खूबी समझते हैं। इन छन्दों में जहां देखिये तहां यतिभंग दोष, छंद-व्याकरण दोष, भाषा दोष आदि की भरमार रहती है। इस खण्ड काव्य की तो कुछ पूंछिये ही नहीं। क्या भाषा, क्या भाव, क्या शब्द योजना, क्या छन्द रचना आदि सबी का गला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोंटा गया है। ऐसी रद्दी पुस्तकों को प्रकाशित कर न जाने प्रकाशक लोग क्या लाभ समझते हैं? उन्हें क्या जैसे तैसे पैसे आने चाहिये, साहित्य की चाहे जो दुर्दशा हो। प्रकाशकों का यह मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे पुस्तक को भली भांति देख भाल कर छापा करें। आशा है, श्री गोस्वामी जी भविष्य में उसी छंद में लिखेंगे, जिसमें उन्हें भाव-प्रकाशन में सुलभता हो।

ब्रिटिश भारत का आर्थिक इतिहास—

प्रसिद्ध विद्वान श्रीयुक्त रमेशचन्द्र दत्त ने अँग्रेजी में इकोनोमिक हिस्ट्री आफ इंडिया नाम की पुस्तक लिखी है, इसी का यह संक्षिप्त अनुवाद है। अनुवादक श्री केशव देव सहारिया जी हैं। पुस्तक में १६ परिच्छेद हैं; लार्ड क्लाइव के समय से लेकर महारानी विक्टोरिया के राजत्वकाल तक भारत की जैसी आर्थिक स्थिति थी उसकी विवेचना इसमें की गई है। भिन्न भिन्न शासकों ने अपने अपने शासन काल में जो जो सुधार किये हैं, उनकी अच्छी आलोचना की गई है; हिंदी में आजकाल राजनैतिक विषयों की खूब चर्चा हो रही है, अतएव यह पुस्तक भी समयानुकूल है, इसमें सन्देह नहीं कि इस पुस्तक के पढ़ने से भारत की निर्धनता के कारण समझ में आ सकते हैं और यही वर्तमान असंतोष का प्रधान कारण भी है। रमेशचन्द्र दत्त ने जिस उदारनीति का समर्थन किया है उससे भारत और ब्रिटेन दोनों का कल्याण हो सकता है। पुस्तक की उपयोगिता के विषय में हमारा एक निवेदन है वह यह कि देश की आर्थिक अवस्था सदैव बदलती रहती है, यही कारण है कि अर्थशास्त्र की पुस्तकें शीघ्र ही पुरानी पड़ जाती हैं, रमेशचन्द्र दत्त जी ने जो इतिहास लिखा है वह विद्वत्तापूर्ण होने पर भी अब इस योग्य नहीं है कि वर्तमान भारतवर्ष की आर्थिक समस्याओं को हल कर सकें, देश की राजनैतिक अवस्था में भी बड़ा परिवर्तन हो गया है, तो भी यह पुस्तक इतिहास-प्रेमियों के लिए आदरणीय है। मूल्य १।), प्रकाशक—ज्ञान मण्डल कार्यालय, काशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारनाथ का इतिहास—

कुछ ही समय में हिन्दी में प्राचीन भारतवर्ष के सम्बन्ध में कई अच्छी पुस्तकें निकली हैं, बुद्धदेव के कई अच्छे अच्छे चरित्र भी प्रकाशित हुए हैं, तो भी अभी हिन्दी में बौद्धधर्म का कोई भी अच्छा इतिहास नहीं लिखा गया है। भारतवर्ष के इतिहास में बौद्धकाल का महत्वपूर्ण स्थान है, इस अभाव को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि योग्य विद्वान इस काम को स्वीकार करें। वर्तमान पुस्तक के लेखक, श्री वृन्दावन भट्टाचार्य योग्य विद्वान हैं।

भगवान बुद्ध के चरित्र से चार स्थानों का विशेष सम्बन्ध है, लुम्बिनि ग्राम, बोधिगया, सारनाथ और कुशीनगर। सारनाथ में भगवान बुद्ध ने सब से प्रथम धर्मोपदेश किया, तब से यह बौद्धों के लिए तीर्थ स्थान हो गया है। समय समय पर बुद्ध भक्तों ने वहाँ मन्दिर तथा स्तम्भ आदि स्थापित किये हैं। यह सच है कि सारनाथ की इमारतों का कई बार नाश भी हुआ, पर हर समय किसी न किसी बुद्धभक्त ने उसका पुनरुद्धार किया। वहाँ कितने ही प्राचीन चिह्न अभीतक उपलब्ध होते हैं। समय समय पर वहाँ जो खुदाई की गई है, उससे अनेक ऐतिहासिक वस्तुएँ प्राप्त हुईं। सन् १८१५ से लेकर १९०७ तक पुरातत्व विभाग की ओर से कई बार खुदाई हुई, जिसमें कुशान और गुप्तकाल से लेकर १२वीं शताब्दी तक के चिह्न पाये गये। सारनाथ बौद्ध धर्म का आदि काल से ह्रास काल तक केन्द्र रहा है, अतएव उसका इतिहास महत्वपूर्ण होना ही चाहिये। अध्यापक महोदय ने यह इतिहास अच्छे ढंग से लिखा है। पुस्तक में छोटे छोटे सात अध्याय हैं, पहले तीन अध्यायों में सारनाथ का ऐतिहासिक विवरण है, चौथे में पुरातत्व विभाग की खुदाई का हाल दिया है, इसके बाद वहाँ जो जो शिल्प चिह्न प्राप्त हुए हैं, उनके महत्व का निदर्शन किया है। सारनाथ के शिला लेखों की भी अच्छी विवेचना की गई है। सारांश, पुस्तक में एक भी महत्व पूर्ण बात छूटने नहीं पायी है। मूल्य १।) ज्ञानमण्डल काशी से प्राप्त।

उमापति निगम, बी. ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांई तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूरसागर का क्यों नहीं हुआ? इसलिये कि लोग इस वृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ के समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी की जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुई अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक कागज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] आश्विन, संवत् १९७६ [अंक २

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हिय को सूल॥

—श्रीभारतेन्दु

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित उत्तमोत्तम पुस्तकें

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित ... मूल्य ॥)

२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ... मूल्य ।=)

३—भारत का इतिहास, प्रथम खण्ड ... मूल्य १॥)

४—भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड ... मूल्य ३)

५—शिवा बावनी, टिप्पणी सहित ... मूल्य ≡)

६—सूरदास की विनय पत्रिका ... मूल्य)

७—रहिमन के दोहे टिप्पणी सहित ... मूल्य ‌-)॥

८—राष्ट्र भाषा ... ... मूल्य ॥)

९—सरल पिङ्गल ... ... मूल्य ।)

१०—भारत गीत ... ... मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

का

मुख-पत्रिका

भाग १०] आश्विन, संवत् १९७९ [अङ्क २

मनो राज्य

कबहुँक हौं येहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ कृपाल कृपा तें, संत सुभाउ गहौंगो॥
जथा लाभ संतोष सदा काहू सों कछु न चहौंगो।
परहित निरत निरंतर मन क्रम बचन नेम निबहौंगो॥
परुष बचन अति दुसह स्रवन सुनि तेहिं पावक न दहौंगो।
बिगत मान सम सीतल मन पर गुन औगुन न कहौंगो॥
परिहरि देह जनित चिंता दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि अबिचल हरि भक्ति लहौंगो॥

—गोस्वामी तुलसीदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हित हरिवंश जी के सिद्धान्ती पद

हित हरिवंश जी महात्मा, अनन्य भक्त और रससिद्ध सत्कवि थे। इनके पद बड़े ही ललित और भावपूर्ण हैं। इनकी सरस रचना पढ़ते पढ़ते, कहीं कहीं तो ऐसा भान हो जाता है कि यह हिन्दी के जयदेव हैं। आप श्री राधा वल्लभ जी के अनन्य भक्त थे। राधा वल्लभीय संप्रदाय के संस्थापक आप ही थे। आपने श्री हित चतुरासी और कुछ फुटकर सिद्धान्ती पद लिखे थे। बहुतों का यह भी कहना है कि आप ने संस्कृत में राधा सुधानिधि नामक १७० श्लोकों का एक बड़ा ही ललित काव्य निर्माण किया, किन्तु यह विषय विवादास्पद है, कारण कि बहुत कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि राधा सुधानिधि के प्रणेता श्री चैतन्य महाप्रभु के शिष्य स्वामी प्रबोधानंद जी हैं। अस्तु, यह विषय फिर कभी देखा जायगा। आज मैं श्री हित हरिवंश जी के कुछ सिद्धान्ती पद लिखता हूँ। कुछ पदों को स्वर्गीय श्री राधा कृष्णदास जी ने देखा था, परन्तु चतुरासी के अतिरिक्त ये पद प्रकाशित नहीं हुए। मेरे परम मित्र श्री बाबा परमानददास जी राधा बल्लभीय ने बड़े ही अनुग्रह से मुझे ये पद दिये हैं, अतः मैं श्री बाबा जी का बड़ा ही आभारी हूँ।

—वियोगीहरि

राग गौरी

यह जु एक मन बहुत ठौर करि, कहि कौने सचु पायो।
जहँ तहँ बिपति जार जुवती ज्यों प्रगट पिंगला गायो॥
द्वै तुरंग पर जोर चढ़त हठि परत कौन पै धायो।
कहि धौं कौन अंक पर राखै ज्यों गनिका सुत जायो॥
(जै श्री) हित हरिवंस प्रपंच बंच सब काल व्यालको खायो।
यह जिय जानि स्याम स्यामा पद कमल संगि सिर नायो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय

ना जानौं छितु अंत कवन बुधि घटहिं प्रकासित।
छुटि चेतन जु अचेत तेउ मुनिभय विष वासित॥
पारासर सुर इंद्र कलप कामिनि मम फंदा।
परयों देह दुख द्वंद कौन क्रम काल निकंदा॥
इहिडर डरपहि हरिवंस हित, जिन विभ्रम गुन सलिल पर।
जिहि नामनि मंगल लोक तिहुँ, हरि पदु भजु, न बिलंब कर॥

कुंडलिया

चकई प्रान जु घट रहैं; पिय बिछुरंत निकज्ज।
सर अंतर अरु कालनिसि तरफ तेज घन गज्ज॥
तरफ तेज घन गज्ज लज्ज तुव वदन न आवै।
जल विहीन कर नैन भोर किहि भाय दिखावै॥
हित हरिवंस विचार कौन अस वाद जु वकई।
सारस यह संदेह प्रान घटि रहै जु चकई॥

सारस सर बिछुरंत को जो पल सहै शरीर।
अग्नि अनंग जु तिय भखै तौ जानै पर पीर॥
तौ जानै पर पीर धीर धरि सकै बज्र तन।
मरत सारसहि फूटि पुनि न परचौ जु लहत मन॥
हित हरिबंस विचारि प्रेम बिरहा बिन बारस।
निकट कंत नित रहत मर्म कह जानै सारस॥

छप्पय

तैं भाजन कृत जटित विमल चंदन कृत इंधन।
अमृत पूरि तिहि मध्य करत सर्षप खल रिंधन॥
अद्भुत घर पर करत कष्ट कंचन हल वाहत।
वारि करत पावारि मंद बोवन विष चाहत॥
हित हरिबंस विचारि कै यह मनुज देह गुरु चरन गहि।
सकहि तो सब परपंच तजि श्री कृष्ण कृष्ण गोविन्द कहि॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद

तातें भैया, मेरी सौं कृष्ण गुन संचु ।
कुत्सित बाद विकारहिं पर धन सुनु सिख पर तिय बंचु ॥
मनि गुन पुंज जु व्रजपति छांडत हित हरिवंस सुकर गहि कंचु ॥
पायें जानि जगत में सब जन कपटी कुटिल कलियुगी टंचु ॥
इहि परलोक सकल सुख पावत, मेरी सौं तू कृष्ण गुन संचु ॥

अड़िल्ल

मानुष को तन पाइ, भजौ व्रज नाथ कों ।
दर्वी लै कै मूढ़, जरावत हाथ कों ॥
हित हरिवंस प्रपंच विषय रस मोह के ।
बिनु कंचन क्यों चलैं, पचीसा लोह के ॥

पद

मोहन लाल के रँग राची ।
मेरे ख्याल परौ जिन कोऊ बात दसौ दिसि माची ॥
कंत अनंत करौ जिनि कोऊ नाहिं धारना साँची ।
यह जिय जानि भले सिर ऊपर हौं तु प्रकट है नाची ॥
जाग्रति सयन रहत उर ऊपर मणि कंचुक ज्यों पांची ।
हित हरिवंस डरौं काके डर हौं नाहिंन मति काँची ॥

रहौ कोऊ काहू मनहिं दिये ।
मेरे प्रान नाथ श्री स्यामा सपथ करौं तृन छियें ॥
जे अवतार कदंब भजत हैं धरि दृढ़ व्रत जु हियें ।
तेऊ उमगि तजत मरजादा वन विहार रस पियें ॥
खोयें रतन फिरत ज़े घर घर कौन काज इमि जियें ।
हित हरिवंस अनतु सचु नाहीं बिन या रजहिं लियें ॥

आरती कीजै स्याम सुन्दर की ।
नँद नंदन श्री राधिका वर की ॥
भक्ति को दीप प्रेम करि बाती ।
साधु संगति कर अनुदित राती ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरति ब्रज जुवतिन मन भावै।
स्याम लीला हित हरिवंस गावै॥

प्रीति की रीति रँगीलोइ जानै।
जद्यपि सकल लोक चूड़ामनि दीन अपनपौ मानै॥
जमुना पुलिन निकुंज भवन में, मान मानिनी ठानैं।
निकट नवीन कोटि कामिनि कुल धीरज मनहिं न आनै॥
नश्वर देह चपल मधुकर ज्यों आन आन सौं बानैं।
(जैश्री) हित हरिबंश चतुर सोइ लालहिं छाँड़ि मैंड़ पहिचानैं॥

दोहा

तनहिं राखु सतसंग में, मनहिं प्रेम रस भेव।
सुख चाहत हरिबंस हित, कृष्ण कल्प तरु सेव॥
निकसि कुंज ठाढ़े भये, भुजा परस्पर अंस।
राधा वल्लभ मुख कमल, निरखत हित हरिवंस॥
सब सों हित निह काम मत, वृन्दावन विश्राम।
राधा वल्लभ लाल को, हृदय ध्यान मुख नाम॥
रसना कटौ जु अनरटौ, निरखि अनफुटौ नैन।
श्रवन फुटौ जु अनसुनौ, बिनु राधा जसु बैन॥

गुलदस्तये बिहारी

बिहारी सतसई का उर्दू पद्यों में अनुवाद

[लेखक—श्री देवीप्रसाद 'प्रीतम']

दोहा—नंद नंद गोविन्द जै सुख मन्दिर गोपाल।
पुंडरीक लोचन ललित जै जै कृष्ण रसाल॥
शैर—जयति गोपाल सुख मन्दिर, जयति गोविंद नँद नंदन।
कमल लोचन ललित लीला, जयति जय कृष्ण जग बंदन॥

हमारे सुहृद्वर श्री प्रीतम जी ने अपने गुलदस्तये बिहारी के कुछ चुने हुए दोहे भेजे हैं। एतदर्थ आप को धन्यवाद!—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—हरि कीजत तुम सौं यहै विनती बार हजार।
जेहिं तेहिं भाँति डस्यो रहौं परो रहौं दरबार॥
शैर—हज़ारों बार है सरकार, इतनी इल्तजा मेरी।
पड़ा दरबार में आँखौं, लगाऊँ ख़ाक पा तेरी॥
दोहा—ज्यों है हौं त्यों होउँगो हो हरि अपनी चाल।
हठ न करौ अति कठिन है मो तारिबो गुपाल॥
शैर—बुरा हूं या भला जैसा हूं, कुछ आदत से लाचारी।
तरन तारन न हठ कीजे, मेरा तरना कठिन भारी॥
दोहा—मोहिं तुम्हें बाढ़ी बहिस को जीते जदुराज।
अपने अपने बिरद की दुहुंन निबाहन लाज॥
शैर—हमारी औ तुम्हारी, लग रही है होड़ जदुराई।
किसे हो जीत दोनों को, है अपने फ़न में इकताई॥
दोहा—समय पलट पलटै प्रकृति को न तजै निज चाल।
भौ अकरुन करुना करन यह कपूत कलिकाल॥
शैर—पलटती है प्रकृति सबकी समय पा कर बना कामी।
हुए अकरन अहो कलिकाल में करुना करन स्वामी॥
दोहा—तो बल है भल है बनी नागर नंद किशोर।
जो तुम नीके कर लखौ मो करनी की ओर॥
शैर—मेरी करनी को नीके कर लखौ गर आप नट नागर।
बनीसो अनबनी बनकर बनी हो पार भव सागर॥
दोहा—अपने अपने मत लगे वाद मचावत शोर।
ज्यों त्यों सब ही सेयबो एकै नंद किशोर॥
शैर—नशे में चूर बकते अपने २ मत की मतवाले।
मेरे मत से छके पी पी के "प्रीतम" प्रेम के प्याले॥

श्री कृष्ण लीला

दोहा—प्रलय करन बरसन लगे जुर जलधर इक साथ।
सुरपति गर्व हस्यो हरषि गिरधर गिरिधर हाथ॥
शैर—लगे मिल कर बरसने मेघ बरपा कर दिया महशर।
बहाई इन्द्र की शेखी सिरी गिरिधर ने गिरधर कर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—लोपे कोपे इन्द्र लौं रोपे प्रलय अकाल।
गिरधारी राखे सबै गो गोपी गोपाल॥
शेर—क़यामत इन्द्र ने ये वक्त करदी क़हर कर भारी।
मुहाफ़िज़ बन गये गो गोप गोपी गण के गिरधारी॥
दोहा—डिगन पान डिगुलात गिरि लखि सब ब्रज बेहाल।
कंप किशोरी दरशवै खरे लजाने लाल॥
शेर—हिला गिर हाथ हिलने से हुई ब्रज जन को अकुलाहट।
लजाये लाल लरज़ाँ हो ललो नूपुर की सुन आहट॥
दोहा—लाज गहौ बेकाज कत घेर रहे घर जाहिं।
गो रस चाहत फिरत हो गोरस चाहत नाहिं॥
शेर—अबस घेरे खड़े शरमाइये जाने भी घर दीजे।
नहीं गोरस का रस-रसिया बने गोरस का रस पीजे॥
दोहा—नाच अचानक ही उठे बिन पावस बन मोर।
जानत हौं नन्दित करी यह दिश नंद किशोर॥
शेर—अचानक नाच उठे बन मोर बिनही घोर घन छाये।
समझ पड़ता है शायद इस तरफ घनश्याम जी आये॥
दोहा—बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहन नचै देन कहै नट जाय॥
शेर—चुराई लाल की मुरली कि कुछ बतरस का रस पाये।
क़सम खा खा नचा अबरू कहै देने पलट जाये॥
दोहा—रवि बंदौं कर जोर के सुनत श्याम के बैन।
भये हसौंहैं सबन के अति अनखौहैं नैन॥
शेर—करो कर जोर सूरज से विनय सुन श्याम की बानी।
कुसुम सी खिल गई अँखियाँ जो रिस रससे थीं कुसमानी॥
दोहा—अहै दहेंड़ी दिन धरै जिन तू लेह उतार।
नीके है छींके छुबै ऐसे ही रह नार॥
शेर—दहेंड़ी अब न धर ऊपर उतार उसको न रस थोरी।
छुवैं छींके तू ऐसे ही खड़ी रहु ग्वालिनी गोरी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षट् ऋतु वर्णन

दोहा—फिर घर को नूतन पथिक चले चकित चित भाग।
फूल्यो देख पलास बन समुहीं समुझ दवाग॥
शैर—नये रहरौ पलट घर को चकित उलटे कदम भागे।
खिले टेसू के बन समझे लगी है आग इक आगे॥
दोहा—अन्त मरैंगे चल जरैं चढ़ पलास की डार।
फिर न मरैं मिलहैं अली यह निर्धूम अँगार॥
शैर—चलैं चढ़ कर जलैं टेसू पै आखिर मौत है वारे।
मिलैंगे फिर न बादे मर्ग़ यह बेदूद अंगारे॥
दोहा—केहिलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन सौ कियो दीरघ दाघ निदाघ॥
शैर—ग़ज़ालो शेर मोरो मार इकजाँ बसते हैं बाहम।
तपोवन गर्मियें आतिश फ़िसाने कर दिया आलम॥
दोहा—तिय तरसौंहैं मन किये कर सरसौंहैं नेह।
घर परसौंहैं ह्वै रहे झर बरसौंहैं मेह॥
शैर—हुई सर सब्ज़ उल्फत डब डबाये अश्क चश्मे तर।
नई काली घटा उनई छुई झुकझूम कर छत पर॥
दोहा—छिनक चलत ठिठकत छिनक भुज प्रीतम गर डार।
चढ़ी अटा देखत घटा विज्जु छटा सी नार॥
शैर—दिये गलबाँहें प्रीतम चल ठुमक छिन पैर धरती है।
अटा विज्जुच्छटा चढ़ घन घटा की सैर करती है॥
दोहा—धुरवा होहिं न अल यहै धुवाँ धरनि चहुँ कोद।
जारत आवत जगत कों पावस प्रथम पयोद॥
शैर—नहीं यह अब्र तीरा है-दुख़ां घेरे हुए जल थल।
लगाते आग आते हैं चले आषाढ़ के बादल॥

(शेष फिर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगोस्वामी तुलसीदास

[लेखक—श्रीयुत गुलाबराय एम. ए., एलं. एल. बी.]

कवि कुल चूड़ामणि भक्ति शिरोमणि महात्मा तुलसी दासजी उन रस सिद्ध कवीश्वरों में से हैं जिनके विषय में महाराज भर्तृहरि ने कहा है 'नास्ति येषां-यशः काये जरामरणजंभयं।' उन महात्मा के बनाये हुए रामचरित मानस का घर घर में पाठ होना ही उनके अमरत्व का पूर्ण प्रमाण है। यद्यपि अब उनका शरीर भारत भूमि को विभूषित नहीं कर रहा है तथापि उनकी भाव पूर्ण वाणी प्रत्येक हिन्दी भाषा भाषी के हृदय मंदिर को पवित्र बना रही है। आज के दिन वृद्ध नश्वर शरीर को त्याग कर अमर संसार में प्रविष्ट हुए थे। आज हम विशेष रूप से उन महात्मा का गुण गान कर अपने को पवित्र करेंगे।

इन महात्मा के भौतिक जीवन के विषय में केवल इतना ही कह कर सन्तोष करूंगा कि इनका जीवन भावपूर्ण और कविता मय है। इनके विषय में जो बातें विख्यात हैं वह यह बतलाती हैं कि इनमें उत्तम कवि बनने की सामग्री थी। इङ्गरेजी में कहावत है कि a poet is born and not made अर्थात् कवि जन्म से ही कवि होता है बनाये से कवि नहीं बनता, यह वास्तव में जन्म से ही कवि थे। जो मनुष्य अपनी प्रिया के मिलन की उत्सुकता में अंधेरी रात के प्रगाढ़ अन्धकार वर्षा और नदी के वेग को कुछ न समझे उसकी तल्लीनता साधारण मनुष्यों की सी नहीं। जिन भावों में इतनी शक्ति है उन भावों को जिस ओर झुका दो उसी ओर उनका अलौकिक परिणाम दिखाई पड़ने लगेगा। विषय और पात्र के परिवर्तन से महात्मा तुलसीदास जी के हृदय में प्रेम ने अटल भक्ति का रूप धारण कर लिया और इन्हीं भक्ति के भावों ने उनकी कविता को सरस और ओजस्विनी बना दिया।

महात्मा तुलसीदास जी जैसे उत्तम कवि थे वैसे ही वह श्रेष्ठ भक्ति भी थे। बहुत से भक्त लोग अपने आनन्द का आस्वादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन ही मन में करते हैं किन्तु महात्मा तुलसी दास जी ने अपने आनन्द का आस्वादन अकेले ही अकेले नहीं किया—यद्यपि उन्होंने लोकोपदेशक वा लोकोपकारक होने का दावा नहीं किया, तथापि जो कुछ उन्होंने "स्वान्तः सुखाय" किया वह लोक हित के लिये होगया। काव्य के प्रयोजनों में यश और अर्थोपार्जन मुख्य माने गये हैं। गोस्वामी जी का रामचरित मानस लिखने का इनमें से एक भी प्रयोजन न था। इसीलिये उनको लोकोत्तर सफलता हुई। जो काव्य स्वान्तः सुखाय लिखी जाती है उसका उद्गम स्थान हृदय होता है और उसी कारण से वह हृदय में तीर की भांति प्रवेश कर जाती है। उनकी सफलता का एक और भी कारण था। जैसा उनका मान-पूर्ण हृदय था जैसी उनकी ओजस्विनी वाणी भी थी, वैसे ही लोकोत्तर उनके चरित्र नायक थे। मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी से चरित्र नायक भी होना कठिन है और अपने चरित्र नायक में श्रद्धा भक्ति रखने वाले तुलसीदास की भांति कवि भी न होंगे। गोस्वामी जी ने अपनी सफलता का कारण श्रीरामचन्द्रजी का ही विमल चरित्र बताया है

> यदपि कवितरस एकौ नाहीं। राम प्रताप प्रगट इहं माहीं॥
> सोइ भरोस मोरे मन आवा। केहि न सुसंग बड़ापन पावा॥
> धूमहु तजै सहज करुआई। अग्र प्रसंग सुगंध बसाई॥
> भणित भदेस वस्तु भलि वरणी। राम कथा जग मंगल करणी॥
>
> मंगल करनि कलि मल हरनि, तुलसी कथा रघुनाथ की।
> गति कूर कविता सरित की, ज्यों परम पावन पाथ की॥
> प्रभु सुयश संगति भणित भलि, होइहि सुजन मनभावनी।
> भव अंग भूति मसान की, सुमिरत सुहावन पावनी॥

चरित्रनायक की अलौकिक श्रेष्ठता, भावोंकी शुद्धता और वर्णन शैली की परिमार्जित उत्कृष्टता के कारण रामचरित मानस को केवल हिन्दी साहित्य में ही नहीं वरन् अन्य भाषाओं की रचनाओं में परम गौरव का स्थान मिला है। इस परम आदरणीय ग्रन्थ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय में जो कुछ कहा जाय सो थोड़ा है। यह विस्तार में महा काव्य कहलाने योग्य है और इसी के साथ इस के एक एक पद में खण्ड काव्य की रोचकता, रचना कौशल्य और भावों का बाहुल्य प्रकट होता है। जो बात कि किसी अंगरेज़ यात्री ने ताजमहल के विषय में कही है They built like giants and finished like jewellers अर्थात् उनकी बनाई हुई इमारतें परिमाण में तो देव दानवों के हाथ कीसी बनी हुई ज्ञात होती हैं और सफाई और कारीगरी में जौहरी कीसी बनाई हुई मालूम देती हैं। वही बात इस ग्रन्थ रत्न के विषय से चरितार्थ होती है। इस समय इस ग्रन्थ की काव्य सम्बन्धी बारीकियां न बता कर गोस्वामीजी के कुछ धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करता हूं।

यद्यपि गुसांई जी श्रीरामचन्द्र जी के अनन्य भक्त थे तथापि इनको और सम्प्रदायों तथा उनके माने हुए देवताओं के प्रति किसी प्रकार का द्वेष वा विरोध भाव न था। इन्होंने अपनी विनय पत्रिका के आरम्भ में प्रायः सब ही देवताओं की प्रार्थना की है किन्तु उन्हीं देवताओं से उन्होंने श्रीरामचन्द्र जी की भक्ति की याचना की है। गणेश महेश और दिनेश से वह यही बर मांगते हैं कि "बसइ राम सिय मानस मोरे।" इस से इन्होंने अन्य देवताओं के प्रति अपनी अपनी श्रद्धा भाव बतलाया है और इसी के साथ श्री रामचन्द्र जी के प्रति अपनी अनन्य भक्ति का परिचय दिया है। शिवजी और राम जी के विषय में तुलसी दासजी ने रामायण के अनेक स्थलों में समता का भाव प्रकट किया है।

शिव द्रोही मम भक्त कहावै। सो नर सपनेहु मोहि न भावै॥
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी। सो नर मूढ़ मन्द मति थोरी॥
शंकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्प भरि, घोर नरक महँ वास॥

उनके हृदय में श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि वह सारे संसार को सियाराम मय देखते थे। और संसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर के सभी नाते रामके नाते से मानते थे । उनके माता पिता इष्ट मित्र बन्धुबान्धव. नहीं हैं ,राम के दास हैं । जिनमें यह गुण नहीं, उनको वे कभी नहीं अपना सकते ।

> जाके प्रिय न राम वैदेही ।
> सो छांडिये कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥
> तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्राणते प्यारो ।
> जासों होय सनेह रामपद एतो मतो हमारो ॥

यद्यपि गोस्वामी जी अन्य वैष्णवों की भांति सगुण उपासक थे तथापि इनके ग्रन्थों से मालूम होता है कि यह वेदान्त के मुख्य सिद्धान्तों को मानते हैं । यह ईश्वर के अतिरिक्त और किसी प्रधान व प्रकृति को संसार के कारणों में नहीं मानते हैं ।

> केशव,कहिन जाय का कहिये ।
> देखत तव रचना विचित्र अति समुझ मनहि मन रहिये ॥
> शून्य भींति पर चित्र रंग नहि तनु विन लिखा चितेरे ।

उनका यह पद बड़े महत्व का है। इसमें उन्होंने स्पष्टतया बतला दिया है कि ईश्वर निराकार है और उसने संसार को विना किसी साधन व सामग्री के रचा है । इस संसार को यद्यपि रविकर निकर नीर अर्थात् मृग तृष्णा जल के समान माना है तथापि इस संसार का रंग "धोये मिटै न" अर्थात् कोई अपने कर्मों का फल पाये बिना इससे छुटकारा नहीं पा सकता है चाहे इसको सच माने चाहे झूठा माना जावे। इससे छुटकारा तब ही होगा जब कि मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को पहिचान लेगा । वह वास्तविक स्वरूप किस प्रकार का है, उसके विषय में तुलसीदास जी कहते हैं।

> आनन्द सिन्धु मध्य तव वासा । विनु जानै कस मरसि प्यासा ॥
> मृग भ्रम वारि सत्यजिय जानी । तहं तू मगन भयो सुख मानी ॥
> तहं मगन मज्जसि पान करि त्रयं काल जल नाहीं जहां ।
> निज सहज अनुभव रूप तू खल भूल कर आयो यहां ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मल निरञ्जन निर्विकार निरीह सुख ते परिहर्यो।
निःकाज राज विहाय नृप इन स्वप्न कारागृह पर्यो॥

जीव का स्वभाविक स्वरूप आनन्द रूप है और उसको निर्मल निरंजन निर्विकार सुख स्वभाव से ही प्राप्त है किन्तु उसके मृग-तृष्णा रूपी संसार में पड़ जाने से उसको जैसा स्वप्न में राजा को कारागृह में पड़ने का दुख होता है, वैसा ही दुख होता है! राम चरित मानस में भी जीव को ईश्वर अंश चेतन अमल और सहज सुखराशी कह कर उसको माया वश बन्धन में पड़ा हुआ माना है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुख राशी॥
सो माया वश भयउ गुसाईं। बन्ध्यो कीट मरकट की नाईं॥
जड़ चेतनहि ग्रन्थ परिगई। यदपि मृषा छूटत कठिनई॥
जबते जीव भयउ संसारी। ग्रंथि न छूट न होइ सुखारी॥
श्रुति पुराण बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई॥
जीव हृदय तम मोह विशेखी। ग्रंथि छूट किमि परै न देखी॥
अस संयोग ईश जब करई। तबहुँ कदाचित सो निरुअरई॥

ऊपर की चतुष्पदियों में गोस्वामी जी ने जीव को ईश्वर अंश कहा है किन्तु वह माया वश होने के कारण दुखी है। जड़ चेतन की गांठ के लिये उन्होंने कहा है कि 'यदपि मृषा छूटत कठिनई'— इस कठिनाई से छूटने के लिये ज्ञान और भक्ति के दो उपाय बतलाये हैं उनमें से ज्ञान के पंथ को कृपाण की धार बता कर उसकी अपेक्षा भक्ति को सुलभ साधन माना है। ज्ञान और भक्ति की बड़ी लम्बी व्याख्या द्वारा तुलना करते हुए उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है।

सेवक सेव्य भाव विनु, भव न तरिय उर गारि।
भजहु राम पद पंकज, अस सिद्धान्त विचारि॥

भक्ति को प्रधानता देने के कारण जीव को ईश्वर अंश विमल इत्यादि मानते हुए सेवक सेव्य भाव को स्थिर रखने के लिये उन्होंने ईश्वर और जीव का द्वैत भाव माना है। यही उनकी अनन्यता है, अनन्यता का लक्षण भी ऐसा ही कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो अनन्य जाके असि, मति न टरै हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवन्त॥

इसी अनन्य भाव से उन्होंने नीचे की द्वैत भावात्मक चौपाइयां लिखी हैं—

ज्ञान अखंड एक सीता वर। माया वश जीव सचराचर॥
जो सब के रह ज्ञान एक रस। ईश्वर जीवहिं भेद कहहु कस॥
माया वश जीव अभिमानी। ईश वश्य माया गुण खानी॥
परवश जीव स्ववश भगवन्ता। जीव अनेक एक श्री कन्ता॥
द्विविध भेद यद्यपि कृत माया। बिनु हरि जाय न कोट उपाया॥

तुलसीदास जी ने जीव को ही माया के वश में माना है ईश्वर को नहीं—यहीं पर प्रचलित वेदान्त से उनका मत-भेद है। प्रचलित वेदान्त में ब्रह्म अविद्या वश जीव हो जाता है किन्तु गोस्वामी जी ने ब्रह्म और ईश्वर में कोई भेद नहीं किया। सीतावर रामचन्द्र जी को ही ईश्वर और ब्रह्म माना है और वह माया के वश नहीं। अगर उनको माया के वश माने तो फिर उनकी भक्ति से छुटकारा किस प्रकार से मिलेगा ?

यह बात नीचे की चौपाइयों से भली भाँति प्रकट है।

सो दासी रघुवीर की, समुझे मिथ्या सोऽपि।
छुटै न राम कृपा बिन, नाथ कहौं पद रोपि॥

सो माया सब जगहिं नचावा। जासु चरित लखि काहु न पावा॥
सोई प्रभु भ्रू विलास खगराजा। नाच नटी इव सहित समाजा॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता। अखिल अमोघ एक भगवन्ता॥
सोई सच्चिदानन्द घनश्यामा। अज विज्ञान रूप गुण धामा॥
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता। समदर्शी अनवद्य अजीता॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा। नित्य निरंजन सुख सन्दोहा॥
प्रकृति पार सब उर पुर वासी। ब्रह्म निरीह विरज अविनाशी॥
इहां मोह कर कारण नाहीं। रवि संमुख तम कबहुं कि जाहीं॥

ऊपर की चौपाइयों में तुलसीदास जी के ईश्वर सम्बन्धी विचार पूरी तौर से आगये हैं। इनके विचार में ईश्वर सगुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और निर्गुण दोनों ही है। ईश्वर की सगुणता में उसका अन्त नहीं हो जाता, नहीं तो उसमें परमितता का दोष आ जावे। ब्रह्म और घनश्याम श्रीरामचन्द्रजी की एकता बतलाई है। अन्त में उन्होंने यह भी स्पष्टतया बतला दिया है कि श्री भगवान को माया नहीं व्यापती क्योंकि प्रकाश के पास अंधेरा नहीं रह सकता है।

यद्यपि गोस्वामी जी ने ज्ञान से भक्ति को प्रधानता दी है तो भी उन्होंने सदाचार और सत्कर्म की महिमा कम नहीं रक्खी है। नर तनु पाने का सुअवसर पाकर जो लोग इस अवसर को काम में नहीं लाते उनको बुरा कहा है। परहित के समान उन्होंने कोई धर्म नहीं बताया, पर पीड़ा के समान कोई पाप नहीं बतलाया। कहा भी है कि

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं।
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम् ॥

गोस्वामी तुलसीदास जी क्या कहते हैं:—

नरतनु सम कवनिउ नहिं देही। जीव चराचर याचत जेही ॥
नरक स्वर्ग अपवर्ग नसेनी। ज्ञान विराग भक्ति सुख देनी ॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होइ विषय रत मंद मंदतर ॥
कंचन कांच बदल शठ लेहीं। करते डारि परस मणि देहीं ॥
संत असंतन की अस करणी। जिमि कुठार चन्दन आचरणी ॥
काटे परशु मलय सुन भाई। निज गुण देइ सुगन्ध बताई ॥
विषय अलंपट शील गुणाकर। पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
सम अभूत रिपु विमद विरागी। लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी ॥
कोमल चित्त दीन पर दाया। मम वच क्रम मम भक्त अमाया ॥
सबहिं मान मद आपु अमानी। भरत प्राण सम मम ते प्राणी ॥
पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहि अधमाई ॥
निर्णय सकल पुराण वेद कर। कहेउँ तात जानहिं कोविद नर ॥

इस प्रकार के उत्तम उपदेश देने वाले महात्मा का जीवनादर्श भी देख लीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबहुंक हो यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ कृपालु कृपा ते संत स्वभाव गहौंगो।
यथा लाभ संतोष काहू सों कबहूं कछु न चहौंगो।
पर हित निरत निरंतर मन क्रम वचन नेम निबहौंगो।
परुष वचन अति दुसह श्रवण सुनि तेहि पावक न दहौंगो।
विगत मान सम शीतल पर गुण अवगुण न कहौंगो।
परिहरि देह जनित चिन्ता दुख सुख सम बुद्धि सहौंगो।
तुलसिदास यहि पथ रहि कै अविचल हरि भक्ति लहौंगो।

महात्मा तुलसीदास की श्रेष्ठता उनके उच्च आदर्शों से प्रकट है। जिस जाति और देश में ऐसे महात्मा उत्पन्न हुए उस देश के लोगों का गौरव से शिर ऊंचा है। हमको चाहिये कि ऐसे पुण्यकीर्ति महात्मा के अनुकरण से उनके उपार्जन किये हुए यश की वृद्धि करें।

श्रीभारतेन्दु हरिश्चन्द्र

[ले०—श्री० वियोगीहरि]

जिन तृन सम किय जानि जिय, कठिन जगत जंजाल।
जयतु सदा सो ग्रन्थ-कवि, प्रेम जोगिनी बाल॥

आज भारतेन्दु-जयन्ती है। भारत के कवि कुल कौमुदी-कलाधर का मंगलमय जन्म दिवस है। जैसे शुक्ल पक्ष का चंद्रमा दिन प्रति बढ़ता जाता है, वैसे ही इस साहित्य-सुधाकर की कीर्त्ति कौमुदी हमारे हृदय-गगन में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि को प्राप्त होती रहेगी। समझ में नहीं आता कि, कवियों का और फिर महा कवियों का अथच प्रेममूर्त्ति महात्माओं का जीवन-चरित किस भांति लिखा जाय या कहा जाय। इनका इतिहास संसार के इतिहास से निराला माना गया है। ये विरिंच के प्रपंच से बहुत

यह निबन्ध श्रीभारतेन्दु जयन्ती के अवसर पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में पढ़ा गया था। —सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे निकल गये हैं। इन्हें जरा-मरण का भय नहीं है। ये सरस्वती के सुपूत, भगवान के दुलारे वह अपूर्व कार्य कर जाते हैं, जिसे बड़े बड़े ज्ञानी, धुरंधर पंडित, पहुंचे हुए योगी तथा शूरवीर नहीं कर सकते। इसीसे इनका इतिहास लिखना, इनके संबंध में कुछ खोज करना अत्यंत दुरूह है। अस्तु।

संसार की प्रथा के अनुसार दो चार शब्दों का कह देना अनधिकार चेष्टा में न आ सकेगा। श्री हरिश्चन्द्र का मंगल-कीर्त्तन श्रेयस्कर तो होगा ही, यही सही।

बाबू हरिश्चन्द्र अग्रवाल वैश्य राय बालकृष्ण के कुल में उत्पन्न हुए थे। यह वंश भारत के इतिहास में प्रख्यात है। सेठ अमीचंद इसी वंश में हुए थे। अमीचन्द के फतहचंद, फतहचंद के हर्षचंद्र तथा हर्षचंद्र के पुत्र गोपालचंद्र थे। बाबू गोपालचंद्र ही हमारे चरित नायक के पिता थे। इनका उपनाम गिरिधर दास था। ये परम वैष्णव, सदाचारी एवं सत्कवि थे। ईश्वर कवि, दीनदयाल गिरि, सरदार कवि आदि इनके सभासदोंमें से थे। बड़े बड़े महात्माओं का इनपर स्नेह रहता था। इन्होंने छोटे बड़े चालीस ग्रन्थ लिखे, पर वे सब अब मिलते नहीं। इनकी कविता व्रजभाषा में पुराने ढँग की होती थी। उसमें लालित्य, चमत्कार तथा भगवद्भक्ति की विशेष पुट रहती थी। भक्ति और श्रृंगार के अतिरिक्त गिरिधरदास जी ने विदुरनीति आदि नीति विषय संबंधी भी ग्रन्थ लिखे हैं। यह अनन्य वैष्णव थे। भारतेन्दु जी ने इनकी वैष्णवता के संबंध में लिखा है—

मेटि देव देवी सकल, छांड़ि कठिन कुल रीति।
थाप्यो गृह में प्रेम जिन, प्रगट कृष्णपद प्रीति॥

आत्मा वै पुत्रः के अनुसार इन के सुपुत्र हरिश्चन्द्र में भी पिता के सभी सद्गुण वर्तमान थे। भाद्रपद शुक्ला ७ (ऋषिसप्तमी) संवत् १९०७ को काशी पुरी में हरिश्चन्द्र जी का जन्म हुआ। ९ वर्ष की अल्पावस्था में ही इनके पिता इन्हें छोड़ गोलोक सिधार गये। बालक हरिश्चन्द्र ने बचपन में ही अपनी कवित्व-शक्ति का परिचय देकर पिता से यह कहला लिया था कि 'हरिश्चन्द्र! तू हमारे नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बढ़ायेगा।' हरिश्चन्द्र ने पिता का नाम तो बढ़ाया ही, वरन् भारत मात्र का मुख उज्ज्वल कर दिया। सब से पहले हरिश्चन्द्र जी ने यह दोहा बना कर अपने पिता को सुनाया था—

लै ब्योंड़ा ठाढ़े भये, श्री अनिरुद्ध सुजान।
बानासुर की सेन को, हनन लगे भगवान॥

पिता के स्वर्गस्थ हो जाने के बाद ये बहुत ही स्वतंत्र विचार के हो गये। पढ़ने के लिये कालिज भेजे गये, पर इनका जी वहां न लगा। कुछ दिनों राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद से अँग्रेजी पढ़ी और इसी नाते उन्हें गुरु मानने लगे। कुछ काल तक गुरु चेला की खूब बनी, पर पीछे अनबन हो गयी। राजा साहब 'कंजरवेटिव' थे, तो बाबू साहब 'लिबरल'। फिर अंत तक यह वैमनस्य बढ़ता ही गया और अपनी प्रतिभा द्वारा राजा साहब को जनता की दृष्टि में नीचे गिरा दिया। संवत् १९२२ में आप ने जगदीश पुरी की यात्रा की। वहाँ बड़े वाद विवाद के बाद भैरव मूर्त्ति मंदिर से हटवायी। 'तहक़ीक़ात पुरी की तहक़ीक़ात' इसी का फल है।

बाबू साहब का प्रेम मातृ-भाषा हिंदी की ओर बचपन से ही था। यह रुचि दिनों दिन बढ़ने लगी। और सन् १८६८ में यह मातृ-भाषा प्रेम 'कवि-बचन-सुधा' मासिक पत्र के रूप में साकार दिखाई देने लगा। इसमें चंद्र, देव, जायसी, कबीर आदि कवियों की कविता प्रकाशित होने लगी। पीछे से गद्यात्मक लेख भी निकलने लगे। यह पत्र मासिक से पाक्षिक और फिर साप्ताहिक हो गया। अब इसमें राजनीतिक, सामाजिक आदि विषय भी रहने लगे। कविबचनसुधा का सिद्धांत इस प्रकार था—

खल गनन सों सज्जन दुखी मति होहिं, हरिपद मति रहै।
अपधर्म छूटैं, स्वत्वनिज भारत गहै, कर दुख बहै॥
बुध तजहिं मत्सर, नारि नर सम होहिं, जग आनँद लहै।
तजि ग्राम्य कविता, सुकवि जन की अमृत बानी सब कहै॥

इस सिद्धांत में समाज नीति, राजनीति सब है। धर्म नीति का भी दिग्दर्शन है। यह सब होने पर इनका निजमत सिद्धांत भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झलक रहा है, अर्थात् "हार पद मति रहै"। सच है, बिना ईश्वर-भक्त हुए मनुष्य नैतिक या धार्मिक कैसे बन सकता है?

लोगों के भड़काने के पीछे यह पत्र सरकार की आंख में किर-किरी हो गया। किन्तु महावीर हरिश्चन्द्र इस सरकारी कोप से ज़रा भी विचलित न हुए। जनता ने पत्र का यथोचित आदर किया। अच्छे २ लेखक इसमें लेख दिया करते थे, जिनमें श्री पं० राधाचरण गोस्वामी, लाला श्री निवासदास, पं० बिहारीलाल चौबे, बाबू तोताराम वर्मा, पं० दामोदर शास्त्री आदि लेखक उल्लेखनीय हैं। यह पत्र बाबू हरिश्चन्द्र जी के अंत समय तक अर्थात् सं० १६४२ तक बराबर चलता गया। यह पत्र विलायत तक में प्रशंसा का पात्र बन चुका था। सन् १८७३ में हरिश्चन्द्र मेगज़ीन का जन्म हुआ। इसे भी कई धक्के लगे। इसमें उत्तमोत्तम लेख और कविताएँ प्रकाशित हुईं। १८७४ में बाला-बोधिनी निकली। बाबू साहब ने हिन्दी को इस समय ऐसा सुन्दर रूप दे दिया था, कि जैसा कुछ चाहिए। आपका संपादन भी अपूर्व था। वयोवृद्ध श्री प्रेमघन-जी ने भी एकबार कहा था कि समाचार पत्रोंका संपादन जैसा कुछ भारतेन्दु जी ने किया, वैसा फिर देखने में नहीं आया। बात भी ऐसी ही है। उनके मज़मूनों में जान और भाषा में ज़ोर तथा एक अपूर्व लालित्य मिलता है। पत्र पत्रिकाओं के साथ ही आप की रुचि नाटकों की ओर झुकी। सच पूछिए तो हिन्दी नाटकों के आप जन्म दाता हैं। कर्पूर मंजरी, सत्य हरिश्चन्द्र और चंद्रावली नाटक इसी समय रचे गये। यह नाटक क्या हैं, हिंदी की टक-साल हैं। बाबू साहब ने कल्पनातीत लिखा। यह लिखते समय अपने विषय में ऐसे तल्लीन हो जाते थे कि इन्हें कुछ भी सुध बुध नहीं रहती थी। तल्लीनता ही उत्कृष्ट रचना का परमोत्तम साधन है। हरिश्चन्द्र ने हिंदी को अपनाया और हिन्दी ने इन्हें अपनाया। हरिश्चन्द्र और हिंदी दो तन एक प्राण होगये।

रसिक हरिश्चन्द्र ने विद्वानों, कवियों मित्रों और अनाथों का बड़ा ही उपकार किया। इतनी बड़ी संपत्ति, अपनी उदारता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण, थोड़े ही दिनों में पानी की तरह बहा दी। एक बार इनकी फ़िज़ूल खर्ची पर काशीराज महाराज ईश्वरीप्रसादनारायनसिंह जी ने कहा "बबुआ" घर को देखकर काम किया करो।" बाबू साहब ने निर्भय हो जवाब दिया—"हुजूर! इस धन ने मेरे पूर्वजों को खाया है, अब मैं बदला लेता हुआ इसे उड़ा जाऊँगा।" वाह! क्या ही बदला है! किया भी ऐसा ही। हरिश्चन्द्र ने सबी भोग भोगे, दान दिये, मान सत्कार किये और जो धन से किया जा सकता है, सब किया। किसी चीज के देते समय इन्हें संकोच या दुःख नहीं हुआ। अंत तक अपने वचन निबाहे। धन्य हरिश्चन्द्र! तुम कलियुग में सत्य हरिश्चन्द्र हुए।

यह वचन तुम्हारी ही लेखनी से निकलने योग्य थे—

> चंद्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।
> पै दृढ़ श्री हरिचन्द्र को, टरै न सत्य विचार॥

दृढ़ता और सत्यता के आप साक्षात् रूप ही थे। निस्पृह हरिश्चन्द्र ने अपने हिस्से की सारी संपत्ति दान कर दी। अन्त में फक्कड़ हो गये। बादशाहों के भी बादशाह हो गये। धन्य!

> जो गुन नृप हरिचन्द में, जग हित सुनियत कान।
> सो सब कवि हरिचन्द में, लखहु प्रतच्छ सुजान॥

बाबू हरिश्चन्द्र वल्लभकुल के अनन्य वैष्णव थे। आप ने लिखा है—

> हम तौ मोल लिये या घर के।
> दास दास श्री वल्लभ कुल के, चाकर राधा वर के॥
> माता श्री राधिका, पिता हरि, बन्धु दास गुन कर के।
> हरीचंद तुमरे ही कहावत, नहिं बिधि के नहिं हर के॥

क्या ही ऊँची अनन्यता है! यह सब होने पर भी आप दूसरी संप्रदायों को द्वेष दृष्टि से नहीं देखते थे। कोरे पुरानी लकीर के फकीर नहीं थे। आपने कई जगह वर्तमान प्रचलित कुरीतियों का प्रबल-युक्तियों से खंडन किया है। वर्ण व्यवस्था मानते हुए भी आप छुवाछूत के विषय में लिखते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरस सोला छूत रति, भोजन प्रीति छुड़ाय।
किये तीन तेरह सबै, चौका चौका लाय॥

यह सत्य को ही धर्म का सच्चा रूप मानते थे। इन्होंने अपनी आचरण सम्बन्धी बुरी से बुरी बात भी कभी छिपाई नहीं है। एक स्थल पर कहते हैं—

जगत जाल में नित बँध्यों, पर्यो नारि के फंद।
मिथ्या अभिमानी पतित, झूंठो कवि हरिचन्द॥

अंततः आप 'प्रेम एव परमात्मा' के सिद्धान्त का साक्षात्कार करते हुए लिखते हैं—

भरित नेह नवनीर नित, बरसत सुरस अथोर।
जयति अपूरब घन कोऊ, लखि नाचत मनमोर॥

वह कौन सा अपूर्वघन है, जानते हैं? शायद वह यह घन हो।

नाच अचानक ही उठे, बिन पावस बन मोर।
जानत हौं नंदित करी, इति दिसि नंद किशोर॥—बिहारी

धन्य प्यारे हरिश्चन्द्र, बिना ही पावस के अपूर्व घन के आगे सदा तुम्हारा मन मोर नाचा करता है। तुमने उस प्रेमासव का मज़ा चख लिया है, जिसके आगे स्वयं भगवान भी नाचते हैं। भगवान और भक्तों का परस्पर संबन्ध है। तुम उनके सामने और वे तुम्हारे सामने नाचा करते हैं।

ताहि अहीर की छोहरियां छछिया भर छाछ पै नाच नचावैं।—रसखान

तुम्हें सब जा है। तुम भगवान के दुलारे हो!

अस्तु, समाजसुधार पर आपने कई पुस्तकें लिखीं। प्रेमयोगिनी, अंग्रेज स्तोत्र, जैन कुतूहल, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति आदि पुस्तकों में सामाजिक कुरीतियों का खूब भंडाफोर किया गया है। लोग इनके स्वतंत्र विचारों पर चिढ़ गये और कहने लगे—'दो चार कवित्त बनाय लिहिन, बस होय गवा बिधाता!' पर यह लोगों की वाक्य वाणावली की कुछ भी परवाह नहीं करते थे। यह इनकी दृढ़ता ही थी कि अनेक विघ्न आनेपर भी यह कभी अपने सिद्धान्तों से विचलित नहीं हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने लोकोपकार सम्बन्धी कई प्रशंसनीय कार्य किये थे। सन् १८६८ में आप ने काशी में होमियोपैथिक दातव्य चिकित्सालय अनाथों के लिए स्थापित कराया। संवत् १९२७ में कविता वर्द्धिनी सभा को जन्म दिया। इस सभा में कई नवीन कवि उत्पन्न हुए। उर्दू कवियों के लिए आप ने सन् १८६६ में मुशाइरा स्थापित किया, जिसमें सब के साथ ही साथ आप खुद उर्दू में समस्या पूर्ति करते थे। उर्दू कविता में आप का उपनाम 'रसा' था।

संवत् १९३० में आपने "तदीय-समाज" की स्थापना की। इसके ९ नियम थे। इसके सभासद भारत के प्रसिद्ध धार्मिक पुरुषरत्न थे। इस सभा में बिना टिकट के कोई प्रवेश नहीं कर सकता था, टिकट पर यह दोहा अंकित रहता था—

श्री ब्रजराज समाज को, तुम सुन्दर सिरताज।
दीजै टिकट निवाज करि, नाथ हाथ हित काज॥

इसी समाज में आपने 'वीर वैष्णव' की पदवी धारण की थी। इसमें आपने वैष्णव धर्मानुसार १६ प्रतिज्ञाएं की थीं, जिन्हें आमरण पालन किया।

इस समाज के अतिरिक्त आपने 'हिन्दी-डिबेटिङ्गक्लब' 'यंग मेन्स एसोसियेशन' 'काशी सार्वजनिक सभा' 'वैश्य हितैषिणी सभा' आदि भी स्थापित की थीं। आप सदा देश के साथ रहे। टैक्स लगाए जाने के समय आपने घोर आन्दोलन किया था।

यह तो मैं कह ही चुका हूं कि यह गुणियों का बड़ा आदर करते थे। महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी को केवल एक दोहे पर १००) दे दिये थे। वह दोहा यह है—

राज घाट पर बंधत पुल, जहं कुलीन को ढेर।
आज गये कल देख कै, आजहिं लौटे फेर॥

अनेक ऐसे प्रसंग हैं, जब कि इन्होंने शक्ति से बाहर प्रकट और गुप्त दान किये। यह विद्वानों और कवियों के लिये कल्पतरु थे, इसमें संदेह नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्धन हो जाने पर भो इनकी दान-वीरता न गयी। स्वर्गीय बा० राधाकृष्णदास जी ने लिखा है कि आश्चर्य यह है कि न तो मरने के समय बा० हरिश्चन्द्र अपने पास कुछ छोड़ मरे और न कुछ भी उचित ऋण देने बिना बाकी रह गया ! इनकी इस दशा पर महाराज काशिराज ने जो दोहा लिखा था, उसे मैं नीचे देता हूं—

जद्यपि आपु दरिद्र सम, जानि परत त्रिपुरार।
दीन दुखी के हेतु सोइ, दानी परम उदार ॥

कविता और लेख

बाबू हरिश्चन्द्र को लिखने का बड़ा व्यसन था। डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र ने इनका लेखन-चमत्कार देख कर इन्हें Writing machiue कहा था। कविता शक्ति भी विलक्षण थी। बात की बात में समस्या पूर्ति कर दिया करते थे। महाराणा उदयपुर के दर्बार में बैठे २ यह समस्या पूर्त्ति कर दी थी—

राधा स्याम सेवैं सदा वृन्दावन बास करैं
रहैं निहचिंत पद आस गुरुवर कें।
चाहैं धन धाम ना आराम सों है काम हरिचंद जू
भरोसे रहैं नदंराय घर के ॥
एरे नीच धनी ! हमें तेज तू दिखावै कहा
गज परवाही नाहिं होयं कबौं खर के।
होइ लै रसाल तू भलेई जग जीव काज
आसी ना तिहारे ये निवासी कलपतरु के ॥

क्याही निर्भीकता है ! क्या ही निरपेक्षता है ! अहा ! आसी ना तिहारे ये निवासी कलपतरु के। वास्तव में हरिश्चन्द्र, तुमने संसारी भोग विलासों पर लात मार दी थी। यह कहना तुम्हीं को शोभा देता है।

इसी प्रकार इन्होंने कई बार आन की बान में समस्या पूर्त्ति की थी। अन्धेर नगरी एक ही दिन में लिखी गयी थी। इनके सबी छंद सरस होते थे, पर सवैया तो बे जोड़ ही होता था। श्रद्धेय पं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधाचरण गोस्वामी ने एक बार मुझ से कहा था कि सवैया रचने में बाबू हरिश्चन्द्र एक ही थे। शायद इतना अच्छा सवैया रसखान या ठाकुर ही का हो। इन्होंने छोटे बड़े १७५ ग्रन्थ लिखे, जिनमें बहुत से संगृहीत और संपादित भी हैं। नाटक, इतिहास, भक्ति-रस, चरितावली और काव्यामृत प्रवाह आदि पांचभागों में ये सब ग्रन्थ विभक्त हैं। नाटकों में सत्य हरिश्चन्द्र और चंद्रावली, धर्म सम्बन्धी में तदीय सर्वस्व, काव्यों में प्रेम फुलवारी, ऐतिहासिक में काश्मीर कुसुम और देशदशा में भारत दुर्दशा बड़े ही उत्कृष्ट ग्रन्थ हैं। संगृहीत ग्रन्थों में सुन्दरी-तिलक अपूर्व है। कुछ ग्रन्थ अधूरे भी रह गये, जिनमें से पीछे कुछ की पूर्ति तो हो गयी, पर कुछ ज्यों के त्यों ही पड़े हैं। कुछ अप्रकाशित संग्रह श्रीराधाचरण गोस्वामी के पास भी है। आप कविता की आदर्श भाषा ब्रजभाषा मानते थे। आप ने खड़ी बोली में भी कुछ कविता लिखी थी, पर उसमें सफल न हुए और सिद्धांत रूप से लिख दिया कि खड़ी बोली में मधुर कविता हो ही नहीं सकती है। आपने पद्य और गद्य प्रायः बराबर ही लिखा है। हिंदी के अतिरिक्त आप उर्दू, मारवाड़ी, गुजराती, बंगला, पंजाबी, मराठी, बनारसी, आदि प्रांतीय भाषाओं में भी सरस कविता कर लिया करते थे। आप वर्त्तमान हिंदी के जन्मदाता थे, इसमें किंचिन्मात्र संदेह नहीं। माना कि तबसे हिंदी में अनेक परिवर्तन हुए और होते जा रहे हैं, किन्तु हिंदी को नवीन एवं परिष्कृत रूप आपने ही दिया। आपने हिंदी की एक परीक्षा भी खोली थी, पर कुछ दिनों के बाद वह बंद हो गयी। इसी प्रकार वैष्णव ग्रन्थों की तीन परीक्षाएँ चलायी थीं, जो प्रविष्ट, प्रवीण और पारंगत नाम से प्रख्यात थीं। इन परिक्षाओं में चारो वैष्णव संप्रदायों के तात्विक ग्रन्थ पढ़ाये जाते थे। परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को पारितोषक भी नियत किया गया था। आपकी असीम और अप्रतिम हिंदी साहित्य-सेवा देख कर देश ने आप को 'भारतेन्दु' की पदवी से सन् १८८० में विभूषित कर दिया। विलायत के विद्वान भी मुक्तकंठ से इन्हें Poet Laureate of Northern India कह कर पुकारने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने अपनी अनुपम प्रतिभा द्वारा काव्य में चार नवीन रस माने थे। वात्सल्य, सख्य, भक्ति और आनंद को नवरसों से सर्वथा भिन्न सिद्ध किया था। तर्करत्न महोदय ने भी एक स्थल पर इन रसों को प्रमाण स्वरूप मानकर लिखा है—"हरिश्चन्द्रास्तु वात्सल्य सख्य भक्त्यानंदाख्यमधिकं रस चतुष्टयं मन्यते।" इसी प्रकार काव्य पद्धति में इन्होंने बाल की खाल खींची है।

यह मैं कह ही चुका हूं कि यह प्रेम मूर्ति थे। प्रेम इनका इष्ट देव था। वियोग श्रृंगार पर इनकी कविता अनूठी है। चंद्रावली नाटिका इनके आंतरिक सिद्धान्तों की प्रतिमूर्ति है। इस नाटिका का अनुवाद पंडितवर गोपाल शास्त्री ने संस्कृत में भी किया था। वास्तव में, यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। खेद का विषय है, आज कल के कुछ सरस्वती के सुपूतों का यह कहना है कि यह पुस्तक अश्लील है। न जाने मेरी अक़ल पर क्या पत्थर पड़े हैं कि आजतक इन महात्माओं के अश्लील शब्द का अर्थ समझ में न आया। कवि कोकिल जयदेव, महाकवि कर्णपूर, रूप, सनातन गोस्वामी, सूरदास, हरिदास, हरिवंश आदि त्यागी महज्जनों ने जिस अप्राकृत साहित्य का निर्माण किया है, मैं ज़ोरों से कहने को तय्यार हूं कि उसे वृहस्पति भी अश्लील सिद्ध नहीं कर सकता, औरों की गिनती ही क्या? सौन्दर्योपासना बुरी नहीं हैं। और फिर सौन्दर्योपासना किसकी, प्रेम माधुरी किसकी? प्रेम देव भगवान श्री कृष्ण की, भोली भाली प्रेम मतवाली गँवार गोपियों की। पर हां, इस रस के सबी अधिकारी नहीं हैं। इस रस की माधुरी वेही चख सकते हैं, जिन्होंने रसिक हरिश्चन्द्र के इस पद के साथ अपना स्वर मिला दिया है—

श्री राधा माधव युगल प्रेम रस का अपने को मस्त बना।
पी प्रेम पियाला भर भर कर कुछ इस मै का भी देख मज़ा॥
इतबार न हो तो देख न लो, क्या हरीचंद का हाल हुआ।
पी प्रेम पियाला भर भर कर, कुछ इस मै का भी देख मज़ा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिचंद्र का क्या हाल हुआ ? आक़िल से बेवक़ूफ़, पंडित से मूर्ख और चतुर से पागल कहे जाने लगे। जिसे पागल बनना मंजूर हो, वह तुम्हारी इश्क़े शराब को पी कर चंद्रावली पढ़े।

आप प्रेमियों की उन्मत्तता की फोटू नीचे के सवैया में खींच रहे हैं—

हम हूं सब जानती लोक की चालन, क्यों इतनी बतरावती हौ ?
हित जामें हमारो बनै सो करौ, सखियां तुम मेरी कहावती हौ।
हरिचंद जू या में न लाभ कछू, हमें बातन क्यों बहरावती हौ।
सजनी मन हाथ हमारे नहीं, तुम कौन कौ का समझावती हौ ?

देखा, कैसी वीरोक्ति है ! अब तुम्हारा समझाना बुझाना कारगर न होगा। तुम्हारा अश्लीलता २ पुकारना सुनता ही कौन है ? जो अपने प्रेमी के साथ एक रूप हो गया, उसमें तल्लीन हो गया, क्या उसका प्रेम अश्लील है ? देखिये—

कान्ह भये प्रान मय, प्रान भये कान्ह मय,
हिय में न जान परै कान्ह है कि प्रान है।

यह सुधासूक्ति बा० हरिश्चन्द्र की ही है। अस्तु।

यह नाटिका आदि से अंत तक उत्तरोत्तर सरस और हृदय वेधिनी होती गयी है। यमुनाजी का वर्णन बड़ा ही अनोखा है। स्थान स्थान पर प्रेम के गम्भीर रहस्य मर्मस्पर्शी छंदों में लिखे गये हैं। मन की पीड़ा मन ही जानता है, मर्म सुनने वाले संसार में विरले ही हैं, इसे लक्ष्य में रख कर भारतेन्दु जी क्या ही मार्के का पद लिख गये हैं—

मन की कासों पीर सुनाऊँ।
बकनो वृथा और पत खोनी सबै चबाई गाऊँ॥
कठिन दरद कोऊ नहिं हरिहै, धरिहै उलटो नाऊँ।
यह तो जो जानै सोई जानै, क्यों करि प्रगट जनाऊं॥
रोम रोम प्रति नैन स्रवन मन, केहि धुनि रूप लखाऊँ।
बिना सुजान सिरोमनि री किहि हियरो काढ़ि दिखाऊँ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरमिन सखिन वियोग दुखिन क्यों कहि निज दसा रोआऊँ।
हरीचन्द पिय मिलैं तो पग परि गहि पटुका समुझाऊँ॥

बस, अब कुछ नहीं लिखा जा सकता। हरिश्चन्द्र ने चीड़ कर अपना कलेजा सामने रख दिया है। जो आंख वाले हों, देख लें, कि चन्द्रावली में वे क्या लिख गये हैं? भक्तवर हरिश्चन्द्र की प्रेम-कहानी कहां तक कही जा सकती है। सच पूछिये, तो प्रेम की यत्किञ्चित् व्याख्या कर देनी ही हरिश्चन्द्र की जीवनी का लिखना है। समय थोड़ा है, बात अधिक है। सारांश यह है कि कविता-प्रेमियों को और केवल प्रेमियों को कम से कम एक बार भारतेन्दु जी के भक्तिग्रन्थों का अवलोकन कर जाना चाहिए।

भक्ति-सुधा-सागर में डूब जाने पर भी इन्होंने समाज सुधार, देशभक्ति आदि पर उत्तमोत्तम रचनाएँ की हैं। भारत दुर्दशा नाटक करुणा की साक्षात् मूर्त्ति ही है। उसे पढ़कर कलेजा कांप उठता है, आंसुओं की झड़ी बँध जाती है। मेरी तो यह धारणा है कि इतने भारी वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन में भी वैसी अच्छी राष्ट्रीय कविता के लिखने में कोई कृतकृत्य नहीं हुआ। इसका कारण यह है कि भारतमाता ने वैसा मर्मस्पर्शी हृदय वाला राष्ट्र भाषा-भक्त पुत्र फिर नहीं जना। शृङ्काररस के तो आप उस्ताद ही थे, पर मौके मौके पर आपने प्रत्येक रस को यथेष्ट अङ्कित किया है। वीररस की भी बानगी देख लीजिए—

उठहु बीर रण साज साजि जय धुजहिं उड़ाओ।
खैंहु म्यान सों खड्ग खींचि रण रंग जमाओ॥
परिकर कटि कसि उठौ धनुष सों धरि सर साधौ।
केसरिया बानौ सजि सजि रन कंकन बांधौ॥
जो आरजगन एक होय निज रूप बिचारैं।
तजि गृह कलहहिं अपनी कुल मरजाद सँभारैं॥
तौ अमीर खां नीच कहा याको बल भारी।
सिंह जगे कहुँ स्वान ठहरिहैं समर मँझारी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठहु बीर सब अस्त्र साजि माड़हु घन संगर।
लोह-लेखनी लिखहु अज्ज बल दुवन हृदै पर॥

इन्हें जातीयता पर बड़ा प्रेम था। सदा स्वाधीनता के उपासक रहे। जातीयता और देशभक्ति संबन्धी लेखों और कविताओं का अंकुर भारतीय-नवयुवकों के हृदय में इन्होंने ही जमाया। भारत की दुर्दशा पर दो एक कविताएँ सुनिये, कैसी ज़ानदार हैं—

सेवा जी रनजीत सिंह हूँ, अब नहिं बाकी जौन।
करिहैं कछू नाम भारत को अब तो सब नृप मौन॥
वही उदैपुर जैपुर रीवां, पन्ना आदिक राज़।
परबस भये न सोच सकहिं कछु करि निज बल बेकाज॥

और भी—

सबै सुखी जग के नरनारी। रे बिधिना भारतहि दुखारी॥
कासी प्राग अयोध्या नगरी। दीन रूप सम ठाढ़ीं सिगरी॥
हाय पञ्चनद हा पानीपत। अजहुँ रहे तुम धरनि बिराजत॥
हाय चितौर निलज तू भारी। अजहुँ खरो भारतहिं मँझारी॥
तुम में जल नहिं जमुना गंगा। बढ़हु बेग कर तरल तरंगा॥
धोवहु इहि कलंक की रासी। बोरहु किन झट मथुरा कासी॥
धोवहु भारत अपजस पंका। मेटहु भारतभूमि कलंका॥

हाय!

कोउ नहिं पकरत मेरो हाथ।
तीस कोटि सुत होत फिरत मैं हाहा होय अनाथ॥
जाकी सरन गहत सोइ मारत, सुनत न कोउ दुखगाथ।
दीन बन्यों इत सों उत डोलत टकरावत निज़ माथ॥
दिन दिन बिपति बढ़त सुख छीजत देत कोउ नहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर में डूबत, धाइ उबारौ नाथ॥

आप की देश भक्ति एवं साहित्य सेवा देख कर हिन्दी में एक छोर से दूसरे छोर तक नया प्रवाह बह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमघन जी की आनंद कादंबिनी, पं० प्रताप नारायण का ब्राह्मण, पं० बालकृष्ण भट्ट का हिन्दी प्रदीप, पं० राधाचरण गोस्वामी का भारतेन्दु आदि पत्र पत्रिकाओं ने खूनेजिगर से राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा की। इस सब प्रेरणा का श्रेय भारतेन्दु जी पर ही है।

लाला श्रीनिवास दास आप की प्रेरणा से हिन्दी लिखने लगे। पं० राधा चरण गोस्वामी ने आप को कविता में अपना उस्ताद मान लिया। पं० प्रताप नारायण मिश्र तो आप पर ऐसे लट्टू हो गये कि कुछ पूंछिए ही नहीं। हरिश्चन्द्र जी को आपने "पूज्यपाद" "हरिश्चन्द्रायनमः" आदि तक आदर की दृष्टि से लिख डाला। बाबू साहब के स्वर्गस्थ होनेपर मिश्र जी ने हरिश्चन्द्र-संवत् लिखना तक आरंभ कर दिया था। संगीत शाकुंतल में मिश्र जी ने कैसे गर्व के साथ लिखा है—

श्री मुख जासु सराहना, कीन्हीं श्रीहरिचंद।
तासु कलम-करतूति लखि, लहै न को आनंद॥

खड़ी बोली के पद्य पर समालोचना करते हुए पूज्य मिश्र जी लिखते हैं—

"आधुनिक कवियों के शिरोमणि भारतेन्दु जी से बढ़ के हिन्दी भाषा का आग्रही दूसरा न होगा। जब उन्हीं से खड़ी बोली में मधुर कविता न हो सकी, तो दूसरों का यत्न निष्फल है। बांस को चूसने में यदि रस का स्वाद मिल सकै, तो ईख बनाने का परमेश्वर को क्या काम था?" इत्यादि

अभिप्राय यह, कि पं० प्रताप नारायण मिश्र की इन पर असीम श्रद्धा थी। इसी प्रकार अपनी प्रखर प्रतिभा और चरित्र द्वारा भारतेन्दु जी ने सबी हिन्दी-भाषा-भाषियों के हृदय में उच्चस्थान प्राप्त कर लिया था।

इनके स्वभाव में अनेक विलक्षण गुण थे। प्रेम तो हृदय में कूट कूट कर भरा ही था, साथ ही दया, अक्रोध, सहन शीलता, दृढ़ता आदि सद्गुणों के होते सोने में सुगंध हो गयी थी। सदा हँसमुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते थे। व्यवहार सीधा सच्चा था। अहंकारी के सामने पलभर भी खड़े नहीं हो सकते थे, पर गुणियों की खिदमतगारी करने को तयार रहते थे। आपने स्वयं अपना स्वभाव नीचे के कवित्त में वर्णन कर दिया है—

> सेवक गुनी जन के चाकर चतुर के हैं,
> कवित के मीत चित हित गुन गानी के।
> सीधेन सों सीधे, महा बांके हम बांकेन सों,
> हरीचंद नगद दमाद अभिमानी के॥
> चाहिबे की चाह, काहू की न परवाह नेही,
> नेह के, दिवाने सदा सूरत निवानी के।
> सरबस रसिक के सुदास दास प्रेमिन के,
> सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के॥

यही भारतेन्दु जी का स्वभाव था। कई लोगोंको इनका उद्धत और रसिक स्वभाव अच्छा नहीं लगता था। इस पर सत्याभिमानी हरिश्चन्द्र प्रेमयोगिनी नाटिका में सूत्रधार के मुख से अपने सम्बन्ध में कहलवाते हैं—

"क्या सारे संसारके लोग सुखी रहें और हम लोगोंका परम बंधु, पिता, मित्र, पुत्र, सब भावनाओं से भावित, प्रेम की एक मात्र मूर्त्ति, सौजन्य का एक मात्र पात्र, भारत का एक मात्र हित, हिन्दी का एक मात्र जनक, भाषा नाटकों का एक मात्र जीवनदाता हरिश्चन्द्र ही दुखी हो? हा सज्जन शिरोमणे! कुछ चिंता नहीं; तेरा तो बाना है कि कितना भी दुःख हो सुख ही मानना; लोभ के परित्याग के समय नाम और कीर्ति तक का परित्याग कर दिया है और जगत से विपरीत गति चलके तूने प्रेम की टकसाल खड़ी की है। क्या हुआ जो निर्दय ईश्वर तुझे प्रत्यक्ष आकर अपने अंक में रख कर आदर नहीं देता और खल लोग तेरी नित्य नयी एक निंदा करते हैं; तुझे इससे क्या? प्रेमी लोग जो तेरे हैं, और तू जिन्हें सरबस है, वे जब जहाँ उत्पन्न होंगे, तेरे नाम को आदर से लेंगे और तेरी रहन सहन को अपनी जीवन-पद्धति समझेंगे। मित्र! तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो दूसरों का अपकार और अपना उपकार दोनों भूल जाते हो। तुम्हें इनकी निंदा से क्या? इतना चित्त क्यों क्षुब्ध करते हो? स्मरण रखो, ये कीड़े ऐसे ही रहेंगे और तुम लोक बहिष्कृत होकर भी इनके सिर पर पैर रख के बिहार करोगे। क्या तुम अपना यह कवित्त भूल गये—'कहैंगे सबै ही नैन नीर भरि भरि पाछें प्यारे हरिचंद की कहानी रहि जायगी।'

मित्रो! क्या आप कभी हरिश्चन्द्र की कहानी याद करते हैं, क्या उनके नाम पर कभी दो बूँद आँसू गिराते हैं? कौन ऐसा सहृदय साहित्य रसिक होगा कि जो प्यारे हरिश्चन्द्र की प्रेम-कहानी याद कर के आँसू न बहाता हो? आज हमारे सामने पार्थिव रूप से भारतेन्दु जी नहीं हैं, पर उनकी प्रेममूर्त्ति, उनकी साहित्य मूर्ति हमारे नेत्रोंमें, हमारे हृदयमें, हमारी आत्मा में आज भी अंकित हो रही है। उनके नाम पर आंसू गिराने का यही अर्थ है कि हम सब उनके निर्दिष्ट पथ पर चलें। वह पथ कौन सा है? मातृ-भाषा हिन्दी का उद्धार, साहित्य की सेवा, प्रेम की पूजा।

प्यारे भारतेन्दु! तुम्हारा अस्त नहीं हुआ है। तुम आज भी हमारे सामने विराजमान हो। श्री प्रेमघन जी, श्री राधाचरण जी, श्री विजयानन्द जी तथा श्री श्रीधर जी (हमारे सभापति महोदय) तुम्हारी कलाएँ हैं। हे कवि-कुल-कौमुदी-कलाधर! हम लोगों पर अपने उस धवल प्रकाश को डालो, जिसके सहारे हम हिन्दी-साहित्य की समुचित सेवा कर सकें।

हम लोगोंने अपनी शिथिलता और कायरता वश अभी तक हिन्दी-साहित्य की यथेष्ट सेवा नहीं की है। आज हम में से बहुत से लोग प्राचीन साहित्य की अवहेलना करते हुए भविष्य के शुभ स्वप्न का दर्शन कर रहे हैं। पर ऐसा करना हानिकारी है। प्राचीन हिन्दी-साहित्य की ओर निरपेक्षता की दृष्टि से देखना अपने पैरों खुद कुल्हाड़ी मारना है। उस साहित्य को, उस सुमधुर भाषा को कौन भुला सकता है, जिसमें सूर, तुलसी, चंद, कबीर, देव, भूषण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहीम, हरिश्चन्द्र आदि ने भारतवर्ष की अप्रतिम सेवा की है? किसी का कथन है, कि अब वे दिन गये। प्राचीन साहित्य के लिये आँसू बहाना व्यर्थ है। पर आज साहित्य-सम्मेलन में भारतेन्दु जयन्ती का समारोह देख कर मेरा तो यह कहना है कि वे दिन गये नहीं, वरन् लौट रहे हैं। निम्न लिखित पद को सुना कर मैं अपने भाषण को समाप्त करता हूं—

जयति जय भारतेन्दु हरिचन्द।
कवि कुल कुमुद कलाधर पूरे प्रेममाधुरी कन्द॥
कृष्ण रास रस रसिक रँगीले अलबेले अलि प्यारे।
कविता कामिनि कंत कविन के सरबस हृदय दुलारे॥
सहज सनेही नेही जन के अभिमानिन सों बांके।
सखा भावते नन्द लला के, सेवक श्री राधा के॥
दूजे कर्ण दान में, दूजे हरीचन्द सतधारी।
मुख प्रसन्न तनु पुलकि नैन जल दीन हीन हितकारी॥
चंद्रावली चकोर, चोर चित प्रेम वाटिका-माली।
जन तदीय-सर्वस्व लाड़िले, चढ़ी लाल की लाली॥
शुभ जातीय भाव के भावुक भारत के उजियारे।
नाटक नागर जगत उजागर आगर गुनगन न्यारे॥
सजन सगे हिन्दी हिन्दुन के जय साहित्य-उधारी।
'हरि' के हरीचन्द मन भावन बलिहारी बलिहारी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेताबजी की बेताबी

[लेखक—श्रीयुत लाला भगवानदीन]

दिल्ली निवासी बा० नारायण प्रसाद 'बेताब' ने 'पद्य-परीक्षा' नाम की एक पुस्तक लिखी है। इसमें आपने हिन्दी के वर्तमान कवियों पर बड़ी दया की है। इस परिश्रम के हेत हम आपकी प्रशंसा करते हैं। इस अकारण दया का सच्चा कारण तो ईश्वर जाने, पर हमारी समझ में तो यह आया कि 'बेताब' जी ज़माने की रफ़्तार समझने में बड़े पटु हैं। हिन्दी की बढ़ती कला देख आप उर्दू का पल्ला छोड़ हिन्दी की शरण में आ गये हैं। नवयुवकों में धाक जमाने का ढंग सोचा है। 'बेताब' जी का दोष नहीं, स्वार्थ साधक समय का दोष है।

'बेताब' महाशय ने अरबिस्तान से तराज़ू और बाँट लाकर हिन्दी छंदों को तौलना शुरू किया है। हम इस बात की ज़रूर तारीफ़ करेंगे। परन्तु साथ ही हम यह भी कहने के लिये मजबूर हैं कि आप का हिन्दी कविता सम्बन्धी ज्ञान अभी तक मुब्तदियों का सा ही है। यदि हिन्दी काव्य सागर का अवगाहन करके ऐसा करते तो अच्छा होता। हिन्दी व्याकरण से भी आप कोरे ही जान पड़ते हैं। आप ने हिन्दी काव्य-सागर का अवगाहन किया ही नहीं, हम इसलिये कहते हैं कि यह बात आप ही के दावे से प्रमाणित हो जाती है। आपने श्रीयुत पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय द्वारा प्रयोग किये हुए 'रसना' शब्द के संबंध में अपनी पुस्तक के पेज ४८ में एक फुट नोट लिखा है। वह यों है:—

"रसना इन्द्रिय से चखने का काम लिया जाता है न कि कहने का। इसका प्रयोग किसी कवि ने नहीं किया। किया है तो उपाध्याय जी दिखायें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाह बेताब जी वाह! इतना बड़ा दावा? 'किसी कवि ने नहीं किया'। शागिर्दों में ज़रूर आपकी धाक जम जायगी। पर हम कहते हैं, कि हुज़ूर बेताब जी, आपने हिन्दी काव्य ग्रंथों को पढ़ा ही नहीं। आप हिन्दी जानते ही नहीं। आपका दावा बातिल है। सुनियेः—

(तुलसी कृत विनय पत्रिका पद नम्बर २३७ देखिये)

काहे न रसना रामहि गावै।
निस दिन पर अपवाद वृथा कत रटि रटि राग बढ़ावै।

(साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'संक्षिप्त-सूरसागर' पद नंबर २४५ देखिये)

'रसना युगल रसनिधि बोल'

और सुनिये, जान पड़ता है कि आपने 'आलम' का प्रसिद्ध सवैया भी नहीं सुना।

"जाथल कीन्हे विहार अनेकन ता थल काँकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना सों करी बहु बात सु ता रसना सों चरित्र गुन्यों करैं॥
आलम जौन सी कुंजन में करी केलि तहां अब सीस धुन्यो करैं।
नैनन में जु सदा बसते तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करैं॥

कहिये महाशय बेताब जी, किस बिरते पर तत्ता पानी। बतलाइये तो सही, क़सम है ख़लील बिन अहमदे बसरी की, इन पदों को आपने कभी पढ़ा भी था? यहां पर 'रसना' से चखने का काम लिया गया है या कहने का?

आपकी हिन्दोदानी और व्याकरणदानी का भी नमूना आप की उसी पुस्तक में मौजूद है। हलन्त (साकिन) के लिये आपने 'नस्वर' शब्द गढ़ा है। अस्वर या स्वरहीन तो व्याकरण से सिद्ध हो सकते हैं। 'नस्वर' कैसे सिद्ध होगा सो ईश्वर जाने या ख़लील जी (देखिये अपनी पुस्तक पेज २१ और ८६)। 'एकाक्ष' के स्थान पर आपने 'एकाक्षी' लिखा है (पेज ३१)। व्याकरण तो दूर रहा, आपको हिन्दी के शब्दों की शुद्ध 'हिज्जे' तक भी तो नहीं आती—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखिये पेज १०६ में आपने दुनिया को दुन्या लिखा है और पेज १११ में 'निषेध' को 'निषेद'।

यदि आपने केवल पद्यों की परीक्षा ही करके अपने दिल को खुश कर लिया होता, तो हम कुछ भी न लिखते, पर आपने हमसे कुछ जवाब भी तलब किये हैं। अतः आपके संतोष के लिये हम अपने ऊपर किये हुये आक्षेपों का उत्तर लिखने को मजबूर हैं। आपने हमारे ऊपर १३ एतराज़ किये हैं। अच्छा तो अब नंबरवार जवाब सुनिये।

(१)—"खिल रही है आज कैसी भूमि तलपर चाँदनी।
खोजती फिरती है किसको आज घर घर चाँदनी॥
घन-घटा घूंघट उठा मुसकाई है कुछ ऋतु शरद।
मारी मारी फिरती है इस हेतु दर दर चाँदनी"॥

बेताब जी! इस छंद का नाम है 'लालाशाही'। यह छंद उस पिंगल का है जिसे आपने अभी तक पढ़ा नहीं। छंदों की कहतसाली रेगिस्तानी इल्म उरूज़ के चेलों के लिये हुआ करती है। भारत जैसे ज़रखेज़ मुल्क के पिंगलाचार्य के चेले २६ मात्राओं से १९६४१८ छंद बना सकते हैं। क्या आप कह सकते हैं कि २६ मात्राओं के प्रस्ताव में यह पद्य कोई भी छन्द नहीं हो सकता? इसके दूसरे चरण में 'है' की आप दो मात्रा क्यों गिनते हैं? ध्वनि के मुताबिक उसे लघु मान कर एक मात्रा ही के बराबर मानने से हमें आप रोक नहीं सकते हैं। चौपाई छंद को आपको ज़रूर ही मात्रिक छंद मानना पड़ेगा। तुलसीदास जी की नजीर भी आप काट नहीं सकते। सुनिये :—

"मोहिँ मग चलत न ह्वै है हारी। छिन छिन चरण सरोज निहारी"।
अब मोहिँ भा भरोस हनुमंता। बिनु हरि कृपा मिलैं नहिं संता।

इनमें 'मोहिँ' शब्द की आप कितनी मात्रा मानेंगे? दो या तीन? ध्वनि के अनुसार दीर्घ को लघु मानना हमारी इच्छा पर निर्भर है। इसे भी न मानिये तो आप अपने गुरु श्री 'शंकर' जी का ही सवैया सुनिये:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भरिबो है समुद्र को शंबुक में छिति को छिगुनी पर धारिबो है।
बँधिबो है मृणाल सों मत्त 'करी' जुही फूल सों शैल बिदारिबो है॥
गनिबो है सितारन को कवि 'शंकर' रेणु सों तेल निकारिबो है।
कविता समझाइबो मूढ़न को सविता गहि भूमि पै डारिबो है॥

जान पड़ता है, श्री शंकर जी ने आपही जैसे लोगों के लिये यह छंद लिखा है। ज़रा उन्हीं से पूँछिये कि इस सवैया में बड़े 'टाइप' वाले अक्षरों की गणना ह्रस्व है वा दीर्घ ? वही काम आप के गुरु जी करें, वह तो दुरुस्त, और हम करें तो ग़लत ! यह कौन सी बात ?

(२) आप का दूसरा एतराज़ हमारे 'मेहँदी' शब्द पर है। इस एतराज़ को निहायत ज़ोरदार करने के लिये आपने 'कोश' और उर्दू शायरों की शहादत दी है। हम कहते हैं कि हुज़ूर, आपने इतना परिश्रम व्यर्थ किया। हम 'महँदी' शब्द को 'मेंहँदी' लिख सकते हैं। हमारा छंद शास्त्र हमें ऐसा करने का अधिकार देता है। यदि आप नहीं मानते तो तुलसी दास जी ने 'सिय, सिया, सीया' शब्द कैसे लिखे ? आप अपने गुरु शंकर जी ही से पूछिये कि अपने सवैया में उन्हों ने 'करि' शब्द को 'करी' क्यों लिखा। उर्दू वाले शायर 'युक्ति' को 'जुगत' 'शक्ति' को 'सकत' और 'नारायणप्रसाद' को 'नरायन-परशाद,' 'हिसाब' को 'हसेब,' 'किताब' को 'कतेब' और 'रिकाब' को 'रकेब' क्यों लिखते हैं ? हमारे 'पद्माकर' जी ने ठीक हमारे ही तलफ़्फ़ुज़ से इस शब्द का प्रयोग किया है। उदाहरण देखना हो तो 'भानु' कृत 'काव्यप्रभाकर ग्रंथ के पेज ३५१—३५२ में देख लीजिये। यदि आप कहें कि हम उन शब्दों को 'महँदी' पढ़कर भी तो काम निकाल सकते हैं। तो हम कहेंगे कि वह केवल काम निकालना ही होगा, काव्य मर्मज्ञता नहीं। कविताप्रवाह की हत्या हो जायगी, पद्माकर की योग्यता में धब्बा लग जायगा। हम दावे के साथ कहते हैं कि इन छंदों में पदमाकर ने 'मेंहदी' शब्द ठीक उसी उच्चारण से लिखा है जिसका प्रयोग हमने किया है। बस यही हमारी काव्य मर्मज्ञता है।

(३) "कहो तो आज कहदें आपकी आंखों को क्या समझें"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस छंद की 'वह्र' के बारे में आपको एतराज़ है। अजी, कह तो दिया कि अरबी ऊंटों की हमें जरूरत नहीं। छंदों की कहतसाली हमारे यहां हो ही नहीं सकती। २८ मात्रा के प्रस्तार में जिसमें ५१४२२९ प्रकार के छंद बन सकते हैं, यह भी एक छंद है। 'नहीं हो सकता' यह कौन कह सकता है ? ऐसा कहने का मजाज किसी को है ही नहीं।

(४) यह एतराज़ भी सारहीन है। 'सह्र' शब्द को हमने 'सहन' कर लिया तो कौन सा पाप कर डाला ? मग्न को मगन, दग्ध को दगध, तख़्त को तखत, भक्त को भगत कर लेना कोई पाप है ? हिन्दी में ऐसा सर्वत्र होता है। ऐसा करने का हमें अधिकार है, कोई भी रोक नहीं सकता।

'मगन में' की मुहावरे दानी पर एतराज भी बिल्कुल तुच्छ है। काशी, मथुरा अयोध्या, चित्रकूट की गलियों में घूमिये और सुनिये तो अनेक साधुजन कहते डोलते हैं—"राम राम कहना। सदा मगन में रहना"। इस साधु भाषा को आप बदमुहावरा कहें, हम नहीं कह सकते।

(५) पांचवाँ एतराज़ भी बिल्कुल हेच है। जनाब 'बेताब' जी, हिन्दी कवियों ने 'नर्द' और 'मर्द' शब्दों को 'नरद्द' और 'मरद्द' तक लिखा है; हमने 'नरद' और 'मरद' लिखा तो कौनसा महा पाप किया ? पर आपने प्राचीन हिन्दी कविता तो देखी नहीं। आपको तो मतलब है केवल दूसरों पर झूंटे एतराज़ जड़कर अपने चेलों में अपनी धाक जमाना।

(६) छठां एतराज भी पोच है। 'सुर्ख' शब्द को हिन्दी कवियों ने सैकड़ों जगह 'सुरुख' लिखा है। अभी कुछ और पढ़िये। आपके इन बेजा एतराज़ोंसे हमारा कुछ बिगड़ेगा नहीं, बल्कि आपकी बेताबी और नादानी ही जाहिर होगी।

(७) सातवें एतराज में भी आप वही मुसद्दस, रदीफ और क़ाफ़िया की दुहाई देते हैं। अजी बेताब जी ! क़ाफ़िया तंग हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है उर्दूवालों का। हमारे यहां तो एक मात्रा तक का तुकान्त जायज़ है।

(८) आठवाँ एतराज़ भी सातवेँ की तरह रद्दी ही है।

(६) नवां एतराज़ केवल छापे की ग़लती है।

(१०) आप बार बार वही क़ाफ़िया की बात कहते हैं। हमारे यहां काफ़िया कोई चीज़ ही नहीं है। हम उसकी पाबंदी क्यों करें? हां, इतना हम भी मानते हैं कि अगर काफिया की पाबंदी हो सके तो कविता की धारा अच्छी हो जायगी, मगर पाबंदी न की जाय तो आप उसको दूषित नहीं कह सकते।

(११) ग्यारहवां एतराज़ बड़े मारके का है। हमने लिखा है:—

"यह सारी कथा कहना अभिप्राय नहीं है।
वीरत्व से मतलब है जो इतिहास सही है।"

आपका एतराज़ है कि 'नहीं' और 'सही' का काफिया ठीक नहीं, आपके एतराज़ों से मालूम होता है कि आपकी पहुंच उर्दू के लिहाज से सिर्फ काफिया तक है। प्राचीन हिन्दी कवियों के अधिकारों की तो आपको कुछ खबर है ही नहीं।

सुनिये बेताब जी, बूँदी निवासी बूढ़े 'गुलाब' क्या कहते हैं:—

"इन्दु उदोत भयो अति पूरन जौन्ह चहूं दिस फैल रही है।
चैन चकोर कुमोदिन के उर कोकरु कंज ससोक सही है।
भूलि रही केहि भांति भट्ट लखि बात 'गुलाब' विचारि कही है।
पूरनिमा निसि कातिक की यह भादँव की सुदि चौथ नहीं है।

जनाब मुअल्ला अल्क़ाब, मुतखल्लिस ब-बेताब जी! कहिये, है आप की कूवत कि इस छंद को आप हिन्दी साहित्य से बाहर कर दें? यदि नहीं है, तो फिर हमने क्या पाप किया जो नहीं के साथ सही का तुकान्त मिला दिया?

(१२) बारहवाँ एतराज़ भी टुटरू टूँ है। हमने 'जगतेश' लिखा है। आप कहते है कि किस व्याकरण से? हम कहते हैं कि उस व्याकरण से जिसको आपने अभी तक पढ़ा ही नहीं है। हम जानते हैं कि 'जगत्' से 'जगदीश' बनता है। पर आप नहीं जानते कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में कोई शब्द 'हलन्त' नहीं माना जाता। तखत से तखतेश, बखत से बखतेश, प्राचीन कवियों ने लिखा है। तब हलन्त 'जगत्' शब्द को यदि हम 'जगत' (जिसमें 'त' सस्वर है) मानें तो जगत + ईश से कौन शब्द सिद्ध होगा? अभी कुछ रोज़ हिन्दी और पढ़िये।

(१३)—तेरहवाँ एतराज़ भी आपकी नादानी पर साद है। यदि आप 'शंका' और 'अशंका' शब्द में लाटानुप्रास का मज़ा नहीं समझ सकते, केवल क़ाफ़िया की तंगी की शिकायत है तो हम क्या करें?

ज़्यादा अच्छा होता कि बेताब जी कुछ रोज़ हिन्दी कविता का अनुशीलन करके तब पद्य परीक्षा लिखने का दावा करते। यह हमारी पहली चेतावनी है। अगर आपने इसी तरह अनधिकार उछल कूद मचाई तो हमें मालूम होता है कि हमें कुछ अधिक कष्ट उठाना पड़ेगा।

साहित्यावलोकन

[समालोचक के मत के लिये सम्मेलन उत्तरदायी नहीं हैं]

माधुरी—

सचित्र साहित्यिक मासिक पत्रिका; संपादक—श्रीदुलारे लाल भार्गव तथा श्रीरूप नारायण पाण्डेय; प्रकाशक—नवल किशोर प्रेस, लखनऊ। वार्षिक मूल्य ६॥).

नवीन माधुरी की छविछटा देख कर, हमें उस समय का स्मरण आ गया है जब हिंदी भाषा भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के काल में विकास-माधुर्य्य का मकरंद पान कर रही थी। यह पत्रिका, वर्तमान काल में अपने ढंग की एक ही है। ऐसी पत्रिका की, इस म्रियमाण साहित्यिक क्षेत्र को, बड़ी आवश्यकता थी। इस पत्रिका में हिंदी के धुरंधर प्राचीन और अर्वाचीन लेखकों व कवियों के लेख और कविताएं प्रकाशित हुई हैं। साहित्य के प्रायः सभी अंगों पर दृष्टिपात किया गया है। सर्वाङ्ग सुंदरी होने पर भी माधुरी में दो चार त्रुटियाँ रह गयी हैं। कुछ संपादक संबन्धी और कुछ प्रेस संबंधी। श्री बाबू मैथिली शरण जी की 'माधुरी' नाम की कविता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पत्रिका के उपयुक्त नहीं है। विशेषतः उसका 'आह-वाह' ऐसा खटकता है, जैसे हलुए में निमक की डली। खेल सा मालूम होता है। श्री प्रेमघन जी की मयंक-महिमा कविता अशुद्ध छपी है। अच्छा होता, यदि श्री पं० गोविंद नारायण मिश्र आदि आचार्यों के पुराने लेख न छाप कर उनसे नवीन लेख लिखाये जाते। प्रसिद्ध हिन्दी लेखक मिश्रबन्धुओं के प्राचीन भारतीय साहित्य और धार्मिक विकास' नाम के लेख के आदि में ही "तिलक महाशय" शब्द बहुत ही खटकता है। लोकमान्य या महात्मा विशेषण न लगा कर 'महाशय' लिखना अत्यंत गर्हणीय और उपहासास्पद है। पत्र संपादकों को लेखकों की ऐसी भारी भारी अशुद्धियाँ अवश्य ठीक कर देनी चाहिए। पर, शायद यह भय हो कि ऐसा करने से लेखक गण रुष्ट हो जायँगे!

विश्वास है, माधुरी की मंजुलता और मनोहरता में आगे ये त्रुटियाँ न रहेँगी। हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि 'माधुरी' अपनी माधुरी से हिंदी साहित्य के सुंदर बनाने में दिन दूनी रात चौगुनी सफल हो। आशा है, भविष्य में चित्र भी चित्ताकर्षक रहेंगे।

विश्वदूत—

सचित्र मासिकपत्र। संपादक—श्री पं० रामगोविंदजी त्रिवेदी, महोपदेशक, वेदान्त शास्त्री। व्यवस्थापक—"विश्वदूत" रंगून।

यह पत्र ब्रह्मादेश की राजधानी रंगून से अभी हाल में ही प्रकाशित हुआ है। उस प्रांत में यह हिंदी का एक मात्र पत्र है। हमें आशा है, कि इसके द्वारा राष्ट्र भाषा हिंदी का प्रचार उस प्रांत में यथेष्ट होगा। इसमें राष्ट्रीय, साहित्यिक, सामाजिक और वैज्ञानिक सभी प्रकार के लेख प्रकाशित हुए हैं। कविताएँ भी बुरी नहीं हैं। सम्पादकीय टिप्पणियाँ द्रष्टव्य हैं। "बसंत की बहार" और "लीला" नामकी कविताएँ सरस और सुन्दर हैं। हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि सहयोगी विश्वदूत अपना स्वतंत्रतामय संदेश हिंदी द्वारा विश्व के कोने कोनेमें सुनावे और अपने उद्देशों को सफल करे।

—उमापति निगम, बी. ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जांयगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य-शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०-१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला
तालुकेदार-प्रेस १९ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांई तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूर-सागर का क्यों नहीं हुआ ? इसलिये कि लोग इस बृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ के समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी की जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुई अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक कागज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] पौष, संवत् १९७९ [अंक ५

निज भाषा बोलहु, लिखहु,
पढ़हु गुनहु सब लोग।
करहु सकल विषयन विषैं,
निज भाषा उपयोग॥

—श्रीधर पाठक

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भाग

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जायँगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०-१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रन्थमाला
तालुकेदार-प्रेस १६ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] पौष, संवत् १९७९ [अङ्क ५

नेत्र-साफल्य

सवैया

गुच्छन को अवतंस लसै
सिखि पच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लव लाल समेत छरी कर
पल्लव सों 'मतिराम' सुहायो॥
गुंजन की उर मंजुल माल,
निकुंजन तें कढ़ि बाहर आयो।
आजु को रूप लखे नंदलाल को,
आजु ही आंखिन को फल पायो॥

—महाकवि मतिराम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीसहचरिशरण जी की सरस-मंजावली

[संग्रहकर्त्ता—श्रीवियोगी हरि]

हचरिशरण जी टट्टी संप्रदाय के वैष्णव थे। इनके गुरु स्वामी ललितमोहनी जी थे। सहचरिशरण जी पंजाब प्रान्तीय थे। इन्होंने अपनी कविता में फ़ारसी, संस्कृत, पंजाबी तथा ब्रजभाषा का यत्र तत्र प्रयोग किया है। इनकी रचना बड़ी ही सरस और भावपूर्ण है। इनके दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, ललितप्रकाश और सरसमंजावली। ललित प्रकाश में स्वामी हरिदास जी की बानी, माहात्म्य एवं उनके शिष्य होने आदि का वर्णन है। सरसमंजावली में श्रीराधाकृष्ण का शृंगार और सिद्धान्त लिखा गया है। इसमें लगभग १५० मंज हैं, जिनमें कुछ अड़िल्ल छंद भी सम्मिलित हैं। सहचरिशरण जी, मिश्रबन्धु विनोद में तोष की श्रेणी में रखे गये हैं।

मंज—चरन चन्द्र नख चारु हरैं तमताब सिताब नसा हैं।
राखे रहैं सहाय हमेशा रसराहैं वरवाहैं॥
सहचरि शरण कृपाल देहु तुम तन तमाल छवि छाहैं।
अतिसै अति अरजी मरजी करु नजर नेह दी चाहैं॥१॥

दामन गहे रहै जामे का इती अरज सुद कन्दे।
दरश दिया करि मेहर किया करि मेहरवान हर फन्दे॥
छवि चिराग़ रोशन चित चहिये सहचरि शरण असंदे।
ऐ ग़रीब परवर, ग़रीब हम इन क़दमों के बन्दे॥२॥

अरे कोऊ तौ कहौ श्याम सौं दरद हिकायत मेरी।
आवै इधर उधर के टेरे दारू देहि सवेरी॥
तरफरात जल विन मछरी जिमि दुस्सह दशा घनेरी।
सहचरिशरण बचै सो कीजै मीच नीच इत हेरी॥३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरदम याद किया करि हरि को दरद निदान हरैगा।
मेरा कहा न खाली ऐ दिल, आनँद कंद ढरैगा॥
ऐसा नहीं जहां विच कोई लङ्गर लोग लरैगा।
सहचरिशरण शेरदा बच्चा क्या गजराज करैगा॥४॥

बेचगून अरु बेनमून कोऊ पाय अफीमै भीमैं।
सहचरिशरण खुशी किन कोऊ गाया करौ रहीमैं॥
श्यामल श्यामा मिला हसन को रूप सुधा सुख सीमैं।
वर सरबत मिश्रीदा प्याला पिया, पियें क्या नीमैं॥५॥

ऐसो करौ न सुरझै कबहूँ रूप जाल उरझेरो।
दोज़ख इरम डरे दोउ तज कै बसै इश्क मन मेरो॥
मन मोहनी अदा से मोहन दस्त शीश पर फेरो।
रसिक सहचरी शरण तुम्हारा नेह नैनभरि हेरो॥६॥

निरदय हृदय न होहु मनोहर सदय रहौ मनभावन।
नवल मोहिलौं मोहि तजौ जिनि तोहि सोहँ प्रिय पावन॥
रसिक सहचरी शरण श्यामघन रस बरसावन सावन।
दरश देहु वर बदन चन्द्रमा चख चकोर बिलसावन॥७॥

उर अनुराग दोस्तां गुलशन चारु बहार चहाकरि।
दिलाराम दिलदार प्यार करि सरस कलाम कहाकरि॥
सहचरिशरण दुआगो आशिक आशिर्वाद लहाकरि।
सुखद किशोरी गोरी को तू मरजीदार रहाकरि॥८॥

जिन चश्मों से मिला मोहि तू जवाँमर्द मन कायम।
लाकलाम त्योंही सु मिलाकर यहै तलब दिलदायम॥
सहचरिशरण मुहब्बत मोहन मंजुल मौज मुलायम।
दरद जुदाई दवा दिया करि इसी वास्ते आयम॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकी दशा महा मतवाली रसिक मंडली भावै।
माकंदन मकरंदी अलि जित अमल अंत नहिं आवै॥
सहचरि शरण चखन विच लाली रूप रंग बरसावै।
सरस मसालेदार यार बर छबि सबजी जिहि प्यावै॥१०॥

तीरंदाज अजब जालिम सर खर कटाक्ष नहिं डग्गौ।
यह जब्बर जिमि लगै लगै तिमि दरवर दिल बिच खग्गौ॥
खाय खवाय खुराक मजा मुद मधुर मजा मन ठग्गौ।
सहचरि शरण रसिक बर बल्लभ रस मत्तन मन पग्गौ॥११॥

बांकी पाग चन्द्रिका तापर तुर्रा रुरकि रहा है।
वर शिरपेंच माल उर बाँकी पटकी चटक अहा है॥
बांके नैन मैन सर बांके बैन बिनोद महा है।
बाँके की बांकी झांकी करि बांकी रहा कहा है॥१२॥

जरीदार पगरी उदार उर मुक्तमाल थहरति है।
जरद लपेटा फेंटा कटि सों गुरु गर्बीली गति है॥
सहचरिशरण मयङ्क बदन की मदन मोहनी अति है।
छबि सागर की छबि को बरनै कबि की क्या कुदरत है॥१३॥

कटि किङ्किणि शिर मोरमुकट वर उर बनमाल परी है।
करि मुसक्यान चकाचौंधी चित चितवन रंग भरी है॥
सहचरि शरण सु विश्व-बिमोहनि मुरली अधर धरी है।
ललित त्रिभंगी सजल मेघ तन मूरति मंजु खरी है॥१४॥

मुख मृदु मंजु महा खूबी यह गर्व गुलाब हरौगे।
चश्म चारु नरगिस अलिमस्तां उर संकोच भरौगे॥
छल्लेदार युगुल जुलफैं छबि सम्बुल छैल छरौगे।
सहचरि शरण संग लै गुलशन सैर सिताब करौगे॥१५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भृकुटि कृपाण काटि सब डारे जग दुजायगी परदे।
किया हुश्न चकचौंध बीच मन भूलि गये घर घरदे॥
दीन कुफर बदबोय करम कुल इश्क दिलाँ डर दरदे।
ऐ लालन, बलिहार हार उर हार हार दे कर दे॥१६॥

नहिं उतरैगो मेरे उतारे नित प्रति अधिक भरैंगी।
लहरियात अति बांकी एतो मंत्रादिकन चरैंगी॥
निरखत कहा तोहि डसहैं जब सुधि बुधि सकल हरैंगो।
रसिक सहचरी शरण नागिनैं जुलफैं जुलुम करैंगी॥१७॥

गहैं पान से पान कौन बिध छिगुरी छोर न छ्यावै।
प्रिय छबि छका न चितवै कितहू नहिं खातिर तर ल्यावै॥
सहचरि शरण आशिकां प्यासे मुख माधुरा न प्यावै।
ताहि न काहि कहैं घन श्यामल मोर शिखा जिमि ज्यावै॥१८॥

हारि हकीम लिया है रस्ता समझ बिना को बोलै।
खान पान दी जिकर कहा है आशिक आंखि न खोलै॥
ताकी दवा एक ही दारद रूप अनूप कलोलै।
सहचरि शरण मुए को जैसे जीवन मूल अमोलै॥१९॥

रवि तनया तट वर वंशीबट हँसि दीदार दिया था।
ऋजु मुख मंजु बचन कहि सादर आशिक संग लिया था॥
कितहि रवाना हुआ वहै दिन छल दलि दस्त छिया था।
यार, बयार मिलत नहिं काहे काहे कौल किया था॥२०॥

खाली है न खुशाली से मन उर अनुराग अलीका।
विमल महलदा रंग लालची भावुक भक्ति भलीका॥
सहचरि शरण रसिक रस माता कुंजर कुंज गलीका।
आया नहीं न आवै छल बिच आशिक छैल छलीका॥२१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन मोहन महबूबां खूबी मुलक अमोलक ताके।
बनी ठनी रस अनो सनी सुख घनो मनोहरताके॥
सहचरि शरण शाह जग जाहर इश्क जवाहिर जाके।
बख़्त बलन्द तख़्त पर बैठा नीति निसान बजाके॥२२॥

अब तकरार करौ मति मोसों लगी लगन चित चंगी।
जीवन प्रान जुगुल जोरी के जगत जाहिरा अंगी॥
मतलब नहीं फिरिश्तों से, हम इश्क दिलाँदे संगी।
सहचरि शरण रसिक सुल्तां बर मिहरबान रसरंगी॥२३॥

अटकि रह्यो अटपटो पाग मन मुख सुखमा सुखसागर।
विमल गण्ड मण्डल पर झलकत कुण्डल अलक उजागर॥
वर गुंजरत मलिंद माल उर नव किशोर गुण आगर।
मृदु मंजीर झमाझम बाजत झमकि चलत नटनागर॥२४॥

वेद किताब लोकदा रस्ता ऐसा कौन चलावै।
आशिकान माशूक माल मद बरबस लूट करावै॥
सहचरिशरण जबरदस्तों से भागि न कोऊ पावै।
वृन्दावनदा वासिन्दा निज गुण दौरा दौरावै॥२५॥

लटकारी लट कारी नाहक नागिन आनि खगैगी।
मन मोहन की दीठ मोहनी रसनिधि ठीक ठगैगी॥
सहचरि शरण सु क्यों न कहा तुम उर विरहागि जगैगी।
अय मालूम न मोहि परी तब इश्क बलाय लगैगी॥२६॥

किया प्रान कुरबान जान जिय अति अनुराग बड़ा है।
ऐ दिलवर, दिलवरी करो चलि दिल दीदार गड़ा है॥
सहचरि शरण सदन दर कद का रस मस्तान अड़ा है।
तेरी क़सम चश्म तेरे लखि तेरा जान खड़ा है॥२७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मय अमलादि पिया न पिया सुख प्रेम पियूष पियारे।
नाम अनेक लिया न लिया रति श्यामा श्याम लिया रे॥
अन्न सुदान दिया न दिया वर आनँद हुलसि दियारे।
जग यज्ञादि किया न किया हिय पर उपकार कियारे॥२८॥

लीला ललित बिलोकनि तब की दृग ध्रुव धाम धसी है।
मृदु मधु मंजु वहै बोलनि श्रुति विमल विलास लसी है॥
आशिकान उर आनि अमानी वह मुसक्यान बसी है।
जनु अरविन्द मध्य वर भ्राजत सुखमय सुभग ससी है॥२९॥

क्या लगते हो दौरि दौरि तुम मनमोहन के रूपै।
विन देखे फिर कल न परैगी सुन्दर बदन अनूपै॥
सहचरि शरण रसिक आशिक दृग पग जैहैं रस तूपै।
वह बेदरद ने दरद जान है शरद चंद्र ब्रज भूपै॥३०॥

हुकुम हुआ है मोहन को यह वेशिर होइ सुआवै।
सुन्दर मति मैदान इश्कदा ढोल अमोल बजावै॥
सहचरिशरण रसिक आशिक नट सुरति वरत चढ़ धावै।
दुहरी तेहरी लेहिं कुलांटैं दरश इनायत पावै॥३१॥

रस रवि जात नवाय विमल छवि फबित सिंगार सिंगारे।
अंकुश भौंह सैन कहि सांकर डीलदार कलकारे॥
सरस रंगीली टक्कर तिनकी दिगदंतिन मदहारे।
क्या गुनाह आशिक तन पेलत पील नैन मतवारे॥३२॥

वर बरछी मुसक्यानि हनी उर नैन कटारी तापै।
अति भरि बांह तानि बेदरदा करद चलाई जापै॥
घायल किये रसिक आसिक जन बल तव बीर कलापै।
इश्क तमंचा करावीन छबि लिया श्याम कहु कापै॥३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरा जहां कहाय हाय अब उर बिरहाग दहावै।
रे बेदरद, दरद यह केता दर बरदस्त गहावै॥
सहचरि शरण रसिक चय चातक तू घनश्याम कहावै।
रूप रंग रस बरसि स्वाति सुख प्यासहि क्यों न बहावै॥३४॥

सरस रंग दरियाव महासुख मछरी हुआ चाहिये।
बदन चन्द्रमा छबि चकोर बर आशिक हुआ चाहिये॥
सहचरि शरण रसिक जलदा तन चातिक हुआ चाहिये।
मनमोहनदा हुस्न बाग़ बिच बुलबुल हुआ चाहिये॥३५॥

मादर पिदर बिरादर नादर बिना काम के मानै।
सख से गुजर होत कै दुख से दिल उनही का जानै॥
कै जानै खुद बखुद पीर तू सहचरि शरण बखानै।
क्या बलाय तेरे चश्मों में, आशिक किये दिवाने॥३६॥

सुख संतोष सु है फकीर कोउ बेदिल कधी न जातैं।
चुप हो रहा सकल आलम से आशिकान से बातैं॥
ऐ नटनागर ऐ बांके बर, जिकिर लगी दिन रातैं।
सहचरि शरण सु इश्क बोस्ताँ चंचरीक जन तातैं॥३७॥

रूप अनूपम सरस मसाले रिस मिरचैं गुण खानी।
मृदु मुसक्यान मिली बर शक्कर छबि श्यामा पय छानी॥
सहचरि शरण मदन यह कीन्ही रसिकन को सुखदानी।
प्रभा श्याम की सिद्ध बुटी मय छकनि छकत मनमानी॥३८॥

मृदुल तलप सुख सैन बदन विधु मदन सदन छविछाई।
मिथुन जीभ नोंके नव नागिन अलक भौंह बिच आई॥
सहचरि शरण रसिक आशिक यह मनहु सपत्तव काई।
वंदनीय बर बृन्द ग्रसत मद हँसत उपम समुदाई॥३९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छद्मयोगिनी

(गताङ्क के आगे)

(योगिनी ध्यानावस्थित हो जाती है)

विसाखा—(धीरे से) हल्ला मत करो। जोगिन जी ध्यान लगाय रही हैं।

ललिता—ज्योति के दरसन मिल रहे होंगे!

मंजु—राम जाने, ज्योति के दरसन कर रही हैं, या हमारी श्री जी के।

श्रीराधा—सदा हँसी ही सूझती है कि कुछ और? अहा! ध्यानमग्न योगिनी की छटा कैसी अपूर्व है!

वि०—बड़े बड़े नेत्र मुँद जाने पर भी कैसे सुंदर लगते हैं!

ल०—सखी, इसकी श्यामल मूर्त्ति बरबस मन को हरे लेती है। ऐसा सुंदर रूप पाय, न जाने इसे क्या सूझा, जो इस अल्प वयस में योग धारन कर लिया!

श्रीराधा—प्यारी सारिकाओ, हमारी अतिथि योगिनी की रूप-माधुरी का वर्णन करो। तुम्हारी तोतली बोली मुझे बड़ी मीठी लगती है।

कुंजकामिनी—जो आज्ञा।

दोहा

सुभग सांवरी जोगिनी, भगवा बसन रँगाय।
चन्द्रमुखी मृगलोचनी, बैठी ध्यान लगाय॥

मानमंजरी—दण्ड कमण्डल हाथ, भाल भसम सोहति भली।
जटा जूट धरि माथ, बैठी सिव अर्द्धाङ्गिनी॥

कुंज०—गरबीली गुन रूप की, बड़ी रँगीली नारि।
तजि पति चली रिसाइ यह, जोगिनि भेषहिँ धारि॥

मान०—अधर मधुर मृदु बैन, बिहँसनि चितवनि रस भरी।
ललित लजौहैं नैन, कहैं देत अनुराग को॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंज०—चिबुक कपोलनि गाड़ परि, मन ही मन मुसुकात।
जिहि तन चितवति नेह सौं, सो बिन मोल बिकात॥

मान०—करति जदपि उपदेस, औरनि कौं यह योग को।
याहि विराग न लेस, फँसी काहु के प्रेम में॥

कुंज०—सांचे योगी गाम में, कबौं न आवैं भूल।
निर्जन बन में हरि भजन, करत खाइ फलफूल॥

मान०—यह तौ बैठी आय, बगुला ध्यान लगाइ कै।
भलौ जोग मिस पाय, सुनति बारता प्रेम की॥

कुंज०—धन्य राधिका स्वामिनी, धनि बरसानौ गाम।
अतिथि बनी जहँ आइ यह, पायो सुख विश्राम॥
(सारिकाएँ उड़ कर फिर वृक्ष पर बैठ जाती हैं)

बिं०—पक्षी हैं, तो क्या हुआ। इन सारिकाओं का जनम सफल है, जो प्रेम के तत्व का ऐसा सुंदर वर्णन कर रही हैं।

मंजु—(योगिनी से) जोगिन जी, अब तो बगुला ध्यान छोड़ो, आंख उघारकर तो देखो। पक्षियों ने तुम्हारी कैसी योग महिमा गायी है, क्या कुछ सुना है ?

माधवी—सिड़िन हुई! कहीं समाधि में भी कुछ सुध बुध रहती है?

यो०—नारायण, नारायण! निर्विकल्प समाधि में क्या ही आनंद आता है, पंचभूतात्मक प्रपंच का एक प्रकार से प्रलय ही हो जाता है। क्या ही अखंड शान्ति है, स्वरूप सुख है! प्यारी राधिका, फिर भी कहती हूं, ऐसा शुभ अवसर न छोड़ो। मुझसे अष्टांग योग सीख लो। सुना ?

मंजु—आप भी पहले श्री जी से प्रेमयोग सीख लें। क्यों नीरस ज्ञानयोग में भटकती फिरती हैं ?

श्रीराधा—देखो, सिद्धेश्वरी जी, मैं आपके योग और ज्ञान को अवश्य सीख लेती, पर मुझे प्रेमलच्छना भक्ति के आगे यह दो कौड़ी का जँचता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो०—जब तक समाधि का सुख नहीं मिला, तभी तक तुम्हारा यह भ्रम है। जब तक अनहदनाद नहीं सुना, तभी तक मुरलीध्वनि सुरीली समझ पड़ती है। शून्य का अनुभव होने पर यह सब प्रपंच ऐसा जान पड़ेगा, जैसे जागने पर स्वप्न का दृश्य।

श्रीराधा—मुझे तो यह प्रपंच, प्रपंच सा दीखता ही नहीं। जहां देखती हूं, श्यामसुंदर ही दीखते हैं। मुझे आप पर बड़ी दया आती है, जो हरिमय-जगत आपको शून्य सा प्रतीत होता है।

छप्पय

मेघ घटा छवि छटा स्याम की सुरत करावै।
मोर मुकुट, सुमराल चाल को ध्यान धरावै॥
चन्द्र बदन, पटपीत दामिनी दुति दरसावै।
खंजन दृग, कर कमल, अधर पल्लव सरसावै॥
प्रियतम व्यापक ब्रह्माण्ड में, नहिँ माया को मोहि भय।
जित जित देखूं तित जोगिनी ! प्रकृति सबै श्री कृष्णमय॥

यो०—(आंसू भर कर) धन्य राधे ! तुम्हारी ध्यान धारणा की मैं बलैयां लेती हूं। तुम योग की सच्ची अधिकारिणी हो। केवल लक्ष्य में अंतर है। यदि इसी धारणा को निर्गुण ब्रह्म की ओर मोड़ दो, तो मोक्ष-सुख दूर नहीं।

श्रीराधा—(आंसू भर कर) प्यारी सिद्धेश्वरी ! मैं भी आपकी बलैयां लेती हूं। आप प्रेमयोग की सच्ची अधिकारिणी हैं। आपके बड़े २ नेत्रों में प्रेमाश्रु झलकने लगे हैं। शरीर पुलकायमान हो गया है। यदि इसी धारणा को आप सगुण ब्रह्म, श्यामसुंदर की ओर मोड़ दें, तो रास-बिहार सुख दूर नहीं।

दोहा

वि०—धनि श्री जी ! धनि जोगिनी ! प्रेम योग अवतार।
दोउ परस्पर होत हैं, दोउन पै बलिहार॥

(एक भ्रमर उड़ता हुआ बार २ श्री जी के पास आता है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री०—(भ्रमर को हटाती हुई) अरे भ्रमर ! क्यों बार बार सताता है ! जा हट जा । जोगिन जी के गुणगान कर, यहां तेरा निबाह नहीं ।

पद

पधारौ, मधुकर, जोगिनि पास ।
तुम दोऊ हौ एक रंग के, जगतैं भये उदास ॥
निरगुन ज्ञान प्रचार करौ दोउ, लै सब सुमन सुवास ।
बँधियौ जिनि अब कमल कोस में कीजौ नाहिं बिलास ॥
गुन गुन धुन सौं वेद पढ़ौ नित चाहौ साधौ स्वास ।
छूटैगो नहिं निपट कपट रँग, केतौ करौ प्रकास ॥
साधि समाधि करौ तप ऐसौ, छूटि जाय भव फाँस ।
जोगिनि गुरु तैं चेला याकौ, यह स्वामिनि तैं दास ॥

यो०—(भ्रमर को अपने पास बुलाती हुई) प्यारे मधुकर ! तुम प्रेम-फंद में पड़ कर बहुत बार ठगे गये हो। न जाने कै बार निर्दयी कमल ने तुम्हें बांध रखा, पराग लेते समय कांटों से शरीर छिन्न भिन्न हो गया । तुम्हें प्रेम ने कौन सा सुख दिया ? आओ, संसार से मुख मोड़ कर परमेश्वर से नाता जोड़ो । मैं तुम्हें योग विद्या सिखाय दूंगी ।

पद

आओ मधुकर निरगुन ज्ञानी ।
लेहु बिराग योग तुम सीखो, करौ न अब मनमानी ॥
संपति कहा प्रेम में पायी कमल प्रीति पहिचानी ।
सदा कुसुम रस नाहिं मिलैगो, रहै न नेह निसानी ॥
सांचौ मीत मिल्यौ नहिं कोऊ, सब संसारो छानी ।
माया मोह छांड़ि प्रिय मधुकर, गहौ योग सुख खानी ॥

(भ्रमर हटाने पर भी श्री जी के चरणों के पास बार २ आता है)

मंजु—जोगिन जी, आज किस सायत से यहां पधारी थीं । लाख लाख जतन करने पर भी कोई आप का निर्गुन ज्ञान नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनता। हम सब तो दूर रहे, पंछी और पतिंगे भी आपके समीप नहीं आते।

कुंजकामिनी सारिका—

धन्य मधुप ! तेरो अनुरागा।
करत पान पद पदुम परागा॥
नीरस निरगुन तोहि न भायो।
ज्ञान योग नहिं नैक सुहायो॥
पैहै प्रेम पयोधि अगाधा।
हरिहैं राधा तुव सब बाधा॥
राधा माधव जस नित गावौ।
जुगलकिसोर माधुरी ध्यावौ॥

वि०—श्री जी महाराज, कुंजकामिनी सारिका की सिफारिस सुनिये, क्या कहती है? अब बेचारे भ्रमर को शरण दीजिए।

मंजु—जोगिन जी ने बहुत चाहा कि तुझे मूँड़ लें, पर तू ठहरा-रसिक! काहे को जोगी जती की बातों में आने लगा।

यो०—वृषभानुनन्दिनी, किस सोच विचार में पड़ी हो? शीघ्र निश्चय कर योगाभ्यास का श्रीगणेश क्यों नहीं करतीं?

ल०—जोगिन जी, योग सिखाने का बहुत हठ न कीजिए। महाराज वृषभानु सुनेंगे तो फिर हां—

श्रीराधा—चुप, चुप।

यो०—मेरा क्या करेंगे?

श्रीराधा—आप गँवारिन की बात न सुनिये। जोगिन जी, ज्ञान वैराग्य पर एक ही दिन में श्रद्धा नहीं जमती। आप दश पांच दिन हमारे उपवन में निवास कीजिए। यहां आपको सब प्रकार का आराम रहेगा। मैं और मेरी सखी सहेलियां आपकी सेवा करेंगी। एकान्त में भजन कीजिए और हमें भी उपदेश दीजिए। संभव है, कुछ दिनों बाद आपका उपदेश मुझ पर या मेरा आप पर चढ़ जाय। कहिये, आप कृपा कर कुछ काल यहां ठहरेंगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो०--प्यारी राधिका, मैं एक रात्रि से अधिक कहीं नहीं ठहरती। जो मधूकरी भिक्षा में मिल जाता है, वह पाती हूँ। आज कहीं, तो कल कहीं। रमता योगी, बहता पानी ही निर्मल रहता है।

चौपैया

श्रीराधा--सुभग सांवरी जोगिन प्यारी, आज अनत जिनि जाओ।
सघन मालती कुंजकुटी में सहज समाधि लगाओ॥
करौ पान निरमल जल, मीठे कंदमूल फल खाओ।
अपनी मधुर मंजु बानी सों ज्ञानामृत बरसाओ॥

यो०--जग में ढूंढ़त रही सदा मैं ज्ञान योग अधिकारी।
बड़े भाग तें आज मिली ही तू वृषभानु दुलारी॥
कृष्ण रँगीली तोकों नीरस लगी तत्वजिज्ञासा।
कहा करौंगी बिरमि यहां मैं, बिफल भई मो आसा॥

श्रीराधा--होओ जिनि निरास, बलि प्यारी, करौ सफल निज आसा।
देहु बताय योग पथ पूरौ, करि कछु काल निवासा॥
सांची सिद्धेश्वरि तैं जोगिनि, महिमा अमित तिहारी।
एरी, कहा मंत्र पढ़ि मोपै, अजब मोहिनी डारी॥

दोहा

यो०--(सहर्ष) धन्य धन्य कीरति कुंवरि, धन्य तिहारो भाग।
ज्ञान योग साधन करति, छांड़ि कृष्ण अनुराग॥

मंजु--अरी बीर बिसाखा, यह जोगिन तो सचमुच ही जादूगरनी निकसी। हमारी भोलीभाली श्री जी जोग सीखने को तयार हो गयी हैं। जा, जल्दी से महाराज को जताय दे।

श्रीराधा--(हौले से) धीरज तो धर, देख कौन किसे क्या सिखाता है? मुझ पर श्याम रंग को छोड़ और किस का रंग चढ़ सकता है?

यो०--राधे, सब से पहले, जैसे मैं बताऊँ, पद्मासन लगाओ।

श्री०--जो आज्ञा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(योगिनी अपने हाथों से श्री जी को पद्मासन लगवाती है)

बि०—जोगिन जी, यह क्या—

दोहा

कांपत कर स्वरभंग तिमि, पुलकि पसीज्यौ अंग।
ललित लजौंहैं नैन यह, कैसो जोग प्रसंग ?

ल०—क्या श्री जी की बात भूल गयी ? धीरज तो धर, देख क्या होता है ?

(श्री जी पद्मासन लगा कर बैठ जाती हैं)

यो०—राधे, अब, जैसा मैं बताऊँ, प्राणायाम करो।

श्रीराधा—जो आज्ञा।

(श्री जी प्राणायाम करती हैं)

यो०—देखो, दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर रहै।

दोहा

मंजु—श्री जी की छबि का कहौं, साधति प्राणायाम।
जौगिन हू इकटक लखति, श्रीमुखचंद्र ललाम॥

यो०—धन्य ! ऐसा अधिकारी मुझे त्रिलोक में भी न मिलता। बताने की देर नहीं, कि राधिका तुरंत सीख लेती हैं। अच्छा, अब ध्यान करना चाहिये।

श्रीराधा--किसका ध्यान करना होगा ?

यो०--शून्य का। तत्व चिंतवन करते करते अंत में प्रपंच से परे निर्गुण निराकार ब्रह्म का भान होगा। पहले अनहदनाद सुनाई देगा। इस ध्यानावस्था में तुम्हें अपूर्व आनंद मिलेगा। देखो, इसी प्रकार करना।

श्रीराधा--जो आज्ञा।

दोहा

बि०--रीझि गयी यह जौगिनी, स्यामा जू पै आय।
अलक सम्हारति मुदित मन, लेति बलैयां जाय॥

ल०—अहा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक गोरी इक सांवरी, दोउ जोगिनि छवि रास।
करति परस्पर ध्यान दोउ, बाढ्यौ हृदय हुलास॥
(योगिनी श्री जी को ध्यानावस्था से जगाती है)

यो०—कहो, राधे, ध्यान में क्या देखा ?

(श्री जी कुछ नहीं बोलती हैं)

यो०—राधे, राधे, क्या दशा है ? ध्यानावस्था में क्या दिखायी दिया ?

श्रीराधा—(आंसू भर कर)—कुछ न पूंछिये। अहा! क्या ही मनोमोहिनी छटा है ?

यो०—कैसी, किसकी छटा ?

श्रीराधा—(आंसू भर कर) सुनिये।

सवैया

आइ गयो कोउ औचक ध्यान में
घूमत भूमत ज्यौं मतवारौ।
मोर पखा वनमाल हिये मुरली कर,
नैन नचावनि हारौ॥
त्यों 'हरिजू' मुख चंद दिखाय,
चखाय गयो रस प्रान पियारौ।
कैसेहु भूलत नाहिँ भुलाये
सखी! वह सांवरी सूरत वारौ॥

यो०—राधे, एक ही बार में निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार नहीं हो सकता। अभी तुम्हारे हृदय से कृष्ण-प्रेम के पूर्वसंस्कार समूल नष्ट नहीं हुए, यही कारण है कि ध्यान में कृष्ण की श्यामल मूर्त्ति सामने आ खड़ी हुई। फिर ध्यान करो। अब की अवश्य निर्गुण ब्रह्म का भान होगा।

श्रीराधा—नहीं, जोगिन जी, निर्गुण ब्रह्म का भान होना मेरे लिये असंभव है। मैं इसकी अधिकारिणी नहीं हूँ।

यो०—एक बार में साहस टूट गया! नारायण!! बार बार प्रयत्न करना चाहिए। निर्वाण सुख विना पुरुषार्थ के नहीं मिलता। निराश न होओ, ध्यान करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराधा--जो आज्ञा।

(श्रीजी फिर ध्यान करती हैं)

रौला

वि०—जिन नैननि बसि रह्यौ स्याम मनमोहन प्यारौ।
जाइ सकै तहँ कैसैं निरगुन ब्रह्म बिचारौ॥

दोहा

चाख चुकी जब दाखरस, रसना मिसरी घोरि।
पीवैगी क्योंकरि कहौ, कड़ुवी नीम निचोरि॥

यो०—बस, रहने दो। ध्यान भंग मत करौ। जिसे तुम दाख दाख कहती हो, वही नीम है। हेर फेर ही को तो अविद्या कहते हैं। नारायण, नारायण !!

(श्रीजी को ध्यान से जगाकर)—कहो राधे, अबकी निराकार ब्रह्म का भान हुआ या नहीं ?

श्री जी (साश्रु नेत्रखोल कर)—जोगिन जी, क्या कहूं ?

यो०—कुछ तो।

श्रीराधा—कैसे कहूं ?

यो०—ठीक, निर्गुण ब्रह्म का अनुभव अनिर्वचनीय ही है। फिर भी, जो शब्दों में व्यक्त किया जा सके, कहो।

श्रीराधा—(गद्गद कंठ से) सुनिये—

जब ब्रह्म निरंजन ध्याइ रही,
मन मन्दिर मोहन आइ गयो।
'हरि जू' मुख मोरि नचाइ गयौ हग,
औंठनि में मुसकाइ गयो॥
करि औचक आंख मिचौनी लला,
मुख चूमि सुधारस प्याइ गयो।
तुअ ज्ञान गमाय कै प्रीति हढ़ाइ कै,
प्रेम को पाठ पढ़ाइ गयो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो०—(सहास्य) अहाहाहा ! खूब प्रेम का पाठ पढ़ाया ! राधे कृष्ण को बिलकुल भूल जाओ। किसका ध्यान करती हो ? तुम्हारे कृष्ण ब्रह्म नहीं हैं, महापुरुष भी नहीं हैं। एक अहीर के छोकड़े पर ऐसी मोहित हो रही हो ? राम राम।

दोहा

कृष्ण तिहारो नटखटी, जारी, चोर, लबार।

श्रीराधा—(क्रोध पूर्वक) बस—अधिक न कहौ—

स्याम हमारे भावते, पूर्ण ब्रह्म अवतार॥

यो०—राधे, शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ। अबकी बार ज्ञान और भक्ति की, योग और प्रेम की अन्तिम परीक्षा है। ध्यान करो। इस ध्यान में अवश्य, अवश्य ब्रह्म दर्शन होगा।

श्रीराधा—न हुआ, तब ?

यो०—मैं योगिनी का भेष छोड़ तुम्हारी दासी हो जाउंगी।

श्रीराधा—अवश्य ?

यो०—अवश्य, अवश्य।

(श्रीजी फिर ध्यान करती हैं)

यो०—(सखियों से) अबकी बार तुम्हारी स्वामिनी राधिका को निःसंदेह समाधि लग जायगी। देखो, ध्यान भंग न करना, जब तक मैं वीणा लेकर एक गीत गाती हूं।

(सब सखियां सन्नाटे में बैठ जाती हैं और योगिनी वीणा के स्वर में गीत गाती है)

पद

चलौ सखी, जहँ पीउ हमारौ।

सहज सून्य में महल पिया को, कोटि भानु उजियारौ॥
सजि सोरह सिंगार सुहागिल, भाव भगति उर धारौ।
पहिरि चूनरी सुरत निरत की, ग्यान सौं मांग सँवारौ॥
मिलौं अंक भरि भरि प्यारे सौं, फूलनि सेज सम्हारौ।
अपने सजन पै खोलि कपट पट, तन मन धन सब वारौ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा सँयोग बियोग न छिनहू, ऐसौ दांव न हारौ।
सतगुरु किरपा पाइ पिया की, नित आरती उतारौ॥

वि०--जोगिनजी, कितनी देर होगयी! क्या श्रीजी का ध्यान अब तक पूरा नहीं हुआ?

यो०--देखती हूं।

(योगिनी श्रीजी को ध्यान से जगाती है; बार बार जगाने पर भी श्रीजी सचेत नहीं होतीं; निश्चेष्ट दशा देख कर सखियां घबराती हैं)।

वि०--अरी जोगिन, तूने क्या कर दिया? हाय श्रीजी की यह क्या दशा हो गयी है!

ल०--जा, जल्दी गुलाब जल ला। हाय हाय करने से क्या होगा?

मंजु--(श्रीजी के पास जाकर) श्रीजी, श्रीजी, नैंक आंख तो खोलौ, हाय यह क्या हुआ! क्या इसी को समाधि कहते हैं!!

माधवी--(योगिनी के पैरों पर गिर कर) जोगिन जी, हमारी श्रीजी की समाधि खोल दो। महाराज सुन लेंगे, तो हम सब की क्या दशा होगी?

यो०--घबराओ मत, शान्त हो जाओ। पूर्ण समाधि लग गयी है।

(योगिनी श्रीजी का हाथ पकड़ कर जगाती है)

श्रीराधा--(रोती हुई) प्यारे! प्यारे!! क्यों प्रकट नहीं होते? कपटी, कपट न करो। प्यारे..........

यो०--प्यारी राधे, कैसा कपट?

श्रीराधा--(रोती हुई) प्राण प्यारे! फिर पूंछना कैसा?

कुंजकामिनी--(वृक्ष पर से)

दोहा

योगेश्वर राधारमन, माधव आनँद कंद।
छांड़ि जोगिनी छदम अब, प्रगटि होहु नँदनन्द॥

वि०--(चकित हो) ऐं! यह क्या?

मानमंजरी--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा

पुरुष पुरातन ब्रह्म तुम, प्रकृति राधिका रूप।
रसिकन हित लीला रचत, जुगल किसोर अनूप॥

(देखते २ योगिनी रूप से श्री कृष्ण प्रकट हो जाते हैं)।

श्री कृष्ण—(श्रीजी की चिबुक पर हाथ रख कर) प्यारी !

श्रीजी—(नेत्र खोल कर) बलिहारी प्यारे ! आज आपको छद्म योगिनी बनने में क्या आनन्द मिला ? क्या अब आप मेरी दासी हो कर रहेंगे ?

श्री कृष्ण—अवश्य।

दोहा

प्रेमिन के कर बिक गयो, प्यारी, मैं बिनु दाम।
करिहौं तिनकी दास ह्वै, सेवा आठौ जाम॥
गोपीजन-वल्लभ अहौं, गोपीजन मो प्रान।
गोपीजन सौ आन नहिँ, गोपीजन की आन॥

दोहा

श्रीजी—आउ पियारे मोहना, पलक झांपि तोहि लेउँ।
ना मैं देखूं और कों, ना तोहि देखनि देउँ॥

श्री कृष्ण—प्यारी, ये दोनों सारिकाएँ, देवर्षि नारद और परमहंस शुकदेव हैं।

(नारद और शुकदेव श्रीराधा माधव को साष्टांग प्रणाम करते हैं)।

श्री कृष्ण—और यह भ्रमर रूपी पितामह ब्रह्मा हैं।

(ब्रह्मा भी साष्टांग प्रणाम करते हैं)

दोहा

ब्रह्मा—जय स्यामा योगेश्वरी, जय योगेश्वर स्याम।
दीजै नित्य विहार रस, कीजै कुंज-गुलाम॥

श्री राधाकृष्ण—तथास्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुकदेव--श्री स्यामा रसरूपिनी, रसमय नन्दकिसोर।
ब्रजबिहार रस बरसिकै, करौ रसिक मनमोर॥

श्रीराधाकृष्ण--तथास्तु।

दोहा

नारद--जुगलकिसोर सुमाधुरी, ध्याऊँ तजि सब काज।
गाऊँ नित्य बिहार रस, पाऊँ रसिक समाज॥

श्रीराधाकृष्ण--तथास्तु!

श्रीजी--वत्स शुक, तेरी और क्या इच्छा है?

हरिगीतिका

शुकदेव--यह कुंज-केलि बिहार-रस अति गोपनीय सदा रहै।
गुरु-भक्ति-भाव-विभोर बिनु अधिकार नहिँ कोऊ लहै॥
यह छद्म लीला स्याम की नित प्रेम सौं जो गाइहै।
भवसिंधु दुस्तर पारकरि सो सहज तुव पद पाइहै॥

श्रीजी--तथास्तु।

(आरती उतारती हुई सखियां गाती हैं)

गीत

आरति कीजै राधावर की।
छद्म योगिनी स्याम सुंदर की॥
नित्यकिसोर नन्दनन्दन की।
नारद शुक शिव बिधि बन्दन की॥
जन्म जन्म हौं यह रस पाऊँ।
वृन्दावन बसि अनत न जाऊँ॥
मिलै महल की खास खवासी।
मांगति हरि बियोगिनी दासी॥

(फूल वर्षा होती है)

पटाक्षेप

समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यालोचना

[ले० श्रीयुत पं० भगवानदीन पाठक, विशारद]

छ दिनों से हम एक तमाशा देखते हैं। साहित्य-विपिन में पुराने कवियों का शिकार खेला जा रहा है। आजकल की सभ्यता के अनुकूल इस शिकार का क़ायदा यह है कि आरम्भ की दो चार पंक्तियों में दबी ज़बान से कवि का थोड़ासा गुन गान कर दीजिए, और फिर बेरोकटोक "दूषणों" का ऐसा दरिया बहाइए जिससे पत्रों के पन्ने सैराब होते चले जायँ। वर्तमान कवियों के प्रति यह करतूत नहीं होती। कारण स्पष्ट है। कहीं गुत्थमगुत्था न होजाय। पुराने कवि स्वर्ग में हैं। न यहां लड़ने को आ सकते हैं और न साहित्य की अदालत में सफ़ाई देने को। धर्मराज या और कोई, जिनके ज़िम्मे स्वर्ग का प्रबन्ध है, शायद उन्हें इतनी भी रियायत नहीं देते कि दो चार दिन के लिए मृत्युलोक में आकर अपने ऊपर लगाये गये अभियोगों की सफ़ाई दे जायं। बेचारे वहीं बैठे बैठे दांत पीसते होंगे। यारों के पौ बारह हैं। चाहे बिहारी का गला घोंटिए, चाहे देव को दुतकार बताइए, बदला कौन लेगा, कोई हई नहीं। ऐसेही एक शिकार का हाल सुनिए, कई कारणों से भाद्र की मर्यादा मुझे कल से पहिले पढ़ने को न मिली। इसमें एक बड़ा अच्छा लेख है। साहित्य के एक प्रसिद्ध समालोचक (?) ने इसे लिखा है। लेख का शीर्षक है "भूषण दूषण"। हिन्दी के स्वनाम-धन्य राष्ट्रीय कवि "भूषण" से आप परिचित ही होंगे। बस, इस लेख में उन्हीं के दूषणों का दर्शन कराया गया है, जैसा कि लेख की प्रारम्भिक पंक्तियों से प्रकट होता है, लेखक महोदय ने इसे समालोचना के भाव से ही लिखा है। परन्तु इस भाव में और लेख के शीर्षक में उतना ही विरोध है जितना ३ और ६ की सूरत में। जहां एकमात्र दूषणों ही का दिग्दर्शन कराना है वहां समा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोचना काहे की ? लेख की कुछ पंक्तियों में भूषण के भूषणों (गुणों) का ज़िक्र आया है अवश्य; परन्तु हमारी बहस शीर्षक मात्र पर है। यदि हम लेख में वर्णित गुण और दोष दोनों पर नज़र डालते हैं, तो कहना पड़ता है कि 'भूषण', 'भूषण की कविता', 'भूषण का काव्य,' 'भूषण की कविता के गुण-दोष' आदि शीर्षक ही लेख के लिए विशेष उपयुक्त थे। परन्तु एक तो लेखक महोदय को भूषणों की अपेक्षा दूषणों की चर्चा ही विशेष रूप से इष्ट थी; दूसरे अनुप्रास से प्रेम भी उन्हें थोड़ा न था; शायद इन्हीं दो कारणों से उन्हें 'भूषण-दूषण' नाम रख कर समालोचना-शास्त्र के मूल सिद्धान्त की हत्या कर डालनी पड़ी।

इस 'भूषण-दूषण' में लेखक ने भूषण के सिर्फ़ ११ दूषण दिखाये हैं; आगे और दिखाने का वचन भी दिया है, बशर्ते कि पाठकों को इसमें कुछ सार जान पड़ा। ११ दूषण ये हैं—

१ यतिभंग, २ पुनरुक्ति, ३ अधिक पदत्व, ४ न्यून पदत्व, ५ ग्रामीणता, ६ अप्रयुक्त, ७ असमर्थ, ८ विसंधि, ६ छंदोभंग, १० व्याकरण च्युति और अलंकार दूषण।

यतिभंग, हरे हरे! सब से पहिले यतिभंग ही धरा है! छोर हो गया, अब कोई नहीं बचेगा! यतिभंग की धारा किस पर लागू न होगी? हिन्दी साहित्य का कौन अमर कवि यतिभंग के अभियोग से मुक्ति पा जायगा? तुलसी और सूर अब क्या करेंगे? कीर्ति का बखान होते २ सैकड़ों बरस हो गये, अब दूषण-दर्शन की बारी है। उन्हें या उनके भक्तों को जल्दी चेत जाना चाहिये। भूषण, विहारी आदि से लोग निपट रहे हैं। अब की दफे उन्हीं पर हाथ साफ़ होगा। क्या पन्ने पन्ने पर यतिभंग है? लेखक द्वारा दिखाये गये भूषण के यतिभंग दूषण फिर देखिएगा; पहिले उन कवि-सम्राट तुलसी के यतिभंग देख लीजिए जिनका प्रत्येक पद केशव ने एक एक मंत्र बताया था और जिन्हें आज तक तीन सौ बरस से होने वाले बड़े २ कवि सूर्य या चन्द्र की उपमा देकर ही रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय विच्छेद तो होता ही है, तनिक और सुन लीजिए। लेखक महाशय कहेंगे तो हम क्या उनकी सूर्य चन्द्र की उपमा में बाधक होते हैं, हम क्या उनकी कीर्ति में कालिमा लगाना चाहते हैं, हम क्या उनके गुण-गौरव से इनकार करते हैं, हम क्या उनकी काव्य-प्रतिभा के कायल नहीं हैं ? भाई साहब, यह तो सब कुछ है। मगर है यह वैसी ही बात जैसे कोई अपने किसी मित्र के पास किसी अर्थ से जाय और वह मित्र यह जवाब दे कि हमें आपकी ख़ातिर तो हरतरह मंजूर है, मगर यह काम हमसे नहीं होगा। विचारिए ज़रा, इसमें क्या तत्व है? वह बेचारा मन ही मन कहेगा, फिर हमारी ख़ातिर क्या तुम्हें ख़ाक मंजूर है। हमारा कहना यह है कि पहिले तो यह दूषण दूषण ही नहीं हैं। मैं इन्हें दूषण मानता ही नहीं। काव्य में यतिभंग एक दोष होता है अवश्य; पर उसका एक माप भी है जो प्रायः सभी चतुर पाठकों के पास रहता है। यदि यतिभंग इस कोटि का है कि पढ़ने वाले को बहुत खटकता है, या वह किसी ऐसे शब्द के दो खंड करता है जिसे अलग होते देख कुढ़न सी होती है तो अवश्य ही वहां पर यतिभंग दूषण की धारा लगा देनी चाहिए। जब तक ऐसी बात नहीं है तब तक साधारण यतिभंग से तो हमें कम से कम प्राचीन कवियों के विषय में आंख हटा ही लेनी चाहिए। फिर, एक दूसरी बात यह कि प्राचीन कवियों के जो छोटे मोटे दूषण, भूषणों की सघन पत्रावली में कहीं दबे ढके पड़े हैं और साधारण जनों की आंखों से मानों सर्वथा ओझल हैं अथवा भूषणों की हज़ारों तहों को पार करके उनकी नज़र वहां तक नहीं पहुंच पातीं तो हमहीं उन्हें ढूंढ़ निकालने की कोशिश क्यों करें ? क्या कोई खड्ड थोड़े ही हैं जिनमें गिरकर किसी के डूब मरने की आशंका हो। हां, जहां कि ऐसे खड्ड पाये जायँ और आप उन्हें ढूंढ़ निकालें तो हिन्दी जनता का अवश्य ही उपकार करेंगे। सो ऐसे खड्ड काव्य में साधारणतः दोही प्रकार के हो सकते हैं। काव्य की भारी भूलें, या भावों की अपवित्रता! यतिभंग दूषण ही है, सो भी भूषणों की हज़ारों तहों के नीचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषणों की तह बिगाड़ कर अपनी संकीर्णता का परिचय भले दे लीजिए, हाथ आप के भी कुछ न आयेगा। पाठकों का भी कोई लाभ न होगा। खैर लीजिए, तुलसी के यतिभंग ("दूषण" इसके बाद आप लिख लीजिए) देखिए—

१ तुलसी प्रभुहिं सिख देइ आयसु, दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अविरल अमल सियरघु, वीर पद नित नित नई॥

२ जननी सकल परितोषि परि परि पायँ करि विनती घनी।
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहि कुश, ली रहहिं कोसलधनी॥

३ जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गई।
दिन अंत पुर रुष स्रवत थन हुं कार करि धावत भई॥

(१) छन्द हरिगीतिका है। १६ मात्रा पर विराम होना चाहिये। जो 'रघु' पर होता है। 'वीर' आगे के चरण में जा पड़ता है। और इस तरह रघुवीर के दो खण्ड हो जाते हैं।

(२) छन्द वही है। यतिभंग पहिले से भी बढ़ा चढ़ा है। देखिए, दूसरे पद में 'कुश' पर विराम होता है, और 'कुशली' शब्द 'कुश' और 'ली' दो भागों में विभक्त हो जाता है।

(३) वही छन्द। वही बात। हुंकार के दो टूक हो जाते हैं। 'हुं' एक तरफ़ और 'कार' एक तरफ़ रह जाता है।

कोशिश की ज़रूरत ही नहीं। रामायण के पन्ने पलटते जाइए। यदि नज़र पैनी है तो लाखों यतिभंग अनायास मिल जायेंगे। यही हाल सूर का भी है। और जब सूर्य चन्द्र का यह हाल है तो सितारों और जुगुनुओं की कहे कौन! इसीसे हम कहते हैं कि यह यतिभंग वहीं दोष कहा जा सकता है जहां पढ़ने में बहुत बुरा मालूम हो, अथवा अर्थ नष्ट हो जाता हो। जहां यतिभंग होते हुए भी धारावाहिक पाठ हो सकता हो, साथ ही अर्थ में कोई अड़चन न आती हो वहां यतिभंग को यतिभंग दूषण नहीं कहा जा सकता।

लेखक महोदय ने भूषण में जो यतिभंग दिखाये हैं उन्हें भी देख लीजिए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—वीर विजैपुर को उजीर निसिचर गोलकुण्डा वारे घू घू ते उड़ाये हैं जहान सौं

२—करनाट हबस फिरंग हूं विलायत बलख रूम अरितिय छतियां दलति है

३—उतर पहार बिधनोल खंडहर झारखंडहु प्रचार चाह केली है बिरद की

४—यहि लोक परलोक सुफल करन कोकनद से चरन हिए आनि कै जुड़ाइए

५—भूषन भनत भौंसिला के आप आगे ठाढ़े भये बाजे उमराम तुजुक करन के

इन पांचों यतिभंगों को देखकर हमें एक बात पर बड़ी हँसी आई! पांच में चार यतिभंग संयुक्त शब्दों में हैं। हमारी राय में संयुक्त शब्द के दो भागों में से एक भाग इधर और एक उधर रह जाने से उतना यतिभंग नहीं होता जितना कि किसी एक ही शब्द के दो टुकड़े हो जाने से। अतः इन पांच में हमें तो एक वही यतिभंग खटका जो 'बलख' के दो टुकड़े करता है। संयुक्त शब्द के दोनों अंग अलग हो जाने पर भी अपना एक एक अलग अर्थ रखते हैं। जिससे यतिभंग होने पर भी पढ़ने या अर्थ समझ लेने में विशेष कठिनाई नहीं होती। असंयुक्त के बारे में ऐसी बात नहीं है। जैसे दूसरे उदाहरण में 'ब' पर यति होती है, और 'ब' अर्थहीन है। 'लख' से भी कोई वैसा अर्थ नहीं निकल सकता जो 'बलख' से कुछ सम्बन्ध रखता हो। ऐसी दशा में अवश्य इस पद का यह यतिभंग उन विद्यार्थियों या विदेशियों के पक्ष में 'दूषण' कहा जायेगा जो करनाट, हबस, फिरंग, विलायत और रूम आदि को आस पास तैनात पाते हुए भी 'बलख' का मतलब न समझ पावें और 'ब' और 'लख' की उधेड़बुन में फँसे रहें। सर्वसाधारण के लिए हम इसे भी दोष नहीं कह सकते। अन्य चार यतिभंग तो नाममात्र के यतिभंग हैं। जैसे:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिले पद में 'गोल' पर यति होती है, कुण्डा अलग रहजाता है। 'गोलकुण्डा' एक संयुक्त नाम है। उसके एक भाग पर यति हो जाती है। पढ़ने में कोई दिक्क़त नहीं है। अर्थ भी साफ़ है। प्रसिद्धि और परिस्थिति पर भी बहुत कुछ निर्भर रहता है। कवि ने देखा, एक प्रसिद्ध नगर का नाम है। 'गोल' पर यति हो जाने से भी कोई भारतवासी 'गोल' और 'कुण्डा' को अलग अलग शब्द मान कर अलग अलग अर्थ लगा कर समझने में माथा न खपायेगा। 'गोल' और 'कुण्डा' हम अलग भी कर दें तो पाठक अर्थ लगाते समय उन्हें इकट्ठा कर लेंगे। छन्दशास्त्र को अन्धे की लकड़ी की नाईं पकड़ना किसी कवि के पक्ष में बुद्धिमत्ता नहीं कही जा सकती। सच्चे कवि का ध्यान भावों की ओर ही विशेष रूप से आकृष्ट होता है। प्रसिद्धि और परिस्थिति भी उसे जब तब काव्य के छोटे मोटे बंधनों की उपेक्षा पर बाध्य करती है। काव्य के नियम कविता के एक अंग के सहायक मात्र हैं, कविता के सर्वस्व नहीं हैं, और न उनमें किसी भावहीन कविता को सुन्दर बना देने की सामर्थ्य है। तुलसी और सूर ने यदि काव्य के बन्धनों की इतनी अधिक पर्वा की होती तो शायद उनके भावों की सुधा-धारा कुछ दूर बहकर उन्हीं नियमों के मरुस्थल में लुप्त हो जाती। उन्होंने अपनी ज़रूरत भर के लिए नियमों का उपयोग कर लिया है। काव्य के नियमों पर उन्होंने अपने भावों को भेंट नहीं चढाया। और भावों के पदतल में यदि काव्य-नियमों को उन्होंने लुटा दिया हो तो मैं उसे कोई दोष नहीं मानता। क्योंकि भाव ही प्रधान है। नियमों की संकीर्ण नली के भीतर से ही भावों को निकालना और एक सन्दूक में भावों को भर कर उसमें ताला लगा छोड़ना करीब करीब दोनों बातें एक हैं। कवि काव्य के नियमों की पर्वा करेगा और इसकी ज़रुरत समझेगा; मगर जहां वह देखेगा कि यहां पर काव्य के नियम की ज़रासी उपेक्षा कर देने से ही मेरे भाव अधिक अच्छे रूप में व्यक्त होते हैं और साथ ही पढ़नेवाले, सुननेवाले और समझनेवाले के हक़ में कोई बाधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आती तो वह ऐसी उपेक्षा से कदापि न चूकेगा। क्योंकि वह कविता करने बैठा है न कि पिंगलाचार्य्य महाराज के हुक्मों की तामील करने।

तीसरे और चौथे उदाहरण में भी वही बात है जो पहले में। ये भी संयुक्त शब्द ही हैं। रहा पांचवां। सो इसमें क्रिया से यति-भंग है। 'ठाढ़े' एक ओर रह जाता है, 'भये' एक ओर। प्रायः सभी प्राचीन कवियों के, ख़ासकर कवित्त छन्द में, संयुक्त क्रियाओं के दो खंड दो स्थानों पर देखे जाते हैं। भूषण ही के माथे यह दोष नहीं मढ़ा जा सकता। यद्यपि मुझे तो इसमें भी शक है कि यह 'दोष' है भी या नहीं। क्योंकि यदि यह दोष है तो मैं किसी को इस दोष से मुक्त नहीं देखता और सब को दूषित कह बैठने का साहस नहीं रखता।

अस्तु! भूषण के यतिभंग दूषण का परिचय लेखक ने इन्हीं पांच उदाहरणों से दिया है। मैंने इस पर यहां तक जो कुछ लिखा है उसका आशय पाठक समझ ही गये होंगे। मेरे मत में साधारण यति-भंग को दूषण नहीं कहा जा सकता, और यदि कहा जा सकता है तो बड़े से बड़े कोई प्राचीन कवि इससे मुक्त नहीं मिल सकते। यहां पर मैं थोड़ा सा नवीन कवियों की तरफ़ भी इशारा करूंगा। आजकल भी हिन्दी में बड़े बड़े दिग्गज कवि हैं, इतना भाव उनके साहित्य-संसार में है कि सम्पादक सदा उनकी ओर टकटकी लगाये रहते हैं। कितने ही सज्जन तो उनकी कविता की प्रतीक्षा में अपनी पत्रिका का पहिला पृष्ठ बाद को छपाने के लिए रोक रखते हैं। पर यतिभंग के लिए उन विचारों की भी यही दशा है। भला 'भूषण' के छन्द में यति के बाद ही सही, दूसरे ही चरण में सही, 'भये' ठाढ़े के समीप तो मौजूद है। ये कवि-सम्राट तो ऐसी बेतुकी हांकते हैं कि संयुक्तक्रिया की एक टांग तो होती है यति के स्थान पर और दूसरी होती है पदान्त में। अर्थ तो अर्थ, अन्वय करले, भला किसकी मजाल! उनके पद का अन्वय करना व्याकरण या साहित्य की विद्वत्ता पर निर्भर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता, बल्कि उनका पद एक पहेली होता है, उलट पुलट के दस रूपों में रख देखिए, कोई एक ठीक निकलही आयेगा। यदि साहस हो तो इन्हीं गरूओं से प्रार्थना करनी चाहिए कि महाराज ज़रा हमें यह समझा दीजिए कि आप के पदों की भाषा तो ठेठ हिन्दी है; परन्तु फिर भी ये समझने के हक़ में लोहे के चने हैं, सो क्या बात? वे न बतायें तो हमसे पूछ लीजिए, उनमें एक दोष होता है। उसी दोष से वे लोहे के चने बन जाते हैं। हम उसी दोष को यतिभंग दोष कहते हैं। तुलसी, सूर और भूषण में यद्यपि हमने यतिभंग देखा; पर हम उस यतिभंग को यतिभंग दूषण न कह सके, क्योंकि अन्य कारणों से कठिनाई भले ही पड़ी हो, यतिभंग दोष के कारण हमें उनके समझने में कठिनाई कभी नहीं पड़ी; पर अन्य किसी कारण के न रहते हुए भी एकमात्र यतिभंग के कारण हमें आजकल कुछ कवियों की कविताएं समझने में कठिनाई होती है। इसीलिए हम उसे "यतिभंग-दूषण" कहते हैं और उसे सिर्फ़ "यतिभंग" कह कर रह जाते हैं।

(शेष आगे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमापरीक्षा सं० १९७९ का परीक्षाफल

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
	(योग्यता के अनुसार)		
४०४	श्री टीकाराम भट्ट *	हरिद्वार	प्रथम
२५६	,, किशनलाल	नारायणगढ़	,,
२१९	,, पुरुषोत्तमदास पुरोहित	जोधपुर	,,
१३६	,, रुद्रदत्त मिश्र	कोटा	,,
१४९	,, फूलचन्द्र गुप्त	खुर्जा	,,
	(क्रमसंख्या के अनुसार)		
क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१४	,, बालमकुन्द सहाय	आरा	द्वितीय
१८	,, इन्द्रजीत सिंह	इनानजांव	तृतीय
२०	,, दीन दयाल	इटावा	द्वितीय
२२	,, ब्रजबिहारीलाल	,,	,,
२९	,, अब्दुलसत्तार खां	इन्दौर	तृतीय
३१	,, केशवराम गुंजारकर	,,	,,
३३	,, घासीलाल दुबे	,,	,,
३४	,, चेतराम	,,	द्वितीय
३५	,, छगनलाल	,,	तृतीय
३८	,, बालमकुन्द जोषी	,,	द्वितीय
४०	,, ब्रजलाल	,,	द्वितीय
४१	,, फूलचन्द्र	,,	तृतीय
४२	,, मन्नालाल	,,	द्वितीय
४८	,, श्रीधर	,,	तृतीय
५१	,, शिवदुलारे दुबे	,,	द्वितीय
५३	श्रीमती सुशीलादेवी	,,	तृतीय
५४	श्री सरजदीन	,,	,,

नोट—श्री टीकाराम भट्ट प्रथमा परीक्षा में सर्वप्रथम होने के कारण भट्ट पदक के अधिकारी हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
५५	श्री काशीनाथ त्रिवेदी	उज्जैन	तृतीय
७४	श्रीमती शिवरानी देवी	उन्नाव	द्वितीय
७७	श्री तुलसीराम विद्यार्थी	एटा	,,
८०	,, बाबूराम शर्मा	,,	द्वितीय
८२	,, रविलाल	,,	,,
८४	,, सत्यनारायण	,,	तृतीय
८८	,, कल्लूसिंह	कानपुर	द्वितीय
९३	,, माता त्रिपाठी	,,	,,
९६	,, रामेश्वरदयाल	,,	तृतीय
९९	,, उमाशंकर मिश्र	काशी	द्वितीय
१००	,, ऋषिनारायण शर्मा	,,	,,
१०६	,, द्वारिकादास	,,	तृतीय
१०७	,, पुरुषोत्तमराम	,,	,,
१०८	,, मोतीचन्द्र	काशी	तृतीय
१११	,, रामप्रतापप्रसाद	,,	द्वितीय
११५	,, पा० ना० राजाराम शर्मा	,,	तृतीय
११७	,, लालसिंह	,,	द्वितीय
११९	,, विश्वनाथप्रसाद मिश्र	,,	,,
१२१	,, हरिहर पाण्डे	,,	,,
१२२	,, अनन्दीलाल	कोटा	,,
१२३	,, कंवरलाल शर्मा	,,	प्रथम
१२५	,, किशोरीलाल	,,	द्वितीय
१२७	,, नाथूलाल	,,	,,
१२९	,, बद्रीलाल शर्मा	,,	,,
१३०	,, बालकृष्ण	,,	,,
१३२	,, भैरोंलाल शर्मा	,,	,,
१३८	,, करनपाल सिंह	खुर्जा	तृतीय
१४०	,, गोकुलचन्द्र सर्मा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१४३	श्री दीवानसहाय शर्मा	खुर्जा	द्वितीय
१४८	,, प्रभुदयाल गुप्त	,,	प्रथम
१५१	,, बाबूलाल गुप्त	,,	द्वितीय
१५६	,, मनवीरसिंह	,,	तृतीय
१५६	,, रामलाल वैश्य	,,	द्वितीय
१६२	,, हीरालाल	,,	तृतीय
१६४	,, गुञ्जीलाल तिवारी	खन्डवा	द्वितीय
१६७	,, देवीप्रसाद तिवारी	,,	तृतीय
१६६	,, रामचरनलाल	,,	,,
१७६	,, रामनाथ नेगी	गाडरवारा	द्वितीय
१७७	,, राधाकृष्ण कावरा	,,	तृतीय
१८१	,, अजबसिंह	गंगाशहर	,,
१८२	,, केशवराम	,,	द्वितीय
२००	,, छेदीलाल	जबलपुर	,,
२०१	,, जानकीप्रसाद रायजादे	,,	,,
२०५	,, शिवरतनलाल	,,	,,
२०६	,, शंकरशरण कायस्थ	,,	,,
२०७	,, अयोध्याप्रसाद शर्मा	जयपुर	,,
२०८	,, गोविन्दलाल शर्मा	,,	,,
२१०	,, दामोदरप्रसाद शर्मा	,,	,,
२११	,, प्रभूनारायण शर्मा	,,	,,
२१४	श्री व्रजमोहन शर्मा	,,	द्वितीय
२१५	,, भट्ट मनमोहन शर्मा	,,	,,
२१७	,, श्रीकृष्ण शर्मा	,,	,,
२१८	,, अमृत लाल अवस्थी	जोधपुर	तृतीय
२२१	,, कन्हैया लाल वर्मा	झालरापाटन	,,
२२६	,, कुंअर जगन्नाथ सिंह	,,	द्वितीय
२३०	,, श्रीनिवासदास वैद्य	,,	तृतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम	केन्द्र	श्रेणी
२३३	श्री चन्द्रपाल शर्मा	झाँसी	द्वितीय
२३४	,, बालकृष्ण गोपाल शर्मा	,,	तृतीय
२३५	,, मनीराम शर्मा	,,	द्वितीय
२३६	,, श्रीधर गोविन्द गर्दे	,,	,,
२३७	,, उमाशङ्कर द्विवेदी	देवरिया	तृतीय
२३८	,, नागेन्द्रनाथ उपाध्याय	,,	,,
२४२	,, अमरनाथ	देहरादून	प्रथम
२४३	,, गणपतिदेव शर्मा	,,	,,
२४४	,, जयचन्द्र	,,	,,
२४५	,, ज्योति नारायण	,,	तृतीय
२४६	,, नारायण सिंह रावत	,,	द्वितीय
२४७	,, मिट्ठनलाल	,,	प्रथम
२४८	,, रामनिवास	,,	द्वितीय
२४९	,, रामस्वरूप गुप्त	,,	,,
२५०	,, राधारमण रैंदड़	,,	,,
२५१	श्रीमती लीलावती देवी	,,	,,
२५४	श्री कचरूमल	नारायणगढ़	,,
२५५	,, कजोड़ीमल	,,	प्रथम
२५८	,, दयाराम विद्यार्थी	,,	तृतीय
२५९	,, पुरुषोत्तमदास	,,	प्रथम
२६०	,, प्यारचन्द्र विद्यार्थी	,,	द्वितीय
२६२	,, बुद्धिचन्द्र विद्यार्थी	,,	तृतीय
२६४	,, मसऊद खां	,,	द्वितीय
२६५	,, मांगीलाल विद्यार्थी	,,	प्रथम
२६६	,, रघुनाथ विद्यार्थी	,,	द्वितीय
२६८	,, रामचन्द्र विद्यार्थी	,,	तृतीय
२६९	,, शिवनारायण विद्यार्थी	,,	,,
२७१	,, प्रेमनारायण	पथरिया	द्वितीय

५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
२७२	श्री मूलचन्द त्रिवेदी	पथरिया	द्वितीय
२७३	,, रूपराम शर्मा	,,	,,
२७४	,, आनन्द किशोर	प्रयाग	तृतीय
२७८	,, मिट्ठू प्रसाद द्विवेदी	,,	द्वितीय
२७९	,, सन्तप्रसाद टन्डन	,,	,,
२८२	,, बलदेव प्रसाद त्रिवेदी	फैजाबाद	द्वितीय
२८४	,, रामकरण देवड़ा	फतहपुर	तृतीय
२८५	,, लक्ष्मी नारायण अवस्थी	,,	,,
२८७	,, राम गोपाल	फरुखाबाद	द्वितीय
२८९	,, गंगाशरण सिंहं शर्मा	बाँकीपुर	,,
२९०	,, चक्रधरझा	,,	,,
२९२	,, कुंजराम	बिलासपुर	तृतीय
२९४	,, मालिक राम शर्मा	,,	,,
२९५	,, दीन दयाल अग्रवाल	,,	द्वितीय
२९७	,, मेघराज गोस्वामी	बीकानेर	,,
२९९	,, शिखर चन्द्र मुकीम	,,	तृतीय
३०५	,, वासुदेव सिंह	बैरिया	द्वितीय
३०८	,, राम सुन्दर राम	,,	तृतीय
३१६	,, राधा वल्लभ सहाय	मुज़फ्फरपुर	प्रथम
३२१	,, गंगा सहाय गुप्त	मुरादाबाद	तृतीय
३२४	,, जगदीश प्रसाद शर्मा	,,	,,
३२५	,, धर्मपालकृष्ण शर्मा	,,	,,
३२६	,, पुरुषोत्तम वर्मा	,,	द्वितीय
३२८	,, शिवचरण लाल शर्मा	,,	तृतीय
३३०	,, पुरुषोत्तम देव त्रिपाठी	रंगून	,,
३३७	,, हरिमूर्ति पाण्डे	रंगून	तृतीय
३३८	,, हरिहर प्रसाद द्विवेदी	,,	,,
३३९	,, त्रिशूल धारी ओझा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
३४१	श्री कौशलेन्द्रनाथ ठाकुर	राजनाँदगांव	द्वितीय
३४३	,, नरसिंह लाल चितलाँग्या	,,	तृतीय
३४४	,, पूरण लाल तेली	,,	,,
३४९	,, सियाराम तेली	,,	द्वितीय
३५३	,, मांगी लाल शर्मा	राजलदेसर	,,
३६४	,, काशी प्रसाद	लश्कर	,,
३६६	,, भगवान सिंह	,,	,,
३६८	,, लल्लू	,,	,,
३७०	,, इन्द्र चन्द्र	लाहौर	,,
३७१	श्रीमती विद्याधरी देवी	,,	,,
३७४	श्री जै जै राम टन्डन	शाहजहांपुर	,,
३८०	,, उद्योत नारायण सिंह	सीवान	,,
३८५	,, राम चन्द्र प्रसाद सिंह	,,	प्रथम
३८७	,, भगवती शरण प्रसाद	,,	द्वितीय
३९०	,, इन्द्रचन्द्र शर्मा	सुजानगढ़	तृतीय
४०१	,, हनूमानदत्त	,,	,,
४०२	श्रीमती अम्बा देवी	हरिद्वार	द्वितीय
४०३	,, गायत्री देवी	,,	तृतीय
४०५	,, सरला देवी	,,	द्वितीय
४०७	श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त	होशंगाबाद	तृतीय
४०८	,, काशीराम मेहर	,,	,,
४०९	,, घासीराम	,,	,,
४१०	,, निरंजन सिंह	,,	,,
४११	,, वृन्दावन प्रसाद	,,	,,
४१२	,, हरिकिशन लाल	,,	प्रथम
४१३	,, मूलचन्द्र जैन	जबलपुर	तृतीय
४२२	,, भूरेलाल श्रीवास्तव	इन्दौर	,,
४२६	,, भेषजदत्त शर्मा	मुरादाबाद	द्वितीय
४२७	,, किशन लाल	इन्दौर	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं० १९७९ की मुनीमी परीक्षा का परीक्षाफल

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
८	श्री नाथूलाल कुरमी	इन्दौर	द्वितीय
१०	,, सत्यव्रत राय	काशी	,,

सं० १९७९ की उत्तमा परीक्षा का परीक्षाफल

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१	श्री बाबूराम वित्थरिया	प्रयाग	द्वितीय

गोपालस्वरूप भार्गव
एम० एस० सी०
परीक्षा मंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का चतुर्थ साधारण अधिवेशन रविवार मिती पौष कृष्ण ६ सं० ७९ तदनुसार १० दिसम्बर २२ को १ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में निम्नलिखित सज्जनों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

१ श्री पं० विशम्भर नाथ शर्मा कौशिक २ श्री पं० रामप्रसाद मिश्र
३ श्री गोपाल चन्द्र सिंह ४ श्री ला० भगवानदीन जी
५ श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ६ श्री वियोगी हरि जी
७ श्री भगवती प्रसाद ८ श्री प्रो० ब्रजराज
श्री पं० रामजी लाल शर्मा

सर्व सम्मति से श्रीमान् पं० विशम्भरनाथ शर्मा कौशिक जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—गत अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़ा गया, और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

२—निश्चित हुआ कि कानपुर सम्मेलन का अधिवेशन शुक्रवार, शनिवार, रविवार चैत्र शुक्ल १३, १४ और १५ संवत् १९८० तदनुसार ३०, ३१ मार्च व १ अप्रैल सन् २३ की तिथियों में किया जाय।

३—त्रयोदश सम्मेलन की निबन्ध-सूची के सम्बन्ध में स्वागत-कारिणी समिति की प्रस्तावित सूची उपस्थित हुई, निश्चित हुआ कि इसमें संशोधन करने के लिए निम्नलिखित तीन सज्जनों की एक उपसमिति बनायी जाय।

१ श्री पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
२ श्री पं० रामजी लाल शर्मा
३ श्री प्रो० ब्रजराज

४—गतवर्ष का (भाद्र कृष्ण १ सं० ७८ से श्रावण शुक्ल पूर्णिमा ७९ तक) वार्षिक विवरण उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

५—सं० ७९–८० का आयव्यय का अनुमानपत्र उपस्थित हुआ और कुछ हेर फेर के बाद निम्नलिखित रूप में सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आय का अनुमान

सम्मेलन दान	...	...	८७४३०)
ब्याज	...	...	१५००)
सम्मेलन पत्रिका	...	...	१५०)
सम्बद्ध संस्थाओं का शुल्क	...	...	२०)
पुस्तक विक्री	...	...	५०००)
अन्य दान	...	...	१००)
परीक्षा समिति की आय	...	...	३०००)
सदस्य शुल्क	...	...	५००)
			९७७००)

व्यय का अनुमान

कार्यालय	...	...	४८००)
प्रचार	...	...	३००००)
कागज छपाई	...	...	३००)
सामान	...	...	६००)
विद्यापीठ	...	...	५०००)
उपदेशक	...	...	८००)
पुस्तकालय	...	...	१०००)
सम्मेलन पत्रिका	...	...	१५००)
पुस्तक प्रकाशन	...	...	६०००)
वार्षिक विवरण	...	...	२००)
स्टेशनरी	...	...	१००)
पदक	...	...	१००)
फुटकर	...	...	१००)
सम्मेलन भवन	...	...	४५०००)
परीक्षा समिति	...	...	३०००)
			९७७००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९—नियमावली के दसवें नियम के अनुसार वार्षिक शुल्क न देने वाले निम्नलिखित साधारण सदस्यों के नाम सूची से काटने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

१ श्री० बाबू नाथूलाल वर्मा ट्रेनिंग कालेज-जबलपुर
२ ,, बा० नाथूराम जी वकील-जबलपुर
३ ,, पं० लक्ष्मण कृष्ण पराड़कर-जबलपुर
४ ,, बा० मनोहर कृष्ण गोखलकर-जबलपुर
५ ,, पं० कामता प्रसाद गुरु-जबलपुर
६ ,, बा० सीताराम जी शाह-काशी
७ ,, पं० हरिप्रसाद बी० ए०-बनारस
८ ,, बा० नवाब बहादुर जी-प्रयाग
९ ,, प्रताप नारायण जी मालवीय-प्रयाग
१० ,, गौरी शंकर प्रसाद शुक्ल-लश्कर
११ ,, नागेश्वर प्रसाद शर्मा-पटना
१२ ,, राय ब्रजराज कृष्ण जी-पटना
१३ ,, शंकरधर सिंह-बांकीपुर
१४ ,, बालगोविन्द मालवीय-पटना
१५ ,, वैद्यनाथ प्रसाद-पटना
१६ ,, दामोदर प्रसाद-पटना
१७ ,, कृष्ण चैतन्य गोस्वामी-पटना
१८ ,, शिवपूजन सहाय-बांकीपुर
१९ ,, जनक तिवारी-सारन
२० ,, भगवती प्रसाद सहाय-भागलपुर
२१ ,, रघुनन्दन लाल जमीन्दार-भागलपुर
२२ ,, अवध बिहारी सिंह-भागलपुर
२३ ,, गौरी शंकर सहाय-भागलपुर
२४ ,, बा० अनन्त प्रसाद-भागलपुर
२५ ,, बसन्त लाल साह-भागलपुर
२६ ,, पूरनमल ढाढनियां-भागलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ श्री मोती लाल ढाढनियां–भागलपुर
२८ „ हनुमान दास खेमका–भागलपुर
२६ „ प्रयाग नारायण–भागलपुर

७—स्वर्गीय श्री पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के स्थान में श्री पं० गोविन्द प्रसाद कौशिक बी० ए० सुपरिन्टेन्डेन्ट राजपूताना एजेन्सी अजमेर सर्वसम्मति से स्थायी समिति के सदस्य चुने गये।

८—श्री पं० हरिहर शर्मा, अध्यक्ष मद्रास प्रचार कार्यालय का पत्र उपस्थित हुआ, उसके अनुसार निश्चित हुआ कि मद्रासकार्य का निरीक्षण करने के लिए निरीक्षक जनवरी सन् २३ में अवश्य भेजा जाय।

६—निश्चित हुआ कि कुछ सहायता देकर श्री पं० प्रयाग नारायण द्विवेदी, जिमींदार सफदरगंज की देख रेख में जिला बाराबंकी में अदालतों में देवनागरी लिपि में कागज़ात दाखिल कराने का उद्योग किया जाय।

१०—हिन्दी-साहित्य-विद्यालय काशी का सहायता सम्बन्धी प्रार्थना पत्र उपस्थित हुआ, निश्चित हुआ कि कानपुर सम्मेलन के बाद इस विद्यालय की सहायता के विषय में विचार किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ साहित्य माला

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित

सम्मेलन की स्थायी समिति ने सुलभ साहित्यमाला निकालने का निश्चय किया है, जिसका उद्देश्य यह है कि हिन्दी में उत्तमोत्तम ग्रन्थों के सुन्दर और सस्ते संस्करण प्रकाशित किये जाय, जिससे हिन्दी हितैषिणी जनता में उन ग्रन्थरत्नों का बड़ी ही सुलभता से प्रचार हो। अब तक निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित द्वितीय संस्करण, मू० ॥~)

२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, "मिश्रबन्धु" कृत, पृष्ठ संख्या १८८, मूल्य ।=)

३—भारत गीत, सुप्रसिद्ध कवि पं० श्रीधर पाठक रचित, मू०≡)

भारतवर्ष का इतिहास, प्रथमखण्ड लेखक "मिश्रबन्धु"

५—राष्ट्रभाषा—इसमें महात्मा गांधी जी के राष्ट्रभाषा सम्बन्धी प्रश्न के उत्तरों का भी संग्रह है। लेखक "एक भारतीय हृदय", मूल्य ॥)

६—शिवा बावनी-टिप्पणी एवं भावार्थ सहित, मूल्य ≡)

७—सरल पिङ्गल, मूल्य ।)

८—सूरदास की विनय-पत्रिका मूल्य ।)

९—भारतवर्ष का इतिहास, द्वितीय खण्ड ले० मिश्रबन्धु, मूल्य २।)

१०—रहिमन के दोहे (२१५ दोहे) टिप्पणी सहित मूल्य ~)॥

११—रहिमन के दोहे और बरवै टिप्पणी सहित मू० =)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांईं तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूरसागर का क्यों नहीं हुआ ? इसलिए कि लोग इस बृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ की समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी की जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुई अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक-एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक काग़ज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रवन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] पौष, संवत् १९७६ [अंक ५

निज भाषा बोलहु, लिखहु,
पढ़हु गुनहु सब लोग ।
करहु सकल विषयन विषैं,
निज भाषा उपयोग ॥

—श्रीधर पाठक

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

हिन्दी-लेखकों से विनय

'विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रंथमाला' के लिये उच्चकोटि के हिन्दी ग्रन्थों की आवश्यकता है। इस माला की पुस्तकें बढ़िया कागज पर उत्तम छपी हुई सचित्र निकाली जायँगी और हिन्दी के मर्मज्ञ साहित्य-शिल्पियों द्वारा उनका संपादन होगा। प्रत्येक पुस्तक में, लेखक की इच्छानुसार, १०-१२ सादे और रङ्गीन चित्र दिए जायंगे और लेखकों को पुरस्कार भी पर्याप्त दिया जायगा। यदि आपके पास कोई मौलिक वा अनुवाद-ग्रंथ तैयार हो, तो आप उसे भेजने की कृपा करें और यदि लिख रहे हों वा लिखने का विचार हो, तो हमसे पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक, विश्वनाथ-हिन्दी-ग्रन्थमाला

ताल्लुकेदार-प्रेस १६ कैसरबाग लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] पौष, संवत् १९७९ [अङ्क ५

नेत्र-साफल्य

सवैया

गुच्छन को अवतंस लसै
सिखि पच्छन अच्छ किरीट बनायो।
पल्लव लाल समेत छरी कर
पल्लव सौं 'मतिराम' सुहायो॥
गुंजन की उर मंजुल माल,
निकुंजन तें कढ़ि बाहर आयो।
आजु को रूप लखे नंदलाल को,
आजु ही आंखिन को फल पायो॥

—महाकवि मतिराम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीसहचरिशरण जी की सरस-मंजावली

[संग्रहकर्त्ता—श्रीवियोगी हरि]

हचरिशरण जी टट्टी संप्रदाय के वैष्णव थे। इनके गुरु स्वामी ललितमोहनी जी थे। सहचरिशरण जी पंजाब प्रान्तीय थे। इन्होंने अपनी कविता में फ़ार्सी, संस्कृत, पंजाबी तथा ब्रजभाषा का यत्र तत्र प्रयोग किया है। इनकी रचना बड़ी ही सरस और भावपूर्ण है। इनके दो ग्रन्थ उपलब्ध हैं, ललितप्रकाश और सरसमंजावली। ललित प्रकाश में स्वामी हरिदास जी की बानी, माहात्म्य एवं उनके शिष्य होने आदि का वर्णन है। सरसमंजावली में श्रीराधाकृष्ण का शृंगार और सिद्धान्त लिखा गया है। इसमें लगभग १५० मंज हैं, जिनमें कुछ अड़िल्ल छंद भी सम्मिलित हैं। सहचरिशरण जी, मिश्रबन्धु विनोद में तोष की श्रेणी में रखे गये हैं।

मंज—चरन चन्द्र नख चारु हरैं तमताब सिताब नसा हैं।
राखे रहैं सहाय हमेशा रसराहैं बरवाहैं ॥
सहचरि शरण कृपाल देहु तुम तन तमाल छबि छाहैं।
अतिसै अति अरजी मरजी करु नजर नेह दी चाहैं ॥१॥

दामन गहें रहै जामे का इती अरज सुद कन्दे।
दरश दिया करि मेहर किया करि मेहरवान हर फन्दे ॥
छबि चिराग रोशन चित चहिये सहचरि शरण असंदे।
ऐ ग़रीब परवर, ग़रीब हम इन क़दमों के बन्दे ॥२॥

अरे कोऊ तौ कहौ श्याम सों दरद हिकायत मेरी।
आवै इधर उधर के टेरे दारू देहि सबेरी ॥
तरफरात जल बिन मछरी जिमि दुस्सह दशा घनेरी।
सहचरिशरण बचै सो कीजै मीच नीच इत हेरी ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरदम याद किया करि हरि को दरद निदान हरैगा।
मेरा कहा न खाली ऐ दिल, आनँद कंद ढरैगा॥
ऐसा नहीं जहां बिच कोई लङ्गर लोग लरैगा।
सहचरिशरण शेरदा बच्चा क्या गजराज करैगा॥४॥

वेचगून अरु बेनमून कोऊ पाय अफीमै झीमैं।
सहचरिशरण खुशी किन कोऊ गाया करौ रहीमैं॥
श्यामल श्यामा मिला हमन को रूप सुधा सुख सीमैं।
वर सरबत मिश्रीदा प्याला पिया, पियें क्या नीमैं॥५॥

ऐसो करौ न सुरझै कबहुँ रूप जाल उरझेरो।
दोज़ख इरम डरे दोउ तज कै बसै इश्क मन मेरो॥
मन मोहनी अदा से मोहन दस्त शीश पर फेरो।
रसिक सहचरी शरण तुम्हारा नेह नैनभरि हेरो॥६॥

निरदय हृदय न होहु मनोहर सदय रहौ मनभावन।
नवल मोहिलौं मोहि तजै जिनि तोहि सोहँ प्रिय पावन॥
रसिक सहचरी शरण श्यामघन रस बरसावन सावन।
दरश देहु वर बदन चन्द्रमा चख चकोर बिलसावन॥७॥

उर अनुराग दोस्तां गुलशन चारु बहार चहाकरि।
दिलाराम दिलदार प्यार करि सरस कलाम कहाकरि॥
सहचरिशरण दुआगो आशिक आशिर्वाद लहाकरि।
सुखद किशोरी गोरी को तू मरजीदार रहाकरि॥८॥

जिन चश्मों से मिला मोहि तू जवाँमर्द मन कायम।
लाकलाम त्योंही खु मिलाकर यहै तलब दिलदायम॥
सहचरिशरण मुहब्बत मोहन मंजुल मौज मुलायम।
दरद जुदाई दवा दिया करि इसी वास्ते आयम॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकी दशा महा मतवाली रसिक मंडली भावै।
माकंदन मकरंदी अलि जित अमल अंत नहिं आवै॥
सहचरि शरण चखन बिच लाली रूप रंग वरसावै।
सरस मसालेदार यार बर छवि सबजी जिहि प्यावै॥१०॥

तीरंदाज अजब जालिम सर खर कटाच्छ नहिं डग्गौ।
यह जब्बर जिमि लगै लगै तिमि दरबर दिल बिच खग्गौ॥
खाय खवाय खुराक मजा मुद मधुर मजा मन ठग्गौ।
सहचरि शरण रसिक वर बल्लभ रस मत्तन मन पग्गौ॥११॥

बांकी पाग चन्द्रिका तापर तुर्रा लरकि रहा है।
वर शिरपेंच माल उर बाँकी पटकी चटक अहा है॥
बांके नैन मैन सर बांके बैन बिनोद महा है।
बांके की बांकी झांकी करि बांकी रहा कहा है॥१२॥

जरीदार पगरी उदार उर मुक्तमाल थहरति है।
जरद लपेटा फेंटा कटि सों गुरु गर्बीली गति है॥
सहचरिशरण मयङ्क वदन की मदन मोहनी अति है।
छबि सागर की छबि को बरनै कवि की क्या कुदरत है॥१३॥

कटि किङ्किणि शिर मोरमुकट वर उर बनमाल परी है।
करि मुसक्यान चकाचौंधी चित चितवन रंग भरी है॥
सहचरि शरण सु विश्व-विमोहनि मुरली अधर धरी है।
ललित त्रिभंगी सजल मेघ तन मूरति मंजु खरी है॥१४॥

मुख मृदु मंजु महा खूबी यह गर्व गुलाब हरौंगे।
चश्म चारु नरगिस अलिमस्तां उर संकोच भरौंगे॥
छल्लेदार युगुल जुलफैं छबि सम्बुल छैल छरौंगे।
सहचरि शरण संग लै गुलशन सैर सिताब करौंगे॥१५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भृकुटि कृपाण काढि सब डारे जग दुजायगी परदे।
किया हुश्न चकचौंध बीच मन भूलि गये घर घरदे॥
दीन कुफर बदबोय करम कुल इश्क दिलाँ डर दरदे।
ऐ लालन, बलिहार हार उर हार हार दे कर दे॥१६॥

नहिं उतरैगो मेरे उतारे नित प्रति अधिक भरैंगी।
लहरियात अति बांकी एतो मंत्रादिकन चरैंगी॥
निरखत कहा ताहि डसहैं जब सुधि बुधि सकल हरैंगो।
रसिक सहचरी शरण नागिनैं जुलफैं जुलुम करैंगी॥१७॥

गहैं पान से पान कौन विध छिगुरी छोर न छ्यावै।
प्रिय छवि छका न चितवै कितहू नहिं खातिर तर ल्यावै॥
सहचरि शरण आशिकां प्यासे मुख माधुरी न प्यावै।
ताहि न काहि कहैं घन श्यामल मोर शिखा जिमि ज्यावै॥१८॥

हारि हकीम लिया है रस्ता समझ बिना को, बोलै।
खान पान दी जिकर कहा है आशिक आंखि न खोलै॥
ताकी दवा एक ही दारद .रूप अनूप कलोलै।
सहचरि शरण मुए को जैसे जीवन मूल अमोलै॥१६॥

रबि तनया तट वर वंशीबट हँसि दीदार दिया था।
ऋजु मुख मंजु वचन कहि सादर आशिक संग लिया था॥
कितहि रवाना हुआ वहै दिन छल दलि दस्त छिया था।
यार, बयार मिलत नहिं काहे काहे कौल किया था॥२०॥

खाली है न खुशाली से मन उर अनुराग अलीका।
विमल महलदा रंग लालची भावुक भक्ति भलीका॥
सहचरि शरण रसिक रस माता कुंजर कुंज गलीका।
आया नहीं न आवै छल बिच आशिक छैल छलीका॥२१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन मोहन महबूबों खूबी मुलक अमोलक ताके।
बनी ठनी रस अनी सनी सुख घनो मनोहरताके॥
सहचरि शरण शाह जग जाहर इश्क जवाहिर जाके।
बख़त बलन्द तख़त पर बैठा नीति निसान बजाके॥२२॥

अब तकरार करौ मति मोसों लगी लगन चित चंगी।
जीवन प्रान जुगुल जोरी के जगत जाहिरा अंगी॥
मतलब नहीं फिरिश्तों से, हम इश्क दिलाँदे संगी।
सहचरि शरण रसिक सुल्तां बर मिहरवान रसरंगी॥२३॥

अटकि रह्यो अटपटो पाग मन मुख सुखमा सुखसागर।
विमल गण्ड मण्डल पर झलकत कुण्डल अलक उजागर॥
वर गुंजरत मलिंद माल उर नव किशोर गुण आगर।
मृदु मंजीर झमाझम बाजत झमकि चलत नटनागर॥२४॥

वेद किताब लोकदा रस्ता ऐसा कौन चलावै।
आशिकान माशूक माल मद बरबस लूट करावै॥
सहचरिशरण जबरदस्तों से भागि न कोऊ पावै।
वृन्दावनदा वासिन्दा निज गुण दौरा दौरावै॥२५॥

लटकारी लट कारी नाहक नागिन आनि खगैगी।
मन मोहन की दीठ मोहनी रसनिधि ठीक ठगैगी॥
सहचरि शरण सु क्यों न कहा तुम उर विरहागि जगैगी।
अय मालूम न मोहि परी तब इश्क बलाय लगैगी॥२६॥

किया प्रान कुरबान जान जिय अति अनुराग बड़ा है।
ऐ दिलवर, दिलवरी करो चलि दिल दीदार गड़ा है॥
सहचरि शरण सदन दर कद का रस मस्तान अड़ा है।
तेरी क़सम चश्म तेरे लखि तेरा जान खड़ा है॥२७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मय अमलादि पिया न पिया सुख प्रेम पियूष पियारे।
नाम अनेक लिया न लिया रति श्यामा श्याम लिया रे॥
अन्न सुदान दिया न दिया बर आनँद हुलसि दियारे।
जग यज्ञादि किया न किया हिय पर उपकार कियारे॥२८॥

लीला ललित विलोकनि तब की दृग ध्रुव धाम धसी है।
मृदु मधु मंजु वहै बोलनि श्रुति विमल विलास लसी है॥
आशिकान उर आनि अमानी वह मुसक्यान बसी है।
जनु अरबिन्द मध्य वर भ्राजत सुखमय सुभग ससी है॥२९॥

क्या लगते हो दौरि दौरि तुम मनमोहन के रूपै।
बिन देखे फिर कल न परैगी सुन्दर बदन अनूपै॥
सहचरि शरण रसिक आशिक दृग पग जैहैं रस तूपै।
वह बेदरद ने दरद जान है शरद चंद्र ब्रज भूपैं॥३०॥

हुकुम हुआ है मोहन को यह बेशिर होइ सुआवै।
सुन्दर मति मैदान इश्कदा ढोल अमोल बजावै॥
सहचरिशरण रसिक आशिक नट सुरति वरत चढ़ धावै।
दुहरी तेहरी लेहिं कुलांटैं दरश इनायत पावै॥३१॥

रस रवि जात नवाय विमल छवि फबित सिंगार सिंगारे।
अंकुश भौंह सैन कहि सांकर डीलदार कलकारे॥
सरस रंगीली टक्कर तिनकी दिगदंतिन मदहारे।
क्या गुनाह आशिक तन पेलत पील नैन मतवारे॥३२॥

वर बरछी मुसक्यानि हनी उर नैन कटारी तापै।
अति भरि बांह तानि बेदरदा करद चलाई जापै॥
घायल किये रसिक आसिक जन बल तव बीर कलापै।
इश्क तमंचा कराबीन छवि लिया श्याम कछु कापै॥३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरा जहां कहाय हाय अब उर बिरहाग दहावै।
रे बेदरद, दरद यह केता दर बरदस्त गहावै॥
सहचरि शरण रसिक चय चातक तू घनश्याम कहावै।
रूप रंग रस बरसि स्वाति सुख प्यासहि क्यों न बहावै॥३४॥

सरस रंग दरियाव महासुख मछरी हुआ चाहिये।
बदन चन्द्रमा छबि चकोर वर आशिक हुआ चाहिये॥
सहचरि शरण रसिक जलदा तन चातिक हुआ चाहिये।
मनमोहनदा हुस्न बाग़ बिच बुलबुल हुआ चाहिये॥३५॥

मादर पिदर बिरादर नादर विना काम के मानै।
सख से गुज़र होत कै दुख से दिल उनही का जानै॥
कै जानै खुद बखुद पीर तू सहचरि शरण बखानै।
क्या बलाय तेरे चश्मों में, आशिक किये दिवाने॥३६॥

सुख संतोष सु है फकीर कोउ बेदिल कधी न जातैं।
चुप हो रहा सकल आलम से आशिकान से बातैं॥
ऐ नटनागर ऐ बांके वर, जिकिर लगी दिन रातैं।
सहचरि शरण सु इश्क बोस्ताँ चंचरीक जन तातैं॥३७॥

रूप अनूपम सरस मसाले रिस मिरचैं गुण खानी।
मृदु मुसक्यान मिली वर शक्कर छबि श्यामा पय छानी॥
सहचरि शरण मदन यह कीन्ही रसिकन को सुखदानी।
प्रभा श्याम की सिद्ध बुटी मय छकनि छकत मनमानी॥३८॥

मृदुल तलप सुख सैन बदन विधु मदन सदन छविछाई।
मिथुन जीभ नोंके नव नागिन अलक भौंह बिच आई॥
सहचरि शरण रसिक आशिक यह मनहु सपल्लव काई।
वंदनीय वर बृन्द ग्रसत मद हँसत उपम समुदाई॥३९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छद्मयोगिनी

(गताङ्क के आगे)

(योगिनी ध्यानावस्थित हो जाती है)

विसाखा—(धीरे से) हल्ला मत करो। जोगिन जी ध्यान लगाय रही हैं।

ललिता—ज्योति के दरसन मिल रहे होंगे!

मंजु—राम जाने, ज्योति के दरसन कर रही हैं, या हमारी श्री जी के।

श्रीराधा—सदा हँसी ही सूझती है कि कुछ और? अहा! ध्यानमग्न योगिनी की छटा कैसी अपूर्व है!

वि०—बड़े बड़े नेत्र मुँद जाने पर भी कैसे सुंदर लगते हैं!

ल०—सखी, इसकी श्यामल मूर्त्ति बरबस मन को हरे लेती है। ऐसा सुंदर रूप पाय, न जाने इसे क्या सूझा, जो इस अल्प वयस में योग धारन कर लिया!

श्रीराधा—प्यारी सारिकाओ, हमारी अतिथि योगिनी की रूप-माधुरी का वर्णन करो। तुम्हारी तोतली बोली मुझे बड़ी मीठी लगती है।

कुंजकामिनी—जो आज्ञा।

दोहा

सुभग सांवरी जोगिनी, भगवा बसन रँगाय।
चन्द्रमुखी मृगलोचनी, बैठी ध्यान लगाय॥

मानमंजरी—दण्ड कमण्डल हाथ, भाल भसम सोहति भली।
जटा जूट धरि माथ, बैठी सिव अर्द्धाङ्गिनी॥

कुंज०—गरबीली गुन रूप की, बड़ी रँगीली नारि।
तजि पति चली रिसाइ यह, जोगिनि भेषहिँ धारि॥

मान०—अधर मधुर मृदु बैन, बिहँसनि चितवनि रस भरी।
ललित लजौहैं नैन, कहैं देत अनुराग कों॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंज०—चिबुक कपोलनि गाड़ परि, मन ही मन मुसुकात।
जिहि तन चितवति नेह सौं, सो बिन मोल विकात ॥

मान०—करति जदपि उपदेस, औरनि कों यह योग को।
याहि विराग न लेस, फँसो काहु के प्रेम में ॥

कुंज०—सांचे योगी गाम में, कबौं न आवें भूल।
निर्जन वन में हरि भजन, करत खाइ फलफूल ॥

मान०—यह तौ बैठी आय, बगुला ध्यान लगाइ कै।
भलौ जोग मिस पाय, सुनति वारता प्रेम की ॥

कुंज०—धन्य राधिका स्वामिनी, धनि बरसानौ गाम।
अतिथि बनी जहँ आइ यह, पायो सुख विश्राम ॥
(सारिकाएँ उड़ कर फिर वृक्ष पर बैठ जाती हैं)

वि०—पक्षी हैं, तो क्या हुआ। इन सारिकाओं का जनम सफल है, जो प्रेम के तत्व का ऐसा सुंदर वर्णन कर रही हैं।

मंजु—(योगिनी से) जोगिन जी, अब तो बगुला ध्यान छोड़ो, आंख उघारकर तो देखो। पक्षियों ने तुम्हारी कैसी योग महिमा गायी है, क्या कुछ सुना है ?

माधवी—सिड़िन हुई! कहीं समाधि में भी कुछ सुध बुध रहती है?

यो०—नारायण, नारायण! निर्विकल्प समाधि में क्या ही आनंद आता है, पचभूतात्मक प्रपंच का एक प्रकार से प्रलय ही हो जाता है। क्या ही अखंड शान्ति है, स्वरूप सुख है! प्यारी राधिका, फिर भी कहती हूं, ऐसा शुभ अवसर न छोड़ो। मुझसे अष्टांग योग सीख लो। सुना ?

मंजु—आप भी पहले श्री जी से प्रेमयोग सीख लें। क्यों नीरस ज्ञानयोग में भटकती फिरती हैं ?

श्रीराधा—देखो, सिद्धेश्वरी जी, मैं आपके योग और ज्ञान को अवश्य सीख लेती, पर मुझे प्रेमलच्छना भक्ति के आगे यह दो कौड़ी का जँचता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो०—जब तक समाधि का सुख नहीं मिला, तभी तक तुम्हारा यह भ्रम है। जब तक अनहदनाद नहीं सुना, तभी तक मुरलीध्वनि सुरीली समझ पड़ती है। शून्य का अनुभव होने पर यह सब प्रपंच ऐसा जान पड़ेगा, जैसे जागने पर स्वप्न का दृश्य।

श्रीराधा—मुझे तो यह प्रपंच, प्रपंच सा दीखता ही नहीं। जहां देखती हूं, श्यामसुंदर ही दीखते हैं। मुझे आप पर बड़ी दया आती है, जो हरिमय-जगत आपको शून्य सा प्रतीत होता है।

छप्पय

मेघ घटा छवि छटा स्याम की सुरत करावै।
मोर मुकुट, सुमराल चाल को ध्यान धरावै॥
चन्द्र बदन, पटपीत दामिनी दुति दरसावै।
खंजन दृग, कर कमल, अधर पल्लव सरसावै॥
प्रियतम व्यापक ब्रह्माण्ड में, नहि माया को मोहि भय।
जित जित देखूं तित जोगिनी! प्रकृति सबै श्री कृष्णमय॥

यो०—(आंसू भर कर) धन्य राधे! तुम्हारी ध्यान धारणा की मैं बलैयां लेती हूं। तुम योग की सच्ची अधिकारिणी हो। केवल लक्ष्य में अंतर है। यदि इसी धारणा को निर्गुण ब्रह्म की ओर मोड़ दो, तो मोक्ष-सुख दूर नहीं।

श्रीराधा—(आंसू भर कर) प्यारी सिद्धेश्वरी! मैं भी आपकी बलैयां लेती हूं। आप प्रेमयोग की सच्ची अधिकारिणी हैं। आपके बड़े २ नेत्रों में प्रेमाश्रु झलकने लगे हैं। शरीर पुलकायमान हो गया है। यदि इसी धारणा को आप सगुण ब्रह्म, श्यामसुंदर की ओर मोड़ दें, तो रास-बिहार सुख दूर नहीं।

दोहा

वि०—धनि श्री जी! धनि जोगिनी! प्रेम योग अवतार।
दोउ परस्पर होत हैं, दोउन पै बलिहार॥

(एक भ्रमर उड़ता हुआ बार २ श्री जी के पास आता है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री०—(भ्रमर को हटाती हुई) अरे भ्रमर ! क्यों बार बार सताता है ! जा हट जा । जोगिन जी के गुणगान कर, यहां तेरा निबाह नहीं ।

पद

पधारौ, मधुकर, जोगिनि पास ।
तुम दोऊ हौ एक रंग के, जगतैं भये उदास ॥
निरगुन ज्ञान प्रचार करौ दोउ, लै सब सुमन सुवास ।
बँधियौ जिनि अब कमल कोस में कीजौ नाहिं बिलास ॥
गुन गुन धुन सौं वेद पढ़ौ नित चाहौ साधौ स्वास ।
छूटैगो नहिं निपट कपट रँग, केतौ करौ प्रकास ॥
साधि समाधि करौ तप ऐसौ, छूटि जाय भव फाँस ।
जोगिनि गुरु तैं चेला याकौ, यह स्वामिनि तैं दास ॥

यो०—(भ्रमर को अपने पास बुलाती हुई) प्यारे मधुकर ! तुम प्रेम-फंद में पड़ कर बहुत बार ठगे गये हो । न जाने कै बार निर्दयी कमल ने तुम्हें बांध रखा, पराग लेते समय कांटों से शरीर छिन्न भिन्न हो गया । तुम्हें प्रेम ने कौन सा सुख दिया ? आओ, संसार से मुख मोड़ कर परमेश्वर से नाता जोड़ो । मैं तुम्हें योग विद्या सिखाय दूंगी ।

पद

आओ मधुकर निरगुन ज्ञानी ।
लेहु विराग योग तुम सीखो, करौ न अब मनमानी ॥
संपति कहा प्रेम में पायी कमल प्रीति पहिचानी ।
सदा कुसुम रस नाहिं मिलैगो, रहै न नेह निसानी ॥
सांचौ मीत मिल्यौ नहिं कोऊ, सब संसारी छानी ।
माया मोह छांड़ि प्रिय मधुकर, गहौ योग सुख खानी ॥

(भ्रमर हटाने पर भी श्री जी के चरणों के पास बार २ आता है)

मंजु—जोगिन जी, आज किस सायत से यहां पधारी थीं । लाख लाख जतन करने पर भी कोई आप का निर्गुन ज्ञान नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनता। हम सब तो दूर रहे, पंछी और पतिंगे भी आपके समीप नहीं आते।

कुंजकामिनी सारिका—

धन्य मधुप ! तेरो अनुरागा।
करत पान पद पदुम परागा॥
नीरस निरगुन तोहि न भायो।
ज्ञान योग नहिं नैक सुहायो॥
पैहै प्रेम पयोधि अगाधा।
हरिहैं राधा तुव सब बाधा॥
राधा माधव जस नित गावौ।
जुगलकिसोर माधुरी ध्यावौ॥

वि०—श्री जी महाराज, कुंजकामिनी सारिका की सिफारिस सुनिये, क्या कहती है? अब बेचारे भ्रमर को शरण दीजिए।

मंजु—जोगिन जी ने बहुत चाहा कि तुझे मूँड़ लें, पर तू ठहरा-रसिक ! काहे को जोगी जती की बातों में आने लगा।

यो०—वृषभानुनन्दिनी, किस सोच विचार में पड़ी हो? शीघ्र निश्चय कर योगाभ्यास का श्रीगणेश क्यों नहीं करतीं?

ल०—जोगिन जी, योग सिखाने का बहुत हठ न कीजिए। महाराज वृषभानु सुनेंगे तो फिर हां—

श्रीराधा—चुप, चुप।

यो०—मेरा क्या करेंगे?

श्रीराधा—आप गँवारिन की बात न सुनिये। जोगिन जी, ज्ञान वैराग्य पर एक ही दिन में श्रद्धा नहीं जमती। आप दश पांच दिन हमारे उपवन में निवास कीजिए। यहां आपको सब प्रकार का आराम रहेगा। मैं और मेरी सखी सहेलियां आपकी सेवा करेंगी। एकान्त में भजन कीजिए और हमें भी उपदेश दीजिए। संभव है, कुछ दिनों बाद आपका उपदेश मुझ पर या मेरा आप पर चढ़ जाय। कहिये, आप कृपा कर कुछ काल यहां ठहरेंगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो०--प्यारी राधिका, मैं एक रात्रि से अधिक कहीं नहीं ठहरती। जो मधूकरी भिक्षा में मिल जाता है, वह पाती हूँ। आज कहीं, तो कल कहीं। रमता योगी, बहता पानी ही निर्मल रहता है।

चौपैया

श्रीराधा--सुभग सांवरी जोगिन प्यारी, आज अनत जिनि जाओ।
सघन मालती कुंजकुटी में सहज समाधि लगाओ॥
करौ पान निरमल जल, मीठे कंदमूल फल खाओ।
अपनी मधुर मंजु बानी सों ज्ञानामृत बरसाओ॥

यो०--जग में ढूंढ़त रही सदा मैं ज्ञान योग अधिकारी।
बड़े भाग तें आज मिली ही तू बृषभानु दुलारी॥
कृष्ण रँगीली तोकों नीरस लगी तत्वजिज्ञासा।
कहा करौंगी बिरमि यहां मैं, बिफल भई मो आसा॥

श्रीराधा—होओ जिनि निरास, बलि प्यारी, करौ सफल निज आसा।
देहु बताय योग पथ पूरौ, करि कछु काल निवासा॥
सांची सिद्धेश्वरि तैं जोगिनि, महिमा अमित तिहारी।
एरी, कहा मंत्र पढ़ि मोपै, अजब मोहिनी डारी॥

दोहा

यो०--(सहर्ष) धन्य धन्य कीरति कुंवरि, धन्य तिहारो भाग।
ज्ञान योग साधन करति, छांड़ि कृष्ण अनुराग॥

मंजु--अरी वीर विसाखा, यह जोगिन तो सचमुच ही जादूगरनी निकसी। हमारी भोलीभाली श्री जी जोग सीखने को तयार हो गयी हैं। जा, जल्दी से महाराज को जताय दे।

श्रीराधा—(हौले से) धीरज तो धर, देख कौन किसे क्या सिखाता है? मुझ पर श्याम रंग को छोड़ और किस का रंग चढ़ सकता है?

यो०—राधे, सब से पहले, जैसे मैं बताऊँ, पद्मासन लगाओ।

श्री०—जो आज्ञा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(योगिनी अपने हाथों से श्री जी को पद्मासन लगवाती है)

वि०—जोगिन जी, यह क्या—

दोहा

कांपत कर स्वरभंग तिमि, पुलकि पसीज्यौ अंग ।
ललित लजौहैं नैन यह, कैसो जोग प्रसंग ?

ल०—क्या श्री जी की बात भूल गयी ? धीरज तो धर, देख क्या होता है ?

(श्री जी पद्मासन लगा कर बैठ जाती हैं)

यो०—राधे, अब, जैसा मैं बताऊँ, प्राणायाम करो ।

श्रीराधा—जो आज्ञा ।

(श्री जी प्राणायाम करती हैं)

यो०—देखो, दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर रहै ।

दोहा

मंजु—श्री जी की छबि का कहौं, साधति प्राणायाम ।
जोगिन हू इकटक लखति, श्रीमुखचंद्र ललाम ॥

यो०—धन्य ! ऐसा अधिकारी मुझे त्रिलोक में भी न मिलता । बताने की देर नहीं, कि राधिका तुरंत सीख लेती हैं। अच्छा, अब ध्यान करना चाहिये ।

श्रीराधा—किसका ध्यान करना होगा ?

यो०—शून्य का । तत्व चिंतवन करते करते अंत में प्रपंच से परे निर्गुण निराकार ब्रह्म का भान होगा । पहले अनहदनाद सुनाई देगा ।इस ध्यानावस्था में तुम्हें अपूर्व आनंद मिलेगा । देखो, इसी प्रकार करना ।

श्रीराधा—जो आज्ञा ।

दोहा

वि०—रीझि गयी यह जोगिनी, स्यामा जू पै आय ।
अलक सम्हारति मुदित मन, लेति बलैयां जाय ॥

ल०—अहा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक गोरी इक सांवरी, दोउ जोगिनि छवि रास।
करति परस्पर ध्यान दोउ, बाढ्यौ हृदय हुलास॥
(योगिनी श्री जी को ध्यानावस्था से जगाती है)

यो०—कहो, राधे, ध्यान में क्या देखा ?

(श्री जी कुछ नहीं बोलती हैं)

यो०—राधे, राधे, क्या दशा है ? ध्यानावस्था में क्या दिखायी दिया ?

श्रीराधा—(आंसू भर कर)—कुछ न पूंछिये। अहा ! क्या ही मनोमोहिनी छटा है ?

यो०—कैसी, किसकी छटा ?

श्रीराधा—(आंसू भर कर) सुनिये।

सवैया

आइ गयो कोउ औचक ध्यान में
घूमत झूमत ज्यौं मतवारौ।
मोर पखा वनमाल हिये मुरली कर,
नैन नचावनि हारौ॥
त्यों 'हरिजू' मुख चंद दिखाय,
चखाय गयो रस प्रान पियारौ।
कैसेहु भूलत नाहिँ भुलाये
सखी ! वह सांवरी सूरत वारौ॥

यो०—राधे, एक ही बार में निराकार ब्रह्म का साक्षात्कार नहीं हो सकता। अभी तुम्हारे हृदय से कृष्ण-प्रेम के पूर्वसंस्कार समूल नष्ट नहीं हुए, यही कारण है कि ध्यान में कृष्ण की श्यामल मूर्त्ति सामने आ खड़ी हुई। फिर ध्यान करो। अब की अवश्य निर्गुण ब्रह्म का भान होगा।

श्रीराधा—नहीं, जोगिन जी, निर्गुण ब्रह्म का भान होना मेरे लिये असंभव है। मैं इसकी अधिकारिणी नहीं हूँ।

यो०—एक बार में साहस टूट गया ! नारायण !! बार बार प्रयत्न करना चाहिए। निर्वाण सुख बिना पुरुषार्थ के नहीं मिलता। निराश न होओ, ध्यान करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराधा--जो आज्ञा ।

(श्रीजी फिर ध्यान करती हैं)

रौला

वि०—जिन नैननि बसि रह्यौ स्याम मनमोहन प्यारौ ।
जाइ सकै तहँ कैसैं निरगुन ब्रह्म विचारौ ॥

दोहा

चाख चुकी जब दाखरस, रसना मिसरी घोरि ।
पीवैगी क्योंकरि कहौ, कड़ुवी नीम निचोरि ॥

यो०—बस, रहनें दो । ध्यान भंग मत करौ । जिसे तुम दाख दाख कहती हौ, वही नीम है । हेर फेर ही को तो अविद्या कहते हैं । नारायण, नारायण !!

(श्रीजी को ध्यान से जगाकर)—कहौ राधे, अबकी निराकार ब्रह्म का भान हुआ या नहीं ?

श्री जी (साश्रु नेत्रखोल कर)—जोगिन जी, क्या कहूं ?

यो०—कुछ तो ।

श्रीराधा—कैसे कहूं ?

यो०—ठीक, निर्गुण ब्रह्म का अनुभव अनिर्वचनीय ही है । फिर भी, जो शब्दों में व्यक्त किया जा सके, कहौ ।

श्रीराधा—(गद्गद कंठ से) सुनिये—

जब ब्रह्म निरंजन ध्याइ रही,
मन मन्दिर मोहन आइ गयो ।
'हरि जू' मुख मोरि नचाइ गयौ दृग,
ओंठनि में मुसकाइ गयो ॥
करि औचक आंख मिचौनी लला,
मुख चूमि सुधारस प्याइ गयो ।
तुअ ज्ञान गमाय कै प्रीति दृढ़ाइ कै,
प्रेम को पाठ पढ़ाइ गयो ॥

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो०—(सहास्य) अहाहाहा ! खूब प्रेम का पाठ पढ़ाया ! राधे कृष्ण को बिलकुल भूल जाओ। किसका ध्यान करती हो? तुम्हारे कृष्ण ब्रह्म नहीं हैं, महापुरुष भी नहीं हैं। एक अहीर के छोकड़े पर ऐसी मोहित हो रही हो ? राम राम।

दोहा

कृष्ण तिहारो नटखटी, जारी, चोर, लबार।

श्रीराधा—(क्रोध पूर्वक) बस—अधिक न कहो—
स्याम हमारे भावते, पूर्ण ब्रह्म अवतार ॥

यो०—राधे, शान्त हो जाओ, शान्त हो जाओ। अबकी बार ज्ञान और भक्ति की, योग और प्रेम की अन्तिम परीक्षा है। ध्यान करो। इस ध्यान में अवश्य, अवश्य ब्रह्म दर्शन होगा।

श्रीराधा—न हुआ, तब ?

यो०—मैं योगिनी का भेष छोड़ तुम्हारी दासी हो जाउंगी।

श्रीराधा—अवश्य ?

यो०—अवश्य, अवश्य।

(श्रीजी फिर ध्यान करती हैं)

यो०—(सखियों से) अबकी बार तुम्हारी स्वामिनी राधिका को निःसंदेह समाधि लग जायगी। देखो, ध्यान भंग न करना, जब तक मैं वीणा लेकर एक गीत गाती हूं।
(सब सखियां सन्नाटे में बैठ जाती हैं और योगिनी वीणा के स्वर में गीत गाती है)

पद

चलो सखी, जहँ पीउ हमारो।
सहज सून्य में महल पिया को, कोटि भानु उजियारो ॥
सजि सोरह सिंगार सुहागिल, भाव भगति उर धारो।
पहिरि चूनरी सुरत निरत की, ग्यान सौं मांग सँवारो ॥
मिलो अंक भरि भरि प्यारे सौं, फूलनि सेज सम्हारो।
अपने सजन पै खोलि कपट पट, तन मन धन सब वारो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा सँयोग बियोग न छिनहू, ऐसौ दांव न हारौ।
सतगुरु किरपा पाइ पिया की, नित आरती उतारौ॥

वि०—जोगिनजी, कितनी देर होगयी ! क्या श्रीजी का ध्यान अब तक पूरा नहीं हुआ ?

यो०—देखती हूं।

(योगिनी श्रीजी को ध्यान से जगाती है; बार बार जगाने पर भी श्रीजी सचेत नहीं होतीं; निश्चेष्ट दशा देख कर सखियां घबराती हैं)।

वि०—अरी जोगिन, तूने क्या कर दिया ? हाय श्रीजी की यह क्या दशा हो गयी है !

ल०—जा, जल्दी गुलाब जल ला। हाय हाय करने से क्या होगा ?

मंजु—(श्रीजी के पास जाकर) श्रीजी, श्रीजी, नैक आंख तो खोलौ, हाय यह क्या हुआ ! क्या इसी को समाधि कहते हैं !!

माधवी—(योगिनी के पैरों पर गिर कर) जोगिन जी, हमारी श्रीजी की समाधि खोल दो। महाराज सुन लेंगे, तो हम सब की क्या दशा होगी ?

यो०—घबराओ मत, शान्त हो जाओ। पूर्ण समाधि लग गयी है।

(योगिनी श्रीजी का हाथ पकड़ कर जगाती है)

श्रीराधा—(रोती हुई) प्यारे ! प्यारे !! क्यों प्रकट नहीं होते ? कपटो, कपट न करो। प्यारे..........

यो०—प्यारी राधे, कैसा कपट ?

श्रीराधा—(रोती हुई) प्राण प्यारे ! फिर पूछना कैसा ?

कुंजकामिनी—(वृक्ष पर से)

दोहा

योगेश्वर राधारमन, माधव आनँद कंद।
छांड़ि जोगिनी छदम अब, प्रगटि होहु नँदनन्द॥

वि०—(चकित हो) ऐं ! यह क्या ?

मानमंजरी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा

पुरुष पुरातन ब्रह्म तुम, प्रकृति राधिका रूप।
रसिकन हित लीला रचत, जुगल किसोर अनूप॥
(देखते २ योगिनी रूप से श्री कृष्ण प्रकट हो जाते हैं)।

श्री कृष्ण—(श्रीजी की चिबुक पर हाथ रख कर) प्यारी !

श्रीजी—(नेत्र खोल कर) बलिहारी प्यारे ! आज आपको छद्म योगिनी बनने में क्या आनन्द मिला ? क्या अब आप मेरी दासी हो कर रहेंगे ?

श्री कृष्ण—अवश्य।

दोहा

प्रेमिन के कर बिक गयो, प्यारी, मैं बिनु दाम।
करिहौं तिनको दास ह्वै, सेवा आठौं जाम॥
गोपीजन-बल्लभ अहौं, गोपीजन मो प्रान।
गोपीजन सौ आन नहिँ, गोपीजन की आन॥

दोहा

श्रीजी—आउ पियारे मोहना, पलक झांपि तोहि लेउँ।
ना मैं देखूं और कों, ना तोहि देखनि देउँ॥

श्री कृष्ण—प्यारी, ये दोनों सारिकाएँ, देवर्षि नारद और परमहंस शुकदेव हैं।
(नारद और शुकदेव श्रीराधा माधव को साष्टांग प्रणाम करते हैं)।

श्री कृष्ण—और यह भ्रमर रूपी पितामह ब्रह्मा हैं।
(ब्रह्मा भी साष्टांग प्रणाम करते हैं)

दोहा

ब्रह्मा—जय स्यामा योगेश्वरी, जय योगेश्वर स्याम।
दीजै नित्य विहार रस, कीजै कुंज-गुलाम॥

श्री राधाकृष्ण—तथास्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुकदेव--श्री स्यामा रसरूपिनी, रसमय नन्दकिसोर।
ब्रजबिहार रस बरसिकै, करौ रसिक मनमोर॥

श्रीराधाकृष्ण--तथास्तु।

दोहा

नारद—जुगलकिसोर सुमाधुरी, ध्याऊँ तजि सब काज।
गाऊँ नित्य बिहार रस, पाऊँ रसिक समाज॥

श्रीराधाकृष्ण--तथास्तु!

श्रीजी—वत्स शुक, तेरी और क्या इच्छा है?

हरिगीतिका

शुकदेव--यह कुंज-केलि बिहार-रस अति गोपनीय सदा रहै।
गुरु-भक्ति-भाव-विभोर बिनु अधिकार नहिँ कोऊ लहै॥
यह छद्म लीला स्याम की नित प्रेम सौं जो गाइहै।
भवसिंधु दुस्तर पारकरि सो सहज तुव पद पाइहै॥

श्रीजी--तथास्तु।

(आरती उतारती हुई सखियां गाती हैं).

गीत

आरति कीजै राधावर की।
छद्म योगिनी स्याम सुंदर की॥
नित्यकिसोर नन्दनन्दन की।
नारद शुक शिव बिधि बन्दन की॥
जन्म जन्म हौं यह रस पाऊँ।
बृन्दावन बसि अनत न जाऊँ॥
मिलै महल की खास खवासी।
मांगति हरि बियोगिनी दासी॥

(फूल वर्षा होती है)

पटाक्षेप

समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यालोचना

[ले० श्रीयुत पं० भगवानदीन पाठक, विशारद]

कुछ दिनों से हम एक तमाशा देखते हैं। साहित्य-विपिन में पुराने कवियों का शिकार खेला जा रहा है। आजकल की सभ्यता के अनुकूल इस शिकार का क़ायदा यह है कि आरम्भ की दो चार पंक्तियों में दबी ज़बान से कवि का थोड़ासा गुन गान कर दीजिए, और फिर बेरोकटोक "दूषणों" का ऐसा दरिया बहाइए जिससे पत्रों के पन्ने सैराब होते चले जायँ। वर्तमान कवियों के प्रति यह करतूत नहीं होती। कारण स्पष्ट है। कहीं गुत्थमगुत्था न होजाय। पुराने कवि स्वर्ग में हैं। न यहां लड़ने को आ सकते हैं और न साहित्य की अदालत में सफ़ाई देने को। धर्मराज या और कोई, जिनके ज़िम्मे स्वर्ग का प्रबन्ध है, शायद उन्हें इतनी भी रियायत नहीं देते कि दो चार दिन के लिए मृत्युलोक में आकर अपने ऊपर लगाये गये अभियोगों की सफ़ाई दे जायं। बेचारे वहीं बैठे बैठे दांत पीसते होंगे। यारों के पौ बारह हैं। चाहे बिहारी का गला घोंटिए, चाहे देव को दुतकार बताइए, बदला कौन लेगा, कोई हई नहीं। ऐसेही एक शिकार का हाल सुनिए, कई कारणों से भाद्र की मर्यादा मुझे कल से पहिले पढ़ने को न मिली। इसमें एक बड़ा अच्छा लेख है। साहित्य के एक प्रसिद्ध समालोचक (?) ने इसे लिखा है। लेख का शीर्षक है "भूषण दूषण"। हिन्दी के स्वनाम-धन्य राष्ट्रीय कवि "भूषण" से आप परिचित ही होंगे। बस, इस लेख में उन्हीं के दूषणों का दर्शन कराया गया है, जैसा कि लेख की प्रारम्भिक पंक्तियों से प्रकट होता है, लेखक महोदय ने इसे समालोचना के भाव से ही लिखा है। परन्तु इस भाव में और लेख के शीर्षक में उतना ही विरोध है जितना ३ और ६ की सूरत में। जहां एकमात्र दूषणों ही का दिग्दर्शन कराना है वहां समा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोचना काहे की ? लेख की कुछ पंक्तियों में भूषण के भूषणों (गुणों) का ज़िक्र आया है अवश्य; परन्तु हमारी बहस शीर्षक मात्र पर है। यदि हम लेख में वर्णित गुण और दोष दोनों पर नज़र डालते हैं, तो कहना पड़ता है कि 'भूषण', 'भूषण की कविता', 'भूषण का काव्य,' 'भूषण की कविता के गुण-दोष' आदि शीर्षक ही लेख के लिए विशेष उपयुक्त थे। परन्तु एक तो लेखक महोदय को भूषणों की अपेक्षा दूषणों की चर्चा ही विशेष रूप से इष्ट थी; दूसरे अनुप्रास से प्रेम भी उन्हें थोड़ा न था; शायद इन्हीं दो कारणों से उन्हें 'भूषण-दूषण' नाम रख कर समालोचना-शास्त्र के मूल सिद्धान्त की हत्या कर डालनी पड़ी।

इस 'भूषण-दूषण' में लेखक ने भूषण के सिर्फ़ ११ दूषण दिखाये हैं; आगे और दिखाने का वचन भी दिया है, बशर्तें कि पाठकों को इसमें कुछ सार जान पड़ा। ११ दूषण ये हैं—

१ यतिभंग, २ पुनरुक्ति, ३ अधिक पदत्व, ४ न्यून पदत्व, ५ ग्रामीणता, ६ अप्रयुक्त, ७ असमर्थ, ८ विसंधि, ९ छंदोभंग, १० व्याकरण च्युति और अलंकार दूषण।

यतिभंग, हरे हरे! सब से पहिले यतिभंग ही धरा है! छोर हो गया, अब कोई नहीं बचेगा! यतिभंग की धारा किस पर लागू न होगी? हिन्दी साहित्य का कौन अमर कवि यतिभंग के अभियोग से मुक्ति पा जायगा? तुलसी और सूर अब क्या करेंगे? कीर्ति का बखान होते २ सैकड़ों बरस हो गये, अब दूषण-दर्शन की बारी है। उन्हें या उनके भक्तों को जल्दी चेत जाना चाहिये। भूषण, बिहारी आदि से लोग निपट रहे हैं। अब की दफे उन्हीं पर हाथ साफ़ होगा। क्या पन्ने पन्ने पर यतिभंग है? लेखक द्वारा दिखाये गये भूषण के यतिभंग दूषण फिर देखिएगा; पहिले उन कवि-सम्राट तुलसी के यतिभंग देख लीजिए जिनका प्रत्येक पद केशव ने एक एक मंत्र बताया था और जिन्हें आज तक तीन सौ बरस से होने वाले बड़े २ कवि सूर्य या चन्द्र की उपमा देकर ही रह गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय विच्छेद तो होता ही है, तनिक और सुन लीजिए। लेखक महाशय कहेंगे तो हम क्या उनकी सूर्य चन्द्र की उपमा में बाधक होते हैं, हम क्या उनकी कीर्ति में कालिमा लगाना चाहते हैं, हम क्या उनके गुण-गौरव से इनकार करते हैं, हम क्या उनकी काव्य-प्रतिभा के कायल नहीं हैं? भाई साहब, यह तो सब कुछ है। मगर है यह वैसी ही बात जैसे कोई अपने किसी मित्र के पास किसी अर्थ से जाय और वह मित्र यह जवाब दे कि हमें आपकी खातिर तो हरतरह मंजूर है, मगर यह काम हमसे नहीं होगा। विचारिए ज़रा, इसमें क्या तत्व है? वह बेचारा मन ही मन कहेगा, फिर हमारी खातिर क्या तुम्हें खाक मंजूर है। हमारा कहना यह है कि पहिले तो यह दूषण दूषण ही नहीं हैं। मैं इन्हें दूषण मानता ही नहीं। काव्य में यतिभंग एक दोष होता है अवश्य; पर उसका एक माप भी है जो प्रायः सभी चतुर पाठकों के पास रहता है। यदि यतिभंग इस कोटि का है कि पढ़ने वाले को बहुत खटकता है, या वह किसी ऐसे शब्द के दो खंड करता है जिसे अलग होते देख कुढ़न सी होती है तो अवश्य ही वहां पर यतिभंग दूषण की धारा लगा देनी चाहिए। जब तक ऐसी बात नहीं है तब तक साधारण यतिभंग से तो हमें कम से कम प्राचीन कवियों के विषय में आंख हटा ही लेनी चाहिए। फिर, एक दूसरी बात यह कि प्राचीन कवियों के जो छोटे मोटे दूषण, भूषणों की सघन पत्रावली में कहीं दबे ढके पड़े हैं और साधारण जनों की आंखों से मानों सर्वथा ओझल हैं अथवा भूषणों की हज़ारों तहों को पार करके उनकी नज़र वहां तक नहीं पहुंच पातीं तो हमहीं उन्हें ढूंढ़ निकालने की कोशिश क्यों करें? क्या कोई खड्ड थोड़े ही हैं जिनमें गिरकर किसी के डूब मरने की आशंका हो। हां, जहां कि ऐसे खड्ड पाये जायँ और आप उन्हें ढूंढ़ निकालें तो हिन्दी जनता का अवश्य ही उपकार करेंगे। सो ऐसे खड्ड काव्य में साधारणतः दोही प्रकार के हो सकते हैं। काव्य की भारी भूलें, या भावों की अपवित्रता! यतिभंग दूषण ही है, सो भी भूषणों की हज़ारों तहों के नीचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषणों की तह बिगाड़ कर अपनी संकीर्णता का परिचय भले दे लीजिए, हाथ आप के भी कुछ न आयेगा। पाठकों का भी कोई लाभ न होगा। खैर लीजिए, तुलसी के यतिभंग ("दूषण" इसके बाद आप लिख लीजिए) देखिए—

१ तुलसी प्रभुहिं सिख देइ आयसु, दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अविरल अमल सियरघु, वीर पद नित नित नई॥
२ जननी सकल परितोषि परि परि पायँ करि विनती घनी।
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहि कुश, ली रहहिं कोसलधनी॥
३ जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गई।
दिन अंत पुर रुष स्रवत थन हुं कार करि धावत भई॥

(१) छन्द हरिगीतिका है। १६ मात्रा पर विराम होना चाहिये। जो 'रघु' पर होता है। 'वीर' आगे के चरण में जा पड़ता है। और इस तरह रघुवीर के दो खण्ड हो जाते हैं।

(२) छन्द वही है। यतिभंग पहिले से भी बढ़ा चढ़ा है। देखिए, दूसरे पद में 'कुश' पर विराम होता है, और 'कुशली' शब्द 'कुश' और 'ली' दो भागों में विभक्त हो जाता है।

(३) वही छन्द। वही बात। हुंकार के दो टूक हो जाते हैं। 'हुं' एक तरफ़ और 'कार' एक तरफ़ रह जाता है।

कोशिश की ज़रूरत ही नहीं। रामायण के पन्ने पलटते जाइए। यदि नज़र पैनी है तो लाखों यतिभंग अनायास मिल जायेंगे। यही हाल सूर का भी है। और जब सूर्य चन्द्र का यह हाल है तो सितारों और जुगुनुओं की कहे कौन! इसीसे हम कहते हैं कि यह यतिभंग वहीं दोष कहा जा सकता है जहां पढ़ने में बहुत बुरा मालूम हो, अथवा अर्थ नष्ट हो जाता हो। जहां यतिभंग होते हुए भी धारावाहिक पाठ हो सकता हो, साथ ही अर्थ में कोई अड़चन न आती हो वहां यतिभंग को यतिभंग दूषण नहीं कहा जा सकता।

लेखक महोदय ने भूषण में जो यतिभंग दिखाये हैं उन्हें भी देख लीजिए—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—वीर बिजैपुर को उजीर निसिचर गोलकुण्डा वारे घू घू ते उड़ाये हैं जहान सों

२—करनाट हबस फिरंग हूं विलायत बलख रूम अरितिय छतियां दलति है

३—उतर पहार बिधनोल खंडहर झारखंडहु प्रचार चाह केली है बिरद की

४—यहि लोक परलोक सुफल करन कोकनद से चरन हिए आनि कै जुड़ाइए

५—भूषन भनत भौंसिला के आप आगे ठाढ़े भये बाजे उमराम-नुजुक करन के

इन पांचों यतिभंगों को देखकर हमें एक बात पर बड़ी हँसी आई! पांच में चार यतिभंग संयुक्त शब्दों में हैं। हमारी राय में संयुक्त शब्द के दो भागों में से एक भाग इधर और एक उधर रह जाने से उतना यतिभंग नहीं होता जितना कि किसी एक ही शब्द के दो टुकड़े हो जाने से। अतः इन पांच में हमें तो एक वही यतिभंग खटका जो 'बलख' के दो टुकड़े करता है। संयुक्त शब्द के दोनों अंग अलग हो जाने पर भी अपना एक एक अलग अर्थ रखते हैं। जिससे यतिभंग होने पर भी पढ़ने या अर्थ समझ लेने में विशेष कठिनाई नहीं होती। असंयुक्त के बारे में ऐसी बात नहीं है। जैसे दूसरे उदाहरण में 'ब' पर यति होती है, और 'ब' अर्थहीन है। 'लख' से भी कोई वैसा अर्थ नहीं निकल सकता जो 'बलख' से कुछ सम्बन्ध रखता हो। ऐसी दशा में अवश्य इस पद का यह यतिभंग उन विद्यार्थियों या विदेशियों के पक्ष में 'दूषण' कहा जायेगा जो करनाट, हबस, फिरंग, बिलायत और रूम आदि को आस पास तैनात पाते हुए भी 'बलख' का मतलब न समझ पावें और 'ब' और 'लख' की उधेड़बुन में फँसे रहें। सर्वसाधारण के लिए हम इसे भी दोष नहीं कह सकते। अन्य चार यतिभंग तो नाममात्र को यतिभंग हैं। जैसेः—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिले पद में 'गोल' पर यति होती है, कुण्डा अलग रहजाता है। 'गोलकुण्डा' एक संयुक्त नाम है। उसके एक भाग पर यति हो जाती है। पढ़ने में कोई दिक्कत नहीं है। अर्थ भी साफ़ है। प्रसिद्धि और परिस्थिति पर भी बहुत कुछ निर्भर रहता है। कवि ने देखा, एक प्रसिद्ध नगर का नाम है। 'गोल' पर यति हो जाने से भी कोई भारतवासी 'गोल' और 'कुण्डा' को अलग अलग शब्द मान कर अलग अलग अर्थ लगा कर समझने में माथा न खपायेगा। 'गोल' और 'कुण्डा' हम अलग भी कर दें तो पाठक अर्थ लगाते समय उन्हें इकट्ठा कर लेंगे। छन्दशास्त्र को अन्धे की लकड़ी की नाईं पकड़ना किसी कवि के पक्ष में बुद्धिमत्ता नहीं कही जा सकती। सच्चे कवि का ध्यान भावों की ओर ही विशेष रूप से आकृष्ट होता है। प्रसिद्धि और परिस्थिति भी उसे जब तब काव्य के छोटे मोटे बंधनों की उपेक्षा पर बाध्य करती है। काव्य के नियम कविता के एक अंग के सहायक मात्र हैं, कविता के सर्वस्व नहीं हैं, और न उनमें किसी भावहीन कविता को सुन्दर बना देने की सामर्थ्य है। तुलसी और सूर ने यदि काव्य के बन्धनों की इतनी अधिक पर्वा की होती तो शायद उनके भावों की सुधा-धारा कुछ दूर बहकर उन्हीं नियमों के मरुस्थल में लुप्त हो जाती। उन्होंने अपनी ज़रूरत भर के लिए नियमों का उपयोग कर लिया है। काव्य के नियमों पर उन्होंने अपने भावों को भेंट नहीं चढाया। और भावों के पदतल में यदि काव्य-नियमों को उन्होंने लुटा दिया हो तो मैं उसे कोई दोष नहीं मानता। क्योंकि भाव ही प्रधान है। नियमों की संकीर्ण नली के भीतर से ही भावों को निकालना और एक सन्दूक में भावों को भर कर उसमें ताला लगा छोड़ना करीब करीब दोनों बातें एक हैं। कवि काव्य के नियमों की पर्वा करेगा और इसकी ज़रूरत समझेगा; मगर जहां वह देखेगा कि यहां पर काव्य के नियम की ज़रासी उपेक्षा कर देने से ही मेरे भाव अधिक अच्छे रूप में व्यक्त होते हैं और साथ ही पढ़नेवाले, सुननेवाले और समझनेवाले के हक़ में कोई बाधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आती तो वह ऐसी उपेक्षा से कदापि न चूकेगा। क्योंकि वह कविता करने बैठा है न, कि पिंगलाचार्य्य महाराज के हुक्मों की तामील करने।

तीसरे और चौथे उदाहरण में भी वही बात है जो पहले में। ये भी संयुक्त शब्द ही हैं। रहा पांचवां। सो इसमें क्रिया से यति-भंग है। 'ठाढ़े' एक ओर रह जाता है, 'भये' एक ओर। प्रायः सभी प्राचीन कवियों के, ख़ासकर कवित्त छन्द में, संयुक्त क्रियाओं के दो खंड दो स्थानों पर देखे जाते हैं। भूषण ही के माथे यह दोष नहीं मढ़ा जा सकता। यद्यपि मुझे तो इसमें भी शक है कि यह 'दोष' है भी या नहीं। क्योंकि यदि यह दोष है तो मैं किसी को इस दोष से मुक्त नहीं देखता और सब को दूषित कह बैठने का साहस नहीं रखता।

अस्तु! भूषण के यतिभंग दूषण का परिचय लेखक ने इन्हीं पांच उदाहरणों से दिया है। मैंने इस पर यहां तक जो कुछ लिखा है उसका आशय पाठक समझ ही गये होंगे। मेरे मत में साधारण यति-भंग को दूषण नहीं कहा जा सकता, और यदि कहा जा सकता है तो बड़े से बड़े कोई प्राचीन कवि इससे मुक्त नहीं मिल सकते। यहां पर मैं थोड़ा सा नवीन कवियों की तरफ़ भी इशारा करूंगा। आजकल भी हिन्दी में बड़े बड़े दिग्गज कवि हैं, इतना भाव उनके साहित्य-संसार में है कि सम्पादक सदा उनकी ओर टकटकी लगाये रहते हैं। कितने ही सज्जन तो उनकी कविता की प्रतीक्षा में अपनी पत्रिका का पहिला पृष्ठ बाद को छपाने के लिए रोक रखते हैं। पर यतिभंग के लिए उन विचारों की भी यही दशा है। भला 'भूषण' के छन्द में यति के बाद ही सही, दूसरे ही चरण में सही, 'भये' ठाढ़े के समीप तो मौजूद है। ये कवि-सम्राट तो ऐसी बेतुकी हांकते हैं कि संयुक्तक्रिया की एक टांग तो होती है यति के स्थान पर और दूसरी होती है पदान्त में। अर्थ तो अर्थ, अन्वय करले, भला किसकी मजाल! उनके पद का अन्वय करना व्याकरण या साहित्य की विद्वत्ता पर निर्भर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता, बल्कि उनका पद एक पहेली होता है, उलट पुलट के दस रूपों में रख देखिए, कोई एक ठीक निकलही आयेगा। यदि साहस हो तो इन्हीं गरूओं से प्रार्थना करनी चाहिए कि महाराज ज़रा हमें यह समझा दीजिए कि आप के पदों की भाषा तो ठेठ हिन्दी है; परन्तु फिर भी ये समझने के हक़ में लोहे के चने हैं, सो क्या बात ? वे न बतायें तो हमसे पूछ लीजिए, उनमें एक दोष होता है। उसी दोष से वे लोहे के चने बन जाते हैं। हम उसी दोष को यतिभंग दोष कहते हैं। तुलसी, सूर और भूषण में यद्यपि हमने यतिभंग देखा; पर हम उस यतिभंग को यतिभंग दूषण न कह सके, क्योंकि अन्य कारणों से कठिनाई भले ही पड़ी हो, यतिभंग दोष के कारण हमें उनके समझने में कठिनाई कभी नहीं पड़ी; पर अन्य किसी कारण के न रहते हुए भी एकमात्र यतिभंग के कारण हमें आजकल कुछ कवियों की कविताएं समझने में कठिनाई होती है। इसीलिए हम उसे "यतिभंग-दूषण" कहते हैं और उसे सिर्फ़ "यतिभंग" कह कर रह जाते हैं।

(शेष आगे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमापरीक्षा सं० १९७९ का परीक्षाफल

(योग्यता के अनुसार)

क्र० स०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
४०४	श्री टीकाराम भट्ट *	हरिद्वार	प्रथम
२५६	,, किशनलाल	नारायणगढ़	,,
२१९	,, पुरुषोत्तमदास पुरोहित	जोधपुर	,,
१३६	,, रुद्रदत्त मिश्र	कोटा	,,
१४९	,, फूलचन्द्र गुप्त	खुर्जा	,,

(क्रमसंख्या के अनुसार)

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१४	,, बालमकुन्द सहाय	आरा	द्वितीय
१८	,, इन्द्रजीत सिंह	इनानजांव	तृतीय
२०	,, दीन दयाल	इटावा	द्वितीय
२२	,, ब्रजबिहारीलाल	,,	,,
२९	,, अब्दुलसत्तार खां	इन्दौर	तृतीय
३१	,, केशवराम गुंजारकर	,,	,,
३३	,, घासीलाल दुबे	,,	,,
३४	,, चेतराम	,,	द्वितीय
३५	,, छगनलाल	,,	तृतीय
३८	,, बालमकुन्द जोषी	,,	द्वितीय
४०	,, ब्रजलाल	,,	द्वितीय
४१	,, फूलचन्द्र	,,	तृतीय
४२	,, मन्नालाल	,,	द्वितीय
४८	,, श्रीधर	,,	तृतीय
५१	,, शिवदुलारे दुबे	,,	द्वितीय
५३	श्रीमती सुशीलादेवी	,,	तृतीय
५४	श्री सरजदीन	,,	,,

नोट—श्री टीकाराम भट्ट प्रथमा परीक्षा में सर्वप्रथम होने के कारण भट्ट पदक के अधिकारी हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
५५	श्री काशीनाथ त्रिवेदी	उज्जैन	तृतीय
७४	श्रीमती शिवरानी देवी	उन्नाव	द्वितीय
७७	श्री तुलसीराम विद्यार्थी	एटा	,,
८०	,, बाबूराम शर्मा	,,	द्वितीय
८२	,, रविलाल	,,	,,
८४	,, सत्यनारायण	,,	तृतीय
८८	,, कल्लूसिंह	कानपुर	द्वितीय
६३	,, माना त्रिपाठी	,,	,,
६६	,, रामेश्वरदयाल	,,	तृतीय
६६	,, उमाशंकर मिश्र	काशी	द्वितीय
१००	,, ऋषिनारायण शर्मा	,,	,,
१०६	,, द्वारिकादास	,,	तृतीय
१०७	,, पुरुषोत्तमराम	,,	,,
१०६	,, मोतीचन्द्र	काशी	तृतीय
१११	,, रामप्रतापप्रसाद	,,	द्वितीय
११५	,, पा० ना० राजाराम शर्मा	,,	तृतीय
११७	,, लालसिंह	,,	द्वितीय
११६	,, विश्वनाथप्रसाद मिश्र	,,	,,
१२१	,, हरिहर पाण्डे	,,	,,
१२२	,, अनन्दीलाल	कोटा	,,
१२३	,, कंवरलाल शर्मा	,,	प्रथम
१२५	,, किशोरीलाल	,,	द्वितीय
१२७	,, नाथूलाल	,,	,,
१२६	,, बद्रीलाल शर्मा	,,	,,
१३०	,, बालकृष्ण	,,	,,
१३२	,, भैरोंलाल शर्मा	,,	,,
१३८	,, करनपाल सिंह	खुर्जा	तृतीय
१४०	,, गोकुलचन्द्र शर्मा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१४३	श्री दीवानसहाय शर्मा	खुर्जा	द्वितीय
१४८	,, प्रभुदयाल गुप्त	,,	प्रथम
१५१	,, बाबूलाल गुप्त	,,	द्वितीय
१५६	,, मनबीरसिंह	,,	तृतीय
१५९	,, रामलाल वैश्य	,,	द्वितीय
१६२	,, हीरालाल	,,	तृतीय
१६४	,, गुच्चीलाल तिवारी	खन्डवा	द्वितीय
१६७	,, देवीप्रसाद तिवारी	,,	तृतीय
१६९	,, रामचरनलाल	,,	,,
१७६	,, रामनाथ नेगा	गाडरवारा	द्वितीय
१७७	,, राधाकृष्ण कावरा	,,	तृतीय
१८१	,, अजबसिंह	गंगाशहर	,,
१८२	,, केशवराम	,,	द्वितीय
२००	,, छेदीलाल	जबलपुर	,,
२०१	,, जानकीप्रसाद रायजादे	,,	,,
२०५	,, शिवरतनलाल	,,	,,
२०६	,, शंकरशरण कायस्थ	,,	,,
२०७	,, अयोध्याप्रसाद शर्मा	जयपुर	,,
२०८	,, गोविन्दलाल शर्मा	,,	,,
२१०	,, दामोदरप्रसाद शर्मा	,,	,,
२११	,, प्रभूनारायण शर्मा	,,	,,
२१४	श्री ब्रजमोहन शर्मा	,,	द्वितीय
२१५	,, भट्ट मनमोहन शर्मा	,,	,,
२१७	,, श्रीकृष्ण शर्मा	,,	,,
२१८	,, अमृत लाल अवस्थी	जोधपुर	तृतीय
२२१	,, कन्हैया लाल वर्मा	झालरापाटन	,,
२२६	,, कुंअर जगन्नाथ सिंह	,,	द्वितीय
२३०	,, श्रीनिवासदास वैद्य	,,	तृतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम संख्या	नाम	केन्द्र	श्रेणी
२३३	श्री चन्द्रपाल शर्मा	झाँसी	द्वितीय
२३४	,, बालकृष्ण गोपाल शर्मा	,,	तृतीय
२३५	,, मनीराम शर्मा	,,	द्वितीय
२३६	,, श्रीधर गोविन्द गर्दे	,,	,,
२३७	,, उमाशङ्कर द्विवेदी	देवरिया	तृतीय
२३९	,, नागेन्द्रनाथ उपाध्याय	,,	,,
२४२	,, अमरनाथ	देहरादून	प्रथम
२४३	,, गणपतिदेव शर्मा	,,	,,
२४४	,, जयचन्द्र	,,	,,
२४५	,, ज्योति नारायण	,,	तृतीय
२४६	,, नारायण सिंह रावत	,,	द्वितीय
२४७	,, मिट्ठनलाल	,,	प्रथम
२४८	,, रामनिवास	,,	द्वितीय
२४९	,, रामस्वरूप गुप्त	,,	,,
२५०	,, राधारमण रेंदड़	,,	,,
२५१	श्रीमती लीलावती देवी	,,	,,
२५४	श्री कचरूमल	नारायणगढ़	,,
२५५	,, कजोड़ीमल	,,	प्रथम
२५८	,, दयाराम विद्यार्थी	,,	तृतीय
२५९	,, पुरुषोत्तमदास	,,	प्रथम
२६०	,, प्यारचन्द्र विद्यार्थी	,,	द्वितीय
२६२	,, वृद्धिचन्द्र विद्यार्थी	,,	तृतीय
२६४	,, मसऊद खां	,,	द्वितीय
२६५	,, मांगीलाल विद्यार्थी	,,	प्रथम
२६६	,, रघुनाथ विद्यार्थी	,,	द्वितीय
२६८	,, रामचन्द्र विद्यार्थी	,,	तृतीय
२६९	,, शिवनारायण विद्यार्थी	,,	,,
२७१	,, प्रेमनारायण	पथरिया	द्वितीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
२७२	श्री मूलचन्द्र त्रिवेदी	पथरिया	द्वितीय
२७३	,, रूपराम शर्मा	,,	,,
२७४	,, आनन्द किशोर	प्रयाग	तृतीय
२७८	,, मिट्ठू प्रसाद द्विवेदी	,,	द्वितीय
२७६	,, सन्तप्रसाद टन्डन	,,	,,
२८२	,, बलदेव प्रसाद त्रिवेदी	फैजाबाद	द्वितीय
२८४	,, रामकरण देवड़ा	फतहपुर	तृतीय
२८५	,, लक्ष्मी नारायण अवस्थी	,,	,,
२८७	,, राम गोपाल	फरुखाबाद	द्वितीय
२८६	,, गंगाशरण सिहं शर्मा	बाँकीपुर	,,
२६०	,, चक्रधरझा	,,	,,
२६२	,, कुंजराम	बिलासपुर	तृतीय
२६४	,, मालिक राम शर्मा	,,	,,
२६५	,, दीन दयाल अग्रवाल	,,	द्वितीय
२६७	,, मेघराज गोस्वामी	बीकानेर	,,
२६६	,, शिखर चन्द्र मुकीम	,,	तृतीय
३०५	,, वासुदेव सिंह	बैरिया	द्वितीय
३०८	,, राम सुन्दर राम	,,	तृतीय
३१६	,, राधा वल्लभ सहाय	मुज़फ्फरपुर	प्रथम
३२१	,, गंगा सहाय गुप्त	मुरादाबाद	तृतीय
३२४	,, जगदीश प्रसाद शर्मा	,,	,,
३२५	,, धर्मपालकृष्ण शर्मा	,,	,,
३२६	,, पुरुषोत्तम बर्मा	,,	द्वितीय
३२८	,, शिवचरण लाल शर्मा	,,	तृतीय
३३०	,, पुरुषोत्तम देव त्रिपाठी	रंगून	,,
३३७	,, हरिमूर्ति पाण्डे	रंगून	तृतीय
३३८	,, हरिहर प्रसाद द्विवेदी	,,	,,
३३६	,, त्रिशूल धारी ओझा	,,	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
३४१	श्री कौशलेन्द्रनाथ ठाकुर	राजनाँदगांव	द्वितीय
३४३	,, नरसिंह लाल चितलाँगया	,,	तृतीय
३४४	,, पूरण लाल तेली	,,	,,
३४६	,, सियाराम तेली	,,	द्वितीय
३५३	,, मांगी लाल शर्मा	राजलदेसर	,,
३६४	,, काशी प्रसाद	लश्कर	,,
३६६	,, भगवान सिंह	,,	,,
३६८	,, लल्लू	,,	,,
३७०	,, इन्द्र चन्द्र	लाहौर	,,
३७१	श्रीमती विद्याधरी देवी	,,	,,
३७४	श्री जै जै राम टन्डन	शाहजहांपुर	,,
३८०	,, उद्योत नारायण सिंह	सीवान	,,
३८५	,, राम चन्द्र प्रसाद सिंह	,,	प्रथम
३८७	,, भगवती शरण प्रसाद	,,	द्वितीय
३९०	,, इन्द्रचन्द्र शर्मा	सुजानगढ़	तृतीय
४०१	,, हनूमानदत्त	,,	,,
४०२	श्रीमती अम्बा देवी	हरिद्वार	द्वितीय
४०३	,, गायत्री देवी	,,	तृतीय
४०५	,, सरला देवी	,,	द्वितीय
४०७	श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त	होशंगाबाद	तृतीय
४०८	,, काशीराम मेहर	,,	,,
४०९	,, घासीराम	,,	,,
४१०	,, निरंजन सिंह	,,	,,
४११	,, वृन्दावन प्रसाद	,,	,,
४१२	,, हरिकिशन लाल	,,	प्रथम
४१३	,, मूलचन्द्र जैन	जबलपुर	तृतीय
४२२	,, भूरेलाल श्रीवास्तव	इन्दौर	,,
४२६	,, भेषजदत्त शर्मा	मुरादाबाद	द्वितीय
४२७	,, किशन लाल	इन्दौर	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं० १९७९ की मुनीमी परीक्षा का परीक्षाफल

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
८	श्री नाथूलाल कुरमी	इन्दौर	द्वितीय
१०	,, सत्यव्रत राय	काशी	,,

सं० १९७९ की उत्तमा परीक्षा का परीक्षाफल

क्र० सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१	श्री बाबूराम वित्थरिया	प्रयाग	द्वितीय

गोपालस्वरूप भार्गव
एम० एस० सी०
परीक्षा मंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का चतुर्थ साधारण अधिवेशन रविवार मिती पौष कृष्ण ६ सं० ७६ तदनुसार १० दिसम्बर २२ को १ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में निम्नलिखित सज्जनों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

१ श्री पं० विशम्भर नाथ शर्मा कौशिक
२ श्री पं० रामप्रसाद मिश्र
३ श्री गोपाल चन्द्र सिंह
४ श्री ला० भगवानदीन जी
५ श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
६ श्री वियोगी हरि जी
७ श्री भगवती प्रसाद
८ श्री प्रो० ब्रजराज
श्री पं० रामजी लाल शर्मा

सर्व सम्मति से श्रीमान् पं० विश्म्भरनाथ शर्मा कौशिक जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—गत अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़ा गया, और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

२—निश्चित हुआ कि कानपुर सम्मेलन का अधिवेशन शुक्रवार, शनिवार, रविवार चैत्र शुक्ल १३, १४ और १५ संवत् १६८० तदनुसार ३०, ३१ मार्च व १ अप्रैल सन् २३ की तिथियों में किया जाय।

३—त्रयोदश सम्मेलन की निबन्ध-सूची के सम्बन्ध में स्वागत-कारिणी समिति की प्रस्तावित सूची उपस्थित हुई, निश्चित हुआ कि इसमें संशोधन करने के लिए निम्नलिखित तीन सज्जनों की एक उपसमिति बनायी जाय।

१ श्री पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
२ श्री पं० रामजी लाल शर्मा
३ श्री प्रो० ब्रजराज

४—गतवर्ष का (भाद्र कृष्ण १ सं० ७८ से श्रावण शुक्ल पूर्णिमा ७६ तक) वार्षिक विवरण उपस्थित किया गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

५—सं० ७६–८० का आयव्यय का अनुमानपत्र उपस्थित हुआ और कुछ हेर फेर के बाद निम्नलिखित रूप में सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आय का अनुमान

सम्मेलन दान	... ...	८७४३०)
ब्याज	... ...	१५००)
सम्मेलन पत्रिका	... ...	१५०)
सम्बद्ध संस्थाओं का शुल्क	... ...	२०)
पुस्तक बिक्री	... ...	५०००)
अन्य दान	... ...	१००)
परीक्षा समिति की आय	... ...	३०००)
सदस्य शुल्क	... ...	५००)
		९७७००)

व्यय का अनुमान

कार्यालय	... ...	४८००)
प्रचार	... ...	३००००)
कागज छपाई	... ...	३००)
सामान	... ...	६००)
विद्यापीठ	... ...	५०००)
उपदेशक	... ...	८००)
पुस्तकालय	... ...	१०००)
सम्मेलन पत्रिका	... ...	१५००)
पुस्तक प्रकाशन	... ...	६०००)
वार्षिक विवरण	... ...	२००)
स्टेशनरी	... ...	१००)
पदक	... ...	१००)
फुटकर	... ...	१००)
सम्मेलन भवन	... ...	४५०००)
परीक्षा समिति	... ...	३०००)
		९७७००)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—नियमावली के दसवें नियम के अनुसार वार्षिक शुल्क न देने वाले निम्नलिखित साधारण सदस्यों के नाम सूची से काटने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

१ श्री० बाबू नाथूलाल वर्मा ट्रेनिंग कालेज-जबलपुर
२ „ बा० नाथूराम जी वकील-जबलपुर
३ „ पं० लक्ष्मण कृष्ण पराड़कर-जबलपुर
४ „ बा० मनोहर कृष्ण गोवलकर-जबलपुर
५ „ पं० कामता प्रसाद गुरु-जबलपुर
६ „ बा० सीताराम जी शाह-काशी
७ „ पं० हरिप्रसाद बी० ए०-बनारस
८ „ बा० नवाब बहादुर जी-प्रयाग
९ „ प्रताप नारायण जी मालवीय-प्रयाग
१० „ गौरी शंकर प्रसाद शुक्ल-लश्कर
११ „ नागेश्वर प्रसाद शर्मा-पटना
१२ „ राय ब्रजराज कृष्ण जी-पटना
१३ „ शंकरधर सिंह-बांकीपुर
१४ „ बालगोविन्द मालवीय-पटना
१५ „ वैद्यनाथ प्रसाद-पटना
१६ „ दामोदर प्रसाद-पटना
१७ „ कृष्ण चैतन्य गोस्वामी-पटना
१८ „ शिवपूजन सहाय-बांकीपुर
१९ „ जनक तिवारी-सारन
२० „ भगवती प्रसाद सहाय-भागलपुर
२१ „ रघुनन्दन लाल जमीन्दार-भागलपुर
२२ „ अवध बिहारी सिंह-भागलपुर
२३ „ गौरी शंकर सहाय-भागलपुर
२४ „ बा० अनन्त प्रसाद-भागलपुर
२५ „ बसन्त लाल साह-भागलपुर
२६ „ पूरनमल ढाढनियां-भागलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ श्री मोती लाल ढाढनियां–भागलपुर
२८ ,, हनुमान दास खेमका–भागलपुर
२९ ,, प्रयाग नारायण–भागलपुर

७—स्वर्गीय श्री पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के स्थान में श्री पं० गोविन्द प्रसाद कौशिक बी० ए० सुपरिन्टेन्डेन्ट राजपूताना एजेन्सी अजमेर सर्वसम्मति से स्थायी समिति के सदस्य चुने गये।

८—श्री पं० हरिहर शर्मा, अध्यक्ष मद्रास प्रचार कार्यालय का पत्र उपस्थित हुआ, उसके अनुसार निश्चित हुआ कि मद्रासकार्य का निरीक्षण करने के लिए निरीक्षक जनवरी सन् २३ में अवश्य भेजा जाय।

९—निश्चित हुआ कि कुछ सहायता देकर श्री पं० प्रयाग नारायण द्विवेदी, जिमींदार सफदरगंज की देख रेख में जिला बाराबंकी में अदालतों में देवनागरी लिपि में कागज़ात दाखिल कराने का उद्योग किया जाय।

१०—हिन्दी-साहित्य-विद्यालय काशी का सहायता सम्बन्धी प्रार्थना पत्र उपस्थित हुआ, निश्चित हुआ कि कानपुर सम्मेलन के बाद इस विद्यालय की सहायता के विषय में विचार किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ साहित्य माला

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा प्रकाशित

सम्मेलन की स्थायी समिति ने सुलभ साहित्यमाला निकालने का निश्चय किया है, जिसका उद्देश्य यह है कि हिन्दी में उत्तमोत्तम ग्रन्थों के सुन्दर और सस्ते संस्करण प्रकाशित किये जाय, जिससे हिन्दी हितैषिणी जनता में उन ग्रन्थरत्नों का बड़ी ही सुलभता से प्रचार हो। अब तक निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित द्वितीय संस्करण, मू० ॥=)

२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, "मिश्रबन्धु" कृत, पृष्ठ संख्या १८८, मूल्य ।=)

३—भारत गीत, सुप्रसिद्ध कवि पं० श्रीधर पाठक रचित, मू०≡)

भारतवर्ष का इतिहास, प्रथमखण्ड लेखक "मिश्रबन्धु"

५—राष्ट्रभाषा—इसमें महात्मा गांधी जी के राष्ट्रभाषा सम्बन्धी प्रश्न के उत्तरों का भी संग्रह है। लेखक "एक भारतीय हृदय", मूल्य ॥)

६—शिवा बावनी-टिप्पणी एवं भावार्थ सहित, मूल्य ≡)

७—सरल पिङ्गल, मूल्य ।)

८—सूरदास की विनय-पत्रिका मूल्य ।)

९—भारतवर्ष का इतिहास, द्वितीय खण्ड ले० मिश्रबन्धु, मूल्य २।)

१०—रहिमन के दोहे (२१५ दोहे) टिप्पणी सहित मूल्य -)॥

११—रहिमन के दोहे और बरवै टिप्पणी सहित मू० =)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गया !

संक्षिप्त सूरसागर

संपादक—श्री वियोगी हरि

सूरदास जी हिन्दी के वेदव्यास हैं। इनके अगाध सागर में भक्ति सुधा के अतिरिक्त अनेक साहित्य रत्न भरे पड़े हैं। जैसा प्रचुर प्रचार गुसांई तुलसीदास जी की रामायण का है वैसा सूरसागर का क्यों नहीं हुआ ? इसलिए कि लोग इस बृहद् ग्रन्थ को अभी तक सुलभता से पा ही नहीं सके। सम्मेलन ने इस सागर से एक गागर सुधा भर कर सुलभ संस्करण के रूप में उपस्थित किया है। इसमें ५१६ पदों का संग्रह हुआ है। इसकी प्रस्तावना हिन्दी के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्य रसिक

श्री पं० राधाचरण गोस्वामी

ने लिखी है। शब्दार्थ, विशेष टिप्पणी तथा अंत में लगभग १०० पृष्ठ की समालोचना लिखी गयी है। सूरदास जी की जीवनी भी लिख दी गयी है। पदों में आयी हुई अन्तर्कथाएँ भी जोड़ दी गयी हैं यह छोटासा सुलभ संस्करण प्रत्येक साहित्य सेवी के काम का है। पदों का संग्रह सूरसागर की लीलाओं के अनुक्रम से किया गया है। जिस प्रकार रामचरित्र मानस तथा भगवद्गीता प्रत्येक आस्तिक साहित्य-रसिक के हाथ में हैं, उसी प्रकार इस संक्षिप्त सूरसागर की एक एक प्रति लेकर आपको भाषा साहित्य का समुचित आदर तथा भगवत रसास्वादन करना चाहिये। बढ़िया एण्टिक कागज़ पर छपी हुई कपड़े की जिल्द सहित सुन्दर प्रति का मूल्य केवल २) रखा गया है। साहित्य प्रेमियों को इसे लेने में शीघ्रता करनी चाहिए।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रवन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] माघ, संवत् १९७९ [अंक ६

निज भाषा बोलहु, लिखहु,
पढ़हु, गुनहु सब लोग ।
करहु सकल विषयन विषैं,
निज भाषा उपयोग ॥

—श्रीधर पाठक

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित उत्तमोत्तम पुस्तकें

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित ... मूल्य ॥~)

२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ... मूल्य ।=)

३—भारत का इतिहास, प्रथम खण्ड ... मूल्य १॥)

४—भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड ... मूल्य २)

५—शिवा बावनी, टिप्पणी सहित ... मूल्य ≡)

६—सूरदास की विनय पत्रिका ... मूल्य ।)

७—रहिमन के दोहे टिप्पणी सहित ... मूल्य ~)॥

८—राष्ट्र भाषा ... ... मूल्य ॥)

९—सरल पिङ्गल ... ... मूल्य ॥

१०—भारत गीत .... मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत !

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्तम्भ-स्वरूप

श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन,

कृष्ण-जन्मभूमि से

तपस्या करके

पधारिये ।

—हिन्दी-साहित्य-संसार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] माघ, संवत् १९७९ [अङ्क ६

अभिलाषा

सवैया

छहरैं सिर पै छबि मोर पखा, उनकी नथ के मुकुता थहरैं।
फहरै पियरौ पट 'बेनी' इतै उनकी चुनरी के झवा झहरैं॥
रस रङ्ग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं लहरैं।
नित ऐसे सनेह सौं राधिका स्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं॥

—कविवर बेनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्त-चन्द्रिका

संग्रहकर्त्ता—श्रीयुत वियोगी हरि

ह पिंगल शास्त्र सम्बन्धी छोटी सी पुस्तिका कविचक्रचूड़ामणि पद्माकर के पौत्र गदाधर भट्ट कृत है। गदाधर भट्ट के पिता का नाम मिहींलाल था। गदाधरजी का दतिया रियासत में विशेष मान था। ये जैपुर और सुठालिया के महाराजाओं के यहां भी सम्मानित हुए थे। इन्होंने अलंकार चन्द्रोदय, कैसर सभा विनोद, छन्दोमञ्जरी, वृत्त-चन्द्रिका आदि ग्रन्थों की रचना की। महाराज सवाई रामसिंह के विनोदार्थ कामांधक नामक संस्कृत नीति का भी भाषा छन्दों में उल्था किया। 'मिश्रबन्धु विनोद' में, इनके रचे हुए ग्रन्थों में, 'गदाधर भट्ट की बानी' का भी उल्लेख है। 'बानी वाले' गदाधर भट्ट ये नहीं थे। जिनकी बानी मिलती है, वे श्रीचैतन्य सम्प्रदाय के भक्त कवि थे। छन्दोमञ्जरी सुठालिया-नरेश के आश्रय में लिखी गई थी। इसमें इनके गद्य का भी नमूना है। इनकी कविता बड़ी ही सरस, ओजस्विनी और सानुप्रास है। 'मिश्रबन्धु विनोद' में इन्हें तोष का स्थान मिला है। विनोद में वृत्त-चन्द्रिका का उल्लेख नहीं है। यह ग्रन्थ दतिया में लिखा गया था। हमारे पास श्रीयुत पं० गोविन्द राव तैलंग कवीश्वर, पुरानी वस्ती, शूरखुड़ी (जयपुर) ने इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति बड़े कृपापूर्वक भेजी है। हम इस कृपा के लिए प्रेषक महोदय को कोटिशः धन्यवाद देते हैं।

दोहा—श्री निंबार्क पदांबुजे, प्रनति मुदा विधाय।
वृत्त-चन्द्रिका कथ्यते, मया वृत्त बोधाय॥
जे प्रसिद्ध जग वृत्तवर, चित्त हरन में दच्छ।
मत्त वरन द्वै भेद तिन, वरनत लच्छन लच्छ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन भय जर सत गल सुये, दस अक्षर परिमान।
सर्व शास्त्र व्यापक जगत, ज्यों सु विष्णु भगवान॥
मनभय सुखदा चार ये, जरसत दुखदा लेख।
तीन तीन अक्षर कलित, वसु गन ये अवरेख॥
वंक रूप गुरु जानिये, सरल लीक लघु मान।
पिंगल फन पति पंथ सौं, भाषत यों बुधवान॥
सर्व आदि मधि अंत में, गुरु लघु वरन सुधार।
मनभय जरसत अष्ट गण, क्रम सौं लेहु विचार॥
भू अहि शशि जल देवता, मनभय के सुख दान।
भानु अग्नि पव मान नभ, जरसत सुर दुख दान॥

छप्पय—भूमि भव्य की हेतु बुद्धि अभिनव्य देत अहि।
मङ्गलीक निशिनाथ पाथ अति कुशल गाथ महि॥
सोखत सुख बहु शूर अग्नि तन भूर सुदाहत।
रुच्चत पवन प्रयान सून्यता नभ निरवाहत॥
या विध सु अष्टगण शुभअशुभ पिंगल फनपति फल कहत।
तातैं सु आदि नर वृत्त के चार शुद्ध औरन चहत॥

बरवै—मगन नगन अति मिलवा भय गन दास।
उदासीन जत जानहु रस रिपु भास॥
प्रथम काव्य के द्वै गन धरहु सुधार।
मन भय रचिये शुभदा जर सत टार॥
शब्द देव शुभ बाचक कवित सु आदि।
होय तो न कछु दूषण मत सु अनादि॥
अष्ट सुगण यों सोधन करत विशेष।
कवि जन जन कविता में सेस निदेस॥
प्रथम कवित के ह, झ, घ, न, ध, र, ख, भ, जान।
दग्ध वर्ण मत बरनहु कहत प्रमान॥

दग्ध वर्ण फल

है हकार तें हानि सुझगर झकार।
त्यों घकार तें घर भय नगर नकार॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरनि धकार विनासत रमनि रकार।
करत खकार सुखिनता भखन भकार॥

दग्धाक्षर दोष शांति वर्णन

दग्ध वरन जे बसुवा गुरुता लीन।
होहिं तो न कछु दूषण कहत प्रबीन॥

अष्टगण जात्यादि वर्णन

कवित्त—रौद्र रस पीत रङ्ग अंत्यज मगन राजै,
हास्य रस बिप्र श्वेत नगन प्रमानवर॥
वीर रस पीत रङ्ग भगन सु वैश्य जात,
यगन सिँगार रस पीत द्विज ग्यान वर॥
शांत रस क्षत्री जाति जगन सु लाल रङ्ग,
रगन सु विप्र रस करुणा सुलाल धर॥
अद्भुत सुरस श्वेत अन्त्यज सगन जानो,
भय में सुपीत शूद्र तगन बखान कर॥

मात्रा छंद वर्णन

दोहा—दिन मणि वार कला कलित, तिन पर यति अभिराम।
पिंगल फन पति छंद सो, कहत मनोहर नाम॥

मनोहर

जय गुविंद गरुड़ासन, गोकुल चंद।
गोपी जन मन रंजन, आनँद कंद॥

दोहा—कला त्रयोदश शिव जहाँ, चरण यथा क्रम जान।
तिन पर यति सो छंद वर, दोहा सुबुध बखान॥

दोहा

वामन प्रभु वलि द्वार पै, बानिक बनि सुख दान।
बनिता लखि बलि राज की, बिहँसत बहुत प्रमान॥

दोहा—चरन चरन प्रति मत्त जहँ, शिव सुत्रयोदश होय।
तिन पै यति फन पति सु कहि, छंद सोरठा सोय॥

सोरठा

कलि कल मखतम लीन, निरख दीन जन जगत के।
धारि सु उर मणि लीन, करि करुणा करुणायतन॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—प्रथम सु दोहा अंत पुनि, रोला छंद प्रमान।
प्रति पद यमक सुवृत्त वर, कुंडलिया सु बखान॥

कुण्डलिया

क्रुद्धित ह्वै रण भूमि में, जबहि कृष्ण समरत्थ।
रदन कुवलिया पीड को, करयौ उपाटन हत्थ॥
करयौ उपाटन हत्थ, सत्थ सों ये बच बोले।
करो कंस विध्वंस, आज प्रति पच्छ अडोलै॥
पच्छ अडोलै करो देव नर दिग्गज उद्धत।
रचौं जुद्ध परचंड चंड कर सम ह्वै क्रुद्धित॥

दोहा—कुंडलिया सम कीजिये, कला विरति स्वच्छंद।
यमक तीन ता मधि रचौ, अमृतध्वनि सो छंद॥

अमृतध्वनि

दरसत उच्छ्छव अंग में, रंग भूमि में लच्छ्छ।
मल्ल जुद्ध चानूर सों, हरि किय हर्षित अच्छ्छ॥
अच्छ्छ छ्छकित, प्रतछ्छ्छ्छ्छलिय विपच्छ्छ्छ्छय हित।
अद्धद्धरित प्रबुद्धद्धरनि, विरुद्ध द्धरि चित॥
उत्थ त्थपिय सुवत्थ त्थलनि, विलुत्थद्धुरसत।
मद द्विरद बिहद्द द्दरप, अमंददरसत॥

दोहा—कला चरण प्रति जिन जहां, रुद्र त्रिदश यति लेख।
गुरु लघु कौ नहिं नेम सो, रोला छंद विशेख॥

रोला

ग्वाल बाल संग सज्जि, गोपिका गण कों रुक्कत।
दधि लुट्टत बर जोर जुट्ट, झंझट सौं रुक्कत॥
निरखि नंद कों तहां, भज्जि जित तित सब मुक्कत।
अक बक्कत मग छाँड़ि, जननि गृह गोविंद लुक्कत॥

दोहा—चरण चरण बसु बीस कल, तिथि त्रयदश विश्राम।
छप्पय अंत सु चरण जुग, छंद उलाला नाम॥

उल्लाला

कीन्हो सु जुद्ध अति क्रुद्ध ह्वै, रंग भूमि हरि जुट्टि कैं।
पटके प्रतछ्छ हनि मल्ल गज, रहे ते सुधर लुट्टि (?) कैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोणित अखंड तिन रंग में, श्याम अंग रंजित बसैं।
मानहुँ कलिंद गिरि भानु की, किरन बृंद मंडित लसैं॥

दोहा—रोला के पद चार जहँ, उल्लाला पद दोय।
छप्पय जुत पिंगल कहे, छप्पय छंद सु होय॥

छप्पय

थकित गोप गण सर्व लखत कालो दह तट पै।
करत नृत्य गोविन्द नाग काली के घट पै॥
कछैं काछनी अच्छ पिच्छ भूषण छबि धारैं।
मधुर बजावत वेणु सप्त सुर धुनि संचारैं॥
फुंकरत फनी फन बृंद प्रति फबि फुलिंग विष बहु बहै।
अद्भुत चरित्र इमि नंद सुनि चकित चित्त चुप ह्वै रहै॥

दोहा—कल अट्ठाइस चरण प्रति, विरति इंद्र कल जान।
कहत छंद हरिगीतिका, पिंगल मति बुधवान॥

हरिगीतिका

गज रथ तुरंगम पत्ति अरु, बहु बित्त वैभव थान है।
सुख ये सकल संसार के, निशि स्वप्न के परिमान है॥
भूलो न इनमें मोह सौं, चित छोह कर उर आनिये।
गोविंद माधव कृष्ण गोकुल-चंद गुण नित गानिये॥

दोहा—रिषि मुनि अरु रवि कल जहां, नख सत्रह विश्राम।
कहत भूलना छंद सो, करखा वियता नाम॥

भूलना

सुंदरी कुंज वन बाटिका मंजु अति केलि मणि भौन रस रंग राता।
पुत्र धन हेम मणि माल मुक्तावली वस्त्र बहु चित्रता प्रेम पाता॥
छत्र गजराज हय पत्ति सुखपाल रथ चारु चतुरंग दल अंग त्राता।
है सु इन सर्व कौं सर्वदा लोक में राधिका कृष्ण गोविन्द दाता॥

दोहा—जगण अंत षोड़स कला, पंक्ति सु रितु विश्राम।
पिंगल फनपति छंद सो, कहत पद्धरी नाम॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी

विलसै कलिंदजा कूल थाँन।
रमणीय राधिका संग कान॥
तनु पीत श्याम शोभित सरूप।
तड़िता सुमेघ जुत जनु अनूप॥

दोहा—प्रति पद षोड़स कल जहाँ, विरति नाग वसु जान।
कहत छंद सो चौपई, पंद्रहु कल परिमान॥

चौपई

आगम निगम सु जिहि नित गावै, शेष शम्भु तिहिं पार न पावै।
सो ब्रज मंडल श्याम छबीलौ, क्रीड़त गोपिन संग रसीलौ॥

दोहा—प्रति पद भानु कला जहाँ, विरति तहाँ परिमान।
यगन अंत कहि छंद सो, हरि सुखदान प्रमान॥

हरि

राजै गुविंद ऐसे, छवि कोट काम जैसे।
देखें सु नैन शोभा, होवै सुचित्त लोभा॥

इति मात्रा छंद प्रकरणम्

अथ वर्ण छन्द वर्णन

दोहा—इक सों छब्बिस वर्ण लों, वर्ण छंद परिमान।
तिनके लक्षण लक्ष सब, वर्णत सुखद सुजान॥
इक द्वय त्रय गुरु वर्ण जहँ, प्रति पद सु यति समेत।
श्री सुनाम गनि काम पुन, सार छंद त्रय चेत॥

श्री छंद

धी श्री, ह्रीं त्री॥

काम छंद

मानै सोही, जाने जोही।

सार छंद

मानी हो, प्राणी हो। ध्यानी हो, ग्यानी हो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—गुरु लघु अक्षर चरण प्रति, चार चार सुखदान।
द्रग अक्षर पै यति जहाँ, धार छंद परिमान॥

धार छंद

दीह दोस, जोस रोस। ग्यान कोष, ह्वै सतोष॥

दोहा—भगण दोय गुरु अंत में, प्रति पद अक्षर पाँच।
द्रग गुण पै यति छंद सो, हंस कहत बुध साँच॥

हंस छंद

कान्ह पियारे, रूप दिखा रे। तोहि लखै ना, चैन परै ना॥

दोहा—रगण दोय प्रति पद जहाँ, प्रकृति सुयति अभिराम।
पिंगल फणपति छंद सो, कहत विमोहा नाम॥

विमोहा छंद

स्वप्न सो लोक है, कौन कों को कहै। गो दुहे गाय है, तो सुखे पाय है॥

दोहा—जगण सगण गुरु अंत इक, रिषि अक्षर अनुमान।
द्रग सुर तरु यति छंद सो, कुमार ललिता जान॥

कुमार-ललिता छंद

जबै द्रगनि देखे, तबै सुख विशेखे।
हिय हरष मानो, प्रिया हरि सु जानो॥

दोहा—रगण जगण गुरु लघु बरण, श्रुति सुरतरु यति लेख।
पिंगल फणपति पंथ सो, छंद मल्लिका देख॥

मल्लिका छंद

खंभ तें प्रगट्ट होय, दैत्य कों सु अंक गोय।
मार कै नृसिंह ताहि, पालिकै सु भक्त चाहि॥

दोहा—सगण जगण पुन जगण जहँ, भुज रिषि पर यति चारु।
पिंगल फणपति छंद सो, तोमर छंद बिचारु॥

तोमर छंद

जबहीं शराशन कर्ष, किय राम राम अमर्ष।
सिय के भयो हिय हर्ष, दिव देव फूलन वर्ष॥

(अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौलिकता की सृष्टि

[लेखक—श्रीयुत दीनदयालु श्रीवास्तव बी० ए०]

जकल हिन्दी-साहित्य की वृद्धि बड़ी तेजी के साथ हो रही है, अनेकों नई नई पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। किन्तु कुछ लोगों को साहित्य की इस उन्नति में संदेह होता है और इस संदेह का कारण यह बतलाया जाता है कि अधिकतर अनुवाद-ग्रन्थ ही हिन्दी में प्रकाशित हुआ करते हैं, अभी तक हिन्दी में ऐसे मौलिक ग्रन्थों की सृष्टि नहीं हुई है जिससे हिन्दी-साहित्य भी सभ्यभाषाओं की पंक्ति में सादर आसन पा सके। अतएव जब तक हिन्दी में ऐसे ग्रन्थ नहीं लिखे जाते जो लेखक की नयी उपज और अनोखी सूझ के द्योतक हों, तब तक यह साहित्य एक प्रकार से उपेक्षणीय है। ऐसी अवस्था में इस पर विचार करना असंगत न होगा कि साहित्य में मौलिकता की सृष्टि कैसे होती है? मौलिकता और अनुकरण में क्या सम्बन्ध है? अनुकरण मौलिकता का साधक है या बाधक? मौलिकता और अनुकरण दोनों अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं या नहीं? क्या इस समय हमारे लिए अनुकरण करना अनावश्यक है?

यह निर्विवाद है कि उस आधुनिक सभ्यता का जन्मदाता, जिसका आधिपत्य विभिन्न रूपों में सारे संसार पर छाया हुआ है, पश्चिमीय संसार ही है। सुतरां यह बात भी प्रत्यक्ष और सर्वमान्य है कि यूरोपीय भाषाओं का साहित्य भी बहुत बढ़ा चढ़ा हुआ है। वास्तव में आज जीवन-संग्राम में पश्चिम ही की जीत हो रही है, पूर्व पार्थिव सभ्यता की दौड़ में इस समय बहुत ही पिछड़ा हुआ है। अतः पूर्व के समक्ष आज यह महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित है कि वह अपने कार्यक्रम में अनुकरण का अवलम्बन करे या केवल मौलिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर जोर दिया करे। और यदि अनुकरण उसके लिए श्रेयस्कर सिद्ध हो सकता है, तो वह कहाँ तक और कैसे ?

वास्तव में, संसार के व्यवहार में आदान-प्रदान एक आवश्यक और अनिवार्य अंग है, इसके बिना किसी देश का काम नहीं चल सकता और न किसी प्रकार की उन्नति ही हो सकती है। आजकल जो संसार का ज्ञान-कोष है, उसकी पूर्ति केवल एक देश ने नहीं की है, वरन् इस संचय में थोड़ा बहुत सभी देशों ने हाथ बटाया है। हां, यह ठीक है कि किसी देश का हिस्सा बड़ा है और किसी का छोटा। जैसे किसी मनुष्य का मस्तिष्क विशेषरूप से उपजाऊ होता है और कोई अनुकरण करने में सिद्धहस्त हुआ करता है, ठीक वैसे ही कोई कोई देश सापेक्षरीति से अधिक मौलिक और उपजाऊ होते हैं और कोई प्रधानतः नकलची हुआ करते हैं। इसी प्रकार किसी भाषा के साहित्य में मौलिक ग्रन्थों का प्राधान्य और किसी के साहित्य में अनुवाद-ग्रन्थों का प्राधान्य होना भी स्वाभाविक है।

इसका निर्णय करने के पहले कि अनुवाद-ग्रन्थ-प्रधानसाहित्य का वास्तविक मूल्य क्या है, एक ऐसे देश के उदाहरण पर विचार करना, जिसकी कुछ काल पहले हमारी जैसी परिस्थिति थी, अनुचित न होगा। प्रायः यह कहा जाता है कि जापानी लोग अनुकरण करने में बड़े दक्ष हैं यानी पक्के नकलची हैं। उनको अपने गांठ की अकल बहुत थोड़ी है। कुछ लोग इस बात को उनकी राष्ट्रीयता की भीषण कमी समझते हैं। इसका कारण यह ठहराया जाता है कि वहां की प्रचलित शिक्षा-प्रणाली में रटटूपन का ही प्राधान्य है, जिससे रटते रटते विद्यार्थियों का मस्तिष्क शिथिल हो जाता है, विचारशक्ति को बिल्कुल प्रोत्साहन नहीं मिलता, फिर मौलिकता आवे तो कहाँ से ? इसलिए वहाँ पर भी अपने देश की भाँति यह उद्योग हो रहा है कि शिक्षा-प्रणाली इस प्रकार संशोधित की जाय जिससे विद्यार्थियों में स्वयं सोचने विचारने की शक्ति उत्पन्न हो। कुछ लोगों की तो ऐसी निराशामयी धारणा हो गयी है कि जापान राष्ट्र स्वभावतः नकलची राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वह सदैव विदेशी सभ्यता की नकल करता रहेगा, स्वयं वह कभी कुछ नहीं उत्पन्न कर सकता। यह राय कहाँ तक ठीक है? इसमें तो रत्ती भर संदेह नहीं कि गत ५०। ६० वर्षों से पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण करने में जापान ने कोई बात उठा नहीं रखी। और यह भी स्पष्ट है कि जापानियों में नकल करने की क्षमता यथेष्ट है किन्तु इससे यह कैसे प्रमाणित हो सकता है कि उनमें स्वयं अपनी उपज करने की शक्ति नहीं। बहुधा इन बातों को स्पष्ट समझने में, बड़ी भूल हो जाती है, किन्तु इनको पृथक पृथक जान लेना आवश्यक है, मान लीजिए एक व्यक्ति विशेष दूध बहुत पिया करता है, तो क्या उसको रोटी से घृणा है? नहीं, कदापि नहीं। जापान प्राणप्रण से वर्षों से पश्चिमीय सभ्यता की नकल करता आता है, यह अक्षरशः सत्य है। यूरोपीय भाषाओं के अनेकों उपयोगी ग्रन्थों का अनुवाद अपनी भाषा में कर डाला, विदेशी साहित्य को मथन कर अपनी भाषा को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने का भरसक प्रयत्न किया, किन्तु क्या इसका यह कारण है कि उनमें स्वयं मौलिक ग्रन्थ लिखने की शक्ति नहीं थी। नहीं, यह कहना अधिक युक्तसंगत होगा कि उस समय नयी सृष्टि करने की अपेक्षा उनको अनुवाद करना ही अधिक लाभ-दायक प्रतीत हुआ। यह क्यों? जापान पूर्व के एक कोने में स्थित है, पश्चिमीय संसार से बहुत दूर है, बहुत दिनों तक विदेशी मुल्कों के साथ उसका कोई सम्पर्क नहीं था, जिस समय वह अपने ही घर में कैदी था, उस समय यूरोप के भिन्न भिन्न प्रदेश भौतिक अभ्यु-दय के मार्ग पर अग्रसर होने के लिये एक दूसरे से स्पर्धा कर रहे थे, एशिया उस समय गहरी नींद में खर्राटे ले रहा था। जब उसने यूरोप से टक्कर खाई तो उसके किसी किसी प्रदेश ने आँखें खोलना चाहीं, सबसे पहले जापान ने पश्चिमीय संसार की बराबरी करने की ठानी। उस समय यदि वह यह सोचता कि पश्चिम की नकल करना उसके लिए अपमानजनक होगा, विदेशियों के सद्गुणों को ग्रहण करने के लिए भी उसे उनके सामने अवनतमस्तक होना पड़ेगा, अतः अपनी सभ्यता को उन्नत करने के लिए अथवा अपने साहित्य-वृद्धि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए उसको विदेशी छूत से बचना चाहिए, केवल अपने ही मस्तिष्क से काम लेना उचित होगा, यदि विदेशी ज्ञानधाराओं के लिए उसने अपने द्वार न खोले होते तो क्या सम्भव था कि उसने इतनी जल्दी इतनी अधिक उन्नति की होती। यह कहना व्यर्थ होगा कि उस समय अनुकरण करना ही जापान के लिए सर्वोत्तम मार्ग हो सकता था। सुतरां उसने उसी मार्ग का अवलम्बन भी किया। झट से पश्चिमीय सैनिक व्यवस्था की नकल की, युद्धवीर सैनिक तैयार किए, बन्दूकें बनाईं, तोपें ढालीं, इस प्रकार विदेशियों के आक्रमणों से अपने आप को एकदम सुरक्षित कर लिया। फिर उसने अपने साहित्य की ओर ध्यान दिया, हरेक विज्ञान की पुस्तकें अपनी भाषा में लिख डालीं, इस ज्ञानवृद्धि से जनता समृद्धिशालिनी हुई, इस प्रकार व्यवस्था होते ही जापान एक प्रभावशाली राष्ट्र बन गया, इतना बड़ा कि संसार में उसकी धाक जम गई।

किन्तु यह सब किस प्रकार हुआ, प्रारम्भ में पश्चिमीय व्यवस्था और संघटनों का अनुकरण करने से। इसी गुण के कारण हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए भी जापान एक स्वतंत्र राष्ट्र बनगया—इतना शक्तिशाली कि कोई राष्ट्र उसकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देख सकता—इतना छोटा और इतना बड़ा। किन्तु यदि जापान यह सोचता कि भला मैं क्यों किसी की नकल करूं, मैं क्यों किसी से तोप बन्दूक बनाना सीखूं, क्या मेरे तीर कमान रद्दी हैं, यदि विदेशी भाषाओं से अपनी भाषा में अनुवाद न किए होते और अपने ही बुद्धि पर मुग्ध रहता तो शायद आज कोई जापान का नाम तक न जानता।

किन्तु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्', नकल की भी एक सीमा है, नकल में भी अकल की जरूरत होती है। पश्चिम भौतिक विज्ञान में हमारा गुरु है, इस विषय में उससे हमको बहुत कुछ सीखना है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि हरेक बात में हम उसकी नकल करें। जो बात उनके यहाँ अच्छी है उसको ग्रहण करने के लिए यथेष्ट नम्रता चाहिए और जिन बातों में हम उन्नत हैं, उन्हें निरर्थक न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझना चाहिए। प्रायः नकल के आवेग में हम अपनी सुन्दर कलाओं और उत्तम प्रथाओं को भूल जाते हैं और उनको छोड़ बैठते हैं। प्रारम्भ में, जापान की भी यही दुर्गति हुई, हरेक बात में धड़ाधड़ नकल करना प्रारम्भ किया गया, किन्तु सौभाग्यवश अब यह प्रवृति दूर हो रही है। सब परिस्थितों का विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि सामान्यतः पश्चिमीय साहित्य का ज्ञान प्राप्त करने में जापान ने बुद्धिमानी से काम लिया, मौलिकता की परवाह न करके अनुवाद से यथेष्ठ लाभ उठाया और अपने आप को अंधकार के गर्त में डूबने से बचा ही नहीं लिया वरन् इस उन्नत अवस्था पर पहुंचा दिया।

अब प्रश्न यह है कि क्या यह पद्धति केवल जापान ही के लिए लागू हो सकती है? सभ्यता की दौड़ में पिछड़े हुए देशों के लिए अनुकरण करना श्रेयस्कर सिद्ध हुआ है, परन्तु उन देशों में जहाँ की सभ्यता उच्च कोटि की समझी जाती है अनुकरण का क्या स्थान है, उनकी उन्नति में भी क्या अनुकरण किसी सीमा तक सहायक हुआ है या उन देशों ने स्वतंत्र रीति से अपनी निराली निराली सभ्यता स्थापित की है? संक्षेप में, इस कथन में कि कतिपय देश स्वभावतः और पूर्णतः मौलिक हैं और कतिपय स्वभावतः नकलची हैं, कितना सार है। पश्चिमीय सभ्यता के विकास के इतिहास की ओर यथेष्ट ध्यान देने से ऐसी धारणा निर्मूल हो जाती है।

यह कहना अनावश्यक होगा कि यदि हम वर्तमान पश्चिमीय सभ्यता के उद्गम-स्थान की खोज में चले तो पहले पहल यूनान और इटली पर पहुँचेंगे, यदि और आगे बढ़ें तो बेबीलन, असीरिया और मिश्र की सभ्यता का पता चलेगा और अन्त में तो चीन और भारतवर्ष ही संसार की सभ्यता का जन्मस्थान ठहरता है। वास्तव में एशिया और अफ्रीका की सभ्यता ही ने यूनान और इटली में प्रवेश किया था और फिर यह देश सारे यूरोप के लिए मार्ग प्रदर्शक बन गए। इटली से चल कर यह सभ्यता ट्यूटन और गौल्स के यहां पहुँची जो उस समय जंगली थे और जो आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे संसारके मुकुटमणि बने हुए हैं, इतिहास के देखने से यह ज्ञात हो जाता है कि सभ्यता फैलाने और उन्नत करने के लिए देशों में पारस्परिक सम्बन्ध होना कितना आवश्यक है, एक ही ज्ञान भिन्न भिन्न रूपों में समस्त देशों में फैला हुआ है। यह दूसरी बात है कि अंग्रेजों की सभ्यता और जर्मनों की सभ्यता में अन्तर है, जर्मनी और फ्रांस की सभ्यता में भेद है और अंग्रेजों और फ्रांस की सभ्यता भी पूर्णतया मिलती जुलती नहीं है, अथवा यों कहिए हरेक देश में कुछ न कुछ विशेषताएं हैं। यदि हम किसी एक देश की सभ्यता का अध्ययन करें तो हमको पता चलेगा कि अन्य कितने देशों की सभ्यता का उस देश की सभ्यता पर प्रभाव पड़ा है। यद्यपि जापान यूरोपीय ढंगों का अनुकरण करने में बहुत निपुण रहा है, तथापि जापान की सभ्यता और यूरोपीय देशों की सभ्यता में कोई मौलिक अन्तर नहीं दिखाई देता, हरेक देश ने एक ही मार्ग का अवलम्बन किया है। वैसे तो हरेक देश की भौगोलिक और ऐतिहासिक परिस्थिति पृथक पृथक हुआ करती है, इसलिए प्रत्येक देश की विशेषताएं अलग अलग झलक पड़ती हैं, अंग्रेजों की अलग, जर्मनों की अलग, और जापानियों की अलग। जापान ने चीन या यूरोप से कुछ ग्रहण किया है तो उसमें कोई हानि नहीं यदि उन्होंने उसमें जापानीपन ला दिया है। इसी प्रकार भारतवासियों को भी पश्चिमीय सभ्यता या साहित्य के अनुकरण में कोई हानि नहीं हो सकती यदि वे उसपर भारतीयता की मुहर लगा देते हैं।

यदि दूसरी ओर से विचार करें तो यह भी नहीं कहा जा सकता कि अनुकरण करना सदैव मौलिक उपज से घटिया सिद्ध होगा। इसमें सन्देह नहीं कि आध्यात्मिक दृष्टि से मौलिक उपज अनुकरण की अपेक्षा श्रेष्ठ है किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह आवश्यक नहीं कि नकल करनेवाला आविष्कार करनेवाले से किसी प्रकार कम रहे। उदाहरण में हम जर्मनी और फ्रान्स की तुलना कर सकते हैं। फ्रांस अधिकतर नये नये आविष्कार करने में जर्मनी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे रहता है, जर्मनी विदेशी वस्तुओं की नकल करने और उनको समुन्नत करने में फ्रांस से बढ़ा चढ़ा है। आज संसार जर्मनी की विद्या देखकर चकित हो रहा है किन्तु क्या कभी किसी जर्मनवासी ने न्यूटन के सर्वव्यापक गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त या डारविन के विकासवाद के समान कोई आविष्कार किया है? उड़ने वाली मशीन और गोता लगाने वाली नावें पहले पहल फ्रांस ने ही निकाली किन्तु उनको उन्नत किसने किया? जर्मनी ने। जर्मनी ने ऐसे ऐसे विशाल हवाई जहाज और विस्तीर्ण जलमग्न जहाज बना डाले, कि उनको देखकर फ्राँस भी एक बार चकित हो गया। यदि नकल असल से बढ़ जाय तो ऐसी नकल में क्या हानि? क्या ऐसी नकल में किसी अंश में भी मौलिकता का समावेश नहीं होता। अवश्यमेव।

हिन्दी में अनुवादों का अभाव अवश्य नहीं है, विद्वानों की तो यह धारणा है कि अनुवादों की संख्या अत्यधिक हो गयी है, परन्तु इन अनुवादों से साहित्य को थोड़ा ही लाभ पहुँचा। उसका कारण यह है कि केवल अनुकरण प्रियता–नकलबाजी से मौलिकता की सृष्टि नहीं होती, परन्तु जब हम किसी उन्नत साहित्य के ज्ञान को स्वायत्त कर लेते हैं, उसे अपना बना डालते हैं, तब साहित्य का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है और विस्तृत साहित्यिक क्षेत्र में ही मौलिकता उत्पन्न होती है। हिन्दी में कुछ लोग ऐसे ग्रन्थों का अनुवाद करते हैं जिनसे लाभ को कौन कहे, अनिष्ट की सम्भावना रहती है। अंग्रेजी के दुअन्नी उपन्यासों के अनुवादों से कितने ही दारोगा दफतर भर गये हैं, और भरे जा सकते हैं। परन्तु यह साहित्यवृद्धि का द्योतक नहीं है, हमें विश्वास है कि यदि हिन्दी के श्रेष्ठ विद्वान विदेशी साहित्य के ग्रन्थरत्नों का अनुवाद करें तो उससे साहित्य की वृद्धि भी होगी और सुरुचि का प्रचार भी होगा, तभी हिन्दी में मौलिकता का दर्शन भी होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यालोचना

[लेखक—श्रीयुत भगवानदीन पाठक, विशारद]

(गताँक से आगे)

यतिभंग के बाद दूसरा दोष दिखाया गया है "पुनरुक्ति"। इस दोष को दिखाते हुए भूषण जी साधारण कवियों की श्रेणी से भी नीचे ढकेल दिये गये हैं। क्योंकि कहा गया है—

"भाषा-काव्य में यह बहुत प्रसिद्ध दोष है। साधारण कवि भी अपने काव्य में पुनरुक्ति होने देना पसन्द नहीं करते हैं। खेद है कि भूषण जी के काव्य में इस दोष के उदाहरण भी ठौर ठौर पर मिलते हैं।"

ठौर ठौर पर बहुत से मिलते होंगे; पर समालोचक महोदय ने तीन उदाहरणों में पुनरुक्ति दोष दिखाये हैं। पहला है—

'वैरि नारि दग जलन सौं बूड़ि जात अरि गावं।'

इस पद में "अरि" शब्द से पुनरुक्ति प्रगट की गई है। हमारी राय में यहां 'वैरि' और 'अरि' कोई पृथक् स्वतंत्र शब्द नहीं हैं। बल्कि एक संयुक्त शब्द है "वैरिनारि" और दूसरा संयुक्त शब्द है "अरिगांव"। दोनों का अर्थ भिन्न भिन्न है। अर्थात् एक का अर्थ है वैरी की स्त्रियां और दूसरे का अर्थ है बैरियों के गांव। अतः यह पुनरुक्ति नहीं कही जा सकती। फिर वैरियों की ही स्त्रियां होती हैं और बैरियों के ही गांव डूबते हैं, मित्रों अथवा निरपेक्षों के नहीं, इसी आशय को स्पष्ट करने के लिए भूषण जी को गांव के साथ भी 'अरि' जोड़ देना पड़ा है। हां, इतना कहा जा सकता है कि भूषण जी पिछले स्थान पर संज्ञा का प्रयोग न करके सर्वनाम का प्रयोग करते तो जो लेशमात्र पुनरुक्ति उक्त पद में है सो भी न रह जाती। पर शायद भूषण जी को यह तरकीब पसन्द नहीं आई। उन्होंने समझा पर्यायवाची शब्द के सहारे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनरुक्ति के पाप से बच जायेंगे। पर बाल की खाल काढ़ने वाले भला कब छोड़ने लगे ? दूसरा उदाहरण है—

आमिष अहार मांसहारी दै दै तारी नाचैं खांड़े तोड़ किं रचैं उड़ाये सब तारे से।

कहा गया है—"उपर्युक्त पद्य में आमिषअहारी और मांसहारी दोनों ही शब्दों का एक ही अर्थ होता है। यह एक भद्दी पुनरुक्ति है।"

समालोचक महोदय क्षमा करें तो हम कहें कि उपर्युक्त पुनरुक्ति को दिखाना उनकी एक भद्दी भूल है। क्योंकि आमिषअहारी और मांसहारी दोनों शब्द त्रिकाल में भी एकार्थवाची नहीं हैं। बल्कि पहले का अर्थ है मांस खाने वाले और दूसरे का अर्थ है मांस हरने वाले अर्थात् छीनने झपटने वाले। मांसाहारी से पुनरुक्ति होती; मांसहारी में तो पुनरुक्ति का कोसों पता नहीं है। तीसरा उदाहरण है—

"चन्द्रावल चूर करि जावली जपत कीन्हों मारे सब भूप और संहारे पुर धाय कै। भूपन भनत तुरकान को दल थम्भ काटि अफजल मारि डारे तबल बजाय कै।"

'मारे' और 'मारि डारे' में पुनरुक्ति दिखाई गई है। हमारी राय में यह भी ठीक नहीं है। क्योंकि पहले तो मारे और मारि डारे दोनों शब्दों में भेद है। 'मारि डारे' शब्द से जान से मार डालने का अर्थ सहजबोध्य है; पर 'मारे' शब्द में यह अर्थ संदिग्ध है। सम्भव है जिन भूपों के लिए मारे शब्द का प्रयोग हुआ है उन्हें मार पीट कर ही छोड़ दिया गया हो अर्थात् प्राणों की चोट उन्हें न पहुँचाई गई हो। अफ़ज़ल के विषय में इस अर्थ को स्पष्ट कर देने के लिए ही शायद आगे 'मारि डारे' का स्पष्टतः उल्लेख किया गया है। दूसरे अफ़ज़ल एक प्रधान ऐतिहासिक सरदार था जिसे शिवा जी से काम पड़ा था। इसलिए उसके सम्बन्ध की बात का यहीं नहीं अन्यत्र भी भूषण जी ने विशेष रूप से उल्लेख किया है। अतः इसी विचार से उन्होंने यहां भी उनके नाम के आगे एक स्वतंत्र क्रिया जोड़ दी है। तीसरी बात यह कि इन क्रियाओं की पुनरुक्ति—यदि पुनरुक्ति ही मानी जाय तो—एक ही पद में नहीं दो भिन्न भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदों में है। व्यक्ति भी भिन्न भिन्न हैं। पहले पद में 'मारे' का प्रयोग भूपों के लिए है और दूसरे पद में 'मारि डारे' का प्रयोग अफ़ज़ल के लिए है। इतनी भिन्नताओं के होते हुए भी खींच खाँच कर पुनरुक्ति दोष भूषण के मत्थे मढ़ना अनुचित है। 'मारे' और 'मारि डारे' के रूप और अर्थ में भी बहुत कुछ विभिन्नता तथा दोनों के बीच फ़ासिला भी बहुत होने के कारण पढ़ने वालों को यह बात पुनरुक्ति के रूप में नहीं खटक सकती।

तीसरा दोष दिखाया गया है अधिकपदत्व और न्यूनपदत्व। इस के चार उदाहरण दिये गये हैं। पहला है

'साहि के सपूत पूत वीर सिवराज सिंह केते गढ़धारी किये वन वनचारी से'

यहां 'वनचारी' से पहले वाले 'वन' की अधिकता दिखाई गई है। यह अधिकता समालोचक महोदय ने पुनरुक्ति का सहारा लेकर ख़ूब समझाई है। लगातार तीन वाक्यों में आपने कह डाला है, 'ठूँस दिया है' 'आवश्यक्ता से अधिक है' इतने पर भी बस नहीं "इस का प्रयोग व्यर्थ में किया गया है।" महोदय 'मारे' और 'मारि डारे' में इतनी भिन्नता होते हुए भी आपने पुनरुक्ति दूषण 'भूषण' के मत्थे मढ़ दिया। पर आप तो एक ही बात को प्रकट करने के लिए एक ही स्थान पर तीन तरह के एकार्थ-वाची वाक्यों का प्रयोग कर गये। इसे क्या कहें पुनरुक्ति या पुनर्पुनरुक्ति? ख़ैर, हमारी समझ में 'वन' शब्द अधिक नहीं है। इसके पक्ष में दो दलीलें हैं। पहली तो यह वन और वनचारी दो स्वतंत्र शब्द हैं। 'वन के वनचर' या 'जंगल के जंगली जानवर' इन दो साधारण वाक्यों में वन या जंगल की पुनरुक्ति का कहीं पता भी नहीं है। कविता में विभक्ति की न्यूनता कोई नई बात नहीं है। वन के वनचारी से जो अर्थ प्रकट होता है उसी अर्थ को कवि ने 'के' विभक्ति उड़ाकर वन वनचारी से व्यक्त किया है। 'केते गढ़धारी किये वन वनचारी से" अर्थात् कितने गढ़धारी वन के वनचारी से कर दिये। ऐसी दशा में बात ठीक उलटी जा पड़ती है। अर्थात् 'के' विभक्ति का लोप दिखा कर आप इस पद में न्यूनपदत्व सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते तो शायद किसी किसी को वह 'दूषण' समझ में आजाता। अधिकपदत्व का तो इसमें कहीं लेश भी नहीं है। दूसरे अर्थ में एक और दलील दी जा सकती है। शायद कवि का अभिप्राय वन वन घुमाने से हो। ऐसी दशा में दुबारा "वन" के प्रयोग से ज्यादा ज़ोर पड़कर कवि का अभिप्राय अधिक स्पष्ट रूप में सिद्ध होता है। वन में घूमे या दर पर भीख मांगे—इन वाक्यों के स्थान में यदि लिखा जाय—वन वन घूमे या दर दर भीख मांगे, तो पिछले दोनों वाक्य पहले दो वाक्यों की अपेक्षा पराश्रयशीलता और अकिंचनता के पक्ष में कहीं अधिक ज़ोरदार हैं। भूषण जी को गढ़धारियों की अतिपराश्रयशीलता और अकिंचनता प्रकट करनी थी। अतः उन्होंने उन्हें वन वनचारी अर्थात् वन वन घूमनेवाला लिखा है। यदि कवि को यह दूसरा अर्थ अभीष्ट हो तब भी अधिकपदत्व ढूँढ़े नहीं मिलता।

दूसरा उदाहरण है—

"दूलहो शिवाजी भयो दच्छिनी दमामे वारे दिल्ली दुलहिनि भई सहर सतारे की।"

इसकी बाबत कहा गया है—उधर शिवाजी को दूलहा बनाया इधर सतारे को दूलहा कर दिया। यातो सतारा दूल्हा नहीं हुआ या शिवाजी दूल्हा नहीं हुए। दो में से एक का प्रयोग अधिक है। पर वास्तव में प्रयोग अधिक नहीं है। दूल्हा के लिए एकमात्र शिवाजी का प्रयोग है दूसरे किसी का नहीं। "दिल्ली दुलहिनि भई सहर सतारे की" इतना पढ़ने से अवश्य ही स्पष्ट प्रकट होता है कि सतारे को भी दूल्हा बना डाला। पर क्षमा कीजिए, सतारा फिर भी दूल्हा नहीं बना। गोरखधंधा जरूर है, पर समझना कुछ कठिन नहीं है। सीधी सी बात है। ज़रा बोल चाल की दुनियां की तरफ़ खिसक आइए। हां, पहले एक बात नोट कर लीजिए। उपर्युक्त पद में एक ही दूल्हा हैं शिवाजी, और एक ही दुलहिन है दिल्ली। दूसरे दूल्हा सतारा ही पर आपको आपत्ति है न? देखिए, चाहे शिवाजी होते और चाहे सतारे का निवासी और कोई भी व्यक्ति, उसकी दुलहिन सतारे की दुलहिन कही जाने में सतारे में साक्षात् दूल्हा का आरोप कोई भी न कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री जिस गांव में पैदा होती है उम्र भर उस गांव की बेटी कही जाती है; और जिस गांव में व्याही जाती है उस गांव की बहू। न तो जिस गांव में वह पैदा हुई है वह गांव उसका दूसरा पिता है और न जिस गांव में वह व्याही है वह गांव उसका दूसरा पति है। पहले गांव का निवासी कोई भी व्यक्ति उसका पिता है, इसी तरह दूसरे गांव का निवासी कोई भी व्यक्ति उसका पति है। बात भद्दी है, पर तनिक स्पष्ट रुप में लिखने के लिए क्षमा करें, ज्ञानपुर के गुरुदत्त की बहू को यदि कोई ज्ञानपुर की बहू कहे तो क्या उससे यह आशय समझा जाय कि ज्ञानपुर उस बहू का दूसरा दूल्हा है। अथवा मानपुर के यज्ञदत्त की कन्या को कोई मानपुर की कन्या कहे तो यह समझें कि मानपुर उस कन्या का दूसरा पिता है। शायद अधिक स्पष्ट करने की जरूरत नहीं रही। दुलहा शिवाजी और दुलहिन दिल्ली; पर ज्योंही शिवाजी दिल्ली के दुलहा हुए, सतारा आपही दिल्ली का दुलहा हो गया। क्योंकि शिवाजी अथवा सतारे के किसी भी निवासी व्यक्ति की दुलहिन सतारे की दुलहिन कही जा सकती थी। संसार के साहित्य में आज भी यह बात मौजूद है। भारत का प्रत्येक बालक किसी न किसी व्यक्ति पिता का है, पर प्रत्येक बालक को भारत का बालक कहने में किसी तरह की अशुद्धि नहीं है। इसी तरह इङ्गलैण्ड के किसी भी व्यक्ति की कन्या, इङ्गलैण्ड की कन्या, फ्रान्स के किसी भी व्यक्ति की बधू फ्रान्स की बधू कही जाती है।

तीसरा उदाहरण है—'सोंधे को अधार किसमिस जिनको अहार चारि के सो अंक लंक चन्द सरमाती हैं।' समालोचक महा-शय का कहना है "कि यहां पर यदि लंक (कमर) के लिए ही 'चन्द सरमाती हैं', का प्रयोग हुआ है तो "प्रतिपच्चन्द्र का अर्थ केवल 'चन्द' शब्द से लेने की चेष्टा की गई है जो माननीय नहीं है। इसमें प्रतिपद् शब्द न्यून है।... (और) यदि कवि का अभिप्रायः "चन्द सरमाती हैं" से यह हो कि अपने मुखों की प्रभा से चन्द सरमाती हैं तो भी मुख के अप्रयोग के कारण न्यूनपद दूषण ज्यों का त्यों बना रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ठीक, ज्यों का त्यों बना रहेगा जरूर; मगर क्या समालोचक महोदय कृपा करके बतायेंगे कि संस्कृत और हिन्दी के सैकड़ों विश्ववन्द्य महाकवियों ने अपने काव्यों में जहां मुख की उपमा चन्द्र से दी है वहाँ पूर्णचन्द्र या पूर्णिमा का चन्द्र अवश्य लिखा है ? यदि नहीं लिखा तो क्या वे सब न्यूनपददूषण के दोषी हैं ? खाली चन्द्र कहने से तो प्रतिपदा के चन्द्र का भी अर्थ लिया जा सकता है। और इसलिए शायद समालोचक महाशय की सम्मति में वे सब कवि न्यूनपद दूषण के दोषी हैं जिन्होंने चन्द्र से मुख की समता या श्रेष्ठता का बखान करते समय चन्द्र की जगह पूर्ण चन्द्र का प्रयोग नहीं किया ! यदि ऐसा नहीं है तो जिस प्रकार मुख के पक्ष में चन्द्र के साथ "पूर्ण" शब्द की कुछ ऐसी आवश्यकता नहीं है तो कमर के पक्ष में प्रतिपद् का प्रयोग भी चन्द्र के साथ जरूरी नहीं । काव्य-संसार की यह एक बहुत मोटी सी बात है कि जहां मुख की उपमा चन्द्र से दी जायेगी वहां निम्न से निम्नश्रेणी के पाठक भी चन्द्र से पूर्णचन्द्र का आशय ही ग्रहण करेंगे। सब जानते हैं कि काव्य-जगत में कमर के सौन्दर्य का वर्णन बारीकपन, पतलेपन और लचकीलेपन को लेकर ही होता है; और इसलिए काव्य में जहां कमर को चन्द्र से उपमा दी जाय वहां चन्द्र से प्रतिपच्चन्द्र का आशय आप ही ग्रहण हो जाता है। प्रतिपद् को जोड़ कर सौन्दर्य-वर्णन को भद्दा बनाने की ज़रूरत नहीं रहती। जहां तक हमारा ख़याल है, कवि ने कमर के लिए "चन्द सरमाती हैं" का प्रयोग किया है; समालोचक महोदय के कथनानुसार यदि मुख के लिए "चन्द सरमाती हैं" का प्रयोग हो तो भी न्यूनपद दूषण नहीं होता। प्रकाश, उज्ज्वलता और आभा का वर्णन करते हुए खाली मुख के लिए नहीं, अनेक स्थान पर कवियों ने सारे शरीर के लिए भी चन्द्र की उपमा दी है। सम्भव है यहां भी ऐसा ही हो। फिर भी मान लो, मुख ही के लिए "चन्द" आया है तो भी मुख यों ही समझ लिया जायेगा। नीचे के दोहे में तो मुख क्या किसी अंग का भी कोसों पता नहीं है;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कौन कह सकता है कि काव्य-गरिमा की दृष्टि से यह लाखों की क़ीमत का नहीं है ? देखिए—

तू रहु हौं ही सखि चलौं चढु न अटा बलि बाल,
सबही बिनुहीं ससि उदै दीहैं अरघ अकाल ।

कहीं ऐसे पदों में समालोचक महोदय न्यूनपद दूषण खोजने लगें तब तो न्यून पदों का तांता ही बँध जाय ।

अतः मेरी तुच्छ सम्मति में न तो पहले ही अर्थ में अर्थात् लंक के पक्ष में प्रतिपद् की न्यूनता ठीक सिद्ध होती है और न दूसरे अर्थ में अर्थात् मुख के पक्ष में मुख का लोप न्यून पद दूषण को सिद्ध करता है ।

चौथा उदाहरण है—

"छठी छत्रपतिन को जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नामकरन मैं करन प्रवाह को।"

समालोचक महोदय का आशय है कि "करन प्रवाह को" का अर्थ (दानवीर होने का) ठीक नहीं बैठता है । "करन के दान के प्रवाह को" रहने से सम्पूर्ण अर्थ का निर्वाह हो जाता है । सो "के दान के" इतने पद न्यून होने से इसमें न्यून पद दूषण स्पष्ट है ।"

ठीक है, पर महोदय; हमारी राय में करन उन सामान्य दानियों में से एक नहीं हैं जिन्हें दानी करन लिखा जाय तभी उनके दान का गुण स्पष्ट हो; हरिश्चन्द्र उन सत्यवादियों में से नहीं है जिन्हें लोग सत्यवादी हरिश्चन्द्र लिखें तभी उनकी सत्यवादिता का गुण स्पष्ट हो । कर्णमात्र कहने से ही दानवीर कर्ण का और हरिश्चन्द्र मात्र कहने से सत्यवादी हरिश्चन्द्र का बोध हो जाता है । कर्ण के नामोच्चार से अलौकिक दानवीरता और हरिश्चन्द्र के नामोच्चार से अलौकिक सत्यवादिता का चित्र आप ही आप पाठक के सामने खिंच जाता है । करन का नाम ही काफ़ी है; उनका नाम उनके गुण (दानवीरता) के उल्लेख की अपेक्षा नहीं रखता । "करन-प्रवाह" स्वयम् ही करन के दान प्रवाह का मतलब अदा कर देता है । करन का प्रवाह करन के दान का प्रवाह ही समझा जायेगा । अतएव उपर्युक्त पद में "के दान के" पदों की न्यूनता नहीं है; यदि "के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान के" को ठूंसा जाता तो मेरी तुच्छ सम्मति में ये पद अधिक नहीं तो अनावश्यक अवश्य होते ।

यतिभंग, पुनरुक्ति, अधिकपदत्व और न्यूनपदत्व के बाद समालोचक महोदय ने ग्राम्य दोष का बखान किया है । इसके लिए भी तीन उदाहरण दिये गये हैं ।

१—"तू सब को प्रतिपालनहार विचारे भतारु न मारु हमारे ।" कहा गया है भतारु शब्द घोर ग्राम्य है । साधुभाषा में इस का प्रयोग नहीं होता है । ··· फिर एक यवनी के मुख से भतारु शब्द का कहलवाना तो प्रायः सभी प्रकार से अनुचित है ।

हमारी राय में जिस भाषा में यह कवित्त लिखा गया है उसी भाषा का भतारु शब्द है । यदि कवित्त भाषा साधु है तो भतारु भी साधु शब्द है, यदि कवित्त की भाषा असाधु (ग्राम्य) है तो भतारु भी घोर ग्राम्य ही होगा । बल्कि हम तो यहां तक कहेंगे कि भूषण की सारी रचना जिस भाषा में है भतारु शब्द कदापि उससे बाहर का नहीं है । पूर्वीय ज़िलों में आम तौर से पति के स्थान पर भतार का प्रयोग होता है । अत्यन्त साधुभाषा शुद्ध संस्कृत "भर्त्तार" का अपभ्रंश होने से यों भी भतार घोर ग्राम्य नहीं कहा जा सकता । अपभ्रंश भी कुछ बहुत बड़ा अपभ्रंश नहीं है । ख़ाली ऊपर की रेफ़ (आधा 'र') ही उड़ गई है । समालोचक महोदय की दूसरी दलील और भी मज़े की है । उन्हें यवनियों के मुख से भतारु का प्रयोग करवाना और ज़्यादा खटक गया है । शायद उनकी राय में शौहर या ख़ाविन्द ही ज़्यादा मौज़ूं होता । हम भी यही कहेंगे कि यवनी के मुख से शौहर या ख़ाविन्द ही ज़्यादा मौज़ूं होता; पर तब जब भूषण जी काव्य नहीं बल्कि नाटक लिखने बैठे होते । इस दलील से तो रामायण के रचयिता आदिकवि बाल्मीकि भी दोषी हैं जिन्होंने देव और दैत्यों की सारी कथा एक ही भाषा में लिख डाली; और रावणादि के मुख से देववाणी का प्रयोग करवाया । इस दोष के लिए यदि वे क्षम्य हैं तो केवल इसी एक दलील पर कि उनकी रामायण काव्य है, नाटक नहीं । और इसी दलील पर समालोचक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोदय चाहें तो भूषण जी को भी क्षमा कर सकते हैं। नहीं तो यही प्रयोग क्या, उनके सारे के सारे प्रयोग ग़लत ठहरेंगे, क्यों उन्होंने शिवाजी तथा उनके सरदारों से जो बातें कहलाई हैं वे भी सर्वत्र प्रायः उस भाषा में न कही गई होंगी जिसे उन्होंने अपनी रचना में प्रयुक्त किया है। यथा पात्र तथा भाषा का विचार नाटक ही में होता है काव्य में नहीं। काव्य तो प्रायः एक ही भाषा में लिखे जाते हैं। भूषण की रचना भी काव्य है, और उसमें सब पात्रों की बात एक ही भाषा में प्रकट की गई है। और इसलिए "भतार" शब्द के प्रयोग में यदि कोई दोष है तो जितना यवनी के मुख से कहलवाने में हुआ उतना ही किसी हिन्दू रानी के मुख से कहलवाने में होता यद्यपि हम "भतार" शब्द में पहला ग्राम्य दोष भी नहीं मानते।

(२) झंझा सी दिन कि भई संझा सी सकल दिसि गगन लगन रही गरद छवाय है।

समालोचक महोदय ने कहा है—'झंझा' शब्द का प्रयोग ग्रामीण लोग करते हैं। हम कहते हैं—संझा का भी यही हाल है। शहरवाले कौन 'संझा' बोलने जाते हैं। ग्रामीण ही झंझा बोलते हैं, ग्रामीण ही संझा। ग्राम्य दोष है, तो दोनों में। हमारी समझ में दोनों बोलचाल की भाषा के शब्द हैं। दोनों के अनुप्रास के कारण पद में एक विचित्र सुन्दरता आगई है; जिस पर, 'झंझा' को अनुचित प्रयोग बतलाकर, पर्दा डालने की व्यर्थ चेष्टा की गई है।

(३) भूषन भनत पति बाहँ बहियाँ न तेऊ छहियाँ छबीली ताकि रहियाँ रुखन की।

यहां भी वही हाल है। बहियाँ, छहियाँ और रहियाँ का अनुप्रास ही पद के सौन्दर्य की जान है। समालोचक महोदय ने इनमें से 'बहियाँ' में ग्राम्य दोष बताया है। अवश्य ही "बहियाँ" का प्रयोग पृथक् होने के अर्थ में है। पर वह ग्राम्य कैसे है। अधिक दिन तक प्रयाग नगर के निवास से मेरा अनुभव है कि वहाँ वहाने का प्रयोग फेंकने, पृथक् करने, के अर्थ में होता है। कूड़े को वहाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूड़ा को फेंकने के मानी में इस्तैमाल होता है। इतना हम मानेंगे कि अनुप्रास के लोभ से भूषण जी ने शब्द को ज़रा कुछ अनुचित रीति से तोड़ मरोड़ दिया है; पर ग्राम्य दोष का तो उसमें लेश भी नहीं है। घरू बोलचाल में अच्छे अच्छे पढ़े लिखों को मैंने इसका प्रयोग करते सुना है। हां, वह स्थानिक है, पूर्वीय ज़िलों को छोड़ अन्यत्र शायद बहाने का प्रयोग पृथक् करने के अर्थ में नहीं होता। सो स्थानिकपने का दोष उस भाषा के प्रायः सभी काव्यों में मिलता है जिसमें भूषण की रचना है।

आगे चलकर समालोचक महोदय ने भूषण जी के कुछ विविध दोष तथा अलंकार-दोष दिखाये हैं। यथावकाश उनके सम्बन्ध में फिर कभी लिखेंगे। सम्प्रति इत्यलम्।

विश्व-साहित्य में एशिया का महत्व

[ले०—श्रीयुत दीनदयालु श्रीवास्तव, बी. ए.]

आजकल यूरोप के साहित्य में एशिया के आदर्शों और जीवन-उद्देश्यों की अच्छी चर्चा हो रही है, विशेष कर जर्मनी इस ओर बहुत आकृष्ट हुआ है। एक जर्मन विद्वान् ने अभी हाल में एक लेख लिखा है, जिसका शीर्षक है–'एशिया गुरु के रूप में'। उसमें वे लिखते हैं—

यूरोपीय महासमर से यूरोप के लोगों में शान्ति की इच्छा अधिक प्रबल होती जाती है, अब केवल राजनैतिक शांति से तृप्ति न होगी, उनको आन्तरिक आध्यात्मिक शान्ति की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। यह नयी मानसिक-स्थिति इस बात का प्रमाण है कि उन लोगों को बादविवाद से अरुचि और बल-प्रयोग से घृणा हो चली है। पश्चिमीय संसार इस समय थका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँदा है, किन्तु उसको जीवन से प्रेम है, केवल कलह और ईर्षाद्वेष से घृणा हो रही है। वास्तव में पश्चिमीय समाज-व्यवस्था और सभ्यता अपूर्ण सिद्ध हुई है, उससे मानवी आकाँक्षाओं की तृप्ति नहीं होती। इस दुर्घटना के पहले ही इस कमी के चिह्न दिखाई देने लगे थे। तो भी यह संतोष का विषय है कि इसका परिणाम उदासीनता और प्रमाद नहीं हुआ है, वरन् इससे एक नयी बैचेनी और नई नई इच्छाओं का प्रादुर्भाव हुआ है। 'अँधकार के उस पार उनको प्रकाश की झलक दिखाई दे रही है।' अब लोग अपने आत्मा के विस्तीर्ण क्षेत्र की खोज करने बैठे हैं जिसको यूरोप ने अभी तक छुआ भी नहीं था। अतएव साधारण यूरोपियन को यह क्षेत्र एकदम नया मालूम होता है। यूरोप की दृष्टि अज्ञातरूप से एशिया की ओर फिरी है, इसलिए उसमें सच्चाई है। उनका अनुभव है कि एशिया हमको अपनी ओर खींच रहा है, हमको यह आशा बंधा रहा है कि वहां पर हमको कोई ऐसी नयी चीज़ मिलेगी जो हमको पूर्ण स्वतंत्र कर देगी। हमारे हृदयों में प्राचीन पूर्वीय सभ्यता की नम्रता, विचारशीलता और कोमलता के लिए प्रेम उत्पन्न हुआ है। हम लोग सहज ही इस सभ्यता का अध्ययन कर सकते हैं, क्योंकि इस में किसी प्रकार के घरेलू झगड़ों के उत्पन्न होने की सम्भावना भी नहीं है। आज जर्मनी को मुक्ति का संदेश बड़ा भला मालूम होता है। पूर्वीय शान्तिमय शिक्षाएँ, भारतवासियों और चीननिवासियों की सामाजिक-व्यवस्था, घनिष्ट पारिवारिक सम्बन्ध, जातिबन्धन, जाति का सामान्य-व्यवसाय, अपनी सभ्यता का प्रबल संघटन, शान्तिपूर्ण घरेलू इतिहास, अपने स्वराज्य का दीर्घकालिक अनुभव, बौद्ध धर्म की शिक्षाएं—यह सब ऐसी बातें हैं जो कि नागरिक को अपने आदर्श तक पहुँचाने में बहुत सहायक हो सकती हैं। जर्मनी का इस ओर इतना अधिक अनुराग हो गया है कि उसमें धर्मप्राण रूस के प्रति भी सहानुभूति उमड़ रही है, यह रूस नहीं जैसा विकृत और हिंसक रूप उसने इस समय धारण कर रखा है, वरन् उस रूस के प्रति जो उन लेखकों और कवियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माओं से परिपूर्ण हैं जिन्होंने रूसी को यूरोप भर में सब से अधिक मधुर स्वभाव वाला चित्रित किया है।

यह भी सच है कि कुछ ऐसे संकुचित विचार वाले कट्टर लोग जर्मनी में हैं जो कि एशिया के आध्यात्मिक प्रभाव को भयानक रोग समझते हैं और कहते हैं कि इससे हमारा विनाश काल और भी निकट आ रहा है। कुछ भी हो, इन दूर देशों से हमें नवजीवन के लिए स्फूर्ति मिल सकती है, और एशिया से इस बात की शिक्षा अवश्य मिलेगी कि जो बात अटल है—जो किसी प्रकार टल नहीं सकती—उसको धैर्य पूर्वक कैसे सहन करना चाहिए, क्योंकि हमें इस समय अनेकों अनिवार्य दुःखों का सामना करना पड़ रहा है और भविष्य में भी करना पड़ेगा। एशिया के आदर्शों से हमें प्रमाद का नहीं वरन् स्फूर्ति का पाठ पढ़ना चाहिए, विनाश की नहीं वरन् पुनर्जीवन की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

यद्यपि अब हमारा एशिया-सम्बन्धी ज्ञान केवल पुस्तकों पर ही निर्भर नहीं है तो भी दोनों देशों का साहित्य ही दोनों देशों के बीच की खाई का पुल बाँधने में समर्थ हो सकता है।

लेफकेडिओ हर्न का स्थान जिन्होंने कुछ ही वर्ष पहले जापान-सम्बन्धी पुस्तकें लिखकर यूरोपियों के दृष्टिकोण पर एक नया प्रकाश डालना प्रारम्भ किया था, अब रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ग्रहण किया है। मान लीजिए इन लोगों की भी कुछ विशेष व्यक्तिगत धारणाएँ हुआ करती हैं किन्तु जिस योग्यता और यथार्थता के साथ इन लोगों ने दोनों महाद्वीपों की सभ्यता का चित्र खींचा है, उसमें कोई संदेह नहीं रह जाता। अन्य बातों के साथ साथ इनकी रचनाओं में पूर्व की नम्रता और कोमलता की कमी नहीं है जो कि एशिया का विशेष गुण है, इससे हमारे मस्तिष्क को शान्ति अवश्य मिलती है। सुन्दर कलाओं के क्षेत्र में भी इधर कई वर्षों से एशिया के महत्व की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। गत शताब्दी के अन्त में जापान ने ऐसा राजनैतिक पद प्राप्त कर लिया है जिससे वह पश्चिमीय सभ्यता के अन्तर्गत गिना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी हाल में भारतवर्ष भी शिल्प-विशारदों का केन्द्र बन रहा है, भारतीय-भवन-निर्माण कला और मूर्ति-निर्माण-कला हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित कर रही हैं।

हमारे तत्वदर्शन और कला दोनों में ही एक प्रकार की पूर्वीयता दृष्टिगोचर होने लगी है। एक शताब्दी तक–विशेष कर सोपेनहावर के द्वारा पश्चिमीय तत्वदर्शन पर भारतीय दर्शन का प्रभाव पड़ता रहा और अभी हाल में भारतीय दर्शन के इतिहास का अनुसन्धान करके डायसन ने भी बहुत प्रभाव डाला है। भारतवासियों ने अपने धार्मिक और दार्शनिक सिद्धान्तों द्वारा मानवजीवन का एक ऐसा स्थायी आदर्श निर्धारित किया है जो केवल भारतवर्ष में सीमा-बद्ध नहीं है, उसके ज्ञान और अनुभव के लिए भारतवर्ष के ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता नहीं। प्रत्येक देश में, प्रत्येक समय में, इन दार्शनिक सिद्धान्तों के अनुयायी हुआ करते हैं, हरेक व्यक्ति इनका अधिकारी नहीं होता, किन्तु विशेष स्वभाववालों को ही यह रुचि-कर हुआ करता है। मनुष्य की या समाज की एक विशेष मानसिक परिस्थिति में इनके प्रति अनुराग होता है। और आज पश्चिमीय संसार में इसी मानसिक-स्थिति के अनुकूल हवा चल रही है, विशेष कर जर्मनी में। केवल संसार के झँझटों से हैरान होकर और जीवन की दुर्घटनाओं से दुःखी होकर यूरोपीय जनता का ध्यान एशिया की शिक्षा और आदर्श की ओर इतनी दृढ़ता से नहीं खिंच रहा है वरन् अब जनता आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लालायित हो उठी है।

एक प्रसिद्ध विद्वान की राय है कि कृत्रिम विभागों से विभिन्नता उत्पन्न होती है, और विभिन्नता से संदेह, वैमनस्य और घृणा का संचार होता है और यदि घृणा भाव का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाय तो वह केवल समझ की कमी या भूल का रूपान्तर मात्र होती है। संभव है इस व्यापक सिद्धान्त के बनाने में कुछ जल्दी की गई हो क्योंकि कुछ ऐसी प्राकृतिक विभिन्नताएं भी हैं जिनको दूर करना कठिन है। किन्तु उसका यह विचार बहुत ठीक है कि हम सब भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई हैं और हमारी विभिन्नताओं की तह में एक मौलिक एकता विद्यमान है, हमको घृणा के जीतने के लिए इसी एकता का अनुभव करना चाहिए। इसी एकता की खोज का नाम सार्वभौमिकता है। उसका ऐसा विश्वास है, कि उपर्युक्त मानसिक-स्थिति में पहुंचने के लिए मनुष्य का व्यक्तित्व ही सब से बड़ा बाधक है; यूरोप ने बुद्धि की आन्तरिक प्रेरणा से उच्चतर स्थान दिया है; बुद्धि का काम वस्तुओं का विश्लेषण करना और उनको अलग अलग पहचानना है, इसके विपरीत प्रेरणा या अज्ञेयवाद ज्ञाता और ज्ञान को एक जगह लाकर उनका एकीकरण कर देता है। अपने समय की स्थिति का प्रभाव हमारे सिद्धान्तों पर बहुत अधिक पड़ा करता है, यूरोपीय दर्शन का परिणाम यह हुआ कि हरेक हरेक के विरुद्ध खड़ा हो जाय, जिसकी चरम सीमा गत यूरोपीय महायुद्ध में हुई है। एशिया इस असम्भव स्थिति में से निकालने का मार्ग जानता है जिससे परस्पर प्रेम भाव और शान्ति की स्थापना हो सकती है। उसकी राय में हमारे समय की सब से बड़ी आवश्यकता यह है कि एशिया और यूरोप के कर्त्तव्यशास्त्र का गवेषणापूर्ण अध्ययन किया जाय। यूरोप की आत्मा चैतन्य, व्यक्तिगत, और बुद्धिसम्पन्न है, क्योंकि यह वह आत्मा है जो शक्ति की पिपासा से अधीर है। वह प्रकृति को नये विज्ञान और आविष्कारों से जीत करके अपनी चेरी बनाना चाहता है। उसका विश्वास मशीनों और संघटनों में फँसा हुआ है, उसकी इच्छा है शासक बनने की, सरदार बनने की, शक्तिशाली बनने की, विजयी होने की, उसके आदर्श हैं सिकन्दर, सीजर, नेपोलियन, विस्मार्क या एडीसन सरीखे शिल्प और व्यवसाय के कोई प्रसिद्ध नायक। इतिहास के अनुचित अध्ययन ने भी इस आदर्श स्थापन में बहुत कुछ सहायता की है। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि पश्चिम में भी दार्शनिक और आप्त महान पुरुष हो गए हैं, किन्तु यूरोप ने उनमें से सब से बड़े महापुरुषों, जैसे लिपीनार्डो, विन्सी या गेटी के सामने ही सिर झुकाने की क्षमता दिखाई है। यह दार्शनिक वास्तव में अब भी पश्चिमीय संसार के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरिचित व्यक्ति हैं क्योंकि उसकी राय में उनका हृदय सार्वभौमिक था, अतः वे मनुष्य नहीं वरन् देवता थे। संभव है यह मत भी एकांगी हो, किन्तु इसमें बहुत कुछ सच्चाई है, यदि किसी साधारण यूरोपियन के हृदय का अध्ययन किया जाय तो उसकी ऐसी ही स्थिति पायी जायगी। इसके विपरीत एशिया का आदर्श शान्ति, सार्वभौमिकता और प्रेरणा है। एशिया ने, प्रकृति के साथ जो हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध है, उसका अनुभव किया है, पशु पक्षियों और फूल-पत्तियों के साथ भी उसका भाईचारा है। वह उनको अपने अधीन नहीं करना चाहता किन्तु समस्त प्राणियों के साथ आध्यात्मिक मैत्री स्थापित करना चाहता है, वह अपने आप को प्रकृति के साथ एकरूप कर देना चाहता है। ठीक ऐसी ही धारणा उस यूरोपियन की होती है जिसको प्रकृति का पूर्ण ज्ञान है, किन्तु इन दोनों की दृढ़ता में बड़ा अन्तर है, एशिया ने इस भाव को बहुत दृढ़ और परिष्कृत कर लिया है। जब मनुष्य की ब्रह्माण्ड के साथ पूर्ण एकता हो जाती है तो उसको निर्वाण की दशा में अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होता है, इसीलिए भारतीय ऋषि कहते हैं जो तुमको प्रकृति से पृथक् किए हुए हैं उसका समूल नाश कर दो। यह 'मैं' ही सब दुःखों और रोगों की जड़ है, इस 'मैं' को उड़ा दो। यूरोपियन भी इसको समझता है, वह अहंकार से सर्वथा परिपूर्ण नहीं होता वरन् उसमें भी और मनुष्यों की भाँति परोपकारिक वृतियां होती हैं। यूरोप भी जानता है कि त्याग के द्वारा स्वतंत्रता मिलती है किन्तु एशिया की अपेक्षा उसका अनुभव बहुत कम है।

लेखक को यह आशा है कि अन्त में यूरोप को भी पूर्वीय सार्वभौमिकता का सिद्धान्त प्रिय होगा। दोनों देशों के दर्शनों के सम्मिलित अध्ययन से मनुष्य समाज को अपने आदर्श तक पहुंचने में बहुत सहायता मिल सकती है, यहां तक उसका विश्वास है कि वर्तमान रूस में भी जहां पर अव्यवस्था, अस्थिरता, और मारकाट मँची हुई है, अन्त में पूर्वीय आदर्शों की स्थापना होगी, और इस प्रकार सारे यूरोप में एक उन्नत और विशाल हृदय समाज की स्था-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पना हो जायगी, जिसका पूर्व के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होगा। संभव है बहुत से लोग इस अनुमान से बिल्कुल ही सहमत न हों। हम यह नहीं कहते कि यूरोप को एशिया की शरण लेना चाहिए, हरेक बात में अपना गुरु बनाना चाहिए किन्तु उसके सिद्धान्तों को मनन करके यूरोप बहुत कुछ लाभ उठा सकता है। हम यह नहीं चाहते, यदि यह सम्भव भी हो कि पूर्व और पश्चिम में कोई भेद ही न रहे, इस प्रकार की एकरूपता मृत्यु की द्योतक हो सकती है। जीवन का अर्थ है संग्राम, निरन्तर घात प्रतिघात। इसलिए यूरोपीय सामरिक आनन्द को सुधारने के लिए जो उसके जीवन का ध्येय बन रहा है, पूर्व के शान्तिमय आदर्श की अत्यन्त आवश्यकता है। हौब्स के उस सामाजिक विचार को समूल नष्ट करने के लिए जहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को खाने के लिए भेड़िए का रूप धारण किए रहता है, पूर्वीय सार्वभौमिक आदर्श प्रबल अस्त्र है। डारविन के उस सिद्धान्त का खोखलापन भी इस आदर्श से स्पष्ट दिख जाता है, जो यह सिखलाता है कि सभ्यता भी केवल व्यवस्थित लड़ाई का नाम है, उसमें सदैव योग्यतम व्यक्ति के लिए ही स्थान रहता है या नीट्जे ने जिस प्रकार इस युद्ध को दिव्य और गौरवान्वित बनाने की चेष्टा की है, इस आदर्श से उसकी प्रतिष्ठा भी भंग हो जाती है।

दैनिक जीवन में कला का स्थान

एक शब्द ऐसा है जिसका महत्व 'धर्म' शब्द के बराबर ही होना चाहिये था किन्तु जिसका आजकल भीषण दुरुपयोग हो रहा है, वह है कला। शायद इस शब्द के उच्चारण से बहुतों के मस्तिष्क में केवल किसी चित्र या मूर्त्ति ही कल्पना होती हो, किन्तु यदि आपको बिहारी, रवीन्द्र या रस्किन आदि से कुछ प्रेम है तो आपको इस शब्द का यथार्थ अभिप्राय अवश्य ज्ञात हुआ होगा। सम्प्रति हमारे जीवन में कला एक ऐसी फिजूल सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तु समझी जाती है कि जो हो तो अच्छा और न हो तो अच्छा। किन्तु यह हमारे दैनिक व्यावहारिक जीवन से पृथक् कोई बाहरी वस्तु नहीं है, वरन् उसका एक आवश्यक अंग है। अपने हार्दिक भावों और उद्गारों को व्यक्त करने के सब से सच्चे और सबसे अच्छे ढंग का नाम ही कला है, कुछ वस्तुएं हमको ईश्वर की ओर, शान्ति, सामञ्जस्य, और आत्मिक तृप्ति की ओर ले जाती हैं, उनके इस गुण को ही हम कला कहते हैं।

एक प्रसिद्ध चित्रकार ने एक बार कहा था; जो कुछ भी मैंने सीखा है, जितने भी चित्र मैंने खीचें हैं, वे सब तब तक मुझे व्याधि-रूप ही मालूम होते रहे, जब तक मैंने अपने जीवन में कला का सम्मिश्रण नहीं कर लिया, फिर नैसर्गिक नियमों का जैसा अर्थ मेरी समझ में आया था, वह जो कुछ मैं उस समय करता था, या कहता था, यहां तक कि मेरे कपड़ों से, मेरे घर की चहारदीवारी से स्पष्ट व्यक्त होने लगा। जिन लोगों ने इस रस का आस्वादन किया है कि हमारा घर ही जीवनकला अर्थात् हमारी अच्छाई या बुराई के व्यक्त होने का सबसे उपयुक्त स्थान है, और यहीं से कला का श्रीगणेश होना चाहिये, उन लोगों का अनुभव है कि जो आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है वही मनुष्य और उसके आसपड़ोस का सम्बन्ध है, जिस प्रकार आत्मा का शरीर पर और शरीर का आत्मा पर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य का अपने आसपड़ोस पर और आसपड़ोस का मनुष्य पर प्रभाव बराबर पड़ा करता है। जिस प्रकार आत्मा और शरीर जब दोनों ही सुन्दर हों तभी सोने में सुगंध कही जा सकती है उसी प्रकार मनुष्य से और उसके आसपड़ोस से सुन्दरता प्रकट होनी चाहिये। यदि हमारे घर में कर्कश शब्द होते रहते हैं, चारों ओर दुर्गंध उड़ती रहती है, अनमेल रंग छाये रहते हैं, सारा सामान उलट-पुलट पड़ा हुआ है, सम्भव है तोभी हम को इस परिस्थिति का कुप्रभाव स्पर्श न करे, किन्तु उसके अस्तित्व को हम कदापि अस्वीकार नहीं कर सकते और अन्त में अज्ञान, उदासीनता और कुरुचि ही इसका परिणाम होगा। और यदि हम ऐसे व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के घर पर पहुंचे जिसकी बोली मधुर और सुरीली हो, जिसके कपड़े पहनने का ढङ्ग भी उसका निजी हो, किसी की नकल करके भद्दी तरह से अपने ऊपर कपड़े न लाद लिए हों, घर की हरेक वस्तु अपने अपने स्थान पर रखी हुई हो, तो उसका हमारे ऊपर क्या प्रभाव पड़ेगा; हमारा हृदय स्वतः शान्त हो जायगा। वास्तव में हमारे घरेलू जीवन में ही कला का निदर्शन होना चाहिये क्योंकि घर ही, चाहे अच्छा हो या बुरा, समाज का आधार है।

कहां तो कला प्रत्येक मनुष्य के घरेलू जीवन में उसका अभिन्न साथी होना चाहिये था और कहां आजकल कला केवल उन इने-गिने धनवानों का खिलौना हो रही है जो मनमानी तौर से रुपया व्यय कर सकते हैं। वास्तव में जब से हमारे जीवनक्षेत्र में मशीनों का प्रवेश हुआ है, तबसे हमारी घरेलू शिल्पविद्या और घर के सामान का रूप एकदम बदल गया है, उसमें अब किसी मानुषिक या व्यक्तित्वपोषक वस्तु के लिए स्थान नहीं रह गया है। हम चाहें या न चाहें, हमको एक ही फैक्टरी से निकली हुई वस्तुएं मोल लेना पड़ती है, जो हमारे पास हैं, ठीक वैसे ही दूसरे के पास है। पहले जब ताक पर रखी हुई किसी कारीगरी की वस्तु को छूने से हमारे हृदय में जो भाव उदय होते थे उनका प्रत्युत्तर उसके निर्माता शिल्पकार की ओर से मिलता था, तो हमको विशेष आनन्द प्राप्त होता था। यह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी कि जब तक फिर से कला में व्यक्तिगत रचना को स्थान नहीं दिया जाता, तब तक किसी प्रकार शिल्पकला का पुनरुद्धार और उन्नति नहीं हो सकती। घर से चित्रकार का बहिष्कार करके हमने चित्रालयों की स्थापना की है, किन्तु क्या यह अधिक आनन्ददायक सिद्ध हुए हैं। क्योंकि सच पूछो, तो यह वर्तमान चित्रालय हमारे भाण्डारगृह हैं, जहां पर हम उन सब चित्रों को एकत्रित कर देते हैं जिनको हम और कहीं नहीं रखना चाहते या नहीं रख सकते। आज कल ऐसे ही चित्रालयों को सजाने के लिए चित्रकारों को परिश्रम करना पड़ता है। कैसा अंधेर है। कभी कभी यह आशा होती है कि सम्भव है अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन शक्तियों और उमंगों का दुरुपयोग करते करते, जिनसे हमारा जीवन बहुत कुछ आनन्दमय बन सकता है, जब हम बिलकुल थक जायँगे तो शायद इस असम्भव परिस्थिति को सुधारने का कोई मार्ग निकल आवे और तभी इस समस्या को हल करने पर जोर दिया जावे।

अब प्रश्न यह है कि इस मशीन युग में किस प्रकार फिर से शिल्पकला या मनुष्य की स्वाभाविक रचने की इच्छा का आर्थिक प्रतिशोध करने का विधान हो सकता है ? यह कैसे निर्धारित किया जा सकता है कि मशीनों द्वारा कौन कौन सी चीजें बनायी जायँ और कौन कौन सी न बनायी जायँ; ताकि उनका क्षेत्र व्यक्तिगत रचना के लिए खाली रहे। यह केवल चित्रकला की ही समस्या नहीं है, वरन् हरेक कला की यही दुर्दशा है, और जब तक यह हल नहीं होती, तब तक बड़ी अशान्ति रहेगी और तब तक किसी कला के उपकरणों की चर्चा करना या उसके विकास के इतिहास का अध्ययन करने का कोई विशेष मूल्य नहीं हो सकता। इससे शान्ति स्थापित नहीं हो सकती; क्योंकि यह अशान्ति का मूलकारण नहीं है। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि चित्रकार से हम क्या चाहते हैं, चित्रकार भी जानता है कि हमसे क्या चाहा जाता है परन्तु वर्त्तमान आर्थिक व्यवस्था के कारण वह ऐसा करने में सर्वथा असमर्थ है। आपके सामने हाथ में रंगों की डिबिया लिए हुए बच्चा बैठा है, वह स्वतः तरह तरह के खेल बना रहा है। कुछ गढ़न्त करने की प्रेरणा या इच्छा उसको इस कार्य के लिए प्रेरित कर रही है, उसकी इच्छा की पूर्ति होना चाहिए, उसकी पूर्ति के लिए किन मार्गों का अवलम्बन किया जा रहा है, उसको इससे अधिक प्रयोजन नहीं। यदि गढ़न्त की इच्छा तृप्त न हुई और उसके पहले ही आपने बच्चे के हाथ से डिबिया छीन ली तो बालक आपसे अवश्य क्रुद्ध होगा और स्वयं दुःखी होगा। चित्रकला इसी इच्छा का विकास मात्र है, यही क्या हरेक शिल्प कलाओं का यही इतिहास है जब कला की उमंग उठती है तो वह यह नहीं देखती कि मुझको प्रस्फुटित होने के लिए सर्वोत्तम सामग्री कौनसी है, वह चाहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस पद्धति का अनुसरण कर सकती है, और यदि उसके मार्ग में कोई बाधा न डाली जाय, एकान्त में उसका विकास होने दिया जाय, तो वह पद्धति स्वयं उसके हाथ से गौरवान्वित हो जायगी। आज चित्रकार हमसे क्या चाहता है? एक ऐसा स्थान जहां से वह आपकी सेवा कर सके, ऐसा स्थान नहीं जैसा आजकल दिया गया है जिसका नियम ही यही है कि सदैव बुरे से बुरे या कम से कम श्रेणी का स्थान दिया जाय। उसको ऐसा स्थान मिलना चाहिए जहां पर वह आपके कुछ काम आए, जहां पर सौन्दर्य फिर से मानवजीवन पर प्रभाव डालने लगे, उसका कुछ आदर होने लगे—ऐसा स्थान जहां मनचाहा रूप और रंग अथवा आनन्द के साथ कहानी कहने की स्वतन्त्रता उसको मिल सके। चित्रकला जिन गुणों के लिए एक समय प्रसिद्ध थी, तभी फिर उनका प्रादुर्भाव होना सम्भव है।

साहित्यावलोकन

[समालोचक के मत के लिये सम्मेलन उत्तरदाया नहीं है]

बलिदान—

अनुवादक—श्रीगणेश शंकर विद्यार्थी, प्रकाशक, प्रताप पुस्तकालय कानपुर, मूल्य १॥।)

यह फ्रांस के प्रसिद्ध लेखक विक्टर ह्यूगो के एक उपन्यास का सारांश है। बेकन की राय है कि सभी पुस्तकों का सार-संकलन पढ़ने योग्य नहीं होता, कभी कभी ऐसा भी होता है कि पुस्तक का सार निकालते निकालते सारभाग तो हाथों से निकल जाता है और निःसार-भाग ही हाथ लगता है। इस पुस्तक के सम्बन्ध में विचारणीय यह है कि विद्यार्थी जी ने विक्टरह्यूगो के मूल उपन्यास का कितना सार भाग प्रस्तुत ग्रन्थ में रखा है। लेखक का कथन है कि उन्होंने पन्ने के पन्ने और अध्याय के अध्याय उड़ा दिये हैं, परन्तु उनके उड़ा देने से मूल कहानी में कोई कसर नहीं पड़ी, इसीलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें कोई अफसोस भी नहीं, इसका निर्णय करने का अधिकार उन्हीं को है जो विक्टर ह्यूगो की कला के विशेषज्ञ हैं, जो यह बात समझ सकते हैं कि ह्यूगो ने अपने ग्रन्थ में अनावश्यक परिच्छेद लिखे हैं अथवा नहीं, हमें केवल इतना ही कहने का अधिकार है कि विद्यार्थी जी के ग्रन्थ में कथा-भाग विकृत नहीं हुआ है, ह्यूगो के सम्बन्ध में यह बात अवश्य कही जाती है कि उनकी कृति में कला का उत्कृष्ट निदर्शन है, अतएव हम नहीं समझते कि यदि उनके उपन्यास का ज्यों का त्यों अनुवाद किया जाता तो वह हिन्दी पाठकों के मतलब का क्यों न होता। फिर भी यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थी जी ने जो कुछ लिखा है, वह अच्छा ही लिखा है। फ्रेंच भाषा में तो ह्यूगो की विशेषता लक्षित होती होगी, परन्तु हिन्दी में विद्यार्थी जी की ही विशेषता है। विद्यार्थी जी ने यह तो लिखा नहीं है कि उन्होंने मूल फ्रेंच से इसका अनुवाद किया है अथवा अन्य किसी भाषा से, परन्तु उनके कथन से यह प्रतीत होता है कि उन्होंने मूल पुस्तक का अच्छी तरह अध्ययन किया है। अतएव हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि मूल पुस्तक और इस छाया में बहुत अन्तर होगा।

बलिदान में प्रेम की कथा वर्णित नहीं है, जो उपन्यास प्रेमी नायक नायिकाओं की प्रेम-लीला में ही उपन्यास की इतिश्री समझते हैं, उनके लिए कदाचित यह उपन्यास रोचक न हो। बलिदान में जिस समय की बातों का उल्लेख हुआ है, वह समय केवल फ्रांस ही के लिए नहीं, किन्तु संसार के लिए अत्यन्त महत्व का है।

इस उपन्यास में फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का दिग्दर्शन तो हुआ ही है, परन्तु इसके साथ ही मनुष्य जीवन के उत्थान पतन का भी प्रदर्शन हुआ है, एक ओर कर्त्तव्य की असिधारा है और दूसरी ओर मनुष्य की कोमल चित्तवृत्ति है जिसके कारण बड़े बड़े महात्मा भी कर्त्तव्य-च्युत हो जाते हैं, इन दोनों विभिन्न भावों का द्वन्द्वयुद्ध इसमें बड़े कौशल से दिखलाया गया है और अन्त में कर्त्तव्य के पथ पर मनुष्य की श्रेष्ठ चित्तवृति का बलिदान दिखलाया गया है। हमें विश्वास है कि हिन्दी भाषा भाषी इस पुस्तक का उचित आदर करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्द मठ—

अनुवादक-श्री पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी कलकत्ता, मूल्य ॥।) यह स्वर्गीय वंकिमचन्द्र चटर्जी के बंग भाषा के सुप्रसिद्ध आनन्दमठ उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है। 'बलिदान' में मानवसमाज का एक चित्र अंकित किया गया है और आनन्दमठ में उसका दूसरा चित्र है। कौन चित्र अधिक मनोमुग्धकर है, इसका निर्णय वही कर सकते हैं जो इन दोनों की एक साथ तुलना करके पढ़ेंगे। सिमोरडेन के चरित्र के साथ सत्यानन्द की तुलना की जा सकती है और गावैन के साथ जीवानन्द की। यद्यपि इन लोगों को भिन्न भिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। सिमोरडेन के सामने वह समस्या नहीं थी जो सत्यानन्द के सामने थी। परन्तु मनुष्यत्व की स्वाभाविक चितवृति और कर्त्तव्य बुद्धि का विरोध भाव दोनों के लिए समान भाव से विद्यमान था। कोमल चितवृति के अंकित करने में वंकिम बाबू सिद्धहस्त हैं, बलिदान में 'शान्ति' के समान कोई स्त्री पात्र नहीं है और हमारी समझ में आनन्दमठ का सर्वस्व 'शान्ति' ही है, स्त्री की त्याग शक्ति में बलिदान का श्रेष्ठ निदर्शन है, यह बात हमें 'शान्ति' के चरित्र से मालूम होती है। आनन्द मठ के विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है।

महाराज नन्दकुमार को फाँसी—

अथवा तत्कालीन बंगाल की सामाजिक अवस्था, प्रकाशक—प्रताप पुस्तकालय कानपुर।

यह पुस्तक बंग भाषा के प्रसिद्ध उपन्यास लेखक बाबू चण्डी चरणसेन के उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। जिस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी बंगाल में अपने शासन की जड़ जमा रही थी, उस समय उसके कर्मचारियों ने बंगवासियों के प्रति—विशेषकर जुलाहों, सुनारों और किसानों के प्रति—जैसा कठोर और निर्दयपूर्ण व्यवहार किया है उसी हृदयविदारक कथा का चित्र औपन्यासिक ढंग से लेखक ने इस पुस्तक में खींचा है। इस अत्याचार के सम्बन्ध में स्वयं लार्ड मेकाले ने कहा है कि बंगनिवासियों के प्रति मुसल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानों के शासन-काल में भी ऐसा घोर अत्याचार नहीं हुआ था। थोड़े से अँग्रेज किस प्रकार बंगालियों पर ऐसा भीषण अत्याचार करने में समर्थ हुए, इसके कारणों का पता उस समय की सामाजिक अवस्था देखने स्पष्ट हो जाता है। उपन्यास पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि उस समय स्वार्थी, लम्पट, व्यभिचारी, कायर, लोलुप और विश्वासघाती मनुष्यों की कमी नहीं थी। इन्हीं लोगों की सहायता से कम्पनी ने जो अत्याचार किये हैं, उनका जीवित चित्र खींचने के लिए कई नायक और नायिकाओं की कल्पना की गई है, जिससे उपन्यास में बंग समाज की अवनतअवस्था का वर्णन आवश्यकता से अधिक हो गया है। यद्यपि उस समाज में वीरत्व, स्वाभिमान और स्वावलम्बन का घोर अभाव था किन्तु उस समय भी थोड़ी संख्या में आदर्शरूप भारतीय स्त्री और पुरुष विद्यमान थे, सावित्री सदृश पतिव्रता स्त्रियां और वापूदेव सदृश सहृदय और निस्वार्थी महात्मा उस समय भी थे किन्तु ऐसे जैसे आटे में नमक। उपन्यास प्रेमियों के लिए इसमें पाठ्य सामग्री का अभाव नहीं है।

स्वर्णदेश का उद्धार—

यह एक नाटक है, लेखक श्रीयुत इन्द्र वेदालङ्कार विद्यावाचस्पति जी हैं। अँग्रेजी में एक विद्वान का कथन है कि काल्पनिक साहित्य के लिए ज्ञान के प्रखर प्रकाश की आवश्यकता नहीं, यह भी देखा गया है कि जो बड़े विद्वान होते हैं वे केवल अपनी विद्वत्ता के बल से काल्पनिक साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लेखक वेदालङ्कार और विद्यावाचस्पति हैं, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उनका यह नाटक वैसा नहीं बना जैसा चाहिये। नाटक और उपन्यास काल्पनिक साहित्य के अन्तर्गत है। इसकी न तो भाषा अच्छी है और न कथा भाग ही रोचक है। यत्रतत्र जो कविताएँ हैं, वे भी शिथिल हैं, यह सब होनेपर भी पुस्तक पढ़ने योग्य अवश्य है। इसमें एक राजनैतिक समस्या हल की गई है, आजकल देश की जो राजनैतिक अवस्था है, उसी का चित्र खींचा गया है, राष्ट्र के प्रेमी और स्वतंत्रता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपासक लेखक के आशय को अवश्य समझ लेंगे और इसी इच्छा से लेखक ने नाटक को लिखा भी है। मूल्य ॥=), श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, गुरुकुल कांगड़ी जिला बिजनौर से प्राप्त।

धर्माञ्जलि—

यह धर्म और सदाचारनीति का ग्रन्थ है। लेखक हैं, विद्यावाचस्पति पं० रघुनाथप्रसाद शास्त्री। लेखक मुखपृष्ठ पर हिन्दी में एक वार अपने नाम और उपाधि की चर्चा करके अँग्रेजी में उसको पुनः दुहराने का लोभ संवरण नहीं कर सके हैं। हमारी समझ में तो यह सर्वथा अनावश्यक था। पुस्तक चार भागों में विभक्त है। इस में विद्यार्थियों के लिए हिन्दुधर्म की स्थूल बातें समझायी गई हैं, प्रश्नोत्तर के रूप में लिखे जाने के कारण पुस्तक की रोचकता अवश्य कुछ घट गई है पर बातें बड़ी सुगमता से समझ में आ जाती हैं। अतएव यह पुस्तक संग्रहणीय है।

स्थायी समिति का विवरण

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का पंचम साधारण अधिवेशन रविवार-मिती माघ शुक्ल ४ संवत् ७९ तदनुसार २१ जनवरी २३ को १ बजे दिन से सम्मेलन-कार्यालय में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

१—श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, कलकत्ता
२—श्री पं० विशम्भरनाथ शर्मा कौशिक, कानपुर
३—श्री पं० रामप्रसाद मिश्र, कानपुर
४—श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, रायवरेली
५—श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
६—श्री वियोगी हरि
७—श्री भगवती प्रसाद
८—श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
९—श्री प्रो० गोपालस्वरुप भार्गव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०—श्री पं० रामजीलाल शर्मा
११—श्री पं० लक्ष्मीनारायण नागर
१२—श्री प्रो० व्रजराज

कार्यविवरण

नियमानुसार श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—गत अधिवेशन का कार्य-विवरण पढ़ा गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

२—नियमावली के नियम ४६ के अनुसार त्रयोदश सम्मेलन के सभापति के आसन के लिए अधिकांश सम्मति के अनुसार ५ सज्जनों के नामों की सूची बनायी गई।

३—निश्चित हुआ कि त्रयोदश सम्मेलन के अधिवेशन के लिए निम्नलिखित प्रस्तावित कार्यक्रम विषय निर्वाचिनी समिति के विचारार्थ स्वागतकारिणी समिति के पास भेजा जाय।

कानपुर सम्मेलन का प्रस्तावित कार्यक्रम

पहला दिन—कार्य १२ बजे दिन से ५ बजे तक

१—मंगलाचरण
२—स्वागतसमिति के अध्यक्ष की वक्तृता
३—मनोनीत सभापति का आसन ग्रहण करना
४—सभापति का भाषण
५—व्याख्यान
६—विषय निर्वाचिनी समिति का संगठन

सायङ्काल ७ बजे से विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक

दूसरा दिन—प्रातःकाल ७ बजे से १० बजे तक

१—प्रतिनिधियों का विशेष अधिवेशन
२—साहित्यिक चर्चा (जो सज्जन लेख लिखकर लावें उन्हें अपने लेख का सारांश भी लिख कर लाना चाहिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे पूर्ण लेख पढ़े बिना ही उसका तात्पर्य समझाया जा सके)

३—संगीत

मध्याह्नकाल १२ बजे से ५ बजे तक

१—मंगलाचरण
२—प्रस्ताव
३—स्थायी समिति का वार्षिक विवरण सं० ७८-७९
४—उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को उपाधि वितरण
५—लेख और व्याख्यान
६—सम्मेलन कोष के लिए अपील
७—कविता और गान

सायंकाल ७ बजे से विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक
प्रतिनिधि प्रीत भोज

तीसरा दिन—प्रातःकाल ७ बजे से १० बजे तक

(केवल प्रतिनिधि सम्मिलित हो सकेंगे)

१—स्थायी समिति का निर्वाचन
२—साहित्यिक चर्चा और संगीत

मध्याह्नकाल १२ बजे से कार्य प्रारम्भ होगा—

१—मंगलाचरण
२—लेख
३—प्रस्ताव
४—व्याख्यान
५—सम्मेलन के लिए धन याचना
६—आगामी वार्षिक अधिवेशन के लिए स्थान निश्चय
७—सभापति को धन्यवाद
८—सभापति का अन्तिम भाषण और विसर्जन

४—नियमावली के नियम १८ के अनुसार आगामी सम्मेलन में नियुक्त होने वाली स्थायी समिति के सभासद होने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी और साधारण सदस्यों के निम्नलिखित तीन प्रतिनिधि निर्वाचित किए गये।

१—श्रीयुत धुत्तनलाल विद्यार्थी
२—श्रीयुत शिवप्रसाद गुप्त
३—श्रीयुत सेठ गोविन्द दास

५—'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' के प्रबन्ध के लिए 'पारितोषिक समिति' के बनाये हुए निम्नलिखित नियम सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए।

श्री मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक के नियम

१—सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिवर्ष 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' दिया जायगा या पारितोषिक पाने वाले का नाम प्रकट कर दिया जायगा।

२—प्रतिवर्ष स्थायी समिति द्वारा 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक समिति' का संगठन हुआ करेगा, इसमें कुल ५ सदस्य रहेंगे, जिसमें एक श्रीयुत गोकुलचन्द्र जी या उनके कोई प्रतिनिधि अवश्य होंगे। यही समिति नियमानुसार पारितोषिक का प्रबन्ध करेगी।

३—यह 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्रतिवर्ष हिन्दी के किसी लेखक को उसकी किसी सर्वोत्तम मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा।

४—पारितोषिक वितरण के लिए सम्पूर्ण विषयों के निम्नलिखित चार विभाग किये जायगें।

(१) साहित्य (काव्य, उपन्यास, नाटक, कविता, समालोचना)
(२) दर्शन (धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, कर्त्तव्यशास्त्र, तर्कशास्त्र, अध्यात्मविद्या, मनोविज्ञान)
(३) विज्ञान (गणित, रसायन, भौतिकशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, कृषिविज्ञान आदि)
(४) इतिहास (पुरातत्वविज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों के सम्बन्ध में पारितोषिक समिति निश्चय करेगी कि कौन विषय किस विभाग के अन्तर्गत आना चाहिए।

५—क्रमानुसार साहित्य, दर्शन, विज्ञान और इतिहास विभाग पर प्रतिवर्ष पारितोषिक दिया जायगा।

नोट—इस वर्ष कानपुर सम्मेलन के अधिवेशन में 'साहित्य' विभाग पर पारितोषिक दिया जायगा।

६—पारितोषिक के लिए जीवित लेखकों की केवल उन्हीं पुस्तकों पर विचार किया जायगा जिनकी पारितोषिक समिति द्वारा निश्चित तिथि तक तीन तीन प्रतियाँ सम्मेलन-कार्यालय में आजायँगी। जिस लेखक को एक बार पारितोषिक मिल जायगा उसकी उसी विषय विभाग की किसी रचना पर फिर विचार न होगा।

नोट—इस वर्ष पुस्तक भेजने के अन्तिम तिथि माघ कृ० अमावस्या सं० ७९, तदनुसार १७ जनवरी सन् २३ नियत की गई है।

७—इस बात का निर्णय करने के लिए कि कौन लेखक इस पारितोषिक के अधिकारी हैं, तीन सज्जन चुने जायंगे जो निर्णायक कहलाएँगे।

८—पारितोषिक समिति को अधिकार होगा कि निश्चित तिथि के बाद भी १५ दिन तक विचारार्थ पुस्तकें उपस्थित कर सके।

९—जो पुस्तकें विचारार्थ कार्यालय में आयेंगी, उनकी पहुँच प्रेषक के पास भेजी जायगी।

१०—विचारार्थ आई हुई पुस्तकों का विषय विभाग पारितोषिक समिति के स्थानीय सदस्य करेंगे, उसकी सूचना बाहर के सदस्यों को भी दी जायगी। उनकी इच्छा पर पुनः विचार हो सकेगा, मत-भेद होने पर बहुमत से निर्णय होगा। पुस्तक आने की अन्तिम तिथि के बाद १० दिन के भीतर विषय विभाग हो जाना चाहिए।

११—विषय विभाग हो जाने पर उस वर्ष के विभाग की पूर्ण-सूची हरेक निर्णायक के पास भेज दी जायगी, साथ ही सुविधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नुसार निर्णायकों के पास पुस्तकें भेजने का भी प्रबन्ध किया जायगा। सूची मिलने पर निर्णायक उनको दो श्रेणियों में विभक्त करेंगे (१) प्रथम श्रेणी में वे पुस्तकें रहेंगी जिनको वह पारितोषिक के लिए विचारणीय समझते हैं और (२) द्वितीय श्रेणी में वे पुस्तकें रहेंगी जिनको वह पारितोषक के विचारयोग्य ही न समझते हों। किसी एक निर्णायक की सम्मति होने से पुस्तक प्रथम श्रेणी में रखी जा सकेगी और उस पर विचार होगा। हरेक निर्णायक की सूची आने पर विचारणीय अथवा प्रथम श्रेणी की पुस्तकों की एक पूर्ण सूची बन जावेगी, वह फिर हरेक निर्णायक के पास भेजी जायगी उस सूची में पुस्तकों के नाम के साथ साथ यह भी लिखा रहेगा कि किस निर्णायक ने उसको प्रथम श्रेणी में रखा है।

१२—द्वितीय श्रेणी की पुस्तकें कार्यालय में रहेंगी।

१३—प्रथम श्रेणी की पुस्तकें क्रमशः तीनों निर्णायकों के पास भेजी जायँगी। प्रत्येक निर्णायक अपनी सम्मति के अनुसार यथाक्रम तीन सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थों पर (या पारितोषिक योग्य ग्रन्थों पर) विस्तृत आलोचनात्मक टिप्पणी लिख देंगे जिस से उन पुस्तकों का महत्व प्रकट हो जाय। इस के अनन्तर निर्णायक पुस्तकें कार्यालय में लौटा देंगे।

१४—पारितोषिक समिति निर्णायकों से पत्र व्यवहार करके और आवश्यकता होने पर उन्हें एक स्थान पर एकत्रित करके (नौ पुस्तकों में से) किसी एक पुस्तक को सर्व सम्मति से सर्व श्रेष्ठ और पारितोषिक के योग्य चुनवाने का उद्योग करेगी। यदि किसी एक पुस्तक के विषय में तीनों निर्णायक एकमत हो गये तो उसी ग्रन्थ के लेखक पारितोषिक के अधिकारी होंगे। यदि दो निर्णायक किसी एक पुस्तक के विषय में एकमत हुए तो पारितोषिक समिति को अधिकार होगा कि वह उसी पुस्तक के लेखक को पारितोषिक दे या पुनः तीन निर्णायकों का निर्वाचन करके उनके निर्णयानुसार कार्य करे। और यदि इस बार भी सभी निर्णायक भिन्न भिन्न मत के हों तो समिति उस वर्ष किसी को पारितोषिक न दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) नियम १३ के अनुसार तीनों निर्णायकों द्वारा चुनी हुई सर्वोत्तम ६ पुस्तकों में से पारितोषिक वाली पुस्तक को छोड़ कर शेष ८ पुस्तकें आगामी चौथे वर्ष के पारितोषिक के समय प्रथम श्रेणी की पुस्तकों में सम्मिलित कर ली जायंगी।

६—निश्चित हुआ कि स्थायी समिति की ओर से सभापति श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी जी को उनके उस उद्योग के लिए धन्यवाद दिया जाय जो कि उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से पत्र व्यवहार करके उस विश्वविद्यालय में श्रीयुत बाबू घनश्याम दास विड़ला के दान से हिन्दी में एम० ए० की शिक्षा देने का शीघ्र ही प्रबन्ध कराने में किया है।

७—सभापति को धन्यवाद देने के अनन्तर आज का अधिवेशन समाप्त हुआ।

ब्रजराज
एम. ए., बी. एस-सी., एल. एल. बी.
प्रधान मंत्री

संवत् १९७९ के परीक्षा फल का भूल संशोधन

निम्नलिखित परीक्षार्थी भी प्रथमा परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

क्रमसं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१०	कपिलदेव प्रसाद वर्मा	आरा	द्वितीय

निम्नलिखित परीक्षार्थी भी मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

क्रम सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१५७	श्री ज्ञानदत्त मिश्र	प्रयाग	द्वितीय
२२२	,, भगवती चरण	लाहौर	प्रथम
७४	,, चन्द्रप्रकाश सकसेना	प्रयाग	द्वितीय

गोपाल स्वरूप भार्गव
एम. एस-सी.
परीक्षा मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'साहित्य-भवन लिमिटेड' द्वारा प्रकाशित

उत्तमोत्तम पुस्तकें

साहित्य-विहार—लेखक श्री वियोगी हरि

यह वियोगी जी के चुने हुए भक्ति विषयक और साहित्य विषयक ११ सुन्दर लेखों का संग्रह है। अधिकतर लेख पत्र पत्रिकाओं में निकल चुके हैं और लोगों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इसको पढ़ने से न सिर्फ आप को हिन्दी के प्राचीन साहित्य की चासनी चखने को मिलेगी, किन्तु आपको वह अपूर्व आनन्द मिलेगा जो आपको अच्छे से अच्छे नाटक और उपन्यास पढ़ने से नहीं मिल सकता। मूल्य ॥≡)

योगी अरविंद की दिव्य वाणी--सम्पादक श्री वियोगी हरि

श्री अरविन्द भारतमाता के उन सपूतों में से हैं जिन्होंने भारत को स्वाधीनता के लिए ही जन्म लिया है और उसी के लिए प्राण निछावर करना अपने जीवन का उद्देश मान रक्खा है। आप के लेख आध्यात्मिक और सामाजिक भावों में भरे रहते हैं। हमने आप के आध्यात्मिक विचार, योग, राष्ट्र और जाति सम्बन्धी दिव्य उद्गारों का संग्रह करवाया है। मूल्य ।-)

गल्प लहरी—लेखक स्वर्गीय श्री गिरिजाकुमार घोष

घोष बाबू से हिन्दी साहित्य अच्छी तरह परिचित हैं। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी इनके लेख बहुत पसंद करते थे। आप गल्प और आख्यायिका लिखने में सिद्धहस्त थे। यह पुस्तक आप की चुनी हुई सुन्दर गल्पों का संग्रह है। मूल्य १।)

होमर गाथा—सम्पादक स्वर्गीय बाबू गिरिजाकुमार घोष

महाकवि होमर के 'ओडिसी' और 'इलियड' नामक काव्यों का भावानुवाद। मूल्य १)

इनके अतिरिक्त हमारे यहाँ हिन्दी संसार की समस्त पुस्तकें उचित मूल्य पर मिलती हैं)॥ का टिकट भेज कर बड़ा सूचीपत्र मुफ़ मँगाइये।

पुस्तकें मिलने के पता—

साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्य-विवरण
तथा
लेख मालाएँ

आज सम्मेलन को स्थापित हुए १२ वर्ष हुए हैं। प्रत्येक वर्ष जहाँ जहाँ सम्मेलन का अधिवेशन हुआ है, वहां का कार्य विवरण तथा सुप्रख्यात विद्वानों के भाषण और लेख सम्मेलन ने सस्ते दाम पर प्रकाशित किये हैं। यह विवरण क्या है, हिन्दी साहित्य के जीते जागते इतिहास हैं। हिन्दी का विकास कैसे हुआ, उसकी उन्नति में क्या क्या विघ्नबाधाएँ उपस्थित हुईं, साहित्य ने क्या रूप पकड़ा तथा यह भाषा किस प्रकार राष्ट्र-भाषा होने के योग्य सर्व-सम्मति से सिद्ध हुई आदि अनेक ज्ञातव्य बातें इन पुस्तकों में लिखी गई हैं। सुयोग्य सभापतियों के ओजस्वी भाषण, ललित और भावभरी कविताएँ, इतिहास, साहित्य, नाटक, समालोचना प्रभृति विषयों पर उत्तमोत्तम लेख आदि इनमें देखने ही योग्य हैं। ये सब रायल अठपेजी साइज में छपी हैं। कागज़ छपाई सुंदर, मूल्य लागत मात्र रखा गया है।

प्रथम	सम्मेलन	की लेखमाला	॥।)	प्रथम	सम्मेलन	का कार्यविवरण	।)
द्वितीय	”	”	१)	द्वितीय	”	”	।)
तृतीय	”	”	॥।)	तृतीय	”	”	।=)
चतुर्थ	”	”	॥।।	चतुर्थ	”	”	॥)
पञ्चम	”	”	॥)	पञ्चम	”	”	॥।)
षष्ठ	”	”	॥।)	षष्ठ	”	”	।)
सप्तम	”	”	॥=)	सप्तम	”	”	॥=
अष्टम	”	”	१)	अष्टम	”	”	।)
नवम	”	”	१॥)	नवम	”	”	।=)
दशम	”	”	।=)	दशम	”	”	॥)

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को विशेष लाभ

निम्नलिखित दो पुस्तकें पौन मूल्य पर मिल सकेंगी।

१—देशभक्त लाजपत

[ले०—श्री राधामोहन गोकुल जी (राधे)]

पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय जी की जीवनी इस पुस्तक में बड़ी ही खोज के साथ लिखी गयी है। इसकी वर्णन शैली भी मनोरम है। लाला जी के जीवन में देश-सेवा करते हुए कैसी कैसी घटनाएँ हुई हैं, उन्हें क्या क्या कष्ट उठाने पड़े हैं, कष्ट सहन करते हुए भी वे अपने पथ पर कैसे डटे रहे हैं, आदि सभी बातें लेखक ने इस पुस्तक में यथा स्थान संपादित कर दी हैं। पृष्ठ संख्या ३२५ मूल्य १), रियायती मूल्य केवल ॥।)

२—नीति-दर्शन

[ले०—श्री राधामोहन गोकुल जी (राधे)]

यह नीतिशास्त्र की अद्वितीय पुस्तक है। अनेक ग्रन्थों से इस का सम्पादन किया गया है। हिन्दू धर्म-व्यवस्था, राजनीति, समाज संगठन आदि सभी ज़रूरी बातों पर विवेचनापूर्ण दृष्टि डाली गयी है। यह प्रत्येक नवयुवक को अपनानी चाहिये। पृष्ठ संख्या २१० मूल्य ॥।), रियायती मूल्य केवल ॥-)

पुस्तक-विक्रेताओं को सूचना

१—सम्मेलन द्वारा प्रकाशित समस्त पुस्तकों पर १००) से अधिक की पुस्तकें लेने से २५ फी सदी कमीशन मिलता है।

२—१००) से कम की पुस्तकें लेने से २० फी सदी कमीशन मिलता है।

३—१०) से कम के आज्ञापत्र पर कोई कमीशन नहीं दिया जाता है।

शीघ्र ही सूचीपत्र मँगाइये।

मन्त्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] माघ, संवत् १९७९ [अंक ५

निज भाषा बोलहु, लिखहु,
पढ़हु, गुनहु सब लोग ।
करहु सकल विषयन विषैं,
निज भाषा उपयोग ॥

—श्रीधर पाठक

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित उत्तमोत्तम पुस्तकें

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित ... मूल्य ॥-)
२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ... मूल्य =)
३—भारत का इतिहास, प्रथम खण्ड ... मूल्य १॥)
४—भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड ... मूल्य २)
५—शिवा बावनी, टिप्पणी सहित ... मूल्य =)
६—सूरदास की विनय पत्रिका ... मूल्य ।)
७—रहिमन के दोहे टिप्पणी सहित ... मूल्य -)॥
८—राष्ट्र भाषा ... ... मूल्य ॥)
९—सरल पिङ्गल ... ... मूल्य ॥
१०—भारत गीत .... मूल्य =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत !

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्तम्भ-स्वरूप

श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन,

कृष्ण-जन्मभूमि से

तपस्या करके

पधारिये ।

—हिन्दी-साहित्य-संसार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] माघ, संवत् १९७९ [अङ्क ६

अभिलाषा

सवैया

छहरैं सिर पै छबि मोर पखा, उनकी नथ के मुकुता थहरैं।
फहरै पियरौ पट 'बेनी' इतै उनकी चुनरी के झबा झहरैं॥
रस रङ्ग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रस ख्याल चहैं लहरैं।
नित ऐसे सनेह सौं राधिका स्याम हमारे हिये में सदा ठहरैं॥

—कविवर बेनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्त-चन्द्रिका

संग्रहकर्त्ता—श्रीयुत वियोगी हरि

ह पिंगल शास्त्र सम्बन्धी छोटी सी पुस्तिका कविचक्रचूड़ामणि पद्माकर के पौत्र गदाधर भट्ट कृत है। गदाधर भट्ट के पिता का नाम मिहीलाल था। गदाधरजी का दतिया रियासत में विशेष मान था। ये जैपुर और सुठालिया के महाराजाओं के यहां भी सम्मानित हुए थे। इन्होंने अलंकार चन्द्रोदय, कैसर सभा विनोद, छन्दोमञ्जरी, वृत्त-चन्द्रिका आदि ग्रन्थों की रचना की। महाराज सवाई रामसिंह के विनोदार्थ कामांधक नामक संस्कृत नीति का भी भाषा छन्दों में उल्था किया। 'मिश्रबन्धु विनोद' में, इनके रचे हुए ग्रन्थों में, 'गदाधर भट्ट की बानी' का भी उल्लेख है। 'बानी वाले' गदाधर भट्ट ये नहीं थे। जिनकी बानी मिलती है, वे श्रीचैतन्य सम्प्रदाय के भक्त कवि थे। छन्दोमञ्जरी सुठालिया-नरेश के आश्रय में लिखी गई थी। इसमें इनके गद्य का भी नमूना है। इनकी कविता बड़ी ही सरस, ओजस्विनी और सानुप्रास है। 'मिश्रबन्धु विनोद' में इन्हें तोष का स्थान मिला है। विनोद में वृत्त-चन्द्रिका का उल्लेख नहीं है। यह ग्रन्थ दतिया में लिखा गया था। हमारे पास श्रीयुत पं० गोविन्द राव तैलंग कवीश्वर, पुरानी वस्ती, शूरखुड़ी (जयपुर) ने इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति बड़े कृपापूर्वक भेजी है। हम इस कृपा के लिए प्रेषक महोदय को कोटिशः धन्यवाद देते हैं।

दोहा—श्री निंबार्क पदांबुजे, प्रणतिं मुदा विधाय।
वृत्त-चन्द्रिका कथ्यते, मया वृत्त बोधाय॥
जे प्रसिद्ध जग वृत्तवर, चित्त हरन में दच्छ।
मत्त वरन द्वै भेद तिन, वरनत लक्षण लच्छ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन भय जर सत गल सुये, दस अक्षर परिमान ।
सर्व शास्त्र व्यापक जगत, ज्यों सु विष्णु भगवान ॥
मनभय सुखदा चार ये, जरसत दुखदा लेख ।
तीन तीन अक्षर कलित, वसु गन ये अवरेख ॥
वंक रूप गुरु जानिये, सरल लीक लघु मान ।
पिंगल फन पति पंथ सौं, भाषत यों बुधवान ॥
सर्व आदि मधि अंत में, गुरु लघु वरन सुधार ।
मनभय जरसत अष्ट गण, क्रम सौं लेहु विचार ॥
भू अहि शशि जल देवता, मनभय के सुख दान ।
भानु अग्नि पव मान नभ, जरसत सुर दुख दान ॥

छप्पय—भूमि भव्य की हेतु वुद्धि अभिनव्य देत अहि ।
मङ्गलीक निशिनाथ पाथ अति कुशल गाथ महि ॥
सोखत सुख वहु शूर अग्नि तन भूर सुदाहत ।
रच्चत पवन प्रयान सून्यता नभ निरवाहत ॥
या विध सु अष्टगण शुभअशुभ पिंगल फनपति फल कहत ।
तातैं सु आदि नर वृत्त के चार शुद्ध औरन चहत ॥

बरवै—मगन नगन अति मितवा भय गन दास ।
उदासीन जत जानहु रस रिपु भास ॥
प्रथम काव्य के द्वै गन धरहु सुधार ।
मन भय रचिये शुभदा जर सत टार ॥
शब्द देव शुभ बाचक कवित सु आदि ।
होय तो न कछु दूषण मत सु अनादि ॥
अष्ट सुगण यौं सोधन करत विशेष ।
कवि जन जन कविता में सेस निदेस ॥
प्रथम कवित के ह, झ, घ, न, ध, र, ख, भ, जान ।
दग्ध वर्ण मत बरनहु कहत प्रमान ॥

दग्ध वर्ण फल

है हकार तैं हानि सुझगर झकार ।
त्यों घकार तैं घर भग्न नगर नकार ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरनि धकार बिनासत रमनि रकार।
करत खकार सुखिनता भखन भकार॥

दग्धाक्षर दोष शांति वर्णन

दग्ध वरन जे बसुवा गुरुता लीन।
होहिं तो न कछु दूषण कहत प्रबीन॥

अष्टगण जात्यादि वर्णन

कवित्त—रौद्र रस पीत रङ्ग अंत्यज मगन राजै,
हास्य रस बिप्र श्वेत नगन प्रमानवर॥
वीर रस पीत रङ्ग भगन सु वैश्य जात,
यगन सिँगार रस पीत द्विज ग्यान वर॥
शांत रस क्षत्री जाति जगन सु लाल रङ्ग,
रगन सु विप्र रस करुणा सुलाल धर॥
अद्भुत सुरस श्वेत अन्त्यज सगन जानो,
भय में सुपीत शूद्र तगन बखान कर॥

मात्रा छंद वर्णन

दोहा—दिन मणि वार कला कलित, तिन पर यति अभिराम।
पिंगल फन पति छंद सो, कहत मनोहर नाम॥

मनोहर

जय गुविंद गरुड़ासन, गोकुल चंद।
गोपी जन मन रंजन, आनँद कंद॥

दोहा—कला त्रयोदश शिव जहाँ, चरण यथा क्रम जान।
तिन पर यति सो छंद वर, दोहा सुबुध बखान॥

दोहा

वामन प्रभु वलि द्वार पै, बानिक बनि सुख दान।
बनिता लखि बलि राज की, बिहँसत बहुत प्रमान॥

दोहा—चरन चरन प्रति मत्त जहँ, शिव सुत्रयोदश होय।
तिन पै यति फन पति सु कहि, छंद सोरठा सोय॥

सोरठा

कलि कल मखतम लीन, निरख दीन जन जगत के।
धारि सु उर मणि लीन, करि करुणा करुणायतन॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—प्रथम सु दोहा अंत पुनि, रोला छंद प्रमान।
प्रति पद यमक सुवृत्त वर, कुंडलियः सु बखान॥

कुण्डलिया

क्रुद्धित ह्वै रण भूमि में, जबहि कृष्ण समरथ्थ।
रदन कुवलिया पीड को, करयौ उपाटन हथ्थ॥
करयौ उपाटन हथ्थ, सथ्थ सों ये बच बोले।
करो कंस विध्वंस, आज प्रति पछ्छ अडोलै॥
पछ्छ अडोलै करो देव नर दिग्गज उद्धत।
रचों जुद्ध परचंड चंड कर सम ह्वै क्रुद्धित॥

दोहा—कुंडलिया सम कीजिये, कला विरति स्वच्छंद।
यमक तीन ता मधि रचौ, अमृतध्वनि सो छंद॥

अमृतध्वनि

दरसत उछ्छ्च अंग में, रंग भूमि में लछ्छ।
मल्ल जुद्ध चानूर सों, हरि किय हर्षित अछ्छ॥
अछ्छ छ्छकित, प्रतछ्छछ्छलिय विपछ्छछ्छय हित।
अद्धद्धरित प्रबुद्धद्धरनि, विरुद्ध द्धरि चित॥
उथ्थ थ्थपिय सुवथ्थ थ्थलनि, विलुथ्थद्धुरसत।
मद द्विरद विहद दरप, अमंददरसत॥

दोहा—कला चरण प्रति जिन जहां, रुद्र त्रिदश यति लेख।
गुरु लघु कौ नहिं नेम सो, रोला छंद विशेख॥

रोला

ग्वाल बाल संग सज्जि, गोपिका गण कों रुक्कत।
दधि लुट्टत बर जोर जुट्ट, झंझट सौं रुक्कत॥
निरखि नंद कों तहां, भज्जि जित तित सब मुक्कत।
अक बक्कत मग छाँड़ि, जननि गृह गोविंद लुक्कत॥

दोहा—चरण चरण वसु बीस कल, तिथि त्रयदश विश्राम।
छप्पय अंत सु चरण जुग, छंद उलाला नाम॥

उल्लाला

कीन्हो सु जुद्ध अति क्रुद्ध ह्वै, रंग भूमि हरि जुट्टि कैं।
पट के प्रतछ्ल्लु हनि मल्ल गज, रहे ते सुघर लुट्टि (?) कैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रोणित अखंड तिन रंग में, श्याम अंग रंजित बसैं।
मानहुँ कलिंद गिरि भानु की, किरन वृंद मंडित लसैं॥

दोहा—रोला के पद चार जहँ, उल्लाला पद दोय।
छप्पय जुत पिंगल कहे, छप्पय छंद सु होय॥

छप्पय

थकित गोप गण सर्व लखत कालो दह तट पै।
करत नृत्य गोविन्द नाग काली के घट पै॥
कछैं काछनी अच्छ्छ पिच्छ्छ भूषण छबि धारैं।
मधुर बजावत बेणु सप्त सुर धुनि संचारैं॥
फुंकरत फनी फन बृंद प्रति फवि फुलिंग बिष बहु बहै।
अद्भुत चरित्र इमि नंद सुनि चकित चित्त चुप ह्वै रहै॥

दोहा—कल अट्ठाइस चरण प्रति, विरति इंद्र कल जान।
कहत छंद हरिगीतिका, पिंगल मति बुधवान॥

हरिगीतिका

गज रथ तुरंगम पत्ति अरु, बहु बित्त वैभव थान है।
सुख ये सकल संसार के, निशि स्वप्न के परिमान हैं॥
भूलो न इनमें मोह सौं, चित छोह कर उर आनिये।
गोविंद माधव कृष्ण गोकुल-चंद गुण नित गानिये॥

दोहा—रिषि मुनि अरु रवि कल जहां, नख सत्रह विश्राम।
कहत झूलना छंद सो, करखा वियता नाम॥

झूलना

सुंदरी कुंज बन बाटिका मंजु अति केलि मणि भौन रस रंग राता।
पुत्र धन हेम मणि माल मुक्तावली वस्त्र बहु चित्रता प्रेम पाता॥
छत्र गजराज हय पत्ति सुखपाल रथ चारु चतुरंग दल अंग त्राता।
है सु इन सर्व कौं सर्वदा लोक में राधिका कृष्ण गोविन्द दाता॥

दोहा—जगण अंत षोड़स कला, पंक्ति सु रितु विश्राम।
पिंगल फनपति छंद सो, कहत पद्धरी नाम॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी

विलसै कलिंदजा कूल थाँन।
रमणीय राधिका संग कान॥
तनु पीत श्याम शोभित सरूप।
तड़िता सुमेघ जुत जनु अनूप॥

दोहा—प्रति पद षोड़स कल जहाँ, विरति नाग वसु जान।
कहत छंद सो चौपई, पंद्रहु कल परिमान॥

चौपई

आगम निगम सु जिहि नित गावै, शेष शम्भु तिहि पार न पावै॥
सो व्रज मंडल श्याम छबीलो, क्रीड़त गोपिन संग रसीलो॥

दोहा—प्रति पद भानु कला जहाँ, विरति तहाँ परिमान।
यगन अंत कहि छंद सो, हरि सुखदान प्रमान॥

हरि

राजै गुविंद ऐसे, छबि कोट काम जैसे।
देखें सु नैन शोभा, होवै सुचित्त लोभा॥

इति मात्रा छंद प्रकरणम्

अथ वर्ण छन्द वर्णन

दोहा—इक सौं छब्बिस वर्ण लों, वर्ण छंद परिमान।
तिनके लक्षण लक्ष सब, वर्णत सुखद सुजान॥
इक द्वय त्रय गुरु वर्ण जहँ, प्रति पद सु यति समेत।
श्री सुनाम गनि काम पुन, सार छंद त्रय चेत॥

श्री छंद

धी श्री, प्री स्री॥

काम छंद

मानै सोही, जानै जोही।

सार छंद

मानी हो, प्राणी हो। ध्यानी हो, ग्यानी हो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा—गुरु लघु अक्षर चरण प्रति, चार चार सुखदान।
द्रग अक्षर पै यति जहाँ, धार छंद परिमान॥

धार छंद

दीह दोस, जोस रोस। ग्यान कोष, ह्वै सतोष॥

दोहा—भगण दोय गुरु अंत में, प्रति पद अक्षर पाँच।
द्रग गुण पै यति छंद सो, हंस कहत बुध साँच॥

हंस छंद

कान्ह पियारे, रूप दिखा रे। तोहि लखै ना, चैन परै ना॥

दोहा—रगण दोय प्रति पद जहाँ, प्रकृति सुयति अभिराम।
पिंगल फणपति छंद सो, कहत विमोहा नाम॥

विमोहा छंद

स्वप्न सो लोक है, कौन कों को कहै। गो दुहे गाय है, तो सुखे पाय है॥

दोहा—जगण सगण गुरु अंत इक, रिषि अक्षर अनुमान।
द्रग सुर तरु यति छंद सो, कुमार ललिता जान॥

कुमार-ललिता छंद

जबै द्रगनि देखे, तबै सुख विशेखे।
हिय हरष मानो, प्रिया हरि सु जानो॥

दोहा—रगण जगण गुरु लघु बरण, श्रुति सुरतरु यति लेख।
पिंगल फणपति पंथ सो, छंद मल्लिका देख॥

मल्लिका छंद

खंभ तें प्रगट्ट होय, दैत्य कों सु अंक गोय।
मार कै नृसिंह ताहि, पालिकै सु भक्त चाहि॥

दोहा—सगण जगण पुन जगण जहँ, भुज रिषि पर यति चारु।
पिंगल फणपति छंद सो, तोमर छंद विचारु॥

तोमर छंद

जबहीं शराशन कर्ष, किय राम राम अमर्ष।
सिय के भयो हिय हर्ष, दिव देव फूलन वर्ष॥

(अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौलिकता की सृष्टि

[लेखक—श्रीयुत दीनदयालु श्रीवास्तव बी० ए०]

जकल हिन्दी-साहित्य की वृद्धि बड़ी तेजी के साथ हो रही है, अनेकों नई नई पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। किन्तु कुछ लोगों को साहित्य की इस उन्नति में संदेह होता है और इस संदेह का कारण यह बतलाया जाता है कि अधिकतर अनुवाद-ग्रन्थ ही हिन्दी में प्रकाशित हुआ करते हैं, अभी तक हिन्दी में ऐसे मौलिक ग्रन्थों की सृष्टि नहीं हुई है जिससे हिन्दी-साहित्य भी सभ्यभाषाओं की पंक्ति में सादर आसन पा सके। अतएव जब तक हिन्दी में ऐसे ग्रन्थ नहीं लिखे जाते जो लेखक की नयी उपज और अनोखी सूझ के द्योतक हों, तब तक यह साहित्य एक प्रकार से उपेक्षणीय है। ऐसी अवस्था में इस पर विचार करना असंगत न होगा कि साहित्य में मौलिकता की सृष्टि कैसे होती है? मौलिकता और अनुकरण में क्या सम्बन्ध है? अनुकरण मौलिकता का साधक है या बाधक? मौलिकता और अनुकरण दोनों अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं या नहीं? क्या इस समय हमारे लिए अनुकरण करना अनावश्यक है?

यह निर्विवाद है कि उस आधुनिक सभ्यता का जन्मदाता, जिसका आधिपत्य विभिन्न रूपों में सारे संसार पर छाया हुआ है, पश्चिमीय संसार ही है। सुतरां यह बात भी प्रत्यक्ष और सर्वमान्य है कि यूरोपीय भाषाओं का साहित्य भी बहुत बढ़ा चढ़ा हुआ है। वास्तव में आज जीवन-संग्राम में पश्चिम ही की जीत हो रही है, पूर्व पार्थिव सभ्यता की दौड़ में इस समय बहुत ही पिछड़ा हुआ है। अतः पूर्व के समक्ष आज यह महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित है कि वह अपने कार्यक्रम में अनुकरण का अवलम्बन करे या केवल मौलिकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर जोर दिया करे। और यदि अनुकरण उसके लिए श्रेयस्कर सिद्ध हो सकता है, तो वह कहाँ तक और कैसे ?

वास्तव में, संसार के व्यवहार में आदान-प्रदान एक आवश्यक और अनिवार्य अंग है, इसके बिना किसी देश का काम नहीं चल सकता और न किसी प्रकार की उन्नति ही हो सकती है। आजकल जो संसार का ज्ञान-कोष है, उसकी पूर्ति केवल एक देश ने नहीं की है, वरन् इस संचय में थोड़ा बहुत सभी देशों ने हाथ बटाया है। हां, यह ठीक है कि किसी देश का हिस्सा बड़ा है और किसी का छोटा। जैसे किसी मनुष्य का मस्तिष्क विशेषरूप से उपजाऊ होता है और कोई अनुकरण करने में सिद्धहस्त हुआ करता है, ठीक वैसे ही कोई कोई देश सापेक्षरीति से अधिक मौलिक और उपजाऊ होते हैं और कोई प्रधानतः नकलची हुआ करते हैं। इसी प्रकार किसी भाषा के साहित्य में मौलिक ग्रन्थों का प्राधान्य और किसी के साहित्य में अनुवाद-ग्रन्थों का प्राधान्य होना भी स्वाभाविक है।

इसका निर्णय करने के पहले कि अनुवाद-ग्रन्थ-प्रधानसाहित्य का वास्तविक मूल्य क्या है, एक ऐसे देश के उदाहरण पर विचार करना, जिसकी कुछ काल पहले हमारी जैसी परिस्थिति थी, अनुचित न होगा। प्रायः यह कहा जाता है कि जापानी लोग अनुकरण करने में बड़े दक्ष हैं यानी पक्के नकलची हैं। उनको अपने गांठ की अकल बहुत थोड़ी है। कुछ लोग इस बात को उनकी राष्ट्रीयता की भीषण कमी समझते हैं। इसका कारण यह ठहराया जाता है कि वहां की प्रचलित शिक्षा-प्रणाली में रट्टूपन का ही प्राधान्य है, जिससे रटते रटते विद्यार्थियों का मस्तिष्क शिथिल हो जाता है, विचारशक्ति को बिल्कुल प्रोत्साहन नहीं मिलता, फिर मौलिकता आवे तो कहाँ से ? इसलिए वहाँ पर भी अपने देश की भाँति यह उद्योग हो रहा है कि शिक्षा-प्रणाली इस प्रकार संशोधित की जाय जिससे विद्यार्थियों में स्वयं सोचने विचारने की शक्ति उत्पन्न हो। कुछ लोगों की तो ऐसी निराशा-मयी धारणा हो गयी है कि जापान राष्ट्र स्वभावतः नकलची राष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वह सदैव विदेशी सभ्यता की नकल करता रहेगा, स्वयं वह कभी कुछ नहीं उत्पन्न कर सकता। यह राय कहाँ तक ठीक है? इसमें तो रत्ती भर संदेह नहीं कि गत ५०। ६० वर्षों से पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण करने में जापान ने कोई बात उठा नहीं रखी। और यह भी स्पष्ट है कि जापानियों में नकल करने की क्षमता यथेष्ट है किन्तु इससे यह कैसे प्रमाणित हो सकता है कि उनमें स्वयं अपनी उपज करने की शक्ति नहीं। बहुधा इन बातों को स्पष्ट समझने में, बड़ी भूल हो जाती है, किन्तु इनको पृथक पृथक जान लेना आवश्यक है, मान लीजिए एक व्यक्ति विशेष दूध बहुत पिया करता है, तो क्या उसको रोटी से घृणा है? नहीं, कदापि नहीं। जापान प्राणप्रण से वर्षों से पश्चिमीय सभ्यता की नकल करता आता है, यह अक्षरशः सत्य है। यूरोपीय भाषाओं के अनेकों उपयोगी ग्रन्थों का अनुवाद अपनी भाषा में कर डाला, विदेशी साहित्य को मथन कर अपनी भाषा को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने का भरसक प्रयत्न किया, किन्तु क्या इसका यह कारण है कि उनमें स्वयं मौलिक ग्रन्थ लिखने की शक्ति नहीं थी। नहीं, यह कहना अधिक युक्तसंगत होगा कि उस समय नयी सृष्टि करने की अपेक्षा उनको अनुवाद करना ही अधिक लाभदायक प्रतीत हुआ। यह क्यों? जापान पूर्व के एक कोने में स्थित है, पश्चिमीय संसार से बहुत दूर है, बहुत दिनों तक विदेशी मुल्कों के साथ उसका कोई सम्पर्क नहीं था, जिस समय वह अपने ही घर में कैदी था, उस समय यूरोप के भिन्न भिन्न प्रदेश भौतिक अभ्युदय के मार्ग पर अग्रसर होने के लिये एक दूसरे से स्पर्धा कर रहे थे, एशिया उस समय गहरी नींद में खर्राटे ले रहा था। जब उसने यूरोप से टक्कर खाई तो उसके किसी किसी प्रदेश ने आँखें खोलना चाहीं, सबसे पहले जापान ने पश्चिमीय संसार की बराबरी करने की ठानी। उस समय यदि वह यह सोचता कि पश्चिम की नकल करना उसके लिए अपमानजनक होगा, विदेशियों के सद्गुणों को ग्रहण करने के लिए भी उसे उनके सामने अवनतमस्तक होना पड़ेगा, अतः अपनी सभ्यता को उन्नत करने के लिए अथवा अपने साहित्य-वृद्धि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए उसको विदेशी छूत से बचना चाहिए, केवल अपने ही मस्तिष्क से काम लेना उचित होगा, यदि विदेशी ज्ञानधाराओं के लिए उसने अपने द्वार न खोले होते तो क्या सम्भव था कि उसने इतनी जल्दी इतनी अधिक उन्नति की होती। यह कहना व्यर्थ होगा कि उस समय अनुकरण करना ही जापान के लिए सर्वोत्तम मार्ग हो सकता था। सुतरां उसने उसी मार्ग का अवलम्बन भी किया। झट से पश्चिमीय सैनिक व्यवस्था की नकल की, युद्धवीर सैनिक तैयार किए, बन्दूकें बनाईं, तोपें ढालीं, इस प्रकार विदेशियों के आक्रमणों से अपने आप को एकदम सुरक्षित कर लिया। फिर उसने अपने साहित्य की ओर ध्यान दिया, हरेक विज्ञान की पुस्तकें अपनी भाषा में लिख डालीं, इस ज्ञानवृद्धि से जनता समृद्धिशालिनी हुई, इस प्रकार व्यवस्था होते ही जापान एक प्रभावशाली राष्ट्र बन गया, इतना बढ़ा कि संसार में उसकी धाक जम गई।

किन्तु यह सब किस प्रकार हुआ, प्रारम्भ में पश्चिमीय व्यवस्था और संघटनों का अनुकरण करने से। इसी गुण के कारण हर प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए भी जापान एक स्वतंत्र राष्ट्र बनगया–इतना शक्तिशाली कि कोई राष्ट्र उसकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देख सकता—इतना छोटा और इतना बड़ा। किन्तु यदि जापान यह सोचता कि भला मैं क्यों किसी की नकल करूं, मैं क्यों किसी से तोप बन्दूक बनाना सीखूं, क्या मेरे तीर कमान रद्दी हैं, यदि विदेशी भाषाओं से अपनी भाषा में अनुवाद न किए होते और अपने ही बुद्धि पर मुग्ध रहता तो शायद आज कोई जापान का नाम तक न जानता।

किन्तु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्', नकल की भी एक सीमा है, नकल में भी अकल की जरूरत होती है। पश्चिम भौतिक विज्ञान में हमारा गुरु है, इस विषय में उससे हमको बहुत कुछ सीखना है। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि हरेक बात में हम उसकी नकल करें। जो बात उनके यहाँ अच्छी है उसको ग्रहण करने के लिए यथेष्ट नम्रता चाहिए और जिन बातों में हम उन्नत हैं, उन्हें निरर्थक न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझना चाहिए। प्रायः नकल के आवेग में हम अपनी सुन्दर कलाओं और उत्तम प्रथाओं को भूल जाते हैं और उनको छोड़ बैठते हैं। प्रारम्भ में, जापान की भी यही दुर्गति हुई, हरेक बात में धड़ाधड़ नकल करना प्रारम्भ किया गया, किन्तु सौभाग्यवश अब यह प्रवृति दूर हो रही है। सब परिस्थितों का विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि सामान्यतः पश्चिमीय साहित्य का ज्ञान प्राप्त करने में जापान ने बुद्धिमानी से काम लिया, मौलिकता की परवाह न करके अनुवाद से यथेष्ठ लाभ उठाया और अपने आप को अंधकार के गर्त में डूबने से बचा ही नहीं लिया वरन् इस उन्नत अवस्था पर पहुंचा दिया।

अब प्रश्न यह है कि क्या यह पद्धति केवल जापान ही के लिए लागू हो सकती है? सभ्यता की दौड़ में पिछड़े हुए देशों के लिए अनुकरण करना श्रेयस्कर सिद्ध हुआ है, परन्तु उन देशों में जहाँ की सभ्यता उच्च कोटि की समझी जाती है अनुकरण का क्या स्थान है, उनकी उन्नति में भी क्या अनुकरण किसी सीमा तक सहायक हुआ है या उन देशों ने स्वतंत्र रीति से अपनी निराली निराली सभ्यता स्थापित की है? संक्षेप में, इस कथन में कि कतिपय देश स्वभावतः और पूर्णतः मौलिक हैं और कतिपय स्वभावतः नकलची हैं, कितना सार है। पश्चिमीय सभ्यता के विकास के इतिहास की ओर यथेष्ट ध्यान देने से ऐसी धारणा निर्मूल हो जाती है।

यह कहना अनावश्यक होगा कि यदि हम वर्तमान पश्चिमीय सभ्यता के उद्गम-स्थान की खोज में चले तो पहले पहल यूनान और इटली पर पहुँचेंगे, यदि और आगे बढ़ें तो बेबीलन, असीरिया और मिश्र की सभ्यता का पता चलेगा और अन्त में तो चीन और भारतवर्ष ही संसार की सभ्यता का जन्मस्थान ठहरता है। वास्तव में एशिया और अफ्रीका की सभ्यता ही ने यूनान और इटली में प्रवेश किया था और फिर यह देश सारे यूरोप के लिए मार्ग प्रदर्शक बन गए। इटली से चल कर यह सभ्यता ट्यूटन और गौल्स के यहां पहुँची जो उस समय जंगली थे और जो आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar .

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे संसारके मुकुटमणि बने हुए हैं, इतिहास के देखने से यह ज्ञात हो जाता है कि सभ्यता फैलाने और उन्नत करने के लिए देशों में पारस्परिक सम्बन्ध होना कितना आवश्यक है, एक ही ज्ञान भिन्न भिन्न रूपों में समस्त देशों में फैला हुआ है। यह दूसरी बात है कि अंग्रेजों की सभ्यता और जर्मनों की सभ्यता में अन्तर है, जर्मनी और फ्रांस की सभ्यता में भेद है और अंग्रेजों और फ्रांस की सभ्यता भी पूर्णतया मिलती जुलती नहीं है, अथवा यों कहिए हरेक देश में कुछ न कुछ विशेषताएं हैं। यदि हम किसी एक देश की सभ्यता का अध्ययन करें तो हमको पता चलेगा कि अन्य कितने देशों की सभ्यता का उस देश की सभ्यता पर प्रभाव पड़ा है! यद्यपि जापान यूरोपीय ढंगों का अनुकरण करने में बहुत निपुण रहा है, तथापि जापान की सभ्यता और यूरोपीय देशों की सभ्यता में कोई मौलिक अन्तर नहीं दिखाई देता, हरेक देश ने एक ही मार्ग का अवलम्बन किया है। वैसे तो हरेक देश की भौगोलिक और ऐतिहासिक परिस्थिति पृथक पृथक हुआ करती है, इसलिए प्रत्येक देश की विशेषताएं अलग अलग झलक पड़ती हैं, अंग्रेजों की अलग, जर्मनों की अलग, और जापानियों की अलग। जापान ने चीन या यूरोप से कुछ ग्रहण किया है तो उसमें कोई हानि नहीं यदि उन्होंने उसमें जापानीपन ला दिया है। इसी प्रकार भारतवासियों को भी पश्चिमीय सभ्यता या साहित्य के अनुकरण में कोई हानि नहीं हो सकती यदि वे उसपर भारतीयता की मुहर लगा देते हैं।

यदि दूसरी ओर से विचार करें तो यह भी नहीं कहा जा सकता कि अनुकरण करना सदैव मौलिक उपज से घटिया सिद्ध होगा। इसमें सन्देह नहीं कि आध्यात्मिक दृष्टि से मौलिक उपज अनुकरण की अपेक्षा श्रेष्ठ है किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह आवश्यक नहीं कि नकल करनेवाला आविष्कार करनेवाले से किसी प्रकार कम रहे। उदाहरण में हम जर्मनी और फ्रान्स की तुलना कर सकते हैं। फ्रांस अधिकतर नये नये आविष्कार करने में जर्मनी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे रहता है, जर्मनी विदेशी वस्तुओं की नकल करने और उनको समुन्नत करने में फ्रांस से बढ़ा चढ़ा है। आज संसार जर्मनी की विद्या देखकर चकित हो रहा है किन्तु क्या कभी किसी जर्मनवासी ने न्यूटन के सर्वव्यापक गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त या डारविन के विकासवाद के समान कोई आविष्कार किया है? उड़ने वाली मशीन और गोता लगाने वाली नावें पहले पहल फ्रांस ने ही निकाली किन्तु उनको उन्नत किसने किया? जर्मनी ने। जर्मनी ने ऐसे ऐसे विशाल हवाई जहाज और विस्तीर्ण जलमग्न जहाज बना डाले, कि उनको देखकर फ्राँस भी एक बार चकित हो गया। यदि नकल असल से बढ़ जाय तो ऐसी नकल में क्या हानि? क्या ऐसी नकल में किसी अंश में भी मौलिकता का समावेश नहीं होता। अवश्यमेव।

हिन्दी में अनुवादों का अभाव अवश्य नहीं है, विद्वानों की तो यह धारणा है कि अनुवादों की संख्या अत्यधिक हो गयी है, परन्तु इन अनुवादों से साहित्य को थोड़ा ही लाभ पहुँचा। उसका कारण यह है कि केवल अनुकरण प्रियता—नकलबाजी से मौलिकता की सृष्टि नहीं होती, परन्तु जब हम किसी उन्नत साहित्य के ज्ञान को स्वायत्त कर लेते हैं, उसे अपना बना डालते हैं, तब साहित्य का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है और विस्तृत साहित्यिक क्षेत्र में ही मौलिकता उत्पन्न होती है। हिन्दी में कुछ लोग ऐसे ग्रन्थों का अनुवाद करते हैं जिनसे लाभ को कौन कहे, अनिष्ट की सम्भावना रहती है। अंग्रेजी के दुअन्नी उपन्यासों के अनुवादों से कितने ही दारोगा दफ्तर भर गये हैं, और भरे जा सकते हैं। परन्तु यह साहित्यवृद्धि का सूचक नहीं है, हमें विश्वास है कि यदि हिन्दी के श्रेष्ठ विद्वान विदेशी साहित्य के ग्रन्थरत्नों का अनुवाद करें तो उससे साहित्य की वृद्धि भी होगी और सुरुचि का प्रचार भी होगा, तभी हिन्दी में मौलिकता का दर्शन भी होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यालोचना

[लेखक—श्रीयुत भगवानदीन पाठक, विशारद]

(गताँक से आगे)

तिभंग के बाद दूसरा दोष दिखाया गया है "पुनरुक्ति"। इस दोष को दिखाते हुए भूषण जी साधारण कवियों की श्रेणी से भी नीचे ढकेल दिये गये हैं। क्योंकि कहा गया है—

"भाषा-काव्य में यह बहुत प्रसिद्ध दोष है। साधारण कवि भी अपने काव्य में पुनरुक्ति होने देना पसन्द नहीं करते हैं। खेद है कि भूषण जी के काव्य में इस दोष के उदाहरण भी ठौर ठौर पर मिलते हैं।"

ठौर ठौर पर बहुत से मिलते होंगे; पर समालोचक महोदय ने तीन उदाहरणों में पुनरुक्ति दोष दिखाये हैं। पहला है—

'वैरि नारि दृग जलन सौं बूड़ि जात अरि गावं।'

इस पद में "अरि" शब्द से पुनरुक्ति प्रगट की गई है। हमारी राय में यहां 'वैरि' और 'अरि' कोई पृथक् स्वतंत्र शब्द नहीं हैं। बल्कि एक संयुक्त शब्द है "वैरिनारि" और दूसरा संयुक्त शब्द है "अरिगांव"। दोनों का अर्थ भिन्न भिन्न है। अर्थात् एक का अर्थ है वैरी की स्त्रियां और दूसरे का अर्थ है वैरियों के गांव। अतः यह पुनरुक्ति नहीं कही जा सकती। फिर वैरियों की हो स्त्रियां होती हैं और वैरियों के ही गांव डूबते हैं, मित्रों अथवा निरपेक्षों के नहीं, इसी आशय को स्पष्ट करने के लिए भूषण जी को गांव के साथ भी 'अरि' जोड़ देना पड़ा है। हां, इतना कहा जा सकता है कि भूषण जी पिछले स्थान पर संज्ञा का प्रयोग न करके सर्वनाम का प्रयोग करते तो जो लेशमात्र पुनरुक्ति उक्त पद में है सो भी न रह जाती। पर शायद भूषण जी को यह तरकीब पसन्द नहीं आई। उन्होंने समझा पर्यायवाची शब्द के सहारे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनरुक्ति के पाप से बच जायँगे। पर बाल की खाल काढ़ने वाले भला कब छोड़ने लगे ? दूसरा उदाहरण है—

आमिष अहार मांसहारी दै दै तारी नाचैं खांड़े तोड़ कि रचैं उड़ाये सब तारे से।

कहा गया है—"उपर्युक्त पद्य में आमिषअहारी और मांसहारी दोनों ही शब्दों का एक ही अर्थ होता है। यह एक भद्दी पुनरुक्ति है।"

समालोचक महोदय क्षमा करें तो हम कहें कि उपर्युक्त पुनरुक्ति को दिखाना उनकी एक भद्दी भूल है। क्योंकि आमिषअहारी और मांसहारी दोनों शब्द त्रिकाल में भी एकार्थवाची नहीं हैं। बल्कि पहले का अर्थ है मांस खाने वाले और दूसरे का अर्थ है मांस हरने वाले अर्थात् छीनने झपटने वाले। मांसाहारी से पुनरुक्ति होती; मांसहारी में तो पुनरुक्ति का कोसों पता नहीं है। तीसरा उदाहरण है—

"चन्द्रावल चूर करि जावली जपत कीन्हों मारे सब भूप और संहारे पुर धाय कै। भूषन भनत तुरकान को दल थम्भ काटि अफजल मारि डारे तबल बजाय कै।"

'मारे' और 'मारि डारे' में पुनरुक्ति दिखाई गई है। हमारी राय में यह भी ठीक नहीं है। क्योंकि पहले तो मारे और मारि डारे दोनों शब्दों में भेद है। 'मारि डारे' शब्द से जान से मार डालने का अर्थ सहजबोध्य है; पर 'मारे' शब्द में यह अर्थ संदिग्ध है। सम्भव है जिन भूपों के लिए मारे शब्द का प्रयोग हुआ है उन्हें मार पीट कर ही छोड़ दिया गया हो अर्थात् प्राणों की चोट उन्हें न पहुँचाई गई हो। अफ़ज़ल के विषय में इस अर्थ को स्पष्ट कर देने के लिए ही शायद आगे 'मारि डारे' का स्पष्टतः उल्लेख किया गया है। दूसरे अफ़ज़ल एक प्रधान ऐतिहासिक सरदार था जिसे शिवा जी से काम पड़ा था। इसलिए उसके सम्बन्ध की बात का यहीं नहीं अन्यत्र भी भूषण जी ने विशेष रूप से उल्लेख किया है। अतः इसी विचार से उन्होंने यहां भी उनके नाम के आगे एक स्वतंत्र क्रिया जोड़ दी है। तीसरी बात यह कि इन क्रियाओं की पुनरुक्ति—यदि पुनरुक्ति ही मानी जाय तो—एक ही पद में नहीं दो भिन्न भिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदों में है। व्यक्ति भी भिन्न भिन्न हैं। पहले पद में 'मारे' का प्रयोग भूपों के लिए है और दूसरे पद में 'मारि डारे' का प्रयोग अफ़ज़ल के लिए है। इतनी भिन्नताओं के होते हुए भी खींच खाँच कर पुनरुक्ति दोष भूषण के मत्थे मढ़ना अनुचित है। 'मारे' और 'मारि डारे' के रूप और अर्थ में भी बहुत कुछ विभिन्नता तथा दोनों के बीच फासिला भी बहुत होने के कारण पढ़ने वालों को यह बात पुनरुक्ति के रूप में नहीं खटक सकती।

तीसरा दोष दिखाया गया है अधिकपदत्व और न्यूनपदत्व। इस के चार उदाहरण दिये गये हैं। पहला है

'साहि के सपूत पूत वीर सिवराज सिंह केते गढ़धारी किये वन वनचारी से'

यहां 'वनचारी' से पहले वाले 'वन' की अधिकता दिखाई गई है। यह अधिकता समालोचक महोदय ने पुनरुक्ति का सहारा लेकर ख़ूब समझाई है। लगातार तीन वाक्यों में आपने कह डाला है, 'ठूँस दिया है' 'आवश्यक्ता से अधिक है' इतने पर भी बस नहीं "इस का प्रयोग व्यर्थ में किया गया है।" महोदय 'मारे' और 'मारि डारे' में इतनी भिन्नता होते हुए भी आपने पुनरुक्ति दूषण 'भूषण' के मत्थे मढ़ दिया। पर आप तो एक ही बात को प्रकट करने के लिए एक ही स्थान पर तीन तरह के एकार्थ-वाची वाक्यों का प्रयोग कर गये। इसे क्या कहें पुनरुक्ति या पुनर्पुनरुक्ति? ख़ैर, हमारी समझ में 'वन' शब्द अधिक नहीं है। इसके पक्ष में दो दलीलें हैं। पहली तो यह वन और वनचारी दो स्वतंत्र शब्द हैं। 'वन के वनचर' या 'जंगल के जंगली जानवर' इन दो साधारण वाक्यों में वन या जंगल की पुनरुक्ति का कहीं पता भी नहीं है। कविता में विभक्ति की न्यूनता कोई नई बात नहीं है। 'वन के वनचारी से' जो अर्थ प्रकट होता है उसी अर्थ को कवि ने 'के' विभक्ति उड़ाकर वन वनचारी से व्यक्त किया है। 'केते गढ़धारी किये वन वनचारी से" अर्थात् कितने गढ़धारी वन के वनचारी से कर दिये। ऐसी दशा में बात ठीक उलटी जा पड़ती है। अर्थात् 'के' विभक्ति का लोप दिखा कर आप इस पद में न्यूनपदत्व सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते तो शायद किसी किसी को वह 'दूषण' समझ में आजाता। अधिकपदत्व का तो इसमें कहीं लेश भी नहीं है। दूसरे अर्थ में एक और दलील दी जा सकती है। शायद कवि का अभिप्राय वन वन घुमाने से हो। ऐसी दशा में दुबारा "वन" के प्रयोग से ज्यादा ज़ोर पड़कर कवि का अभिप्राय अधिक स्पष्ट रूप में सिद्ध होता है। वन में घूमे या दर पर भीख मांगे—इन वाक्यों के स्थान में यदि लिखा जाय—वन वन घूमे या दर दर भीख मांगे, तो पिछले दोनों वाक्य पहले दो वाक्यों की अपेक्षा पराश्रयशीलता और अकिंचनता के पक्ष में कहीं अधिक ज़ोरदार हैं। भूषण जी को गढ़धारियों की अतिपराश्रयशीलता और अकिंचनता प्रकट करनी थी। अतः उन्होंने उन्हें वन वनचारी अर्थात् वन वन घूमनेवाला लिखा है। यदि कवि को यह दूसरा अर्थ अभीष्ट हो तब भी अधिकपदत्व ढूँढ़े नहीं मिलता।

दूसरा उदाहरण है—

"दूलहो शिवाजी भयो दच्छिनी दमामे वारे दिल्ली दूलहिनि भई सहर सतारे की।"

इसकी बाबत कहा गया है—उधर शिवाजी को दूल्हा बनाया इधर सतारे को दूल्हा कर दिया। याते सतारा दूल्हा नहीं हुआ या शिवाजी दूल्हा नहीं हुए। दो में से एक का प्रयोग अधिक है। पर वास्तव में प्रयोग अधिक नहीं है। दूल्हा के लिए एकमात्र शिवाजी का प्रयोग है दूसरे किसी का नहीं। "दिल्ली दुलहिनि भई सहर सतारे की" इतना पढ़ने से अवश्य ही स्पष्ट प्रकट होता है कि सतारे को भी दूल्हा बना डाला। पर क्षमा कीजिए, सतारा फिर भी दूल्हा नहीं बना। गोरखधंधा जरूर है, पर समझना कुछ कठिन नहीं है। सीधी सी बात है। ज़रा बोल चाल की दुनियां की तरफ़ खिसक आइए। हां, पहले एक बात नोट कर लीजिए। उपर्युक्त पद में एक ही दूल्हा हैं शिवाजी, और एक ही दुलहिन है दिल्ली। दूसरे दूल्हा सतारा ही पर आपको आपत्ति है न? देखिए, चाहे शिवाजी होते और चाहे सतारे का निवासी और कोई भी व्यक्ति, उसकी दुलहिन सतारे की दुलहिन कही जाने में सतारे में साक्षात् दूल्हा का आरोप कोई भी न कर सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री जिस गांव में पैदा होती है उम्र भर उस गांव की बेटी कही जाती है; और जिस गांव में व्याही जाती है उस गांव की बहू। न तो जिस गांव में वह पैदा हुई है वह गांव उसका दूसरा पिता है और न जिस गांव में वह व्याही है वह गांव उसका दूसरा पति है। पहले गांव का निवासी कोई भी व्यक्ति उसका पिता है, इसी तरह दूसरे गांव का निवासी कोई भी व्यक्ति उसका पति है। बात भद्दी है, पर तनिक स्पष्ट रूप में लिखने के लिए क्षमा करें, ज्ञानपुर के गुरुदत्त की बहू को यदि कोई ज्ञानपुर की बहू कहे तो क्या उससे यह आशय समझा जाय कि ज्ञानपुर उस बहू का दूसरा दूल्हा है। अथवा मानपुर के यज्ञदत्त की कन्या को कोई मानपुर की कन्या कहे तो यह समझें कि मानपुर उस कन्या का दूसरा पिता है। शायद अधिक स्पष्ट करने की जरूरत नहीं रही। दुल्हा शिवाजी और दुलहिन दिल्ली; पर ज्योंही शिवा जी दिल्ली के दुल्हा हुए, सतारा आपही दिल्ली का दुल्हा हो गया। क्योंकि शिवाजी अथवा सतारे के किसी भी निवासी व्यक्ति की दुलहिन सतारे की दुलहिन कही जा सकती थी। संसार के साहित्य में आज भी यह बात मौजूद है। भारत का प्रत्येक बालक किसी न किसी व्यक्ति पिता का है, पर प्रत्येक बालक को भारत का बालक कहने में किसी तरह की अशुद्धि नहीं है। इसी तरह इङ्गलैण्ड के किसी भी व्यक्ति की कन्या, इङ्गलैण्ड की कन्या, फ्रान्स के किसी भी व्यक्ति की बधू फ्रान्स की बधू कही जाती है।

तीसरा उदाहरण है—'सोंधे को अधार किसमिसं जिनको अहार चारि के सो अंक लंक चन्द सरमाती हैं।' समालोचक महा-शय का कहना है "कि यहां पर यदि लंक (कमर) के लिए ही 'चन्द सरमाती हैं', का प्रयोग हुआ है तो "प्रतिपच्चन्द्र का अर्थ केवल 'चन्द' शब्द से लेने की चेष्टा की गई है जो माननीय नहीं है। इसमें प्रति-पद् शब्द न्यून है।... (और) यदि कवि का अभिप्रायः "चन्द सर-माती हैं" से यह हो कि अपने मुखों की प्रभा से चन्द सरमाती हैं तो भी मुख के अप्रयोग के कारण न्यूनपद दूषण ज्यों का त्यों बना रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ठीक, ज्यों का त्यों बना रहेगा जरूर; मगर क्या समालोचक महोदय कृपा करके बतायेंगे कि संस्कृत और हिन्दी के सैकड़ों विश्ववन्द्य महाकवियों ने अपने काव्यों में जहां मुख की उपमा चन्द्र से दी है वहाँ पूर्णचन्द्र या पूर्णिमा का चन्द्र अवश्य लिखा है ? यदि नहीं लिखा तो क्या वे सब न्यूनपददूषण के दोषी हैं ? खाली चन्द्र कहने से तो प्रतिपदा के चन्द्र का भी अर्थ लिया जा सकता है। और इसलिए शायद समालोचक महाशय की सम्मति में वे सब कवि न्यूनपद दूषण के दोषी हैं जिन्होंने चन्द्र से मुख की समता या श्रेष्ठता का बखान करते समय चन्द्र की जगह पूर्ण चन्द्र का प्रयोग नहीं किया ! यदि ऐसा नहीं है तो जिस प्रकार मुख के पक्ष में चन्द्र के साथ "पूर्ण" शब्द की कुछ ऐसी आवश्यकता नहीं है तो कमर के पक्ष में प्रतिपद् का प्रयोग भी चन्द्र के साथ जरूरी नहीं । काव्य-संसार की यह एक बहुत मोटी सी बात है कि जहां मुख की उपमा चन्द्र से दी जायेगी वहां निम्न से निम्नश्रेणी के पाठक भी चन्द्र से पूर्णचन्द्र का आशय ही ग्रहण करेंगे। सब जानते हैं कि काव्य-जगत में कमर के सौन्दर्य का वर्णन बारीकपन, पतलेपन और लचकीलेपन को लेकर ही होता है; और इसलिए काव्य में जहां कमर को चन्द्र से उपमा दी जाय वहां चन्द्र से प्रतिपच्चन्द्र का आशय आप ही ग्रहण हो जाता है। प्रतिपद् को जोड़ कर सौन्दर्य-वर्णन को भद्दा बनाने की ज़रूरत नहीं रहती। जहां तक हमारा ख़याल है, कवि ने कमर के लिए "चन्द सरमाती हैं" का प्रयोग किया है; समालोचक महोदय के कथनानुसार यदि मुख के लिए "चन्द सरमाती हैं" का प्रयोग हो तो भी न्यूनपद दूषण नहीं होता। प्रकाश, उज्ज्वलता और आभा का वर्णन करते हुए खाली मुख के लिए नहीं, अनेक स्थान पर कवियों ने सारे शरीर के लिए भी चन्द्र की उपमा दी है। सम्भव है यहां भी ऐसा ही हो। फिर भी मान लो, मुख ही के लिए "चन्द" आया है तो भी मुख यों ही समझ लिया जायेगा। नीचे के दोहे में तो मुख क्या किसी अंग का भी कोसों पता नहीं है;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कौन कह सकता है कि काव्य-गरिमा की दृष्टि से यह लाखों की क़ीमत का नहीं है ? देखिए—

तू रहु हौं ही सखि चलौं चढ़ु न अटा बलि बाल,
सबही बिनुहीं ससि उदै दीहैं अरघ अकाल ।

कहीं ऐसे पदों में समालोचक महोदय न्यूनपद दूषण खोजने लगें तब तो न्यून पदों का तांता ही बँध जाय ।

अतः मेरी तुच्छ सम्मति में न तो पहले ही अर्थ में अर्थात् लंक के पक्ष में प्रतिपद की न्यूनता ठीक सिद्ध होती है और न दूसरे अर्थ में अर्थात् मुख के पक्ष में मुख का लोप न्यून पद दूषण को सिद्ध करता है ।

चौथा उदाहरण है—

"छठी छत्रपतिन को जीत्यो भाग अनायास जीत्यो नामकरन मैं करन प्रवाह को।"

समालोचक महोदय का आशय है कि "करन प्रवाह को" का अर्थ (दानवीर होने का) ठीक नहीं बैठता है । "करन के दान के प्रवाह को" रहने से सम्पूर्ण अर्थ का निर्वाह हो जाता है । सो "के दान के" इतने पद न्यून होने से इसमें न्यून पद दूषण स्पष्ट है ।"

ठीक है, पर महोदय; हमारी राय में करन उन सामान्य दानियों में से एक नहीं हैं जिन्हें दानी करन लिखा जाय तभी उनके दान का गुण स्पष्ट हो; हरिश्चन्द्र उन सत्यवादियों में से नहीं हैं जिन्हें लोग सत्यवादी हरिश्चन्द्र लिखें तभी उनकी सत्यवादिता का गुण स्पष्ट हो । कर्णमात्र कहने से ही दानवीर कर्ण का और हरिश्चन्द्र मात्र कहने से सत्यवादी हरिश्चन्द्र का बोध हो जाता है । कर्ण के नामोच्चार से अलौकिक दानवीरता और हरिश्चन्द्र के नामोच्चार से अलौकिक सत्यवादिता का चित्र आप ही आप पाठक के सामने खिंच जाता है । करन का नाम ही काफ़ी है; उनका नाम उनके गुण (दानवीरता) के उल्लेख की अपेक्षा नहीं रखता । "करन-प्रवाह" स्वयम् ही करन के दान प्रवाह का मतलब अदा कर देता है । करन का प्रवाह करन के दान का प्रवाह ही समझा जायेगा । अतएव उपर्युक्त पद में "के दान के" पदों की न्यूनता नहीं है; यदि "के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान के" को ठूंसा जाता तो मेरी तुच्छ सम्मति में ये पद अधिक नहीं तो अनावश्यक अवश्य होते।

यतिभंग, पुनरुक्ति, अधिकपदत्व और न्यूनपदत्व के बाद समालोचक महोदय ने ग्राम्य दोष का बखान किया है। इसके लिए भी तीन उदाहरण दिये गये हैं।

१—"तू सब को प्रतिपालनहार विचारे भतारु न मारु हमारे।" कहा गया है भतारु शब्द घोर ग्राम्य है। साधुभाषा में इस का प्रयोग नहीं होता है। ··· फिर एक यवनी के मुख से भतारु शब्द का कहलवाना तो प्रायः सभी प्रकार से अनुचित है।

हमारी राय में जिस भाषा में यह कवित्त लिखा गया है उसी भाषा का भतारु शब्द है। यदि कवित्त भाषा साधु है तो भतारु भी साधु शब्द है, यदि कवित्त की भाषा असाधु (ग्राम्य) है तो भतारु भी घोर ग्राम्य ही होगा। बल्कि हम तो यहां तक कहेंगे कि भूषण की सारी रचना जिस भाषा में है भतारु शब्द कदापि उससे बाहर का नहीं है। पूर्वीय ज़िलों में आम तौर से पति के स्थान पर भतार का प्रयोग होता है। अत्यन्त साधुभाषा शुद्ध संस्कृत "भर्त्तार" का अपभ्रंश होने से यों भी भतार घोर ग्राम्य नहीं कहा जा सकता। अपभ्रंश भी कुछ बहुत बड़ा अपभ्रंश नहीं है। ख़ाली ऊपर की रेफ़ (आधा 'र') ही उड़ गई है। समालोचक महोदय की दूसरी दलील और भी मज़े की है। उन्हें यवनियों के मुख से भतारु का प्रयोग करवाना और ज़्यादा खटक गया है। शायद उनकी राय में शौहर या ख़ाविन्द ही ज़्यादा मौजूं होता। हम भी यही कहेंगे कि यवनी के मुख से शौहर या ख़ाविन्द ही ज़्यादा मौज़ूं होता; पर तब जब भूषण जी काव्य नहीं बल्कि नाटक लिखने बैठे होते। इस दलील से तो रामायण के रचयिता आदिकवि बाल्मीकि भी दोषी हैं जिन्होंने देव और दैत्यों की सारी कथा एक ही भाषा में लिख डाली; और रावणादि के मुख से देववाणी का प्रयोग करवाया। इस दोष के लिए यदि वे क्षम्य हैं तो केवल इसी एक दलील पर कि उनकी रामायण काव्य है, नाटक नहीं। और इसी दलील पर समालोचक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोदय चाहें तो भूषण जी को भी क्षमा कर सकते हैं। नहीं तो यही प्रयोग क्या, उनके सारे के सारे प्रयोग ग़लत ठहरेंगे, क्यों उन्होंने शिवाजी तथा उनके सरदारों से जो बातें कहलाई हैं वे भी सर्वत्र प्रायः उस भाषा में न कही गई होंगी जिसे उन्होंने अपनी रचना में प्रयुक्त किया है। यथा पात्र तथा भाषा का विचार नाटक ही में होता है काव्य में नहीं। काव्य तो प्रायः एक ही भाषा में लिखे जाते हैं। भूषण की रचना भी काव्य है, और उसमें सब पात्रों की बात एक ही भाषा में प्रकट की गई है। और इसलिए "भतार" शब्द के प्रयोग में यदि कोई दोष है तो जितना यवनी के मुख से कहलवाने में हुआ उतना ही किसी हिन्दू रानी के मुख से कहलवाने में होता यद्यपि हम "भतार" शब्द में पहला ग्राम्य दोष भी नहीं मानते।

(२) झंझा सी दिन कि भई संझा सी सकल दिसि गगन लगन रही गरद छवाय है।

समालोचक महोदय ने कहा है—'झंझा' शब्द का प्रयोग ग्रामीण लोग करते हैं। हम कहते हैं—संझा का भी यही हाल है। शहरवाले कौन 'संझा' बोलने जाते हैं। ग्रामीण ही झंझा बोलते हैं, ग्रामीण ही संझा। ग्राम्य दोष है, तो दोनों में। हमारी समझ में दोनों बोलचाल की भाषा के शब्द हैं। दोनों के अनुप्रास के कारण पद में एक विचित्र सुन्दरता आगई है; जिस पर, 'झंझा' को अनुचित प्रयोग बतलाकर, पर्दा डालने की व्यर्थ चेष्टा की गई है।

(३) भूषन भनत पति बाहँ बहियाँ न तेऊ छहियाँ छबीली ताकि रहियाँ रुखन की।

यहां भी वही हाल है। बहियाँ, छहियाँ और रहियाँ का अनुप्रास ही पद के सौन्दर्य की जान है। समालोचक महोदय ने इनमें से 'बहियाँ' में ग्राम्य दोष बताया है। अवश्य ही "बहियाँ" का प्रयोग पृथक् होने के अर्थ में है। पर वह ग्राम्य कैसे है। अधिक दिन तक प्रयाग नगर के निवास से मेरा अनुभव है कि वहाँ बहाने का प्रयोग फेंकने, पृथक् करने, के अर्थ में होता है। कूड़े को बहाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूड़ा को फेंकने के मानी में इस्तैमाल होता है। इतना हम मानेंगे कि अनुप्रास के लोभ से भूषण जी ने शब्द को ज़रा कुछ अनुचित रीति से तोड़ मरोड़ दिया है; पर ग्राम्य दोष का तो उसमें लेश भी नहीं है। घरू बोलचाल में अच्छे अच्छे पढ़े लिखों को मैंने इसका प्रयोग करते सुना है। हां, वह स्थानिक है, पूर्वीय ज़िलों को छोड़ अन्यत्र शायद बहाने का प्रयोग पृथक् करने के अर्थ में नहीं होता। सो स्थानिकपने का दोष उस भाषा के प्रायः सभी काव्यों में मिलता है जिसमें भूषण की रचना है।

आगे चलकर समालोचक महोदय ने भूषण जी के कुछ विविध दोष तथा अलंकार-दोष दिखाये हैं। यथावकाश उनके सम्बन्ध में फिर कभी लिखेंगे। सम्प्रति इत्यलम्।

विश्व-साहित्य में एशिया का महत्व

[ले०—श्रीयुत दीनदयालु श्रीवास्तव, बी. ए.]

आजकल यूरोप के साहित्य में एशिया के आदर्शों और जीवन-उद्देश्यों की अच्छी चर्चा हो रही है, विशेष कर जर्मनी इस ओर बहुत आकृष्ट हुआ है। एक जर्मन विद्वान् ने अभी हाल में एक लेख लिखा है, जिसका शीर्षक है–'एशिया गुरु के रूप में'। उसमें वे लिखते हैं—

यूरोपीय महासमर से यूरोप के लोगों में शान्ति की इच्छा अधिक प्रबल होती जाती है, अब केवल राजनैतिक शांति से तृप्ति न होगी, उनको आन्तरिक आध्यात्मिक शान्ति की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। यह नयी मानसिक-स्थिति इस बात का प्रमाण है कि उन लोगों को वादविवाद से अरुचि और बल-प्रयोग से घृणा हो चली है। पश्चिमीय संसार इस समय थका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँदा है, किन्तु उसको जीवन से प्रेम है, केवल कलह और ईर्षाद्वेष से घृणा हो रही है। वास्तव में पश्चिमीय समाज-व्यवस्था और सभ्यता अपूर्ण सिद्ध हुई है, उससे मानवी आकाँक्षाओं की तृप्ति नहीं होती। इस दुर्घटना के पहले ही इस कमी के चिह्न दिखाई देने लगे थे। तो भी यह संतोष का विषय है कि इसका परिणाम उदासीनता और प्रमाद नहीं हुआ है, वरन् इससे एक नयी बैचेनी और नई नई इच्छाओं का प्रादुर्भाव हुआ है। 'अँधकार के उस पार उनको प्रकाश की झलक दिखाई दे रही है।' अब लोग अपने आत्मा के विस्तीर्ण क्षेत्र की खोज करने बैठे हैं जिसको यूरोप ने अभी तक छुआ भी नहीं था। अतएव साधारण यूरोपियन को यह क्षेत्र एकदम नया मालूम होता है। यूरोप की दृष्टि अज्ञातरूप से एशिया की ओर फिरी है, इसलिए उसमें सच्चाई है। उनका अनुभव है कि एशिया हमको अपनी ओर खींच रहा है, हमको यह आशा बंधा रहा है कि वहां पर हमको कोई ऐसी नयी चीज़ मिलेगी जो हमको पूर्ण स्वतंत्र कर देगी। हमारे हृदयों में प्राचीन पूर्वीय सभ्यता की नम्रता, विचारशीलता और कोमलता के लिए प्रेम उत्पन्न हुआ है। हम लोग सहज ही इस सभ्यता का अध्ययन कर सकते हैं, क्योंकि इस में किसी प्रकार के घरेलू झगड़ों के उत्पन्न होने की सम्भावना भी नहीं है। आज जर्मनी को मुक्ति का संदेश बड़ा भला मालूम होता है। पूर्वीय शान्तिमय शिक्षाएँ, भारतवासियों और चीननिवासियों की सामाजिक-व्यवस्था, घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्ध, जातिबन्धन, जाति का सामान्य-व्यवसाय, अपनी सभ्यता का प्रबल संघटन, शान्तिपूर्ण घरेलू इतिहास, अपने स्वराज्य का दीर्घकालिक अनुभव, बौद्ध धर्म की शिक्षाएं—यह सब ऐसी बातें हैं जो कि नागरिक को अपने आदर्श तक पहुँचाने में बहुत सहायक हो सकती हैं। जर्मनी का इस ओर इतना अधिक अनुराग हो गया है कि उसमें धर्मप्राण रूस के प्रति भी सहानुभूति उमड़ रही है, यह रूस नहीं जैसा विकृत और हिंसक रूप उसने इस समय धारण कर रखा है, वरन् उस रूस के प्रति जो उन लेखकों और कवियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्माओं से परिपूर्ण हैं जिन्होंने रूसी को यूरोप भर में सब से अधिक मधुर स्वभाव वाला चित्रित किया है।

यह भी सच है कि कुछ ऐसे संकुचित विचार वाले कट्टर लोग जर्मनी में हैं जो कि एशिया के आध्यात्मिक प्रभाव को भयानक रोग समझते हैं और कहते हैं कि इससे हमारा विनाश काल और भी निकट आ रहा है। कुछ भी हो, इन दूर देशों से हमें नवजीवन के लिए स्फूर्ति मिल सकती है, और एशिया से इस बात की शिक्षा अवश्य मिलेगी कि जो बात अटल है—जो किसी प्रकार टल नहीं सकती—उसको धैर्य पूर्वक कैसे सहन करना चाहिए, क्योंकि हमें इस समय अनेकों अनिवार्य दुःखों का सामना करना पड़ रहा है और भविष्य में भी करना पड़ेगा। एशिया के आदर्शों से हमें प्रमाद का नहीं वरन् स्फूर्ति का पाठ पढ़ना चाहिए, विनाश की नहीं वरन् पुनर्जीवन की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

यद्यपि अब हमारा एशिया-सम्बन्धी ज्ञान केवल पुस्तकों पर ही निर्भर नहीं है तो भी दोनों देशों का साहित्य ही दोनों देशों के बीच की खाई का पुल बाँधने में समर्थ हो सकता है।

लेफकेडिओ हर्न का स्थान जिन्होंने कुछ ही वर्ष पहले जापान-सम्बन्धी पुस्तकें लिखकर यूरोपियों के दृष्टिकोण पर एक नया प्रकाश डालना प्रारम्भ किया था, अब रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ग्रहण किया है। मान लीजिए इन लोगों की भी कुछ विशेष व्यक्तिगत धारणाएँ हुआ करती हैं किन्तु जिस योग्यता और यथार्थता के साथ इन लोगों ने दोनों महाद्वीपों की सभ्यता का चित्र खींचा है, उसमें कोई संदेह नहीं रह जाता। अन्य बातों के साथ साथ इनकी रचनाओं में पूर्व की नम्रता और कोमलता की कमी नहीं है जो कि एशिया का विशेष गुण है, इससे हमारे मस्तिष्क को शान्ति अवश्य मिलती है। सुन्दर कलाओं के क्षेत्र में भी इधर कई वर्षों से एशिया के महत्व की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। गत शताब्दी के अन्त में जापान ने ऐसा राजनैतिक पद प्राप्त कर लिया है जिससे वह पश्चिमीय सभ्यता के अन्तर्गत गिना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी हाल में भारतवर्ष भी शिल्प-विशारदों का केन्द्र बन रहा है, भारतीय-भवन-निर्माण कला और मूर्ति-निर्माण-कला हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित कर रही हैं।

हमारे तत्वदर्शन और कला दोनों में ही एक प्रकार की पूर्वीयता दृष्टिगोचर होने लगी है। एक शताब्दी तक–विशेष कर सोपेनहावर के द्वारा पश्चिमीय तत्वदर्शन पर भारतीय दर्शन का प्रभाव पड़ता रहा और अभी हाल में भारतीय दर्शन के इतिहास का अनुसन्धान करके डायसन ने भी बहुत प्रभाव डाला है। भारतवासियों ने अपने धार्मिक और दार्शनिक सिद्धान्तों द्वारा मानवजीवन का एक ऐसा स्थायी आदर्श निर्धारित किया है जो केवल भारतवर्ष में सीमा-बद्ध नहीं है, उसके ज्ञान और अनुभव के लिए भारतवर्ष के ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता नहीं। प्रत्येक देश में, प्रत्येक समय में, इन दार्शनिक सिद्धान्तों के अनुयायी हुआ करते हैं, हरेक व्यक्ति इनका अधिकारी नहीं होता, किन्तु विशेष स्वभाववालों को ही यह रुचि-कर हुआ करता है। मनुष्य की या समाज की एक विशेष मानसिक परिस्थिति में इनके प्रति अनुराग होता है। और आज पश्चिमीय संसार में इसी मानसिक-स्थिति के अनुकूल हवा चल रही है, विशेष कर जर्मनी में। केवल संसार के झँझटों से हैरान होकर और जीवन की दुर्घटनाओं से दुःखी होकर यूरोपीय जनता का ध्यान एशिया की शिक्षा और आदर्श की ओर इतनी दृढ़ता से नहीं खिंच रहा है वरन् अब जनता आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लालायित हो उठी है।

एक प्रसिद्ध विद्वान की राय है कि कृत्रिम विभागों से विभिन्नता उत्पन्न होती है, और विभिन्नता से संदेह, वैमनस्य और घृणा का संचार होता है और यदि घृणा भाव का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाय तो वह केवल समझ की कमी या भूल का रूपान्तर मात्र होती है। सम्भव है इस व्यापक सिद्धान्त के बनाने में कुछ जल्दी की गई हो क्योंकि कुछ ऐसी प्राकृतिक विभिन्नताएं भी हैं जिनको दूर करना कठिन है। किन्तु उसका यह विचार बहुत ठीक है कि हम सब भाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई हैं और हमारी विभिन्नताओं की तह में एक मौलिक एकता विद्यमान है, हमको घृणा के जीतने के लिए इसी एकता का अनुभव करना चाहिए। इसी एकता की खोज का नाम सार्वभौमिकता है। उसका ऐसा विश्वास है, कि उपर्युक्त मानसिक-स्थिति में पहुंचने के लिए मनुष्य का व्यक्तित्व ही सब से बड़ा बाधक है, यूरोप ने बुद्धि को आन्तरिक प्रेरणा से उच्चतर स्थान दिया है, बुद्धि का काम वस्तुओं का विश्लेषण करना और उनको अलग अलग पहचानना है, इसके विपरीत प्रेरणा या अज्ञेयवाद ज्ञाता और ज्ञान को एक जगह लाकर उनका एकीकरण कर देता है। अपने समय की स्थिति का प्रभाव हमारे सिद्धान्तों पर बहुत अधिक पड़ा करता है, यूरोपीय दर्शन का परिणाम यह हुआ कि हरेक हरेक के विरुद्ध खड़ा हो जाय, जिसकी चरम सीमा गत यूरोपीय महायुद्ध में हुई है। एशिया इस असम्भव स्थिति में से निकालने का मार्ग जानता है जिससे परस्पर प्रेम भाव और शान्ति की स्थापना हो सकती है। उसकी राय में हमारे समय की सब से बड़ी आवश्यकता यह है कि एशिया और यूरोप के कर्त्तव्यशास्त्र का गवेषणापूर्ण अध्ययन किया जाय। यूरोप की आत्मा चैतन्य, व्यक्तिगत, और बुद्धिसम्पन्न है, क्योंकि यह वह आत्मा है जो शक्ति की पिपासा से अधीर है। वह प्रकृति को नये विज्ञान और आविष्कारों से जीत करके अपनी चेरी बनाना चाहता है। उसका विश्वास मशीनों और संघटनों में फँसा हुआ है, उसकी इच्छा है शासक बनने की, सरदार बनने की, शक्तिशाली बनने की, विजयी होने की, उसके आदर्श हैं सिकन्दर, सीजर, नेपोलियन, विस्मार्क या एडीसन सरीखे शिल्प और व्यवसाय के कोई प्रसिद्ध नायक। इतिहास के अनुचित अध्ययन ने भी इस आदर्श स्थापन में बहुत कुछ सहायता की है। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि पश्चिम में भी दार्शनिक और आप्त महान पुरुष हो गए हैं, किन्तु यूरोप ने उनमें से सब से बड़े महापुरुषों, जैसे लिओनार्डो, विन्सी या गेटी के सामने ही सिर झुकाने की क्षमता दिखाई है। यह दार्शनिक वास्तव में अब भी पश्चिमीय संसार के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरिचित व्यक्ति हैं क्योंकि उसकी राय में उनका हृदय सार्वभौमिक था, अतः वे मनुष्य नहीं वरन् देवता थे। संभव है यह मत भी एकांगी हो, किन्तु इसमें बहुत कुछ सच्चाई है, यदि किसी साधारण यूरोपियन के हृदय का अध्ययन किया जाय तो उसकी ऐसी ही स्थिति पायी जायगी। इसके विपरीत एशिया का आदर्श शान्ति, सार्वभौमिकता और प्रेरणा है। एशिया ने, प्रकृति के साथ जो हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध है, उसका अनुभव किया है, पशु पक्षियों और फूल-पत्तियों के साथ भी उसका भाईचारा है। वह उनको अपने अधीन नहीं करना चाहता किन्तु समस्त प्राणियों के साथ आध्यात्मिक मैत्री स्थापित करना चाहता है, वह अपने आप को प्रकृति के साथ एकरूप कर देना चाहता है। ठीक ऐसी ही धारणा उस यूरोपियन की होती है जिसको प्रकृति का पूर्ण ज्ञान है, किन्तु इन दोनों की दृढ़ता में बड़ा अन्तर है, एशिया ने इस भाव को बहुत दृढ़ और परिष्कृत कर लिया है। जब मनुष्य की ब्रह्माण्ड के साथ पूर्ण एकता हो जाती है तो उसको निर्वाण की दशा में अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होता है, इसीलिए भारतीय ऋषि कहते हैं जो तुमको प्रकृति से पृथक् किए हुए हैं उसका समूल नाश कर दो। यह 'मैं' ही सब दुःखों और रोगों की जड़ है, इस 'मैं' को उड़ा दो। यूरोपियन भी इसको समझता है, वह अहंकार से सर्वथा परिपूर्ण नहीं होता वरन् उसमें भी और मनुष्यों की भाँति परोपकारिक वृतियां होती हैं। यूरोप भी जानता है कि त्याग के द्वारा स्वतंत्रता मिलती है किन्तु एशिया की अपेक्षा उसका अनुभव बहुत कम है।

लेखक को यह आशा है कि अन्त में यूरोप को भी पूर्वीय सार्वभौमिकता का सिद्धान्त प्रिय होगा। दोनों देशों के दर्शनों के सम्मिलित अध्ययन से मनुष्य समाज को अपने आदर्श तक पहुंचने में बहुत सहायता मिल सकती है, यहां तक उसका विश्वास है कि वर्तमान रूस में भी जहां पर अव्यवस्था, अस्थिरता, और मारकाट मँची हुई है, अन्त में पूर्वीय आदर्शों की स्थापना होगी, और इस प्रकार सारे यूरोप में एक उन्नत और विशाल हृदय समाज की स्था-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पना हो जायगी, जिसका पूर्व के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होगा। संभव है बहुत से लोग इस अनुमान से बिल्कुल ही सहमत न हों। हम यह नहीं कहते कि यूरोप को एशिया की शरण लेनी चाहिए, हरेक बात में अपना गुरु बनाना चाहिए किन्तु उसके सिद्धान्तों को मनन करके यूरोप बहुत कुछ लाभ उठा सकता है। हम यह नहीं चाहते, यदि यह सम्भव भी हो कि पूर्व और पश्चिम में कोई भेद ही न रहे, इस प्रकार की एकरूपता मृत्यु की द्योतक हो सकती है। जीवन का अर्थ है संग्राम, निरन्तर घात प्रतिघात। इसलिए यूरोपीय सामरिक आनन्द को सुधारने के लिए जो उसके जीवन का ध्येय बन रहा है, पूर्व के शान्तिमय आदर्श की अत्यन्त आवश्यकता है। हौब्स के उस सामाजिक विचार को समूल नष्ट करने के लिए जहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को खाने के लिए भेड़िए का रूप धारण किए रहता है, पूर्वीय सार्वभौमिक आदर्श प्रबल अस्त्र है। डारविन के उस सिद्धान्त का खोखलापन भी इस आदर्श से स्पष्ट दिख जाता है, जो यह सिखलाता है कि सभ्यता भी केवल व्यवस्थित लड़ाई का नाम है, उसमें सदैव योग्यतम व्यक्ति के लिए ही स्थान रहता है या नीट्जे ने जिस प्रकार इस युद्ध को दिव्य और गौरवान्वित बनाने की चेष्टा की है, इस आदर्श से उसकी प्रतिष्ठा भी भंग हो जाती है।

दैनिक जीवन में कला का स्थान

एक शब्द ऐसा है जिसका महत्व 'धर्म' शब्द के बराबर ही होना चाहिये था किन्तु जिसका आज कल भीषण दुरुपयोग हो रहा है, वह है कला। शायद इस शब्द के उच्चारण से बहुतों के मस्तिष्क में केवल किसी चित्र या मूर्त्ति ही कल्पना होती हो, किन्तु यदि आपको बिहारी, रवीन्द्र या रस्किन आदि से कुछ प्रेम है तो आपको इस शब्द का यथार्थ अभिप्राय अवश्य ज्ञात हुआ होगा। सम्प्रति हमारे जीवन में कला एक ऐसी फिजूल सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तु समझी जाती है कि जो हो तो अच्छा और न हो तो अच्छा। किन्तु यह हमारे दैनिक व्यावहारिक जीवन से पृथक कोई बाहरी वस्तु नहीं है, वरन् उसका एक आवश्यक अंग है। अपने हार्दिक भावों और उद्गारों को व्यक्त करने के सब से सच्चे और सबसे अच्छे ढंग का नाम ही कला है, कुछ वस्तुएं हमको ईश्वर की ओर, शान्ति, सामञ्जस्य, और आत्मिक तृप्ति की ओर ले जाती हैं, उनके इस गुण को ही हम कला कहते हैं।

एक प्रसिद्ध चित्रकार ने एक बार कहा था; जो कुछ भी मैंने सीखा है, जितने भी चित्र मैंने खींचें हैं, वे सब तब तक मुझे व्याधि-रूप ही मालूम होते रहे, जब तक मैंने अपने जीवन में कला का सम्मिश्रण नहीं कर लिया, फिर नैसर्गिक नियमों का जैसा अर्थ मेरी समझ में आया था, वह जो कुछ मैं उस समय करता था, या कहता था, यहां तक कि मेरे कपड़ों से, मेरे घर की चहारदीवारी से स्पष्ट व्यक्त होने लगा। जिन लोगों ने इस रस का आस्वादन किया है कि हमारा घर ही जीवनकला अर्थात् हमारी अच्छाई या बुराई के व्यक्त होने का सबसे उपयुक्त स्थान है, और यहीं से कला का श्रीगणेश होना चाहिये, उन लोगों का अनुभव है कि जो आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है वही मनुष्य और उसके आसपड़ोस का सम्बन्ध है, जिस प्रकार आत्मा का शरीर पर और शरीर का आत्मा पर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार मनुष्य का अपने आसपड़ोस पर और आसपड़ोस का मनुष्य पर प्रभाव बराबर पड़ा करता है। जिस प्रकार आत्मा और शरीर जब दोनों ही सुन्दर हों तभी सोने में सुगंध कही जा सकती है उसी प्रकार मनुष्य से और उसके आसपड़ोस से सुन्दरता प्रकट होनी चाहिये। यदि हमारे घर में कर्कश शब्द होते रहते हैं, चारों ओर दुर्गंध उड़ती रहती है, अनमेल रंग छाये रहते हैं, सारा सामान उलट पुलट पड़ा हुआ है, सम्भव है तोभी हम को इस परिस्थिति का कुप्रभाव स्पर्श न करे, किन्तु उसके अस्तित्व को हम कदापि अस्वीकार नहीं कर सकते और अन्त में अज्ञान, उदासीनता और कुरुचि ही इसका परिणाम होगा। और यदि हम ऐसे व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के घर पर पहुंचे जिसकी बोली मधुर और सुरीली हो, जिसके कपड़े पहनने का ढङ्ग भी उसका निजी हो, किसी की नकल करके भद्दी तरह से अपने ऊपर कपड़े न लाद लिए हों, घर की हरेक वस्तु अपने अपने स्थान पर रखी हुई हो, तो उसका हमारे ऊपर क्या प्रभाव पड़ेगा; हमारा हृदय स्वतः शान्त हो जायगा। वास्तव में हमारे घरेलू जीवन में ही कला का निदर्शन होना चाहिये क्योंकि घर ही, चाहे अच्छा हो या बुरा, समाज का आधार है।

कहां तो कला प्रत्येक मनुष्य के घरेलू जीवन में उसका अभिन्न साथी होना चाहिये था और कहां आजकल कला केवल उन इने-गिने धनवानों का खिलौना हो रही है जो मनमानी तौर से रुपया व्यय कर सकते हैं। वास्तव में जब से हमारे जीवनक्षेत्र में मशीनों का प्रवेश हुआ है, तबसे हमारी घरेलू शिल्पविद्या और घर के सामान का रूप एकदम बदल गया है, उसमें अब किसी मानुषिक या व्यक्तित्वपोषक वस्तु के लिए स्थान नहीं रह गया है। हम चाहें या न चाहें, हमको एक ही फैक्टरी से निकली हुई वस्तुएं मोल लेनी पड़ती है, जो हमारे पास है, ठीक वैसे ही दूसरे के पास है। पहले जब ताक पर रखी हुई किसी कारीगरी की वस्तु को छूने से हमारे हृदय में जो भाव उदय होते थे उनका प्रत्युत्तर उसके निर्माता शिल्पकार की ओर से मिलता था, तो हमको विशेष आनन्द प्राप्त होता था। यह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी कि जब तक फिर से कला में व्यक्तिगत रचना को स्थान नहीं दिया जाता, तब तक किसी प्रकार शिल्पकला का पुनरुद्धार और उन्नति नहीं हो सकती। घर से चित्रकार का बहिष्कार करके हमने चित्रालयों की स्थापना की है, किन्तु क्या यह अधिक आनन्ददायक सिद्ध हुए हैं। क्योंकि सच पूछो, तो यह वर्तमान चित्रालय हमारे भाण्डारग्रह हैं, जहां पर हम उन सब चित्रों को एकत्रित कर देते हैं जिनको हम और कहीं नहीं रखना चाहते या नहीं रख सकते। आज कल ऐसे ही चित्रालयों को सजाने के लिए चित्रकारों को परिश्रम करना पड़ता है। कैसा अंधेर है। कभी कभी यह आशा होती है कि सम्भव है अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन शक्तियों और उमंगों का दुरुपयोग करते करते, जिनसे हमारा जीवन बहुत कुछ आनन्दमय बन सकता है, जब हम बिलकुल थक जायँगे तो शायद इस असम्भव परिस्थिति को सुधारने का कोई मार्ग निकल आवे और तभी इस समस्या को हल करने पर जोर दिया जावे।

अब प्रश्न यह है कि इस मशीन युग में किस प्रकार फिर से शिल्पकला या मनुष्य की स्वाभाविक रचने की इच्छा का आर्थिक प्रतिशोध करने का विधान हो सकता है ? यह कैसे निर्धारित किया जा सकता है कि मशीनों द्वारा कौन कौन सी चीजें बनायी जायँ और कौन कौन सी न बनायी जायँ; ताकि उनका क्षेत्र व्यक्तिगत रचना के लिए खाली रहे। यह केवल चित्रकला की ही समस्या नहीं है, वरन् हरेक कला की यही दुर्दशा है, और जब तक यह हल नहीं होती, तब तक बड़ी अशान्ति रहेगी और तब तक किसी कला के उपकरणों की चर्चा करना या उसके विकास के इतिहास का अध्ययन करने का कोई विशेष मूल्य नहीं हो सकता। इससे शान्ति स्थापित नहीं हो सकती, क्योंकि यह अशान्ति का मूलकारण नहीं है। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि चित्रकार से हम क्या चाहते हैं, चित्रकार भी जानता है कि हमसे क्या चाहा जाता है परन्तु वर्त्तमान आर्थिक व्यवस्था के कारण वह ऐसा करने में सर्वथा असमर्थ है। आपके सामने हाथ में रंगों की डिबिया लिए हुए बच्चा बैठा है, वह स्वतः तरह तरह के खेल बना रहा है। कुछ गढ़न्त करने की प्रेरणा या इच्छा उसको इस कार्य के लिए प्रेरित कर रही है, उसकी इच्छा की पूर्ति होना चाहिए, उसकी पूर्ति के लिए किन मार्गों का अवलम्बन किया जा रहा है, उसको इससे अधिक प्रयोजन नहीं। यदि गढ़न्त की इच्छा तृप्त न हुई और उसके पहले ही आपने बच्चे के हाथ से डिबिया छीन ली तो बालक आपसे अवश्य क्रुद्ध होगा और स्वयं दुःखी होगा। चित्रकला इसी इच्छा का विकास मात्र है, यही क्या हरेक शिल्प कलाओं का यही इतिहास है जब कला की उमंग उठती है तो वह यह नहीं देखती कि मुझको प्रस्फुटित होने के लिए सर्वोत्तम सामग्री कौनसी है, वह चाहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस पद्धति का अनुसरण कर सकती है, और यदि उसके मार्ग में कोई बाधा न डाली जाय, एकान्त में उसका विकास होने दिया जाय, तो वह पद्धति स्वयं उसके हाथ से गौरवान्वित हो जायगी । आज चित्रकार हमसे क्या चाहता है ? एक ऐसा स्थान जहां से वह आपकी सेवा कर सके, ऐसा स्थान नहीं जैसा आजकल दिया गया है जिसका नियम ही यही है कि सदैव बुरे से बुरे या कम से कम श्रेणी का स्थान दिया जाय । उसको ऐसा स्थान मिलना चाहिए जहां पर वह आपके कुछ काम आए, जहां पर सौन्दर्य फिर से मानवजीवन पर प्रभाव डालने लगे, उसका कुछ आदर होने लगे—ऐसा स्थान जहां मनचाहा रूप और रंग अथवा आनन्द के साथ कहानी कहने की स्वतन्त्रता उसको मिल सके । चित्रकला जिन गुणों के लिए एक समय प्रसिद्ध थी, तभी फिर उनका प्रादुर्भाव होना सम्भव है ।

साहित्यावलोकन

[समालोचक के मत के लिये सम्मेलन उत्तरदायी नहीं है]

बलिदान—

अनुवादक—श्रीगणेश शंकर विद्यार्थी, प्रकाशक, प्रताप पुस्तकालय कानपुर, मूल्य १॥।)

यह फ्रांस के प्रसिद्ध लेखक विकृर ह्यूगो के एक उपन्यास का सारांश है । वेकन की राय है कि सभी पुस्तकों का सार-संकलन पढ़ने योग्य नहीं होता, कभी कभी ऐसा भी होता है कि पुस्तक का सार निकालते निकालते सारभाग तो हाथों से निकल जाता है और निःसार भाग ही हाथ लगता है । इस पुस्तक के सम्बन्ध में विचारणीय यह है कि विद्यार्थी जी ने विकृरह्यूगो के मूल उपन्यास का कितना सार भाग प्रस्तुत ग्रन्थ में रखा है । लेखक का कथन है कि उन्होंने पन्ने के पन्ने और अध्याय के अध्याय उड़ा दिये हैं, परन्तु उनके उड़ा देने से मूल कहानी में कोई कसर नहीं पड़ी, इसीलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें कोई अफसोस भी नहीं, इसका निर्णय करने का अधिकार उन्हीं को है जो विक्टर ह्यूगो की कला के विशेषज्ञ हैं, जो यह बात समझ सकते हैं कि ह्यूगो ने अपने ग्रन्थ में अनावश्यक परिच्छेद लिखे हैं अथवा नहीं, हमें केवल इतना ही कहने का अधिकार है कि विद्यार्थी जी के ग्रन्थ में कथा-भाग विकृत नहीं हुआ है, ह्यूगो के सम्बन्ध में यह बात अवश्य कही जाती है कि उनकी कृति में कला का उत्कृष्ट निदर्शन है, अतएव हम नहीं समझते कि यदि उनके उपन्यास का ज्यों का त्यों अनुवाद किया जाता तो वह हिन्दी पाठकों के मतलब का क्यों न होता। फिर भी यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थी जी ने जो कुछ लिखा है, वह अच्छा ही लिखा है। फ्रेंच भाषा में तो ह्यूगो की विशेषता लक्षित होती होगी, परन्तु हिन्दी में विद्यार्थी जी की ही विशेषता है। विद्यार्थी जी ने यह तो लिखा नहीं है कि उन्होंने मूल फ्रेंच से इसका अनुवाद किया है अथवा अन्य किसी भाषा से, परन्तु उनके कथन से यह प्रतीत होता है कि उन्होंने मूल पुस्तक का अच्छी तरह अध्ययन किया है। अतएव हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि मूल पुस्तक और इस छाया में बहुत अन्तर होगा।

बलिदान में प्रेम की कथा वर्णित नहीं है, जो उपन्यास प्रेमी नायक नायिकाओं की प्रेम-लीला में ही उपन्यास की इतिश्री समझते हैं, उनके लिए कदाचित यह उपन्यास रोचक न हो। बलिदान में जिस समय की बातों का उल्लेख हुआ है, वह समय केवल फ्रांस ही के लिए नहीं, किन्तु संसार के लिए अत्यन्त महत्व का है।

इस उपन्यास में फ्रान्स की राज्यक्रान्ति का दिग्दर्शन तो हुआ ही है, परन्तु इसके साथ ही मनुष्य जीवन के उत्थान पतन का भी प्रदर्शन हुआ है, एक ओर कर्त्तव्य की असिधारा है और दूसरी ओर मनुष्य की कोमल चित्तवृति है जिसके कारण बड़े बड़े महात्मा भी कर्त्तव्य-च्युत हो जाते हैं, इन दोनों विभिन्न भावों का द्वन्द्वयुद्ध इसमें बड़े कौशल से दिखलाया गया है और अन्त में कर्त्तव्य के पथ पर मनुष्य की श्रेष्ठ चित्तवृति का बलिदान दिखलाया गया है। हमें विश्वास है कि हिन्दी भाषा भाषी इस पुस्तक का उचित आदर करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्द मठ—

अनुवादक-श्री पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी कलकत्ता, मूल्य ॥।) यह स्वर्गीय वंकिमचन्द्र चटर्जी के बंग भाषा के सुप्रसिद्ध आनन्दमठ उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है।

'बलिदान' में मानवसमाज का एक चित्र अंकित किया गया है और आनन्दमठ में उसका दूसरा चित्र है। कौन चित्र अधिक मनो-मुग्धकर है, इसका निर्णय वही कर सकते हैं जो इन दोनों की एक साथ तुलना करके पढ़ेंगे। सिमोरडेन के चरित्र के साथ सत्यानन्द की तुलना की जा सकती है और गावैन के साथ जीवानन्द की। यद्यपि इन लोगों को भिन्न भिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। सिमोरडेन के सामने वह समस्या नहीं थी जो सत्यानन्द के सामने थी। परन्तु मनुष्यत्व की स्वाभाविक चितवृति और कर्त्तव्य बुद्धि का विरोध भाव दोनों के लिए समान भाव से विद्यमान था। कोमल चितवृति के अंकित करने में वंकिम बाबू सिद्धहस्त हैं, बलि-दान में 'शान्ति' के समान कोई स्त्री पात्र नहीं है और हमारी समझ में आनन्दमठ का सर्वस्व 'शान्ति' ही है, स्त्री की त्याग शक्ति में बलिदान का श्रेष्ठ निदर्शन है, यह बात हमें 'शान्ति' के चरित्र से मालूम होती है। आनन्द मठ के विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है।

महाराज नन्दकुमार को फाँसी—

अथवा तत्कालीन बंगाल की सामाजिक अवस्था, प्रकाशक—प्रताप पुस्तकालय कानपुर।

यह पुस्तक बंग भाषा के प्रसिद्ध उपन्यास लेखक बाबू चण्डी चरणसेन के उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। जिस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी बंगाल में अपने शासन की जड़ जमा रही थी, उस समय उसके कर्मचारियों ने बंगवासियों के प्रति—विशेषकर जुलाहों, सुनारों और किसानों के प्रति—जैसा कठोर और निर्दयपूर्ण व्यवहार किया है उसी हृदयविदारक कथा का चित्र औपन्यासिक ढंग से लेखक ने इस पुस्तक में खींचा है। इस अत्याचार के सम्बन्ध में स्वयं लार्ड मेकाले ने कहा है कि बंगनिवासियों के प्रति मुसल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानों के शासन-काल में भी ऐसा घोर अत्याचार नहीं हुआ था। थोड़े से अँग्रेज किस प्रकार बंगालियों पर ऐसा भीषण अत्याचार करने में समर्थ हुए, इसके कारणों का पता उस समय की सामाजिक अवस्था देखने स्पष्ट हो जाता है। उपन्यास पढ़ने से यह ज्ञात होता है, कि उस समय स्वार्थी, लम्पट, व्यभिचारी, कायर, लोलुप और विश्वासघाती मनुष्यों की कमी नहीं थी। इन्हीं लोगों की सहायता से कम्पनी ने जो अत्याचार किये हैं, उनका जीवित चित्र खींचने के लिए कई नायक और नायिकाओं की कल्पना की गई है, जिससे उपन्यास में बंग समाज की अवनतअवस्था का वर्णन आवश्यकता से अधिक हो गया है। यद्यपि उस समाज में वीरत्व, स्वाभिमान और स्वावलम्बन का घोर अभाव था किन्तु उस समय भी थोड़ी संख्या में आदर्शरूप भारतीय स्त्री और पुरुष विद्यमान थे, सावित्री सदृश पतिव्रता स्त्रियां और वापूदेव सदृश सहृदय और निस्वार्थी महात्मा उस समय भी थे किन्तु ऐसे जैसे आटे में नमक। उपन्यास प्रेमियों के लिए इसमें पाठ्य सामग्री का अभाव नहीं है।

स्वर्णदेश का उद्धार—

यह एक नाटक है, लेखक श्रीयुत इन्द्र वेदालङ्कार विद्यावाचस्पति जी हैं। अँग्रेजी में एक विद्वान का कथन है कि काल्पनिक साहित्य के लिए ज्ञान के प्रखर प्रकाश की आवश्यकता नहीं, यह भी देखा गया है कि जो बड़े विद्वान होते हैं वे केवल अपनी विद्वत्ता के बल से काल्पनिक साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इसके लेखक वेदालङ्कार और विद्यावाचस्पति हैं, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उनका यह नाटक वैसा नहीं बना जैसा चाहिये। नाटक और उपन्यास काल्पनिक साहित्य के अन्तर्गत है। इसकी न तो भाषा अच्छी है और न कथा भाग ही रोचक है। यत्रतत्र जो कविताएँ हैं, वे भी शिथिल हैं, यह सब होनेपर भी पुस्तक पढ़ने योग्य अवश्य है। इसमें एक राजनैतिक समस्या हल की गई है, आजकल देश की जो राजनैतिक अवस्था है, उसी का चित्र खींचा गया है, राष्ट्र के प्रेमी और स्वतंत्रता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपासक लेखक के आशय को अवश्य समझ लेंगे और इसी इच्छा से लेखक ने नाटक को लिखा भी है। मूल्य ॥=), श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, गुरुकुल कांगड़ी जिला विजनौर से प्राप्त।

धर्माञ्जलि—

यह धर्म और सदाचारनीति का ग्रन्थ है। लेखक हैं, विद्यावाचस्पति पं० रघुनाथप्रसाद शास्त्री। लेखक मुखपृष्ठ पर हिन्दी में एक बार अपने नाम और उपाधि की चर्चा करके अँग्रेजी में उसको पुनः दुहराने का लोभ संवरण नहीं कर सके हैं। हमारी समझ में तो यह सर्वथा अनावश्यक था। पुस्तक चार भागों में विभक्त है। इस में विद्यार्थियों के लिए हिन्दुधर्म की स्थूल बातें समझायी गई हैं, प्रश्नोत्तर के रूप में लिखे जाने के कारण पुस्तक की रोचकता अवश्य कुछ घट गई है पर बातें बड़ी सुगमता से समझ में आ जाती हैं। अतएव यह पुस्तक संग्रहणीय है।

स्थायी समिति का विवरण

द्वादशवर्षीय स्थायी समिति का पंचम साधारण अधिवेशन रविवार मिती माघ शुक्ल ४ संवत् ७९ तदनुसार २१ जनवरी २३ को १ बजे दिन से सम्मेलन-कार्यालय में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

१— श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, कलकत्ता
२—श्री पं० विशम्भरनाथ शर्मा कौशिक, कानपुर
३—श्री पं० रामप्रसाद मिश्र, कानपुर
४—श्री महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, रायबरेली
५—श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
६—श्री वियोगी हरि
७—श्री भगवती प्रसाद
८—श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
९—श्री प्रो० गोपालस्वरुप भार्गव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०—श्री पं० रामजीलाल शर्मा

११—श्री पं० लक्ष्मीनारायण नागर

१२—श्री प्रो० ब्रजराज

कार्यविवरण

नियमानुसार श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—गत अधिवेशन का कार्य-विवरण पढ़ा गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

२—नियमावली के नियम ४६ के अनुसार त्रयोदश सम्मेलन के सभापति के आसन के लिए अधिकांश सम्मति के अनुसार ५ सज्जनों के नामों की सूची बनायी गई।

३—निश्चित हुआ कि त्रयोदश सम्मेलन के अधिवेशन के लिए निम्नलिखित प्रस्तावित कार्यक्रम विषय निर्वाचिनी समिति के विचारार्थ स्वागतकारिणी समिति के पास भेजा जाय।

कानपुर सम्मेलन का प्रस्तावित कार्यक्रम

पहला दिन—कार्य १२ बजे दिन से ५ बजे तक

१—मंगलाचरण

२—स्वागतसमिति के अध्यक्ष की वक्तृता

३—मनोनीत सभापति का आसन ग्रहण करना

४—सभापति का भाषण

५—व्याख्यान

६—विषय निर्वाचिनी समिति का संगठन

सायङ्काल ७ बजे से विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक

दूसरा दिन—प्रातःकाल ७ बजे से १० बजे तक

१—प्रतिनिधियों का विशेष अधिवेशन

२—साहित्यिक चर्चा (जो सज्जन लेख लिखकर लावें उन्हें अपने लेख का सारांश भी लिख कर लाना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे पूर्ण लेख पढ़े बिना ही उसका तात्पर्य समझाया जा सके)

३—संगीत

मध्याह्नकाल १२ बजे से ५ बजे तक

१—मंगलाचरण
२—प्रस्ताव
३—स्थायी समिति का वार्षिक विवरण सं० ७८-७९
४—उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को उपाधि वितरण
५—लेख और व्याख्यान
६—सम्मेलन कोष के लिए अपील
७—कविता और गान

सायंकाल ७ बजे से विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक
प्रतिनिधि प्रीत भोज

तीसरा दिन—प्रातःकाल ७ बजे से १० बजे तक

(केवल प्रतिनिधि सम्मिलित हो सकेंगे)

१—स्थायी समिति का निर्वाचन
२—साहित्यिक चर्चा और संगीत

मध्याह्नकाल १२ बजे से कार्य प्रारम्भ होगा—

१—मंगलाचरण
२—लेख
३—प्रस्ताव
४—व्याख्यान
५—सम्मेलन के लिए धन याचना
६—आगामी वार्षिक अधिवेशन के लिए स्थान निश्चय
७—सभापति को धन्यवाद
८—सभापति का अन्तिम भाषण और विसर्जन

४—नियमावली के नियम १८ के अनुसार आगामी सम्मेलन में नियुक्त होने वाली स्थायी समिति के सभासद होने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी और साधारण सदस्यों के निम्नलिखित तीन प्रतिनिधि निर्वाचित किए गये ।

१—श्रीयुत पुत्तनलाल विद्यार्थी
२—श्रीयुत शिवप्रसाद गुप्त
३—श्रीयुत सेठ गोविन्द दास

५—'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' के प्रबन्ध के लिए 'पारितोषिक समिति' के बनाये हुए निम्नलिखित नियम सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए ।

श्री मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक के नियम

१—सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिवर्ष 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' दिया जायगा या पारितोषिक पाने वाले का नाम प्रकट कर दिया जायगा ।

२—प्रतिवर्ष स्थायी समिति द्वारा 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक समिति' का संगठन हुआ करेगा, इसमें कुल ५ सदस्य रहेंगे, जिसमें एक श्रीयुत गोकुलचन्द्र जी या उनके कोई प्रतिनिधि अवश्य होंगे। यही समिति नियमानुसार पारितोषिक का प्रबन्ध करेगी ।

३—यह 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्रतिवर्ष हिन्दी के किसी लेखक को उसकी किसी सर्वोत्तम मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा ।

४—पारितोषिक वितरण के लिए सम्पूर्ण विषयों के निम्नलिखित चार विभाग किये जायगें ।

(१) साहित्य (काव्य, उपन्यास, नाटक, कविता, समालोचना)
(२) दर्शन (धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, कर्त्तव्यशास्त्र, तर्कशास्त्र, अध्यात्मविद्या, मनोविज्ञान)
(३) विज्ञान (गणित, रसायन, भौतिकशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, कृषिविज्ञान आदि)
(४) इतिहास (पुरातत्वविज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों के सम्बन्ध में पारितोषिक समिति निश्चय करेगी कि कौन विषय किस विभाग के अन्तर्गत आना चाहिए।

५—क्रमानुसार साहित्य, दर्शन, विज्ञान और इतिहास विभाग पर प्रतिवर्ष पारितोषिक दिया जायगा।

नोट—इस वर्ष कानपुर सम्मेलन के अधिवेशन में 'साहित्य' विभाग पर पारितोषिक दिया जायगा।

६—पारितोषिक के लिए जीवित लेखकों की केवल उन्हीं पुस्तकों पर विचार किया जायगा जिनकी पारितोषिक समिति द्वारा निश्चित तिथि तक तीन तीन प्रतियाँ सम्मेलन-कर्यालय में आजायँगी। जिस लेखक को एक बार पारितोषिक मिल जायगा उसकी उसी विषय विभाग की किसी रचना पर फिर विचार न होगा।

नोट—इस वर्ष पुस्तक भेजने के अन्तिम तिथि माघ कृ० अमावस्या सं० ७६ तदनुसार १७ जनवरी सन् २३ नियत की गई है।

७—इस बात का निर्णय करने के लिए कि कौन लेखक इस पारितोषिक के अधिकारी हैं, तीन सज्जन चुने जायंगे जो निर्णायक कहलाएँगे।

८—पारितोषिक समिति को अधिकार होगा कि निश्चित तिथि के बाद भी १५ दिन तक विचारार्थ पुस्तकें उपस्थित कर सके।

९—जो पुस्तकें विचारार्थ कार्यालय में आयेंगी, उनकी पहुँच प्रेषक के पास भेजी जायगी।

१०—विचारार्थ आई हुई पुस्तकों का विषय विभाग पारितोषिक समिति के स्थानीय सदस्य करेंगे, उसकी सूचना बाहर के सदस्यों को भी दी जायगी। उनकी इच्छा पर पुनः विचार हो सकेगा, मत-भेद होने पर बहुमत से निर्णय होगा। पुस्तक आने की अन्तिम तिथि के बाद १० दिन के भीतर विषय विभाग हो जाना चाहिए।

११—विषय विभाग हो जाने पर उस वर्ष के विभाग की पूर्ण-सूची हरेक निर्णायक के पास भेज दी जायगी, साथ ही सुविधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नुसार निर्णायकों के पास पुस्तकें भेजने का भी प्रबन्ध किया जायगा। सूची मिलने पर निर्णायक उनको दो श्रेणियों में विभक्त करेंगे (१) प्रथम श्रेणी में वे पुस्तकें रहेंगी जिनको वह पारितोषिक के लिए विचारणीय समझते हैं और (२) द्वितीय श्रेणी में वे पुस्तकें रहेंगी जिनको वह पारितोषक के विचारयोग्य ही न समझते हों। किसी एक निर्णायक की सम्मति होने से पुस्तक प्रथम श्रेणी में रखी जा सकेगी और उस पर विचार होगा। हरेक निर्णायक की सूची आने पर विचारणीय अथवा प्रथम श्रेणी की पुस्तकों की एक पूर्ण सूची बन जावेगी, वह फिर हरेक निर्णायक के पास भेजी जायगी उस सूची में पुस्तकों के नाम के साथ साथ यह भी लिखा रहेगा कि किस निर्णायक ने उसको प्रथम श्रेणी में रखा है।

१२—द्वितीय श्रेणी की पुस्तकें कार्यालय में रहेंगी।

१३—प्रथम श्रेणी की पुस्तकें क्रमशः तीनों निर्णायकों के पास भेजी जायँगी। प्रत्येक निर्णायक अपनी सम्मति के अनुसार यथाक्रम तीन सर्व श्रेष्ठ ग्रन्थों पर (या पारितोषिक योग्य ग्रन्थों पर) विस्तृत आलोचनात्मक टिप्पणी लिख देंगे जिस से उन पुस्तकों का महत्व प्रकट हो जाय। इस के अनन्तर निर्णायक पुस्तकें कार्यालय में लौटा देंगे।

१४—पारितोषिक समिति निर्णायकों से पत्र व्यवहार करके और आवश्यकता होने पर उन्हें एक स्थान पर एकत्रित करके (नौ पुस्तकों में से) किसी एक पुस्तक को सर्व सम्मति से सर्व श्रेष्ठ और पारितोषिक के योग्य चुनवाने का उद्योग करेंगी। यदि किसी एक पुस्तक के विषय में तीनों निर्णायक एकमत हो गये तो उसी ग्रन्थ के लेखक पारितोषिक के अधिकारी होंगे। यदि दो निर्णायक किसी एक पुस्तक के विषय में एकमत हुए तो पारितोषिक समिति को अधिकार होगा कि वह उसी पुस्तक के लेखक को पारितोषिक दे या पुनः तीन निर्णायकों का निर्वाचन करके उनके निर्णयानुसार कार्य करे। और यदि इस वार भी सभी निर्णायक भिन्न भिन्न मत के हों तो समिति उस वर्ष किसी को पारितोषिक न दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) नियम १३ के अनुसार तीनों निर्णायकों द्वारा चुनी हुई सर्वोत्तम ६ पुस्तकों में से पारितोषिक वाली पुस्तक को छोड़ कर शेष ८ पुस्तकें आगामी चौथे वर्ष के पारितोषिक के समय प्रथम श्रेणी की पुस्तकों में सम्मिलित कर ली जायंगी।

६—निश्चित हुआ कि स्थायी समिति की ओर से सभापति श्री पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी जी को उनके उस उद्योग के लिए धन्यवाद दिया जाय जो कि उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से पत्र व्यवहार करके उस विश्वविद्यालय में श्रीयुत बाबू घनश्याम दास बिड़ला के दान से हिन्दी में एम० ए० की शिक्षा देने का शीघ्र ही प्रबन्ध कराने में किया है।

७—सभापति को धन्यवाद देने के अनन्तर आज का अधिवेशन समाप्त हुआ।

व्रजराज
एम. ए., बी. एस-सी., एल. एल. बी.
प्रधान मंत्री

संवत् १९७९ के परीक्षा फल का भूल संशोधन

निम्नलिखित परीक्षार्थी भी प्रथमा परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

क्रमसं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१०	कपिलदेव प्रसाद वर्मा	आरा	द्वितीय

निम्नलिखित परीक्षार्थी भी मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।

क्रम सं०	नाम	केन्द्र	श्रेणी
१५७	श्री ज्ञानदत्त मिश्र	प्रयाग	द्वितीय
२२२	,, भगवती चरण	लाहौर	प्रथम
७४	,, चन्द्रप्रकाश सकसेना	प्रयाग	द्वितीय

गोपाल स्वरूप भार्गव
एम. एस-सी.
परीक्षा मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'साहित्य-भवन लिमिटेड' द्वारा प्रकाशित

उत्तमोत्तम पुस्तकें

साहित्य-विहार—लेखक श्री वियोगी हरि

यह वियोगी जी के चुने हुए भक्ति विषयक और साहित्य विषयक ११ सुन्दर लेखों का संग्रह है। अधिकतर लेख पत्र पत्रिकाओं में निकल चुके हैं और लोगों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। इसको पढ़ने से न सिर्फ आप को हिन्दी के प्राचीन साहित्य की चासनी चखने को मिलेगी, किन्तु आपको वह अपूर्व आनन्द मिलेगा जो आपको अच्छे से अच्छे नाटक और उपन्यास पढ़ने से नहीं मिल सकता। मूल्य ॥≡)

योगी अरविंद की दिव्य वाणी--सम्पादक श्री वियोगी हरि

श्री अरविन्द भारतमाता के उन सपूतों में से हैं जिन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिए ही जन्म लिया है और उसी के लिए प्राण निछावर करना अपने जीवन का उद्देश मान रक्खा है। आप के लेख आध्यात्मिक और सामाजिक भावों में भरे रहते हैं। हमने आप के आध्यात्मिक विचार, योग, राष्ट्र और जाति सम्बन्धी दिव्य उद्गारों का संग्रह करवाया है। मूल्य ।-)

गल्प लहरी—लेखक स्वर्गीय श्री गिरिजाकुमार घोष

घोष बाबू से हिन्दी साहित्य अच्छी तरह परिचित हैं। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी इनके लेख बहुत पसंद करते थे। आप गल्प और आख्यायिका लिखने में सिद्धहस्त थे। यह पुस्तक आप की चुनी हुई सुन्दर गल्पों का संग्रह है। मूल्य १।)

होमर गाथा—सम्पादक स्वर्गीय बाबू गिरिजाकुमार घोष

महाकवि होमर के 'ओडिसी' और 'इलियड' नामक काव्यों का भावानुवाद। मूल्य १)

इनके अतिरिक्त हमारे यहाँ हिन्दी संसार की समस्त पुस्तकें उचित मूल्य पर मिलती हैं)॥ का टिकट भेज कर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइये।

पुस्तकें मिलने के पता—

साहित्य भवन लिमिटेड प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्य-विवरण

तथा

लेख मालाएँ

आज सम्मेलन को स्थापित हुए १२ वर्ष हुए हैं। प्रत्येक वर्ष जहाँ जहाँ सम्मेलन का अधिवेशन हुआ है, वहां का कार्य विवरण तथा सुप्रख्यात विद्वानों के भाषण और लेख सम्मेलन ने सस्ते दाम पर प्रकाशित किये हैं। यह विवरण क्या है, हिन्दी साहित्य के जीते जागते इतिहास हैं। हिन्दी का विकास कैसे हुआ, उसकी उन्नति में क्या क्या विघ्नबाधाएँ उपस्थित हुईं, साहित्य ने क्या रूप पकड़ा तथा यह भाषा किस प्रकार राष्ट्र-भाषा होने के योग्य सर्व-सम्मति से सिद्ध हुई आदि अनेक ज्ञातव्य बातें इन पुस्तकों में लिखी गई हैं। सुयोग्य सभापतियों के ओजस्वी भाषण, ललित और भावभरी कविताएँ, इतिहास, साहित्य, नाटक, समालोचना प्रभृति विषयों पर उत्तमोत्तम लेख आदि इनमें देखने ही योग्य हैं। ये सब रायल अठपेजी साइज में छपी हैं। कागज़ छपाई सुंदर, मूल्य लागत मात्र रखा गया है।

प्रथम सम्मेलन की लेखमाला			॥।)	प्रथम सम्मेलन का कार्यविवरण			।)
द्वितीय	"	"	१)	द्वितीय	"	"	।)
तृतीय	"	"	॥।)	तृतीय	"	"	।=)
चतुर्थ	"	"	॥।)	चतुर्थ	"	"	॥)
पञ्चम	"	"	॥)	पञ्चम	"	"	॥।)
षष्ठ	"	"	॥।)	षष्ठ	"	"	।)
सप्तम	"	"	॥=)	सप्तम	"	"	॥=
अष्टम	"	"	१)	अष्टम	"	"	।)
नवम	"	"	१॥)	नवम	"	"	।=)
दशम	"	"	।=)	दशम	"	"	॥)

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

सूरजप्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग में छपा।
प्रकाशक—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका के ग्राहकों को विशेष लाभ

निम्नलिखित दो पुस्तकें पौन मूल्य पर मिल सकेंगी।

१—देशभक्त लाजपत

[ले०—श्री राधामोहन गोकुल जी (राधे)]

पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय जी की जीवनी इस पुस्तक में बड़ी ही खोज के साथ लिखी गयी है। इसकी वर्णन शैली भी मनोरम है। लाला जी के जीवन में देश-सेवा करते हुए कैसी कैसी घटनाएँ हुई हैं, उन्हें क्या क्या कष्ट उठाने पड़े हैं, कष्ट सहन करते हुए भी वे अपने पथ पर कैसे डटे रहे हैं, आदि सभी बातें लेखक ने इस पुस्तक में यथा स्थान संपादित कर दी हैं। पृष्ठ संख्या ३०५ मूल्य १), रियायती मूल्य केवल ॥।)

२—नीति-दर्शन

[ले०—श्री राधामोहन गोकुल जी (राधे)]

यह नीतिशास्त्र की अद्वितीय पुस्तक है। अनेक ग्रन्थों से इस का सम्पादन किया गया है। हिन्दू धर्म-व्यवस्था, राजनीति, समाज संगठन आदि सभी ज़रूरी बातों पर विवेचनापूर्ण दृष्टि डाली गयी है। यह प्रत्येक नवयुवक को अपनानी चाहिये। पृष्ठ संख्या २१० मूल्य ॥।), रियायती मूल्य केवल ॥-)

पुस्तक-विक्रेताओं को सूचना

१—सम्मेलन द्वारा प्रकाशित समस्त पुस्तकों पर १००) से अधिक की पुस्तकें लेने से २५ फी सदी कमीशन मिलता है।

२—१००) से कम की पुस्तकें लेने से २० फी सदी कमीशन मिलता है।

३—१०) से कम के आज्ञापत्र पर कोई कमीशन नहीं दिया जाता है।

शीघ्र ही सूचीपत्र मँगाइये।

मन्त्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं. ए. ६२६.

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दीसाहित्यसम्मेलन

की

मुखपत्रिका

भाग १०] फाल्गुन, संवत् १९७९ [अंक ७

निज भाषा बोलहु, लिखहु,
पढ़हु, गुनहु सब लोग।
करहु सकल विषयन विषैं,
निज भाषा उपयोग ॥

—श्रीधर पाठक

संपादक—प्रधान मंत्री

वार्षिक मूल्य २)] [प्रति संख्या ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ

सम्मेलन द्वारा प्रकाशित उत्तमोत्तम पुस्तकें

१—भूषण ग्रन्थावली, टिप्पणी सहित ... मूल्य ॥-)

२—हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ... मूल्य ।=)

३—भारत का इतिहास, प्रथम खण्ड ... मूल्य १॥)

४—भारत का इतिहास, द्वितीय खण्ड ... मूल्य २।)

५—शिवा बावनी, टिप्पणी सहित ... मूल्य ≡)

६—सूरदास की विनय पत्रिका ... मूल्य ।)

७—रहिमन के दोहे टिप्पणी सहित ... मूल्य -)॥

८—राष्ट्र भाषा ... ... मूल्य ॥)

९—सरल पिङ्गल ... ... मूल्य ।)

१०—भारत गीत ... ... मूल्य ≡)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

मुख-पत्रिका

भाग १०] फाल्गुन, संवत् १९७९ [अङ्क ७

भारत-गीत

(१)

जय जय पुण्य भारत-मही ।
सुकृतियों ने गाय जिसकी सुकृत-गाथा कही ॥

(२)

सुकृत-धवलित सतत जिसकी सुयश-धारा वही ।
निरखि तप-द्युति द्युपति-उर में असह ईर्षा दही ॥

(३)

प्रकृत-गौरव-सुकृत-सौरभ-पूरिता, सुखमयी ।
अतुल छवि अवलोक मोही अखिल लोक-त्रयी ॥

(४)

प्रचुर जल-थल, रुचिर नभ-तल, पवन परिमल-वही ।
अमित भुज-बल-भरित-सुत-दल-सेविता, लहलही ॥

(५)

रहै जुग जुग जीविता, शुचि-श्रीयुता, डहडही ।
गहै श्रीधर-हृदय, प्रतिपल, सुदृढ़ आशा यही ॥
जय जय पुण्य भारत-मही ।

श्रीपद्मकोट
२०—२—१९२३

—श्रीधर पाठक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्त-चन्द्रिका

संग्रहकर्त्ता—श्रीयुत वियोगी हरि

(गताङ्क से आगे)

दोहा—भगण तीन गुरु अंत इक, जुग रितु यति तहँ जान।
सारवती सो छंद गनि, पिंगल करत बखान॥

सारवती छंद

देखि तबै भृगु नंदन कों, क्षत्रिन के कुल कंदन कों,
बोलि उठे द्विज हौं न डरौं, आयुध ले अब जुद्ध करौं।

दोहा—तगण तगण पुन जगण गनि, द्वै गुरु अंत विसेख।
जुग मुनि पर यति छंद सो, इन्द्रवज्र वर लेख॥

इन्द्रवज्र छंद

सीता सु ले राघव औधि आये।
आनंद सों मंगल गीत गाये॥
शोभा सबै देखन नार नारी।
ठाढ़ी करैं पुष्प सु वृष्टि भारी॥

दोहा—चार यगण प्रति पद जहाँ, चरण अंत यति जान।
छंद भुजंगप्रयात सो, पिंगल करत बखान॥

भुजंग प्रयात छंद

जबै क्रुद्ध है राम कम्मान लीनी।
चमू रच्छ सो कीन्ह बै दूर कीनी॥
खरं दूषनं करनं शीश कट्टे।
परक्कें धरा में लसैं ज्यों सु बट्टे॥

दोहा—सगण चार पद अंत यति, प्रति पद जहां सु लेख।
पिंगल फनपति पंथ सो, तोटक छंद विसेख॥

तोटक छन्द

दशकंधर अंध सु रोस रुस्यो।
रघुनन्दन सों रन आय जुस्यो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपि रिच्छन रच्छस वृंद हनें।
गल गज्जित सज्जि सु ओज घने॥

दोहा—जगन चार प्रति पद जहाँ, चरण अंत विश्राम।
पिंगल फनपति छंद सो, भाषत मुक्ता दाम॥

मुक्ता दाम छन्द

हरे जब राम दशानन सीस।
सुलच्छित आयुध त्यों भुज बीस॥
वरष्षित फूल तहां सुर भीर।
हरष्षित बोलत जै रघुवीर॥

दोहा—तगन दोय पुन जगन गनि, रगन अंत यति जान।
छंद इन्द्रवंशा सु यह, पिंगल करत बखान॥

इन्द्र वंशा छन्द

आये जबै सीय समेत राम हैं।
छाये महा मंगल ओधि धाम हैं॥
भ्राता भरथ्थादि करैं प्रणाम हैं।
वाचा किये पूरित सर्व काम हैं॥

दोहा—यगन चार लघु अंत इक, प्रति पद यति अवसान।
पिंगल फनपति पंथ सो, छंद कंद सुखदान॥

कंद छन्द

लसैं राधिका संग में सुंदरी भीर।
सु लीला करैं कुंज में भानुजा तीर॥
तहां औचका आय कै नंद के लाल।
बजा बाँसुरी मोह लीनी सबै बाल॥

दोहा—तगन भगन पुन जगन द्वै, अंत गुरू द्वै लेख।
सो बसंत तिलका गनौ, छंद अंत यति देख॥

वसंत तिलका छन्द

शोभा लसै तनु महा घन के समानं।
पंकेरुहं द्रग युगं भ्रकुटी कमानं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद कंद मुख मंजुल चंद राजै।
देखे मुकुंद छबि कोटिन काम लाजै॥

दोहा—गुरु लघु पंद्रह वर्ण जहँ, चरण चरण प्रति देख।
विरति अंत अभिराम सो, चामर छंद बिसेख॥

चामर

कुंज में गुपाल लाल राधिका बिराजहीं।
वृंद गोपिकान के सुराग रंग साजहीं॥
नृत्य में उपंग संग बीन बेन बाजहीं।
लच्छरी बिलोकि दच्छ अच्छरी सु लाजहीं॥

दोहा—नगन नगन पुन मगन गनि, यगन यगन सुख दान।
वसु रिषि अच्छर यति जहां, छंद मालिनी मान॥

मालिनी

मुख शशि अभिरामा चारु पीयूष धामा।
भ्रकुटि धनुष वामा नैन द्वै तीर कामा॥
तन सुवरन वेली संग सोहै नवेली।
हरि हित अलबेली कुंज में सो अकेली॥

दोहा—लघु गुरु अच्छर स्वच्छ जहँ, कला इंदु परिमान।
तिन पै यति अभिराम सो, छंद नराच बखान॥

नाराच

सु वेद औ पुरान जाहि नेति नेति गावहीं।
अनेक सिद्ध जोग साध कै न पार पावहीं॥
सुरेश शम्भु शेष ध्यान जासु हेत साजहीं।
मुरारि नंद धाम सो अनंद छंद छाजहीं॥

दोहा—भगन पंच गुरु अंत इक, यति अवसान प्रमान।
पिंगल फनपति पंथ सों, नील छंद सो जान॥

नील छंद

देख सखी जमुना तट पै हरि राजत हैं।
सुन्दर श्याम सरूप अनूपम साजत हैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीत पटी लकुटी कर बैन बजावत हैं।
गोपिन के मन काम कला उपजावत हैं॥

दोहा—जगन सगन पुन जगन गनि, सगन यगन लघु अंत।
दिग्गज निधि पर यति जहां, पृथ्वी छंद लसंत॥

पृथ्वी छंद

लसैं बहुत गोपिका निकट राधिका देखिये।
निकुंज मधि केलि की सकल साधिका लेखिये॥
मुकुंद तित आय कैं हरषि शोभ साजै घनी।
अनंग छबि अंग में जनु अभंग राजै बनी॥

दोहा—मगन भगन पुन नगन गनि, तगन दोय गुरु दोय।
मंदाक्रांता छंद सो, युग रितु मुनि यति सोय॥

मन्दा क्रांता

देखो राधे शुभ तरनिजा कूल पै श्याम राजै।
माथैं धारैं मुकुट सुखदा मोर के पिच्छ साजै॥
मुक्तामाला सुपट कटि में काछनी मंजु काछै।
मोहै कामै स्वद्युति तन सौं मोहिनी रूप आछै॥

दोहा—यगन सु षट् प्रति पद जहां, अंत विरति अभिराम।
पिंगल फनपति छन्द सो, क्रीड़ाचन्द्र सु नाम॥

क्रीड़ाचंद्र

रमानाथ राधापतिं रासकारी रसीले लसैं हैं।
विभू विश्व ब्रह्मांड व्यापी विधाता विनोदी बसैं हैं॥
अनूपं सरूपं अजं अच्युतं ओप आनन्द के हैं।
सबै सिद्धिदा भक्त कों कृष्ण सो भौन में नन्द के हैं॥

दोहा—रगन सगन पुन जगन द्वै, भगन रगन सुखदान।
यति अवसान सुछंद गनि, चञ्चरीक रस खान॥

चञ्चरीक

देख री बलभद्र मोहन ग्वाल बालक सङ्ग में।
ख्याल भाँतिन के करैं किलकैं महा रस रङ्ग में॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काछनी कटि में कसैं पट नील पीत विशाल है।
चन्द्रमा घन युक्त मानहु अङ्क तड़िता जाल है॥

दोहा—मगन सगन पुन जगन गनि, सगन तगन जुग जान।
अँत सु गुरु रवि मुनि विरति, शारदूल पहिचान॥

शार्दूल विक्रीड़ित

राधा ह्वै हरि रूप रूप हरि ह्वै राधा स्वरूपी लसै।
लीला सों सब अङ्ग साजि वसनं केली निकुंजै बसै॥
गोपी देख चरित्र अद्भुत महा चित्तैहि चित्तै हसै।
को राधा हरि कौन यौं लखि मुखै पीवै पियूषै रसै॥

दोहा—सगन जगन द्वै भगण पुन, रगन सगन लग लेखि।
प्रति पद यति अवसान में, छंद गीतिका देखि॥

गीतिका

करि क्रोध कों हनुमन्त नें जब बाटिका किय चूर है।
लखि कैं सु रच्छस लच्छ धाये आसु विक्रम पूर है॥
रण रङ्ग आपुस में करैं हट्टैं न इक तिल दूर है।
हनि अच्छ कों प्रत्यच्छ गज्जत अंजनी सुत शूर है॥

दोहा—मगन रगन पुन भगन गनि, नगन यगन त्रय जुक्त।
मुनि मुनि मुनि यति सुखद अति, छन्द स्रग्धरा उक्त॥

स्रग्धरा छंद

ऊधो जो बैन भाखो हरि चरित महा निर्गुनी रूप सानौ।
नेत्रं श्रोत्रं विहीनं कर चरण तथा विश्वव्यापी प्रमानौ॥
दीने सो अञ्जनं कौं श्रुति जुगल महा कुण्डलं चारु धारैं।
लीन्हैं वंशी बजावैं नित प्रति इत आवास कीन्हैं हमारैं॥

दोहा—भगन सात गुरु अंत इक, प्रति पद जहँ अवरेख।
रवि सु दशा विश्राम युत, छंद सु मदिरा लेख॥

मदिरा छंद

लै संग गोपिन के गन कौं बहु मोद भरे मन में हुलसैं।
रोकि तहाँ ब्रज की बनिता दधि लुट्टत झंझट सौं बिलसैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्द जसोमति को भय नैकु न यौं अमनैक सदा बिलसै।
लै भर अङ्क निसङ्क मिलै हरि गोपिन हीतल सीतल सै॥

दोहा—सगन होय पुन भगन गनि, सत जज लघु गुरु अन्त।
मुनि अलि पद दिग पै बिरति, सुन्दरि छन्द लसंत॥

सुंदरी छंद

हरि कुंज बिराजै छवि अति छाजै गोपिन सङ्ग चलो तित ही।
कटि काछिनि काछै पट चपलाछै अंबुद अङ्ग प्रभा जित ही॥
उर मण्डित माला मुकुट बिसाला कुंडल कानन शोभित ही।
मुरली सु बजावै मंजुल गावै मोद भरे लखि शोभित ही॥

दोहा—सात भगन इक अन्त में, रगन जहाँ परिमान।
रवि रवि अच्छर यति सुखद, सुधा छन्द सो जान॥

सुधा छंद

पीत पटी लकुटी कर में सु पटीर लसै तन में छवि छन्द है।
पिच्छ मयूरन को अवतंस हिये बनमाल धरै मुद कन्द है॥
अञ्जन चारु बिभूषन भूषित बैन बजावत त्यों सुर मन्द है।
देखत क्यों न अली जनु काम अनूपम रूप जु गोकुल चन्द है॥

दोहा—मम सभ नगन सु चार जहँ, अन्त सु गुरु इक लेख।
बाण बाण बसु मुनि बिरति, छन्द क्रुंच पद देख॥

क्रुंच छंद

देखत राधा रूप अगाधा बहु सखियन सँग हरषित बन में।
साजित शोभा दीपित गोभा उठत बिबिध बिधि अगनित तन में॥
काम तिया सी जा ढिग दासी लगत सु निरखत सब तिय गन में।
चन्द बिहारी ताछिन आली हिल मिलि मनु बर तड़ित सु घन में॥

दोहा—मम तन नन मस लघु गुरू, प्रति पद जित सुख कन्द।
बसु शिव मुनि अच्छर बिरति, भुजग विजृम्भित छन्द॥

भुजग विजृम्भित छंद

देखो आली मोकों कान्हा ब्रज गलियन मधि अटके कह्यो न मानत सो।
ऐसो चाली लीन्हें बाना सुदधि झपट लपटत है हितू न जानत सो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसी कीजे क्यों ह्यां जीजे गुरुजन जन सु लखत हैं अनीति ठानत सो।
यौं वो छैला शोभा झेला नितप्रति तियन तकत है हठी न मानत सो॥

दोहा—या विध छब्बिस बरन लो, वरन छन्द परिमान।
चण्डव्रष्ट आदिक अधिक, इनतें दण्डक जान॥
नगन दोय मुनि रगन जहँ, प्रति पद यति अवसान।
चण्डव्रष्ट दण्डक सु यह, गद्य ताहि परिमान॥

चंडव्रष्ट दंडक

जय जय जय श्रीमते सर्वदा देव देवेश गोविन्द गोपाल गोपी पते।
जय जय जय द्वारिकानाथ वृन्दावने साथ सत्कीर्तिदा गाथ राधा रते॥
जय जय जय ब्रह्म रुद्रादि शेषादि प्रह्लाद गंधर्व सर्वाधिकारी कृते।
जय जय जय सच्चिदानन्द सानन्द विश्वेश ब्रह्मांडव्यापी दुखं संहृते॥

दोहा—इकतिस अच्छर है जहाँ, कला सु तिथि विश्राम।
घनाच्छरी दण्डक सु है, पिंगल भाषत नाम॥

घनाक्षरी दंडक

वृन्दारक वृन्द मुनि मानस मनोहर में
छन्द छवि छाये लसैं दीपत अपारी के।
'गदाधर' कहैं मञ्जु मोकल कलानिधि की,
कलित कलान नख पाँति सुखकारी के॥
सन्तन से लोचन चकोरन कों प्रेम! कर,
अरुन विचित्र चारु चिन्हित निहारी के।
कलुष कलापन के हरण अनूप ऐसे,
चरन सरोज राजैं राधिका बिहारी के॥

कुटिल कराल कलि काल भव सागर में,
सेतु बाँधिवे कों गुन गान ग्यान दीजिये।
माया के चरित्र लखि चकित भयो है मन,
काम के न काम मोह मद कों सु मीजिये।
साधु सत सङ्ग भक्ति रावरी हमेस यातें,
माधुरी निहार दृग प्यालेन सों पीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एहो ब्रजराज निज सेवक के काज अब,
लाज रही आवै सो इलाज कर दीजिये ॥

दोहा—छन्द छीर निधि वृद्धि हित, जे कवि कला निधान ।
तिनके चित आनन्द कों, वृत्त-चन्द्रिका मान ॥
सुगम छन्द जे जग विदित, तिनको पन्थ विचार ।
सुकवि 'गदाधर' ग्रन्थ यह, रच्यो सुमति अनुसार ॥

श्लोक

पुण्यंक वसु चन्द्राब्दे वैशाखे मासि सद्दिने ।
तृतीयायां सिते पक्षे कृतेयम् वृत्तचन्द्रिका ॥

श्री० कविचक्रचूड़ामणि पद्माकर पौत्र कवि गदाधर तैलङ्ग रचित वृत्त चन्द्रिका ग्रन्थ सम्पूर्ण । शुभम् मुकाम दतिया ।

हा प्रेमघन !

श्रीमान् पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का स्वर्गवास !

बदरीनारायण चौधरी का जन्म, मिरजापुर में, भारद्वाज गोत्रीय सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में संवत् १९१२ की भाद्रपद कृष्णा ६ को हुआ था। आपका घराना मिरजा-पुर में बड़ा ही प्रतिष्ठित है। आपके पूर्वजों का जीविका-निर्वाह ब्राह्मण वृत्ति का नहीं, बल्कि व्यापार, जमींदारी और महाजनी का था। इससे आपका घरावा साधारण ब्राह्मणों से धनी मानियों की श्रेणी में अधिक प्रतिष्ठित है। आपके दादा का नाम पं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीतलप्रसाद उपाध्याय था। आपके पिता पं० गुरुचरण लाल उपाध्यायजी, उपाध्याय पं० शीतलप्रसाद के इकलौते पुत्र थे। पं० गुरुचरण लाल उपाध्याय सनातनधर्म के अवलम्बियों में एक आदर्श थे। जब सांसारिक कार्यों का अच्छी तरह सम्पादन हो चुका, तब आप वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर त्रिवेणी पर भूसी में रहने लगे। इन्होंने अपने धन का सदुपयोग करके कितनी ही संस्कृत पाठशलाएं खोलीं और विद्यार्थियों के भरणपोषण का पूरा प्रबन्ध किया।

जब पं० बदरीनारायण जी की अवस्था कोई ५ वर्ष की थी, तब इनके पिता वानप्रस्थ हुए, इससे इनकी माता पर ही इनके पढ़ाने लिखाने का भार आ पड़ा। संवत् १९१७ में जब इनकी अवस्था ५ वर्ष की थी, इन्हें फारसी की शिक्षा दी जाने लगी। इसके बाद थोड़ी अंगरेजी की भी शिक्षा दी गयी। पीछे अयोध्या के महाराज सर प्रताप नारायण सिंह आदि के सङ्ग से अश्वारोहण, गजसंचालन, मृगया और लक्षभेद, इन कई विषयों में भी इनकी प्रवृत्ति हुई। लड़कपन में इनका जी घुड़दौड़ और शिकार में बहुत लगता था। पहले तो ये गोंडा, फैजाबाद और मिरजापुर के स्कूलों में अङ्गरेजी पढ़ते थे, पर जब संवत् १९२५ में इनके पितामह का स्वर्गवास हो गया तब इन्हें लाचार होकर घर पर ही अङ्गरेजी पढ़नी पड़ी। कुछ दिनों तक तो पढ़ने का यह सिलसिला चला, पर जब ये घर के कामों में बिलकुल फंस गये, तो पढ़ना बिलकुल बन्द हो गया।

पितामह के स्वर्ग वास होते ही पण्डित बदरी नारायण चौधरी पर ही घर का सब भार आ पड़ा, क्योंकि इनके पिता तो पहले से ही घर छोड़ कर वानप्रस्थ हो गये थे। घर के काम काज में पड़ने से इनका स्वभाव भी बदल चला। काम काज से छुट्टी मिलने पर आमोद प्रमोद में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनका अधिक समय कटने लगा। अमीर तो थे ही, चारो ओर से मन बहलाव की सामग्रियां भी जुटने लगीं। पर इनके इस आमोद प्रमोद में एक खूबी यह थी कि साहित्य-चर्चा और विद्वानों का समागम भी उसके साथ होता था। संगीत की ओर आपकी प्रवृत्ति बहुत थी। इस से जगह जगह के गुणी गवैयों का जमघट होता था। संवत् १९२८ में जब ये कई वर्षों तक बीमार थे, तो इन्हें ब्रज भाषा के कितने ही प्राचीन ग्रन्थों के देखने का अवसर मिला। इस से हिन्दी साहित्य की ओर भी इनकी प्रवृत्ति हुई। इनके साथ वालों में से एक रामानन्द पाठक भी थे, जो एक अच्छे विद्वान् और साहित्य सेवी थे। इनसे ही हिन्दी काव्यशास्त्र की शिक्षा इन्हें मिली थी। संवत् १९२९ में तत्कालीन देशहितैषी पं० इन्द्र-नारायण शंगलू से इनकी जान पहचान हुई। इनके साथ उपाध्यायजी का साहित्य प्रेम बढ़ता ही गया। इसके कुछ ही दिनों बाद भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी से इनकी जान पह-चान हो गयी, और धीरे धीरे यह मैत्री बढ़ती ही गयी। संवत् १९३० में इन्होंने सद्धर्म सभा और १९३१ में रसिक समाज स्थापित की। पीछे और भी कई सभाएं खोलीं। संवत् १९३२ में ये कविता बनाने लगे। उस समय भारतेन्दु जी "कवि वचन सुधा" नाम की पत्रिका निकालते थे। उसमें इनकी कई कविताएँ और लेख छपे। धीरे धीरे इनकी रुचि साहित्य की ओर बढ़ती गयी। संवत् १९३८ में इन्होंने अपनी ओर से "आनन्दकादम्बिनी" नाम की पत्रिका निकालना आरम्भ किया। आनन्दकादम्बिनी से लोग इतने प्रसन्न हुए कि उसके दर्शन के लिये एक महीना ठहरना उनके लिये पहाड़ जान पड़ने लगा। तब उत्साहित हो कर चौधरी जी ने संवत् १९४९ से "नागरी नीरद" नामक साप्ताहिक पत्र निकालना आरम्भ किया। इनकी साहित्य सेवा कुछ धन कमाने के उद्देश्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं थी। इन्हें जब-मौज आती, तभी कुछ लिखते थे। गद्य पद्य दोनों ही इनके ओजस्वी और रसमय होते थे। इनके लेख और कविताएँ तो बहुत हैं, पर सब तितर बितर रूप में। आनन्दकादम्बिनी और नागरी-नीरद की फाइलें इनकी साहित्य सेवा और प्रतिभा के परिचायक हैं। इनके सिवा "भारत सौभाग्य नाटक", "हार्दिक हर्षादर्श", "भारत बधाई" "आर्याभिनन्दन" "वर्षा विन्दु" "कजली कादम्बिनी" "प्रयाग रामा गमन", "आनन्द अरुणोदय" ये पुस्तकें भी इनकी साहित्य सेवा के प्रमाण स्वरूप विद्यमान हैं।

चौधरी जी साहित्य सेवी के सिवा देश भक्त भी थे। भारत सौभाग्य नाटक उनकी देश हितैषिता के भाव का सूचक है। ऊपर कहा जा चुका है कि आपने जो कुछ साहित्य-सेवा की है वह केवल 'स्वान्तः सुखाय' थी। इनके लेख आदि फुटकर होने पर भी संग्रह करने योग्य हैं। हिन्दी संसार ने इस साहित्य-सेवा के प्रति फल में इन्हें तृतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सभापति बना कर इनका सम्मान किया था।

इधर कई वर्षों से आपका स्वास्थ्य बिगड़ा था। परिणाम-अशुभ परिणाम यह हुआ कि १४ फरवरी को आप हिन्दी संसार को सूना करके स्वर्ग सिधार गये!

प्रेमघन जी वास्तव में प्रेमघन थे। आपने अपनी साहित्य सुधा की जो वर्षा की है, वह साहित्य-सागर में सदा भरी रहेगी।

हम आपके शोकाकुल कुटुम्ब के साथ समवेदना प्रकट करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह आपकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—प्रचार-कार्यालय की नियमावली

उद्देश्य

१—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार कार्यालय का मुख्य उद्देश्य है—दक्षिण-भारत में (अर्थात् आंध्र, तामिल, केरल तथा कर्नाटक प्रान्त में) राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार करना।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रचार समिति

२—उपर्युक्त प्रान्तों में हिन्दी भाषा प्रचार सम्बन्धी आवश्यक कार्यों का प्रबन्ध करने के लिये एक समिति होगी, जो 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार समिति' कहलायगी।

३—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार कार्यालय का केन्द्र स्थान मद्रास होगा। इस केन्द्र-कार्यालय के अध्यक्ष, जो व्यवस्थापक कहलायँगे, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा नियत किये जायँगे।

४—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार समिति में कुल ९ सदस्य होंगे। इसके मंत्री केन्द्र कार्यालय के व्यवस्थापक होंगे। तीन सदस्य प्रधान कार्यालय, प्रयाग द्वारा कार्यकर्ताओं और प्रचारकों से मनोनीत किये जायँगे। चार सदस्य प्रचारकों द्वारा निर्वाचित किये जायँगे। शेष एक सदस्य सम्मेलन के हितैषियों और सहायकों द्वारा निर्वाचित होगा।

५—समिति के ९ सदस्यों में से प्रधान कार्यालय द्वारा उसके सभापति नियुक्त किये जायँगे। वही वर्षभर समिति के सभापति रहेंगे। उनकी अनुपस्थिति में समिति को अधिकार होगा कि उपस्थित सदस्यों में से किसी एक को अधिवेशन के लिये अपना सभापति निर्वाचित करलें।

६—यदि समिति के किसी पदाधिकारी या सदस्य का स्थान रिक्त हो जाय, तो वर्ष के आरम्भ में जिस प्रकार वह निर्वाचित या मनोनीत किया गया होगा उसी प्रकार पुनः निर्वाचित या मनोनीत किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—साधारणतः समिति की बैठक प्रत्येक मास में एक बार हुआ करेगी। इसकी सूचना मंत्री सदस्यों को कम से कम ७ दिन पहले दे दिया करेंगे। कम से कम ३ सदस्यों की उपस्थिति के बिना बैठक न हो सकेगी। सदस्यों की लिखित सम्मति भी मानी जायगी। आवश्यकता पड़ने पर समिति के तीन सदस्यों को अधिकार होगा कि किसी विशेष तिथि पर समिति का अधिवेशन करने के लिये मंत्री को लिखें। ऐसा लेख आने पर मंत्री को बैठक करना आवश्यक होगा।

८—नीति सम्बन्धी बातों से इस समिति का कोई सम्बन्ध न होगा। इनका निपटारा प्रधान कार्यालय, प्रयाग के आधीन होगा। प्रचारक और कार्य-कर्ताओं की नियुक्ति तथा वेतन, वेतन वृद्धि, छुट्टी, मार्ग व्यय आदि समस्त प्रश्नों का निश्चय प्रधान कार्यालय करेगा।

९—समिति का यह कर्तव्य होगा कि (१) अपने अधिकारानुसार प्रचार के सुचारु रूपसे संचालन करने के लिये उपनियम बनाये और उन पर प्रधान कार्यालय की स्वीकृति लेकर उनके अनुसार कार्य करे (२) वर्ष भर का कार्य विवरण और वर्ष भर का आय व्यय का हिसाब (जो प्रधान कार्यालय द्वारा नियुक्त किसी परीक्षक द्वारा जांचा गया हो) वर्ष समाप्त होने के एक मास के भीतर प्रधान कार्यालय को भेजे, और प्रधान कार्यालय द्वारा स्वीकृत होने पर उसको समाचार पत्रों में दो मास के भीतर ही प्रकाशित करे। (३) आगामी वर्ष के लिये आय व्यय का अनुमान-पत्र वर्ष समाप्ति के एक मास पहले प्रधान कार्यालय में स्वीकृति के लिये भेजे और स्वीकृत अनुमान पत्र के अनुसार कार्य करे।

१०—सभापति के कर्तव्य।

समिति के अधिवेशनों का संचालन मताधिक्य तथा नियम के अनुसार करना।

११—मंत्री के कर्त्तव्य—

(क)—कार्यालय के कार्यों का निरीक्षण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख)—समिति के अधिवेशनों का विवरण रखना और आय व्यय का हिसाब रखना, वर्ष के अन्त में समिति का वार्षिक विवरण, वार्षिक आय व्यय का चिट्ठा और आगामी वर्ष के लिये अनुमान पत्र समिति से स्वीकृत करा के प्रधान कार्यालय को भेजना।

(ग) समिति के प्रत्येक अधिवेशन का विवरण प्रधान कार्यालय को भेजना।

(घ)—प्रान्तीय कार्यालयों का वार्षिक विवरण तैयार करके समिति के वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित करना।

(ङ)—सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति और उनके प्रतिरोधक कारणों के निवारण का उचित प्रबन्ध करना।

केन्द्र कार्यालय

केन्द्र कार्यालय—

व्यवस्थापक के कर्तव्य—

१२—(क) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार समिति के मन्तव्यानुसार और प्रधान कार्यालय के आज्ञानुसार केन्द्रिक तथा प्रान्तीय कार्यालय का संचालन करना।

(ख)—समय समय पर प्रान्तीय कार्यालयों का निरीक्षण करना, कम से कम वर्ष में एक बार मुख्य मुख्य केन्द्रों का निरीक्षण करना।

(ग)—कार्यालय के मुख-पत्र 'हिन्दी प्रचारक' का समुचित प्रबन्ध करना। परीक्षा विभाग के संचालन में परीक्षा मंत्री को सहायता देना और पुस्तक प्रकाशन विभाग का यथेष्ट प्रबन्ध करना।

(घ)—यथा शक्ति धन संग्रह का उद्योग करना।

(ङ)—अमावास्या तक गत मास का मासिक प्रचार-विवरण तथा आय व्यय का ब्यौरा भेजना।

(च)—प्रधान कार्यालय द्वारा कार्यालय की वार्षिक रिपोर्ट स्वीकृत हो जाने पर उसको समाचार पत्रों में प्रकाशित करना। तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी की उन्नति के लिये पत्रों द्वारा आन्दोलन करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(छ)—वर्ष भर में दो बार अपने निरीक्षण का ब्यौरा प्रधान कार्यालय को भेजना।

(ज)—यदि किसी प्रचारक का कोई आचरण अनुचित जान पड़े तो उन्हें अपना आचरण सुधारने की सूचना देना, और यदि वह इस ओर ध्यान न दें तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार समिति में यह प्रश्न उपस्थित करना।

(झ)—आवश्यकतानुसार कार्यकर्ताओं और प्रचारकों को सहायता देना एवं किसी विशेष परिस्थिति उत्पन्न होने पर तुरन्त उसकी सूचना प्रधान कार्यालय के प्रधान मंत्री को देना और उनकी सम्मति के अनुसार कार्य करना।

(ञ) केन्द्र कार्यालय के व्यवस्थापक ही कोषाध्यक्ष का काम करेंगे।

(ट)—प्रधान कार्यालय की स्वीकृति के बिना रुपया व्यय न किया जायगा।

(ठ)—निम्न लिखित ७ खातों में कार्यालय का हिसाब रहेगा—

(१) केन्द्र कार्यालय खाता (२) प्रान्तीय कार्यालय खाता (३) प्रचारक विद्यालय खाता (४) पुस्तक प्रकाशन विभाग खाता (५) परीक्षा खाता (६) हिन्दी प्रचार खाता (७) प्रेस खाता।

हर खाते में यह उल्लेख रहेगा कि किस खाते की कितनी आय और कितना व्यय है।

(ड) यदि व्यवस्थापक ने आवश्यकता पर अपने उत्तरदायित्व से या समिति ने मन्तव्य स्वीकृत कर विशेष परिस्थिति में कुछ व्यय किया हो तो व्यय उपरान्त प्रधान कार्यालय से स्वीकृति लेना, किन्तु ऐसा व्यय ५०) से अधिक न होना चाहिए।

(ढ)—पुस्तकों के स्टाक का रजिस्टर रखाने का प्रबन्ध करना।

प्रान्तीय कार्यालय

१३—दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार को विशेष रीति से संघटित करने के लिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार समिति के मन्तव्यानुसार भिन्न भिन्न प्रान्तों में प्रान्तीय कार्यालय होंगे। प्रान्तीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यालय के अध्यक्ष संचालक कहलायंगे और यह समिति के मन्तव्यानुसार अपने अपने प्रान्त की व्यवस्था करेंगे।

१४—संचालक अपने संचालन कार्य में सहायता के लिये आवश्यकतानुसार केन्द्र कार्यालय को सूचना देकर एक सहायक संचालक रख सकेंगे। केन्द्र कार्यालय की अनुमति से वे उनको बदल भी सकेंगे। यह सहायक संचालक, संचालक की अनुपस्थिति में, संचालक का काम करेंगे।

१५—प्रान्तीय कार्यालय केन्द्र-कार्यालय द्वारा ही प्रधान कार्यालय, प्रयाग से पत्र व्यवहार कर सकेंगे।

१६—संचालक के कर्तव्य—

(क)—आवश्यकतानुसार केन्द्र कार्यालय को सूचना दे कर प्रचारकों को एक जगह से दूसरी जगह बदलना।

(ख)—यदि किसी प्रचारक का कोई आचरण अनुचित जान पड़े, तो केन्द्र कार्यालय को सूचना देना।

(ग)—वर्ष में कम से कम दो बार अपने प्रान्त के मुख्य मुख्य केन्द्रों का और कम से कम एक बार प्रति केन्द्र का निरीक्षण करना और इसका विवरण केन्द्र-कार्यालय को भेजना।

(घ)—अपने प्रान्त से हिन्दी प्रचार के लिये धन संग्रह करना और उसकी सूचना केन्द्र कार्यालय को देना।

(ङ)—कृष्ण दशमी तक अपने प्रान्त का गत मास का कार्य विवरण तथा आयव्यय का लेखा केन्द्र कार्यालय को भेजना। इसी प्रकार वर्ष के अन्त में वार्षिक विवरण भेजना।

(च)—यथा शक्ति प्रचारकों को सहायता देना, उनके निवास स्थान आदि का स्थानीय लोगों से लिखा पढ़ी कर के प्रबन्ध कराने का उद्योग करना।

(छ) यदि कोई प्रचारक केन्द्र कार्यालय या प्रधान कार्यालय को पत्र भेजे, तो उस पर अपनी सम्मति लिखना।

(ज)—संचालक अपने प्रान्त के लिये व्यवस्थापक की स्वीकृति लेकर उपनियम बना सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचारकों के कर्तव्य

(क)—अपने प्रान्त के संचालक की आज्ञानुसार कार्य करना।

(ख)—जिस जगह पर नियुक्त किये जायँ, वहाँ पर स्वयं अपने रहने का प्रबन्ध करना। संचालक भी इस कार्य में यथा शक्ति उनकी सहायता करेंगे।

(ग)—स्थानीय शिक्षा संस्थाओं में जाकर विद्यार्थियों में हिन्दी के प्रति प्रेम उत्पन्न करना और वहां के अधिकारियों से मिल कर हिन्दी पढ़ाने का प्रयत्न करना। वहां पर प्रचारक हिन्दी के अतिरिक्त और कुछ न पढ़ा सकेंगे।

(घ)—जनता की ओर से हिन्दी प्रचार के लिए जो कुछ सहायता मिले, तुरंत उसकी सूचना प्रान्तीय कार्यालय को देना। प्रचारक किसी से कोई व्यक्तिगत भेंट कदापि ग्रहण न कर सकेंगे।

(ङ)—हर एक मास के अन्त में, अपने वर्गों का विवरण और अपने वेतन की रसीद प्रान्तीय कार्यालय को भेजना।

(च)—वर्ग के विद्यार्थियों को समिति द्वारा निर्धारित पुस्तकें पढ़ाना।

(छ)—यदि अपना केन्द्र छोड़ कर एक दिन या अधिक काल के लिये बाहर जाना हो तो उसकी स्वीकृति प्रान्तीय कार्यालय से लेना।

(ज)—अपने अपने केन्द्र में एक हिन्दी पुस्तकालय और वाचनालय खोलने का उद्योग करना।

परीक्षाएँ

१८—दक्षिण भारत में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार समिति द्वारा वर्ष भर में दो बार हिन्दी की चार परीक्षाएँ ली जायँगी, १ प्राथमिक, २ प्रवेशिका, ३ राष्ट्रभाषा और ४ प्रचारक परीक्षा। दक्षिण भारतवासी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९—इन परीक्षाओं का संचालन समिति के मन्तव्यानुसार परीक्षा मंत्री करेंगे, जिनकी नियुक्ति प्रधान कार्यालय द्वारा होगी।

२०—परीक्षाओं का प्रवेश शुल्क इस प्रकार होगा—

प्राथमिक	।)
प्रवेशिका	॥)
राष्ट्रभाषा	१)
प्रचारक	२)

स्त्रियों से कोई शुल्क न लिया जायगा।

२१—प्राथमिक तथा प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को एक प्रमाणपत्र दिया जायगा, जिस पर परीक्षा मंत्री और केन्द्र कार्यालय के व्यवस्थापक के हस्ताक्षर होंगे। 'राष्ट्रभाषा' और 'प्रचारक' परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थियों को जो प्रमाण पत्र दिया जायगा, उसपर प्रधान कार्यालय के प्रधान मंत्री और प्रचार मंत्री के भी हस्ताक्षर होंगे।

२२—हिन्दी साहित्य प्रचार समिति इन परीक्षाओं का पाठ्यक्रम तथा अन्य आवश्यक उपनियम बना सकेगी, किन्तु इन पर प्रधान कार्यालय की स्वीकृति लेना आवश्यक होगा।

२३—परीक्षा मंत्री के कर्तव्य।

(क)—पाठक्रम स्वीकृत हो जाने पर प्रकाशित करना। परीक्षा तिथि नियत करना और उसकी सूचना कम से कम चार मास पूर्व समाचार पत्रों में तथा 'हिन्दी प्रचारक' में प्रकाशित करना।

(ख)—समाचार पत्रों द्वारा तथा प्रचारकों की सहायता से परीक्षार्थी तैयार करने का उद्योग करना।

(ग)—व्यवस्थापक के परामर्श से परीक्षक नियत करना और स्थान स्थान पर परीक्षा केन्द्र खुलवाना।

(घ)—शुल्क सम्बन्धी आय व्यय का हिसाब रखना।

(ङ)—परीक्षा समाप्ति के दो मास के भीतर परीक्षा फल प्रकाशित करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(च) परीक्षा सम्बन्धी समस्त कार्यों का प्रबन्ध करना और इसका वार्षिक विवरण व्यवस्थापक को देना।

(छ) आवश्यकतानुसार परीक्षा संचालन के लिये व्यवस्थापक से परामर्श और सहायता लेना।

पत्रिका

२४—दक्षिण भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रचार कार्यालय की पाक्षिक मुख पत्रिका प्रकाशित हुआ करेगी, जिसका नाम हिन्दी प्रचारक होगा। इसके सम्पादक प्रधान कार्यालय द्वारा नियुक्त किये जायँगे। इसका उद्देश्य केवल राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रचार होगा।

पुस्तक प्रकाशन विभाग

(अ) समय समय पर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-प्रचार कार्यालय, मदरास द्वारा हिन्दी प्रचार की साहित्य सम्मेलन प्रचार समिति प्रधान कार्यालय की स्वीकृति लेकर पुस्तकें प्रकाशित कर सकेगी। समिति किसी पुस्तक प्रकाशित करने का प्रस्ताव करेगी तो उसमें इन बातों का भी उल्लेख रहेगा कि कितनी प्रतियां और किस प्रकार के कागज़ पर छपाई जांय और अनुमान से कुल लागत क्या होगी। हस्तलिखित पुस्तक भी साथ आना चाहिए।

प्रचार पुस्तकालय

२५—केन्द्र कार्यालय में एक बृहत् पुस्तकालय रखने का प्रबन्ध किया जायगा जिसमें हिन्दी के सभी विषयों के प्रसिद्ध प्रसिद्ध ग्रन्थ संगृहीत किये जायँगे। आधुनिक हिन्दी समाचार पत्र और मासिक पत्रिकाएँ भी रक्खी जायगी।

प्रचार विद्यालय

२६—प्रधान कार्यालय की स्वीकृति पर दक्षिणभारत में स्थान स्थान पर योग्य हिन्दी प्रचारक तैयार करने के लिये आवश्यकतानुसार हिन्दी प्रचारक विद्यालय खोले जायँगे। इनमें राष्ट्रभाषा और प्रचारक परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाई होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचारकों की नियुक्ति

२७—दक्षिण भारत में दोनों—उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय-प्रचारक नियुक्त किये जायँगे। उत्तर भारतीय प्रचारकों को हिन्दी के अतिरिक्त किसी दक्षिण प्रान्तीय भाषा का यथेष्ट ज्ञान होना आवश्यक होगा और दक्षिण भारतीय प्रचारकों को प्रचारक परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य होगा।

२८—वेतन—

(क) उत्तर भारतीय प्रचारकों को प्रथम ३ मास तक २५) मासिक वेतन दिया जायगा। इस अवधि में उन्हें किसी एक प्रान्तिक भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लेना होगा। इसके बाद ३०) मासिक वेतन दिया जायगा और प्रति वर्ष ५) वार्षिक वृद्धि के हिसाब से ५०) तक वृद्धि होगी। विशेष योग्यता होने पर ६०) वेतन वृद्धि हो सकती है।

(ख) दक्षिण भारतीय प्रचारकों को २५) मासिक वेतन से आरम्भ कर ३) वार्षिक वृद्धि के हिसाब से ४०) रुपया तक वेतन वृद्धि होगी। इसके अनन्तर विशेष योग्यता होनेपर ६०) मासिक तक वेतन वृद्धि हो सकती है।

(ग) प्रान्तीय कार्यालय के संचालक, पत्रिका के सम्पादक को उक्त नियमों द्वारा निश्चित वेतन से ५) मासिक अधिक दिये जायँगे।

(घ) केन्द्र कार्यालय के व्यवस्थापक का वेतन प्रधान कार्यालय निश्चित करेगा।

२९—प्रत्येक कार्यकर्त्ता और प्रचारक की वार्षिक वेतन वृद्धि व्यवस्थापक और सिफ़ारिश पर प्रधान कार्यालय द्वारा हुआ करेगी।

३०—छुट्टियाँ—

क—हरेक कर्मचारी को वर्ष भर में १५ दिन आकस्मिक छुट्टी पाने का अधिकार होगा। और प्रत्येक वर्ष के अन्त में १ मास सवेतन छुट्टी पाने का अधिकार होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख)—प्रत्येक वर्ष में प्रत्येक प्रचारक को एक वार घर आने जाने के लिये मार्ग व्यय दिया जायगा। इसमें केवल गाड़ी भाड़ा सम्मिलित होगा, भोजन व्यय सम्मिलित न होगा।

विशेष—यदि दो वर्ष के पहिले ही घर जाने की आवश्यकता हो तो व्यवस्थापक को अधिकार होगा कि उनको मार्ग व्यय की रकम पेशगी दे दे। जब उनको मार्ग व्यय प्राप्त करने का अधिकार हो जाय तो उस समय मार्ग व्यय न दिया जायगा।

(ग) यदि कोई प्रचारक वार्षिक छुट्टी न ले तो तीन वर्ष तक पिछली वार्षिक छुट्टी जुड़ती जायगी। यदि कोई कर्मचारी तीन वर्ष के अन्त में छुट्टी न लेना चाहें। तो छुट्टी के आधे दिनों का वेतन पाने के अधिकारी होंगे।

(घ)—जो उत्तरभारतीय प्रचारक सपत्नीक आकर काम करना चाहें, उन को ३ वर्ष तक दक्षिण भारत में रह कर काम करना होगा। हर तीसरे वर्ष उन दोनों को तीसरे दर्जे का घर आने जाने का किराया दिया जायगा। तीन वर्ष के अन्त में छः महीने की छुट्टी दी जायगी। विशेष आवश्यकता पर जो छुट्टी दी जायगी वह इस अधिकार में से काट ली जायगी।

(ङ) कर्मचारी अपने अधिकारानुसार छुट्टी ले चुकने पर दो मास की अवैतनिक छुट्टी ले सकेगा।

३१—जो उत्तर भारतीय प्रचारक सपत्नीक दक्षिण भारत में काम करने जावेंगे, उनको कार्यालय निवास स्थान देने का प्रबन्ध करेगा। यदि ऐसा न हो सका तो मद्रास शहर में उनकी नियुक्ति होने पर उनको १०) तक मकान किराया वेतन के अतिरिक्त दिया जायगा। शहर के बाहर केवल ६) दिया जायगा।

३२—व्यवस्थापक तथा संचालकों को निरीक्षण के लिये तीसरे दर्जे का रेल किराया तथा भोजनादि के लिये ॥।) प्रतिदिन के हिसाब से रुपया दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३—कार्यालय का वर्ष।

कार्यालय का वर्ष भाद्र कृष्ण १ से लेकर श्रावणी पूर्णिमा तक माना जायगा।

३४—इस नियमावली में परिवर्तन के लिये प्रस्ताव करने का अधिकार हि० सा० स० को होगा।

परिवर्तन केवल प्रधान कार्यालय को होगा।

ब्रजराज
प्रधान मंत्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन।

स्थायी-समिति का विवरण

दशवर्षीय स्थायी-समिति का छठा अधिवेशन रविबार मिती फाल्गुन शुक्ल ६ संवत् १६७६ तदनुसार २५ फरवरी सन् २३ को १ बजे दिन से सम्मेलन-कार्यालय में निम्न लिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ—

१—श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन
२—श्री साँवलिया बिहारीलाल वर्मा
३—श्री चन्द्रशेखर शास्त्री
४—श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
५—श्री वियोगी हरि
६—श्री भगवती प्रसाद
७—श्री पं० रामजीलाल शर्मा
८—श्री पं० लक्ष्मीनारायण नागर
६—श्री प्रो० गोपालस्वरूप भार्गव
१०—श्री ब्रजराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यविवरण

नियमानुसार श्रीमान् पुरुषोत्तमदासजी टण्डन ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१—गत अधिवेशन का कार्यविवरण पढ़ा गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

२—निश्चित हुआ कि श्रीदीनदयालु श्रीवास्तव सहायक मंत्री के पद पर स्थायी रूप से नियुक्त किये जायँ।

३—श्री प्रधान मंत्री जी ने कानपुर सम्मेलन में उपस्थित होने वाले प्रस्ताव प्रस्तावित रूप में उपस्थित किये। सर्वसम्मति से निश्चित हुआ कि निम्न लिखित प्रस्ताव विषय-निर्वाचिनी-समिति के विचारार्थ स्वागतकारिणी समिति के पास भेजे जायँ।

प्रस्ताव १—यह सम्मेलन हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी श्री पं० सोमदेव शर्मा गुलेरी, श्री पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, श्री पं० योगानन्द, श्री पं० रामेश्वर भट्ट और तृतीय सम्मेलन के सभापति श्रीमान् पं० बदरीनारायण चौधरी की मृत्युपर हार्दिक शोक प्रकाशित करता है।

प्रस्ताव २—यह सम्मेलन दक्षिण-अफ्रीका-प्रवासी हिन्दी-भाषियों के हिन्दी प्रचार सम्बन्धी विविध कार्यों का आदर करता है और आशा करता है कि मौरीशस, ट्रिनीडाड, फिज़ी आदि अन्यान्य उपनिवेशों के हिन्दी-भाषी भी अपने यहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए विशेष प्रयत्न करेंगे।

प्रस्ताव ३—भारतवर्षीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) ने हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में जो पिछले कुछ वर्षों से अपने कर्त्तव्य पालन की ओर ध्यान दिया है, उसके लिए यह सम्मेलन धन्यवाद देता है और उससे अनुरोध करता है कि वह अपने सब काम काज राष्ट्रभाषा में किया करे, और आवश्यकतानुसार प्रान्तीय भाषाओं में भी करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्ताव ४—यह सम्मेलन पंजाब, बंगाल, मद्रास, आंध्र, तैमिल, महाराष्ट्र, गुजरात, सिन्धु, उड़ीसा तथा आसाम के नेताओं से अनुरोध करता है कि वे देश में वास्तविक स्वराज्य की दृष्टि से हिन्दी-भाषा स्वयं सीखने और अपने राष्ट्रीय विद्यालयों में सिखाने का यथेष्ट प्रबन्ध करें जिसमें सार्वदेशिक राष्ट्रीय कार्य अँगरेज़ी में न हो कर हिन्दी भाषा में हुआ करे।

प्रस्ताव ५—यह सम्मेलन देश की सार्वजनिक संस्थाओं तथा व्यापारियों से अनुरोध करता है कि वे अपने व्यवहारों में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का ही प्रयोग किया करें।

प्रस्ताव ६—यह सम्मेलन भारतवर्ष के प्रत्येक हिन्दी-भाषी प्रान्त में कम से कम एक ऐसा हिन्दी विद्यापीठ स्थापित होना आवश्यक समझता है, जिसमें हिन्दी की सर्वोच्च शिक्षा दी जा सके।

प्रस्ताव ७—यह सम्मेलन उन सज्जनों से, जिनके पास प्राचीन हस्त-लिखित हिन्दी पुस्तकें हों, प्रार्थना करता है कि वे उनकी रक्षा की दृष्टि से उन्हें सम्मेलन के स्थायी पुस्तकालय में रखने के लिए सम्मेलन को भेंट कर दें।

प्रस्ताव ८—यह सम्मेलन स्थायी-समिति को आदेश देता है कि भारत के देशी नरेशों की सेवा में एक प्रतिनिधिमंडल इस अभिप्राय से भेजने का प्रबन्ध करे कि वे अपने अपने राज्य में हिन्दी को राज्य-भाषा का आदृत स्थान देने की आज्ञा प्रचारित करें और सम्मेलन का संरक्षक होना स्वीकार कर सम्मेलन की सहायता करें।

प्रस्ताव ९—यह सम्मेलन हिन्दी के एक बृहत् पुस्तकालय के अभाव का अनुभव करता हुआ यह निश्चय करता है कि सम्मेलन के प्रबन्ध से शीघ्र ही एक ऐसा पुस्तकालय स्थापित किया जाय जिसमें यथासम्भव हिन्दी के प्राचीन हस्त-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखित ग्रन्थों एवं समस्त मुद्रित पुस्तकों का पूर्ण संग्रह हो। प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों की खोज और संग्रह करने, उनकी प्रतिलिपि कराने, मुद्रित पुस्तकों को मोल लेने और पुस्तकालय भवन निर्माण करने में लगभग दो लाख रुपये की आवश्यकता होगी, अतएव सम्मेलन उदार हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध करता है कि वे इस बड़े कार्य के लिए सम्मेलन की यथेष्ट सहायता करें।

४—श्रीयुत साँवलिया विहारीलाल जी वर्मा ने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया—

यह समिति प्रधान मंत्री को सम्मति देती है कि वे प्रयाग के अतिरिक्त अन्य स्थानों में भी, विशेषकर प्रादेशिक सम्मेलनों के अवसर पर, यदि हो सके तो स्थायी-समिति के अधिवेशनों का प्रबन्ध किया करें।

सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

५—सभापति महोदय जी ने यह चर्चा चलायी कि झाँसी में एक सरस्वती पाठशाला है, जिसकी इमारत लगभग २० हजार रुपये के होगी, कुछ दिनों से यू० पी० प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी उसको सहायता दे रही है, अतएव उसके ट्रस्टियों ने कमेटी को उस पर पूर्ण अधिकार दे दिया है, किन्तु अब कमेटी उसके संचालन का भार नहीं उठाना चाहती, इस समय पाठशाला के ऊपर लगभग २०००) के कर्जा है, प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी उसको, जो कोई २०००) का कर्जा चुकाकर पाठशाला संचालन करना चाहे, पूर्ण अधिकार देने को संभवतः तैयार होगी। उन्होंने प्रस्ताव किया कि समिति इस पाठशाला की अवस्था पर विचार करे।

निश्चित हुआ कि झाँसी की सरस्वती पाठशाला की आर्थिक दशा देखने और यह देखने कि सम्मेलन के लिए उस पाठशाला को अपने अधिकार में लेना कहाँ तक उपयुक्त होगा, निम्नलिखित तीन सज्जनों की एक उपसमिति बनाई जाय जो स्थायी-समिति के आगामी अधिवेशन में अपनी रिपोर्ट उपस्थित करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन
२—श्री प्रो० ब्रजराज
३—श्री पं० रामजीलाल शर्म्मा

६—श्री पं० रामजीलाल शर्मा ने यह विषय उपस्थित किया कि सम्मेलन को अधिवेशन के अवसर पर सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवियों को उपाधि देकर सम्मानित करना चाहिए। सदस्यों में इस सम्बन्ध में चर्चा होने के पश्चात्—

निश्चित हुआ कि इस प्रश्न पर विचार करने के लिए, कि 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' पानेवाले सज्जन को इस वर्ष सम्मेलन के अवसर पर कोई उपाधि दी जाय या नहीं और यदि दी जाय तो कौन सी उपाधि दी जाय, निम्नलिखित दो सज्जनों की एक उप-समिति बनायी जाय, जो समिति के अगामी अधिवेशन में अपना निश्चय प्रकट करे।

१—श्री पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
२—श्री पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल

सभापति को धन्यवाद देने के अनन्तर आज का अधिवेशन समाप्त हुआ।

ब्रजराज
एम. ए., बी. एस-सी., एल. एल. बी.
प्रधान मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली

[लेखक—श्रीयुत वियोगी हरि ।]

होली के उत्कर्ष के सम्बन्ध में कविवर महाराज नागरीदास ने कहा है—

'स्वर्ग वैकुण्ठ में होरी जु नाहिं तो कोरी कहा लै करै ठकुराई !'

आपकी राय में बिना होली के स्वर्ग भी तीन कौड़ी का है। होली में ऐसी कौन सी करामात है जिसके कारण यह मर्त्यलोक दिव्यलोक के कान काट रहा है! पुराणों में होलिका-सम्बन्धी कुछ आख्यान हैं, पर हमारा काम उनसे न चलेगा। हम ठहरे साहित्य लोलुप! यहाँ बात बात में साहित्य सूझता है। बात है भी ऐसी ही। साहित्य को ताक में रख कर न तो कोई सांसारिक ही और न पारलौकिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। दिल की कोई छिपी हुई कली इसी चमन में खिलती है। जो हो, हम इसी दृष्टि से होली को देखेंगे। पहिले तो होलिकोत्सव ऐसे अवसर पर होता है, जब शिशिर और वसन्त का सम्मेलन हुआ करता है, दोनों ऋतुओं की वयःसन्धि होती है। ऋतुराज वसन्त का आगम किसे आनन्दित नहीं कर देता! दूसरे छुआछूत का विचार छोड़ छाड़ कर होली में ऊँच नीच सब आपस में हिलते मिलते हैं। मित्र शत्रु का भेद भाव दूर हो जाता है। सहज में 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' का सिद्धांत प्रत्यक्ष हो जाता है। यह भाईचारा भला स्वर्ग में कहां! भिन्नता में अभिन्नता, अनेकता में एकता एवम् दुःख में सुख का अस्तित्व इसी लोक में है। होली का तीसरा महत्व भक्ति पक्ष का है। नागरीदास की सूक्ति इसी अर्थ में घटती है। उन्होंने ब्रज में होलिका-उत्सव देखकर स्वर्ग की कोरी ठकुराई ठुकरा दी है।

क्या ब्रज की उस रङ्गीली होली का धूमिल चित्र आज खिंच सकता है? क्या वह रङ्ग अबीर आज हमारी-आंखों में निराली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाली छा सकेगा ? क्या आज हम झांझ और डफ के साथ ग्वाल बालों के रसिया सुन सकेंगे ? अब वे दिन गये ! अब न वह वसन्त है और न वह होली ! राग-रङ्ग की चर्चा किसे सुहाती है ? जहां देखो तहाँ फीकापन नज़र आ रहा है । सौ बात की बात तो यह है, कि हृदय तो कभी का बिदा ले गया, बचा था सिर्फ मन, सो वह भी दर्शन और विज्ञान की चपेटों में पड़कर चौपट हो गया है। साहित्य-सेवियों या पागलों के विषय में तो लोगों की यह धारणा हो चली है कि—'रहें झोंपड़ी में, ख़्वाब देखें महलों के !' अफ़सोस तो यह है कि इन पागलों को खुदा ने, न जाने, क्या सोचकर वे आँखें दे दी हैं जिनसे ये ऐसे ऐसे ख़्वाब देखा करते हैं। ऐसा न होता तो गिरिधारन कवि भला होली में वर्षा की बहार देखते ! कहते हैं—

चोबा के मेघ गुलाल की दामिनी, बुक्का बुलाक लसैं अधिकाई।
केसर सक्र-सरासन चारु, सुरंगन की बरसा बरसाई ॥
गाजनि बाजन की गिरिधारन, गाजनि सों अति लागै सुहाई।
आजु गुपाल ने होरी के बीच मैं पावस की परभा प्रगटाई ॥

अथवा रसिक हरिश्चन्द्र वियोगिनी में होली की रंगत देख कर यों कैसे कहते कि—

उमड़ि उमड़ि दृग रोवत अबीर भये,
मुख दुति पीरी परी बिरह महा भरी ।
हरीचन्द प्रेममातो मनहुँ गुलाबी छकी
काम झर झाँवरी सी दुति तन की करी ॥
प्रेम कारीगर के अनेक रंग देखो यह,
जोगिया सजाये बाल बिरिछतरे खरी ।
आँखिन में साँवरो हिये में बसै लाल वह
बार बार मुख तें पुकारत हरी हरी ॥

क्या ही रंग बिरंगी होली है ! यह नई सृष्टि का बना देना इन्हीं ख़्वाब देखनेवालों के हाथ में है। ये चाहे जो कर सकते हैं। इन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह रंग चढ़ चुका है जो किसी तरह छुटाये नहीं छूटता। इनका सदा वसन्ती रंग ऐसा वैसा रंग नहीं है। फिर कैसा है ? सुनिये—

वीर, बरसानो छोरि गोकुल गयी ही आज,
जान्यो ना गुपाल ऐसो ऊधम मचाय हैं।
सारी बोरि दीनी सारो गात करि लीनों लाल,
और कछु कीनो ताको कहे सकुचाय हैं॥
'हरि औध' अब तौ न आपने रहे हैं नैन,
करिकै उपाय कौन उन्हें समुझाय हैं।
अङ्ग लाग्यो रंग तौ सलिल सों छुड़ाय लैहैं,
नेह रंग लाग्यो ताको कैसे कै छुड़ाय है॥

सचमुच इस 'नेह रंग' का छुड़ाना बड़ा कठिन काम है। यह किसी रासायनिक-प्रयोग द्वारा नहीं छूट सकता। धन्य है उन अलमस्त रँगीले होलीबाजों को, जो सदाही इस रँग में सराबोर रहते हैं! ये लोग आज भी ब्रजविहार का अस्पष्ट चित्र देखा करते हैं। इनके कर्ण-कुहरों में आज भी रसिया गूञ्ज रहे हैं।

'मन चलिजात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।'

पर यह मज़ा कितने उठा रहे हैं ? लाख में एक। यह होली कुछ पहुँचे हुए मस्तों को ही नसीब है। हम अभागों की होली तो दूसरी ही है। देश के एक छोर से दूसरे छोर तक होली की प्रचण्ड ज्वाला उठ रही है। मुँह पर खुश्की और दिल में बदरङ्गी छाई है। आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी रहती है। यही पिचकारियाँ समझ लीजिये। सत्ताधारियों की तोप के गोले ही हमारे लिए कुमकुमा हैं। पराधीनता में जकड़ कर हम लोग कैसी कुछ होली खेल रहे हैं, यह परमेश्वर ही जानता है, हा! हमारी आँखों में वह 'ख़्वाब' देखने तक की शक्ति नहीं! हमारे लिए कोई त्यौहार, त्यौहार नहीं, कोई रङ्ग, रङ्ग नहीं!

आप कहेंगे कि ऐसे शुभ-दिन पर 'हाय हाय' करना अच्छा नहीं, पर करें क्या ? सहने की भी तो कोई हद होती है। कब तक धीरज बांधे रहें, आखिर मनुष्य ही तो हैं। समस्त संसार के लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित नये उत्सव मना रहे हैं, केवल हमी अभागे भारतीय कपार पर हाथ धरे बैठे हैं। हम आज भी जी खोल कर अपने भाइयों से नहीं मिलते, छुआछूत के पाखण्ड को होली में नहीं जला देते। हमारे हृदय-पटल पर स्वतंत्रता का, राग रंग का अस्पष्ट चित्र तो खचित सा दिखाई देता है, पर हम उसे विजातीयधारा से तुरन्त धो डालते हैं। हमारे कानों में ब्रज के रसियों की मधुर झनकार तो आ पड़ती है, पर हम उसे नयी सभ्यता के कर्कश कोलाहल से दबा देते हैं। आनन्द की सूक्ष्म रेखा का कभी कभी उदय हुआ करता है, पर हम आंखोंपर गुलामीकी पट्टी चढ़ाकर उसे देखते ही नहीं। कहां आ गया? क्या कहना था और क्या कह डाला? हां, आज हमारी होली कुछ निराली ही है। लोग इसे राष्ट्रीय होली कहते हैं। पर मैं इसमें सहमत नहीं, राष्ट्रीय होली तो पहले थी, अब कहां है? तब में—अब में बहुत अन्तर है। अप्रत्यक्ष रूप से हम उस समय राष्ट्र के सबी अंगों की पूर्ति किया करते थे। धर्म हमारा था, त्यौहार हमारे थे, जाति हमारी थी, सुख दुख हमारे थे, वही राष्ट्रीयता है, राष्ट्रीय होली है अब हममें हमारा कुछ नहीं रहा। हम हर बात में आडम्बर रच रहे हैं, स्वांग बना रहे हैं। इस स्वांग से होली के स्वांग कहीं अधिक अच्छे थे। न जाने, नटनागर की क्या इच्छा है। अभी और क्या क्या होने वाला है, कौन जानता है!

निराश होने का कारण नहीं है, और फिर आज के दिन? भारतवर्ष भगवान् की लीलाभूमि है। वह इसे अब और अधिक दिन न तरसायेगा। हमसे तो मानों कोई कान में धीरे धीरे कह रहा है कि वे दिन बहुत जल्द आयेंगे जब हम लोग हिल मिल कर होली का रंगोत्सव मनायंगे, वही रसिया और वही धमार गायँगे। वही स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे। स्वतंत्रता पाने का होली से बढ़ कर और कौन दिन होगा! हमें तो विश्वास है कि हम होली का वही दृश्य देखेंगे। जो नन्दनन्दन श्रीकृष्ण के समय में था। उस दिन हम लोग प्यारे हरिश्चन्द्र के स्वर में स्वर मिलाकर यह अवश्य गायँगे कि—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन दिन होरी ब्रज में आओ।
चिरजीवो जुग जुग यह जोरी, नित कर जोरि मनाओ।
नित बरसो रँग नितहि कुतूहल, नित नित खेल मचाओ।
हरीचन्द यह रंग बधाई, नित आनँद सों गाओ॥

आक्षेपों का उत्तर

शी नागरी-प्रचारिणी सभा ने अपने उन्तीसवें वार्षिक विवरण में सम्मेलन के सम्बन्ध में लिखा था—"साहित्य भवन, लिमिटेड, प्रयाग और सम्मेलन की परीक्षाओं का सम्बन्ध जोड़ कर कुछ लोग भाँति भाँति के आक्षेप करते हैं। सम्मेलन की स्थायी-समिति को यथा तथ्य जान कर यदि आक्षेप या आपत्ति का कोई कारण हो तो उसे दूर करना चाहिये।" इधर एक महाशय ने जिन्होंने अपना नाम प्रकाशित नहीं किया है, 'प्रताप' द्वारा 'सम्मेलन की गड़बड़' शीर्षक लेख लिखा है। इस लिए यह बतला देना आवश्यक प्रतीत होता है कि वास्तविक स्थिति क्या है।

सभा ने स्पष्ट नहीं लिखा कि लोग क्या आक्षेप सम्मेलन और साहित्य भवन के सम्बन्ध में करते हैं। हमारी समझ में, सम्मेलन और साहित्य-भवन के केवल दो प्रकार के सम्बन्ध हो सकते हैं। एक यह कि साहित्य-भवन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सम्मेलन की परीक्षाओं में पाठ्यपुस्तकें नियत की जाती हैं और दूसरा यह कि सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भवन द्वारा बेची जाती हैं। हमारे नियमानुसार पाठ्यपुस्तकें नियत करना परीक्षा-समिति का काम है, जिसमें स्थायी-समिति द्वारा चुने हुए २० सदस्य रहते हैं। पुस्तक सम्बन्धी समस्त कार्य करना पुस्तक-प्रकाशन-समिति का काम है, जिसमें स्थायी-समिति द्वारा चुने हुए ११ सदस्य रहते हैं। यह दोनों समितियाँ अपने निर्णयानुसार कार्य करती हैं, और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए अपने अपने कार्य की वही उत्तरदायिनी हैं। इस समय हमें यह देखना है कि उनके कार्यों में आक्षेपयोग्य कौन कौन सी बातें हुई हैं।

परीक्षाओं की विवरण-पत्रिका देखने से यह सहज में ज्ञात हो सकता है कि पुस्तकों का चुनाव इस प्रकार हुआ है :—

१८ पुस्तकें सम्मेलन द्वारा प्रकाशित चुनी गईं
७ " इण्डियन प्रेस, प्रयाग
६ " विज्ञान परिषत्, प्रयाग
४ " तरुण भारत ग्रन्थावली, प्रयाग
२ " हिन्दी मन्दिर, प्रयाग
१ " हिन्दी एजेन्सी, कलकत्ता
७ " नागरीप्रचारिणी सभा, काशी
६ " खड्ग विलास प्रेस, बांकीपूर
५ " रत्नाश्रम, आगरा
३ " हिन्दी प्रेस, प्रयाग
१ " ज्ञानमण्डल, काशी
१ " साहित्यभवन लिमिटेड, प्रयाग

एक एक दो दो कई अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें चुनी गई हैं। इस ब्योरे से स्पष्ट है कि साहित्य-भवन लिमिटेड के साथ परीक्षा-समिति ने कोई अनुचित रियायत नहीं की है।

पहले सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की फुटकर बिक्री का प्रबन्ध सम्मेलन कार्यालय में ही था। कार्यालय के लेखक वी. पी. भेजते थे और हिसाब रखते थे। किताबों की बिक्री इतनी नहीं थी कि एक लेखक इस काम के लिये अलग कर दिया जाता। वी. पी. लौटने से और स्टाक के गड़बड़ होते रहने के कारण इस काम में बड़ी असुविधा होती थी। साथ ही किसी पर पूर्ण उत्तर-दायित्व न होने के कारण वी. पी. ठीक समय पर न जाते थे। इन सब कठिनाइयों को दूर करने के लिए सं० ७३ में मर्यादा पुस्तक भण्डार द्वारा पुस्तकों की बिक्री का प्रबन्ध किया गया। इस भण्डार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के बन्द हो जाने पर भाद्रपद सं० ७४ में साहित्य भवन प्रयाग सम्मेलन का एजेण्ट नियत किया गया। वैशाख सं० १९७७ में यह दूकान साहित्य भवन लिमिटेड के नाम से कम्पनी के रूप में परिणत हो गयी। पुस्तक बिक्री का जो प्रबन्ध साहित्य भवन के साथ था वही साहित्य भवन लिमिटेड के साथ भी रहा। यह प्रबन्ध मन्त्रियों ने अपने अधिकार से किया था, ऐसा समझना चाहिये क्योंकि पहले पुस्तक प्रकाशन समिति में ५ सदस्य होते थे जिनमें से चार मन्त्री थे। कलकत्ते के सम्मेलन के बाद पुस्तक प्रकाशन समिति का सङ्गठन बदल गया, उसमें अब ११ सदस्य हैं जिनमें से केवल तीन मन्त्री हैं।

पुस्तकों की बिक्री के लिए इस पुस्तक-प्रकाशन-समिति ने समय समय पर भिन्न भिन्न नियम बनाये हैं, उसके ता० २८ नवम्बर २१ के अधिवेशन में यह निश्चित हुआ था।

"निश्चित हुआ कि सम्मेलन अपने सोल एजेन्ट साहित्य-भवन लिमिटेड को अपनी सम्पूर्ण पुस्तकों पर २५ फी सदी कमीशन दिया करे और साहित्य-भवन लिमिटेड सम्मेलन की पुस्तकों पर अन्य पुस्तक विक्रेताओं को २० फी सदी कमीशन दिया करे।"

मंत्रि-मंडल के कार्तिक कृ० २ के अधिवेशन में निम्नलिखित नियम निश्चित हुआः—

१—सम्मेलन अपनी प्रकाशित पुस्तकों पर १००) रु० या अधिक की पुस्तकें नक़द दाम पर लेने वाले पुस्तक विक्रेता को २५ फ़ी सदी कमीशन दिया करेगा।

२—सौ रुपया से कम की पुस्तकें लेनेवाले पुस्तक विक्रेता 'साहित्य भवन, लिमिटेड, प्रयाग से पुस्तकें ले सकेंगे और भवन द्वारा उनको २० फ़ी सदी कमीशन दिया जायगा। ५) रु० से कम के आर्डर पर कोई कमीशन नहीं दिया जायगा।

सम्मेलन और साहित्य-भवन का सम्बन्ध इस प्रकार होगा—

१—सम्मेलन कार्यालय में पुस्तकों के जितने १००) रु० से कम के आज्ञापत्र आयेंगे, वे सब भवन को दिये जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—साहित्य-भवन लिमिटेड को भी अन्य पुस्तक विक्रेताओं की भाँति १००) रु० या अधिक की पुस्तकें लेने पर केवल २५ फ़ी सदी कमीशन दिया जायगा और सम्मेलन में जो पुस्तक विक्रेताओं के १००) रु० या अधिक के आज्ञापत्र आयँगे, उनको साहित्य-भवन लिमिटेड २५ फ़ी सदी कमीशन देगा।

३—सा० भ० एक बार में १००) रु० से कम की पुस्तकें न लेगा।

हमारी समझ में काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के आक्षेप के उत्तर में इतना कहना ही बस होगा। इससे प्रतीत होगा कि साहित्य भवन लिमिटेड और सम्मेलन के सम्बन्ध में कोई आक्षेप योग्य बात नहीं है।

स्थायी-समिति का साधारण अधिवेशन कार्तिक शु० ६। ७६ को होने वाला था। कार्तिक शु० ३। ७६ को पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी जी ने सूचना दी कि वह निम्नलिखित प्रस्ताव स्थायीसमिति के सामने उपस्थित करना चाहते हैं:—

प्रस्ताव—"सम्मेलन की पुस्तकें केवल 'साहित्य-भवन, लिमिटेड' को ही न दी जायं, बल्कि सब पुस्तक विक्रेताओं को समान कमीशन पर दी जायं और सम्मेलन की पुस्तकें केवल साहित्य प्रेस में ही न छपाई जायं।"

कार्यालय से उनको यह उत्तर दिया गया कि "कमीशन का नियम आप ही के प्रस्तावानुसार है, बाहरी सदस्यों के पास आप का प्रस्ताव भेजने का समय नहीं रहा है। यदि आप चाहें तो अधिवेशन के अवसर पर 'अन्य आवश्यक कार्य' के अन्तर्गत यह प्रस्ताव उपस्थित कर सकते हैं। आप अधिवेशन के दिन आवेंगे ही, उसी समय यदि इच्छा हो तो अपना प्रस्ताव रखिये।"

यह उत्तर पाने पर द्विवेदीजी स्वयं अधिवेशन के पहले कार्यालय में आये और उनको उक्त सब नियम बतलाए गये। सम्मेलन का काम साहित्य प्रेस में क्यों छपाया जाता है? प्रेसों की गड़बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण सम्मेलन-पत्रिका ठीक समय पर नहीं निकल सकती थी, अतएव साहित्य प्रेस से एक वर्ष के लिए ठेका कर लिया गया है कि हर मास में पत्रिका ठीक समय पर निकालनी होगी। सुलभ साहित्य माला का जब कोई ग्रन्थ छपाना होता है तो स्थानीय प्रेसों से जैसे अभ्युदय प्रेस, कृष्ण प्रेस, सुदर्शन प्रेस, लीडर प्रेस, हिन्दी प्रेस, नारायण प्रेस, साहित्य प्रेस, आदि कई प्रेसों से पुस्तक भेजकर रेट मँगा लिये जाते हैं और जहाँ सुविधा होती है वहीं पर पुस्तक छपाई जाती है। परीक्षा सम्बन्धी व फुटकर कागजों की समय पर बड़ी आवश्यकता होती है इसलिए भिन्न भिन्न प्रेसों में काम दिया जाता है, उदाहरण के लिए इस वर्ष परीक्षा सम्बन्धी काम साहित्य प्रेस, नारायण प्रेस, लीडर प्रेस, विश्व प्रेस और हिन्दी प्रेस आदि ५ प्रेसों में छपाया गया था। संक्षेप में, जिस प्रेस में सुविधा होती है और साथ ही छपाई की दर ठीक होती है वहीं पर काम छपाया जाता है। बहुत ख्याल करना पड़ता है कि काम समय पर मिले, भूषण ग्रन्थावली नामक पुस्तक पुस्तक जो १२ फार्म की थी लीडर प्रेस से पूरे एक वर्ष में छपकर मिली थी।

इसके बाद पं० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी कार्त्तिक शुक्ल ६।७८ के अधिवेशन में आये और उसमें अन्ततक बराबर भाग लेते रहे, किन्तु उन्होंने अपने प्रस्ताव के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं की और न फिर कार्यालय को ऐसी कोई सूचना नहीं दी कि वे अपना प्रस्ताव आगामी स्थायी-समिति में रखना चाहते हैं। इससे मालूम होता है कि पं० इन्द्रनारायण जी द्विवेदी संतुष्ट थे और उनके प्रस्ताव को दबाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया।

'जानकार' महाशय फिर लिखते हैं 'कतिपय सज्जन सम्मेलन से उदासीन हो गये हैं, स्थायी-समिति के अधिवेशन फीके रहते हैं, उनमें बाहर के बहुत कम सदस्य सम्मिलित होते हैं।' इसके सम्बन्ध में हम गत ५ वर्षों का और वर्तमान वर्ष का उपस्थिति सूचक पत्र तुलनार्थ उपस्थित है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी-समिति	कुल अधिवेशन हुए	कुल उपस्थिति	बाहर के सदस्यों की संख्या
सप्तम [जबलपुर]	७	६३	१०
अष्टम [इन्दौर]	४	३४	४
नवम [बम्बई]	४	४८	८
दसवीं [पटना]	७	७७	६
ग्यारहवीं [कलकत्ता]	६	५६	१२
बारहवीं जो अभी समाप्त नहीं हुई [लाहौर]	६	६७	१४

इस सारिणी से स्पष्ट ज्ञात होता है कि स्थायी-समिति में गत दो तीन वर्षों में बाहरी सदस्य अधिक भाग लेते रहे हैं। औसत उपस्थिति से ज्ञात होता है कि स्थायी-समिति के अधिवेशन फीके नहीं होते हैं तथा [पटना सम्मेलन में श्रीब्रजराज प्रधान मन्त्री चुने गये थे।]

सम्मेलन के भूतपूर्व सहायक मंत्री पं० सोमदेव विद्यालंकार जी के विषय में 'जानकार' महाशय लिखते हैं कि यह "एक योग्य और सज्जन व्यक्ति थे, केवल ३ दिन का नोटिस देकर और धन का अभाव बतला कर हटा दिया और एक ऐसे व्यक्ति को जो उनसे अधिक योग्य कदापि न था उनसे अधिक वेतनपर रख लिया।" इस सम्बन्ध में नियमावली के नियम उद्धृत करना ही काफ़ी होगा।

प्रधान मंत्री के कर्त्तव्य

(ख) सहायक मंत्री के अतिरिक्त वैतनिक कर्मचारियों को नियुक्त करना और अलग करना।

(ग) आवश्यक होने पर यदि मंत्रियों की अधिकांश सम्मति उसके विचार के अनुकूल हो तो वैतनिक सहायक मंत्री को पदच्युत करना तथा नया सहायक मंत्री नियुक्त करना, किन्तु यह पदच्युति और नियुक्ति स्थायी-समिति के विचाराधीन होगी।

प्रधान मंत्री ने पं० सोमदेव विद्यालंकार को तीन मास के लिए सहायक मंत्री के पद पर इस शर्त पर नियुक्त किया था कि काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर मंत्रिमंडल की सम्मति के अनुसार स्थायी-समिति से उनकी नियुक्ति की स्वीकृति ली जावे। इसके बाद ५-५-७८ सौर को यह अवधि तीन मास के लिये बढ़ाई गयी। तीन मास के बाद पुनः तीन मास के लिए यह अवधि बढ़ाई गई। परन्तु नौ महीने के बाद भी मंत्रिमण्डल ने इनकी सहायक मंत्री के पद पर स्थायी नियुक्ति होने की सिफ़ारिश नहीं की। उसी समय हिन्दी विद्यापीठ में एक अध्यापक का स्थान असहयोग में जेल जाने के कारण रिक्त हो गया, इसलिए विद्यालङ्कार जी से उनकी जगह पर काम करने के लिए कहा गया। विद्यालङ्कार जी ने अध्यापक होना स्वीकार करके माघ कृ० ३।७८ से चैत्र शुक्ल ६।७८ तक काम किया। पं० रामस्वरूप शर्मा जी जेल चले गये थे २७ मार्च सन् २२ को लौट आये, और अपनी जगह पर काम करने लगे। विद्यालङ्कारजी का सम्बन्ध इस प्रकार उनके योग्य कोई अन्य स्थान न होने के कारण सम्मेलन से पृथक् हो गया। उनको जब तक उन्होंने काम किया था तब तक का वेतन और १५ दिन का अधिक वेतन दिया गया था। नियुक्ति स्थायी न होने के कारण बिना किसी नोटिस के विद्यालङ्कार जी पृथक् किये जा सकते थे पर फिर भी मन्त्रियों ने १५ दिन की नोटिस दी, जिस १५ दिन का वेतन उनको पेशगी बिना १५ दिन काम लिये ही दिया गया। वर्तमान सहायक मन्त्री की योग्यता का जो उल्लेख 'जानकार' महाशय ने किया है वह सर्वथा अप्रासांगिक है। सहायक मन्त्री की नियुक्ति और वेतन सम्बन्धी सब बातें स्थायी-समिति के विचाराधीन हैं, मन्त्रिमण्डल इसमें केवल सिफ़ारिश कर सकता है।

'एक जानकार' महाशय अपने पत्र में कहते हैं "कि सम्मेलन की दशा दिन प्रतिदिन ख़राब होती जाती है," परन्तु कैसे यह उन्हों ने सिद्ध नहीं किया है। इस सम्बन्ध में ठीक निर्णय करने के लिए सम्मेलन की गत पांच वर्षों की रिपोर्ट पर तुलनात्मक दृष्टि डालना चाहिये। तुलना से ज्ञात होगा कि सम्मेलन अधिकाधिक उन्नति कर रहा है। निराधार शब्दों के लिखने से लेखक की उत्तरदायित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीनता सिद्ध होती है और सम्मेलन को वृथा हानि पहुँचने की सम्भावना है।

'जनकार' महाशय ने स्थायी-समिति से प्रार्थना की है कि वह 'एक निष्पक्ष कमीशन द्वारा सम्मेलन के उक्त दोषों की जांच करावे'। उनकी यह प्रार्थना सर्वथा न्यायसंगत है, स्थायी-समिति यदि ऐसी जांच की व्यवस्था करे तो मंत्रिमण्डल उसका स्वागत सहर्ष करने का तैयार है, मन्त्रि-मण्डल का यह विश्वास है कि उसने कभी कोई नियम विरुद्ध आचरण नहीं किया।

काशी की नागरी प्रचारिणी-सभा साहित्य सम्मेलन से सम्बद्ध है इसलिए इतना मैं अवश्य कहना चाहता हूं कि इस नाते का ध्यान रख कर उसको यथातथ्य पहले कार्यालय से पूछ लेना चाहिये था। अस्तु। 'जानकार' महाशय को भी मैं धन्यवाद देता हूं, उनके पत्र के कारण हमें असली हाल प्रकाशित करने का सुअवसर मिल गया।

व्रजराज
एम. ए. बी. एस-सी. एल-एल. बी.
प्रधान मन्त्री—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन।

हिन्दी में एम. ए.

कलकत्ता यूनिवर्सिटी ने कुछ दिन पहले प्रान्तिक भाषाओं का एम. ए. विभाग स्थापित किया था। सम्मेलन के सभापति श्रीयुत पं० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी और श्रीयुत पं० माधव मिश्रजी की सम्मति से बाबू घनश्यामदास बिड़ला ने हिन्दी में एम. ए. की शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए यूनिवर्सिटी को १५०००) रु० दान दिया था। श्री बिड़ला जी ने अपने दान पत्र में इस बात का कोई उल्लेख नहीं किया था कि यह धन किस प्रकार व्यय किया जाय। यूनिवर्सिटी ने इस धन को अपर्याप्त समझ कर इस सम्बन्ध में बहुत दिनों तक कोई कार्य प्रारम्भ नहीं किया। सभापति महोदय ने यह देख कर कि अभी और कोई दान होने की सम्भावना नहीं है, यूनिवर्सिटी से पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने यूनिवर्सिटी के सामने एक प्रस्ताव रखा जिसके अनुसार सम्प्रति थोड़े से परिमाण में एम-ए. की शिक्षा प्रारम्भ हो सकती थी। यूनिवर्सिटी ने उनके प्रस्ताव को स्वीकृत कर लिया और यह एक सूचना प्रकाशित कर दी कि हिन्दी के अध्यवसाय के उत्साहित करने के लिए चार विद्यार्थियों को, जो एम-ए. में हिन्दी विषय लेंगे, एक वर्ष तक २५) रु० मासिक के हिसाब से छात्रवृत्ति दी जायगी, साथ ही उनसे कोई फीस नहीं ली जायगी, विद्यार्थियों को कलकत्ता यूनिवर्सिटी के एम-ए. शिक्षा विभाग परिषद् के मंत्री के पास ३१ जनवरी सन् २३ तक अपनी अपनी योग्यता सहित प्रार्थनापत्र भेज देने चाहिए। हर्ष का विषय है कि फरवरी मास से कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी में एम-ए. की शिक्षा प्रारम्भ हो गयी है।

'शिक्षा' में नया परिवर्तन

शिक्षा का कलेवर वृद्धि

आज से २६ वर्ष पूर्व 'शिक्षा' नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकाला गया था। सदा शिक्षा को ही लक्ष्य रख कर इसका सञ्चालन होता रहा है। यह बात हिन्दी प्रेमियों को विदित है। इस नये वर्ष से 'शिक्षा' अपने कार्य में और अधिक तत्परता और सजीवता के साथ लगेगी, कृषि, शिल्प, वाणिज्य, साहित्य, धर्म, दर्शन, इतिहास नीति आदि आवश्यक विषयों के शिक्षा सम्बन्धी विद्वानों के विचार रहा करेंगे।

नवीन सम्वत् के प्रथम सप्ताह में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर 'शिक्षा' का विशेषाङ्क प्रकाशित होगा। इसमें सम्मेलन सम्बन्धी विचारपूर्ण लेख प्रकाशित होंगे।

'शिक्षा' का वार्षिक मूल्य ५) रुपये हैं। विशेषाङ्क का मूल्य ।।।) आने होंगे। पर शिक्षा के ग्राहक बनाने वालों से विशेषाङ्क का अतिरिक्त मूल्य नहीं लिया जायगा।

निवेदक

मैनेजर, शिक्षा, पटना

112867

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar